mi 5
1527

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

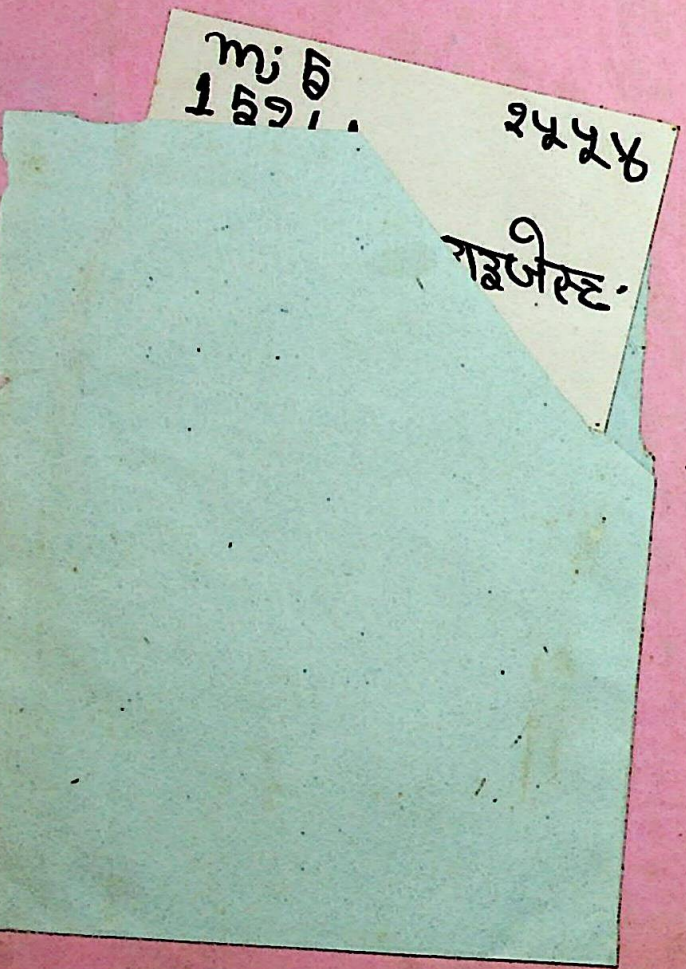

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

mj 6
1521.1

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय
वा रा ण सी ।
आगत क्रमांक..२५५६

कृपया यह ग्रन्थ नीचे निर्देशित तिथि के पूर्व अथवा उक्त तिथि तक वापस कर दें। विलम्ब से लौटाने पर प्रतिदिन दस पैसे विलम्ब शुल्क देना होगा।

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय, वाराणसी ।
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

નવનીત

હિન્દી डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ताज़गी के पास आइये
अपनी प्यास बुझाइये

गोल्ड स्पॉट की अनोखी ताज़गी और लाजवाब स्वाद का मज़ा लीजिये। इसमें आपको ताज़े फलों जैसा स्वाद मिलेगा। इसकी ताज़गी के क्या कहने! ऐसी ताज़गी तो आपको प्रकृति की गोद में झूलने वाले झरनों में ही मिल सकेगी। इसका रसास्वादन कर आप मस्ती में झूम उठेंगे।

जी भर के जियो... गोल्ड स्पॉट पियो!

mcm/pb/38e hin

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

15211

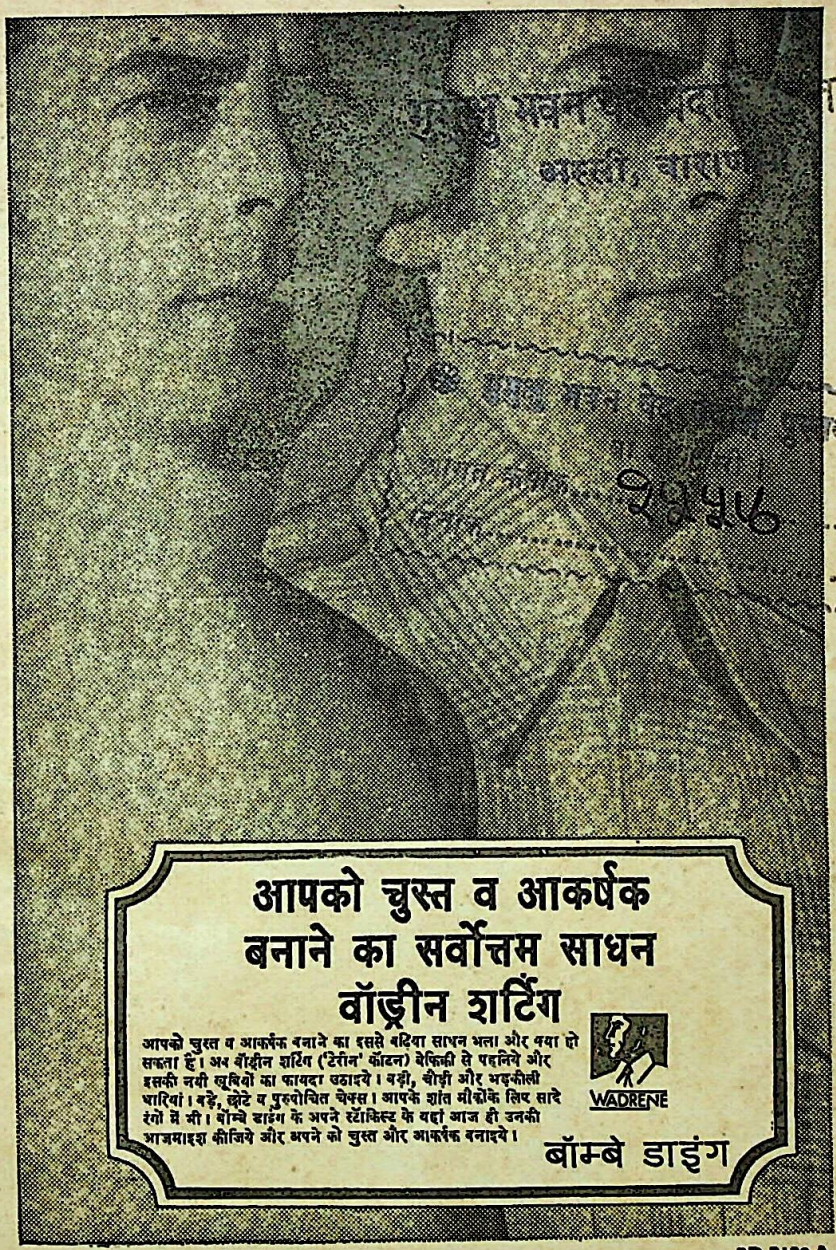

आपको चुस्त व आकर्षक बनाने का सर्वोत्तम साधन वॉड्रीन शर्टिंग

आपको चुस्त व आकर्षक बनाने का इससे बढ़िया साधन भला और क्या हो सकता है। अब वॉड्रीन शर्टिंग ('टेरीन' कॉटन) बेफिक्री से पहनिये और इसकी नयी खूबियों का फायदा उठाइये। बड़ी, चौड़ी और भड़कीली धारियां। बड़े, छोटे व पुरुषोचित चेक्स। आपके शांत मौकों के लिए सादे रंगों में भी। बॉम्बे डाइंग के अपने स्टॉकिस्ट के यहां आज ही उनकी आजमाइश कीजिये और अपने को चुस्त और आकर्षक बनाइये।

WADRENE

बॉम्बे डाइंग

BD. 2190 A

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जीवनोपयोगी साहित्य

(हरिकिशनदास अग्रवाल द्वारा लिखित)

		मूल्य
१. पीस आफ माइण्ड	(अंग्रेजी में)	३–००
२. क्वायटर मोमेंट्स	(अंग्रेजी में)	२–००
३. आध्यात्मिक पिक्टोरियल	(हिन्दी/अंग्रेजी)	३–००
४. संसार का सार	(हिन्दी में)	३–००
५. ज्ञान साधना		२–००
६. वेदान्त नवनीत		१–५०
७. विज्ञान से ज्ञान		१–००
८. वेदान्त का सरल बोध		१–००
९. मुमुक्षु (उपन्यास)		५–००
१०. मन की शांति (पद्य)		४–००
११. हमारी परंपरा		२–००
१२. आराम, सुख, शांति और आनंद		०–५०
१३. अपनी ओर इशारा		१–००
१४. आध्यात्मिक डायरी		६–००
१५. व्यावहारिक जीवन और परमात्मा		१–००
१६. श्मशान यात्रा		०–५०
१७. मेरे १०८ गुरू		३–००
१८. सजगता		१–००
१९. वेदान्त का वैज्ञानिक मनन		१–००
२०. अविरोध–निरोध और स्वबोध		१–००
२१. चिंता और निश्चितता		१–००

तुलसी मानस प्रकाशन

गुप्ता मिल्स स्टेट, रे रोड

बंबई–१०, टेलीफोन नं. ३७२१५१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साधारण साबुनों से धो कर अपने केशों के
नैसर्गिक सौंदर्य को नष्ट न कीजिए...

स्वस्तिक शिकाकाई

शैंपू साबुन का ही प्रयोग कीजिए

मुलायम, रेशमी केशों की नैसर्गिक सौंदर्य-रक्षा के लिए...

स्वस्तिक ऑइल मिल्स, बम्बई।

Shilpi HPMA-46/70 Hindi

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्रायलिन
पत्रव्यवहार स्कूलमें शामिल होइये
और कपड़ोंकी चित्रकारी सीखिए

ये आकर्षक व सुन्दर पर्दे व कुशन, मौलिक कलावन्त वाले आकर्षक कपड़े, हर कमरे में खूबसूरत लैम्प-शेड-सब कुछ आपकी कल्पना और कैमल क्रायलिन रंगों का कमाल है।
सिर्फ़ ६ आसान पाठ्यक्रमों में कपड़ों पर क्रायलिन चित्रकारी, सीखिए। क्रायलिन पत्रव्यवहार स्कूल में शामिल होइये।
डिज़ाइन और प्रशिक्षण पुस्तिका मुफ्त में मिलेगी।
पाठ्यक्रम पूरा होने पर योग्यता प्रमाणपत्र दिया जायेगा।

शुल्क : पूरे पाठ्यक्रम के लिए २० रु.

कैमल क्रायलिन

विवरण के लिए लिखिये :
क्रायलिन पत्रव्यवहार स्कूल
कैम्लिन प्राइवेट लिमिटेड,
आर्ट मटीरियल डिविज़न,
जे. बी. नगर,
बम्बई-५९ (भारत)

PRATIBHA 1510-24 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्या आप का बच्चा दुबला-पतला है? क्या उसके आहार में पोषकता की कमी है? क्या उसे अच्छी तरह भूख नहीं लगती?. तो उसे फ़ेराडॉल दीजिये...

और देखिए कि उसका विकास कितना शक्तिशाली और भरपूर होता है। केवल फ़ेराडॉल ही दूध, अनाजों, सब्जियों, फलों, और अंडों जैसे प्राकृतिक पदार्थों की श्रेष्ठता और पौष्टिकता से समृद्ध है जो यह आपके बच्चों को लोहे, विटामिनों और खनिज पदार्थों के रूप में प्रदान करता है। फ़ेराडॉल में सम्मिलित ये लोहा विटामिन्स और खनिज पदार्थ आप के बच्चे की हड्डियों और दांतों के मज़बूत निर्माण, पुट्ठों के विकास, रक्त की समृद्धि, शारीरिक प्रतिरोधक शक्ति के निर्माण उत्तम दृष्टि और भरपूर तथा स्वास्थ्यपूर्ण विकास के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। अपने बच्चे को रोज़ाना सुबह और रात को फ़ेराडॉल दीजिये। फ़ेराडॉल सादा ही दीजिये या दूध में मिलाकर दीजिये। याद रखिए फ़ेराडॉल पूरे परिवार के लिए उपयुक्त है।

फ़ेराडॉल®

अत्यंत स्वादिष्ट
पूरे परिवार के लिए उपयुक्त

पार्क-डेविस उत्पादन

® रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क, रजिस्टर्ड यूज़र्स-पार्क डेविस (इंडिया) लिमिटेड, बम्बई-७२ एएस.

JAISONS 6)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

She is a hardworking housewife,
yet she enjoys her favourite
MAGAZINE
every day

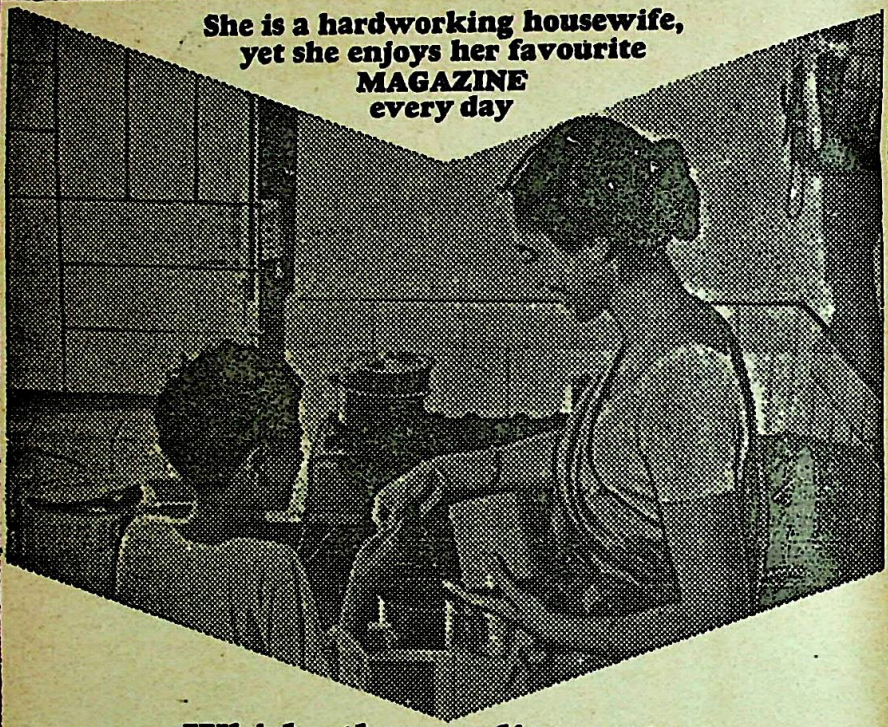

Which other medium caters to such varied interests of millions like her on their own time?

When she takes time out from her daily chores, she's more likely to take up a magazine than take a catnap.

Magazines today are a complete compendium of all that readers really want to know...cooking, home decoration, entertaining, clothes, etiquette, society, child-care, careers, films—everything.

That is one reason why readership of periodicals among aware and interested people is an incredible 92.8% in homes with incomes of Rs. 1501 and above; or why readership of newspapers among today's women graduates and post-graduates is nothing less than 100%.*

There is a newspaper or magazine to reach every reader in his language at the lowest cost per thousand.

* *(A.S.P. Readership Survey)*

Address through the Press —it costs far less

IENS

Inserted in the interest of providing information for better advertising value by

THE INDIAN & EASTERN NEWSPAPER SOCIETY

everest/757b/IEN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुनिया का ७४७ वां आश्चर्य!

होगो! आकाश की ओर टकटकी लगाओ
उस सबसे बडे आकाशचारी जीवके लिये
जो आपकी नजरों से पहले कभी नहीं गुजरा
३५३ टन भार का एक विराट, शालीन,
अपूर्व, रजतवर्णी महाकाय बादलों को एक
नयी आभा से मंडित करता हुआ

मेरा अद्भुत, अभिराम ७४७ यान अपने
विशाल पंखों पर किरण-किरीट सजाये आपकी
सेवा में प्रस्तुत दूर-दूर की यात्राओं के लिए
मेरा ७४७ यान।

एयर-इंडिया

आपका नभ प्रासाद

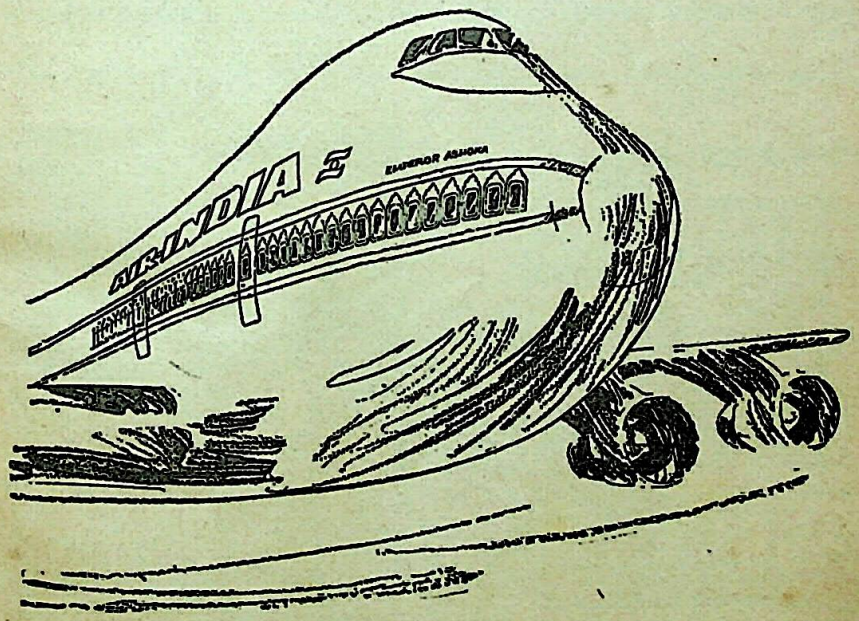

AI-2660(A)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'ब्रोच' क्या है?

डॅगर फोर्स्टसे पूछीये।

कीसीभी प्रकारकी उलझन पैदा करनेवाले स्तरको आकार देनेके लिये डॅगर फोर्स्ट से संपर्क करें।

डॅगर-फोर्स्ट टूल्स लि.

पंच पखाडी, पहला पोखरान रास्ता, थाना (पश्चिम), महाराष्ट्र.

टे. ५९१८९४. टेलेक्ष ०११-२३८१ 'डेगफोस्ट' वी वाय

Foresight/DF-1/71

मुहासों को दूर करने के लिये लिचेन्सा!

- १०८ देशों के डाक्टरों की एक ही सलाह!
- सभी मुख्य केमिस्टों के पास मिलता है।

DZ.1676 A-RM

लाइसिल

जुएँ नाशक

जूएँ लीखों, खुश्की नाशक तेल

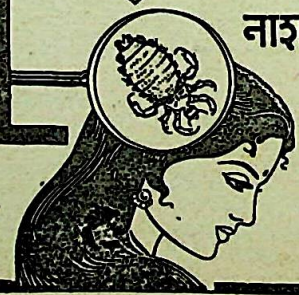

सुजानिल केमो इण्डस्ट्रीज,

चिंचवड, पूना - १९.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नख्वट सुंदर, चंचल प्यारी, नारी-रूप है 'मेफ्रिन' साड़ी !

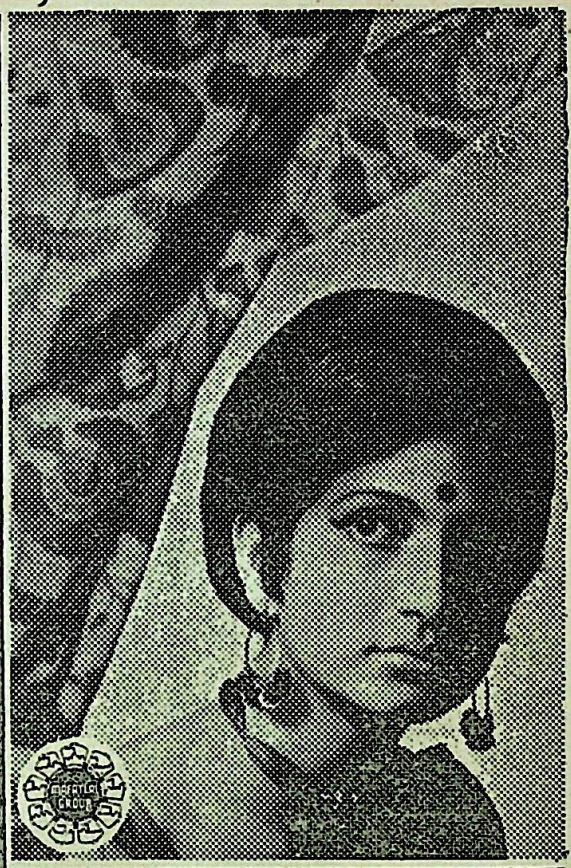

मेफ्रिन

मेफ्रिन साड़ी भी क्या चीज है! हल्की-फुल्की इतनी मानो हवा के ताने-बाने से बुनी गयी हो, गुलाब की पंखुड़ियों-सी मुलायम और चाँदनी की शीतलता लिये हुए। फिर, इस पर मनभावन हल्के-हल्के रंग या शोख रंगीन छपाई। ये सब बातें मिल कर एक अनोखा वातावरण निर्माण करती हैं। इसलिए मेफ्रिन साड़ी पहन कर आप रानी दिखाई देंगी — स्वप्नों की रानी!

मेफ्रिन १००% पॉलिएस्टर साड़ियाँ और पॉलिएस्टर-मिश्रित कॉटन की साड़ियाँ; पॉलिएस्टर-मिश्रित ड्रेस मटीरियल — हल्के-फुल्के लॉन, आरामदेह कैम्रिक और चितचोर रंगबिरंगे पॉप्लिन।

इनके अलावा : शानदार नये-नये रंग और उपाईवाले 'रेपसेल' पॉलिएस्टर-मिश्रित कॉटन शर्टिंग; मनमोहक रंगों, धारियों और चौखानेवाले 'एस्टरकोट' पॉलिएस्टर-मिश्रित कॉटन सूटिंग।

मफतलाल ग्रुप

AIYARS-M.167 HN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

MEHTA NANAVATI & COMPANY

Phones:
Office: 324645
Resi: 365114

Gram: REDJOINT

Branch:
1/6-B ASAFALI ROAD
NEW DELHI-1.
PHONE: 273173
GRAM: "MENTCO"

96, NARAYAN DHURU STREET
BARBHAI MOHALLA,
BOMBAY-3.

WORKS

EVEREST INDUSTRAL CORPORATION PRIVATE LTD, PRATAPNAGAR, BARODA-4

PHONE: 4906. GRAM: EVEREST

"MENTCO" VALVES: STEEL, STAINLESS STEEL, CAST IRON & BRONZE.

Cast steel gate valve Cast steel globe valve

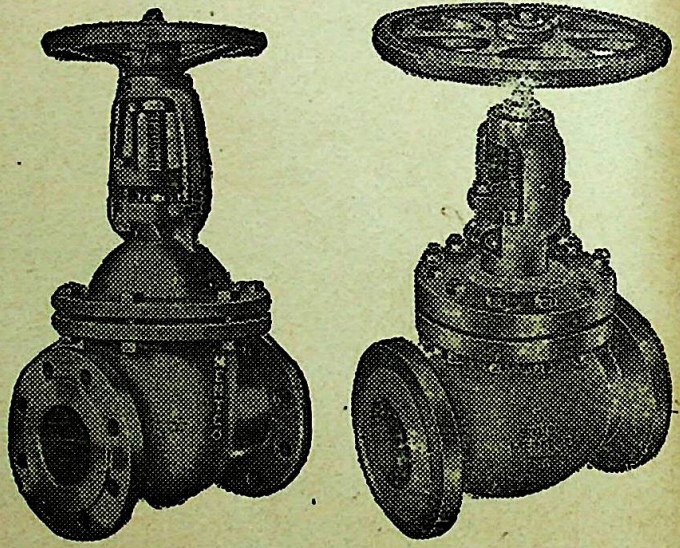

GATE
GLOBE
CHECK
SAFETY
SLUICE
REFLUX
FIRE HYDRANTS
C. I. SPECIALS.

FOR { WATER, STEAM, AIR, CHEMICALS AND OIL . REQUIRED PRESSURE & TEMPERATURE.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

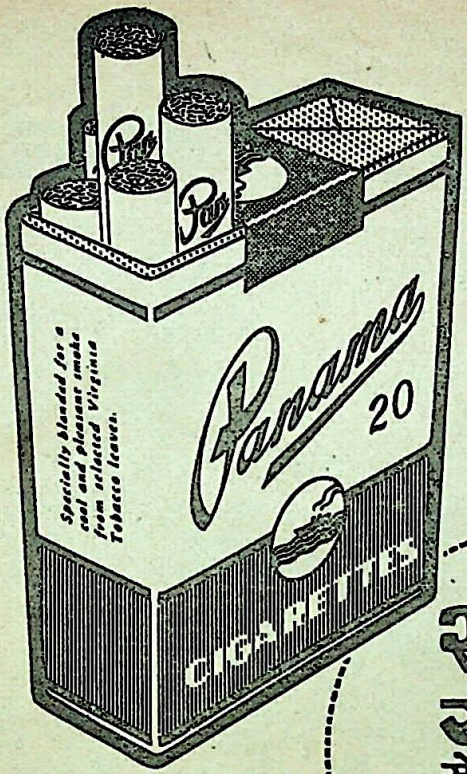

सौम्य और उज्ज्वल सुनहरी वर्जीनिया तम्बाकुओं के सुन्दर योग से बनी पनामा सिगरेटें स्वाद और सुवास में लाजवाब हैं। इसीलिए तो पनामा भारतभर के लक्ष-लक्ष धूम्रपान-प्रेमियों को इतनी पसन्द है।

२५ साल से लक्ष-लक्ष धूम्रपान-प्रेमियों की प्रिय !

पीने में अच्छी
और पिलाने में भी अच्छी!

पनामा

एक अच्छी सिगरेट है!

GT GOLDEN TOBACCO COMPANY LTD

गोल्डन टोबॅको कंपनी लिमिटेड, बम्बई–५६
भारत में इस प्रकार का सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्योग

GT (P)-701 Hin

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मार्लेक्स प्रेशर कुकर

खुशियां लाता है परिवार में

स्टेनलेस स्टील के डब्बों सहित

साईज : ५.५, ७, ८.५, १०, १२ तथा १५ लीटर

मार्लेक्स प्रेशर कुकर रसोईघर में नया आनंद लाता है।

मार्लेक्स ट्रेडिंग कॉरपोरेशन, अम्बर बिल्डिंग, ४९/५१, लोहार चाल, बम्बई-१.

भारत में सभी प्रमुख स्टोर्स में प्राप्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

वर्ष २० जुलाई १९७१ अंक ७

इस अंक में

१७ अदृश्य ग्रंथ
दत्तोपंत

१८ विजय का अमोघ अस्त्र
डा० रामनाथ वेदालंकार

२० कालजयी कला
विभावरी दास

२५ कल का दोजख
वणिक

२८ इंडोनेशिया.....आज!
अविनाश चंद्र

३० भारत के प्रति मेरा अन्याय
हेरोल्ड विल्सन

३३ मृत्युग्रस्त रोगी की मनोदशा
कपिल

३५ मिनि-ट्रैक्टर
विशाख

३६ चीनी-अमरीकी पिंगपांग
अवधनंदन

४१ वेस्ट इंडीज में भारतीय 'अंगद'
सुशीलकुमार दोषी

४४ पथ (कविता)
हरीश भादानी

४५ नयी दिशाएं, नये आयाम
केजिता

संचालक
श्रीगोपाल नेवटिया

परामर्शदाता
सत्यकाम विद्यालंकार

संपादक
नारायण दत्त

सहायक-संपादक
रमेश उपाध्याय

सहकारी
सुरेश सिन्हा
गिरिजाशंकर त्रिवेदी

सज्जाकार
ठाकोर राणा

प्रबंध-संचालक
हरिप्रसाद नेवटिया

व्यापार-व्यवस्थापक
महेंद्र मेहता

प्रबंधक
सोहनराज पारेख

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

४९	वनराज नहीं, वनरानी	मदन मोहन
५४	चित्र की चोरी	अर्चना शर्मा
५६	मांडू	सतीश जायसवाल
६२	ट्रिटिकेल	देवेन मेवाड़ी
६६	विज्ञान का रास्ता	रिची काल्डर
६८	हमारे रंगमंच की पुरुष नायिकाएं	सतीश वर्मा
७६	नशीली याद (कविता)	सुरेश उपाध्याय
७७	क्या करें, पटती नहीं !	सरला सुंदरम्
८१	भावी संकट	विनोबा भावे
८५	मृतक-संस्कार की विचित्र प्रथाएं	राही कौंडिन्य
८९	तारकोल की झील	नेमिशरण मित्तल
९१	सर्वज्ञ (कन्नड कहानी)	सुशीला मूर्ति
१०६	छोटे पक्षी का प्रेम	तुषारकांति घोष
१०९	अभिनंदन का अनुभव (हास्य-व्यंग्य)	अभिनंदन घीया
११३	रवि टिक्कू	सुभाष सक्सेना
११६	नायक-अनायक (हिन्दी कहानी)	स्वयंप्रकाश
१२४	बूढ़ा शिक्षक (बल्गारियन कहानी)	जैको ओजोनोफ
१३३	तीन बिंब (पंजाबी कविता)	चरनजीत सिंह
१३५	विटामिन 'सी' खाइये, जुकाम भगाइये	अशोक मिश्र
१३७	यांत्रिक यातना (पुस्तक-संक्षेप)	अनातोले द्नेप्रोव
१६५	आम बीमा	डा० सुकमाल जैन
१७२	पठनीय पुस्तकें	बिंदु भास्कर
१७४	हंसने में हर्ज क्या !	विनोदीलाल

चित्रसज्जा : वी. समर्थ, ओके, शेणै, राणा

संपादकीय पत्र-व्यवहार का पता : नवनीत हिन्दी डाइजेस्ट, ३४१, ताडदेव, बंबई – ३४
फोन : ३७२८४७

व्यवस्था-संबंधी पत्र-व्यवहार का पता : नवनीत प्रकाशन लिमिटेड, आशीष बिल्डिंग ३३५, वेलासिस रोड, बंबई–३४.

चंदे की दरें : एक वर्ष का १४ रु., दो वर्ष का २५ रु., तीन वर्ष का ३५ रु.

श्री हरिप्रसाद नेवटिया द्वारा नवनीत प्रकाशन लि०, ३४१ ताडदेव, बंबई–३४ के लिए प्रकाशित तथा श्रीवेंकटेश्वर प्रेस, ३६।४८ खेतवाड़ी बैक रोड, बंबई में मुद्रित।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपके और हमारे बीच

३० मई को जून का नवनीत हाथ में आया और तीन दिनों में ही माप्त हो गया। जून का सारा महीना ड़ा है। प्रो० परमशिवय्या का 'रामन्—मेरे रु' सबसे अच्छा लगा। शायद भावातिरेक समझिये तीन-चार स्थलों पर आंखें गीली गयीं। —शंभूदत्त कपिल, हलद्वानी

० ० ०

नवनीत ने आरंभ से अपना स्वरूप खिल भारतीय रखा है। जून अंक में प्रकात 'एक व्यक्ति : चंद झांकियां' इस परंरा के अनुरूप है। यदि भूमिका में या चित्र साथ स्व० दिवेटिया के संबंध में "गुजती के प्रकांड भाषाशास्त्री और गुजराती अंग्रेजी कविता के प्रभाव की अवतारणा रने वाले" ये शब्द जोड़ दिये जाते, तो र-गुजराती पाठकों पर लेख की और गहरी प पड़ती। —उषा निरंजन भट्ट, बलसाड

० ० ०

भाई शाहिद अब्बास अब्बासी को 'मुष्टिहाभारत' की चुस्त 'रनिंग कमेंटरी' के ए बधाई। काश, वे थोड़ी अधिक न्यायद्धि से काम लेते! क्ले का चैम्पियन-पद वंचित किया जाना क्रीड़ा-जगत् की तांत घृणित अन्यायपूर्ण घटना थी। क्ले कसूर इतना ही था कि उसने वियतनाम द्ध में भाग लेने से इन्कार कर दिया। "मेरा यतनामियों से कोई झगड़ा नहीं है," नका कहना था। हत्यारों, बलात्कारियों चैम्पियन बने रहने देने वाले अमरीकी क्सिंग बोर्ड को यह बात बर्दाश्त नहीं हुई! काश, शाहिद भाई को और नवनीत के संपादक को यह पता होता। —एच. कृष्णकांत, बेलूर

० ० ०

स्व० हनुमान प्रसाद जी पोद्दार पर 'भाईजी' बड़ा भावपूर्ण लेख था। पोद्दार जी का फोटो छापकर आपने हजारों पाठकों को इस नितांत प्रचार-विमुख संस्कृति-सेवक की छवि देखने का अवसर दिया।

—कु. चंद्रशेखर प्रसाद, बांसवाडा

० ० ०

जून ७१ में मास्टर चंदगीराम का लेख 'सार्थकता की खोज मुझे यहां तक ले आयी' बड़ा सारगर्भित रहा। पढ़ते ही आलस्य की मूर्छा खंडित हो जाती है और मन की ऊर्जा अंगार की भांति दहकने लगती है।

—राजाराम चौरसिया, उमरिया

० ० ०

नवनीत के प्रत्येक अंक में बहुत कुछ पठनीय एवं प्रेरणाप्रद होता है। किंतु कहना पड़ेगा कि नवनीत लोकप्रिय और उच्चस्तरीय पत्रिका होते हुए भी पूरी तरह युवकों के आकर्षण का केंद्र नहीं हो पाया। कारण, संभवतः नूतन की अपेक्षा पुरातन का प्राबल्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है। आपसे अपेक्षा है कि नूतन की तरह पुरातन को भी नूतन करेंगे। —श्रीकांत चौधरी, दमोह

० ० ०

मई ७१ में प्रकाशित कोनराड हिल्टन का 'आपका स्वागत है' से काफी प्रभावित हुआ। काश, हम भारतीय नवयुवक इससे प्रेरणा ले सकते, जहां हमें आत्मनिर्भर न होकर पिता पर आश्रित रहना सिखाया जाता है। —उ. सि. चंदेला, अकलतरा

० ० ०

मई अंक में प्रकाशित 'फूलों की घाटी' के विषय में कहीं और भी पढ़ा था, लेकिन इतना स्पष्ट चित्र नहीं। मन फूलों की घाटी की कल्पना से सराबोर हो उठा। काश, वहां की सैर कर पाता! लेकिन शरीर जीर्ण और अस्वस्थ है। शायद, अगले जन्म में इच्छा-पूर्ति हो। —ऋतलाल वर्मा, देवीसराय

० ० ०

क्या १९०१ में नोबेल पुरस्कार केवल रोंटजेन को ही मिला था कि वे प्रथम पुरस्कार विजेता हैं? —कमेंदु शेखर शिशिर, अवांस

उत्तर : १९०१ में रोंटजेन के साथ निम्नलिखित पांच सज्जनों को नोबेल पुरस्कार मिले थे—जे. एच. वान हाफ, रसायन-शास्त्र; ई.ए.फान बेहरिंग, चिकित्साशास्त्र; आर. एफ. ए. सुलि-प्रूधोम, साहित्य; जे. एच. डचूनैंट व एफ. पैसी, शांति। —संपादक

० ० ०

नवनीत के लिए एक माह बड़ी लंबी प्रतीक्षा करनी पड़ती है। क्या इसे दैनिक या साप्ताहिक नहीं कर सकते? नवनीत में उर्दू के शब्दों में अक्सर नुक्ता नहीं लग पाता। क्या प्रकाशन-विभाग इस ओर सतर्क रहेगा? —लक्ष्मीनारायण 'शोभन' गुना

उत्तर : प्रतीक्षा का अपना आनंद है। नवनीत केवल वहीं नहीं नुक्ते लगाने के पक्ष में है, जहां उसके बिना अर्थ का अनर्थ होता हो। —संपादक

० ० ०

मई अंक में चंद्रकांत बक्षी की कहानी 'नेतिहास' बहुत ही अच्छी लगी। नये भारत में छोटी जगहों की बदलती पृष्ठभूमि और उसके साथ ही साथ बदलते हुए भारतीय जीवन का बड़ा मार्मिक चित्र इस कहानी में खींचा गया है। लेखक, संपादक दोनों ही बधाई के पात्र हैं। —मंजुला अग्रवाल, मेरठ

० ० ०

नवनीत में इधर कुछ अच्छी कविताएं देखने को मिल रही हैं। लेकिन एक विनम्र सुझाव है कि कविताएं मैटर के बीच में इस प्रकार न दिया करें कि उनका व्यक्तित्व नष्ट होकर या घटकर 'फिलर' जैसा प्रतीत होने लगे। —कुमारी मंजु शर्मा, कानपुर

० ० ०

भूल-सुधार

जून ७१ के पृष्ठ ६५ पर छपी कविता 'निवेदन' के कवि रमाकांत 'चंचल' नहीं, रमाशंकर 'चंचल' हैं। उसी अंक में पृष्ठ ५६-५७ पर छपे मास्टर चंदगीराम के चित्र बैतूल के गोंडवाना स्टूडियो के सौजन्य से प्राप्त हुए थे। असावधानी से इसका उल्लेख छूट गया। इन असावधानियों के लिए हम क्षमाप्रार्थी हैं। —संपादक

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नूतन-पुरातन ज्ञान-विज्ञान
और मनोरंजन

अदृश्य ग्रंथ

बौद्ध सूत्रग्रंथ तब केवल चीनी लिपि में मिलते थे। तेत्सुजेन उन्हें जापानी लिपि में मुद्रित कराना चाहता था। जापानी में ब्लाक बनवाने के लिए काफी धन आवश्यक था। तेत्सुजेन चंदा एकत्र करता रहा। पर्याप्त धन जुटाने में उसे दस वर्ष लगे। किंतु तभी यूजी नदी में बाढ़ आ गयी। तेत्सुजेन ने सारा धन सहायता-कार्य में लगा दिया और फिर से चंदा जुटाने लगा। दस वर्ष और लग गये पर्याप्त धन जुट पाने में। किंतु तभी महामारी फैली और तेत्सुजेन ने सारा धन सेवा-कार्य में व्यय कर दिया। इस बार उसे पर्याप्त धन जुटा पाने में बीस वर्ष लगे। अंत में ब्लाक बने और सूत्रग्रंथ जापानी में छपे—अत्यंत सुंदर। आज भी जापानी गृहस्थ अपने बच्चों को बताया करते हैं कि तेत्सुजेन ने सूत्रग्रंथों के तीन संस्करण बनवाये थे—पहले दो संस्करण अदृश्य थे, और अधिक सुंदर थे।

—दत्तोपंत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विजय का अमोघ अस्त्र

डा० रामनाथ वेदालंकार

प्रजापति के द्विविध पुत्र थे। एक देव और दूसरे असुर। देव छोटे थे, असुर बड़े। उनमें परस्पर स्पर्धा आरंभ हो गयी। दोनों ने सोचा—हम इन्हें 'उद्गीथ' से जीत लेंगे।

देवों ने वाणी से कहा—"तुम हमारे लिए उद्गीथ बनो। तुम हमारे यश और उत्कर्ष के लिए गान करो।"

परार्थ-व्रती वाणी ने अपना जो भोग या ऐश्वर्य था, वह देवों को अर्पित कर दिया। अपने हिस्से में केवल कल्याण-भाषण का गुण रखा। वाणी के कल्याण-भाषण से देवों को भोग प्राप्त होने लगा। उनकी समृद्धि बढ़ने लगी। वे शक्तिशाली होने लगे।

असुरों ने सोचा, इस प्रकार तो देव एक दिन हमें पूर्णतः जीत लेंगे। वे वाणी के पास पहुंचे और उसे पाप से विद्ध कर दिया। तब वह कल्याण-अकल्याण सब कुछ बोलने लगी। असुरों की चाल सफल हो गयी। जिस वाणी रूपी अस्त्र पर देव भरोसा किये बैठे थे, वह कुंठित हो गया।

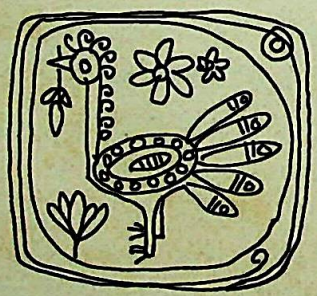

तब देवों ने घ्राणेंद्रिय से कहा—"तुम हमारे लिए उद्गीथ बनो, तुम हमारी विजय का गान करो।"

"अच्छा।" घ्राणेंद्रिय ने कहा और वह विजय-प्रयास में लग गयी। घ्राणेंद्रिय का भी जो भोग था, वह उसने देवों को देना शुरू कर दिया, अपने पास केवल कल्याण-गंध के ग्रहण का गुण रखा। शुभ गंध-ग्रहण से देव अपना विकास करने लगे। वे कभी पतन-कारिणी गंध को नहीं सूंघते थे, कल्याण-गंध को ही ग्रहण करते थे।

असुरों को भय हुआ। उन्होंने घ्राणेंद्रिय को भी पाप-विद्ध कर दिया और वह शुभ-अशुभ सब कुछ सूंघने लगी।

इस दूसरे अस्त्र के भी कुंठित हो जाने पर देवों ने आंखों से कहा—"तुम हमारे लिए उद्गीथ बनो, तुम हमारे महत्त्व के लिए गान करो।"

आंखें भी अपना भोग देवों को देने लगीं और स्वयं कल्याण-दर्शन का व्रत ले लिया। आंखों की दर्शन-शक्ति से देव सभी ज्ञान-विज्ञानों में निपुण होने लगे। उनका उत्कर्ष उत्तरोत्तर बढ़ने लगा।

असुरों को चिंता हुई—यदि आंखें इसी प्रकार इनकी सहायता करती रहीं, तो एक दिन ये संसार में सबसे ऊंचे हो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

। बस, तुरंत उन्होंने आंखों को भी
द्ध कर दिया। पाप से विद्ध आंखें
शुभ सब रूपों को देखने लगीं। देवों
ू आयुध भी बेकार हो गया।
देवों ने कानों से कहा –"तुम हमारे
थ बनो, तुम हमारी महिमा को चार
गाओ।"
नों ने कहा–"हम शास्त्र श्रवण कराते
रूपदेश श्रवण कराते हैं, समस्त लोक-
र में साधन बनते हैं, हम अवश्य तुम्हें
की सीमा पर पहुंचा देंगे।"
र कान भी अपना भोग देवों को देने
स्वयं कल्याण-श्रवण करने लगे। देव
ति शास्त्र और सदुपदेश श्रवण कर
उठने लगे। असुरों को यह सहन न
उन्होंने कानों को भी पापविद्ध कर
वे श्रव्य-अश्रव्य सब कुछ सुनने लगे।
ा यह साधन भी विफल रहा।
र देवों ने मन से कहा –"तुम हमारे
थ बनो, तुम हमें विजय दिलाओ।"
भी अपना भोग और ऐश्वर्य देवों
ं लगा और स्वयं कल्याण-संकल्प में
हो गया। ऊंचे-ऊंचे संकल्प करते
उन्नत होने लगे। उन्हें विश्वास हो
कि अब तो हम अवश्य ही असुरों को
कर लेंगे।

किंतु असुरों ने मन को भी पापविद्ध कर दिया। मन भी शुभ-अशुभ सब प्रकार के संकल्प करने लगा। देवों ने देखा, उनके सभी हथियार विफल होते जा रहे हैं। करें तो क्या करें?

अंत में उन्होंने प्राण से कहा–"कृपा करके आप ही हमारे उद्गीथ बनें, आप ही हमारे लिए विजय-गान करें।"

सचमुच प्राण का अवलंब लेकर वे विजयी होने लगे, असुर प्राण को भी पापविद्ध करने दौड़े, किंतु जैसे पत्थर की टक्कर से मिट्टी का ढेला चूर-चूर हो जाता है, वैसे ही वे प्राण से टकराकर विशीर्ण हो गये।

देवों की विजय हुई।

जो कोई अपने हृदय में चलने वाले देवासुर-संग्राम में इस प्राण का सहारा लेता है, वह विजयी होता है। इस प्राण का नाम 'अयास्य' है; क्योंकि यह मुख के अंदर रहता है (अयम् आस्ये)। इस प्राण को 'आंगिरस' भी कहते हैं, क्योंकि यह अंगों का रस है (अंगानां रसः)। इसी प्राण की 'दूः' संज्ञा भी है, क्योंकि मृत्यु इससे दूर रहती है। अतएव जो प्राण के रहस्य को जान लेता है, और इसका प्रयोग करता है, वह मृत्युंजय हो जाता है।

[बृहदारण्यक १,३ के आधार पर]

★

सत्य कभी मुरझाता नहीं; उसकी मौत नहीं होती; वह जीवन को उजागर करके राह दिखाने वाला विलक्षण दीपक है।

—डा० शिवराम कारंत

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

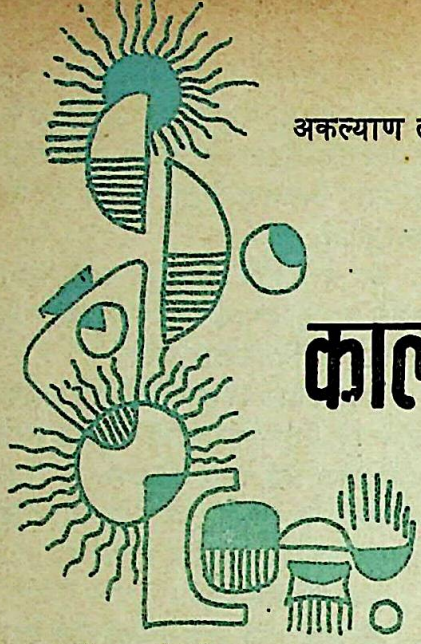

कला के साथ कल्याण का ही प्रास है
अकल्याण तो काल बनकर कला को ग्रस लेता है....
एक मार्मिक जातक-कथा, जो एक
सिंहली महाकाव्य की कथावस्तु भी है।

कालजयी कला

विभावरी दास

पुण्यमयी काशी में जब महिमाशाली राजा ब्रह्मदत्त राज्य करता था, बोधिसत्व ने विशुद्ध आचरण वाले एक संगीतकार के घर में जन्म लिया। बच्चा बड़ा ही प्यारा और गोल-मटोल था। उसका नाम रखा गया गुट्टिल। "पूत के पांव पलने में ही दीख जाते हैं," और "होनहार बिरवान के होत चीकने पात" इन कहावतों की सत्यता का प्रमाण बनने के लिए ही मानो विधना ने गुट्टिल को गढ़ा था।

मजे से मां की गोद में सोते-सोते दूध पी रहा हो और कहीं से संगीत का नाद उसके कानों में प्रवेश करे, तो वह जाग उठता और मां के जीवंत अमृत-कलश से मुंह हटाकर उसी संगीत के सुर में सुर मिलाकर आं-ऊं करके गाता। रेंगना-घुटनों के बल चलना सीखने के बाद तो चाहे घर में कहीं भी छोड़ा जाय, सीधा अपने पिता की वीणा के पास पहुंच जाता और अपनी नन्ही सुकोमल उंगलियों से वीणा के तारों को टुनटुनाता।

बेटा तनिक और बड़ा हुआ तो परम-प्रसन्न पिता ने उसके लिए एक सुंदर नन्ही-सी वीणा बनवायी। पहले ही दिन से बालक गुट्टिल वर्षों साधना किये हुए सिद्धहस्त वैणिक की भांति वीणा बजाने लगा। वह वीणा बजाता और गायन द्वारा स्वयं अपनी संगत करता, जैसा कि पूर्वकाल में पद्धति थी। धन्यभाव से पिता अपनी समस्त शक्ति और अपना समस्त संगीत-ज्ञान पुत्र के प्रशिक्षण पर खर्च करने लगा।

शुक्लपक्ष के चंद्र की भांति बालक गुट्टिल देहवृद्धि और कलावृद्धि पाने लगा। नवयौवन के ज्वार में भी गुट्टिल शांति का अवतार प्रतीत होता था। उसके हाव-भाव

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ल-ढाल से, बातचीत से और सबसे
उसके संगीत से सदा शांति की सरिता
करती थी।

नो उसकी शांति की परीक्षा लेने के
ही दैव ने उसके वृद्ध माता-पिता की
ोति बुझा दी। मगर गुट्टिल ने अपने
पितृ-प्रेम से उनके जीवनों को प्रकाश-
नाये रखा। श्रवण कुमार और गुट्टिल
किसकी मातापितृ-भक्ति अधिक गहरी
कहना कठिन है। परंतु निश्चय ही
के माता-पिता का सुख बढ़कर था;
गुट्टिल न केवल सेवा द्वारा उन्हें सब
से शारीरिक आराम पहुंचाता था,
अपने दिव्य संगीत से उन्हें लोकोत्तर
नंद भी प्रदान करता था। उसकी
तता और कलावंतता की ख्याति
के गली-मुहल्लों में फैलते-फैलते
राज ब्रह्मदत्त के कानों तक भी
।

क दिन राजा ब्रह्मदत्त ने गुट्टिल को
में बुलवाया और उसका संगीत
ऐसी कंठ-माधुरी तथा ऐसे भावपूर्ण
ास्त्रशुद्ध वीणावादन की उसने आशा
ी थी। वह आनंद में भर उठा। उसने
'गुट्टिल, तुम गायकों के मुकुटमणि
तुम्हें प्रधान राजगायक की पदवी
ाहता हूं।" और वह युवा गायक का
ध्यान से देखने लगा। कारण, वह
मातापितृ-भक्ति की परीक्षा भी
चाहता था।

ट्टिल ने विनम्रतापूर्वक उत्तर दिया—
"राजन्, आपकी कृपा के लिए मैं आभारी हूं। परंतु प्रधान राजगायक का पद मैं स्वीकार नहीं कर सकता; क्योंकि यह पद स्वीकार करने से माता-पिता की सेवा में बाधा पड़ेगी।"

राजा ब्रह्मदत्त ने सिंहासन से उतरकर उसे गले लगा लिया और एक अमूल्य रत्न-हार उसके गले में डालते हुए कहा—"हम तुम्हारी मातापितृ-भक्ति में बाधक नहीं बनना चाहते। उनकी भरपूर सेवा किया करो, पर सेवा से बचे क्षणों में कभी-कभी आकर अपने अलौकिक संगीत से हमारी आत्मा का सिंचन भी किया करो। तुमसे हम इससे अधिक कुछ नहीं चाहते।"

गुट्टिल 'ना' नहीं कह सका। ब्रह्मदत्त ने अपने को कृतार्थ माना। दोनों में गहरी मैत्री हो गयी, जो उम्र बीतने के साथ गाढ़तर होती गयी।

काशी दरबार के गायकोत्तम गुट्टिल की ख्याति सोलहों महाजनपदों में फैल गयी। संगीतज्ञों में कहावत ही बन गयी— "शास्त्र में दंतिल, गायन में गुट्टिल।"

एक बार काशी के कुछ वणिक व्यापार-

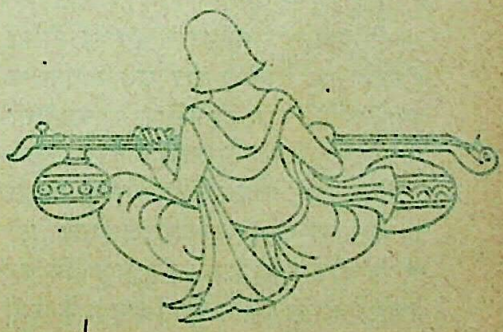

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कार्य से सिंहल गय। वहां एक प्रीतिभोज में उन्हें वहां के दिग्गज संगीतकार मूसिल का संगीत सुनाया गया। रसज्ञ काशीवासी वणिकों से जब पूछा गया कि संगीत कैसा था, तो वे बोले– "यह भी कोई संगीत है! अगर सच्चा संगीत सुनना हो, तो हमारे शहर आकर राजगायक गुट्टिल का संगीत सुनिये।"

मूसिल ने यह सुना और क्रोध व असूया से जल-भुन गया। साथ ही उसे कौतूहल भी हुआ। वह काशी पहुंचा। राजमहल में उसने गुट्टिल का संगीत सुना। ईर्ष्या और असूया के बावजूद उसे तन-मन की सुध न रही।

दरबार समाप्त होने पर मूसिल गुट्टिल के पीछे-पीछे गया और वह अपने घर में प्रवेश करे, उसके पूर्व साष्टांग प्रणाम करके प्रार्थना की कि मुझे अपना शिष्य बनाकर मेरा उद्धार करें। गुट्टिल ने ध्यान से उसके चेहरे को देखा। वहां ईर्ष्या और असूया तांडव कर रही थी। फिर भी उसने कहा–"तथास्तु, मेरे घर पर ही रहो; मुझे जो कुछ भी आता है, तुम्हें सिखा दूंगा।"

नौ वर्षों तक मूसिल गुट्टिल से संगीत सीखता रहा। कोई बात उसे दुबारा न बतानी पड़ती। उसकी प्रतिभा की चर्चा भी धीरे-धीरे फैलने लगी। लेकिन लोग कहते– "गुट्टिल जी ने चेले को तैयार तो खूब किया है। मगर गुरु गुरु ही रहेगा, चेला चेला ही।" गुट्टिल को एक ही बात का दुःख था कि वह अपने शिष्य के मन से ईर्ष्या-असूया के भूतों का उच्चाटन नहीं कर सका था।

एक दिन मूसिल ने पूछ ही तो लिया– "गुरुजी, आपने मुझे बहुत कुछ सिखाया तो है, किंतु कभी मुझे राजदरबार में नहीं ले गये। क्या मेरी प्रतिभा से आपको खतरा अनुभव होता है?"

यह सुनकर गुट्टिल को अपार वेदना हुई। उसने अपनी व्यथा को हृदय में ही दबाकर कहा–"नहीं बेटा, तुम्हें कल राजमहल ले जायेंगे।"

अगले दिन राजसभा में राजगायक ने राजा ब्रह्मदत्त को अपने शिष्य का परिचय कराया। राजा की आज्ञा के अनुसार मूसिल ने एक 'प्रबंध' (संगीत-कृति) का गायन किया। उसका स्वर-गांभीर्य, उसका शास्त्र-पांडित्य नितांत प्रशंसनीय था। मगर जो 'प्रबंध' चुना था, उसका विषय था आखेट, निरीह प्राणियों का बाण और भालों से वध, उनका क्रंदन। श्रोताओं का मन मुदित नहीं हुआ।

राजा ब्रह्मदत्त ने मूसिल को संबोधन करके कहा–" तुम्हारी साधना और प्रतिभा प्रशंसनीय है। परंतु कला से हृदय में कारुण्य और मार्दव आना चाहिये। तभी कला में कमनीयता आती है।" और उसने पचास स्वर्णमुद्राएं उसे देनी चाहीं।

किंतु मूसिल ने झुके सिर और उद्धत कंठ से कहा –"राजन्, मैं आपसे पुरस्कार नहीं, न्याय चाहता हूं। प्रधान राजगायक का पद राज्य के सर्वश्रेष्ठ गायक को मिलना चाहिये। गुट्टिल मेरे गुरु अवश्य हैं, किंतु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नों में कौन श्रेष्ठ गायक है, यह निर्णय
का समय अब आ गया है।
जसभा पर मानो वज्रपात हो गया।
व क्षण स्तब्ध और मूक बने रहे। अंत
दत्त ने गुट्टिल से कहा—"राजगायक!
आस्तीन में सांप को पालकर बुरा
गुरुद्रोह का विषैला फल मूसिल को
ही पड़ेगा। परंतु उसने जो न्याय
है, वह हमें देना ही पड़ेगा। आज से
ातवें दिन इसी समय, इसी जगह
की श्रेष्ठता की परीक्षा होगी।"
ट्टिल अभी भी चेत नहीं पाया था।
नींद में चल रहा हो, या मंत्राविष्ट
तरह वह वन की ओर चल पड़ा।
पहुंचकर वह फूट-फूटकर रो पड़ा-
ल, तुमने यह क्या किया! तुम चाहते
स्वयं ही तुम्हारे हक में प्रधान राज-
का पद खाली कर देता! तुमने अपने
का छोटापन इस तरह सबके सामने
बाड़कर रख दिया! जिसे विद्या दी,
सके साथ मैं होड़ करूं?"
ट्टिल का क्रंदन स्वर्ग में इंद्र के कानों
हुंचा। उसने प्रत्यक्ष होकर कहा—
कार, निश्चित रहो। इस स्पर्धा में
अंततः तुम्हारी ही होगी।" गुट्टिल
र दिया—"देवराज, मैं विजय-
की चिंता नहीं करता। शिष्य से
ें गुरु गर्व अनुभव करता है। मैं अपने
का कल्याण-मात्र चाहता हूं।"
र मूसिल किसी भी तरह, चाहे छल-
भी स्पर्धा में विजयी होना चाहता

था। रात को उसने चुपचाप गुट्टिल की वीणा का एक तार नीचे से आधा काट दिया—इतनी सफाई से कि ऊपर से देखने पर तार में कोई नुक्स दिखाई न दे।

सातवां दिन भी आ पहुंचा। राजसभा-भवन घंटों पहले से ही खचाखच भर गया था। निश्चित समय से दस क्षण पहले दोनों गायक अलग-अलग द्वारों से प्रविष्ट हुए। एक द्वार से गर्वीला, छबीला मूसिल आया—पीतांबर और रत्नहार पहने। दूसरे द्वार से आया वृद्ध गुट्टिल—श्वेत केश, श्वेत वसन, निराभरण। ठीक समय पर वंदिमागधों की "जयजीव!" ध्वनि के पीछे-पीछे राजा ब्रह्मदत्त पधारा और राजसिंहासन पर विराजित हुआ।

पहले मूसिल को संगीत प्रस्तुत करने का आदेश हुआ। मूसिल ने अपनी स्वर्णमंडित वीणा हाथ में ली और वीररस का एक गाना आरंभ किया। योद्धाओं का आवेश, धनुष का टंकार, विजेताओं का जयघोष, मरकर गिरते हुओं का चीत्कार उसमें मुखरित हो रहा था। क्रूरता, हिंसा मानो वातावरण को विलोड़ित करने लगी। श्रोताओं को स्मरण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं रहा कि व राजसभा में हैं या रणांगण में।

फिर गुट्टिल की बारी आयी। उसने शांतरस का एक प्रबंध चुना था। जीवन और जगत् की दुःखमयता उसका विषय थी। श्रोताओं के दिल पसीज उठे। परंतु उन्हें ऐसा नहीं लगा कि तरुण मूसिल की रसावेशमयी संगीतधारा के समक्ष गुट्टिल का गायन आज टिक पायेगा।

मूसिल ने इस बार शृंगाररस चुना। काम और कामना की ज्वाला धधक उठी। श्रोता मदविह्वल हो उठे। मूसिल के गर्व का पार न रहा।

जब गुट्टिल ने दुबारा वीणा हाथ में ली, उसके गीत का विषय यह था—दुःख तृष्णा का कड़वा फल है; तृष्णा जीवन के स्रोत को कलुषित कर देती है। श्रोताओं के मन में शांति छाने लगी। साथ ही उन्हें तरस भी आने लगा कि आज यह प्यारा बूढ़ा कलाकार पराजित हो जायेगा। क्योंकि आज माया ने उनके हृदयों को आवृत कर लिया था।

अरे यह क्या! बेसुरे टंकार के साथ गुट्टिल की वीणा मूक हो गयी। उसका एक तार टूट गया। किंतु गुट्टिल को मानो इसका भान ही नहीं। वह गाता जा रहा था—दुःखों के पार अर्हत पदवी पर पहुंचाने वाले धर्म-मार्ग का वर्णन भावपूर्ण स्वरों में करता जा रहा था।

जब वह सम्यक् बुद्धत्व का वर्णन गाने लगा, तब उसके मुखमंडल से अपूर्व शांत तेज छलक रहा था। उस तेज से सभांगण में आसीन श्रोतृवर्ग के अंतःकरणों से सारा कल्मष और काठिन्य धुलकर वह गया। माया और तमस् की जगह वहां विवेक और शम विराजने लगे। जब गुट्टिल का गायन समाप्त हुआ, काफी देर तक किसी को साधुवाद कहने की भी नहीं सूझी—इतने भावपरवश हो गये थे सब लोग।

अंत में राजा ब्रह्मदत्त सिंहासन से उतरा। अपने कंठ से एक महामूल्यवान मुक्ताहार निकालकर उसने गुट्टिल के चरणों में अर्पित किया और हाथ जोड़कर नमस्कार किया। सभा ने मुक्तकंठ से जय-जयकार किया। राजा मूसिल को भी कुछ पुरस्कार देना चाहता था। किंतु मूसिल वहां हो तब न? पता नहीं कब वह वहां से चला गया था। और फिर कभी काशी में उसकी परछाई भी नहीं देखी गयी।

संगीत भावनाओं की शीघ्रलिपि है। जो भावनाएं शब्दों में बड़ी मुश्किल से ही अपने को बंधने देती हैं, संगीत में सीधे ही मनुष्य के पास पहुंच जाती हैं; इसी में संगीत की शक्ति और महत्त्व है। —तालस्ताय

संगीत के माध्यम से भावनाएं अपने आप में रमण करती हैं। —नीत्शे

संगीत अन्य कलाओं जैसा नहीं, वह चारों ओर से घेराव कर लेता है। —जां कोक्तू

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

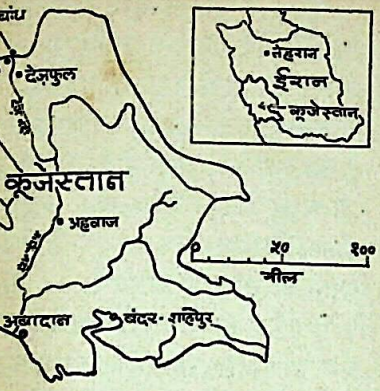

● वणिक् ●

कल का दोजख : आज का बहिश्त

का दक्षिण पश्चिमी प्रांत कूजे-
न। दिन के वक्त १३० डिग्री की
न खेती न वन-संपत्ति। रेत के ऊंचे
जो आंधी के साथ मिनिटों में इधर
र होते रहते हैं। यों उसमें पांच-पांच
बहती हैं, मगर जागरोस पर्वतों से
र वह सारा पानी सीधा फारस की
में जा गिरता है और कूजेस्तान का
ा ही रह जाता है।
तु सदा ऐसी हालत नहीं थी, न सदा
हेगी।
ा पूर्व छठी सदी में फारस के दिग्वि-
म्राट् दारयवहु या दारा ने कूजेस्तान
दियों पर बांध बंधवाकर वहां नहरों
ल बिछवा दिया था। और कूजेस्तान
ा था फारस का खलिहान। सदियों
हां गेहूं और गन्ने के खेत लहलहाया
ये।
र आया खुदा का कहर चंगेज, जिसके
ी टापों ने कूजेस्तान की लहलहाती
को रौंद डाला और फिर तैमूरी
सेनाओं ने इसे मलियामेट किया। इसके बाद कूजेस्तान के अच्छे-बुरे दिन आते-जाते रहे लेकिन वर्तमान युग शायद कूजेस्तान का स्वर्णयुग है।

कुछ समय पहले तक कूजेस्तान को जलते अंगारों के दोजख का नाम दिया जाता था, पर आज वह सरसब्ज बहिश्त होने जा रहा है। ईरान के शाह ने कहा कि था कि धरती पर के इस दोजख से ही हमारा देश दारिद्रय से मुक्त होगा। यही भूमि हमें भरपेट अन्न देगी और हमें धनी बनायेगी।

शाह के इस अरमानको पूरा करने के लिए कूजेस्तान के गर्भ में उपस्थित तेल और गैस तथा उसके धरातल पर बहती पांच विशाल नदियां उपस्थित थीं।

वर्षों पहले की बात है, हवाई जहाज से उस 'मरुभूमि' के बहुत ऊपर उड़ते समय एक अमरीकी 'किसान' का मन ललचा गया था। इतनी जमीन और इतना पानी! अमरीकी 'किसान' लोभ संवरण नहीं कर सका और आज वह करोड़ों की पूंजी लगा-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर वहां हजारों एकड़ का मालिक है और उसकी योजना है वहां गेहूं, रुई, चुकंदर, तिलहन, शाक-सब्जी उगाने और, पशुपालन करने की।

वही नहीं, एक ईरानी भी, जो अमरीका में जाकर अमरीकी 'किसान' बन चुका था, अब अपने देश में लौट आया है। लौटकर उसने कूजेस्तान के उत्तर में देज नदी के तट पर ४५ हजार एकड़ जमीन ली और उस पर सात-आठ करोड़ रुपया खर्च करके अब वह करोड़पति से अरबपति होने के अरमान पूरे करना चाहता है।

कूजेस्तान के उत्तर-पूरब में जागरोस पर्वतमाला है, जिससे निकलकर दक्षिण की ओर बहती पांच बड़ी नदियां फारस की खाड़ी में गिरती हैं। यों समझिये कि वह प्रदेश वहां का पंजाब रहा है, पर बांधों के अभाव में सिंचाई के बिना वहां खेती-बाड़ी नहीं हो सकती थी और पांच-पांच बहती नदियों के होते हुए भी यह प्रदेश आग-सा तपता रहता था। ईरान के शाह ने निर्णय किया कि नदियों पर बांध बनाकर सिंचाई की जाये, धरती धान्य से पूर्ण हो, धरती फोड़कर काला सोना (तेल और गैस) बाहर निकाला जाये और देश धनाढ्य हो।

मध्य-पूर्व की तेल-कथा सर्वविदित है। इस काले सोने के कारण अनेक नन्हे-नन्हे देश भी मालामाल हो गये हैं। धरती की संपदा का क्या अंत! उसे प्राप्त करने का सद्भाग्य चाहिये, सत्साहस चाहिये और फिर सत्प्रयास।

ईरान के शाह ने वर्षों पहले जान लिया था कि कोरे गरूर म कुछ रखा नहीं, धन अपना है, अपनी धरती में गड़ा है, पर उसे खोद निकालने के उपकरण अपने पास नहीं हैं, तो क्यों झूठी शेखी में बैठे रहें या उद्योगशीलों से झगड़ा मोल लें? उन्होंने अमरीकी, ब्रिटिश और साम्यवादी तेल-उत्पादकों से साझे-समझौते किये। परिणामस्वरूप तेल की आमदनी से नदियों पर बांध बंध रहे हैं, प्राकृतिक गैस से खाद बनती है, जो खेत को सिंचाई और खाद मुहैया करती है, और बिजली तो देश की संपन्नता का प्रतीक है ही।

पिछले साल ईरान को तेल के अपने भागीदारों से करीब ८ अरब रुपये मिले। ईरान ने साम्यवादी देशों को ४ अरब का तेल बेचकर बदले में मशीनें मंगवाने का करार भी किया है। कूजेस्तान की तेल-उत्पादन कंपनियों से ईरान के सरकारी-आयोग को पांच लाख बैरल तेल रोज मिलता है।

ईरान का तेल भारत में भी आता है और दक्षिण अफ्रीका में भी जाता है। ईरान अपने एक तेल-क्षेत्र में पाकिस्तान को भागीदार बनाकर पाकिस्तान पर अपना तेल-राज्य स्थापित करने की फिराक में है।

ईरान में धन तो बरसता है उसके तेल के यूरोप पहुंचने पर। तेल को उधर पहुंचाने के लिए सात अरब रुपये की लागत से ग्यारह सौ मील पाइप-लाइन कूजेस्तान की राजधानी अहवाज से तुर्किस्तान के बंदर-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस्केंदरन तक ले जायी जा रही है। पाइप-लाइन होगी सात सौ मील फारस की खाड़ी से रूसी सीमा तक। किन इन सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है अरब रुपये की लागत की पाइप-लाइन भी दो महीने पहले तैयार हुई है और करोड़ घनफुट गैस प्रति दिन दक्षिण रूस हैया कर सकेगी। मध्य ईरान के मश-हर इस्फहान में रूस साढ़े तीन अरब लगाकर इस्पात कारखाना लगा रहा सकी लागत अगले पंद्रह वर्ष में कूजे- की इस गैस से ही चुकायी जायेगी। जेस्तान की महत्ता उसके तीन विशाल केमिकल प्लांट भी हैं, जो विदेशियों गीदारी में बने हैं। पिछले ही वर्ष वहां क अरब रुपये का उत्पादन खरीदकर का सामान ईरान भेजने का इकरार वर्ष ने किया है। कूजेस्तान के इन दन-केंद्रों का पूरा लाभ तो तब मिलेगा, उसमें उत्पादित खाद वहां की निर्जीव को जीवित करेगी। और उसको प्राण ा तेल की कीमत से बने हुए बांधों से पानी के रूप में। ईरान के शाह उस की प्रतीक्षा में हैं, जब कूजेस्तान की लाख एकड़ भूमि धान्य से पूर्ण होकर ईरान का पेट पालन करेगी।

स काम में शाह का दायां हाथ रहा न का एक बैंकर, अबुलहसन एब्तेहज, रान के योजना-आयोग का मुखिया भी ।

ह अमरीका गया। उसने वहां के पन-बिजली-सिंचाई की योजनाओं को देखा, विशेषतः टी. वी. ए. को। उसने वहीं विश्व बैंक की सहायता से अमरीकी ज्ञान का लाभ उठाने के लिए कूजेस्तान की योजना का प्रारूप बनाने का कार्य प्रारंभ करवा दिया।

उन आयोजकों ने भविष्य के कूजेस्तान का चित्र प्रस्तुत किया, उस भविष्य को साकार बनाने के साधनों का विवरण प्रस्तुत किया, उनका प्रत्येक प्रस्ताव सही मार्ग के रूप में था, जिस पर चलकर उस मंजिल पर पहुंचा जा सकता है। उस समृद्धि-अभियान की अवधि और उस पर आने वाले व्यय का अंदाज क्या ? वह तो ईरान की अपनी गति और अपनी क्षमता पर निर्भर करेगा।

कूजेस्तान में तेल का पता सन १९०८ में अंग्रेजों ने लगा लिया था। अबादान में स्थापित तेल रिफायनरी संसार की सबसे बड़ी रिफायनरियों में से है और मध्य एशिया के किसी भी एक देश के उत्पादन के बराबर अकेली यह रिफायनरी ४० लाख बैरल तेल का रोज उत्पादन करती है।

कूजेस्तान के उत्तर में देज नदी पर बने ६४७ फुट ऊंचे पहलवी बांध से प्राप्त पानी से सन ७३ तक ऐसी अढ़ाई हजार एकड़ भूमि सरसब्ज हो जायेगी, जिसमें एक तिनका नहीं उगता था। खेतों में पहुंचने के पहले वह पानी सवा पांच लाख किलोवाट की क्षमता का पावर हाउस भी चलायेगा।

अगले दस-बीस वर्षों में जब योजना के सब बांध, बिजलीघर और कारखाने बन जायेंगे, तब कूजेस्तान और ही हो जायेगा।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

● अविनाश चंद्र ●

इंडोनेशिया.... आज !

विश्व-इतिहास की संभवतः सबसे रक्त-रंजित राजनीतिक उथल-पुथल और लगभग छः वर्ष के सैनिक शासन के बाद इंडोनेशिया में इस महीने आम चुनाव होने वाले हैं।

आम चुनाव की हमारी जो कल्पना है, उससे कुछ भिन्न होंगे ये आम चुनाव। संसद् के कुल ४६० सदस्यों में से १०० सेना द्वारा नामजद किये जायेंगे। उम्मीदवारों और मतदाताओं की सूची में काट-छांट करने का अधिकार भी सेना को दिया गया है।

मगर यह कोई अचरज की बात नहीं। एशिया और अफ्रीका के अधिकांश देश 'निर्देशित प्रजातंत्र' रूपी जिस विषवृक्ष की छांव में जुटते जा रहे हैं, उसका बीजारोपण एक तरह से इंडोनेशिया के सुकर्ण ने ही किया था।

पूर्व बंगाल जैसी कोई अनहोनी बात हो गुजरे, तो दूसरी बात है, अन्यथा इस आम चुनाव का परिणाम स्पष्ट है। देश के शासन पर सेना का वर्चस्व बना रहेगा। सुहर्त का राष्ट्रपतित्व यों भी १९७३ तक चलने वाला है। अगली अवधि के लिए भी उनका चुना जाना लगभग सुनिश्चित है। अतः सुहर्त के शासन के छः वर्षों का तलपट मिलाने का यह सुअवसर है।

सुहर्त को सबसे अधिक सफलता मिली है आर्थिक क्षेत्र में। सुकर्ण-शासन के आखिरी दशक (१९५६-६५) में राजधानी जकार्ता में कीमतें औसतन २,००० गुना बढ़ गयी थीं। दूसरे शहरों की हालत भी कोई खास अच्छी नहीं थी। इंडोनेशियाई 'रुपैये' की कीमत प्रतिदिन गिरती जा रही थी। उसकी भरपाई के लिए धड़ाधड़ नोट छापे जा रहे थे।

'रुपैये' की विदेशी विनिमय-दर इतनी गिर गयी थी कि एक अमरीकी फाउंटेन-पेन बेचकर जकार्ता में कई दिन मजे में गुजारे जा सकते थे। निर्यात-व्यापार सन १९४१ के जितना भी नहीं रह गया था। कभी विश्व के प्रमुख चावल-निर्यातक देशों में गिना जाने वाला इंडोनेशिया सालाना ७५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रुपये (भारतीय रुपये) की कीमत
वल आयात करने लगा था।
हर्त की सरकार ने साल-भर के प्राथ-
उपचार द्वारा देश के लड़खड़ाते हुए
त्र में काफी हद तक नवजीवन फूंका।
ों के बढ़ने की रफ्तार, जो १९६६ में
प्रतिशत थी, अगले साल १२० प्रति-
र उतर आयी, १९६८ में ८७ प्रति-
ी गयी और १९६९ में केवल १० प्रति
ह गयी। 'रुपैये' की मुद्रा-विनिमय दर
ढ़ने व सुधरने लगी।

चमत्कारी प्रगति का सारा श्रेय
रमंत्री डा० सुमित्र, योजना-मंडल के
विजय, वित्तमंत्री डा० अली वर्धन
विदेशी पूंजी-विनियोजन मंडल के
डा० मुहम्मद सदली को है।

० सुमित्र के
में इस टोली ने
म तीन बातों
अपना ध्यान
किया – १.
बजट को
त करना; २.
विलास-साम-
ी मांग को कम
; और ३. 'रुपैये'
निमय-दर को
विकता के निकट
।

ल १९६९ में
शिया की पंच-

वर्षीय विकास-योजनाओं की शृंखला 'रिपेलिटा' आरंभ हुई। 'रिपेलिटा' हमारी पंचवर्षीय योजनाओं की तरह विकास-कार्यों का वेला-पत्रक नहीं है। कौन-सा विकास-कार्य पहले होना चाहिये, कौन-सा बाद में, यह पौर्वापर्य मात्र इसमें निर्धारित किया गया है।

इसका कारण भी है। योजना के अनुमानित व्यय की राशि से सरकारी आय ७५ प्रतिशत कम है। आय बढ़ाने के लिए कर बढ़ाना भी संभव नहीं है। देश के कुल १५ करोड़ नागरिकों में से केवल ७० हजार की आमदनी इतनी है कि उन पर कर लगाया जा सके। करों से होने वाली आय का अधिकांश हिस्सा देश के २५ लाख सरकारी कर्मचारियों का वेतन चुकाने में ही खर्च हो जाता है।

इसलिए यह स्वाभाविक है कि इंडोनेशिया आर्थिक विकास के लिए विदेशी सहायता और विदेशी पूंजी पर निर्भर हो। और विदेशों ने भी उसे निराश नहीं किया है। हालांकि पश्चिमी देशों ने कुल अंतर्राष्ट्रीय सहायता-राशि में कटौती की है, तो भी इंडोनेशिया को विश्व-बैंक तथा

राष्ट्रपति सुहर्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भारत के प्रति मुझसे अन्याय हुआ

कच्छ समझौते के बावजूद अगस्त (१९६५) के आरंभ में कश्मीर को लेकर भारत और पाकिस्तान के बीच मुठभेड़ें हुईं। जब खुली लड़ाई की संभावना निकट आ पहुंची, तो मैंने अय्यूब और शास्त्री को निजी संदेसे भेजे। मगर ६ सितंबर को दोनों ओर से विवादग्रस्त सीमा-अतिक्रमणों के बाद भारतीय सीमा के पार पश्चिम पाकिस्तान से लड़ाई शुरू हो ही गयी।

कामनवेल्थ मंत्रालय के अफसरों ने मुझे स्थिति का संक्षिप्त खुलासा दिया। उन्होंने मुझे फुसलाकर, भारत को आक्रांता ठहराने व उसका खंडन करने वाला वक्तव्य मुझसे दिलवा दिया– यह कहकर कि अकाट्य प्रमाण मौजूद हैं।

इसमें मेरी गलती हुई। सारे ही तथ्य बहुत ही विवादास्पद थे। परिणामतः अगले कई महीनों तक ब्रिटेन और भारत के संबंध कटु रहे।

जब आर्थर बाटमली (कामनवेल्थ मंत्री) अगले दिन छुट्टी से वापस लंदन लौटे, उन्होंने कहा कि अगर मैं कल लंदन में रहा होता, तो १० डाउनिंग स्ट्रीट से कोई वक्तव्य न निकलता।

कामनवेल्थ मंत्रालय के पाकिस्तान-समर्थक गुट ने मुझे गुमराह कर दिया था; वह गुट फिर ज्यादा दिन वहां नहीं टिक पाया।

–हेरोल्ड विल्सन (आत्मकथा 'आवर डेज इन पावर' में)

oooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooo

इंडोनेशिया-सहायता-गोष्ठी से सिर्फ १९७० में ही ४५० करोड़ रुपये (भारतीय) जितनी सहायता मिली।

सुकर्ण के समय इंडोनेशिया पर सत्रह देशों का १,६५० करोड़ रुपये का कर्ज चढ़ गया था। अब भी कर्ज बढ़ रहा है, लेकिन पश्चिमी देशों ने ऋण की अदायगी में ३० वर्ष की छूट दे दी है। केवल सोवियत रूस आनाकानी कर रहा है। वह दबाव डाल रहा है कि या तो इंडोनेशिया कर्ज चुकाना आरंभ करे, या रूसी नौ-सेना के जहाजों को इंडोनेशियाई बंदरगाहों का उपयोग करने की छूट दे। इंडोनेशिया पहली बात मानने में असमर्थ है और दूसरी बात उसे नागवार है।

पश्चिमी देश इंडोनेशिया में पूंजी भी लगा रहे हैं, विशेषतः खनिजों की खोज में। वहां २५ विदेशी कंपनियां खनिजों की खोज करा रही हैं। पेट्रोलियम-उत्पादन में अब भी इंडोनेशिया अरब देशों व ईरान के बाद एशियाई देशों में अग्रणी है। पिछले साल वहां लगभग २६३ करोड़ रुपये (भार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

) का तेल निकला। हालांकि अभी तक
नये तेल-क्षेत्रों का पता चला है, किंतु
नों ही क्षेत्र बहुत तेल-समृद्ध हैं।
पछले वर्षों में कुल १७५ योजनाओं में
करोड़ रुपये (भारतीय) जितनी पूंजी
ने की अनुमति विदेशी कंपनियों को
यी है। अधिकांश योजनाएं मत्स्यो-
खान, बागान, जंगल-कटाई और पेट्रो-
प से संबंधित हैं।
गर यह विदेशी पूंजी मुख्यतया जंगलों
जनरहित इलाकों में खप रही है और
बहुत कम इंडोनेशिया-वासियों को
ी-धंधे मिल सके हैं। इस प्रकार देश
धिकांश आबादी को विदेशी पूंजी-
योग से कोई लाभ नहीं मिल रहा है।
कास-कार्यक्रमों की सबसे अधिक
चीनी हो रही है कृषि को लेकर। देश
ोन-चौथाई आबादी कृषिजीवी है और
ी कुल राष्ट्रीय आय का ६० प्रतिशत
से प्राप्त होता है। फिर भी विकास-
नाओं में कृषि को पर्याप्त महत्त्व नहीं
गया है।
स्तव में इंडोनेशिया के अधिकांश
अपनी आवश्यकता से कुछ अधिक ही
ल, कसावा कंद और मकई पैदा कर
हैं। मगर सड़कों, वाहनों और गोदामों
कमी के कारण यह अतिरिक्त खाद्य
ं सड़-गलकर बरबाद हो जाता है या
की भेंट चढ़ जाता है। फलतः शहरी
दी का पेट भरने के लिए विदेशों से
ाख टन अनाज आयात करना पड़ता

है। (और देश की चौथाई आबादी शहरों में बसती है।)

कृषि की प्रगति में सबसे बड़ी बाधा है इंडोनेशिया की पिछड़ी हुई भूमि-स्वामित्व व्यवस्था। दस में से नौ किसान बंटाई पर खेती करते हैं। ज्यादातर जमीन पर जमींदारों का और मस्जिदों का अधिकार है। सन १९६५ की रक्तरंजित क्रांति से पहले इंडोनेशियाई साम्यवादी पार्टी (पी. के. आई.) ने जावा में जमींदारी-कानूनों को तोड़ने के लिए किसानों को उकसाया था। कई विद्वानों का कहना है कि जावा और बाली में साम्यवादियों और उनके समर्थकों की जो अत्यंत क्रूरतापूर्वक सामूहिक हत्याएं की गयीं, उसके पीछे यह भी एक कारण था।

दुःख की बात यह है कि उथल-पुथल के बाद उसी घुन खायी हुई भू-व्यवस्था को पुनः कायम होने दिया गया और भू-स्वामित्व के कानूनों में सुधार करने में सुहर्त की सरकार ने अभी तक विशेष तत्परता नहीं दिखायी है। किंतु इसके बिना देश को १९७४ तक कृषि-उत्पादनों के मामले में आत्मनिर्भर बनाने का काम हर्गिज पूरा नहीं हो सकता।

मगर सुहर्त सबसे कम सफल हो सके हैं राजनीतिक क्षेत्र में। यों उन्होंने अधिक महत्त्वाकांक्षी सेनापतियों को बड़ी चतुराई से सत्ता के केंद्र से दूर भेज दिया है; वे स्वयं भी असैनिक वेश में रहना पसंद करते हैं; तथापि आज भी इंडोनेशिया में राजनीतिक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शक्ति सचमुच बंदूक की नली में निवास करती है।

शासन-तंत्र पर सेना हावी है और सभी सैनिक अफसर सुहर्त की तरह आदर्शवादी नहीं हैं। पुलिस, स्थलसेना, जलसेना और वायुसेना अपने लाभ के लिए तरह-तरह के व्यापार, धंधे, कारखाने आदि चला रही हैं। अनेक व्यापारों और व्यवहारों पर सरकारी संघटनों का एकाधिकार है और इन संघटनों का संचालन जनरलों के हाथ में। उनमें सबके सब तो दूध के धुले नहीं हैं और उनकी ऊपरी कमाई की कहानियां गली-गली में सुनने को मिलती हैं।

एक उदाहरण। 'पेट्रामिना' सरकारी तेल-कंपनी है; देश के समस्त तेल-उद्योग की ६० प्रतिशत आय उसकी झोली में चली जाती है। कहते हैं कि उसके अध्यक्ष जनरल सुहोवो ने अपनी बेटी की शादी के स्वागत-समारोह पर लगभग पांच लाख रुपये खर्च कर डाले, जबकि उनका मासिक वेतन कुछ ही सौ रुपये हैं।

यह भी कहा जाता है कि जलसेना बड़े पैमाने पर विदेशी विलास-सामग्रियों का तस्कर-व्यापार कर रही है।

सेना के प्रशासन के तौर-तरीकों और सेनाधिकारियों के भ्रष्टाचार से युवावर्ग अप्रसन्न होता जा रहा है। (सुकर्ण को क्रुद्ध युवकों ने ही तो गद्दी से उतारा था।)

राजनीतिक पार्टियों पर प्रतिबंध होने से संघटित विरोध का खतरा कम है। लेकिन क्या साम्यवादियों को सदा इसी तरह फौजी बूटों के तले दबाये रखना संभव होगा? सन १९६५ की उथल-पुथल में मारे गये साम्यवादियों की संख्या १ लाख से ४ लाख के बीच बतायी जाती है। 'एम्नेस्टी इंटरनेशनल' के आंकड़ों के अनुसार इंडोनेशियाई कैदी-शिबिरों में १ लाख १६ हजार राजनीतिक कैदी बंद हैं और बड़ी कष्टमय परिस्थितियों में जी रहे हैं।

उथल-पुथल से पहले इंडोनेशियाई साम्यवादी पार्टी (पी. के. आई.) चीन को छोड़कर दुनिया की सबसे बड़ी साम्यवादी पार्टी थी और उसकी सदस्य-संख्या २ करोड़ के लगभग थी। निश्चय ही इसमें से अधिकांश जीवित हैं और उन सबने तो साम्यवाद को को तिलांजलि नहीं दे दी होगी।

लिहाजा, इंडोनेशिया में इस समय जो शांति है, वह बंदूक के बल पर कायम की गयी ऊपरी शांति है। स्थायी शांति स्थापित करने के लिए आवश्यक है कि :

१. सेना का सर्वाधिकार समाप्त हो, जनता को राजनीतिक अधिकार वापस मिलें;

२. भ्रष्टाचार घटे;

३. आम नागरिक की आर्थिक दशा सुधरे।

देखना है कि सुहर्त इनमें कहां तक सफल होते हैं। इस मास होने वाले आम चुनाव और उसके बाद की घटनावली से सुहृत की सदाशयता की परीक्षा होगी।

दुनिया ध्यान से देख रही है कि इंडोनेशियाई जनरलों और पाकिस्तानी जनरलों में क्या कोई तात्त्विक अंतर है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मृत्युग्रस्त रोगी की मनोदशा

त के विषय में अमरीका के राचेस्टर
नगर में हाल ही में एक सम्मेलन हुआ।
ग बीस विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों ने
भाग लिया। चर्चा का विषय यह नहीं
मौत की अनिवार्यता कैसे समाप्त की
बल्कि यह था कि मौत की अनिवार्यता
से स्वीकरणीय बनाया जाये।

म्मेलन का नाम था—'रोगी, मौत और
ार'। उसमें भाग लेने वालों में मानस-
ी, समाजशास्त्री, दर्शनशास्त्री, पादरी,
-चिकित्सक, नर्सें और प्रायः मरते
यों का उपचार करने वाले डाक्टर थे।

यूयार्क टाइम्स' ने सम्मेलन में हुई चर्चा
ी सार छापा था, वह मननीय है:
मरते रोगियों की देखभाल का महत्त्व
कल बढ़ता जा रहा है। कारण, न्यूमो-
आदि तीव्र रोगों से तुरंत चल बसने
ारदातें विरल होती जा रही हैं और
न सही, मगर अधिकांश लोग अब
क्षयकारी (डिजेनरेटिव) रोगों से
ों-वर्षों के अरसे में तिल-तिल करके
हैं।

"सम्मेलन में बताया गया कि मृत्यु के निकट आने पर अनेक रोगी पांच सुस्पष्ट मानसिक अवस्थाओं में से होकर गुजरते हैं। और जैसा कि एक विशेषज्ञ ने बताया कि यदि डाक्टर तथा अन्य पेशेवर लोग तनिक सहायता दें, तो मरते व्यक्ति और उसके परिवार को इन पांच अवस्थाओं में से गुजरने में मार्गदर्शन मिल सकता है और मौत को अधिक सरलता से स्वीकार्य और 'स्वस्थ' बनाया जा सकता है।

"इन पांच मानसिक अवस्थाओं का निरूपण मानस-चिकित्सक डा० एलिजाबेथ कब्लर रॉस ने दो वर्ष पूर्व किया था। उन्होंने मृत्युमुख में पड़े हुए ५०० रोगियों से विस्तार से बातचीत की थी।

"पहली मनोदशा है इन्कार—'नहीं, मैं नहीं।' यानी रोगी इस बात को स्वीकार नहीं कर पाता कि उसे प्राणघाती रोग हो गया है।

"और डा० रॉस ने पाया कि अधिकांश लोगों में यह इन्कार शीघ्र ही क्रोध में परिणत हो जाता है। यह 'मैं ही क्यों?' की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अवस्था है।' इसमें रोगी को संभालना कठिन हो जाता है। वह दोषदर्शी, चिड़-चिड़ा और असहयोगी हो जाता है। रोगी के मित्रों और स्वजनों पर इसका परिणाम यह होता है कि अब वे उसके पास पहले के मुकाबले कम आते हैं और कम वक्त तक बैठते हैं।

"गुस्से के बाद शुरू होती है 'सौदेबाजी' की अवस्था, जिसमें रोगी कहता है—'ठीक है, मेरी मौत होगी, मगर...या हे भगवान, अगर मुझे एक साल और बख्श दोगे, तो मैं कसम खाता हूं कि आगे से अधिक धार्मिक जीवन जिऊंगा।'

"इससे अगली अवस्था प्रायः होती है अवसाद की—हाथ से निकल चुकीं और शीघ्र ही हाथ से निकल जाने वाली चीजों के लिए शोक मनाने की। इस अवस्था में रोगी अपने को स्वजनों-प्रियजनों से पृथक कर लेता है।

"अंततः मरता हुआ रोगी अंतिम अवस्था में प्रवेश करता है, जो कि अंगीकार की अवस्था है। यानी 'मेरा अंत आ गया है, अच्छी बात है।'

"डा० रॉस ने जोर देकर कहा कि सब-के-सब रोगी क्रमशः इन पांचों अवस्थाओं में से नहीं गुजरते हैं। कई बार वे एक-दो अवस्थाएं फलांग जाते हैं या कई बार वे किसी पूर्ववर्ती अवस्था में भी वापस लौट जाते हैं। उन्होंने बताया कि प्रत्येक रोगी अंगीकार की अवस्था में पहुंचकर मरने को तैयार हो ही जाता हो, ऐसी बात नहीं है।

"मृत्यु के अध्ययन से यह भी प्रकट हुआ है कि मरते हुए रोगी के साथ व्यवहार में ईमानदारी और स्पष्टवादिता से काम लेना रोगी और उसके स्वजन दोनों की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। कई बार डाक्टर जानलेवा रोग से ग्रस्त रोगी के साथ सचाई बरतना चाहते हैं, मगर रोगी के स्वजन उनके प्रयत्नों को विफल कर देते हैं।" × × ×

पाठकों से निवेदन

श्री सत्यकाम जी विद्यालंकार ने मार्च १९६० में नवनीत का संपादन-कार्य अपने हाथ में लिया था। उनकी संपादन-दक्षता का लाभ नवनीत को लगभग बारह वर्ष तक भरपूर मिला। अब उन्होंने वयोभार के कारण कार्यमुक्त होने की इच्छा प्रकट की है और उनके आग्रह को टालना संभव नहीं है। श्री सत्यकामजी की एकाग्र कार्यनिष्ठा और सूझबूझ ने नवनीत को बहुत आगे बढ़ाया। उन्होंने मानद परामर्शदाता के रूप में नवनीत से आगे भी संबंध रखना स्वीकार किया है। नवनीत इसके लिए उनका आभारी है।

इस अंक से संपादन का पूर्ण कार्यभार श्री नारायण दत्त जी के हाथों में सौंपा जा रहा है। आप पिछले बारह वर्ष से नवनीत-परिवार के प्रमुख सदस्य रहे हैं। अब उन्हें संपादन की पूरी जिम्मेदारी सौंपते हुए हमें बड़ी प्रसन्नता है। इसी अंक से श्री रमेश उपाध्याय सहायक संपादक नियुक्त हुए हैं। हमें विश्वास है कि नयी व्यवस्था से नवनीत लाभान्वित होगा।

—श्रीगोपाल नेवटिया, संचालक—नवनीत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मिनि ट्रैक्टर

र दे देने मात्र से पिछड़े
शों की कृषि में क्रांति हो
ी, और उससे औद्योगिक
न का मार्ग अपने आप
ायेगा, यह धारणा अनेक
कों और प्रशासकों के
घर किये हुए है। मगर सवाल यह है कि
द्वारा जैसे-तैसे पेट पालने वाले कृषकों
तने ऐसे हैं, जो ट्रैक्टर चलाना जानते
निश्चय ही गिने-चुने। और ट्रैक्टर के
खाव और मरम्मत की जानकारी तो
भी कम किसानों को होगी। किराये
ने लायक पैसे भी उनके पास नहीं।
ारी ओर, बैल भी पूर्णतया संतोष नहीं
—न उनकी कार्यक्षमता पर्याप्त होती
उनका कार्यकाल ही पर्याप्त दीर्घ होता
ौर यह बात केवल भारत की नहीं है।
रनेशनल वालंटरी सर्विस के तीन
र्ताओं ने स्विट्जरलैंड के कृषकों की
ाओं का अध्ययन किया। उन्होंने
कि वहां सर्दियों की समाप्ति के एक-
द के दिन जुताई के लिए सर्वोत्तम
। मगर तब जमीन बहुत कड़ी होती
सर्दी के सूखे दिनों में जंगल की बची-
पत्तियां चरकर गुजारा करने वाले
तने कमजोर हो चुके होते हैं कि वे
को मुश्किल से खुरच पाते हैं। लिहाजा
तों को तब तक इंतजार करना पड़ता
तक बारिश होकर जमीन जरा नरम
जाये।
रनेशनल वालंटरी सर्विस के ये कार्य-
कर्ता जांच करके ही संतुष्ट नहीं हो गये। उन्होंने ट्रैक्टर और बैल दोनों की विशेषताओं से युक्त एक यंत्र तैयार करने की ठानी। उनकी पहली शर्त यह थी कि यह यंत्र ऐसा होना चाहिये कि जिस किसान ने आज तक कोई मशीन नहीं देखी है, वह भी उसे चला और संभाल सके। इसके लिए उन्होंने गीयर, ब्रेक आदि अधिकांश अंग हटा दिये। इनके बजाय उन्होंने एक सीधा-सादा नियंत्रण-दंड (कंट्रोल रॉड) रखा है। आगे बढ़ाने, पीछे हटाने और रोकने तीनों क्रियाओं के लिए इसका उपयोग किया जा सकता है। अब तक उन्होंने १८ हजार रुपये खर्च करके ऐसे चार ट्रैक्टर तैयार किये हैं। स्विट्जरलैंड के विविध प्रदेशों के किसान एक साल तक इनका उपयोग करके देखेंगे। उनका अंदाज है कि इनका पूर्ण विकास और निर्णय करने में कुल ४५ लाख रुपये खर्च होंगे। और एक मिनिट्रैक्टर ५,४०० रुपयों का पड़ेगा, जो कि सामान्य ट्रैक्टर की कीमत के एक तिहाई के लगभग है।

स्विट्जरलैंड की सरकार ने इस यंत्र को पेटेंट कराया है और व्यापारिक स्तर पर इसके निर्माण के लिए वह पूंजी लगाने वालों की खोज में है।

—विशाख

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

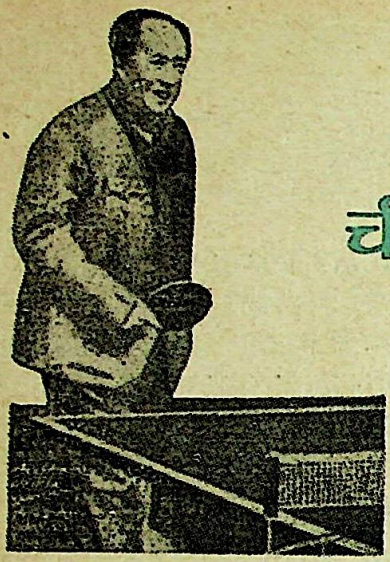

चीनी-अमरीकी राजनय का वह दौर, जिसे 'पिंगपांग कूटनीति' कहा गया, चला तो थोड़े ही दिन; मगर चला खूब!

चीनी-अमरीकी पिंगपांग

• अवधनंदन •

इसी वर्ष अप्रैल के मध्य में कम्युनिस्ट चीन की राजधानी के विशाल जन-सभागार में प्रधानमंत्री चाउ एन-लाइ ने अंतर्राष्ट्रीय पिंगपांग प्रतियोगिता में भाग लेने आये हुए विदेशी अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने मुस्कराते हुए, सौम्य-शांत विदेशी अतिथियों से हाथ मिलाया। सबसे पहले कनाडा के खिलाड़ियों से; फिर कोलंबिया, इंग्लैंड, नाइजीरिया से आये खिलाड़ी मेहमानों से; और अंत में संयुक्त राज्य अमरीका से आये १५ खिलाड़ियों और तीन अमरीकी संवाददाताओं से।

"आप लोगों ने चीनी और अमरीकी जनता के संबंधों में एक नयी शुरूआत की है।" ७३ वर्षीय चाउ ने खेलकूद के साथ कूटनीति को जोड़ते हुए कहा। चीनी कम्युनिस्ट क्रांति के बाद चीन आये हुए अमरीकियों की इस पहली टोली पर ही नहीं, दूर अमरीका में और उनके साथ सारी दुनिया में चाउ के इस वाक्य की तुरंत प्रतिध्वनि और प्रतिक्रिया हुई।

वाशिंग्टन और पीकिंग के संबंधों में इस नयी 'पिंगपांग-कूटनीति' के महत्त्व को स्वीकारते हुए अमरीका के राष्ट्रपति निक्सन ने कहा—"कानून के स्कूल में पढ़ते समय मैं भी पिंगपांग का खिलाड़ी रहा हूं, किसी हद तक अच्छा खिलाड़ी।"

राष्ट्रपति निक्सन का वक्तव्य मात्र पिंगपांग के रूपक तक ही सीमित नहीं था। शीघ्र ही उन्होंने कम्युनिस्ट चीन के साथ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का के व्यापार तथा पर्यटन संबंधी
में ढील देने की घोषणा की। फिर
रों के समक्ष भाषण देते हुए उन्होंने
"अमरीका द्वारा कम्युनिस्ट चीन
न्यता देने की बात कहना तो अभी
क्व बात होगी, परंतु व्यापार तथा
तिक विनिमय के क्षेत्र में हम आगे
को तैयार हैं। हम एक बार में एक ही
उठाना चाहते हैं।"

ने वक्तव्यों में सावधान और संयत
के निरंतर प्रयत्न के बावजूद निक्सन
का और चीन के संबंधों में सुधार की
से इतने उत्साहित थे कि उन्होंने
"समय आने पर मैं चीन की यात्रा
करता हूं।"

मरीकी जनता के बीच
ीन की नयी पिंगपांग-
ति के प्रति सहज और
भूति-भरी प्रतिक्रिया
सिनेटर माइक मैन्स-
ने व्यापार और पर्य-
र लगे प्रतिबंधों में दी
ढील का स्वागत करते
हा कि ये सुविधाएं तो
से दे देनी चाहिये थीं।
-एजेंसियों पर चीन-
की जानकारी प्राप्त
वाले अमरीकी लोगों
ीड़ ने भी चीन के प्रति
ीका के बदले हुए दृष्टि
का परिचय दिया। और

ओपन टेनिस चैंपियनशिप के अमरीकी निर्देशक बिली टालबर्ट ने तो तुरंत कहा कि इस वर्ष की प्रतियोगिता में हम चीन को भी आमंत्रित करेंगे।

इस सारे वातावरण के बीच लगता था कि च्यांग काई-शेक के राष्ट्रवादी चीन के समर्थकों का गला रुंध-सा गया है। कम्युनिस्ट चीन को संयुक्त राष्ट्रसंघ में शामिल करने की विरोधी 'कमिटी ऑफ वन मिलियन' (दस लाख की समिति) के अध्यक्ष वाल्टर जड ने निक्सन को चेतावनी दी कि कहीं उन्हें माओ की अपनी शर्तों पर ही सब कुछ न स्वीकार कर लेना पड़े।

यहां यह बताना रोचक होगा कि पिछले दस वर्षों में दस लाख की समिति की सदस्य

[अबू, 'इंडियन एक्सप्रेस' में]

साम्राज्यवादियों और उनके कुत्तों का स्वागत है!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संख्या निरंतर कम हुई है और इस समय दस लाख तो दूर, सिर्फ ३० हजार सदस्य हैं।

अमरीका में निरंतर कम होता हुआ कम्युनिस्ट चीन का विरोध हमारे लिए अचरजकारी हो सकता है, परंतु अमरीकी-चीनी संबंधों के संदर्भ में यह पूर्णतया तर्क-संगत और मौजूं है। अमरीका की स्वातंत्र्य-घोषणा पर हस्ताक्षर करने वालों में से एक राबर्ट मारिस द्वारा १७८४ में व्यापार के लिए चीन भेजे गये पहले अमरीकी जहाज से लेकर अब तक चीन और अमरीका के संबंध प्रेम और घृणा के दो ध्रुवों के बीच झूलते रहे हैं।

चीन के साथ अच्छे संबंधों की अवधि में अमरीकियों के लिए चीन मार्को पोलो, पर्ल बक, चार्ली चेन द्वारा वर्णित विद्वत्ता, दार्शनिकता, मनोविनोद और दृढ़ता का देश रहा है। अमैत्री की अवधि में उसी चीन की प्रतिमा बदलकर एक क्रूर और निर्दयी देश की बेहूदी तस्वीर बन गयी है। डीन रस्क ने उसे 'पृथ्वी पर निरंतर बढ़ता हुआ पीला खतरा' कहते हुए भविष्यवाणी की थी कि हमारे देखते-देखते चीनियों की जनसंख्या १ अरब हो जायेगी।

दूसरे महायुद्ध के बाद से अमरीका और चीन के संबंध निरंतर बिगड़ते रहे हैं। १९४९ की कम्युनिस्ट क्रांति की लहर ने दूसरे महायुद्ध में अमरीका के साथी चीन को उछालकर साम्यवादी शिविर में पहुंचा दिया। और तब संसार के सबसे गौरवशाली प्रजातंत्रीय देश अमरीका में सिनेटर जोसेफ मकार्थी का वह खौफनाक युग शुरू हुआ, जिसमें हर प्रगतिशील अमरीकी व्यक्ति की साम्यवादी होने के आरोप में नंगा-झोली हुई।

उधर कोरियाई युद्ध, जान फास्टर डलेस की क्षेत्रीय प्रतिरक्षा संधियों और वियतनाम युद्ध के नाम पर संयुक्त राज्य अमरीका निरंतर च्यांग काई-शेक के नाकुछ ताइवान की प्रतिरक्षा के लिए सैनिक व्यूह-रचना करता रहा। उन दिनों एशिया संबंधी अमरीकी नीति का एक ही दिग्दर्शक तत्त्व रहा—चीन की शक्ति को सीमित करना, उसके प्रतिरोध के दुर्ग तैयार करना।

साम्राज्यवाद-विरोध के नाम पर देश और विदेश में अपनी क्रांतिकारी प्रतिमा तैयार करने को उत्सुक चीन के कम्युनिस्ट शासकों के लिए अमरीका की यह नीति अनुकूल भी पड़ती थी। गोरे उपनिवेशवाद से जूझते एशियाई और अफ्रीकी देशों में साम्राज्यवादी देशों को चुनौती देने वाला चीन आसानी से समर्थन और सहानुभूति जुटा सकता था। एशिया-अफ्रीका के स्वतंत्र देशों में भी एक ऐसा नया शासक वर्ग तैयार था, जो अपने-अपने देशों में किसी तरह के क्रांतिकारी सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन किये बिना ही अपनी जनता को क्रांतिकारी परिवर्तन के नारों से मंत्रमुग्ध रखना चाहता था।

कोई अचंभा नहीं कि कम्युनिस्ट चीन ने अमरीका के साथ अपने संघर्ष और तनाव का एशियाई-अफ्रीकी देशों में पूरा फायदा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न और अपना इतना प्रभाव बढ़ाया
व १९६२ में उसने भारत पर आक्रमण
तो एशिया-अफ्रीका के किसी महत्त्व-
श ने उसे आक्रामक नहीं कहा।
किन जिन दिनों समाचारपत्र चीन-
का के विरोध के समाचारों से भरे
थे, उन्हीं दिनों गुपचुप एक परिवर्तन भी
१९५५-५६ के आस-पास ही रूस के
चीन के संबंध बिगड़ने लगे। अपने
ध में जाते हुए इस शक्ति-संतुलन की
म को समझकर चीन चुपचाप अम-
से संबंध सुधारने का प्रयत्न करने
१९५६-५८ के बीच चीन द्वारा
दाताओं के दौरों और विदेश-मंत्रियों
ठक के लिए दिये गये सुझाव और क्या
मगर अमरीका ने उन्हें ठुकरा दिया।
९६० के बाद अमरीका के प्रति चीन
में एक और परिवर्तन आया। उसने
कहना शुरू किया कि जब तक ताइ-
की समस्या का हमारे अनुकूल समा-
नहीं हो जाता, तब तक अमरीका और
की पारस्परिक समस्याओं का कोई
ान नहीं हो सकता। लेकिन तब तक
की नीति पेंग बढ़ाकर दूसरे छोर पर
हुंची और अमरीकी नेता ताइवान की
ा को छोड़कर सभी मामलों में चीन
थ समझौते का रुख अपनाने लगे। चीन
स एक ही जबाब था—पहले ताइवान
लडमरूमध्य से अपनी नौसेना हटाओ।
मरीका और चीन की सरकारों के
ापूर्ण संबंधों में परिवर्तन लाने का

चाउ एन-लाइ

आधारभूत कार्य राजनेताओं ने नहीं, अमरीका के कुछेक चीन-विशेषज्ञों ने किया। हार्वर्ड विश्वविद्यालय के जान के. फेयरबैंक और कोलंबिया विश्वविद्यालय के ए. डोआक बारनेट ने राष्ट्रवादी चीन के समर्थकों का उग्र विरोध झेलकर भी यह प्रचार किया कि कम्युनिस्ट चीन से संबंध सुधारे जायें। और सिनेटर जे. विलियम फुलब्राइट के अथक प्रयत्नों के बाद चीन के संबंध में अमरीकी नीति बदलने लगी।

मजे की बात यह कि अमरीकी-चीनी संबंधों का नया अध्याय राष्ट्रपति निक्सन के शासन-काल में शुरू हुआ, जबकि निक्सन अपने राजनीतिक जीवन के आरंभ से ही साम्यवाद के कट्टर शत्रु और उग्र विरोधी रहे हैं। राष्ट्रपति बनने के तीन सप्ताह बाद ही उन्होंने चीन के प्रति अमरीकी नीति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के पुनरवलोकन का आदेश दिया। जून १९६९में सरकारी क्षेत्रों में यह आदेश प्रचारित हुआ कि चीन पर लगाये गये आर्थिक प्रतिबंधों में कुछ ढील दी जाये। उसके एक महीने बाद सार्वजनिक रूप से घोषणा की गयी कि अमरीकी पर्यटक चाहें तो कम्युनिस्ट चीन का बना हुआ कुछ सामान भी खरीदकर ला सकते हैं। राजनयिक क्षेत्र में निक्सन ने रुमानिया और युगोस्लाविया की अपनी यात्राओं के दौरान भी चीन के साथ संबंध सुधरने के संकेत दिये।

इन सब तैयारियों के बावजूद जब अमरीका की पिंगपांग टोली को चीन आने का निमंत्रण मिला, तो समूचे अमरीका और उसके साथ दुनिया-भर में राजनीतिक प्रेक्षकों ने यही प्रश्न किया—पिंगपांग क्यों? पिंगपांग के पीछे क्या?

इस प्रश्न के कई उत्तर भी दिये गये हैं। एक तो यही कि चीन खेलकूद के बहाने अमरीका के साथ अपने संबंध सुधारने की नयी कूटनीति अपना रहा है। प्रेक्षकों ने कहा कि सोवियत रूस के साथ सीमा-संघर्ष के बाद चीनियों को नये मित्रों और सहयोगियों की जरूरत है। वे अब सभी ताकतवर देशों के साथ अपने संबंध सुधारने पर जोर दे रहे हैं।

इसीलिए सांस्कृतिक क्रांति के दौर में बुलाये गये राजदूतों को चीन ने वापस उनकी जगहों पर भेज दिया है और इसके पहले उपेक्षित किये गये कई देशों के साथ राजनयिक संबंध जोड़े हैं। कुछ चीन-विशेषज्ञों के अनुसार चीन में यह भी हुआ है कि माओ और लिन पियाओ के उग्रवादी गुट के हाथों से निकलकर थोड़ी-बहुत सत्ता चाउ एन-लाइ के व्यवहारकुशल हाथों में आयी है।

अमरीका के अधिकांश प्रेक्षक अब चीन को पहले जितना खतरनाक, आक्रामक और विस्तारवादी मानने से इन्कार कर रहे हैं। उनके अनुसार गरीबी और कमजोरी के कारण चीन निकट भविष्य में कोई नया युद्ध छेड़ने के बजाय अपनी आंतरिक समस्याओं के समाधान पर ही ध्यान देगा।

अमरीका के कुछ सरकारी सूत्रों के अनुसार तो चाउ एन-लाइ की हाल की हनोई-यात्रा के पीछे भी एक ही मकसद था—उत्तर वियतनाम के कम्युनिस्टों को तनाव कम करने की सलाह देना। इस बीच कुछ अधिक शंकालु प्रेक्षकों ने यह मत व्यक्त किया है कि चीन के प्रति अमरीका के रुख में परिवर्तन के पीछे चीन के विशाल बाजार का आकर्षण है। अमरीका के उद्योगपति अब राजनीतिक विचारों की खातिर ७०-८० करोड़ लोगों की विराट मंडी से अपने को वंचित नहीं रखना चाहते।

स्पष्ट ही पिंगपांग-कूटनीति एक नयी शुरूआत है। यह भी सच है कि चीन और अमरीका के सारे विरोध रातोंरात नहीं दूर हो जायेंगे। मगर हमें यह भी ध्यान में रखना होगा कि साम्यवाद और पूंजीवाद के राजनीतिक मुखौटों के बावजूद एशिया में इन दोनों का एक संयुक्त मोर्चा बन सकता है। उस स्थिति में भारत जैसे देश की स्थिति और नीति क्या होगी?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वेस्ट इंडीज में

भारतीय 'अंगद'

• सुशील कुमार दोषी •

"वह एक भीषण खिलाड़ी है।"

भारत और वेस्ट इंडीज के बीच हाल ही में संपन्न हुई टेस्ट शृंखला के बाद वेस्ट इंडीज के कप्तान और आज की दुनिया के सर्वश्रेष्ठ आलराउंडर गैरी सोबर्स ने जब एक गहरी सांस लेकर यह बात कही, तो स्पष्ट हो गया कि वेस्ट इंडीज को हराने में जिस खिलाड़ी का हाथ था, वह था सुनील गावसकर।

केवल २१ वर्ष की उम्र में सोबर्स की विश्वविख्यात 'कटर्स' तथा नोरेगा और गिब्स की स्पिन की जादूगरी का जाल तोड़ देना सहज ही यह विश्वास दिला देता है कि बंबई विश्वविद्यालय के इस मेधावी छात्र को बल्लेबाजी की असाधारण प्रतिभा नैसर्गिक रूप से प्राप्त है। परिस्थितियां जितनी जटिल आयीं, वह उतने ही साहस और धैर्य के साथ खेला और भारतीय क्रिकेट के इतिहास में वेस्ट इंडीज से पहली चार शृंखलाएं जीत लेने में सहयोगी बना।

वेस्ट इंडीज के विकेटों पर उसके पांव अंगद की तरह जमे रहे और वह तब तक नहीं हटा, जब तक अपने दल को उसने काफी सुविधाजनक स्थिति में नहीं ला दिया। जैसे-जैसे वह खेलता गया, उसका आत्मविश्वास एक नयी ऊंचाई छूता गया और रेकार्ड मानो उसके द्वारा खंडित होने पर स्वयं सम्मानित हुए।

अंतिम टेस्ट मैच में दूसरी पारी में जब एक अत्यंत विषम स्थिति में उसने २२० रन बनाये, तो उसकी जिम्मेदारी की भावना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर गर्व हो आया। अधिकांश भारतीय खिलाड़ी शतक बनाने के बाद गैरजिम्मेदार होकर विकेट गंवा देते हैं, पर युवा सुनील मानो पूरे दल की प्रतिष्ठा को अपने में समेटे हुए था।

महान खिलाड़ी रणजी ने एक बार अपने भतीजे दिलीप से कहा था—"जब तुम शतक बना लो, तो २०० के लिए प्रयास करो और जब दुहरा शतक पूरा कर लो, तो पुनः ताजी 'गार्ड' लेकर ३०० के लिए नये सिरे से आरंभ करो।" यह एक अलग बात है कि दिलीप टेस्ट क्रिकेट में कभी १७३ रनों से ज्यादा नहीं बना पाये; पर ऐसा लगता है कि गावसकर ने रणजी की बात के मर्म को समझा है। उसके द्वारा अंतिम टेस्ट के २२० रन उसकी अपूर्व लगन, निष्ठा, मनोयोग व दृढ़ संकल्प की भावना के परिचायक हैं।

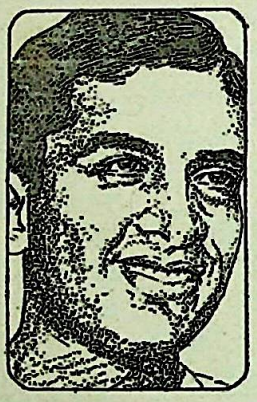

भीषण खिलाड़ी
मासूम चेहरा

भारतीय क्रिकेट में ऐसी रंगत, यह जमावट, यह आत्मविश्वास विजय मर्चेंट के बाद किसी उद्घाटक बल्लेबाज में परिलक्षित नहीं हुआ था। शायद इसीलिए आज सुनील के प्रदर्शनों से विजय मर्चेंट प्रसन्नता में भावविह्वल हो रहे हैं।

शक्तिशाली वेस्ट इंडीज के विरुद्ध खेलने वाले दल में जब युवा सुनील गावसकर का चयन हुआ था, तब खेल के कई जानकारों को यह संदेह था कि क्या अनुभवहीन सुनील बड़े मैचों के तनाव में स्वयं को संतुलित रख पायेगा? इसीलिए पहले टेस्ट में जब सुनील का चयन नहीं हुआ, तो किसी को विशेष विस्मय नहीं हुआ।

फिर आया पोर्ट आफ स्पेन का ऐतिहासिक दूसरा टेस्ट मैच। भारत और वेस्ट इंडीज के बीच यह पचीसवां टेस्ट मैच था और भारत अब तक एक भी टेस्ट नहीं जीत पाया था। लेकिन युवा खिलाड़ी गावसकर के लिए तो यह अपने कैरियर का प्रथम टेस्ट था और शायद इसीलिए वह इसे यादगार बनाना भी चाहता था। उसने आत्मविश्वास के साथ खेलते हुए दोनों पारियों में क्रमशः ६५ तथा ६७ (नाबाद) रन बनाये और वेस्ट इंडीज पर अपने दल की एकमात्र विजय का मार्ग प्रशस्त किया।

उधर सुनील अपने जीवन का प्रथम टेस्ट खेल रहा था, इधर भारत में उसके परिवार के सदस्य ईश्वर से प्राथना कर रहे थे कि सुनील इसमें शतक बनाकर अपना कैरियर एक रेकार्ड से आरंभ करे। मगर सुनील शतक नहीं बना पाया।

इस बात पर अफसोस नहीं होना चाहिये; क्योंकि जीवन के पहले ही टेस्ट में शतक बनाने वाले भारतीय खिलाड़ियों के प्रद-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ाला अमरनाथ को छोड़कर, कभी
च्छे नहीं रहे। कृपालसिंह, दीपक
अब्बास अली बेग, हनुमंतसिंह व
थ हालांकि अपने जीवन के पहले
में शतक लगाकर चमकते सितारे
ह उभरकर सामने आये, पर उनकी
क समय के साथ धूमिल होती गयी।
ल यद्यपि शतक बनाकर परिवार
की साध तो पूरी न कर पाया, पर
आगमन से भारत को दुर्लभ विजय-
र हाथ लगी। विदेशी भूमि पर वह
क विजय, जिसकी हमें तब से प्रतीक्षा
व सन १९३२ में भारत ने अपना
अधिकृत टेस्ट इंग्लैंड में खेला था।
अब तक न्यूजीलैंड को छोड़कर हम
भी विदेशी भूमि पर टेस्ट शृंखला
त पाये थे।

-जैसे शृंखला आगे बढ़ती गयी, युवा
हैरतअंगेज कारनामे करता गया।
चौथे तथा पांचवें टेस्ट में उसने
११६, ११७ व १२४ तथा २२० रन
एक ही शृंखला में तीन शतक
के पाली उम्रीगर के भारतीय रेकार्ड
शायी कर दिया। उम्रीगर ने पाकि-
के खिलाफ कानपुर टेस्ट में ११५,
में ११७ व नयी दिल्ली में ११२ रन
थे। पर गावसकर चार शतक बना-
अपनी धाक जमाये हुए है।
ही टेस्ट में पहली पारी में शतक
सरी पारी में द्विशतक बनाने वाला
एक ही खिलाड़ी था— आस्ट्रेलिया
का डग वाल्टर्स। पर सुनील ने पांचवें व अंतिम टेस्ट में यही प्रदर्शन दुहराकर रेकार्ड-बुक में वाल्टर्स का एकाकीपन दूर कर दिया। एक ही टेस्ट की दोनों पारियों में शतक बनाने का भारतीय कीर्तिमान अब तक विजय हजारे के पास था, जब उन्होंने सन १९४७-४८ की शृंखला में आस्ट्रेलियाई भूमि पर ११६ व १४५ रन बनाये थे।

कुल चार टेस्ट मैचों की आठ पारियों में से तीन बार अपराजित रहकर सुनील ने ७७४ रन बनाने का एक नया भारतीय कीर्तिमान स्थापित किया है और किसी भी एक शृंखला में उसका १५४.८० औसत ब्रैडमेन के बाद विश्व में दूसरे नंबर पर ही है।

गावसकर ने दरअसल भारतीय बल्लेबाजी की वैशिष्ट्यहीनता को एक चरित्र प्रदान किया है। उसने केवल बल्ले के चमत्कार दिखाकर कर्तव्य पूरा समझने वाले भारतीय बल्लेबाजों को यह सबक दिया है कि केवल रन बनाना ही पर्याप्त नहीं है, बल्ले को चमकाना ही पूर्णता नहीं है, बल्कि विपरीत परिस्थितियों में भी जिम्मेदारी से खेलकर दल को विजय दिलाना ही क्रिकेट में सार्थकता का नाम है।

इक्कीस वर्ष की चंचल व बेलगाम उम्र में विकेट पर उसका संयम, धैर्य व खेल की परिष्कृतता चौंका देने वाली बात है। इससे यह जाहिर होता है कि किस समर्पण की भावना से उसने खेल को जिया है। निश्चय ही क्रिकेट को उसने खेल नहीं, जीवन-धर्म माना है।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पथ

थपकी हाथ नहीं देते हैं
आहट लोरी नहीं सुनाती
दूर-दूर आंखें पसराती
सड़क अकेली—

सूरज अंगुली नहीं थामता
बादल नहीं उड़ाता चूनर
उमर अछांही
हिलका-हिलकाकर बिसूरती
सड़क अकेली—

सीना तोड़ गया है गुमसुम
हवा उढ़ाती कफन रेत का
उमर अगूंजी
डूबा-डूबा शोर सांसती
सड़क अकेली—

संध्या गर्म राख रख जाती
रात शरीर झुलस जाती है
उमर दागिनी
क्षण-क्षण दुखता अर्थ पिरोती
सड़क अकेली—

ठूंठ किनारे के बड़-पीपल
गूंगे मील-मील के पत्थर
उमर अनसुनी
चौराहों मर-मर जी लेती
सड़क अकेली।

—हरीश भादानी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नयी दिशाएं नये आयाम

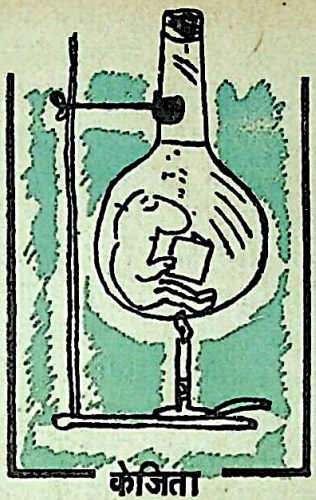

केंजिता

के रोग बढ़े, तो उनसे बचाव के लिए
नये-नये रास्ते भी खोजे जाने लगे।
में किसी-न-किसी रूप में इस दिशा
-न-कुछ प्रयत्न अवश्य हुए। जब
हो ती है तो फल भी मिलता ही है।
'डिया हार्ट फाउंडेशन' की मुखपत्रिका
यूज' के एक ताजा अंक में यह बताया
कि कम-से-कम एक देश यानी अम-
में दिल के रोगों से होने वाली मृत्यु-
पिछले दिनों १९ प्रतिशत की कमी
मृत्यु दर में यह कमी मध्यम आयु
र्ग में अपेक्षाकृत अधिक है।

र अमरीकन हार्ट एसोसिएशन
ल हाथियों के दिलों से खेल रही है।
स्था लगभग डेढ़ हजार चिकित्सा-
यों को सहायता प्रदान करती है,
ने इस जानलेवा रोग से मानव जाति
को छुटकारा दिला सकें। आजकल वहां हाथियों के दिलों पर शोधकार्य हो रहा है। बात यह है कि पूर्वी अफ्रीका में प्रायः अकाल की स्थिति उपस्थित रहने के कारण वहां जंगली हाथियों को कभी-कभी जानबूझ-कर मारना पड़ता है। यह इसलिए किया जाता है कि उपलब्ध पशु-चारे और जीवित पशुओं के बीच संतुलन कायम रखा जा सके। इस प्रकार मारे हुए हाथियों के दिल शोध-कार्य में काफी सहायक सिद्ध हुए हैं।

इस सिलसिले में एक दिलचस्प बात और जान लें। विश्वविख्यात हृदय-विशेषज्ञ डा० पॉल डडले व्हाइट अभी-अभी खुद दिल के दौरे से ठीक होकर उठे हैं। उन्हें इस बात का श्रेय प्राप्त है कि भूतपूर्व राष्ट्रपति स्व० आइजनहावर को दिल का दौरा पड़ने पर उनकी चिकित्सा के लिए डा० व्हाइट को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ही चुना गया था। डा० व्हाइट से पूछा गया कि हृदय-रोग के संबंध में आपके अनुभव और विचार क्या हैं, तो वे बोले—"जीवन-भर सक्रिय रहिये। बाईस वर्ष की आयु हो जाने के बाद अपना वजन एक पौंड भी न बढ़ने दीजिये और धूम्रपान से बचिये।"

इधर पश्चिम जर्मनी के एक शोधकर्ता डा० बरदोल्ड केर्न ने दावा किया है कि वे एक ऐसी गोली का विकास करने में सफल हो गये हैं, जिसका नियमित प्रयोग करने से हृदय-रोग की संभावना से ही मुक्ति मिल सकती है। इन साहब का कहना है कि दिन में बस एक या दो बार इस गोली को लेना काफी होगा।

एक अफ्रीकन पौधे की पत्तियों (फॉक्स ग्लोव्स) से प्राप्त विष हृदय-उत्तेजक होता है और इसका उपयोग इस नयी औषधि के विकास में किया गया है। डा० केर्न का कहना है कि हृदय-रोग का कारण हृद्वाहिका धमनी में रक्त का जमाव नहीं है, जैसा कि प्रायः समझा जाता है, अपितु जब हृदय के भीतर की किसी पार्श्विक दीवार को रक्त की सप्लाई पूरी नहीं हो पाती, तभी दिल का दौरा पड़ता है। और इस स्थिति को उनके द्वारा आविष्कृत गोली से रोकना संभव है।

पकड़ कैन्सर की भी

कैन्सर का पता रोग की प्रारंभिक अवस्था में लग सके, इसके लिए हादासाह हिब्रू यूनिवर्सिटी (इजरायल) के मेडिकल सेंटर की शोध वैज्ञानिक डा० क्लू ताल ने एक बिल-कुल नयी तकनीक का विकास किया है। उनका कहना है, कैन्सर-रोगी और गर्भिणी स्त्री के रक्त-सीरम में एक विशेष प्रोटीन पायी जाती है। उन्होंने इस प्रोटीन को टी. ग्लोब्यूलिन (ट्यूमर-ग्लोब्यूलिन) का नाम दिया है। यदि किसी पुरुष के रक्त-सीरम में यह प्रोटीन हो तो यह समझा जाना चाहिये कि वह व्यक्ति कैन्सर से ग्रसित है।

महिलाओं के मामले में भी यही बात कही जा सकती है, बशर्ते परीक्षाधीन स्त्री गर्भिणी न हो। गर्भिणी महिला के रक्त-सीरम में यह प्रोटीन कैसे बनता है, इसका उत्तर डा० ताल के अनुसार यह है कि गर्भ-धारण की अवस्था में महिला के अपरा (प्लेसेंटा) की आदि कोशिकाएं उसी प्रकार टी० ग्लोब्यूलिन के निर्माण का उद्दीपन करती हैं, जैसे कैन्सर रोगी की ट्यूमर-कोशिकाएं किया करती हैं।

डा० ताल का विश्वास है कि परीक्षण की यह विधि सभी प्रकार के कैन्सरों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकेगी। यरूशलम में जनमी डा० ताल ने हिब्रू विश्वविद्यालय से स्नातक परीक्षा पास करने के बाद अनेक वर्षों तक राकफेलर इंस्टिट्यूट में शोध-कार्य किया। गत बीस वर्षों से वे कैन्सर के लिए प्रतिरक्षात्मक प्रतिक्रिया पर अध्ययन-अनुसंधान करती रही हैं।

इस संबंध में जर्मन चिकित्सा-विज्ञानी डा० अर्नस्ट वान आकेन की बात भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। उनका कहना है कि नियमित रूप से लंबी दौड़ कैन्सर से होने वाली

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लाई....ध्वनि-तरंगों से!

सूई-धागे के बिना भी सिलाई संभव है?

जी हां, एक अमरीकी कंपनी ने ऐसी बना दी है, जो सूई-धागे के बिना ही सिलाई ी है। इस मशीन का का नाम है 'द सोनिक शीन' यानी 'ध्वनि सिलाई मशीन'।

यह मशीन अपने एक 'सींग' से कपड़े पर की श्रवण-क्षमता से बहुत अधिक आवृत्तियों वनि-कंपन छोड़ती है और कपड़े में टांके ुरू हो जाते हैं। शर्त यह है कि कपड़ा ३५ सामान्य सूत और शेष कृत्रिम सूत से बना । मशीन के 'सींग' से निकलने वाली ध्वनि-तरंगें कपड़े की सिलाई कर देती हैं—कहिये कि जैसे धातु को जोड़ा जाता है, वैसे ही उसकी 'वेल्डिंग' कर देती हैं।

ध्वनि-तरंगें छोड़ने वाला मशीनी 'सींग' कपड़े के ऊपर चलता है और कपड़े के क निहाई, या टांकों का पैटर्न तय करने वाली चकरी लगी रहती है। ये चकरियां प्रकार के टांकों के लिए अलग-अलग हैं और उन्हें आसानी से बदला जा सकता र यह मशीन केवल सिलाई ही नहीं, कढ़ाई भी कर सकती है, काज भी बना ै। चलाने के लिए मशीन में एक पेडल लगा रहता है, जिस पर पांव रखकर की रफ्तार कम-ज्यादा कर सकते हैं—लंबी सिलाइयां करनी हों, तो एक मिनिट कुट तक मजे में कर डालिये।

भी तो यह मशीन केवल बड़ी सिलाई-कंपनियों के ही बूते की चीज है। कीमत ा २२,१२५ रुपये। लेकिन इसकी निर्माता ब्रैनसन सोनिक पावर कंपनी (डैनबरी, कट, अमरीका) प्रयत्नशील है कि साल-भर में ही इसका ऐसा घरेलू माडल ा जाये, जो आम सिलाई मशीनों के भाव ही मिल सके।

o o o

से रोका जा सकता है? वे सचमुच इस निर्णय पर पहुंचे हैं कि एक ही आयु-वर्ग के वे लोग, जो लंबी दौड़ के आदी हैं, उन्हें आलसी लोगों की अपेक्षा कैन्सर से कम खतरा है।

एक क्लब जिसके ४५४ सदस्य लंबी दौड़ में नियमित रूप से हिस्सा लेते थे, छः वर्ष तक परीक्षणाधीन रखे गये और उनमें कुल चार सदस्य ऐसे थे, जिनमें कैन्सर के लक्षण दृष्टिगोचर हुए। इसके विपरीत लगभग उसी आयु-वर्ग के अपेक्षाकृत कम सक्रिय उतने ही व्यक्ति, उतने ही समय के लिए (छः वर्ष) परीक्षणाधीन रखे गये, तो पाया गया कि उनमें से २९ व्यक्तियों में कैन्सर के लक्षण विद्यमान हैं। उनमें से भी सत्रह की हालत तो बहुत ही खराब थी और उनकी मृत्यु लगभग निश्चित थी, जब कि लंबी दौड़ वाले जिन चार सदस्यों में शुरू-शुरू में इस रोग के लक्षण दृष्टिगोचर हुए थे, वे भी धीरे-धीरे ठीक हो गये और फिर दौड़ने लगे।

रक्षा अन्न की

देश में अन्न का उत्पादन बढ़ सके, वैज्ञानिक स्तर पर इस दिशा में काफी काम हुआ है, और इसमें सफलता भी मिली है। हरितक्रांति की चर्चा आपने जरूर सुनी होगी। यह ठीक है, जरूरी भी। मगर इतने भर से काम नहीं चल सकता। जो अन्न खेतों से गोदामों में आ गया, उसकी रक्षा भी होनी चाहिये, कीड़ों-मकोड़ों से। हमारे यहां उपज का एक बहुत बड़ा हिस्सा कीड़े-मकोड़े खा जाते हैं। अब तक अपनाये जाने वाले उपाय रहे हैं– गोदामों की सफाई, जमीन और बोरियों पर रोगाणुनाशी पदार्थों का छिड़का जाना, गोदामों की दीवारों और जमीन के सभी छेदों और दरारों को मजबूती से बंद कर देना, अन्न का धूप में सुखाया जाना तथा समय-समय पर उसकी जांच कराते रहना। ये सभी परिश्रमसाध्य और कष्टसाध्य तरीके हैं, और वांछनीय स्तर तक कारगर भी नहीं।

वायुरुद्ध अनाज-भंडारों का हमारे गांवों में अभाव है, इसलिए फंगसनाशी और डी. डी. टी. जैसे रक्षी रसायनों के उपयोग की गुंजाइश भी हमारे यहां बहुत अधिक नहीं है। इसलिए लुधियाना स्थित पंजाब कृषि विश्वविद्यालय के कीट-विज्ञान विभागाध्यक्ष डा० ओ. एस. बिन्द्रा ने अनाज के लिए प्रभावी कीटनाशी-स्प्रे का विकास किया है।

इसके लिए एक साधारण-से यंत्र का निर्माण भी किया जा चुका है, जो मात्र दो सौ रुपये की लागत से किसी गांव में भी तैयार कराया जा सकता है। इसके लिए हौपर में एक लंबे सूराख में से अनाज गिराया जाता है, और गिराते समय यंत्र से उस पर इस नये पदार्थ को स्प्रे कर दिया जाता है। आठ घंटे में लगभग दस मीटरी टन अनाज को इस प्रकार उपचारित किया जा सकता है। और इस पर आने वाला खर्च ? बस, दस पैसा प्रति क्विंटल। एक गांव के लिए एक या दो यंत्र काफी होंगे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है, या इस पद का अधिकारी कोई और है।

जां प्येरे हैलेट अफ्रीका के वन्य पशुओं के अध्ययन में वेजोड़ है। अपनी पुस्तक 'जंगल किताबू' में उसने सिंह संवंधी अपने पर्यवेक्षणों का जो सार दिया है, वह ज्ञान-वर्द्धक ही नहीं, अत्यंत रोचक भी है। उन्हीं में से कुछ वातें यहां संकलित की गयी हैं।

अफ्रीकी वन-जन मानते हैं कि सिंह की गर्जना का अर्थ है—"यह भूमि किसकी है? मेरी, मेरी।" मगर इस शासक-तुल्य गर्जना, मनोमोहक अयाल से युक्त रोवीले राजोचित शरीर और अतिविख्यात पराक्रमकृत्यों के वावजूद सिंह सर्वथा सज्जन प्राणी है।

मोहन

वनराज नहीं वनरानी

न के लंहड़े नहीं; नहिं हंसन की
ांति', कवि ने पोथियां पढ़ने के उप-
ा होगा। जिन्होंने सिंह की दुनिया
, वर्षों तक रात-दिन उसका पर्य-
या है, उनकी पुस्तकों ने सिंहों के
हुत-सी भ्रांतियों को मिटाया है।
हमें बताती हैं कि सिंह की आदतें
उसका सामाजिक और गार्हस्थ-
सा है, उसकी निजी वासनाएं-
कैसी हैं, क्या वह सचमुच वनराज

अपनी भूख मिटाने के लिए जो छोटे शश-शावक से लेकर गजराज तक को मार गिराये, वह सज्जन प्राणी? पर आखेटक क्या सज्जन नहीं होता? सज्जन कौन? जो अकारण किसी को हानि नहीं पहुंचाये। और सिंह प्रायः अकारण किसी पर आक्रमण नहीं करता।

सज्जन 'बड़े' भी होते हैं और उन 'बड़ों' का यह लक्षण भी है कि वे निष्क्रिय, अधिकांशतः, परावलंबी, स्वार्थपरायण और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनूठी शान-शौकत से जीवन-यापन करने वाले होते हैं। सिंह इस अर्थ में भी 'बड़ा' है, वह अत्यंत आलसी, बहुपत्नीक, सुखेषणा-पूर्ण, और पत्नियों से काम-काज कराकर स्वयं आनंद-भोग करने वाला अनोखा वन-राज है।

और राजमहिषी की बात सुनिये। अपने शावकों को साथ लिये वह घात लगाती है, दौड़ लगाती है, आक्रमण करती है, शिकार मारती है; पर वनराज स्वयं आलस्य में पसरा अधखुली आंखों से यह सब देखता मात्र रहता है। हां; किसी बड़े शिकार से सिंहनी का पाला पड़ जाये, तो जरूर सिंह भी मैदान में कूद पड़ता है। मगर शिकार मारने के बाद सिंहनी को, शावकों को, सबको दूर हटाकर वह पहले अपना पेट भरता है।

सिंह में यह स्वार्थपरता भले ही हो; पर वह सामाजिक व्यवहार में बड़ा कुशल है। वह बहु-विवाही है, और ये विवाह लंबे अरसे तक नहीं टूटते और वह अपनी अनेक पत्नियों में ज्यादा कलह भी नहीं होने देता। छोटे-बड़े शावकों के बीच वह अपना बड़प्पन निभाता है और दूसरे सिंहों के साथ यथोचित मैत्री भी।

सिंहनी घर की मजदूरनी है, वह सब काम करती है। अपने बच्चों को ही नहीं पालती, बल्कि शिकार पर गयी हुई अपनी सौत के बच्चों का भी ध्यान रखती है, उन्हें अपना दूध भी पिलाती है। दूसरे जवान सिंहों से वह कभी-कभी प्रेमालाप भी करती है, पर यह प्रेम प्रायः वासना-रहित होता है।

नर-मादा दोनों बिना भेद के अपनी जाति वालों की संगति में सुखानुभव करते हैं। कभी कोई अकेला पड़ गया हो और कुछ समय उपरांत अपनी जाति के किसी सदस्य से मिलाप हो जाये, तो वे जिस स्नेह भाव से परस्पर स्पर्श करते हैं, वह दृश्य अद्भुत होता है। मगर टोली का अध्यक्ष वयस्क सिंह इस प्रकार का प्रदर्शन नहीं करता। वह अपना बड़प्पन निभाता है, प्रसन्नतासूचक कुछ ध्वनि मात्र करता है और अलस-भाव से पड़ा समय काटता रहता है।

प्रायः देखा गया है कि सिंह-परिवार केवल क्षुधा-शांति के लिए आखेट करता है। बाघ या चीते की भांति केवल मारने के भाव से नहीं। सिंह को जब तक कोई न छेड़े, तब तक वह अपने रास्ते आता है और अपने रास्ते जाता है, किसी का मार्ग अवरुद्ध नहीं करता। बादलों की गरज से क्रुद्ध होकर सिंह के चट्टानों पर टूट पड़ने की बात कवि ने कही है—पर्जन्यगर्जितामर्षिश्वभ्रे पतति केसरी। इसे उत्प्रेक्षा ही समझना चाहिये। सिंह किसी हद तक भीरु ही है।

माना जाता है कि सिंह पेड़ पर नहीं चढ़ते, पर ऐसी बात नहीं है। सिंहनी और उसके बच्चे व साथी घने पेड़ों की डालों पर चढ़कर, बदन से बदन भिड़ाकर बड़े सुख और स्नेह से समय बिताते हैं। ऐसी सामूहिक सुखचर्या बहुत कम वन-पशुओं में ही देखने को मिलती है। वनपशु-प्रेमियों को वृक्ष पर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

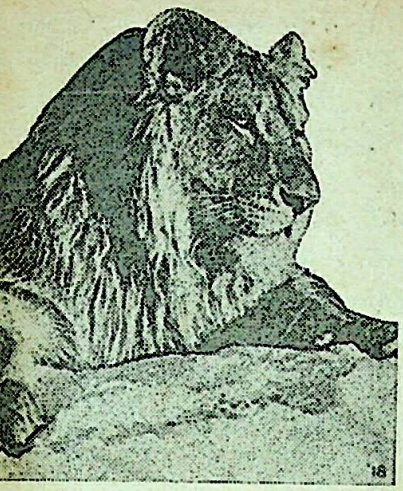

वनराज

समूह अपना-अपना रास्ता पकड़ते हैं। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि दोनों समूह कुछ दिन मिल-जुलकर रह लें, और फिर दो-चार सदस्यों की अदला-बदली कर लेने के बाद अपने-अपने क्षेत्र में चलें जायें।

जहां शिकार पर्याप्त हो, जल-वायु अनुकूल हो, वहां दो-तीन समूह एक साथ भी रहते पाये जाते हैं; मगर तब भी वे अपने-अपने 'बड़े' के अधीन ही रहते हैं।

परिवार बनते-बिगड़ते भी हैं, विशेषतः जब बच्चे बड़े हो जाते हैं, या कोई सिंहनी असंतुष्ट होकर अपने शावकों को लेकर कहीं चली जाती है। परिवार-परिवर्तन विशेषतः तब होता है, जब सिंहनी ऋतुमती होती है। सिंह और सिंहनी दोनों के अपने-अपने खिंचाव-तनाव होते हैं, दोनों की अपनी-अपनी आदतें होती हैं। किन्हीं भी दो सिंह व दो सिंहनियों के स्वभाव व बर्ताव में उसी तरह का अंतर होता है, जैसा किन्हीं दो पुरुषों और दो स्त्रियों के स्वभाव व बर्ताव में पाया जाता है। परिस्थिति, पारस्परिक व्यवहार व ऋतु—सबका उनके स्वभाव व बर्ताव पर असर होता है।

पारस्परिक प्यार व दांपत्य में सिंह-सिंहनी के निजी व्यक्तित्व की झांकी अच्छी तरह देखने को मिलती है। सिंहनी कभी सिंह के प्रेम-प्रदर्शन का अनादर या विरोध करती है, तो कभी वही सिंह को प्रलोभित करती

परिवार का दृश्य बड़ा प्रिय होता है।
न्यतया सिंह-समूह पचीस-पचास
घेरे में विचरता है। इस समूह में;
जी में 'प्राइड' कहते हैं, एक वयस्क
की एकाधिक पत्नियां और छोटे-
शावक होते हैं। कभी-कभी एका-
दा या एकाधिक अविवाहित नर
ा समूह बनाकर वनभ्रमण करते
समूह में कभी गलित-नखदंत वृद्ध
पाया जाता है, जो समूह का
नहीं, सलाहकार मात्र होता है।
क परिवार अपने विचरण-क्षेत्र की
ा करता है। दूसरा परिवार उसमें
रे, तो उन दोनों में आपस में भिड़ंत
है। पर अक्सर वह वाक्-युद्ध मात्र
। एक दूसरे पर गुर्राने के बाद दोनों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है, उसे उत्तेजित करती है, यहां तक कि उसे परेशान कर डालती है। सिंह अनिच्छा या विरोध प्रदर्शित करती सिंहनी से प्रेम याचना करता है, तो प्रलोभन-परायण उत्तेजित सिंहनी के प्रति उपेक्षा भी प्रदर्शित करता है।

परंतु बहुधा वह स्वयं आगे बढ़कर सिंहनी पर अपना पंजा मारता है, जो कि इच्छा-प्रदर्शन का उसका ढंग है। सिंहनी बदले में चांटा मारकर चल पड़ती है। जीभ लटकाये, हांफता हुआ सिंह उसके कदमों में कदम टेकता हुआ उसका पीछा करता है।

सिंहनी जब संभोग-इच्छुक हो जाती है, तो पेट के बल भूमि पर लोट जाती है। और तब, जैसा कि बिल्ली जाति के सभी पशुओं में होता है, मादा की गर्दन को अगले पांवों से पकड़कर नर ऊपर चढ़ता है। दोनों का योनि-संबंध मात्र पांच-दस सेकेंड के लिए होता है। तत्पश्चात् सिंहनी आनंद-प्रदर्शित करती, पीठ के बल लोटने लगती है और सिंह अपनी शान दिखाने के लिए निर्लिप्त-सा अचल और मौन होकर सामने के किसी वृक्ष को या उस पर बैठे बंदर-दर्शक को, या दूर क्षितिज पर लटकते किसी मेघखंड को एकटक देखने लगता है। बीस मिनिट बाद पुनः वही संभोग-क्रिया होती है। उस दिन, और उसके बाद भी कई दिन तक।

सिंह-सिंहनी की रति-प्रवृत्ति के संबंध में भर्तृहरि का यह वाक्य बहुत प्रसिद्ध है :

सिंहो बली द्विरदशूकरमांसभोजी
संवत्सरेण रतिमेति किलैकवारम्।

अर्थात् सूअर और हाथी का मांस खाने वाला शेर भी वर्ष में एक बार ही रति कार्य में प्रवृत्त होता है। महाकवि ने यह बात सिंह-जीवन का निरीक्षण करने के बाद ही लिखी होगी।

सिंह-सिंहनी दंपति जरूर होते हैं, पर जिस प्रकार कुछ वन्य जन-जातियों के पति अपनी पत्नियों को परपुरुष को अल्प काल के लिए 'मांगा' देकर अपनी उदारता पर गर्व अनुभव करते हैं, उसी प्रकार कई सिंहनी किसी कुंआरे नरसिंह पर फिदा हो जाती है, तो पति सिंह चुपचाप, मगर अभिमानपूर्वक उस कृत्य का अवलोकन करता है। सिंहनी दो-तीन नरसिंहों से संभोग करे तो भी पति सिंह चुप रहता है। परंतु कभी-कभी वह क्रुद्ध होकर आगंतुक को भगा भी देता है, विशेषतः जब उसे संदेह हो कि वह उसके सिंहासन को हथियाना चाहता है।

ऐसे समय दो सिंहों की भिड़ंत भी हो जाती है, पर वह बहुत भयंकर नहीं होती। दोनों एक-दूसरे पर गुर्राते हैं, हल्के पंजे भी मारते हैं, पर गहरे घाव नहीं किया करते। कोशिश रहती है प्रतिपक्षी को थका देने की। और होता भी यही है, थका सिंह आत्म-समर्पण के भाव से चित लेटकर टांगें ऊपर कर देता है। विजयी सिंह फिर आक्रमण नहीं करता और पराजित को चुपचाप चले जाने देता है। "पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः" कहने वाले कवि ने सिंहनी को जीतने को सिंह की इस क्रिया को शायद देखा होगा।

ऐसे संभोग-संघर्षों में विजय चाहे पति की हो या नवांतुक की, मगर जिसके लिए संघ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है, उस पर उसका कोई प्रभाव नहीं
। गर्भाधान के उपरांत वह पुराने या
ति की सेवा में संलग्न हो जाती है—
लिए शिकार करती है, उसे खाना
ती है। गर्भकाल १०५ से ११० दिन
ता है। इसके अंतिम दिनों में वह गर्भ-
से शिथिल हो जाती है, शिकार नहीं
ाती। तब समूह की दूसरी सिंहनियां
र करती हैं और गर्भवती को अपने
र में हिस्सा देती हैं।

हनी पानी के समीप किसी गुफा में
नी झाड़ियों में प्रसव का स्थान चुनती
क प्रसव में तीन-चार बच्चे पैदा होते
मी एक ही और कभी पांच-छः बच्चे
जाते हैं। सिंहनी के चार स्तन होते
ससे अधिक बच्चों के पालन में कठि-
होती है, और सभी बच्चे एक समान
हीं पाते। नर और मादा बच्चों की
प्रायः समान होती हैं।

ट-भर लंबा और आधा किलो वजन
च्चा जनमते ही अपनी नीली आंखें
देता है। महीने-भर तक ही वह दूध
है—मां का, मौसी का या चाची का।
प्ताह में उसके दांत निकलने लगते
महीने में वह चलने-फिरने लगता है।
ड़ा होने पर ताकतवर होकर वह मां
थ चलने-फिरने लायक हो जाता है;
ां उसे शिकार मारना सिखाती है।
लतियां करता है, असफल होता है
ां उसे दुतकारती-पुचकारती है।
ता महाशय अलस भाव से पड़े-पड़े
निहारते रहते हैं और शिकार हाथ लगते ही खुद पहले अपना पेट शान से भरते हैं। सिंहनी और बच्चे मुंह ताकते रहते हैं, बचा-खुचा उनके पल्ले पड़ता है।

अफ्रीका के आदिवासियों में भी यही प्रथा है—घर में पहले पुरुष-सिंह भरपेट भोजन करता है, तत्पश्चात् पत्नी व संतान। मेहनत का काम पत्नी ही करती है, पुरुष की अपेक्षा वह अधिक कर्मशील होती है।

सिंह ९ फुट लंबा और ४०० पौंड वजन का होता है, तो सिंहनी ८ फुट लंबी और ३०० पौंड की ही होती है। अपने कद-काठ और वजन के अनुपात में सिंहनी का बल पशुओं में अद्वितीय है। शिकार को खोज निकालना, उसकी गतिविधि को समझना-देखना, उसे घेरना, उस पर टूट पड़ना, उसे गिरफ्तार करना, मारना, खाना सब काम ऐसे सधे-सधाये ढंग से होते हैं कि अध्ययन करने वालों को अचरज में डाल देते हैं। सिंहनी की दृष्टि, श्रवण व घ्राण शक्तियां भी गजब की होती हैं।

पारस्परिक सहयोग, अक्ल और होशियारी में सिंह-परिवार के सदस्यों के व्यवहार को देखकर ऐसा मालूम होता है कि वे आपस में मौन मानसिक विचार-विनिमय करने में भी समर्थ हैं।

सिंह-परिवार या सिंह-समूह का अध्ययन करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि सिंह वास्तविक वनराज कहलाने का अधिकारी नहीं, यह पद तो मिलना चाहिये सिंहनी को, और उसे कहा जाना चाहिये 'वनरानी'।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चित्र की चोरी

अर्चना शर्मा

पिछले दिनों स्पेनी चित्रकार डीगो वेलास्क्वेज के चित्र की बिक्री की चर्चा रही। आजकल इतालवी चित्रकार राफेल के एक चित्र को लेकर कला-जगत् में तहलका मचा हुआ है। ८।। इंच चौड़ा और १०।। इंच लंबा यह चित्र एक युवती का पोर्ट्रेट है। इसे पोप जूलियस द्वितीय ने १५०४ से १५०५ के बीच राफेल से बनवाया था।

काफी समय तक यह चित्र अर्बिनो के डचूक के पास रहा। फिर एक विवाह में दहेज के साथ फिएस्ची परिवार में आया। १९४७ में फिएस्ची परिवार के अंतिम वारिसदार ने उसे जिनोआ के एक व्यापारी के हाथ बेच दिया। फिर उसका क्या हुआ, कोई नहीं जानता था।

लेकिन १५ दिसंबर १९६९ को जब अमरीका की विश्वविख्यात बोस्टन म्यूजियम ने घोषणा की कि यह चित्र उसके पास आ गया है, तो इटली सरकार के कान खड़े हुए। कलाकृतियों के निर्यात पर सख्त पाबंदियों के रहते यह चित्र इटली से बाहर कैसे गया? जांच का काम कलाकृतियों के जासूस, ६० वर्षीय रुडोल्फो सिविएरो को सौंपा गया। सिविएरो चित्रों की चोरी और तस्करी का पता लगाने में इतना सिद्धहस्त है कि उसे आजकल इटली सरकार में बिना विभाग के मंत्री का रुतबा मिला हुआ है।

सिविएरो ने राफेल के इस चित्र के बारे में जो भी प्रकाशित सामग्री थी, उसे ध्यान से पढ़ा। पढ़ने से एक सुराग हाथ लगा कि १९ वीं शताब्दी में चित्र का चौखटा खो गया था। इधर बोस्टन म्यूजियम का दावा था कि चित्र उसे उसके मूल चौखटे के साथ प्राप्त हुआ है।

सिविएरो के जासूसी दिमाग ने दलील दी—या तो चौखटा नकली होना चाहिये या चित्र। लेकिन विशेषज्ञों की पक्की राय थी कि चित्र असली ही है। सिविएरो ने समय नष्ट नहीं किया और खोज-बीन करके फ्लोरेंस में उस कारीगर को जा पकड़ा जिसने यह चौखटा बनाकर दिया था। चौखटा बनवाया किसने? पता चला, जिनोआ के फेर्रूसियो बॉसी नामक व्यक्ति ने। सिविएरो पुलिस अधिकारियों के साथ बॉसी के घर जा धमका।

बॉसी ने कबूल किया कि चौखटा उसने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जार लीरा में उसी फ्रेम-निर्माता से
था और उसमें एक छोटा-सा चित्र
या था और चित्र कुछ वर्ष पूर्व स्विट्-
के एक कला-प्रेमी को बेच दिया
मगर यहीं बॉसी अनजाने में ही एक
बात कह बैठा, जिससे वह फंस गया—
क्या पता था कि यह मामूली-सा
तनी बड़ी संस्था में पहुंच जायेगा।"

.....यानी बोस्टन
यम। सिविएरो
ो जानना चाहता
चित्र वहां कैसे
। पुलिस के
ों ने गवाही दी
ॉसी तो कला-
ों का पुराना
हैं और सजा-
भी। अंततः
को कबूल करना
क उसने वह चित्र
रलैंडवासी को
बल्कि बोस्टन
यम के अधिका-

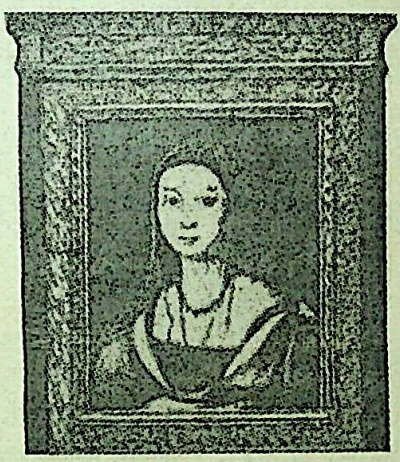

तहलका मचाने वाला चित्र

को ही काफी बड़ी लेकर रकम बेचा था।
विएरो ने जिनोआ के हवाई अड्डे
ब होटलों के रजिस्टर छान डाले।
वला कि बोस्टन म्यूजियम के तीन
ारी १२ जुलाई १९६९ को इटली
और १३ जुलाई को उन्होंने १ करोड़,
ाख, २४ हजार रुपयों में बॉसी से
त्र खरीदा था। लेकिन चित्र को वे
उसी समय अपने साथ नहीं ले गये। छः सप्ताह बाद उनमें से एक, जान स्फार्जेस्की वापस आया और चित्र अपने साथ ले गया। लेकिन दो-दो देशों के चुंगी-अधिकारियों की आंखों में धूल झोंकने में वह कैसे सफल हुआ, यह अभी तक रहस्य ही है।

बोस्टन म्यूजियम ने अपने बचाव के लिए सारे प्रमाण जुटा लिये। लेकिन तभी एक और घटना घटी। जान स्फार्जेस्की फिर इटली आया। वह बॉसी की पुत्री अन्ना से मिला; क्योंकि तब तक बॉसी की मृत्यु हो चुकी थी। सिविएरो उसकी एक-एक गतिविधि पर नजर रखे हुए था। उसका कहना है कि स्फार्जेस्की ने अन्ना से प्रस्ताव किया कि वह चित्र वापस ले ले और पैसे लौटा दे। मगर अन्ना को एक करोड़, ११ लाख, २४ हजार रुपये ज्यादा प्यारे थे।

सो राफेल का वह दुर्लभ चित्र अभी तक बोस्टन म्यूजियम में है। मगर चुंगी विभाग ने सुरक्षा की दृष्टि से उसे सीलबंद कर दिया है। अब यह मामला अमरीकी सरकार के लिए भी चिंता का विषय बन गया है। इटली सरकार तो चित्र की वापसी के लिए अदालती कार्रवाई करने की भी सोच रही है।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

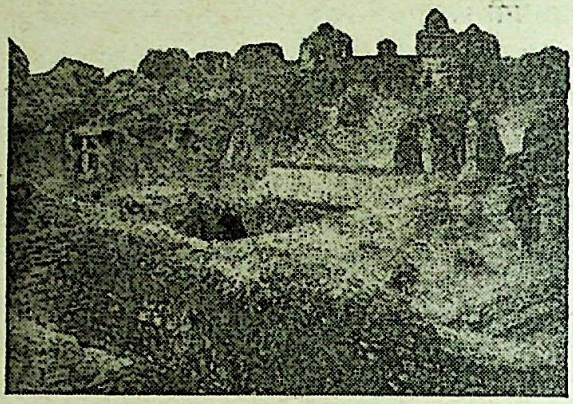

शौर्य और प्रणय का स्मृति-नगर

मांडू

चालीस मील जमीन को घेरने वाले परकोटे के अवशेष ऊंचे पहाड़ पर, दूर से नजर आते हैं। कभी यहां वैभव था। आज खामोश इतिहास है। पत्थर कहानी कहते हैं। कहानियां इतिहास पर हावी हैं। किंवदंतियों और लोककथाओं के रंग रूमानी हैं और लोकमान्यताओं के अंदाज गजब के नाजुक—शायद अप्रामाणिक परंतु विश्वनीय।

जब यहां पांच लाख की आबादी थी और हर आबाद परिवार लखपति परिवार था, बाहर से कोई वक्त का मारा आता तो उसके भाग्य जाग जाते। वह भी लखपति बनकर आबाद होता। व्यवस्था यह थी कि हर परिवार एक-एक मुद्रा का दान करता और वह वक्त का मारा पांच लाख मुद्राएं एकट्ठी कर लेता। यह राजा भोज के जमाने की बात है। धार, राजा भोज की राजधानी थी। यहां संस्कृत का महाविद्यालय था। और यहां ७०० मंदिर थे, जिनमें से ३०० मंदिरों पर शुद्ध सोने के कलश थे। यह सारा वैभव ४० मील घेरे वाले परकोटे के भीतर बिखरा हुआ था। पर फिर इस जमीन ने वह

• सतीश जायसवाल •

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ा भी देखा, जब शाहजहां के दरबार
जमहल के शिल्पकार आये थे—मांडू
शंगशाह का मकबरा देखने। देखने
ालों में उस्ताद हाकिम भी थे, जिनके
ाजमहल बनाने में लगे थे। मकबरे
इमारत में जाली और नक्काशी का
बारीक, इतना नाजुक काम है कि
र उस्ताद के मुंह से भी बेसाख्ता
निकली होगी।
तो सदियों की धूप, सर्दी और बारिश
मरमर की इस शानदार इमारत पर
लकीरें छोड़ दी हैं और दरवाजे पर,
लगी पुरातत्त्व-विभाग की तख्ती
देती है कि—"संगमरमर के इस मक-
ा निर्माण खुद होशंगशाह ने शुरू
था। महमूदशाह खिलजी ने १५ वीं
ें इसे पूर्ण कराया था। शाहजहां के
से यहां शिल्पी आये थे। मकबरा,
पवित्र स्थान था और हर साल यहां
ता था। पश्चिम में हिन्दू शैली का
बरामदा धर्मशाला के रूप में काम
था।"
ज यहां महलों, मस्जिदों और मक-
खंडहर पड़े हैं। वैसे तो कहते हैं कि
मांडू हिन्दू-कालीन मांडू पर जीवित
दिर मस्जिदों में तब्दील हुए और
मकबरे हो गये। लेकिन कहानियों
वन अबाधित है ... संवत्, शैली,
के विवादों से परे, और उनकी

जहाज महल →

रसमयता अप्रामाणिकता से अप्रभावित।

मीनार विहीन जामी मस्जिद की दीवार पर कमल के पुष्प उत्कीर्ण हैं। इस पर विवाद है। यह मस्जिद नहीं, राजा जंबे का महल है। यहां करिया राजा का दरबार लगा करता था और राजघराने की रानियां ऊपर जालीदार झरोखों में बैठकर दरबार देखा करती थीं। उनमें करिया राजा की बेटी, रूपसी राजकुमारी भी होती थी। महल की छत पर से तारापुर दरवाजा नजर आता है, जो छः मील दूर है। दरवाजे से होकर एक सुरंग-मार्ग था, जो सीधे राजा जंबे के महल तक आता था। इसी से आल्हा-ऊदल ने मांडू में प्रवेश किया था।

करिया राजा का राजसिंहासन अभी सुरक्षित है। कभी इस पर स्वर्ण-पत्र रहे

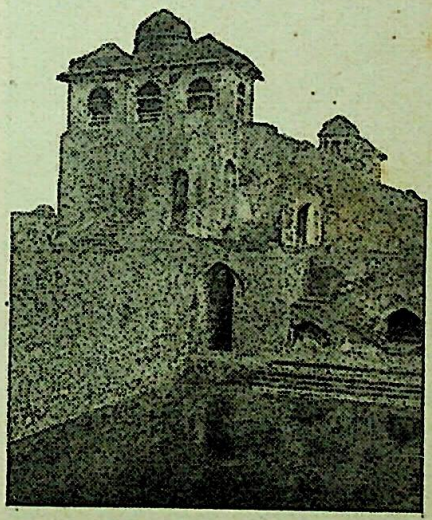

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होंगे, मखमल-रेशम के गाव-गद्दे रहे होंगे, पर अब नंगा पत्थर है। भरे दरबार में यहां दच्छराज और बच्छराज के सिर धड़ से अलग होकर जमीन पर लुढ़क गये थ और कटे हुए सिर महल के दरवाजे के सामने टांग दिये गये थे। दच्छराज और बच्छराज की हत्या के समय आल्हा-ऊदल नासमझ बच्चे थे। फिर बरस बीते, 'आल्हा-खंड' के वीर नायक, महोबे के बड़े लड़ैया, आल्हा और ऊदल यहां आये थे—अपने पिता और चाचा की हत्या का बदला लेने।

आज राजसिंहासन खाली है। दरबार खामोश और झरोखे सूने। लेकिन उस दिन

खंडहरों का वैभव—टूटी छत, गिरती दीवारें और खूबसूरत जालियां

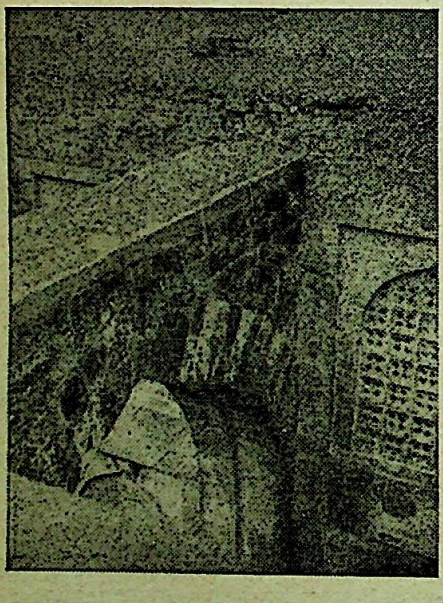

दरबार भरा था और झरोखे गुलजार थे। बीच दरबार में ऊदल खड़ा था, तलवार की नोक पर नौलखाहार झुलता हुआ। ऊपर झरोखे में बैठी रूपसी राजकुमारी, करिया राजा की बेटी, अपने प्रियतम ऊदल को मंत्र-मुग्ध निहार रही थी। वह ऊदल से प्रेम करती थी।

मांडू में सुरक्षित प्रवेश पा लेना दुर्गम था। एक ही रास्ता था। तारापुर दरवाजे का सुरंग-मार्ग। राजकुमारी ने ऊदल को तारापुर दरवाजे का रहस्य बता दिया था। फिर, जहां दच्छराज और बच्छराज के सिर कटकर गिर थे, वहीं करिया राजा का सिर कटकर गिरा। आल्हा-ऊदल का प्रतिशोध पूरा हुआ।

जामी मस्जिद (राजा जंवे का महल) के सामने अशर्फी महल है। अशर्फी महल की बांयी तरफ ऊदल की सांग आज भी गड़ी है।

अशर्फी महल कभी फारसी का मदरसा था। बाद में महमूदशाह खिलजी का मकबरा बना—ऐसा पुरातत्त्व-विभाग की तख्ती पर लिखा है। महमूद ने मेवाड़ के राणा कुंभा को हराया था और विजय की यादगार के रूप में एक सतखंडा स्तंभ बनवाकर उस पर शिलालेख लगवाया था। सतखंडा स्तंभ के शिखर तक पहुंचने के लिए १९८ सीढ़ियां चढ़नी पड़ती थीं। सुल्तान जब इन सीढ़ियों पर चढ़ा, तो नीचे हर सीढ़ी पर से दो-दो अशर्फियां भिखारियों को बांटी गयीं। महल का नाम ही अशर्फी महल हो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

। अब सतखंडा स्तंभ गिर चुका है।
रा सलामत है और महल के खंडहर
बाकी हैं।
पूरताल और मुंजताल के बीच जहाज
है। महल बनाने वालों की कल्पना
कि जल-भरे तालाबों के बीच महल
नजर आयेगा, जैसे कोई जहाज लंगर
खड़ा हो। जहाज-महल सुलतानों का
न-ए-आम था। दीवान-ए-खास था
ला महल। इसके साथ भी झूले की
ति की कल्पना रही है। इन महलों के
शाही महल है, चंपा बावड़ी है और
ों का हम्माम है।
ाही महल तालाब के बीच बना है।
यहां सुलतान ऐश किया करते थे; जब
हरम की बेगमों से जी उचट जाता,
ास-पड़ोस और दूर-दराज से सुंदरियां
वाकर किश्तियों में बैठाकर यहां
जाती थीं। पानी के बीच बना यह
हर तरह से मुफीद था। किसी चीख
तिरोध की आवाज किनारे, जमीन
किसी को सुनाई नहीं पड़ती थी।
ानों के रंग में भंग नहीं पड़ता था। अब
महल केवल गिरी हुई दीवारों और
छतों और सुरक्षित मलवे का ढेर है।
ब सूख चुका है।
फ़िल्म वाले यहां आते हैं। शूटिंग होती
दिल दिया, दर्द लिया' के नायक दिलीप
र को इसी जहाज महल की छत पर
यों से पीटा गया था। खलनायक प्राण
भागता फिरा था। दिलीप कुमार ने

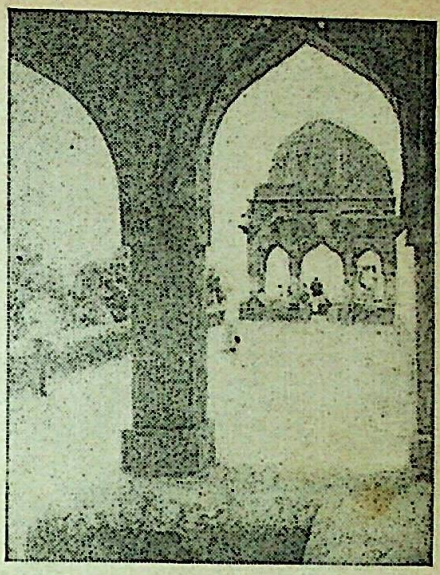

रानी रूपमती का झरोखा

जिस पत्थर के भगवान के सामने चीख-चीख कर शिकायतें की थीं, वह प्लास्टर की सफेद त्रिमूर्ति अभी तक यहां रखी हुई है।

नेहरूजी भी एक बार मांडू आये थे। गाइड उन्हें चंपा बावड़ी दिखाने गया था। बावड़ी तक पहुंचने के लिए जमीन के भीतर उतरती हुई सीढ़ियों से रास्ता है। मांडू के उत्कर्ष के दिनों में यहां आरामदेह कमरे थे। बावड़ी के जल को छूकर आती हवा कमरों को बेहद गर्मी के दिनों में भी शीतल रखती थी। बेगमें इन कमरों में आराम करती थीं। अब कमरों में नमी और सीलन है और छत के सहारे चमगादड़ लटके रहते हैं। सीढ़ियों पर अंधेरा है और फिसलन। नेहरूजी कुछ सीढ़ियां ही उतरे थे कि चमगादड़ पंख फड़-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

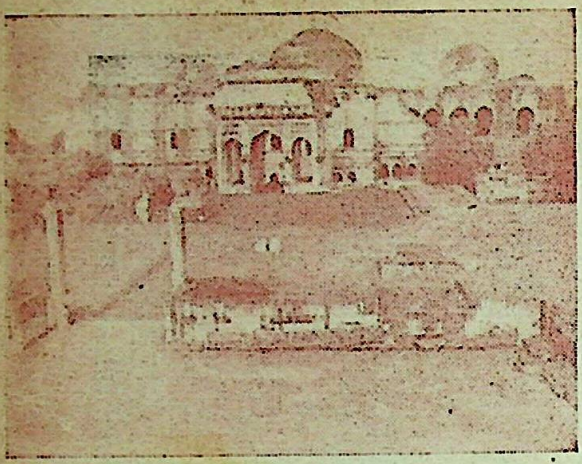

जामी मस्जिद या जम्बे राजा का महल

फड़ाते उनके सिर पर से गुजर गये। नेहरू-जी भड़क उठे–"क्या बेहूदगी है!"

गाइड हाजिरजवाब था। उसने कहा–"हुजूर, नाराज न होइये! ये चमगादड़ नहीं, बेगमें हैं! बेगमें आपसे फरियाद करती हैं।"

'रानी रूपमती' की शूटिंग भी यहीं हुई थी। क्यों न होती, रूपमती और बाजबहादुर की प्रेमकथा तो मांडू का प्रमुख आकर्षण है। जो भी मांडू आता है, एक उतावली-सी लेकर आता है। रूपमती और बाजबहादुर की प्रेमकथा का मनचाहा रूप कल्पना में संजोये। एक तरफ निमाड़ और दूसरी तरफ मालवा। क्षितिज पर बादलों से आंखमिचौनी करती नर्मदा की क्षीण रजत-रेखा और पांवों तले लोट गये बादलों के सौंदर्य से जब यात्री उबरता है, तो एका-एक यथार्थ की सत्यता उसे स्वप्निल लगती है। यही वह जगह है–रूपमती का झरोखा, जहां हर रोज रानी घोड़ा दौड़ाती आती, और दूर १२०० फुट नीचे झिलमिलाती नर्मदा के दर्शन करती थी।

नटी के रानी बनने की कहानी है। बाजबहादुर शिकार करने गया था। वीराने में संगीत ने मोह लिया। अप्रतिम सौंदर्य और मधुर सुर का संगम। जंगल से उठाकर वह रूपमती को महलों में ले आया। शादी के लिए रूपमती की शर्त थी–नित्यप्रति नर्मदा के दर्शन हों। वह नर्मदा की उपासिका थी। नर्मदा के दर्शन किये बिना पानी की बूंद भी गले से नीचे न उतारती।

और सुल्तान ने शर्त मानकर खलगांव और धर्मपुरी के बीच एक ऊंची मीनार बनवा दी थी। नागेश्वर पर मीनार आज तक सुरक्षित है। मीनार से रूपमती नर्मदा के दर्शन करती थी। लेकिन नर्मदा का बिछोह रूपमती को सालता रहा। तब एक दिन स्वप्न में रूपमती को नर्मदा के दर्शन हुए और बाजबहादुर के महल के सामने रेवाकुंड में नर्मदा का जल फूट पड़ा।

बाजबहादुर के महल में खुली छत पर आमने-सामने दो झरोखे बने हुए हैं। कभी यह छत बाजबहादुर और रूपमती के गीतों से गुलजार हुआ करती थी। बड़ी-सी खुली छत पर मंत्रमुग्ध श्रोता हुआ करते थे। झरोखों में एक तरफ बाजबहादुर होता और दूसरी तरफ रूपमती। दोनों में संगीत-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

र्वा हुआ करती थीं। बाजबहादुर
ा का महान गायक था।
फन प्यार और संगीत से परिपूर्ण
ा जीवन दीर्घायु का आशीर्वाद लेकर
या था। अकबर की विशाल सेना
एक दिन कोका आदमखां मांडू की
र निकल पड़ा। काली सिंध नदी के
आदमखां और बाजबहादुर में टक्कर
ाजबहादुर लड़ाई में हार गया
रहानपुर की तरफ भागा। बाद में
ड़ा गया और उसकी हत्या कर दी
विजयी कोका आदमखां ने रूपमती
ने हरम की रौनक बनाना चाहा,
रूपमती ने आदमखां को संदेश भेजा :

ड़ो राखो मान अलीजाह
कंई ना मांगूं राज
थी. मांगूं ना घोड़ो मांगूं
ना पैदल पांच पचास
ाजीत वाड़ो नगाड़ो मांगूं
ना उदयपुर को राज
ंदी मांगूं ना सोनो मांगूं
अर तांबो लों तो तलाक
ई सारो वीरू मांगूं
चुड़िला री पत राख।

रूपमती तो आदमखां को भाई बनाना चाहती थी और आदमखां उसे अपने हरम की बेगम बनाना चाहता था। एक ही रास्ता था—आत्मघात। रूपमती हीरे की कनी चाटकर सो गयी।

आज रूपमती नहीं, बाजबहादुर नहीं, आल्हा-ऊदल नहीं। बेरौनक महल, मीनार, मकबरे खामोश हैं—कोई समूचे, कोई अधूरे। मस्जिद, मंदिर, झरोखे शेष हैं—जामी मस्जिद, होशंगशाह का मकबरा, अशर्फी महल, जहाज महाल, हिंडोला महल, शाही महल, तारापुर दरवाजा, बाजबहादुर का महल, रूपमती का झरोखा। लेकिन विचित्र बात है कि मांडू तो अब तक जिंदा है, इन महलों, मीनारों, मकबरों, मस्जिदों, मंदिरों और झरोखों से नहीं—इनके बीच जीवित, उन कहानियों से, जिनकी अनुगूंज आज तक आवाज देती है।

'इको-प्वाइंट' पर पत्थर पर पैर रख-कर मांडू आने वाला हर यात्री बाजबहादुर को आवाज देता है, रूपमती को पुकारता है और वहां एक अपार्थिव खामोशी होती है, जो उसे जवाब देती है :

बाजबहादुर.....रूपमती.....!

★

रे घर ने मुझसे कहा—"मुझे न छोड़, क्योंकि तेरा अतीत मुझमें आबाद है।" और
ं ने मुझसे कहा—"मेरे पीछे-पीछे चला आ, क्योंकि मैं तेरा भविष्य हूं।" परंतु
घर और अपने मार्ग दोनों से कहता हूं—"मेरा न कोई अतीत है और न भविष्य!
ठहरूं, तो मेरा ठहरना ही मानो चलना है। और यदि मैं चलूं, तो मेरा चलना ही
रा ठहरना है; इसलिए कि मृत्यु और प्रेम दोनों में यह शक्ति है कि हर वस्तु को
ले।"

—खलील जिब्रान (प्रेषक : सुरेश पांडेय)

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्या पौधों में भी अंतर्जातीय विवाह संभव है ? यदि हां, तो उनसे क्या होता है ? क्या प्रकृति के सहज क्रम में विक्षेप करके कोई लाभ हो सकता है ? मगर कैसे ?

कहते हैं कि सृष्टि का सृजन ब्रह्मा ने किया। जाहिर है कि ब्रह्मा को कभी पृथ्वी पर आना पड़े, तो अपने बनाये हुए प्रत्येक जीव-जंतु को वे सरलता से पहचान लेंगे। लेकिन विश्व के किसी प्रमुख कृषि-अनुसंधान केंद्र पर पहुंच गये, तो गेहूं के समान ही दिखाई देने वाली एक अजनबी फसल का परिचय उन्हें भी प्रजनकों से लेना होगा। यह फसल ब्रह्मा के लिए अजनबी होगी; क्योंकि इसका सृजन मनुष्य ने किया है। कुछ वर्ष पहले तक पृथ्वी पर इसका अस्तित्व ही नहीं था।

मनुष्य द्वारा बनायी गयी इस फसल का नाम है—ट्रिटिकेल। गेहूं और राई घास की बेटी। पादप-प्रजनन तथा आनुवंशिकी

• देवेन मेवाड़ी •

विज्ञान के क्षेत्र में यह एक अभूतपूर्व घटना है और कृषि के क्षेत्र में विश्व की एक अद्वितीय उपलब्धि। भूख के विश्वव्यापी युद्ध से लड़ने में वैज्ञानिकों की यह नयी देन बहुत उपयोगी सिद्ध होगी और हमारी गिनी-चुनी फसलों के साथ यह एक नयी फसल के रूप में फूलेगी-फलेगी।

गेहूं का वनस्पतिक नाम है ट्रिटिकम और राई घास का सीकेल सीरिएल। इन्हीं के आपसी संकरण से तैयार हुई प्रथम मानव-निर्मित फसल है ट्रिटिकेल। गेहूं और राई घास का विवाह रचाने में मिनिटोबा विश्वविद्यालय (कनाडा) के विश्वविख्यात वैज्ञानिक डा० बी० चार्ल्स जेनकिन्स सबसे अग्रणी रहे हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

:में जब यह बेमेल अंतर्जातीय विवाह
गया, तो उससे पैदा हुई संतानें
ांझ निकलीं।
यों समझ लीजिये कि घोड़े और गधे
न से खच्चर पैदा होता है, लेकिन
स्वयं वांझ होता है और अपनी संतान
हीं कर सकता। पादप-प्रजनक डा०
न्स की खोज की महानता का अनु-
ाप लगा सकते हैं। ट्रिटिकेल को
ार करके
जो सफ-
ाप्त की,
च्चर से
-संतानें
करने मे
ापा लेने
ाबर ही
जायेगी।
निकों ने
ये अनाज
नाने में
का ही
ण किया। ट्रिटिकेल बनाने में जो
पादप-प्रजनकों ने अपनायी है, वही
गेहूं बनाने में प्रकृति हजारों वर्ष पूर्व
चुकी थी। आज से बारह-चौदह
वर्ष पहले प्रकृति में इनकोर्न नामक
गेहूं पाया जाता था।
धों में सामान्यतया विवाह अपनी ही
में होते हैं, लेकिन प्रकृति के कुशल
से इनकोर्न तथा बकरी घास (एजी-

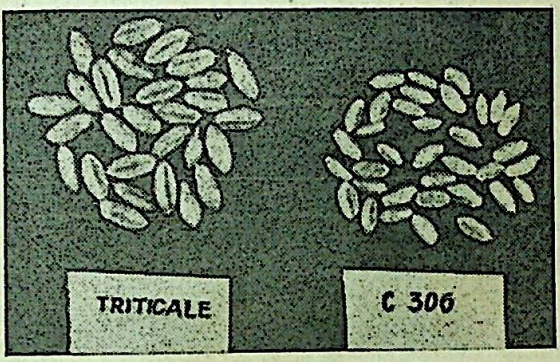

ट्रिटिकेल और गेहूं के दानों में अंतर!
बायीं तरफ ट्रिटिकेल और दायीं तरफ गेहूं।

लाप्स जाति) का अंतर्जातीय विवाह संपन्न हो गया। इससे डुरम नामक गेहूं पैदा हुआ। इसे संयोग ही समझना चाहिये; क्योंकि पौधों के इस अंतर्जातीय विवाह से संतानें वांझ ही पैदा होती हैं।

जब प्रकृति ने डुरम गेहूं बना डाला, तो फिर कभी किसी दुस्साहसी डुरम पौधे ने बकरी घास की एक दूसरी जाति से प्रणय-निवेदन कर डाला। इस तरह प्रकृति ने संयोग व सही अर्थों में हमारे सौभाग्य से इनका विवाह पुनः रचा दिया। परिणामतः डुरम और बकरी घास के इस सांयोगिक मिलन से पृथ्वी पर रोटी के गेहूं का जन्म हुआ। यही गेहूं आज हमारी थालियों में चपातियों के रूप में परोसा जाता है।

इस तरह गेहूं के जन्म में हजारों वर्ष लगे। प्रजनकों ने प्रकृति की इसी विधि का अनुसरण किया और जो काम हजारों वर्षों में पूरा हो सका, उसे उन्होंने कुछ वर्षों में ही पूरा कर डाला।

असल में पौधों में अंतर्जातीय विवाह इस लिए संभव नहीं हो पाते हैं कि संतान में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मां-बाप दोनों के गुणसूत्रों के आपस में जोड़े नहीं बन पाते। सन १९३७ में बर्नार्ड आर-नेवेल और उनकी धर्मपत्नी ने 'कौल्चिसीन' नामक एक रसायन के चमत्कारिक गुणों की खोज की और पता लगाया कि कौल्चि-सीन इस कमी को पूरा कर देता है। इसी की बदौलत ट्रिटिकेल बन सका।

द्वितीय विश्व-युद्ध के बाद वैज्ञानिक राई घास और गेहूं के विवाह में पर्याप्त रुचि ले रहे थे। सन १९४८ में डा० जे. जी. ओ'मारा को संकरण में सफलता मिली। डा० जेनकिन्स ने डा० ओ'मारा से गेहूं व राई घास की संतान के आठ-नौ दाने प्राप्त किये और इसके साथ ही दुनिया-भर से उपलब्ध गेहूं तथा राई की सैकड़ों जातियों के आपसी संकरण भी किये।

शुरू की पीढ़ियों में संतानें बांझ ही मिलीं, लेकिन पीढ़ियां बढ़ने के साथ-ही-साथ संतानों में जननक्षमता भी बढ़ी। सात-आठ पीढ़ियों के बाद तो गेहूं व राई घास जैसे जननक्षम पौधे मिल गये। इस तरह पादप-प्रजननों के अथक परिश्रम से ट्रिटि-केल नामक एक ऐसे नये पौधे का जन्म हुआ, जिसका इससे पहले पृथ्वी पर अस्तित्व ही नहीं था। आदमी ने एक नया अनाज तैयार कर लिया।

इस तरह पैदा हुई ट्रिटिकम (गेहूं) और सीकेल (राई घास) की बेटी ट्रिटि-केल। गेहूं के नाम के पहले दो, और राई घास के नाम के अंतिम दो अक्षरों को मिलाकर इसका नामकरण किया गया।

प्रारंभ में इस नये अनाज के रूप-रंग पर ही काम हुआ। पादप-प्रजनन के इतिहास में यह एक अभूतपूर्व उपलब्धि थी और शीघ्र ही फसल-विज्ञानियों की दृष्टि इस नयी-नवेली फसल पर टिक गयी।

वैज्ञानिकों ने पिछले दस वर्षों में ही ट्रिटिकेल को एक भरी-पूरी फसल के रूप में बढ़ाने के सपने देखे। डा० मनजिंग ने तो संकल्प ही कर लिया कि इसे खेतों में पनपायेंगे। आज ट्रिटिकेल की फसल विश्व के अनेक देशों में अनुसंधान फार्मों में लह-लहा रही है। कृषि-वैज्ञानिकों का विचार है कि इसे शीघ्र ही खेती के लिए जारी कर दिया जायेगा।

गेहूं तथा राई घास ने अपनी इस बेटी को अपने श्रेष्ठ गुण सौंपे हैं। ट्रिटिकेल को पिता गेहूं से उपज और गेहूं की विशेषताएं मिलीं और मां राई घास से बढ़िया कदकाठी, रोगरोधिता और प्रतिकूल परिस्थितियों को सहने की क्षमता। इसके जनक डा० जेन-किन्स का कहना है कि यह एक नयी फसल के रूप में खूब फलेगी-फूलेगी।

गेहूं की बाली की तुलना में ट्रिटिकेल की बाली में ५० प्रतिशत अधिक दाने पड़ते हैं। दाना गेहूं के बड़े-से-बड़े दाने से दुगुना और गुणों में गेहूं के समान ही होता है। इसकी फसल पर लंबे या छोटे दिनों का भी कोई प्रभाव नहीं पड़ता है, अन्यथा कई फसलें तो बड़े या छोटे दिनों के दौरान चेहरे पर घूंघट ही डाले रहती हैं। उनकी बालियां पत्तियों के घूंघट से बाहर ही नहीं झांकतीं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ीमती जेनकिन्स ने ट्रिटिकेल को अपने
न' में कसौटी पर कसा है। आखिर
भी अन्न का महत्त्व रसोईघर में ही
सिद्ध होता है ।
ट्रिटिकेल के आटे के अनेक व्यंजन बना-
और चखकर उन्होंने इसके पाक-गुणों
पता लगाया है।
कहना है कि ट्रिटि-
का उपयोग बिल-
गेहूं की तरह किया
सकेगा। रोटी या
ी के अतिरिक्त
ट और पेस्ट्री भी
बनेगी। भारतीय
णियों की हथेलियों
पहुंचकर बढ़िया
ी बन जाने के भर-
ण अभी इसमें नहीं
योंकि इसमें अभी
नामक पदार्थ की
कमी है, जिसके
चपातियां अच्छी
चिकनी बनती हैं।
ूटेन की मात्रा इस
में बढ़ायी जा रही

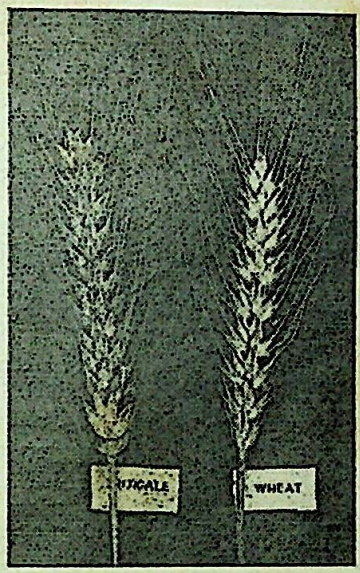

फर्क बालियों में भी साफ है! बायीं तरफ ट्रिटिकेल दायीं तरफ गेहूं

की कमी को पूरा करने में इसका महत्त्व-पूर्ण योगदान रहेगा।

इस वर्ष के शांति नोबेल पुरस्कार विजेता वैज्ञानिक डा० नार्मन बोरलाग ने लंबे, कमजोर तने और छोटे दिनों में न फूलने-फलने वाले ट्रिटिकेल को मजबूत कद-काठी वाला और दिनों की लंबाई के प्रति उदासीन बना लिया है। अपने प्रसिद्ध बौने गेहूं की किस्मों से वे ट्रिटिकेल का ब्याह रचाकर गेहूं व ट्रिटिकेल की अत्यधिक उपज देने वाली संतानें तैयार करने में जुटे हैं।

भारतीय कृषि वैज्ञानिक भी इस नये मानव-निर्मित अनाज को अपनाने में जुटे हुए हैं, देश के विभिन्न कृषि अनुसंधान-केंद्रों पर ट्रिटिकेल को एक अलग फसल के रूप में परखा जा रहा है और इस वर्ष इसकी लगभग २० किस्मों का देशव्यापी स्तर पर परीक्षण किया जा रहा है।

कसौटियों पर खरी उतर गयी, तो अगले कुछ वर्षों में ही यह नयी फसल किसानों के खेतों में पहुंच जायेगी। उ० प्र० कृषि विश्वविद्यालय में इस पर प्रयोग हो रहे हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विज्ञान का रास्ता

• रिची काल्डर •

वैज्ञानिक पद्धति कोई हौवा नहीं है। एक सीधा-सा उदाहरण लीजिये।

आपको जीव-जंतुओं में दिलचस्पी है और आप देखते हैं कि कुछ प्राणियों के लंबी पूंछ होती है, कुछ के छोटी पूंछ, और कुछ के (जैसे मनुष्य के) पूंछ होती ही नहीं। (कोई पूंछदार बच्चा पैदा हो गया हो, ऐसा आपने कभी नहीं देखा होगा।) कुछ के अंगूठे होते हैं, कुछ के पंजे, और कुछ के खुर। कुछ मांस खाते हैं, कुछ घास-पात, और कुछ दोनों खाते हैं। इत्यादि.....

मगर आप देखते हैं कि प्राणियों के एक समूचे वर्ग में, जिसमें मनुष्य भी शामिल है, एक बात समान है—वे सभी अपने शिशुओं को स्तनपान कराते हैं। आप 'दूध देने वाले प्राणी' नाम से इनका वर्गीकरण करते हैं। अगर आप लैटिन जानते हैं, तो आप उन्हें 'मैमल' कहेंगे (मैमा=स्तन)। और भी एक चीज आपको महत्त्वपूर्ण जान पड़ती है। आप देखते हैं कि कोई भी स्तनपायी अंडे नहीं देता।

इन प्राप्त तथ्यों के आधार पर आप कहते हैं—जो प्राणी अपने शिशुओं को स्तनपान कराते हैं, प्रकटतया वे अंडे नहीं देते। यह आपकी 'स्थापना' है, एक कामचलाऊ 'प्रतिज्ञा', जिसके आधार पर आप और 'रिसर्च' (यानी बार-बार खोज) करते हैं।

जंगलों में, खेतों में, चिड़ियाघरों में जहां भी आप खोजते हैं, आपकी इस धारणा की पुष्टि ही होती जाती है कि स्तनपायी अंडे नहीं देते।

यहां तक कि ह्वेल और सील जैसे तैरने जीव भी आप देखते हैं, जो अन्य समुद्री प्राणियों की तरह अंडे नहीं देते, बल्कि अपने शिशुओं को स्तनपान कराते हैं।

अब आप ठिकाने पर आ रहे हैं। आपकी स्थापना को अब सिद्धांत का दर्जा दिया जा सकता है। सिद्धांत वह सुपुष्ट स्थापना है, जिसका अन्य स्वीकृत नियमों के साथ संबंध जोड़ा जा सकता है। आप अब 'प्रकटतया' शब्द हटा सकते हैं।

मगर अभी भी आपको संतोष नहीं होता। आप उत्तर अमरीका, दक्षिण अमरीका, यूरोप, अफ्रीका और एशिया की यात्रा करते हैं; पर्यवेक्षण करते हैं, दूसरों से अपने पर्यवेक्षणों का मिलान करके देखते हैं। सर्वत्र वही बात है—"जो प्राणी अपने शिशुओं को स्तनपान कराते हैं, वे अंडे नहीं देते।"

अब शायद आप सोचें कि आप इसे सार्वभौम 'प्राकृतिक नियम' कह सकते हैं। और आप निश्चयपूर्वक कहते हैं—"अपने शिशुओं को स्तनपान कराने वाला कोई प्राणी अंडे नहीं देता।"

मगर कोई भी वैज्ञानिक 'नियम' पूर्णरूपेण सिद्ध नहीं होता है। इसका एक कारण तो यह है कि उस नियम की व्याप्ति में आने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सबके सब मामलों का पर्यवेक्षण कोई हीं कर सकता। विज्ञान का कोई भी प' तात्कालिक, संभावित और अनि- ही होता है, यह बात उसके साथ जुड़ी हती है कि नये साक्ष्यों की रोशनी में उसमें संशोधन होगा।

स तरह कोई भी वैज्ञानिक खोज कभी नहीं होती और आप अपने सिद्धांत की के लिए आस्ट्रेलिया पहुंचते हैं। वहां ो 'डकबिल्ड प्लैटिपस' या 'डक मोल' ीन होते हैं और आप देखते हैं कि यह ोगरीब जीव न केवल अंडे देता है, अपने शिशुओं को दूध भी पिलाता तनी सारी मेहनत अंत में बेकार!

ह बात निराशाजनक हो सकती है, यह कोई कयामत नहीं है। आप अपने को अब अधिक सुनिश्चित रूप से यों कते हैं—"प्लैटिपस आदि को छोड़- कर अपने शिशुओं को स्तनपान कराने वाले प्राणी अंडे नहीं देते।"

तब संभव है, कोई शरीरशास्त्री आपको याद दिलाये कि मानवीय अंडाणु (या डिंब) गर्भाशय की दीवार के एक मुलवट रूपी घोंसले में रखा जाता है। शरीर के अंदर अंडे के सेये जाने के इस तथ्य को आप स्वीकार करके अपने सिद्धांत में ये शब्द और जोड़ देते हैं—"बाह्य रूप से।"

कानूनशास्त्र के नियम की भांति विज्ञान का नियम भी यह हदबंदी कर सकता है कि वह किन-किन स्थितियों में लागू होगा। वैज्ञानिक नियम की यह परिवर्तनीयता बहुत महत्त्व की चीज है। वैज्ञानिक नियम 'केस लॉ' है, अपरिवर्तनीय त्रैकालिक सिद्धांत (डॉग्मा) नहीं। विज्ञान-संबंधी मध्ययुगीन एवं आधुनिक धारणा में यही तो अंतर है।

★

जिन्हें निकोटीन चाहिये ही, वे तंबाकू को काम में लायेंगे ही—चाहे उन्हें धूम्र- करना पड़े, चाहे तंबाकू को नाक से सूंघना पड़े। सुंघनी या नसवार लेने की प्रथा यहां काफी पुरानी है और इस प्रथा के चलते हिन्दी साहित्य के दिग्गज जयशंकर भी सुंघनी साहु कहलाये। लेकिन अब यह प्रथा पश्चिम में अधिक जोर पकड़ती ही है, जहां कैन्सर विरोधी अभियान के अंतर्गत 'धूम्रपान छोड़ो' अभियान या जा रहा है। सुना है कि लंदन के पॉप दर्जियों के पास जो कपड़े सिलने आते हैं, सुंघनी की डिबिया के लिए एक अलग पाकेट लगाने की फरमाइशें बढ़ती जा रही हैं। 'न्यू सायन्स' पत्रिका में इस पर एक मीठी चुटकी लेते हुए कहा गया है कि सुंघनी छ और भी फायदे हैं, जैसे, इससे सामाजिक तनाव कम होता है। यों कि जब किसी में तीखी झड़प के बाद खामोशी छा जाये, तो लोग सुंघनी सूंघें और छींक-छींककर खामोशी को तोड़ें।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हमारे रंगमंच की पुरुष नायिकाएं

सतीश वर्मा

जीवन के कितने ही क्षणों में पुरुष को स्त्री की भूमिका निभानी पड़ती है। हमारे पुराणों में अर्धनारीश्वर की कल्पना तो है ही, पुरुष के नारी-रूप धारण करने की कल्पना भी है। भस्मासुर-वध के लिए भगवान विष्णु को भी मोहिनी-रूप धारण करना पड़ा था।

यह मोहिनी रूप पुरुष की स्त्री-भूमिका ही तो थी। अंतर केवल यही था कि यह नाटक रंगमंच पर नहीं हुआ।

आधुनिक भारतीय रंगमंच पर आरंभ में सारी स्त्री-भूमिकाएं पुरुष ही किया करते थे। स्त्रियों का मंच पर उतरना तब अपमान और लज्जा की बात मानी जाती थी। पं० मदनमोहन मालवीय को भी जवानी के दिनों में अभिनय का चाव था और उन्होंने भी एक स्त्री-भूमिका निभायी थी। नाटक था 'शकुंतला' और नायिका शकुंतला स्वयं मालवीयजी बने थे।

पारसी नाटक-कंपनियों में स्त्री-भूमिकाएं करने वाले कुछ कलाकार बहुत प्रसिद्ध हुए। उनमें से प्रमुख थे मास्टर निसार, 'पशा' (पुरुषोत्तम), फिदा हुसैन, नर्मदाशंकर और जगन्नाथ। मास्टर निसार ने पंजाब के बाबू नानकचंद खत्री की 'न्यू अल्बर्ट कंपनी' के नाटक 'रामायण' में सीता की भूमिका बड़ी खूबसूरती से निभायी थी। यह बात कोई १९१०-११ की होगी। उनके गाये हुए दो गीत भी उस समय बड़े प्रसिद्ध हुए थे। एक तो पुष्पवाटिका में गायी हुई आरती 'जय शिव ओंकारा' और दूसरा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ाटिका में गाया हुआ गीत "अरे
तू धमकी दिखाता किसे !"
टर निसार के कंठ की मधुर स्वर-
ौर शुद्ध उच्चारण पर दर्शक फिदा
ार ने पं० राधेश्याम कथावाचक
'वीर अभिमन्यु' नाटक में उत्तरा
का भी बड़ी कुशलता से निभायी।
क 'न्यू अल्फेड' कंपनी द्वारा खेला
। जगन्नाथ ने इसमें सुभद्रा की
निभायी थी। 'पशा' (पुरुषोत्तम)
ना था।
गुजराती का भी बहुत अच्छा कला-
। रायल नाटक कंपनी के 'एकज
र 'भूलनो भोग' नाटकों में भी उसने
मिकाएं निभायीं थीं। उसका गाया
गीत 'हूं कन्या थई नें अवतरी हिन्दू
ां?' लोगों के मन में प्रश्न बनकर
ठा था।
ज भूल' में गुजराती के प्रख्यात
र प्रभाशंकर ने रमणी की भूमिका
दर ढंग से निभायी थी कि तभी से
ाम प्रभाशंकर 'रमणी' पड़ गया।
हुसैन की प्रमुख भूमिकाएं थीं—
ी हूर' में रोशन आरा और 'ईश्वर
में खलनायक की पत्नी उमा, इसी
नर्मदाशंकर ने नायिका पद्मा की
निभायी थी।
ाशंकर 'नायक' जाति के थे। अह-
के पास नायक जाति के लोग काफी
रहते हैं। नाचना-गाना, नाटकों में
ना ही इस जाति का प्रधान व्यव-
साय रहा है। पारसी रंगमंच के दिनों में नायक लोग अपने छोटे बच्चों को किसी भी गुजराती-पारसी कंपनी में, ऐग्रीमेंट भरकर

पहचानिये, ये बालगंधर्व हैं!

दाखिल करा देते थे। इस जाति के युवक स्त्री-भूमिका निभाने के लिए सदा से अच्छे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माने जाते थे व उन्होंने यह सिद्ध भी किया।

मराठी रंगमंच पर भी उस समय पुरुष ही स्त्री-भूमिका निभाते थे। प्रख्यात पार्श्व गायिका लता मंगेशकर के पिता स्व० मास्टर दीनानाथ रंगमंच के बड़े अच्छे कलाकार थे। गडकरी के रोमांटिक नाटक 'भाववंधन' में खलनायक घनश्याम के साथ उन्होंने प्रमुख स्त्री-भूमिका निभायी।

लेकिन स्त्री-भूमिका करने वाले पुरुषों में बालगंधर्व अनन्य थे। उन्होंने किर्लोस्कर और देवल रचित स्त्री-भूमिकाओं को खेलने वाले बाबूराव कोल्हटकर की मृत्यु के बाद उनके स्थान की पूर्ति की। बालगंधर्व का दावा था कि कोई भी स्त्री इन भूमिकाओं को इतनी अच्छी तरह से नहीं निभा सकती, जितनी खूबी से वे उन्हें प्रस्तुत करते हैं।

अपने सुमधुर कंठ और चित्ताकर्षक अभिनय से कोटि-कोटि जनता का हृदय जीतने वाले और चोटी के संगीतकारों, साहित्यकारों और कलाकारों से असीम आदर पाने वाले बालगंधर्व का वास्तविक नाम था— नारायणराव श्रीपाद राजहंस। वे २६ जून १८८८ को पूना के एक निम्न-मध्यवर्गीय ब्राह्मण परिवार में जनमे थे। पिता कारकून थे, मगर संगीतरसिक।

बचपन से नारायणराव को गाने और अभिनय में रुचि थी। दस वर्ष की अवस्था में लोकमान्य तिलक के समक्ष श्लोक गाकर उनसे 'बालगंधर्व' विशेषण पाया, जो आगे चलकर उनका नाम ही बन गया। तिलक से आशीर्वाद प्राप्त कर उन्होंने प्रगति की सीढ़ियां चढ़नी शुरू कीं। तिलक का उन ऊपर जो ऋण था, उसको उन्होंने १९२ में अपने सबसे लोकप्रिय नाटक को बड़े बड़े कलाकारों के साथ खेलकर और उस प्राप्त १६ हजार रुपये तिलक-स्वराज्यफ में देकर चुकाया।

सर्वप्रथम बालगंधर्व दिखाई दिये, किर्ल स्कर नाटक कंपनी के रंगमंच पर। १९० में इस कंपनी ने उन्हें 'शकुंतला' नाटक शकुंतला की भूमिका के लिए चुना। त से उन्होंने केवल नारी पात्रों का ही अ नय किया। अभिनय के साथ ही उन क़ोमल-मधुर नारी-स्वर सोने में सुहागे क काम करता था। वे किर्लोस्कर नाट्यमंड में आठ वर्ष रहे और 'सौभद्र', 'मृच्छकटि 'मूक नायक', 'मानापमान' और 'विद्ध हरण' आदि नाटकों में अपूर्व लोकप्रिय अर्जित की। बड़े-बड़े राजा-नवाब, अमी उमरा उन पर सब कुछ वारने लगे। ल एक-एक सीट के लिए सौ-सौ रुपये देते थे दूर-दूर से उनका अभिनय देखने तथा मधु स्वर सुनने आते।

कुछ वर्ष बाद बालगंधर्व ने 'गंधर्व नाट मंडली' नाम से अपनी नाटक-कंपनी खोल और अनेक नाटक खेले। खाडिलकर लिखित 'स्वयंवर' में उन्होंने कृष्णप्रि रुक्मिणी के उत्कट प्रेम और भक्ति-भाव इतने जीवंत रूप में अभिव्यक्त किया कि और रुक्मिणी एकरूप हो गये और 'स्व वर' में उनके गाये हुए गीत रातों-रात लो की जबान पर चढ़ गये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बालगंधर्व को संगीतशास्त्र का बहुत ज्ञान नहीं था, परंतु उन्हें दिव्य कंठ लिक कल्पनाशक्ति भगवान से मिली राठी साहित्यकार पु० ल० देशपांडे दों में—"सातों स्वर उनके समक्ष ध खड़े रहते थे।"

ी पात्र के रूप में उनकी सफलता का बड़ा प्रमाण क्या होगा कि स्त्रियां और केश-सज्जा आदि में उनका ही ण करने लगीं। दस गज की साड़ी को रिवाज बालगंधर्व ने ही चलाया क बार किसी ने उनसे पूछा—"आप के सारे गुणों को कैसे आत्मसात् कर ?" उन्होंने कहा—"मेरी मां और सही अर्थों में मेरी शिक्षक थीं। उनको ही मैंने सब कुछ सीखा।"

ा जाता है, एक बार उनके एक मित्र की पत्नी से शर्त लगायी कि क्या वे र्व को स्त्री-वेश में पहचान लेंगी। पत्नी ने शर्त कबूल कर ली। मित्र ने क 'हल्दी-कुंकू' के समारंभ में स्त्री वेश ायेंगे, तब उन्हें पहचानना। हल्दी- ा आयोजन हुआ और बालगंधर्व स्त्री ं आये, परंतु कोई उन्हें पहचान न महिलाओं के साथ उन्हें भी सहज-भाव ी, सिंदूर और पान दिया गया, लेकिन एक गलती हो गयी। सामान्यतः पान पर बीच की उंगली से चूना हैं; परंतु बालगंधर्व तर्जनी से पान ना लगाने लगे। उनकी पत्नी ताड़ के निश्चय ही ये बालगंधर्व होंगे।

'मानापमान' नाटक की भामिनी, 'मृच्छकटिक' की वसंतसेना, 'सौभद्र' की सुभद्रा 'एकच प्याला' की सिंधु, 'शकुंतला' की शकुंतला, 'स्वयंवर' की रुक्मिणी और 'संशयकल्लोल' की रेवती के रूप में वे सदैव याद किये जायेंगे।

बालगंधर्व ने 'धर्मात्मा' और 'अमृत सिद्धि' नामक दो फिल्मों में पुरुष-भूमिकाएं भी कीं, परंतु उन्हें सदा स्त्री-वेश में देखने के अभ्यस्त दर्शकों ने उनकी पुरुष-भूमिकाएं बिलकुल पसंद नहीं कीं। बालगंधर्व को भी फिल्मी माहौल रुचा नहीं और इस प्रकार उनका फिल्म-जीवन वहीं समाप्त हो गया।

बालगंधर्व के समकालीनों में से बापूराव माने ने भी मराठी नाटकों में स्त्री-भूमिकाएं बड़ी सफलता से निभायीं।

आंध्र रंगमंच पर स्थानम् नरसिंहराव का वही स्थान रहा, जो मराठी रंगमंच पर बालगंधर्व का। दोनों समकालीन भी थे। परंतु स्थानम् से भी पहले उप्पुलूरि संजीवराव ने स्त्री-भूमिकाओं में दर्शकों के मन जीते थे। वे रानी बनते थे और राजा की भूमिका करते थे, यादवल्ली सूर्यनारायण।

संजीवराव के कंठ में नारी-स्वर का सुरीलापन था, जो श्रोताओं को भ्रम में डाल देता था। उन्होंने शकुंतला, सावित्री, चंद्रवती तथा अन्य नायिकाओं के रूप में विशेष प्रसिद्धि पायी थी। प्रेम-दृश्यों के अभिनय में वे बड़े निपुण थे; किंतु उनकी कला का चरमोत्कर्ष देखने को मिलता था करुण दृश्यों में। यादवल्ली और उप्पुलूरि की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्थानम् नरसिंहराव

अनुपम जोड़ी को देखने के लिए लोग दूर शहरों से आते थे।

स्त्री-भूमिकाओं में उप्पुलूरि संजीवराव के जोड़ का ही अभिनय करने वाले थे परुपल्ली सुब्बाराव। 'राधाकृष्ण' में उनकी राधा की भूमिका विशेष रूप से लोकप्रिय थी। सामाजिक नाटकों में भी वे नायिका बनते थे। बड़ा संयत और मंजा हुआ होता था उनका अभिनय, जो प्रेक्षकों पर जादू-सा कर जाता था। किंतु तेनाली के स्थानम् नरसिंहराव के पदार्पण से आंध्र के रंगमंच में जैसे नवजीवन आ गया।

बालगंधर्व की भांति स्थानम् की स्त्री-भूमिकाओं के बारे में भी कहा जाता है कि कोई अभिनेत्री भी उन्हें नहीं निभा सकती थी। लगभग आधी सदी तक वे स्त्री-भूमिकाएं निभाते रहे। आंध्र के बाहर बेंगलूर के कन्नडभाषी और मद्रास के तमिल दर्शकों में भी वे लोकप्रिय थे। १९६२ में उन्हें राष्ट्रपति ने 'पद्मश्री' की उपाधि दी। इसी वर्ष २१ फरवरी को तेनाली में ६८ वर्ष की अवस्था में उनका निधन हुआ।

उनके कला-जीवन की शुरूआत स्त्री-भूमिका से हुई, यह भी एक संयोग ही था। नायिका की भूमिका करने वाला पुरुष कलाकार एक दिन आ नहीं सका। स्थानम् उसके स्थान पर नायिका बनने को तैयार हो गये। फिर तो १९२० से लेकर १९५० तक वे अनेक स्त्री-भूमिकाओं में रंगमंच पर उतरे।

उन्होंने स्त्रियों की चाल-ढाल, हाव-भाव तथा मनोरचना एवं स्त्रियों की प्रकृति का गहन अध्ययन किया था। बालगंधर्व की भांति उन्होंने भी नये-नये फैशन ईजाद किये और चलाये। चालीस वर्ष की अवस्था में भी वे स्त्री-वेश में तरुणी प्रतीत होते थे। कभी-कभी लोग उन्हें सचमुच स्त्री समझ बैठते थे। एक बार उन्हें भी 'पेरंतम' (हल्दी-कुंकू के लिए तेलुगु नाम) के लिए आमंत्रित किया गया।

सत्यभामा आंध्र के निवासियों की प्रिय नायिका रही है। वह मूर्तिमंत इच्छा है। परमात्मा के प्रति जीवात्मा की आसक्ति का प्रतीक है। शताब्दियों से तेलुगु कवि उसके गीत गाते आये हैं। 'पारिजात-अपहरण' तेलुगु का सर्वश्रेष्ठ प्रबंध है, जिसमें कृष्ण इंद्र को युद्ध में उलझाकर सत्यभामा को प्रसन्न करने के लिए स्वर्ग से पारिजात-वृक्ष का अपहरण कर लाते हैं। तेलुगु नाटक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ण तुलाभारम्' में सत्यभामा की
में स्थानम् ने अपूर्व सफलता पायी।
सत्यभामा सुंदर और आकर्षक होने
प्रेममयी और ईर्ष्यामयी दोनों थी।
नों माइक तो थे नहीं, और स्थानम्
ायक भी नहीं थे; परंतु कविता कहने
गाने का उनका ढंग बहुत लालित्य-
, जिससे नाटक का प्रभाव कई गुना
ता था।

परापु सुब्बाराव लिखित नाटक
आरा' में औरंगजेब की छोटी बहन
ाराकी भूमिका भी स्थानम् ने बड़ी
ा से निभायी थी। किन्हीं कारणों से
ने नाटकों पर पावंदी लगा दी।
रोशनआरा की भूमिका स्थानम् को
ागे ले गयी।

वनारायण' नाटक में वे देवदासी की
करते थे। यह देवदासी अपार सुंदर
य-कला में पारंगत थी और श्रीरंगम्
संबद्ध थी। अपनी सुंदरता के अव-
वह अपनी कुटिलता भी छिपाये थी।
उसके मोहक और कुटिल दोनों रूपों
ी मार्मिकता से प्रस्तुत करते थे।
की अन्य दो लोकप्रिय स्त्री-भूमि-
नर्तकी चिंतामणि और दुखियारी
चित्रांगी की। 'कन्या शुल्कम्' में वे
ाली चतुर लड़की मधुरवाणी बनते।
शृंगार का बहुत स्वाभाविक और
र्शी निरूपण करते थे; लेकिन
भाव को दर्शाने में उन्हें अधिक श्रम
ड़ता था। यों उन्होंने चंद्रगुप्त की
मां मुरा और कृष्ण की माता यशोदा जैसी मां-भूमिकाएं भी निभायीं; परंतु उनका कहना था कि प्रियतमा के रूप में अभिनय करना उतना दुष्कर नहीं है, जितना मां के रूप में।

गुजराती रंगमंच के अनेक सिद्धहस्त कलाकार केवल स्त्री-भूमिकाएं ही निभाते थे और उन्हीं के लिए प्रसिद्ध हुए। जैसे प्राण-सुख मणिलाल नायक, प्राणशंकर आचार्य, काशीराम बाबा, भगवानजी नायक, मास्टर छोटू, मास्टर वसंत, अमृत जानी, प्रभा-शंकर रमणी, सूरजराम, चंपक लाल, मास्टर गोरधन, हिम्मतराम मीर, रति-लाल पटेल, मास्टर त्रिकम, शंकरलाल नायक, मोहन मारवाड़ी, आनंदजी कबूतर और गेलाभाई माली। परंतु इस श्रेणी के सबसे विशिष्ट कलाकार हैं—जयशंकर सुंदरी।

गुजराती नाट्य-जगत की यह प्रथा-सी रही कि यदि किसी भूमिका में कोई कला-कार दर्शकों की आंखों में चढ़ जाये, तो वही उसका उपनाम बन जाता था। जयशंकर के साथ 'सुंदरी' और प्रभाशंकर के साथ 'रमणी' उपपद इसी प्रक्रिया से जुड़े।

जयशंकर सुंदरी गुजराती रंगमंच के मूर्धन्य कलाकारों में रहे हैं। छुटपन में अपने शहर वीसनगर में किसी नाटक मंडली का 'हरिश्चंद्र' नाटक देखकर वे इतने अभिभूत हुए कि फिर पढ़ाई-लिखाई में उनका मन नहीं लगा। कुछ दिन बाद कलकत्ते से 'मुंबई पारसी नाटक मंडली' के लोग अभिनेताओं की तलाश में उधर आये और एक सज्जन ने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जयशंकर सुंदरी

इस बालक को उनसे मिला दिया।

नौ वर्ष के जयशंकर कलकत्ता चले गये। केपनी कंमालिक दादाभाई रतनजी ठूंठी ने उन्हें ६ रुपये मासिक वेतन पर रख लिया और अभिनय का प्रशिक्षण आरंभ किया। प्रशिक्षण में बेंत की मार भी खानी पड़ जाती थी। खाना-पीना कंपनी देती थी, इसलिए जयशंकर एक रुपया अपने पास रखकर पांच रुपये घर भेज देते। दो वर्ष बाद उन्हें प्रमुख नारी पात्रों का काम मिलने लगा और वेतन दस रुपये हो गया। इस दौरान उन्होंने 'सितमगर', 'जामेजमशेद', 'गुलबकावली' 'खुदादाद', 'आशिक का खून' आदि नाटकों में स्त्री-भूमिकाएं निभायीं।

कलकत्ते में ही जयशंकर ने बंबई के नाटकों की प्रशंसा सुनी—विशेषतः 'खूने नाहक' की। लेकिन वे तीन वर्ष का अनुबंध कर चुके थे। कंपनी के मालिक भी उन्हें छोड़ना नहीं चाहते थे। यहां तक कि पिता की बीमारी के तार भी फाड़कर फेंक देते। आखिर जय शंकर कलकत्ते से भाग छूटे। अपने गांव आये और फिर से पढ़ाई शुरू की। लेकिन नाटकों का शौक उन्हें बंबई ले आया। वे 'मुंबई गुजराती नाटक मंडली' में आ गये।

'गुजराती मंडली' में उनका पहला नाटक था 'सौभाग्य-सुंदरी' और इसी से उनके नाम के साथ सुंदरी शब्द जुड़ा। बंबई में उनके नाम की धूम मच गयी। यह सन् १९०० की बात है। इसके बाद ३२ वर्ष तक वे 'मुंबई गुजराती नाटक मंडली' में अभिनय तथा निर्देशन करते रहे। १९३२ में मंडली के मालिक बापूलाल से मतभेद हो जाने पर उन्होंने मंडली ही नहीं, रंगमंच को छोड़ दिया। ख्याति और धन दोनों ही 'सुंदरी' को खूब मिले। आजकल वे अपना व्यापार करते हैं और अहमदाबाद में रहते हैं।

'मुंबई गुजराती नाटक मंडली' के ही नाटक 'कालेज कन्या' में प्राणसुख भणिला नायक को कालेज कन्या की भूमिका से बड़ी ख्याति मिली। चंपक लाला ने जामन कंपनी के नाटक 'काली बदली' में तरला, 'वान नाना व्हेण' में वीणा और 'भिक्षुक बाबा' में पद्मा की भूमिका निभायी। मास्टर गोधन आर्य नैतिक नाटक समाज के नाटक 'होथल पद्मिनी' में होथल, देसी नाटक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नाटक 'नल-दमयंती' में दमयंती
गना संसार' में बूढ़े पति की युवा
। 'मालवपति मुंज' में रतिलाल
णाल और मास्टर त्रिकम ने सुरभि
काएं बड़े अच्छे ढंग से निभायीं।
रवाड़ी की 'मधु बंसरी' में स्नेह
र आनंदजी कवूतर की 'सत्तानो
त्रिवेणी की भूमिकाएं बड़ी प्रभाव-
हीं। आनंदजी कवूतर का कंठ बहुत
। उनका गाया गीत 'भम्मरिया
ांठडे' काफी प्रचलित हुआ।
ा के प्रचार-प्रसार से नाटक-जगत
ड़ी-बड़ी तब्दीलियां हुई हैं, उनमें
ह है कि रंगमंच पर स्त्री-भूमिकाएं
के लिए स्त्री-कलाकार उपलब्ध हैं,
वों को स्त्री-भूमिकाएं नहीं निभानी
पुरुष नायिकाओं की परंपरा अब
। कहीं शेष रह भी गयी है, तो लोक
नाट्यों, रामलीला और खेल-तमाशों में।

हिन्दी-रंगमंच पर भी स्त्री-भूमिकाएं करने वाले कुछ पुरुष कलाकार रहे हैं, लेकिन वे अधिक प्रसिद्ध नहीं हुए। हां, कुछ जाने-माने साहित्यकारों के नाम लिये जा सकते हैं, जो रंगमंच से संबद्ध रहे, जैसे डा० राम-कुमार वर्मा, नरेंद्र शर्मा, उपेंद्रनाथ अश्क।

अश्कजी तो एक बार अभिमन्यु की उत्तरा का अभिनय करने वाले लड़के की अनुपस्थिति में अपनी कर्जन कट मूंछों के साथ ही घूंघट काढ़कर, रंगमंच पर उतर पड़े थे और अभि-नय के आवेश में घूंघट खुल जाने पर दर्शक उनको देखकर खूब हंसे थे।

पुरुष स्त्री-भूमिकाएं भारत में ही निभाते रहे हों, ऐसी बात नहीं। जापान के पारं-पारिक नाटक 'नो' में तो आज भी कोई स्त्री भाग नहीं ले सकती और सारी भूमिकाएं पुरुष ही निभाते हैं।

★

त्र के सिर पर नाटक का भूत सवार था। पिता पुलिस के ऊंचे अधिकारी थे, चारों के ब्राह्मण; उन्हें पुत्र का मुंह पर रंग पोतकर रंगमंच पर उतरना तनिक नहीं था। इस नापसंदगी को उग्र बनाने वाला एक और कारण मौजूद था। पुत्र फिसड्डी था—मंदमति होने के कारण नहीं, पढ़ाई से जी चुराने के कारण।

त्र पिता का दिल नहीं दुखाना चाहता था। उसने यह संकल्प कर लिया था कि अनुमति और आशीर्वाद पाकर ही अभिनेता बनना है। बहुत अनुनय-विनय से मिल गयी। मगर पुत्र ने भी उसका पूरा मूल्य चुकाया। पहले एक-एक कक्षा दो-दो वर्ष काट देने वाला पुत्र अब अच्छे अंकों से पास होने लगा।

त्र एम० एल० श्रीनिवास शास्त्री ने आगे चलकर कन्नड रंगमंच पर में गैर पेशे-नेता के रूप में बड़ा नाम कमाया और दक्षिण के विख्यात अभिनेता स्व० बल्लारी र्य के साथ बेंगलूर के अमेच्योर ड्रामेटिक एसोसिएशन के सूत्र-संचालक के रूप और तेलुगु के गैर पेशेवर रंगमंच की विशिष्ट सेवा की।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नशीली याद

छू गयी क्यों प्राण को तेरी नशीली याद
व्यर्थ में दो-चार घंटे फिर हुए बरबाद
मेरी जिंदगी के।

मन उलझ जाता नहीं यदि याद के दो कंगनों में
क्या पता क्या काम कर जाता नशे के इन क्षणों में
क्या पता इस बीच भूले को दिखाता राह सच्ची,
या लगाता फूल जाकर के किसी के आंगनों में
या किसी हारे हुए के गीत लिखता गुनगुनाता
या किसी बीमार को देता सहारा काम आता
या किसी गिरते हुए को थाम लेता मुस्कराकर
या किसी के दर्द की कैसी दवा है जान जाता
बढ़ न पायी एक भी मीठी सलोनी बात
बढ़ गये हैं किंतु कड़ुवे और कर्कश स्वाद
मेरी जिंदगी के।

काश घिरते बादलों की रंग-रौनक देखता मैं
बिजलियों की तेज तीखी चमक प्यारी देखता मैं
या हवाओं की हठीली धार में बहता मचलता
या सलौने रूप धरती के, गगन के देखता मैं
नयी खुशियों का सजाना चाहता था एक मेला
इन क्षणों को खूब जीना चाहता था मैं अकेला
चाहता था मधुर मौसम के नशीले गीत लिखना
मगर तेरी याद ने कैसा निकम्मा खेल खेला
दिवस बीता और फिर बीती समूची रात
उड़ गये ऊंचे कबूतर की तरह आह्लाद
मेरी जिंदगी के।

— सुरेश उपाध्याय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

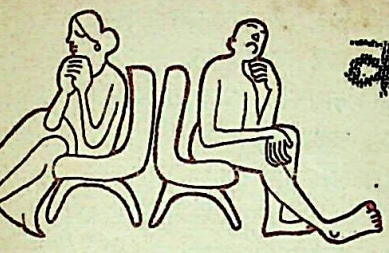

क्या करें, पटती नहीं!

सरला सुंदरम्

ो उधर सिर झुकाये बैठा है, उसे
ते हैं आप? कैसी सुंदर जगह है और
ुहाना मौसम। पार्क में स्त्री-पुरुष
च्चे कैसे आनंदमग्न होकर घूम रहे
हैं, बात कर रहे हैं, हंस रहे हैं, खेल
और वह बेचारा निराश, उदास,
काये बैठा है। सुनकर आश्चर्य होगा
अकेला नहीं है, उसके घर पर उसकी
और दो बच्चे हैं।
क्यों नहीं लाया वह? आप पूछेंगे,
र देगा—"पत्नी से पटती नहीं।"
वही एक अकेला नहीं है, जिसकी
न पटती हो। ऐसे बहुत-से लोग
र जब बहुत-से हैं, तो यह सोचना
ो जाता है कि पति-पत्नी में पटती
हीं?
वत है कि हर गृहस्थी अपने ढंग से
ोती है। कहीं पैसे का अभाव, कहीं
, कहीं अनमेल विवाह, कहीं लापर-
हीं उपेक्षा, कहीं पति के व्यसन और
नी की फिजूलखर्ची आपसी मन-
ा कारण बनती है।
न ऐसा भी तो देखने में आता है कि
ये सारी बातें होते हुए भी पति-पत्नी खुश रहते हैं। खास तौर से निम्न वर्ग के कहे जाने वाले लोगों में, जहां मारपीट तक हो जाती है और फिर भी ऐसा प्रेम छलकता है कि दोनों एक-दूसरे के लिए जान दे दें—साथ की तो बात ही क्या!

सुखी गृहस्थी की कुछ अपनी शर्तें हैं:

पहली शर्त तो यह है कि पति-पत्नी स्वेच्छा से, सहर्ष पारस्परिक सहजीवन के लिए तैयार हों।

पति और पत्नी की अपनी-अपनी अलग महत्त्वाकांक्षाएं हो सकती हैं; लेकिन वे ऐसी हों कि एक-दूसरे के रास्ते में बाधक न हों। विवेकशील दंपति एक-दूसरे की स्थिति-परिस्थिति समझकर तय कर लेते हैं कि पति की महत्त्वाकांक्षा परिवार के लिए हितकर है या पत्नी की। और यदि दोनों की ही हितकर हैं, तो उन्हें पूरा करने का कौन-सा मार्ग है, जिस पर चलकर दोनों सहजीवन जीते हुए प्रेमपूर्वक रह सकें।

दूसरी शर्त है—दोनों का एक-दूसरे को पसंद करना।

यह है तो बड़ी मामूली-सी बात लेकिन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अक्सर हो नहीं पाती। पति के दिमाग में आदर्श नारी का नक्शा रहता है और पत्नी के दिमाग में आदर्श पुरुष का—भले ही वह कोई भूतपूर्व प्रेमी या प्रेमिका हो, या कोई वर्तमान संबंधी। प्रायः यह होता है कि पुरुष पत्नी में अपनी मां के गुण देखना चाहता है और स्त्री पति में अपने पिता के गुण। और जब यह संभव नहीं होता—जो संभव है ही नहीं—तो दोनों एक-दूसरे में दोष देखने लगते हैं, और यह ऐसा काम है कि आपने एक दोष देखा कि सौ दिखाई दिये। और कलह शुरू।

गार्हस्थ्य प्रेम की तीसरी शर्त है—स्वार्थ-हीनता।

लेकिन यह भी बड़ी मुश्किल से सधने वाली बात है। पति चाहता है कि पत्नी मेरे लिए सब कुछ करे और पत्नी चाहती है कि पति मेरे लिए सब कुछ करे। और इस 'मेरे' में जो दो चीजें मुख्य रूप से आती हैं, वे हैं—पति के संबंधी और मित्र और पत्नी के संबंधी और उसकी सहेलियां—कुछ मामलों में पुरुष-मित्र भी। और अब तो यह एक कड़वा मजाक बन गया है कि पत्नी सबसे पहला काम यह करती है कि पति को उसके मित्रों से काट देती है।

शहरों में रहने वाले अधिकांश युवकों को विवाह के बाद इस मुश्किल का सामना करना पड़ता है। समय और पैसा—ये दोनों इस समस्या के मूल कारण हैं। नवविवाहिता पत्नी चाहती है कि पति अपना अधिक-से-अधिक समय उसे दे और अधिक-से-अधिक पैसा उस पर खर्च करे। विवाह के बाद उसमें एक स्वाभाविक अधिकार-भावना उत्पन्न होती है कि उसका पति केवल उसका हो और पति के सर्वस्व पर उसका अधिकार हो।

लेकिन पति वर्षों से बने हुए मैत्रीपूर्ण संबंधों को कैसे छोड़ दे? जिन मित्रों ने उसके अकेलेपन में और हर सुख-दुःख में साथ दिया है, उन्हें वह कैसे छोड़ दे? यदि मित्रों ने आड़े वक्त में उसकी सहायता की है, तो अब उनकी सहायता करने से वह कैसे पीछे हटे?

लेकिन पत्नी यह बात नहीं समझना चाहती। वह पति के मित्रों में दोष ढूंढती है, उनके विरुद्ध पति के कान भरती है। और विवाह के आरंभिक दिनों में ही जब यह होने लगता है, तो पति पर बड़ी तीव्र प्रतिक्रिया होती है और वह पत्नी को स्वार्थी समझने लगता है।

दूसरी ओर पति की स्वार्थ-वृत्ति भी दिखाई देती है। वह चाहता है कि उसकी पत्नी उसके परिवार में, संबंधियों में और मित्रों में एकदम इस तरह घुल-मिल जाये, इस तरह सबको माने कि उनसे उसके पहले के संबंध पुष्ट हों। जहां पत्नी नौकरी करती है, पति प्रायः पत्नी की आय को अपनी इच्छा से खर्च करने की कोशिश करते हैं। अपने ढंग से खर्च करने की अभ्यस्त पत्नी की आदतों और जरूरतों से जैसे कोई मतलब ही नहीं! और जब यह होता है, तो पत्नी पति को स्वार्थी समझे बिना नहीं रहती

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नमुटाव की बेल धीरे-धीरे फूलने-
गती है।
मुश्किल यह है कि ऐसी स्थितियों
ं को सलाह देने वाले अक्सर गलत
देते हैं। आम तौर पर वृद्ध लोग,
जुर्ग होने के नाते समझदार माना
, इन स्थितियों में कई वार वहुत
कर जाते हैं। इन्हें अपनी वेटी का
न्हें अपने वेटे का हित ही सूझता
ों का हित' प्रायः नहीं सूझता और
वे जाने-अनजाने दोनों के वीच
पैदा कर देते हैं। ऐसी खाइयां जिन्हें
भी तो जीवन-भर नहीं पाटा जा

क्या किया जाये ? कैसे पति-पत्नी
नमुटाव को दूर किया जाये ? दूर
बजाय वचे रहना ज्यादा अच्छा—
इलाज से भली। ऐसी स्थितियां
पैदा होने दी जायें ? पति-पत्नी
आपस में ऐसी समझदारी क्यों न
लें कि मनमुटाव की कभी नौवत
ये ?

समझदारी' के कुछ नुस्खे तजुर्वे-
बताये हैं। नवविवाहितों के लिए
उपयोगी होंगे :

सही समझ : याद रखिये, विवाह
ापने जीवन-पर्यंत एक-दूसरे का
माने की प्रतिज्ञा की है। इस प्रतिज्ञा
ने के लिए बड़ा जरूरी है एक-दूसरे
झना। एक-दूसरे के स्वभाव को,
को, व्यवहार को, आर्थिक और
सामाजिक पृष्ठभूमि को समझना और समझकर एक-दूसरे के अनुकूल व्यवहार करना।

२. सही सोचना: दिन में कम-से-कम एक वार अपने मन में कहिये कि हमारा जीवन-साथी हमें कितना प्यार करता है। और अनुभव कीजिये कि चीजें किस तरह वदल जाती हैं। अक्सर यह होता है कि हम सोचते हैं : देखो, हम तो उसे इतना प्यार करते हैं और वह .....। नहीं, ऐसा सोचना ही झगड़े की जड़ है। इस अधूरे वाक्य की पूर्ति जीवन-साथी के किसी-न-किसी दोष से होगी, जबकि आप उसकी ओर से सोचने पर अपना कोई दोष पायेंगे और उसे सुधारने की चेष्टा भी करेंगे।

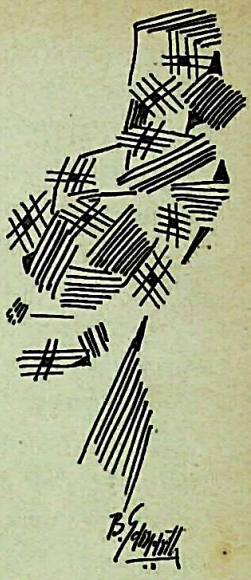

चित्र : बी. समर्थ

३. अपनापन : अपने जीवन-साथी के मित्रों और संबंधियों को अपने मित्र और संबंधी मानिये और उसकी जिम्मेदारियों को अपनी जिम्मेदारियां।

४. धैर्य : यदि आपका जीवन-साथी आपको समझने के लिए तैयार नहीं है, तो आग्रह मत कीजिये कि वह समझे ही, उलटे आप उसे समझना शुरू कर दीजिये। थोड़े दिनों तक अपनी पसंद उस पर थोपने के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बजाय उसकी पसंद से काम कीजिये और फिर देखिये कि उसमें कितना परिवर्तन अपने आप हो जाता है।

५. **प्रेम :** किसी अन्य व्यक्ति से अपने जीवन-साथी की तुलना कभी मत कीजिये। वह जैसा भी है, उसे उसी रूप में अपनाइये और प्यार कीजिये।

६. **प्रशंसा :** जीवन-साथी की आलोचना मत कीजिये—न उसके सामने, न दूसरों के सामने। दूसरे करें तो विषय बदल दीजिये। उसकी प्रशंसा कीजिये—लेकिन झूठी प्रशंसा नहीं। यदि जीवन-साथी आपको कोई उपहार दे और उपहार आपको पसंद न आये, या बहुत महंगा हो और आपको वह फिजूलखर्ची-सा लगे, तो तुरंत आड़े हाथों लेने के बजाय साथी की पसंद और उपहार की प्रशंसा कीजिये। बाद में मौका देखकर अपनी राय इस तरह बता दीजिये कि उसे बुरा न लगे।

७. **उदारता :** यदि आपके जीवन-साथी में कोई कमजोरी है, जैसे शारीरिक दुर्बलता, कुरूपता, निर्धनता, अंगभंग आदि तो उसे जहां तक हो सके, उसका ध्यान मत दिलाइये, बल्कि प्रयत्न कीजिये कि वह उसे भूल सके और खुश रह सके।

८. **मैत्री :** जीवन-साथी के उपदेशक या शिक्षक या सुधारक बनने की चेष्टा मत कीजिये। हो सकता है, आप दुनिया भर को राह दिखा सकते हों, पर उसे राह दिखाने की चेष्टा में आप उससे अलग और दूर हो जायेंगे। कुछ समझाना ही पड़े, तो मित्र की तरह समझाइये, अधिकारी की तरह नहीं।

९. **मनोरंजन :** घरघुसरा मत बनिये। जीवन-साथी और बाल-बच्चों के साथ घर से बाहर निकलने, घूमने, सैर-सपाटा करने की आदत डालिये और इस तरह घूमने जाते समय पैसा कम-से-कम खर्च कीजिये, ताकि आप ज्यादा से-ज्यादा बार बाहर जा सकें।

★

स्त्री, पुरुष और विवाह

* जीवन में हर चीज बहुत सादी और सरल है—पत्नी के अलावा।
* स्त्रियां हमें तसल्ली देती हैं; लेकिन वे न होतीं तो हमें तसल्ली की जरूरत ही न पड़ती।
* शादी जवानी की एक भूल है, जो हम सबको करनी चाहिये।
* विवाह एक सम्मानपूर्ण समझौता है कि पुरुषों को स्त्रियों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिये, और यह समझौता स्त्रियों के दिमागों की उपज है।
* शादी मौत की तरह है, उसके बारे में चिंता नहीं करनी चाहिये।
* स्त्री के पास इतने वस्त्र नहीं होने चाहिये कि उसे पूछना पड़े—"मैं क्या पहनूं?"
* विवाहित लोग अविवाहितों की अपेक्षा दीर्घायु होते हैं—या शायद ऐसा है कि उन्हें अपनी उम्र बहुत लंबी महसूस होने लगती है। —डॉन हेरोल्ड

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावी संकट

विनोबा भावे

में आज कई 'वाद' प्रचलित हैं, साम्यवाद, समाजवाद, कल्याण-लरवाद आदि। किंतु यथार्थ रूप ही वाद है, जिसे मैं 'अन्यवाद' के कारना चाहता हूं, और जिसका "अन्य लोग हमारे हित के लिए ।"

विश्व में लोगों का सामान्यतया कि वे स्वयं ही अपनी समृद्धि और हेतु नहीं हो सकते। कुछ अन्य गे, जिनके पास ये कार्य करने की शक्ति होगी। वे ही यह कार्य विल्सन और उनका मंत्रिमंडल, और उनकी मंत्रि-परिषद, माओ साथी। यही 'अन्यवाद' है।

हता हूं कि लोग इस मनोग्रंथि से ायें, वे ग्राम-ग्राम में अपनी सभाएं करें, भूमि का स्वामित्व अपनी क सभा को सौंप दें, सर्वसम्मति करें, ग्राम-योजनाओं का निर्माण और उद्योग आदि का संचालन तथा बाहरी सहायता चाहे कितनी भी हो, स्वयं अपनी ही शक्ति से र्य करें। यही लोक-राज्य अथवा न है, जिसके दर्शन चीन, इंग्लैंड, अमरीका, रूस अथवा अन्य किसी भी स्थान पर नहीं होते।

मेरा विश्वास है कि राजनीतिक सत्ता अब भारत का उद्धार नहीं कर सकती। मैं जानता हूं कि कोई भी राजनीतिज्ञ मुझसे सहमत नहीं होगा, किंतु मेरा अटूट विश्वास है कि पिछले दो दशकों ने राजनीतिक प्रभाव-हीनता का खोखलापन पूरी तरह से दरशा दिया है। जनता इस या उस राजनीतिक दल के हाथों अपने भाग्य का सुफल देखने को यत्नशील रही है, किंतु उसे निराश ही होना पड़ा है।

लोगों की धारणा है कि उनके प्रतिनिधि उनके लिए सभी कुछ करेंगे। वे लोग जनता के लिए स्कूल-कालेजों का निर्माण करेंगे,

भाषण पुराना, विचार ताजे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साहित्य को प्रोत्साहन देंगे, वाणिज्य और उद्योग आदि को अग्रसर करेंगे। और वे स्वयं क्या करेंगे? वे केवल निश्चेष्ट रहकर बच्चे पैदा करेंगे; क्योंकि उनके प्रतिनिधि उनके लिए यह कार्य कर नहीं सकते। यदि वे प्रतिनिधि ऐसा कर सकते होते, तो लोग स्वयं सुविधापूर्ण जीवन व्यतीत करते हुए प्रतिनिधियों द्वारा पैदा किये गये बच्चों का लालन-पालन मात्र करते रहते।

मैं इससे अधिक गुलामी, दासता अथवा अमानवता की कल्पना नहीं कर सकता। आज हमारी दुर्दशा तो जंगली जानवरों से भी बदतर हो गयी है। हमने अपनी हालत भेड़-बकरियों जैसी कर ली है।

पंडित नेहरू ने मुझसे एक बार पूछा था कि सरकार द्वारा बनायी गयी योजनाओं में जनता उत्साह प्रकट क्यों नहीं करती। मैंने उन्हें बताया था—"जनता के लोग हल के बैल नहीं हैं। किसान अपनी खेती के बारे में बैलों से कभी सलाह-मशविरा नहीं करता। वह स्वयं निर्णय करता है कि खेत में गेहूं आदि किस वस्तु का बीज डालना है। बैल को तो खेत जोतने के कार्य में लगा देता है। और जहां तक बैल की बात है, उसकी तो मात्र एक इच्छा या मांग रहती है: मुझे अच्छी तरह खिलाओ-पिलाओ, ताकि मैं स्वस्थ और सुखी रहूं। मुझसे मेरी राय न पूछो।

"इसी तरह से आप दिल्ली वाले लोग स्वयं को तो किसान समझते हैं और ग्रामवासियों को, वहां की जनता को हल के बैल मात्र। आपको तब तक जन-सहयोग नहीं मिल सकता, जब तक आप दिल्ली में बैठकर उनके लिए योजनाएं बनाते रहेंगे। इतना ही नहीं, आप तो इंग्लैंड, जर्मनी, अमरीका, रूस आदि की पुस्तकों के आधार पर अपनी योजनाएं बनाते हैं। आप वहां हुए विकासों का अध्ययन करते हैं और यहां के ग्रामों के लिए नमूने तैयार करते हैं। यही कारण है कि हमारे लोग आपकी योजनाओं में रुचि नहीं लेते।"

राजनीति की विफलता तो सिद्ध हो ही चुकी है, तब फिर और कौन-सी शक्ति है, जिसके द्वारा मनोरथ पूर्ण होगा?

इस प्रश्न का उत्तर प्रायः दिया जाता है—रक्त-रंजित विद्रोह या अहिंसक क्रांति। मगर यदि रक्त-रंजित विद्रोह भारत में सफल हो सकता होता, तो वर्तमान स्थिति की अपेक्षा मैं उसी को श्रेष्ठ मान लेता। किंतु रक्त-रंजित क्रांति के नाम पर कुछ अव्यवस्था फैलाना और किसी बाहरी राष्ट्र-शक्ति को बुलाना तो निरी मूर्खता ही है।

मैं नक्सलबाड़ी गया हूं। मैंने वहां उन बंधुओं से खुलकर बातचीत की है। मैंने उनसे कहा—"तुम कितने मूर्ख हो। तुम तीर-कमानों से क्रांति लाना चाहते हो, यद्यपि तुमने और मैंने स्वयं ही सेना और आणविक शस्त्रों की शक्ति अन्य हाथों में सौंपी हुई है। इस स्थिति में यदि तुम लोग किसी हिंसक क्रांति का श्रीगणेश करना चाहते हो, तो तुम केवल कुछ अराजकता ही उत्पन्न कर सकोगे। एक दिशा से पाकिस्तान आक्रमण करेगा और दूसरी दिशा से चीन, और तुम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ी प्राप्त न कर सकोगे। इस प्रकार
नुभव करोगे कि अहिंसक क्रांति के
क्त और कोई मार्ग नहीं है।"
मार्ग क्या है? लोगों को चाहिये
ी ग्रामों में शक्ति-निर्माण करें। आज
ग्राम एक विभाजित, भग्न पात्र के
है। वहां कोई एकता नहीं है, और
ु शक्ति का अभाव है। लोगों का
है कि वे ग्रामदान में तभी सम्मिलित
ब उनकी हथियायी नयी भूमि उनको
मिल जायेगी। मैं उनसे पूछता हूं कि
न गयी कहां है? क्या यह पटना या
मेज दी गयी है? भूमि तो वहीं उसी
र है, किंतु उसके स्वामी लोग अन्यत्र
।
दान में स्वामित्व सभी लोगों का
और उन लोगों को भी उसमें सम्मि-
ना पड़ेगा। यदि वे इंकार करेंगे, तो
की रह जायेंगे। फिर उनके खेतों
लेगा कौन? सभी खेतिहर मजदूर
र में कहेंगे—"हम तो ग्राम-सभा के
के अनुसार कार्य करेंगे, न कि किसी
विशेष की इच्छानुसार। उस स्थान
रहने वाले मालिकों को तब ग्राम-
पास याचना करनी पड़ेगी, जो स्पष्ट
ोषित कर देगी कि—"असंदिग्ध रूप
ापके खेत, आपकी भूमि को जुतवा-
तु उसका अंशमात्र फल ही आपको
शेष सब ग्राम की संपत्ति होगी।
ल अब पहले की तरह आपको उप-
हीं करने दिया जायेगा।"

मेरे प्यारे भाइयो, अपनी खोयी हु
भूमि को वापस लेने का यही मार्ग है। इसकी
सफलता के लिए ग्राम को स्वयं एक इकाई
में परिवर्तित करना पड़ेगा और अपनी शक्ति
और सामर्थ्य की उत्पत्ति करनी पड़ेगी।

कुछ लोग चाहते हैं कि मैं धीरे-धीरे आगे
बढ़ूं। वे मुझसे पूछते हैं कि मैं ग्रामदान के
लिए इतना आतुर क्यों हूं। पहला कारण
यह है कि मैं देखता हूं कि भारत का तो
अस्तित्व ही खतरे में है। संपूर्ण देश में भेद
की दरार पड़ चुकी है।

प्रांत, जाति, भाषा, धर्म, दल के नाम
पर मतभेद और असंगठन फैले हैं। जन-
संख्या के विभिन्न वर्गों में, नियोक्ता और
नियुक्तों में, शिक्षकों और छात्रों में, स्वा-
मियों और श्रमिकों आदि में परस्पर-संबंध
सुखकारी नहीं हैं। जनता असंतुष्ट है। यही
कारण है कि आपको नक्सलबाड़ी, उपद्रव,
घेराव, हड़ताल आदि दीख पड़ते हैं। पृष्ठ-
भूमि में विदेशी आक्रमण सहज संभावित है
और स्वाधीनता पर संकट विद्यमान है।

लोग मेरे पास आते हैं और चाहते हैं कि
मैं उनके विद्रोहों अथवा उपद्रवों को अपना
वरद-हस्त प्रदान करूं। ऐसा न करने पर वे
मुझे दोष देते हैं। मैं उनसे कहता हूं—"मेरा
शुभाशीष तुमको तब प्राप्त होगा, जब तुम
सफलता प्राप्त कर लोगे। लेकिन, तुम तो
सफल कहीं भी नहीं होते।"

अभी हाल में, लखनऊ में शिया-सुन्नी
झगड़े हुए थे। नवीनतम समाचार आयर-
लैंड में सांप्रदायिक दंगों का है। मैं निश्चित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रूप से कह सकता हूं कि इधर-उधर के विस्फोटों से कुछ सार्थक नहीं होना है। यदि ऐसा विकट गृह-युद्ध हो जाये, जिसमें संपूर्ण भारत की पचास करोड़ जनसंख्या में से पच्चीस करोड़ लोग समाप्त हो जायें, तो यह स्थिति तो योजना-आयोग द्वारा स्वागत-योग्य होगी; क्योंकि इसके परिणाम-स्वरूप योजना-आयोग जनता को दुगुनी मात्रा में भूमि, मकान और अन्य साधन उपलब्ध करा सकेगा।

किंतु दंगा-फसाद करने में रुचि रखने वाले ये व्यक्ति जो कुछ करते हैं, वह आधा दर्जन व्यक्तियों के प्राण ले लेना भर है। मैं आपसे पूछता हूं, क्या यही क्रांति है? और, वे करते ही क्या हैं? वे संपत्ति नष्ट करते हैं और लोगों को मारते हैं, ताकि कुछ हद तक समस्या का हल हो जाये। किंतु समस्या हल कहां होती है? आंध्र में उन लोगों ने अरबों रुपयों की संपत्ति नष्ट की थी। भारत जैसे निर्धन देश में इस विनाश के जो कुपरिणाम हो सकते हैं, उनकी कल्पना आप भली भांति कर सकते हैं।

एक अन्य बात भी है, जिसके कारण मैं ग्रामदान के लिए अत्यंत आतुर हूं। मैं स्पष्ट रूप से विदेशी आक्रमण की संभावना देख रहा हूं और आपसे स्पष्ट कह रहा हूं कि बाहर से भारत पर आक्रमण होने की बहुत अधिक संभावना है तथा भारत की स्वतंत्रता खतरे में है। यही कारण है कि मैं ग्रामदान के संबंध में अत्यंत आतुरता में हूं कि आप इस अहिंसक क्रांति को अविलंब संपूर्ण करें। **अनुवाद : जगमोहनराव भट्ट**

★

कला का सम्मान

एक संपन्न मोहल्ले में एक गरीब कलाकार रहता था। वह जब भी मोहल्ले से निकलता, अत्यंत विनम्रता से मुहल्ले वालों को प्रणाम करता। मुहल्ले वाले कहते- "देखो, बेचारा कलाकार कितना गरीब है!"

एक दिन मुहल्ले के संपन्न नागरिकों को राज-दरबार से निमंत्रण मिला। वे सब गर्व से वहां पहुंचे और राज-कर्मचारियों ने उनका स्वागत किया। इतने में उन्होंने देखा कि मोहल्ले का वही गरीब कलाकार भी वहां आ पहुंचा है और स्वयं महाराजा ने उठकर उसे सम्मानसहित अपने नजदीक बैठाया है।

यह सब देखकर मोहल्ले वाले दंग रह गये।

दूसरे दिन उन्होंने कलाकार से पूछा –" क्यों जी, हम तो तुम्हें साधारण आदमी समझ रहे थे। तुम्हारा तो राज-दरबार तक में सम्मान है, तुमने तो हमें बताया ही नहीं।"

कलाकार ने विनम्रतापूर्वक कहा –" इसमें बताने की क्या बात है। जो लोग कला को समझते हैं, वे उसे प्रणाम करते हैं, और जो नहीं समझते उन्हें मैं प्रणाम करता हूं।"

–रामनारायण उपाध्याय

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मृतक-संस्कार की विचित्र प्रथा

राही कौंडिन्य

ाम की शासक जातियों में 'खाम्ती' भी एक है। 'खाम्ती' वस्तुतः स्थान-वाचक है। ये अपना परिचय 'ताई-खाम्ती' से देते हैं। खाम्ती लोग १७ वीं शती ाम आये थे। ये ताई (मंगोल) जाति एक शाखा हैं।

साम में खाम्तियों का वासस्थान लोहित में स्थित चौखाम् (नेफा) और उत्तर पुर जिले के मोरी-दिक्रङ, नारायण-लाके में है। ये लोग कृषिजीवी हैं और तः हीनयानी बौद्धधर्मावलंबी हैं। इनके गांवों में बौद्ध विहार होते हैं, जिनमें श्रामणेर रहते हैं। धान (चावल) खाद्य है। खाम्तियों की निजी लिपि । इनके बौद्ध विहारों में नाना विषयों राणिक पांडुलिपियां सुरक्षित हैं।

कों के संस्कार की उनकी कुछ प्रथाएं विचित्र और दिलचस्प हैं।

र्भिणी अवस्था या प्रसव काल में स्त्री यु हो जाये, तो उसका पति स्त्री की ा को धनुष-बाण और अन्य शस्त्रों -धमकाकर अपने गांव से भगाता है। नी मृत पत्नी की आत्मा को संबो-रते हुए कहता है—"आज से हम दोनों लिए अलग हुए। दोनों के बीच का ी समाप्त। तुम फिर कभी इस गांव में न आना। अन्यथा, तुम्हें लज्जित होना पड़ेगा। तुम्हारे लिए आवश्यक सामग्री मरघट में रख दी गयी है।" ग्रामवासी गांव के मुख्यद्वार को बंद करते हैं एवं मृत औरत के तलवे में सूई से घाव करते हैं, जिससे प्रेत स्त्री गांव में फिर प्रवेश कर न सके।

अकाल-मृत्यु से मरने वालों के लिए दान-पुण्य, जल-पिंड-विधि नहीं संपन्न की जाती। उसका मुर्दा दफनाया जाता है। परिवार वाले यदि दान करना चाहें, तो श्मशान में ही भिक्षु को बुलाकर दान देते हैं। एक महीने के बाद रीति के अनुसार घर को विशुद्ध कर जल-पिंड दिया जा सकता है। आगजनी से किसी की मृत्यु होने पर, जिस स्थान पर मृत्यु हुई है, वहीं पर जल-पिंड देते हैं।

आग से मरने वालों की कोई सामग्री घर में नहीं रखी जा सकती। भूल से कोई चीज रह जाये, तो पता लगते ही उसे फेंक दिया जाता है। दस साल से कम उम्र के बच्चे के शव का दाह-संस्कार नहीं होता। उसे जमीन में समाधि दी जाती है। उसे जल-पिंड देने की भी प्रथा नहीं है। उसका सारा क्रिया-कर्म एक ही दिन में समाप्त हो जाता है। पागल होकर मरने वालों को भी दफनाया जाता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर में दर्द चाहे जिस वजह से हो एक ही सेरिडॉन से ग़ायब!

एक ही सेरिडॉन से दर्द जल्द दूर हो जाता है। इसके अलावा सेरिडॉन में मिली ख़ास दवाओं की बदौलत न सिर्फ़ सर के दर्द, बदन के दर्द या दाँत के दर्द से पैदा होनेवाला तनाव ही दूर हो जाता है बल्कि आपमें एक नयी चुस्ती और फुर्ती भी आ जाती है। यही तो है सेरिडॉन की ख़ासियत!

सेरिडॉन
'रोश'

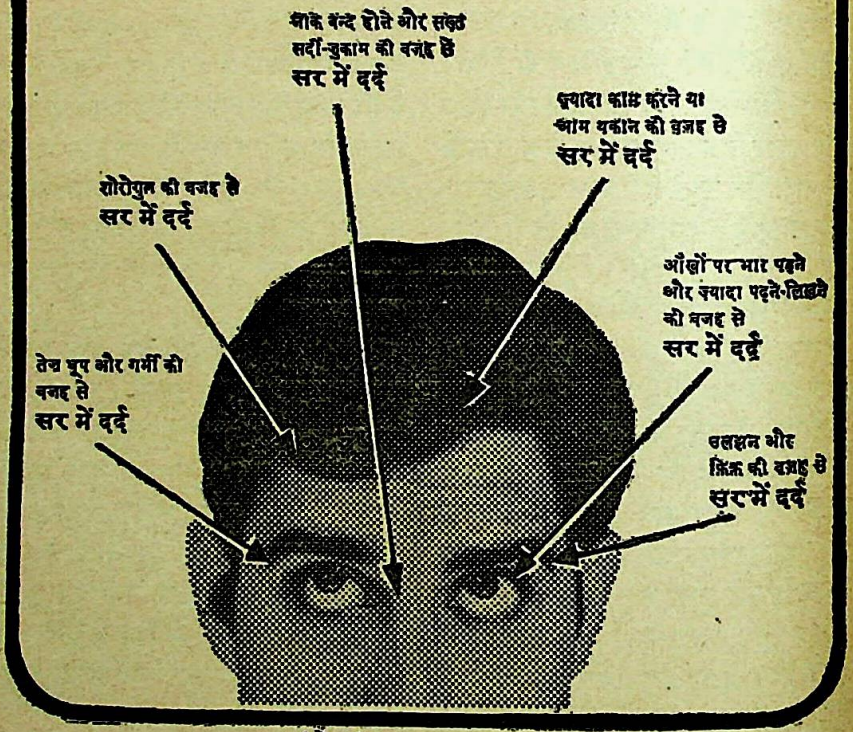

'रोश' उत्पादन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पने से भिन्न गोत्र वाले संबंधी के घर
ना निषिद्ध है। ऐसी स्थिति में अन्य
के लोग उसे तुरंत बाहर निकाल देते
सरे के घर अपना सगोत्रीय भाई हो,
से घर लाया जा सकता है। अन्य
में ब्याही होने पर भी पुत्री को पितृ-
मरने का अधिकार है। मगर उसकी
को नहीं।

व महामारी, हैजा आदि किसी संक्रा-
ग से एक ही दिन में गांव के कई लोग
ते हैं, तब शवों का दाह-संस्कार नहीं
ऐसी स्थिति में दफनाने की प्रथा है
र के भीतर अधिक समय तक शव
ना निषिद्ध है।

व के पूर्व भाग के किसी घर में मृत्यु
र उसे गांव के पूर्वी द्वार से जो कि
ार होता है, निकालना निषिद्ध है।
द करके पश्चिम के द्वार से शव को
पहुंचाया जाता है। यदि गांव के
में मृत्यु हो, तो शव को उत्तर दिशा
काला जाता है। श्मशान भूमि भी
णतः गांव के पश्चिम में रहती है।
दक्षिण में आदमी की मृत्यु होने पर
तर की ओर नहीं ले जा सकते। इसका
न किया गया, तो परिणाम घातक
है। जब गृहपति की मृत्यु हो, तो शव
के मूल द्वार से नहीं ले जाया जा
। घर के उत्तर और पश्चिम कोने का
काटकर ही मुर्दा बाहर निकाला
है।
कोई आदमी कहीं जाते हुए रास्ते
में मर जाये, तो न उसका दाह-संस्कार होता है, न उसे समाधि दी जाती है; अपितु मृतक के घर की छत से फूस के सात तिनके निकाल कर उन्हें पूजा जाता है। तत्पश्चात् शव को स्नान कराकर, सफेद वस्त्रों में लपेटकर, उसके गले में रस्सी बांधकर उसे वृक्ष पर लटका दिया जाता है। सात दिन बाद उसे पेड़ से उतारकर समाधि दी जाती है। उन सातों दिनों में उस वृक्ष के नीचे मंगलार्थ दीप जलाये जाते हैं। शोककाल में परिवार में लड़ाई-झगड़ा करना तो एकदम निषिद्ध है।

'साऊ केन्' पर्व के दौरान किसी की मृत्यु हो जाये, तो उसे घर से निकालकर शीघ्र ही श्मशान ले जाना पड़ता है। घर वाले सात दिन तक आग भी प्रज्वलित नहीं कर सकते। 'साऊ केन्' में मरने वाले के शव को तीन दिन पर्यंत वृक्ष में लटकाये रखते हैं और पर्व समाप्त होने पर दफनाते हैं। बात यह है कि इस अवसर पर जमीन में गड्ढा खोदन निषिद्ध है। मृतक के कपड़े और उसके उपयोग की वस्तुएं राहगीरों को देने की रीति है।

यदि किसी आदमी को मरते समय किसी ने भी नहीं देखा, तो उस घर को शीघ्र ही छोड़ना पड़ता है। दूसरे घर का निर्माण करने के पश्चात् ही मृतक की आत्मा को जल-पिंड दिया जा सकता है।

वज्रपात से किसी की मृत्यु होने पर मृत्यु-स्थान पर ही दान-पुण्य किया जाता है। वज्राहत शव को दक्षिण-पूर्व दिशा की ओर मुंह करके सीधा दफनाया जाता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिर का कुछ हिस्सा बाहर निकला रहता है। गांव के वयोवृद्ध व्यक्ति उस पर सात कांटेदार फूल रखकर कहते हैं—"इस साल बारिश होना परम आवश्यक है और पृथ्वी में जितने पशु-प्राणी हैं, उन्हें किसी प्रकार का कष्ट न हो ..... आदि।" वयोवृद्ध व्यक्तियों की अनुपस्थिति में मृतक के किसी सगोत्रीय भाई बंधु को ही यह सारा कार्य करना पड़ता है।

भिक्षु उस परिवार से दान आदि ग्रहण नहीं कर सकते। जिस कुदाल से कब्र खोदी जाती है, उसे खोदने वाले को ही दे दिया जाता है। उसे वापस घर में नहीं लाया जा सकता।

वृक्ष से गिरकर मरने वाले के मां-बाप और संबंधी उसके शव को तीन बार लांघते हैं। अगर वे न लांघना चाहें, तो गांव के वयोवृद्ध यह काम करते हैं। जब कोई अर्द्धमृत व्यक्ति घर लाया जाता है, तो उसे घर के भीतर न ले जाकर आंगन में ही रखा जाता है। उसकी मृत्यु होने पर शव को नहलाया नहीं जाता और श्राद्ध-कर्म, जलपिंड-विधि श्मशान में ही संपन्न की जाती है। उसी दिन उसे दफनाते हैं।

गले में रस्सी लगाकर आत्महत्या करके मरने वाले को जल-पिंड देना वर्जित है। उसके शव को कफन से लपेटना भी निषिद्ध है। वृक्ष से रस्सी को तीन बार काटकर गिराया जाता है। नीचे जमीन पर चटाई बिछाई जाती है। शव को उतारने वाले को सफेद वस्त्र पहनना पड़ता है। मृतक के संबंधी दूर ही रहते हैं, वे शव को छू तक नहीं सकते। हां, वे उसके गले की रस्सी अवश्य खोल सकते हैं। शव को गांव वाले ही मरघट में ले जाते हैं और वज्रपात से मरने वाले की भांति उसे भी सीधे जमीन में गाड़ते हैं। घर या विहार में यदि कोई फांसी लगाकर आत्महत्या करे, तो उस घर को त्यागना अति आवश्यक होता है।

गांव से दूर कहीं मृत्यु होने पर शव को गांव में लाने की मनाही है। उसे उधर ही कहीं किसी जंगल में झोंपड़ी बनाकर रखना होता है।

बाघ के आक्रमण से मरे हुए व्यक्ति के शव को दफनाया जाता है—जहां मृत्यु होती है, उसी स्थल पर।

जिस दिन मृत्यु हो, उसी दिन शव को घर से निकालकर श्मशान-घाट पहुंचा दिया जाता है। अगर उसी दिन ऐसा न किया जा सके, तो फिर ज्योतिष-गणना से दिन, घड़ी आदि निर्धारित करके उसे श्मशान ले जाया जाता है।

शव में यदि फिर चैतन्य का संचार हो जाये, तो उसके अंगों में लपेटे हुए कफन उतार दिये जाते हैं। यदि थोड़ी देर बाद फिर मृत्यु हो जाये, तो उसी क्षण भिक्षु को बुलाकर दान-पुण्य करना पड़ता है। उसके व्यवहार की सब सामग्रियां दान कर दी जाती हैं। भूल से कोई चीज रह जाये, तो उसे पता लगते ही फेंक दिया जाता है; क्योंकि उसे घर में रखे रहने पर कलंक कभी नहीं धुलता।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तारकोल की झील

• नेमिशरण मित्तल •

कृति ने वसुंधरा पर असंख्य अजूबे बनाये हैं, पर वेस्ट इंडीज द्वीपसमूह में ट्रिनि- की लेक आफ पिच (तारकोल की) उन सबमें विलक्षण है। यह झील के वैज्ञानिक युग में भी एक रहस्य बनी है। पता नहीं इस झील का निर्माण किस हुआ होगा और इसके पीछे कौन-से काम कर रहे हैं। यह पानी की झील है। यह तो २०० एकड़ क्षेत्रफल की ऐसी अद्भुत झील है, जिसकी सतह पत्थर जैसा तारकोल जमा हुआ है।

ट्रिनिडाड टापू की खोज कोलंबस ने ८ में की थी। लेकिन उसने इस झील ोई उल्लेख नहीं किया है। पहले-पहल ा उल्लेख सर वाल्टर रैले की डायरी ला है। रैले १५९५ में ट्रिनिडाड गया उसने लिखा है कि "ट्रिनिडाड की इस में पत्थर जैसा तारकोल है। यह नार्वे रकोल की तरह जल्दी नहीं पिघलता, ए भविष्य में जहाजों की तली में े के लिए इसी तारकोल का इस्तेमाल जाना निश्चित है।" इस उल्लेख के द अगले अढ़ाई सौ वर्षों तक इस झील ोर किसी ने ध्यान नहीं दिया।

८५० में एडमिरल थामस काकरेन यले में तारकोल मिलाकर जहाजों में जलाने का प्रयोग किया। फिर भी संसार का ध्यान इस झील की ओर आकर्षित नहीं हुआ। लोगों का ध्यान तो तब गया, जब संसार के सभ्य देशों को पक्की सड़कें बनाने के लिए अच्छे तारकोल की आवश्यकता महसूस हुई।

पिछली एक शताब्दी से इस झील में खुदाई की जा रही है और तारकोल के पत्थर जैसे ढेलों को एक तारकोल-शोधक कारखाने में पहुंचाया जाता है। इस कारखाने में लगे बड़े-बड़े यंत्र चौबीसों घंटे बिला नागा हर मौसम में चालू रहते हैं, ये तारकोल के पत्थरों को पिघला और छानकर इसी कारखाने में तैयार किये गये लकड़ी तथा टिन के ढोलों में भर देते हैं। तारकोल से भरे ये ढोल आसमान में लटकी एक रस्सी के सहारे समुद्र-तट पर पहुंचाये जाते हैं, जहां उन्हें जहाजों पर लाद दिया जाता है। और वे जहाज उन्हें दुनिया के हर कोने में ले जाते हैं। संसार की सब सड़कें उसी झील से निकली हैं।

शुरू-शुरू में इस झील की खुदाई कुदाल और बेलचे से होती थी, लेकिन अब इस काम के लिए विशाल यंत्र इस्तेमाल किये जाने लगे हैं। झील का धरातल इतना कड़ा है कि ये यंत्र उस पर मजबूती से खड़े होकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काम करते रहते हैं। मगर आश्चर्य की बात यह है कि लगातार सौ वर्षों की खुदाई पर भी झील के धरातल पर एक भी स्थायी गढ़ा नहीं बन पाया है। जैसे ही खुदाई से दो फुट का गढ़ा बनता है, वैसे ही वह चारों ओर से भरना शुरू हो जाता है और अगले दो-तीन दिन के भीतर पूरी तरह भर जाता है। इससे सिद्ध होता है कि झील के भीतर-ही-भीतर बिलोने जैसी कोई प्रक्रिया होती रहती है, जो झील के धरातल पर एक भी गढ़ा नहीं रहने देती।

समूची झील का धरातल कठोर है। मगर उसके केंद्र का कुछ भाग तरल, चिपचिपा और ढीला है। यह हर समय उबलता-सा रहता है। यह झील का सबसे गहरा हिस्सा है, लगभग ३०० फुट गहरा। १९२८ में इसी जगह पेड़ का एक तना निकल आया था। जब वह धरातल से छह फुट ऊपर निकल आया, तो अधिकारियों ने उसे आरे से कटवा डाला, लेकिन तना १० फुट तक और बाहर आया। कुछ दिन तक वह वैसे ही रहा, मगर बाद में भीतर समा गया। पुरातत्त्वविदों ने उसकी लकड़ी की जांच की और बताया कि वह चार-पांच हजार वर्ष पुराना है। इतने समय पहले वह पेड़ वहां रहा होगा और बाद में धरती के फटने से उसके उदर में समा गया होगा।

उस झील से निकलने वाला वह तना अकेला ही नहीं था, समय-समय पर उसमें से प्रागैतिहासिककालीन जीवाश्म भी मिले हैं। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि कई हजार वर्ष पहले धरती के फटने से वहां दरारें पड़ गयी होंगी। उनमें से कोई दरार इतनी गहरी होगी कि वह धरती के गर्भ में उस स्थल तक पहुंच गयी, जहां तेल का अक्षय भंडार था। वह तेल उस दरार में से फूट-कर बाहर निकला होगा और धरती के फटने से बने गढ़े में भरता चला गया होगा। तेल ने आसपास की मिट्टी को काटा होगा तथा कालांतर में मिट्टी, रेत और तेल के मिश्रण से यह तारकोल बन गया होगा।

परंतु मूल प्रश्न है कि इस मिश्रण को बिलोया किसने ? क्योंकि यह इतनी कुशलता से बिलोया गया है कि झील के प्रत्येक भाग में पाये जाने वाले तारकोल में पूरी तरह एकरूपता है। झील में से अब तक लगभग अस्सी लाख टन तारकोल निकाला जा चुका है, लेकिन इससे उसके तल पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है। उसका कोष जैसा का तैसा भरा-पूरा है और उसके तत्त्वों में किसी प्रकार की कमी नहीं आयी है।

इससे अनुमान होता है कि झील के नीचे बिलोवन की कोई नैसर्गिक प्रक्रिया चल रही है, जिसका सीधा संबंध झील के केंद्रीय क्षेत्र के साथ है; क्योंकि वहां का तल कठोर नहीं है और उसमें निरंतर बुलबुले भी उठते रहते हैं। यह इस बात का प्रमाण है कि उस क्षेत्र का संबंध तली से है और तली में से तारकोल बहकर आ रहा है। हो सकता है कि धरती के गर्भ में तारकोल उबल रहा हो और वह ऊपर आते-आते ठंडा होकर ठोस स्वरूप ले लेता हो।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ड कहानी :

सर्वज्ञ

सुशीला मूर्ति

ते जा रहे अंधकार को चीरती हूई दौड़ रही रेल कुछ ही मिनिटों में हैदराबाद पहुंच जायेगी। यही सब सोचता, ठंडी हवा के झोंकों में लीन था। सीट से उठकर अंगड़ाई होलडाल लपेटा। सूटकेस नीचे उतारकर, गाड़ी से उतरने के लिए तैयार हो गया। जीजाजी स्टेशन पर आये होंगे। उन्हें देखे तीन साल हो गये। अब बदल गये होंगे। ास हंसी फूट पड़ी। मैं नहीं बदला हूं? चश्मे का नंबर नहीं बढ़ा है? चेहरे पर थकान रही है—आईना इस बात का रोज स्मरण कराता है। जीजाजी क्यों नहीं बदले पेट और भी आगे बढ़ आया होगा, सिर के बाल और भी उड़ गये होंगे। पैंट-शर्ट का भी बढ़ गया होगा।

चित्र : शेणै

अनुवाद : वी. बी. पुत्रन्

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और माधव ? नहीं, नहीं। वह नहीं बदला होगा। हम दोनों हमउम्र हैं, फिर भी वह नितांत भिन्न है। दूध-सा चमकता उसका शरीर काला नहीं पड़ा होगा। उसके चौड़े ललाट पर रेखाएं नहीं पड़ी होंगी। चेहरेपर आत्मविश्वास अभी घटा नहीं होगा। उसके हंसते हुए नेत्रद्वय और सुंदर चेहरे को देखने के लिए ही तो दिल्ली से यहां आया हूं। सच ! माधव के लिए ही चला आया हूं। नहीं-नहीं ..... माधव और उसकी राधा, दोनों को जी-भर देखने के लिए। माधव की शादी हुए तीन साल हो गये हैं। एक लड़का है। उसका जीवन-मित्र हूं मैं। मुझे नहीं देखना चाहिये ?

मुझे बुलाने के लिए कई पत्र लिखे हैं माधव ने। लेकिन आ ही नहीं सका। कंम-बख्त नौकरी ऐसी है कि मन की आशाओं का गला घोंट देना पड़ा। अब भी केवल छः दिन की छुट्टी मिली है। एक दिन तो दीदी और जीजाजी के साथ ही बिताना पड़ेगा। तीन-चार दिनों का सफर। फिर माधव के घर में, माधव के साथ केवल एक दिन।

केवल एक दिन हुआ तो क्या हुआ ? माधव की गृहस्थी देखकर खुशी नहीं होगी क्या ? कितने दिनों की चाहत है यह। मधुर वाणी और मंद-मंद मुस्कराते माधव का सबकी सलाह ठुकराकर राधा के साथ विवाह करना मेरे लिए अनपेक्षित घटना थी। मेरी नयी नौकरी थी। छुट्टी नहीं मिली। मैं शादी में शामिल न हो सका था, किंतु कल्पना जगत् में उसके साथ ही विचरता रहा था। आज भी सारी बातें कल्पना बनकर ही रह गयी हैं।

नारायण, उत्तप्पा, थामस सबके-सब माधव के घर गये थे। उन्होंने पत्र भी लिखे थे, लेकिन किसी ने सविस्तार समाचार नहीं दिया, जिससे मेरी जिज्ञासा तृप्त होती। लिखने के लिए कहता भी कैसे ? उनकी माधव से आत्मीयता भी तो नहीं है। उनके लिखने की अब जरूरत भी क्या है। अब मैं स्वयं ही देखूंगा न.....आज ही शाम को! मन पुलकित हो उठा।

०००

पेट-भर खाया था। शरीर भी थका था। फिर भी दोपहर को काफी देर तक मुझे नींद नहीं आयी। जब हम पढ़ते थे, माधव ने मेरे जीवन में स्नेह का अमृत उड़ेला था। मेरी गरीबी पर ध्यान न देकर, मेरे स्वाभिमान को फूल-सा संभालता था वह। और हमारे स्नेह में वृद्धि होती गयी थी। उसका वही रूप आज भी मेरे हृदय में बसा हुआ है।

न जाने वह कैसा होगा अब ? आकर्षक व्यक्तित्व वाले मेधावी माधव को अच्छी कंपनी में ऊंचा पद मिलना स्वाभाविक ही था। जीवन-संगिनी उसने खुद चुनी थी।

राधा ने उसे सुखी रखा होगा ? अगर वह सुखी न भी हो, तो दूसरों को क्या ? नहीं नहीं, माधव सुखी ही होगा.....भला माधव को प्यार न देने वाला, उसे अर्पित न हो जाने वाला भी कोई हृदय होगा !

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

: भी, क्या कहा जा सकता है! शादी
ड़े ही है! जीवन-भर साथ रहने के
कसी लड़की को इस तरह चुन लेना
था? अपने किये पर क्या माधव को
ला होगा? लेकिन वह भी तो अपने
पता को छोड़कर आयी है। "तुम्हारे
ने कितने त्याग किये हैं।" कहकर
ो डांटती-फटकारती होगी। औरतों
ने सौभाग्य-दुर्भाग्य के बारे में सोचने
फालतू समय भी तो काफी मिल
।
उसके गुस्से और उलाहनों से
का जीवन नरक न बन गया हो?
धव का प्रेम-स्वप्न टूट न गया हो?
ा है, दोनों पश्चात्ताप की आग में
ों। शायद विच्छेद के लिए भी तैयार
हों।
सोचते-सोचते नींद आ गयी। उठा,
छः बज चुके थे। माधव को देखने
ुरता में जल्दी-जल्दी कपड़े पहने
धव का पता लेकर निकल पड़ा।
नगर में वह रहता था। नये बंगलों
उसका घर ढूंढ़ निकालने में कोई
नहीं हुई।
के सामने बगीचा। हरी घास के
टा-सा रास्ता। धुंधला-सा अंधेरा
ा था। हुसेन सागर झील से ठंडी-
ा बह रही थी। मोहक संध्या ने
ाह्लाद भर दिया।
की विशाल सीढ़ियों पर चढ़ते समय
की थी कि मेरे प्रिय माधव की राधा
आकर द्वार खोलेगी। धीरे-से दस्तक दी। मेरी कल्पना के विपरीत, मीठी खनक के बदले कमजोर-सी आवाज आयी—"कुंडी नहीं लगी है, धकेल दीजिये।"

क्षीण होते हुए भी निस्संदेह यह माधव की ही आवाज थी। एक अजीब संकोच से मेरा दिल धड़कने लगा। द्वार को धीरे-से धकेला। सामने वाले छोटे कमरे में मद्धिम प्रकाश था। उसे पार किया। आगे बड़ा-सा खामोश ड्राइंग-रूम रोशनी से जगमगा रहा था। सामने सोफे पर लेटा हुआ माधव धीरे से उठता दिखाई दिया। बगल में बच्चा सोया हुआ था। इस अनपेक्षित परिस्थिति से मेरा मन भ्रमित-सा हो गया।

मुझे विस्फारित आंखों से देखने लगा वह। उसके चेहरे पर आश्चर्य था। मेरे मन में एक साथ उद्वेग और भ्रम जाग उठे।

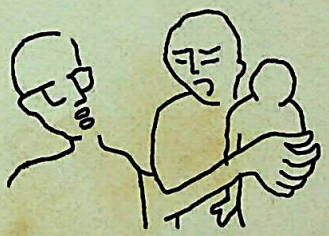

"तुम! श्रीहरि, तुम! आओ, यार आओ! बिना चिट्ठी लिखे ही धमक पड़े। विश्वास नहीं हुआ कि तुम्हीं हो। आओ, आओ।" आनंद से गद्गद होते हुए माधव ने कहा और मेरा गला भर आया।

लेकिन यह क्या? कहां राधा के साथ हंसते-हंसते खड़े माधव की कल्पना, और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चेहरा मोती-सा क्यों चमके ?

लॅक्मे वैनिशिंग क्रीम की मोती-सी चमक से

लॅक्मे वैनिशिंग क्रीम आपके चेहरे की चिकनाहट और दाग़-धब्बों को फ़ौरन दूर कर देती है। अपनी विशेष 'निखार-क्रिया' से आपके चेहरे पर रूप की बहार लाकर त्वचा में छिप जाती है। और आपका चेहरा सचमुच मोती की तरह चमक उठता है। इस हलके-से मेकअप आधार पर थोड़ा-सा लॅक्मे फ़ेस पाउडर लगाइएं और फिर आइने ही से पूछिए, वह क्या कहता है!

लॅक्मे वैनिशिंग क्रीम

Lakmé

ASP/L-86

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह थका हुआ-सा, दुबला, सोफे पर
माधव !
क्यों माधव, क्या हुआ ? कैसे हो ? ऐसे
लेटे हो ?"
धव हंस दिया। बोला—" घबरा क्यों
ो। मुझे कुछ नहीं हुआ। हल्का-सा
र है, बस। महीने भर बिस्तर पर पड़ा
लगता है, आज फिर थोड़ी हरारत
ही है।"
रे मुंह से कोई बात ही नहीं निकली।
धव ने मेरे परिवार का कुशल समा-
पूछा। मैंने उत्तर दिया। अब मैंने पूछ
या—"तुम्हारी पत्नी कहां है ? दिखाई
ती।"
उसकी एक सहेली है, आरती। उसके
यी है। आ जायेगी। गये काफी देर
ीं है।"
रे दुःख के साथ मैंने सोचा—"मैं ठीक
च रहा था। पति बीमार पड़ा है और
च्चे को सौंपकर सहेली के घर चली
कैसी स्त्री होगी ? इनके बीच का
क्या प्रेमहीन एवं शुष्क नहीं होगा ?
पत्नी के बारे में कहते समय माधव
खों में चमक दिखाई देती है। बेचारा
ो उदारतापूर्वक उसे पहले की ही
प्यार किये जा रहा है। द्वेष करना
ही नहीं। मुझमें उमड़ती सहानु-
कह ही दिया—"तुम्हें बुखार है, फिर
. ?"
त माधव ने कहा—" छिः ! छिः !
कहीं नहीं जाती वह। हमेशा घर
पर ही कुछ-न-कुछ काम करती रहती है। इसलिए आज जब उसने जाने की इच्छा प्रकट की, तो मैंने ही जाने को कह दिया। आखिर बेचारी इस चहारदीवारी में रह-कर ऊब भी गयी होगी।"

मैं मन-ही-मन मुस्करा उठा। अपनी पत्नी के बचाव की कोशिश क्यों कर रहा है माधव ? क्या मित्र को मूर्ख समझ रहा है ? लेकिन मैं उसकी मृदु भावना को ठेस पहुंचाना नहीं चाहता था।

माधव की आवाज से बच्चा जाग उठा और रोने लगा। माधव ने उसे थपकी दी—"सो जाओ राजा।" पर उसके चुप होने के कोई लक्षण नहीं दिखाई दिये। माधव ने बच्चे को कंधे से लगा लिया।

"अंदर शायद इसे गर्मी लग रही है। चलो, बगीचे में टहलेंगे।" उसने कहा।

हम बाहर निकल पड़े। दस-पंद्रह मिनिट माधव की 'आं-ऊं' लोरी सुनकर बच्चा सो गया। मेरे बुलाने पर भी मेरे पास नहीं आया था। बुखार का शिकार माधव बगीचे में ठंडी हवा में बच्चे को लिये टहल रहा था और मैं राधा के बारे में सोच रहा था।

मुरली को भीतर सुलाया। फिर दोनों बाहर आ रहे थे कि फाटक खुलने की आवाज आयी। मंद प्रकाश में खड़ा मैं उस ओर मुड़ा। हां, वही भीतर आ रही थी। माधव कुछ कह रहा था। लेकिन मेरे कान सुनना ही भूल गये। धीरे-धीरे पग बढ़ाती आती हुई उसे देखकर मुझे लगा, यही होगी माधव की राधा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह किस रंग की साड़ी पहने थी, किस तरह सजी थी—यह अब मुझे याद नहीं है; लेकिन वह छरहरा स्वर्णिम शरीर, माधव को देखकर कमल-सी खिल उठने वाली उसकी सुंदर आंखें और मुस्कराते समय मोती-सी चमकती दंत-पंक्तियां मैं आज भी नहीं भूला हूं। सम्मोहक सौंदर्यमयी उस कोमलांगी को देखकर मैं सब कुछ भूल गया था। मगर मैं तुरंत संभल गया। बालों को उंगलियों से संवारते हुए मैंने मन-ही-मन कहा—"इस रूप के जाल में फंसकर ही तो माधव छटपटा रहा है!"

वह अंदर आयी। मुझे देखा। माधव बोला—"देखो राधा, तुम्हारी अनुपस्थिति में कैसी अद्‌भुत घटना घटी। दिल्ली से श्रीहरि आया है।" उसकी बात में बाल-तुल्य उत्साह था।

राधा ने अत्यंत सुंदर मुस्कान के साथ मुझे हाथ जोड़े। प्रति-नमस्कार करने की इच्छा न जाने क्यों नहीं हुई। मुझे उस दुविधा से मुरली ने बचा लिया। भीतर से बच्चे के रोने की आवाज सुनकर वह भीतर दौड़ गयी।

"चलो, अंदर बैठें।" कहकर माधव ड्राइंगरूम की ओर चल दिया। मुझे बैठाया और स्वयं "अभी आया" कहकर भीतर चला गया? पांच मिनिट बीते होंगे कि राधा एक गिलास में ठंडा शर्बत रखकर धीरे से बोली—"लीजिये!"

मैंने चुपचाप ले लिया। स्वादिष्ट था। मगर सोचा, इतने समय बाद आये अतिथि

का बस यही आतिथ्य! शायद गिलास-भर शर्बत में ही निबटा देना चाहती है। मेरा मन कड़ुवाहट से भर गया।

खाली गिलास वापस लेते हुए बोली—"आपके आने से हमें बहुत खुशी हुई। दो-चार दिन रहेंगे न?" आहा! कैसा आतिथ्य है! शायद यह पूछना चाहती है कि बाप कब जा रहे हैं।

मैंने कहा—"नहीं जी, कल ही जाना है। छुट्टी नहीं है।" मेरी आवाज में किंचित् भी मृदुता नहीं थी। न जाने राधा क्या बोलती तभी भीतर से माधव ने उसे पुकारा। वह चली गयी। माधव कह रहा था—"पिछवाड़े का उमानाथ कहीं बाहर गया है क्या? श्रीहरि से उसका परिचय कराने के लिए मैं उसे बुलाने गया था। कई बार आवाज लगायी, कोई उत्तर नहीं आया।"

वह धीरे-से हंसकर बोली—"नहीं, वे कल ही बेंगलूर गये हैं। कमला कहती थी।"

"अच्छा, श्रीहरि को कुछ दिया कि नहीं?"

"हां, नींबू का शर्बत दिया है। खाना पका रही हूं। अभी कुछ खाने को दूंगी, तो भोजन कैसे करेंगे!"

"अच्छा-अच्छा।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न-से बड़े मिष्टान्न बनाने वाली है? यानी है। पति से समर्थन पाने की ानती है। अच्छा माधव, तेरी हालत ा मैंने। तुझ जैसे गऊ की क्या हालत ी है!

व मेरे पास आकर बैठ गया और बातें लगा। करीब आठ बजे तक दुनिया- विषयों पर हम जबान चलाते रहे। कंपनी का सोवेनियर मुझे देकर उसने "देखो, ये हैं मेरे मैनेजिंग डाइरेक्टर ह मेरा लेख.....।"

लेख पढ़ने लगा। दृष्टि तेज गति से र, माधव की प्रांजल शैली का आस्वा- रा रही थी।

ाएक मधुर पदचाप सुनकर मेरी आंखें हुईं।

ाना तैयार है। चलियेगा ?" उसने

ल-भात बनाने में और कितना समय । मैंने सोचा।

ं-हां राधा, बहुत भूख लगी है। जल्दी ।"

रोसने में कितना समय लगता है। छ टेबल पर तैयार रखा है। आइये।" हुई अंदर चली गयी।

ब विद्यार्थी थे, तो रात के दस बजे खाते थे न ? सोचकर आश्चर्य होता व तो आठ बजे ही खाने की आदत ी है राधा ने। थोड़ी भी देर हुई कि ही नहीं जाती।"

ं माधव की बातों पर विश्वास नहीं हुआ। सोचा, वह अपनी पत्नी के प्रति मेरे मन में सद्भाव जगाना चाहता है।

हम दोनों उठे। माधव मुझे बाथरूम में ले गया। नीले बल्ब के मंद प्रकाश में, मोजा- इक बिछाया हुआ बाथरूम इतना साफ- सुथरा था कि मेरी आंखें चौंधिया गयीं। सिंक में गीजर के गर्म पानी से हाथ धोकर स्टील हैंगर में तह करके लटकाये हुए टर्किश टावेल से पोंछ रहा था कि नहाने का नया साबुन लाकर रखते हुए बोली—"स्नान करेंगे ?"

यद्यपि लगा कि नहा लूं तो आराम मिलेगा, फिर भी राधा की खातिरदारी को स्वीकार करने की अनिच्छा से कहा— "नहीं, सुबह स्नान कर लिया है।"

रसोईघर के पास वाले कमरे में आये। मेज पर रखी हुई एक ही थाली। उसे घेर- कर रखी हुई छोटी-छोटी प्लेटें, सब्जी, चटनी आदि। हाथ में एक कांच की प्लेट लिये राधा आयी और थाली को ठीक से रखकर बोली—"यह आपके लिए है।"

"और मेरे लिए ?" माधव ने पूछा।

"आपके लिए यह।" कहकर कांच की गहरी प्लेट उसके सामने रखकर चम्मच से हिलाने लगी।

"दलिया ! मैं भात क्यों नहीं खा सकता ?" छोटे बालक की तरह मचलते हुए माधव को देखकर मेरे ओंठों पर अना- यास मुस्कराहट दौड़ गयी।

"ऊंह, और दो-तीन दिन भात खाना ठीक नहीं। अधिक-से-अधिक द्रव पदार्थ लेना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नया डिलक्स सीलिंग पंखा

- अत्याधुनिक व शोभनीय आकार प्रकार।
- पूर्णरूपेण: डाई-कास्ट तथा कम भारी।
- आधुनिकतम उत्पादन साधनों के प्रयोग के कारण दोष-युक्त क्वालिटी व कार्यक्षमता।
- सरलता से पूर्णतः खोला जा सकता है तथा उसी सरलता से वापिस एसेम्बल भी किया जा सकता है।

नये रेगुलेटर के साथ

- अत्याधुनिक डिज़ाइन व स्वरूप।
- दिवाल के भीतर की तार-प्रणाली के लिये बहुत ही उपयुक्त।
- विशेष प्रकार का रोटेरी स्विच जो दोनों दिशा में घूम सकता है।
- लोक क्वॉयल यूनिट की वजह से गर्म नहीं होता।

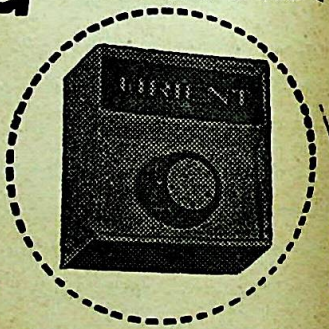

ASP/OGI—2/70

ओरिएन्ट पंखा

दो वर्षों की गारंटी

ओरियन्ट जनरल इण्डस्ट्रीज लि०,
कलकत्ता - ५४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बुखार है न।"

-तेल पिया-सा मुंह बिचकाकर
द्द करके और शक्कर-दूध मंगाकर,
एक-एक चम्मच दलिया चुपचाप
लगा।

रे-धीरे खा रहा था। खाना काफी
था। इतनी जल्दी, इतने प्रकार
कैसे बने होंगे? सोच रहा था कि
ई बनाना आता भी है या नहीं?
दरवाजे से चुपके-से होटल से तो
ा लिया? धीरे-से मैंने रसोईघर
नजर दौड़ायी। निरीक्षक की तरह
हां की सफाई देखी। अगर खाना
ा हो, तो इतना साफ रहना असं-
खोजती हुई आंखों को कमरे के
ी में रखा हुआ टिफिन कैरियर
दिया।

री कल्पना गलत थोड़े ही होगी।
ई की विचित्र तृप्ति का अनुभव
ने।

तो कुछ खा ही नहीं रहे हैं। शायद
च्छा नहीं बना है?" वह कह रही
के स्वर में मधुर आतिथ्य झलक
परंतु कोने में रखा हुआ टिफिन-
देख लेने के कारण मैंने मन में
ूठी कहीं की!" और उस स्वादिष्ट
ी भी प्रशंसा नहीं की।

खाना माधव रोज खाता है, क्या
क दिन भी नहीं खा सकता? इसके
मुझे यहां कोई संकोच भी नहीं है।"
पपूर्वक कहा।

मेरी बात में छिपे व्यंग्य को वह समझ गयी होगी। क्षण-भर के लिए अप्रतिभ-सी हो गयी। मैंने कनखियों से देख लिया। उसके बाद वह अधिक नहीं बोली। लेकिन जब चुपचाप केसरी भात और सेंवइयों की खीर परोसी गयी, तो मेरा मन कचोटकर रह गया। ये तो घर में ही बने होंगे।

"इतनी सारी चीजें क्यों बनायीं।" मैंने पूछा।

"खाओ यार, राधा जानती है कि तुम्हें मीठा पसंद है और इसीलिए तुम्हारा नाम चींटी रखा गया था। स्वीट्स अच्छे नहीं बने हैं?"

"बहुत अच्छे बने हैं।" कहकर और कुछ नहीं सूझा, तो बोला—"तुम भी खाते तो अच्छा था माधव।"

"छोड़ो यार, मेरा क्या! मैं तो हमेशा खाता रहता हूं। राधा स्वीट्स बनाने में एक्सपर्ट है। कैसे बताऊं कि इस रसोईघर में कितने प्रयोग होते रहते हैं।"

मैंने सोचा, हमेशा 'स्वीट्स' का खर्च कितना होगा? लगता है, पैसा बचाने वाली औरत नहीं है। माधव बेचारा.....

भोजन समाप्त हुआ। माधव अपने बेड-रूम वाले बिस्तर पर आकर लेट गया। मुझे भी बगल में बैठा लिया और फिर बात-चीत में लग गया। मैं सोच रहा था कि कल तो किसी तरह माधव मुझे जाने नहीं देगा।

साढ़े दस बजे राधा भीतर आकर बोली—"आपके लिए बगल के कमरे में बिस्तर बिछा दिया है।" आधे घंटे बाद मैं वहां

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह खांसी ?

ग्लायकोडिन के प्रताप से गायब हो गयी !

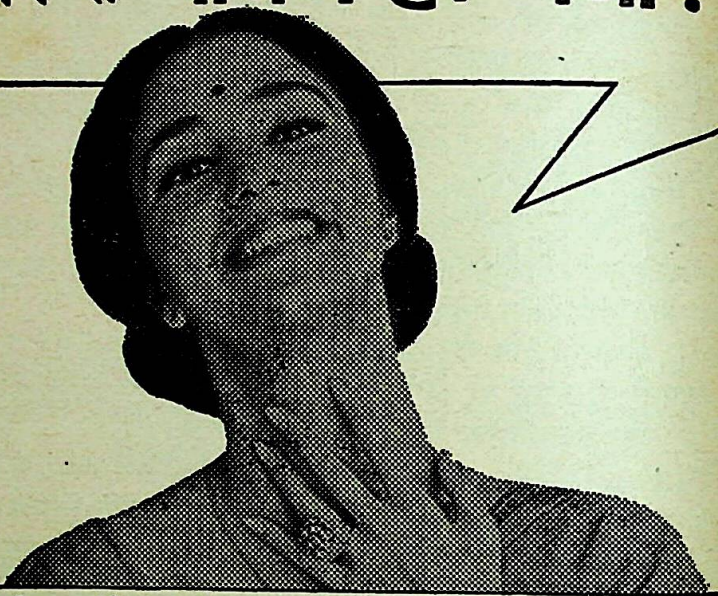

क्या आप विश्वास करेंगे कि अभी कुछ समय पहले वह कष्टदायक खांसी से परेशान थी। उसने ग्लायकोडिन लिया और ग्लायकोडिन लेते ही उसकी खांसी तुरंत और पूर्णतया गायब हो गयी।

खांसी पर सम्पूर्ण नियंत्रण के लिए ग्लायकोडिन से बढ़कर कोई दूसरा इलाज नहीं।

ग्लायकोडिन सभी पीड़ित भागों से खांसी को दूर भगाकर आपको इस प्रकार आराम पहुंचाता है :

- दिमाग में—खांसी के हमले पर नियंत्रण करता है।
- गले में—खराश को मिटाता है और जकड़न को दूर करता है।
- छाती में—जकड़ी हुई स्नायुओं को आराम मिलता है और सांस लेने में आसानी होती है।
- फेफड़ों में—कफ को ढीला करके बाहर निकालता और खांसी को दूर भगाता है।

ग्लायकोडिन

टर्पं वसाका

खांसी की विश्वस्त और सबसे ज़्यादा बिकने वाली घरेलू औषधि

Alembic

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri/659d/ACW/hin

ंग पर लेट गया। माधव भी एक
ध और एक प्लेट में सेब के टुकड़े
पीछे-पीछे आया। इस खातिर-
ारा संकोच बढ़ता जा रहा था।
ाधव छोड़े तब न! खा ही रहा
ाधा भीतर आकर बोली—"यहां
ुत सताते हैं। मच्छरदानी बांध
गिरा लीजियेगा।"
ा, लेकिन मच्छरदानी में मुझे गर्मी
नहीं आती।"
ाने की ओर पंखा रख छोड़ा है,
"
नहीं, मैं चला लूंगा।"
केवल दस-ग्यारह बजे तक गर्मी
रात को यहां ठंड पड़ती है। यह
की खासियत है।" माधव कह

ने स्विच दबाया। कमरा प्रकाश
ा उठा। दरवाजे के पास वाली
ड़ी की मेज पर रखी हुई सुराही
बोली—"पानी वहां है।"
से चाबियों का गुच्छा निकालकर
ारे सामने रखी हुई अलमारी
उसमें से एक हल्के नीले रंग का
कालकर माधव के हाथ में देती
—"उन्हें दे दीजिये, रात को ठंड
और चाबियों के गुच्छे को फिर
ठूंसकर बाहर चली गयी।
! लगता है घर का सारा अधि-
के हाथ में है। मैंने सोचा।
ाइट!" कहकर माधव अपने कमरे
में चला गया। मुझे नींद नहीं आ रही थी। बार-बार लगता था कि इस आधुनिक मोहिनी के हाथ में पड़कर माधव अवर्णनीय कष्ट पा रहा है। समाज को ठुकराकर शादी करने के कारण किसी की सहानुभूति भी नहीं पा सकता वह। सौ में निन्नानवे प्रेम-विवाह असफल होते ही हैं।

माता-पिता द्वारा पसंद की गयी लड़की से चुपचाप शादी करना छोड़कर किस मुसीबत में फंस गये माधव! तुम अपने साहस का नतीजा भोग रहे हो। तुम्हारे अस्वस्थ रहते हुए भी बच्चे को तुम्हारे पास छोड़कर सहेली के घर जाने वाली, तुम्हारे प्राणप्रिय मित्र के आने पर होटल से खाना मंगाकर खिलाने वाली, घर के सर्वाधिकार को अपने हाथ में लेकर तुम्हें गुड़िया की तरह नचाने वाली जीवन-संगिनी के साथ न जाने किस तरह जीवन बिताओगे। मेरा मन विचलित हो उठा। उद्विग्नता के मारे पलकें नहीं लगीं।

आधा घंटा बीत गया होगा। उन्हीं कोमल कदमों की आवाज आयी। वह रसोई-घर से माधव के सोने के कमरे में गयी होगी।

"खत्म हुआ महोदया, पीसने का काम?" प्रेमपूर्ण कातरता-भरी माधव की आवाज।

पति-पत्नी का संवाद सुनना ठीक नहीं। लेकिन यह सर्वाधिकारिणी भला उससे प्यार की बात करेगी? मैंने सोचा, वैसी कोई बात वे नहीं करेंगे, जिसे सुनना मना हो।

उसकी चूड़ियों की खनक से लगा कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ज़ेनिथ के कटर

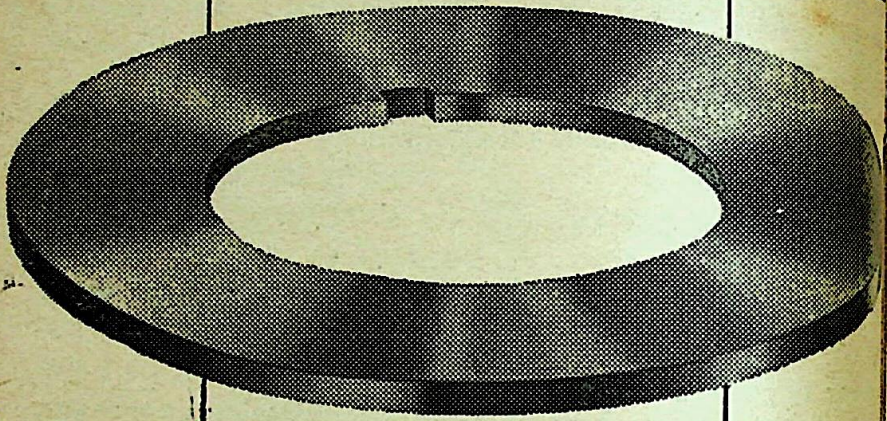

आपके कारख़ाने में कटाई के हर काम के लिए आदर्श

ख़र्च घटाते हैं... उत्पादन बढ़ाते हैं!

* अव्वल दर्जे के टूल-स्टील से कड़े प्रतिमानों के अनुसार बनाये हुए
* वैज्ञानिक विधि से हीट-ट्रीटमेंट दिये हुए
* कटाई का काम सफ़ाईदार और एक-सा होने के लिए बहुत ही तेज़ धारवाले

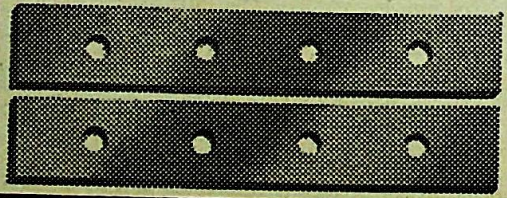

ज़ेनिथ स्टील पाइप्स लिमिटेड
टूल्स मैन्युफ़ैक्चरिंग डिवि
१९५, चर्चगेट रेक्लमेशन,
बम्बई-२० (वी. आर.)
टेलिफ़ोन: २९४४४१
तार: ZENPIPES
टेलेक्स: ०११-२४५८
आन्सर बैक कोड: ZSP

AIYARS. Z-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ल से हाथ-पैर, मुख पोंछते हुए कह
'आपके मित्र बहुत दिनों के बाद
सोचा, इडली बना लूं। एक दिन
आपकी राधा घिस नहीं जायेगी
" और फिर उसने प्रश्न किया—"वे
"

ुख की नींद सो रहा होगा। बेचारा
में थक गया होगा।" माधव की
में कितना स्नेह था—"तुम भी
गयी हो। कोई आ जाये तो बस,
के व्यंजन बनाकर अपने को थका
कभी-कभी तो सोचता हूं, कोई
'

ने कानों पर विश्वास न कर सका
रे माधव का विचार है। तो शादी
रुष सचमुच बदल जाते हैं।
राधा की आवाज—"छिः ! कैसी
हैं। अच्छी नींद सो लूं तो थका-
ट कुछ नहीं रहती। लेकिन पहले
जाइये। तबीयत भी ठीक नहीं
कारती-सी आवाज सुनकर मेरा
र जल उठा। इस तरह की बातों
में फंसाकर ही माधव को वश में
इसने।
जाने पर मुरली रोया होगा?
आंसू के निशान थे।"
बहुत ऊधम मचाया उसने। उठा
ा-भर टहला, तब कहीं उसे नींद

! उसे खेलाकर आप थक गये
खूब गाली दी होगी न आपने?"

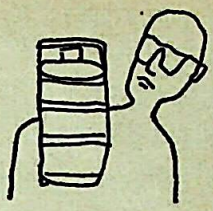

"छिः ! हमेशा हम दोनों की देखभाल करते-करते तुम भी थककर शायद कोसती होगी। तुम्हें घर से बाहर निकले तीन महीने हो गये थे, याद है?"

"जाने दीजिये। कहीं थपकी देते तो मुरली नहीं रोया? हमेशा नौ बजे तक सोने की आदत है उसकी।"

"हमेशा तुम्हीं लिये रहती हो, इसलिए मेरे पास तो वह आता ही नहीं।" माधव के स्वर में मीठा उपालंभ था।

"अब रोज आप ही संभालिये। मैं कहीं चली जाया करूंगी।"

"तुम ही गयीं, तो हम दो क्या करेंगे यहां? तुम्हारे पीछे-पीछे चले जायेंगे।"

मेरा सिर दर्द करने लगा।

"अच्छा, अब सो जाइये।" राधा की आज्ञा थी।

माधव शायद चुपचाप लेट गया था। कुछ देर बाद भीतर से कपाट का दरवाजा खोलने की आवाज आयी। फिर पर्स का बटन खोलने की हल्की ध्वनि। उसके बाद वीणा के तार की तरह झंकृत होती हुई राधा की मधुर ध्वनि—"मुंह खोलिये तो।"

"राधा, यह क्या है?"

राधा खिलखिलाकर हंसी। कुतूहलवश

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं सारे शरीर को कान बनाकर सुनने लगा।

"कैपसूल? कहां से?"

"डाक्टर ने दिये हैं।"

"कौन-से डाक्टर ने?"

"और कौन? आपके डाक्टर गिरधर राव ने।"

कुछ समय मौन।

फिर माधव की आवाज—"ओह! समझ गया। आरती के घर जाने का बहाना बनाकर डाक्टर के पास गयी थी। है ना?"

"जी! सच कहती तो आप जाने थोड़े ही देते। तीन दिन तक डाक्टर को बुलवाने को कहती रही। आपने नहीं बुलवाया, तो मैं स्वयं गयी.....डाक्टर ने ये कैपसूल दिये हैं, लीजिये।"

तो-तो.....वह अपनी सहेली के घर नहीं गयी थी? मुझे लगा कि सारे शरीर को नोच डालूं। सिरदर्द बढ़ता जा रहा था।

"इतनी दूर कैसे गयी? रिक्शा या बस के लिए भी पैसे नहीं लिये तुमने।"

फिर चाबियों का गुच्छा खनका।

"पैदल ही गयी। नहीं तो इतनी देर क्यों होती?"

"अरी पगली! फोन करती तो वे स्वयं चले आते न!"

"बीस पैसे बेकार खर्च होते!"

"बचत के लिए तेरे पागलपन की सीमा नहीं।"

"खैर! आपके मित्र आये तो मैं नहीं थी। न जाने क्या कहा होगा।"

"छिः! श्रीहरि के स्वभाव को मैं अच्छी तरह जानता हूं राधा। मैं और वह प्राण हैं। जो मुझे प्यार करते हैं, जि प्यार करता हूं, वे सब उसके प्यारे उसका पत्र देखकर तुमने ही कहा कि इस मित्रता को बनाये रखिये, ऐसा न जाने कितने जन्मों का पुण्य है!"

मेरी स्थिति वर्णनातीत थी। हृद शूल-सा चुभ गया—हाय माधव! मैं पर वही एतबार नहीं रख सका, जैसा तुम मुझ पर.....

"अच्छा। आज मंगलवार है न राधा

"जी हां।"

"फिर रघु क्यों नहीं आया? तुमने किसी दिन आने के लिए तो नहीं कहा उसे?"

"नहीं-नहीं, आया था। साढ़े आठ करीब। मैं जानती हूं कि वह बड़ा स्वा मानी है। पहले से ही इस बात से शरम है कि हर मंगल को यहां खाने आता आपके गांव का ही है। यह सोचकर आपके मित्र भी उसे जानते होंगे, मैंने नौ बजे बुलाया और टिफिन कैरियर खाना भरकर दे दिया कि कमरे में जा खा ले।

कौन रघु? वेंकम्मा का बेटा होग गरीब है। परिचितों के यहां खाकर गुज़ करता होगा। मंगलवार को इनके घरप होगा। मुझे देखकर उसका झिझकना माना सहज है। तो इसीलिए टिफिन कैरियर में.....?

शर्म से मेरा सिर झुक गया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिर छिपाकर सोने की कोशिश
ी नींद नहीं आयी। मन भारी
। अपने प्राणप्रिय मित्र माधव
विवाह को मैंने शंकापूर्ण दृष्टि
से गलत समझा।
नहीं पा रहा था कि सुबह राधा
को अपना मुंह कैसे दिखाऊंगा।
ी ही उनके सामने से हट जाना
फी पी लेने के बाद ही दीदी के
का बहाना बनाकर निकल पड़ा।
न लेकर दीदी के घर पहुंचा।
र ही खड़ी थी, मुझे पास बुला-
र जाते हुए युवा-दंपति की ओर
के धीरे-से बोली—" इन्हें देख,
नकी शादी हुई है। लड़का स्मार्ट
ौर लड़की रेड्डी। कैसा जमाना
अभी तो खूब घूमने-फिरने का
हे हैं। छः महीने बाद देखना,
त्तों की तरह न गुर्राने लगें, तो
।"
से कहती हो ?"
ती हूं, बस !"
यह बताओ दीदी कि तुम्हारा
जी का कभी झगड़ा हुआ है या
नहीं ? अलग-अलग जगह में जन्म लेकर, अलग-अलग तरीके से पले हुए लोग मिल-कर जीवन बिताते समय झगड़े बिना कैसे रहेंगे ? इसमें आश्चर्य की क्या बात है ? एक-दूसरे के साथ कैसे निभा लेते हैं, वह मुख्य है। वह सहनशक्ति और निभा लेने का स्वभाव भी लोगों में होगा न ? क्या प्रेम-विवाह होने मात्र से वे सारे गुण गायब हो जाते हैं ? सचाई तो यह है कि वे अपने पिता या भाई को दोष नहीं देते, सारी सम-स्याओं को स्वयं सुलझाते हैं, उनकी जिम्मे-दारियां भी दूसरों से गुरुतर होती हैं .....क्या कहती हो ?"

"क्यों इस तरह वकालत कर रहा है ? किसी क्रिश्चियन लड़की को पसंद कर लिया है क्या ?" हंसी में काफी कठोरता मिला-कर दीदी ने कहा।

कुछ कहे बिना ही मैं अंदर चला गया।

पता नहीं कि मैं ईसाई लड़की से शादी करूंगा या नहीं, लेकिन इतना सच है कि किसी हरिजन लड़की से शादी कर लेने वालों पर भी उनके पारिवारिक जीवन के बारे में संदेह करके सर्वज्ञ की तरह बर्ताव नहीं करूंगा।

★

र्क के एक जलपान-गृह में कलाकार जेम्स मोंटगोमरी फ्लैग ने अपनी एक हिला के साथ एक अत्यंत रूपसी युवती को बैठे देखा। फ्लैग ने उसे माडल च्छा से वेटर के हाथ एक नोट भेजा, जिसमें लिखा था —" यह सुंदर महिला वेटर उसका तत्काल उत्तर ले आया। उत्तर में उसकी परिचित महिला ने "मैं।"

—कुक्कू टंडन

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छोटे पक्षी का प्रेम

तुषारकांति घोष

पक्षियों के प्रेम की बात करते ही सबसे पहले चकवा-चकई की याद आती है। जो लोग शिकारी हैं, वे जानते हैं कि इस जोड़े में जब किसी एक पर गोली चलायी जाती है, तो दूसरा वहां से भागता नहीं; वह अपने मृत साथी के इर्द-गिर्द मुड़-मुड़कर चक्कर काटता रहता है। मैंने यह दृश्य स्वयं अपनी आंखों से देखा है। यदि चाहता, तो मैं उस उड़ते पक्षी को मार भी सकता था। मगर शायद ऐसी अवस्था में यह प्रवृत्ति किसी भी शिकारी के दिल में नहीं जागती।

कुछ वर्ष पहले मैंने एक छोटे पक्षी के प्रेम का जो अपूर्व परिचय पाया, उसी के विषय में आज बताऊंगा।

युद्ध से पहले की बात है। सस्ते का जमाना था। एक दिन मैं अपने बगीचे में बैठा-बैठा सोचने लगा कि यदि यहां कुछ पक्षी पाल लिये जायें, तो बुरा न होगा। बगीचे में स्थान भी पर्याप्त है और हरियाली भी। यहां पक्षी बहुत कुछ स्वाभाविक होकर रह सकेंगे।

बगीचे में एक बहुत बड़ा अंजीर का पेड़ था और उसके नीचे अच्छी-खासी घास भी थी। मैंने सोचा कि इस पेड़ के चारों ओर जाली का घेरा और नीचे एक अच्छा-सा कुंड बना दिया जाये, तो पक्षी बड़े आराम से रह सकेंगे।

बस, दो दिनों में ही छोटे-छोटे छिद्रों वाली जाले से उस पेड़ का घेराव कर दिया गया और जमीन के समतल एक ढलवां कुंड बना दिया गया, ताकि बहुत छोटे पक्षियों को भी पानी पीने में कोई असुविधा न हो। तत्पश्चात् 'म्युनिसिपल मार्केट' से नाना जाति, नाना प्रकार के पक्षी लाकर उन्हें छोड़ दिये गये।

यह मेरा स्वभाव है कि जब कोई नया शौक शुरू होता है, तो कुछ दिन उसके प्रति बड़ा आग्रह रहता है। अब तो मैं बगीचे में जाकर प्रायः ही उस अंजीर के पेड़ के नीचे बैठकर पक्षियों का कलरव सुनता, उनका खेल-तमाशा देखता।

परंतु एक दिन मैंने अनुभव किया कि मैं इतने पास बैठे रहने से वे कुछ बंधे-बंधे से रहते हैं, खुलकर उछल-कूद और किलोल नहीं कर पाते। इसलिए तब से मैं उनसे कुछ दूर एक पेड़ के नीचे बैठकर उनके क्रिया-कलाप निरखने लगा।

एक दिन तीसरे पहर चार बजे के लगभग मैं बैठा-बैठा पक्षियों को देख रहा था। तभी देखा कि एक छोटा पक्षी जाले के बाहर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

या है। आश्चर्य की कोई बात न
, इतने बड़े पेड़ को घेरने के लिए

त-सी जगह जोड़ लगाने पड़े थे।
जोड़ में से वह निकल आया

ा कि वह छोटा पक्षी बाहर जाले
ा है। मैं कुछ देर अन्यमनस्क की
रहा। थोड़ी ही देर में एक ऐसा
को मिला, जिसने मुझे चकित

ा पक्षी बया था। जाले के भीतर
नीचे की ओर इसका जोड़ा अपने
से जाले को जकड़े बैठा था और
र उससे जाने क्या कह रहा था।
की भावभंगी देखकर मेरे मन में
न रहा कि वे इशारे से एक-दूसरे
रहे हैं।

ोड़ी देर बाद ही बाहर वाला
१०-१२ हाथ दूर एक नीबू के
बैठा और जोर-जोर से चीं-चीं
। वह इस तरह अपने उस साथी
ने के लिए पुकार रहा है, इसमें
न रहा। मगर हाय, उसकी
बंदिनी थी, वह बाहर निकले
नहीं आ रही है, यह देखकर वह
फिर उस जाले पर आकर बैठ
गया और मैंने फिर वही अपूर्व दृश्य देखा दोनों पक्षी जाले को पैरों से जकड़े चोंच से-चोंच मिलाये परस्पर जाने क्या वार्तालाप करने लगे।

थोड़ी देर बाद बाहर वाला पक्षी फिर उड़कर उस नीबू के पेड़ पर जा बैठा और उसी तरह पिक्-पिक् करने लगा। मैं देख रहा था कि जाले के अंदर बंद पक्षी भी पिक्-पिक् के उत्तर में पिक्-पिक् बोल रहा है और बाहर जाने का रास्ता नहीं पा रहा है। नीबू के पेड़ पर बैठा पक्षी फिर जाले पर आ गया। उसी पुराने दृश्य की आवृत्ति।

मैं सोचने लगा कि यह बाहर वाला पक्षी अपने साथी को वह रास्ता क्यों नहीं दिखा देता, जिससे वह स्वयं निकला है। मगर शायद भगवान ने उसे इतनी बुद्धि नहीं दी। तभी तो वह बार-बार नीबू के पेड़ पर उड़कर जा बैठता है और उसे आवाजें देने लगता है। वह बेचारी करे भी क्या; वह तो निकलने का रास्ता ही नहीं जानती। मैंने तन्मय होकर वह दृश्य देखा—एक बार नहीं, दो बार नहीं, अनेक बार।

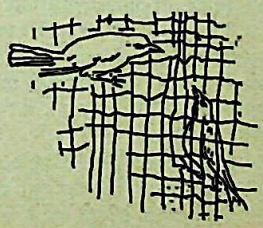

धीरे-धीरे संध्या हो गयी। मैं सोचने लगा, किस तरह दोनों का मिलन कराऊं?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ग्रेसिम

स्टेपल फ़ाइबर

कपास और दूसरे रेशों का पूरक

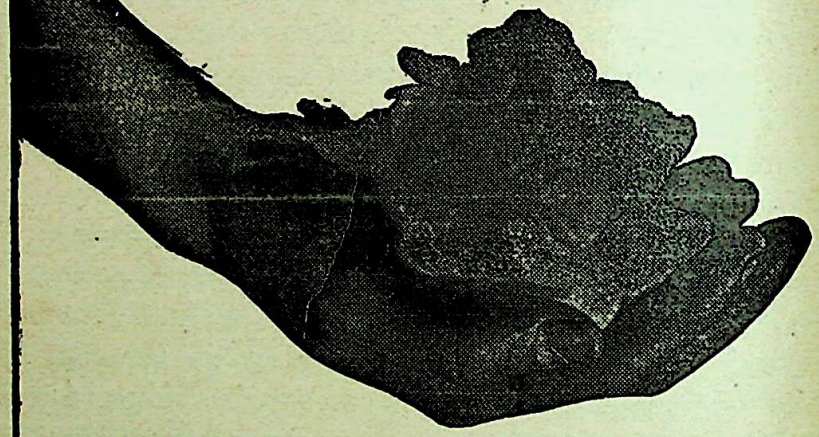

टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में भारतने बड़ी प्रगति की है। इस प्रगति में बहुत महत्वपूर्ण स्थान है ग्वालियर रेयॉन की उस सफलता का जिसके अंतर्गत बिना विदेशी सहायता का सहयोग प्राप्त किये पूरी तरह स्वदेशी माल के द्वारा रेयॉन ग्रेड पल्प का निर्माण किया गया है। यह और भी महत्वपूर्ण इसलिये है कि देश के विभाजन के बाद बहुत सा कपास-उत्पादक क्षेत्र पाकिस्तान में चला गया और देश के सूती वस्त्र उद्योग को बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ा। इसमें कोई शक नहीं कि पल्प से स्टेपल फ़ाइबर का यह निर्माण सूती वस्त्र-उद्योग के लिये वरदान बन गया है।

ग्रेसिम स्टेपल फ़ाइबर कई बातों में बिल्कुल बेजोड़ है। कपास, ऊन, रेशम, जूट आदि प्राकृतिक और सिंथेटिक रेशों के स्थान पर इसका उपयोग किया जा सकता है। दूसरे रेशों के साथ इसे मिश्रित करने पर जो कपड़ा तैयार होता है वह और भी ज्यादा ठंडा, मुलायम व आरामदेह होता है और लागत भी कम आती है।

निस्सन्देह ग्वालियर रेयॉन आज राष्ट्र की अर्थ व्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान कर रहा है। इसकी वजह से आज तेरहों सूती मिलों में उत्पादन चालू है, हजारों लोगों को काम मिल रहा है, लाखों लोगों को वस्त्र मिल रहे हैं, करोड़ों रुपये की विदेशी मुद्रा की बचत हो रही है और राष्ट्रीय कोष में धन-राशि का योगदान लगातार बढ़ता जा रहा है। ये गिनाये जा सकने वाले सिर्फ़ थोड़े से लाभ हैं।

रेयॉन ग्रेड पल्प और स्टेपल फ़ाइबर के अलावा ग्वालियर रेयॉन ऊँची क्वालिटी के कपड़े का निर्माण भी करता है। इसके अलावा अपने काम में आनेवाली मशीनों और साज-सामग्री को भी खुद ही बनाता है।

देश के लोगों की बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये राष्ट्र को बहुत सी चीजों की जरूरत है। ये जरूरतें निरंतर बढ़ती जा रही हैं। इस संबंध में अपनी जिम्मेदारी को अच्छी तरह समझकर ग्वालियर रेयॉन ने उत्पादन बढ़ाने की योजना अभी से तैयार कर ली है। कंपनी इस बात के लिये निरंतर प्रयत्नशील है कि वह देश की सेवा करे और अपनी पूरी क्षमता के साथ करे।

दि ग्वालियर रेयॉन सिल्क मैन्युफैक्चरिंग (वीविंग) कंपनी लिमिटेड पिंडलामान, नागपुर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तो मन में आया कि भीतर वाले छोड़ दूं। मगर यह कैसे संभव था ? पर बहुत ऊंची डाली पर बैठा था। सहाय भाव से जिस बात की इच्छा था, शायद भगवान भी वही चाहते त् देखा कि बाहर वाला पक्षी फिर ाले पर आया, मगर पहले की तरह बू के पेड़ पर नहीं गया। मैं देखने इस बार वह क्या करता है। के उस घुपघुपे में मैं ठीक समझ न कैसे क्या हुआ। बहरहाल वह ला पक्षी जाले के भीतर घुस गया। जोड़ में से होकर हीं अंदर पहुंचा मैं मुझे कोई संदेह नहीं। मैं जाले दौड़कर गया और उस दृश्य को पने आंसू न रोक सका। देखा कि दोनों पक्षी एक छोटी-सी डाल पर सटकर बैठे हैं और भरपूर आनंद में चहक रहे हैं।

उस छोटे पक्षी के प्रेम पर मुग्ध होकर मैं सोचने लगा, उसने कैद से मुक्ति पा ली थी और प्राणपण से अपनी संगिनी की मुक्ति की कामना की थी, मगर जब उसने देखा कि संगिनी को बाहर नहीं निकाल पायेगा, तो स्वयं पुनः बंदी बन गया। उसने अपनी मुक्ति और संगिनी दोनों बातों में से अपनी संगिनी को ही चुना।

दूसरे दिन मैंने उक्त दोनों पक्षियों को छोड़ देने की जी-जान से चेष्टा की; मगर वे किसी तरह पकड़ में न आये। हारकर मुझे उस अंजीर-वृक्ष के पूरे-के-पूरे जालघेरे को ही खोलकर सारे पक्षियों को मुक्ति देनी पड़ी। अनुवाद : ब्रजगोपालदास अग्रवाल

★

न लीजिये, आप जासूस हैं और आपके सामने कुछ हिप्पी लोग हैं। आप समझ हे हैं कि उनमें कौन पुरुष है, कौन स्त्री, तो सीधे जाकर पूछने की जरूरत नहीं, आजमाइये।

ली ट्रिक : कोई चीज उनकी तरफ उछालकर लपकने के लिए कहिये। कुर्सी हुआ व्यक्ति यदि पुरुष है, तो तुरंत अपनी जांघें सटा लेगा, ताकि उछाली हुई न गिर जाये। स्त्री हुई, तो वह अपनी जांघों का फासला, तुरंत बढ़ा लेगी, की स्कर्ट या साड़ी फेंकी हुई चीज को रोक ले।

री ट्रिक : जलाने के लिए एक माचिस दीजिये। पुरुष होगा, तो तीली को रह पकड़ेगा और यथासंभव उसके मसाले को माचिस पर अपनी दिशा में रग- ी होगी, तो वह तीली को एकदम सिरे के पास पकड़ेगी और उसके मसाले- को दूसरी दिशा में रगड़कर जलायेगी।

सरी ट्रिक : वे जहां बैठे हों, कोई चूहा या सांप छोड़ दीजिये। स्त्रियां तुरंत कुर्सी पर चढ़ जायेंगी और पतलून पहने हुए होने पर भी अपनी साड़ी का स्कर्ट ने के लिए हाथ बढ़ायेंगी। पुरुष उछलेगा तो जरूर लेकिन फर्श पर ही, और भींचकर पैरों को पटकेगा।

—अश्विनी कुमार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

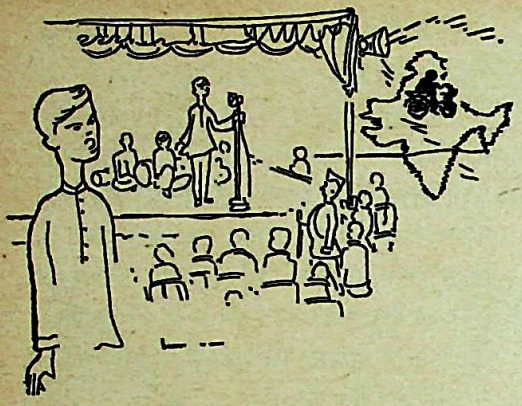

अभिनंदन का अनुभव

● अभिनंदन धीया ●

अभी उस दिन लाला बैकुंठनाथ के तीस वर्षीय निखट्टू बेटे रामदीन के नागरिक अभिनंदन का हाल जब मैंने अखबार में पढ़ा, तो तन-बदन में आग लग गयी। जिसे मैट्रिक पास करने में पांच बरस लगे थे, वह नागरिक सम्मान के योग्य हो गया ?

एक बार मैंने उससे पूछा था—"क्यों रामदीन भाई, बार-बार फेल होने पर तुम्हें बुरा नहीं लगता ?"

"अरे, वह घुड़सवार ही क्या, जो घोड़े पर से तीन-चार बार गिरा न हो। पक्की इमारत के लिए नींव पक्की चाहिये।" रामदीन का सटीक उत्तर मुझे निरुत्तर कर गया था। उसके चेहरे पर अद्‌भुत चमक थी। फेल होने वाले वीरों के चेहरों की चमक अद्‌भुत ही हुआ करती है। पास होने वाले गरीब लड़कों का क्लांत मुख क्या फेल होने वाले मुख-कमल की समता कर सकता है ?

मैं बहुत देर तक अखबार देखता रहा था—शायद कोई दूसरा रामदीन हो। पर लाला बैकुंठनाथ का लड़का तो वही निखट्टू रामदीन है। फिर भी मैं वस्तुस्थिति का पता लगाने लालाजी की कोठी पर गया। मैं उस घर के लिए नया नहीं था, इसलिए रामदीन के कमरे तक जाने में मुझे कोई कठिनाई नहीं हुई।

रामदीन के आस-पास तीन चमचे बैठे थे और रामदीन मंद-मंद मुस्करा रहा था। मुझे देखकर उसने व्यंग्य किया—"कहो जीनियस, क्या तीर मार रहे हो आजकल!" व्यंग्य करते हुए उसे शायद असीम आनंद की उपलब्धि हो रही थी। उसके चेहरे पर मंद हास्य अभी तक सुशोभित था।

मैं चकित होकर सोचने लगा, क्या नागरिकों द्वारा सम्मानित किये जाने का व्यक्तियों की यह आधुनिक शैली है? मगर तभी एक और कौतुक मैंने देखा—रामदीन की मुस्कराहट जैसे-जैसे थम रही थी, वैसे उसकी आंखें भी खुलती जा रही थीं। मुस्कराहट थमने व आंखें खुलने की क्रमबद्धता देखकर मैं अवाक् रह गया।

आखिर उसी ने बात शुरू की—"कहो कैसे आना हुआ ? सेवा योग्य कोई कार्य हो, तो निस्संकोच कहो, आखिर मेरे पुराने दोस्त हो !" मैंने देखा, दोस्त शब्द सुनने के बाद पास बैठे तीनों चमचे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आश्चर्य की दृष्टि से देख रहे हैं, रहे हों– "अरे, इतने बुद्धिमान ा ऐसा औघड़ दोस्त !"

मचों की उपेक्षा करते हुए सीधे से कहा –"भई, अखबारों में गरिक सम्मान के चरचे पढ़े, तो आया। स्कूल का वह.....।"

रामदीन चतुर निकला। चमचों स्कूली गाथा वह नहीं सुनना । उसने 'स्कूल का वह' के तुरंत काट दी–"स्कूल का वह शिला- हीं भई, नहीं, मुझे समय नहीं न्यास के चक्कर में नहीं पड़ता। लसिटी में मेरा मन नहीं रमता।"

उसकी बात सुनकर प्रशंसा में नें पेंडुलम की तरह हिलाने लगे। ा गया और रामदीन मेरी क्रोध- ताड़ गया, इसलिए चमचों को तरकीब से विदा कर दिया।

के जाने के बाद रामदीन के चेहरे मूर्खता पुनः उभर आयी और वह घिघियाई दृष्टि से देखने लगा। में उससे कहा–"यह सब क्या तुम्हारे जैसे निखट्टू का नाग- ंदन ?"

चा कि इस व्यंग्य से शायद वह जायेगा, लेकिन मूर्खता का स्थान ने ले लिया था। वह लगभग "हां, मेरा नागरिक अभिनंदन। वही ढाई सौ रुपट्टी माहवार के मुझे मूर्ख समझते हो तो क्या, दुनिया तो मुझे बुद्धिमान समझती है।"

मैं आश्चर्यचकित-सा उसके संभाषण को हजम करने का प्रयत्न कर रहा था। मुझे रुंआसा जान वह कुछ नरम पड़ गया। बोला–"देखो सुरेश, तुम बुद्धिमान हो, पर भोले हो। कुछ व्यावहारिक होने की कोशिश करो। अगर तुममें थोड़ी व्यावहारिकता आ जाये, तो तुम्हारा भी अभिनंदन हो सकता है। बोलो, अगर तुम्हें कराना हो, तो मेरे लिए यह चुटकियों का काम है। सोच लो, मुझे दो-चार दिनों बाद जवाब दे देना।"

यह समय मेरे विचार-मंथन के लिए पर्याप्त था। उस रात मैं सो नहीं सका। जब उस मूर्ख रामदीन का अभिनंदन हो सकता है, तो मेरा क्यों नहीं ? मैं आइने के सामने गया। चेहरे पर मैं स्वयं ही रीझ गया। मेरा व्यक्तित्व मुझे पहली बार बड़ा प्रभावशाली लगा। अगर मेरा नागरिक अभिनंदन हो, तो लोग भी कहेंगे कि कितने योग्य आदमी का सम्मान हो रहा है।

मैंने सोचा, आखिर कौन-सा गुण मुझमें नहीं है। शक्ल-सूरत से अच्छा हूं–इसी डर से तो बीवी घर-बाहर साधारणतया निकलने नहीं देती, और निकलने भी देती है तो कई प्रश्नों के संतोषजनक उत्तरों के बाद ही। पढ़ाई में सदा अव्वल रहा, खेलों में स्कूल व कालेज का नाम उजागर किया और अब लेखक हूं। प्रख्यात नहीं हूं, तो कुख्यात भी नहीं। दस रचनाएं भेजने पर एक तो प्रकाशित हो ही जाती है।

इतने सारे गुण शहर में किसी एक व्यक्ति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में क्या सहज ही मिल सकते हैं? रामदीन ठीक कहता था कि मेरा भी नागरिक अभिनंदन हो सकता है। क्यों नहीं हो सकता? आखिर रामदीन से मैं हर पहलू में उत्तम हूं। अगर एक बार मेरा अभिनंदन हो जाये, आफिस में रुतबा जमेगा, पड़ोसी जलेंगे, मित्र चमचागीरी करेंगे और पत्नी पहली बार मुझे कोई काम का आदमी समझेगी।

चार दिनों बाद मैं रामदीन के पास पहुंच गया। इस बार वह मुझे देखकर जरूरत से ज्यादा खुश था। बोला—"कहो सुरेश, क्या सोचा?"

मैंने कहा—"अब मैं क्या सोचूं, तुम तो मेरा सदा भला ही चाहते हो। लेकिन एक बात तो बताओ, अभिनंदन होगा कैसे?"

रामदीन बोला—"तुम मत घबराओ, अभिनंदन मेरी स्वयं की अध्यक्षता में होगा। तुम्हें सम्मान-स्वरूप एक स्कूटर भेंट किया जायेगा। शहर-भर के तमाम प्रतिष्ठित नागरिक उस सभा में मौजूद होंगे। प्रचार का काम मुझ पर छोड़ो। शहर भर में मेरी अध्यक्षता में होने वाली सभा की घोषणा कर दी जायेगी। मगर हां, प्रचार में तुम्हारे अभिनंदन की बात नहीं कही जायेगी। जानते हो क्यों? हम 'सरप्राइज' देंगे। इसमें लोगों को भी मजा आयेगा और तुम्हें भी। अखबारों में भी तुम्हारे चित्रों सहित इस 'सरप्राइज' सम्मान की चर्चा होगी।" मैंने उत्सुक होकर पूछा—"मगर स्कूटर के लिए पैसा कहां से आयेगा?"

"ओ-हो!" वह बोला—"तुम पूरे बनिये निकले। अरे, वही बात तो मैं कहने जा रहा हूं। देखो, पैसा ऐसे अभिनंदनों के लिए कोई देता नहीं। तुम्हारा नया स्कूटर कल आने वाला है न। तुम ऐसा करो, वह स्कूटर मेरे नाम कर दो, मगर किसी को कानों-कान खबर न हो। बस, वही स्कूटर फिर मैं नागरिक सम्मान में तुम्हें भेंट कर दूंगा।"

मैं उसकी बुद्धि का कायल हो गया। नागरिक अभिनंदन की तारीख निश्चित कर दी गयी। मैंने अपना स्कूटर रामदीन के नाम कर दिया। और आखिर वह दिन भी आ गया, जिस दिन अभिनंदन होने वाला था।

मैंने गांधी-मैदान पर उपस्थित विशाल जनसमूह को देखा, जो मेरे अभिनंदन के लिए ही उपस्थित हुआ था। शेरवानी और चुस्त पाजामा पहने मैं स्वयं को किसी युवराज से कम नहीं समझ रहा था। लेकिन रामदीन अब तक नहीं आया था। आखिर एक व्यक्ति उठा और माइक के पास आया। मैंने देखा, यह तो उन तीन चमचों में से ही एक है, जो उस दिन रामदीन के पास बैठे थे।

चमचे ने मुझे एक बार व्यंग्यपूर्ण दृष्टि से देखा और माइक की ओर मुखातिब होकर बोला—"महानुभावो, हमें खेद है कि आज की कार्यवाही के अध्यक्ष श्री रामदीन आज अनुपस्थित हैं। गांधीजी के विचारों का प्रसार करने स्कूटर पर वे कल ही भारत भ्रमण के लिये गये हैं। उन्हें इस कार्य के लिए स्कूटर श्री सुरेश 'चिरंजीव' ने भेंट किया है। हम इसके लिए श्री सुरेश के आभारी हैं।"

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक और जहाजपति रवि टिक्कू

सुभाष सक्सेना

क्कू और ग्लोबटिक टैंकर्स लिमि-
.... अगर आप अखबार को अथ
तक पढ़ने के आदी हैं, तो संभव है,
ने पहले आपने ये दोनों नाम एक
माचार में पढ़े हों।
ार यह था कि भारत में जनमे
ति रवि टिक्कू ने अपनी कंपनी
क टैंकर्स लिमिटेड, लंदन के लिए
७७ हजार टन भारी तेलवाहक
) का आर्डर जापान की जहाज-
कंपनी इशिकावा जिमा को दिया है।
ख ७७ हजार टन
ाज के सबसे बड़े
१ लाख ५१ हजार
ा भारी टैंकर!
है यह व्यक्ति ?
रवि टिक्कू अब
नागरिक हैं, पर
वे भारतीय हैं। ४
९३२ को वे एक
ब्राह्मण परिवार
हुए। पिता मंडी
में वित्तमंत्री थे।
ी और शिमला में

हुई। फिर भारतीय जलसेना में अफसर बन गये। हिमालय से सीधे हिन्द महासागर।

सात साल सेवा करके जलसेना से छुट्टी ली और जहाजपति बनने की ठानी। एक छोटा-सा जलयान खरीदने के इरादे से हैम्बर्ग गये। मगर विफल रहे और जहाजों के लिए पैसा जुटाने के मामलों में सलाह देने का धंधा शुरू किया। सन १९६४ में लंदन में बस गये और अब दो साल से ब्रिटेन के नागरिक हैं और जहाजपति भी हैं।

सन १९६८ में उन्होंने नार्वे में अपना पहला जहाज खरीदा—५५ हजार टन का सेकेंडहैंड जहाज। अगले साल वहीं से एक और जहाज खरीदा—६० हजार टन और सेकेंड-हैंड। फिर ८० हजार टन का एक और जहाज सेकेंड-हैंड में ही जापान में खरीदा तीनों जहाज बहामा का झंडा फहराते हैं और फारस की खाड़ी से जापान और वेनिजुएला से पोर्टलैंड (अमरीका) तेल ले जाते

बुद्धि के बल पर कुबेरों से होड़

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैं। कुल १,९५,००० टन के तीन सेकेंडहैंड जहाज तो विश्व के जहाज-व्यवसाय में छुटभैया कहलाने के लिए भी पर्याप्त नहीं हैं। फिर रवि टिक्कू ने विश्व के सबसे बड़े टैंकर का आर्डर किस बूते पर दिया? कहां से जुटायी है उन्होंने पूंजी? क्या किसी बैंक ने कर्ज दिया है?

रवि टिक्कू से पूछिये, तो कहते हैं—"साहब, आप तो पंद्रह साल पहले की बात कर रहे हैं, जब १५ करोड़ रुपये में टैंकर बन जाते थे। तब कोई भी बड़े पैमाने पर तेल-सप्लाई का आर्डर लेकर और उसे बैंक को दिखाकर जहाज बनवाने के लिए कर्ज प्राप्त कर सकता था। मगर मेरा टैंकर तो ३० करोड़ ७५ लाख रुपये का होगा। भला इतना कर्ज कौन-सा बैंक देगा? पैसे का प्रबंध मैंने अपनी हिसाबी बुद्धि के बलबूते पर किया है।"

वस्तुतः रवि टिक्कू ने ४ लाख ७७ हजार टन के दो टैंकरों के निर्माण का आर्डर दिया है। इनके टैंकरों के नाम होंगे 'गोल्डटिक टोक्यो' और 'गोल्डटिक लंदन'। इनका निर्माण जापानी कंपनी इशिकावा जिमा हेवी इंडस्ट्रीज, हिरोशिमा में कुरे जहाज-कारखाने में करवायेगी। पहला टैंकर फरवरी १९७३ में और दूसरा मार्च १९७४ में टिक्कू को मिल जायेगा।

ये जहाज ब्रिटेन में रजिस्टर कराये जायेंगे। इसके सब नाविक और अफसर ब्रिटेनवासी होंगे और उन्हें विशेष प्रशिक्षण दिलवाया जायेगा। ये जापान को तेल पहुंचाया करेंगे। उनके लिए जापान में कोगोशिमा खाड़ी में एक विशेष बंदरगाह बनाया जायेगा। फिलहाल इतने बड़े टैंकर के आने लायक बंदरगाह न यूरोप में है, न जापान में।

रवि टिक्कू तो १० लाख टन के टैंकर की भी बात सोच रहे हैं; यह भी जापान के कारखाने में बनेगा। इसकी लंबाई १,६० फुट, चौड़ाई ३२५ फुट और ड्राफ्ट १३ फुट होगी। फिलहाल दुनिया का सबसे बड़ा जहाज है—३ लाख २६ हजार टन का 'यूनिवर्स आयरलैंड'। उसका मालिक है ७० वर्षीय अमरीकी धनपति डान लुडविग जिसने जूते पालिश करके कमाये हुए ७० डालर से एक किश्ती खरीदकर नौ वर्ष की उम्र में अपना धंधा शुरू किया था।

ओनासिस ने १९३० में अपना पहला जहाज खरीदा। अब वह २ लाख ६० हजार टन का एक जहाज बनवा रहा है। निर्वा कोंस का सबसे बड़ा जहाज इससे ३० हजार टन हल्का है। बासिल थियोडोराकी प्युलोस ने २।। लाख टन के एक जहाज का आर्डर दिया है। नार्वे के जहाजपति हिल्मार रेवस्टन के पास २-२ लाख टन के तीन जहाज हैं और २ लाख ८३ हजार टन के कुछ जहाज वह बनवा रहा है।

अभी जिस विशालतम टैंकर का निर्माण चल रहा है, वह है ३ लाख ७२ हजार टन का निसेकीमारू। टोक्यो टैंकर कंपनी, निप्पोन आइल और कालटेक्स इसके मालिक हैं।

निश्चय ही विश्व के बड़े जहाजपति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैं रवि टिक्कू के व्यावसायिक साहस
क्कू का कहना है –"मुझे ऐसे काम
सद हैं, जो अद्वितीय और चुनौती-
। जिस काम को लोग कहते हों, 'यह
है, इसे कोई नहीं कर सकता', वही
ा चाहता हूं।"
र टिक्कू केवल साहसी नहीं, चतुर
रिश्रमी भी हैं। सुबह आठ बजे से
रात के आठ बजे और कभी-कभी
तक वे लंदन के अपने दफ्तर में
रते हैं। घर पर भी काम निवटाना
है और शय्या की शरण लेने तक
२ बज जाते हैं। सवेरे ६ बजे
ाग।
चतुराई का प्रमाण ? वे बताते हैं,
न जहाजपति को कर्ज देने से ३०
बैंकों ने इन्कार कर दिया था; मगर उन्होंने उसके लिए कर्ज का इंतजाम करा दिया।

व्यापारिक कार्यों से टिक्कू को बहुत घूमना पड़ता है। जब लंदन रहते हैं, तब भी व्यस्त रहते हैं। विद्यार्थी अवस्था में वे अपने विश्वविद्यालय की ओर से क्रिकेट खेलते थे। मगर अब गोल्फ के लिए कभी-कभी बड़ी मुश्किल से समय निकाल पाते हैं। स्कीइंग भी मंडी में सीखा था, मगर अब अभ्यास छूट गया है।

ओनासिस और नियार्कोस जैसे जहाज व्यवसाय के कुबेरों के कान काटने वाले टिक्कू लंदन में एक छोटे मकान में रहते हैं। घर छोटा है, मगर सुरुचिपूर्वक सजाया हुआ औ अत्यंत सुव्यवस्थित। उनकी पत्नी बंबई की हैं। उनके दो बच्चे हैं।

ानदार होटल में शानदार कपड़ों में बैठे हुए आदमी ने शानदार कपड़ों वाले अपने पड़ोसी से पूछा–"क्या आप यह होटल खरीदना चाहते हैं ?"

जी नहीं।"

तो क्या आप कृपया अपना नाम-पता बतायेंगे, ताकि मैं अपने 'एक्सपेन्स एकाउंट' सकूं– व्यापारिक बातचीत की।"

* * *

ख्यात अमरीकी वकील क्लैरेन्स डैरो को किसी महिला-संघटन ने भाषण के लिए या। सभा के अंत में संस्था की अध्यक्ष महाशया ने बड़ी विनम्रता से डैरो से कहा– जानती कि हम अपनी कृतज्ञता किस रूप में जतायें।" उत्तर मिला–"देवीजी, ानव-जाति ने सिक्के का आविष्कार किया है, कृतज्ञता व्यक्त करने का बड़ा ही साय उपलब्ध है।"

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हिन्दी कहानी :

नायक-अनायक

स्वयंप्रकाश

वे सब लोग काफी दूर निकल गये हैं। मैं कैंटीन के पास वाले नीम की छाया में वैसा ही खड़ा हूं, जैसा उनके साथ चलते-चलते अचानक खड़ा हो गया। वे चूंकि बहुत थे और बातों में बहुत उलझे हुए थे और एक बहुत बड़े उत्साह से भरे हुए थे, इसलिए मेरा इस तरह अचानक रुक जाना और कट जाना देख नहीं पाये थे, वरना क्या बुला नहीं लेते ? हाथ पकड़कर, खींचकर, जिद करके, अधिकार जताकर अपने साथ नहीं ले चलते ? मैं, जिसे परिस्थितियों ने उन्हीं में से एक और उन सबसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण बना दिया है।

एक पल को लगता है, वे स्वार्थी हैं। सारी दुनिया स्वार्थी है। सिर्फ मेरा उपयोग करना चाहते हैं। मेरा नाजायज फायदा उठाना चाहते हैं। लेकिन ऐसा लगते ही नीरा की प्यार-भरी मासूम आंखें याद आ जाती हैं। शिरीन भाई की दोस्ती और वसुदी का स्नेह याद आ जाता है।

लगता है, स्वार्थी नहीं हैं वे लोग। सिर्फ भूल गये हैं कि मैं उनमें नहीं हूं। ..... पीछे छूट गया हूं—बड़ी सफाई से कट गया हूं। लेकिन प्रतीक्षा तो मुझे है ही इस बात पर उनका ध्यान जाने की। आशा तो मुझे है ही कि अभी—बिलकुल अभी आस-पास मुझे नहीं पाकर वे घबरा जायेंगे.....और फिर बिलकुल खुले दिल से मुझे अपने साथ कर लेंगे।

सच कहा जाये, तो मैं चाह रहा हूं कि अभी नीरा या शिरीन भाई या कल्पना या वसुदी या कोई और आयेगा और मेरा हाथ पकड़कर खींचता हुआ कहेगा.....आइये ना परेशजी .....भूख से बुरा हाल हो रहा है।

सिर उठाकर उधर ही देखता हूं। अपर्णा और नरेन की छेड़छाड़, जेपी की चाल का एक खास अल्हड़पन..... और नीरा की पीठ पर कुछ ज्यादा ही लंबाई में लटकता टेसू के फूलों वाले रंग का दुपट्टा साफ नजर आ रहा है। आवाज नहीं आ रही लेकिन महसूस किया जा सकता है कि उन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

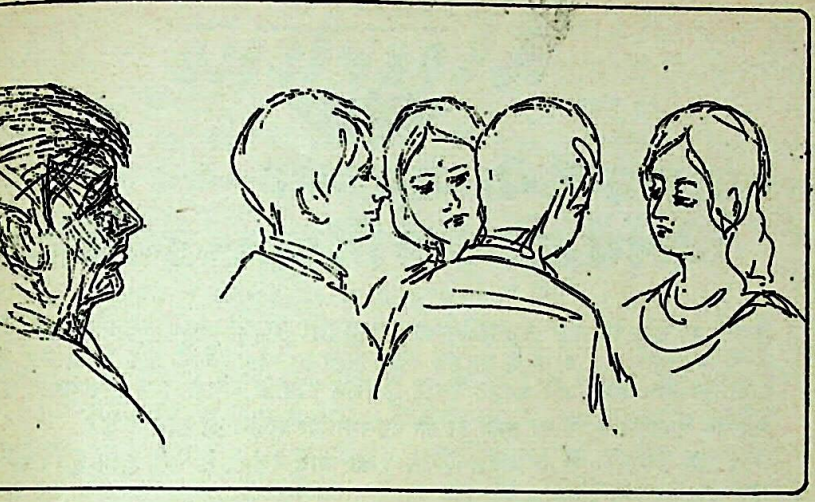

चित्र : शेणै

में रह-रहकर ठहाके लग रहे हैं और
ार दिलचस्प बातें हो रही हैं। होटल
रीब तक पहुंच चुके हैं ये लोग और
ों की चटक धूप में काले-भूरे पत्थरों
वार उन्हें और भी ज्यादा साफ बैक-
दे रही है। वे तेजी से मुझसे दूर होते
ह हैं और मुझे अपनी आशाओं पर
फिरता नजर आ रहा है। शायद अब
सी को याद आ जाये मेरी .....।
..... अब किसी को मेरी याद नहीं
ी। कोई मुझे बुलाने नहीं आयेगा।
लकुल पास से तीन-चार लड़कियां
ी हुई गुजर गयी हैं। मैं चौंक गया
हीं..... मैं इनमें से किसी को नहीं
ा। ये भी मुझे नहीं जानतीं। कल .....
रसों, इन सबकी जबान पर मेरा नाम
। तब इन्हीं में से एक मुझे दिखाकर
दूसरी से कहेगी—"देख-देख..... यही है
वो!" और तीसरी कहेगी—"हाय! कित्ता
स्मार्ट लग रहा है!" और चौथी मेरे किसी
डायलाग को चटाखे लेकर दोहरायेगी और
सब खिलखिलाकर हंस पड़ेंगी। शहर के
सारे हरसिंगार एक साथ खिल उठेंगे।

लेकिन अभी? अभी इन सबके बीच
बिलकुल अकेला हूं और जो मुझे जानते हैं,
वे मुझे इस धूप में अकेला छोड़कर खाना
खाने होटल में चले गये हैं।

पीछे खुदी जेनिया की क्यारी में थूक-
कर कंधे झुकाये कैंटीन की एक खाली मेज
पर आ बैठता हूं और तय करता हूं कि आज
खाना खाऊंगा ही नहीं। कोई पूछेगा तो
कह दूंगा घर खा आया। अगर वे कहेंगे
इतनी धूप में घर क्यों गये, हमारे साथ खा
लेते तो कोई हर्ज था? तो कह दूंगा, क्या

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Clearlone

गृहलक्ष्मी के सहायक—
क्लियरटोन के विद्युत-उपकरण

बिजली पर काम देने वाली क्लियरटोन की मज़बूत और टिकाऊ वस्तुएँ आधुनिक गृहणी की सच्ची मददगार हैं। बरसों के अनुभव और तकनीकी जानकारी से बने क्लियरटोन के सामान न केवल समय और मेहनत बचाते हैं बल्कि आप के पैसों का पूरा मूल्य चुकाते हैं। इसीलिए आज देशभर में हर सुखी घर की पहचान क्लियरटोन का सामान है।

क्लियरटोन के १,५०० से भी अधिक विक्रेताओं का जाल देशभर में फैला हुआ है। इसलिए बिक्री बाद सेवा भी बेमिसाल है।

नेशनल रेडियो एण्ड इलेक्ट्रॉनिक्स कम्पनी लिमिटेड (जनरल रेडियो एण्ड एप्लाइंसेस डिवीजन) बम्बई - दिल्ली - कलकत्ता - मद्रास

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यारो, मम्मी ने आज स्पेशल खीर।...
..... खाट से चिपकी मां ..... क्या
ने खाना खा लिया होगा ? चाची बना
होगी ? या मां यही सोच रही होगी
श आकर कुछ खिचड़ी-विचड़ी चढ़ा-
..... दिल भर-भर आ रहा है।.....
ब सबसे पहले शिरीन भाई ने कहा
इतने बड़े पैमाने पर नाटक किया जा
कि पोस्टर छपेंगे..... टिकिट लगेंगे
खबारों में विज्ञापन और रिपोर्टें
..... यहां इसकी सफलता के बाद
ल्ली में खेला जायेगा ..... वगैरह
तो मन एक अकारण पुलक से भर
या। शुरू से यही सब करता रहा हूं।
ंक गया था यह सुनकर कि शिरीन
ीरो का रोल मुझे देना चाहते हैं। मैंने
ा—"मैं क्लब का सदस्य नहीं हूं .....
तराज करेंगे।" पर उन्होंने एक नहीं
ी और मैं हीरो बनने के लिए तैयार
ा था। मंच ..... जिसे मैं जान से भी
प्यार करता हूं ..... छः लंबे वर्षों
द बाहें फैलाकर मुझे स्वीकार कर
ा।

रात जागने की रात थी। लगा था,
गोपी हूं और शरद ऋतु की चांदनी
जमुना के उस पार से मेरे कृष्ण की
मुझे डाक रही है। ये समर्पण के
।.....

किन रासलीला के बाद कृष्ण मथुरा
यंगे और इस रात की स्मृतियां मुझे
फिर वही पहले वाली स्थिति को सह
पाने योग्य भी नहीं छोड़ेंगी।..... नहीं
कृष्ण, अब तो यह उदासी और एकरसता
ही भली है। तुम निर्मोह हो।

दूसरी सुबह शिरीन भाई के यहां गया,
तो वे कुछ लिख रहे थे। मैंने हिम्मत करके
कहा था—"आप नाराज तो होंगे, पर मैं यह
काम नहीं कर सकूंगा।"

"क्यों ?" एक तेज-तर्रार 'क्यों ?'

"मां बीमार है..... जानते हैं, अकेला
हूं.....और फिर काम भी कुछ-न-कुछ करना
ही पड़ता है..... समस्या समय की है।"

दो-तीन पल की दमघोंटू चुप्पी।

"समस्या समय की नहीं है।" वे बोले
थे। दांत पीसकर।

"क्या मतलब ?" चुप रहकर पूछा गया
मेरा प्रश्न।

"समस्या यह है कि तुम अपने आपको
हीन, गिरा हुआ, कमजोर, कमनसीब सम-
झते हो; क्योंकि तुम डरपोक हो। बुज-
दिल हो। बताओ किस बात में तुम दूसरों
से कम हो ? मैंने तो तुम्हें इसलिए चुना था
कि यह रोल तुम ही कर सकते हो।"

क्या जवाब हो सकता है इसका ? शिरीन
भाई की नजर से मुझे कितने लोग देखते हैं ?
देश में टाइपिस्ट का काम करने का मतलब
है ओछा होना। समाज में चलती हैं बड़ी-
बड़ी डिग्रियां और पदवियां। रईसी और
शान-शौकत, जिसके आधार पर लोग क्लब
में आते हैं। और मेरे पास यह सब नहीं है,
तो इसका मतलब यह है कि मुझमें कोई
प्रतिभा, कोई क्षमता, कोई संभावना नहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है। कब बदलेगा यह नजरिया?

"लेकिन शिरीन भाई ....."

"हां बोलो।..... लेकिन क्या?"

मेरी कांपती शंकाएं, उनके तनकर खड़े हुए समाधान। उनके व्यक्तित्व का प्रबल प्रभाव। मेरे मन में घुसकर छिपी महत्त्वाकांक्षाएं। मैं फिर हीरो बनने के लिए तैयार हो गया।

और जैसा कि लग ही रहा था, क्लब के दूसरे लोगों ने एतराज करना शुरू किया।

कौन है, क्या करता है? बाहर का आदमी कैसे आ सकता है? क्या अपने क्लब में कोई हीरो बनने लायक नहीं?

शिरीन भाई हार गये। बहुत ज्यादा शर्मिंदा और दुःखी होते हुए उन्होंने मुझे सूचना दी थी—"परेश....तुम हम लोगों के साथ काम नहीं कर सकोगे।"

उनकी आशंका के विपरीत मैंने कोई खास प्रतिक्रिया नहीं दी थी। यह भी नहीं पूछा था कि क्यों। और तब दो घंटे तक लगातार शिरीन भाई ने क्लब के लोगों को, और समाज और देश को गालियां दी थीं—हिन्दी, अंग्रेजी और बंगला में। लेकिन शिरीन भाई के गाली बकने से क्या होता है? कुछ होता है क्या?

उस रात मैं बहुत देर रोया था।

मैं क्लब का सदस्य नहीं बन सका—यह मेरा अपराध है। मेरे बाबूजी एक्सिडेंट में मर गये थे—यह भी मेरा अपराध है। कमाने वाला घर में अकेला मैं हूं—यह भी मेरा ही अपराध है। और अब मैं मंच के लिए अछूत हो गया हूं—यह मेरी सजा है। मेरी सारी इच्छाएं-आकांक्षाएं पैसे के अभाव में जहरीले दंश बनकर मेरा गोश्त नोचती रहें—यही मेरी सजा है।

आज तक जो स्वप्न-शिशु बड़े प्यार से पाले थे, उन्हें इस बीहड़ बीच रास्ते में गीदड़ों और सियारों के लिए छोड़ देना है—बिलखते हुए—और कल से वही अपमान और तिरस्कार की जिंदगी जीने के लिए अभिशप्त होना है। जालानी वकील के आफिस में टाइप राइटर की निरंतर खटखट। पेटीशन, अपील, सम्मन, जजमेंट, कुर्की।.....

और देखिये तमाशा कि फिर जंग हुई, जिसमें शिरीन भाई जीते और मैं हीरो बना फिर।

यूनिट के सदस्यों से मेरा परिचय कराया गया था .....

"ये शशि दा हैं, सामंत का रोल करेंगे। ये अपर्णा हैं, सितार बजायेंगी। यह जेपी है—मंच की सारी प्रकाश व्यवस्था का जिम्मेदार। ये वसुदी हैं, बैकग्राउंड इफेक्ट्स। ये जैकब प्रापमेन। कल्पनाजी.....नितीन .....जयसिंह ..... माधव.....शेख.....और ये हैं तुम्हारी हीरोइन—नीरा।"

"ऐई। ये क्या मजाक है!" नीरा मीठा-सा तुनककर शिरीन भाई से कहती है। और फिर मुझसे मुखातिब होकर—"आपकी नहीं..... ड्रामे की।"

किसी स्वप्न-दृश्य की ही तरह उदास और अंधेरा एकरस कोहरा धीरे-धीरे छंटने लगता है और सामने एक शांत नीली

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नजर आती है। शांत और खूबसूरत। कोई सितार अपने कोमलतम स्वरों से दृश्य को स्पर्श करता है और झील पर ी फैल जाती है..... आसमान के ये मंदिरों की-सी छोटी-छोटी घंटियां लगते हैं.....और आहिस्ता-आहिस्ता में प्यारे-प्यारे नीलकमल खिलने हैं।

ई, हीरो-हीरोइन बनना है, तो इस कम-से-कम एक-एक प्याला 'चा' तो दो।" शिरीन भाई टाई की गांठ हुए कहते हैं और नीरा पुलककर समर्थन करती है। उसकी गर्दन पीछे को हो जाती है ..... एक हाथ के रंग का दुपट्टा काले कार्डिगन के र रखने लगता है। मुक्त हास्य। छोटे-उजले दांत। उत्साह में नीरा शिरीन से हाथ मिलाती है..... और मुझे है, वह मुझसे हाथ मिला रही है।

कैंटीन की तरफ चल पड़ते हैं और भाई बिना ब्रेक-सिग्नल शुरू हो जाते नो, आज इन सबके रोल की कापियां नों को तैयार करनी हैं। और परेश, हम लोग सेकेंड एक्ट की स्क्रिप्ट करेंगे। टिकिट हम सभी को अपने-सर्कल में बेचना है। और परेश, म ऐसा करना, अभी चाय पी लो, रा बैठकर पोस्टर की डिजाइन बना और हां, अभी कास्टचूम्स की लिस्ट ानी है परेश, ये तुम्हारी हीरोइन की कलर्स क्या होंगे जरा बताना मुझे,

और हां, नीरा, अपर्णा से कहना ठीक दो बज आ जायें, ग्यारह से चार रोज रिहर्सल होगी। और सुनो, हम सबका खाना शो होने तक रोज होटल में होगा—क्लब की तरफ से, समझे? वैसे आज मुझे सेक्रेटरी साहब के पास भी ..... टाइम क्या हो गया? अरे बाप रे! पौने दस! हां भई, तीन चाय लाओ, पानी भेजना..... नहीं? क्यों भई, तुम लोग कुछ और लोगे? हां, तो मैं क्या कह रहा था? नीरू, जरा शर्मा साहब से चाबी लेकर ..... क्या बात है? तुम लोगों ने कान क्यों बंद कर लिये?..... ओम् शांति..... शांति..... शांति .....।"

और फिर एक ठहाका। तीनों का।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपनी याद में एक अर्से बाद में इतना खुल-कर हंसा था। और फिर यह हंसी नियमित रूप से मेरे जीवन में खिलती रही है।

धीरे-धीरे मैं उन्हीं में से एक हो गया हूं।

रिहर्सल शुरू हो गयी और दिन-रात मुझ पर नाटक का जुनून सवार रहने लगा। नीरा से परिचय बढ़ा। वह मेरी पत्नी का रोल कर रही है और यों वह एक सुंदर, जिंदादिल और बहादुर लड़की है, पर अपनी सारी कोमलता और मादकता के बावजूद कुछ-कुछ लड़कों जैसी। उसके दिल में फूटते अनाम अंकुरों की झलक शायद केवल मैं ही पा सका हूं, पर वह ऊपर से बिलकुल निर्द्वंद्व बनी रहती है।

नहीं जानता आज नीरा को क्या हो रहा था ..... और न यह विश्वासपूर्वक कह सकता हूं कि मैं नीरा को प्यार करने लगा हूं ..... पर आजकल वही कमल-झील वाला रूमानी स्वप्न-चित्र बार-बार मेरी आंखों में उतरता रहता है और बार-बार मैं डरता हूं—इस झील में कोई कंकड़ न फेंक दे। इस चांदनी का कोई स्पर्श न करे। ये कमल बस यों ही खिले रहें।

हाल के बांयीं तरफ पूरी लंबाई में बना एक चौड़ा चबूतरा है, जिस पर आजकल धूप फैली रहती है। उस दिन टी-ब्रेक के बाद कोई स्टेज पर नहीं आया था। सब इधर-उधर सोफों पर लुढ़क गये थे। मैं नीरा को ढूंढ़ता-ढूंढ़ता इसी चबूतरे पर आ गया था। लकड़ी की सीढ़ियों पर घुटनों में सिर दिये अकेली बैठी नीरू मुझे दिखाई दी थी। वह रो रही थी।

इतने दिन हो गये—हम एक दूसरे को बिलकुल नहीं समझ पाये। लगता है, जब पति-पत्नी बनकर एक-दूसरे के सुख-दुःख में सहभागी बनने हम मंच पर जाते हैं, अपनी-अपनी पहचान शिरीन भाई के पास छोड़ जाते हैं। मैं कृष्ण हो जाता हूं, वह राधा। और हम अपना हर देश, काल, वर्ष, विषाद भूलकर महारास की तन्मयता में पूरी तरह डूब जाते हैं। पर मंच से नीचे आते ही वह मोटर बंगले वाले प्रोफेसर बनर्जी की लड़की नीरा बनर्जी हो जाती है और मैं एडवोकेट जालानी का टाइपिस्ट। यानी कहीं भी हमारे संबंधों की स्पष्ट रेखा अंकित नहीं हो सकती है। शायद हो भी नहीं सकती।

आज यह पहली बार हुआ। और इसमें मुझे कोई हिम्मत नहीं बटोरनी पड़ी-जैसे यह मेरा अधिकार है और ऐसा मैं कई दिनों से कर रहा हूं— कि मैंने दोनों हाथों में भरकर उसका आंसू-भरा चेहरा उठाया और उसका माथा चूम लिया। वह बेहद सुंदर लग रही थी।

रोने का कारण यही बताया गया कि सिर दुख रहा है। जानता था कि झूठ है, इसलिए थोड़ी चोट लगी .....पर शिरीन भाई से पैसे मांगकर उसे कैंटीन ले गया। चाय पिला दी। एस्प्रो खिला दी।

और बारह बजे सब लोग खाना खाने निकले। चुप हुई नीरू सहज होने की कोशिश में और असहज हो गयी। उसने अपना काला कार्डिगन उतार दिया और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से पांव तक उसे टेसू के फूलों से लदा
बड़ा नया-सा लगा। सारे रास्ते हम
पीछे-पीछे और सटकर चले, लेकिन
फूल अबोले-अव्यक्त-असंयुक्त।

कौन समझेगा कि टेसू के फूलों में भी
आंसू छिपा हो सकता है ..... कि जब
के अंधेरे में जालानी वकील का टाइप-
र और तीखी खटखट करता है .....
छ उंगलियों को लगता है जैसे उनके
पर विषाद की कीलें ठुक रही हों।
बात तो यह है—वैसे भ्रम पाले रहना
तो और बात है — कि न टेसू का दुःख
राइटर जान सकता है और न टाइप
उंगलियों की वेदना टेसू के फूल।

चलते-चलते ठीक इसी मोड़ पर नीरा
नी लंबी चुप्पी तोड़ी। पहचान रहित
से देखा और पूछने की नियति से पूछ
—"आप तो खाना खाने घर जायेंगे?"
दो पल चुप रह गया था और फिर
रुककर बोला था —"हां!"

हूं चुपचाप सिर झुकाये चलने लगी थी
मैंने अपने आहत अस्तित्व को यहीं
जाने दिया था। स्वयं को उन लोगों
जाने दिया था।

र अब जैकब मुझे बुलाने आया है।
रे क्या यार, उस्ताद! तुम यहां बैठे
हां तुम्हारा इंतजार हो रहा है। कमाल
हो मियां!"

उठने की कोई उत्सुकता नहीं दिखाता,
जाता हूं और उसके साथ हो लेता हूं।
अब वे मेरा इंतजार कर रहे हैं। धीरे-
धीरे चलता हूं। ठीक है। खाना सामने
रखा होगा और सब हाथ पर हाथ धरे बैठे
होंगे। बार-बार दरवाजे की तरफ देख रहे
होंगे। पहुंचते ही प्यार, आश्चर्य और
नाराजी से अवगाहेंगे और फिर सब कुछ
ठीक हो जायेगा। सहज! पूर्ववत्!

पहुंचने पर सब कुछ आशा के विपरीत
पाता हूं। सब लपालप खाने में व्यस्त हैं।
ठहाके-चुहल-खाना..... खिलाना-रूठना-
मनाना..... किसी एक के नहीं रहने से
क्या अंतर पड़ता है? मेरी तरफ किसी का
ध्यान भी नहीं जाता। इच्छा होती है, भाग
जाऊं, पर पांव उठने के इन्कार कर देते हैं।
बड़ी विचित्र स्थिति हो जाती है मेरी।

जल्दी से एक कुर्सी लेकर कुछ लोगों के
बीच छिपकर बैठ जाता हूं। इन्हें मैं अच्छी
तरह नहीं जानता। इधर-उधर वाले आज
ही यूनिट में आये हैं— वायलिन बजाते हैं।

कोई मेरी प्रतीक्षा नहीं कर रहा था।
जैकब ने दया की थी। दया? मुझ पर?
भाग ही जाता हूं। अब किसी रिहर्सल में
नहीं जाऊंगा। शिरीन भाई के लाख खुशा-
मद करने पर भी नहीं। नहीं, नीरा कहे,
तो भी नहीं। लेकिन इससे पहले कि मैं कुछ
करूं एक वायलिन वाला मेरे सामने प्लेट
रख देता है और दूसरा पुलाव की डिश।
लगता है, मैं अकेला हूं और वे एक दूसरी
जाति के लोग हैं—ऊंची जाति के।

चुपचाप सिर झुकाकर खाना खाने
लगता हूं।

नाटक तो करना ही होगा ना!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बल्गारियन कहानी :

बूढ़ा शिक्षक

जैको औजोनोफ

बहार की एक सुहानी सुबह थी। शेव करने तथा कपड़े बदलने के बाद शरीर-रचनाशास्त्र का भूतपूर्व शिक्षक दानचैफ उन गलियों में से गुजरा, जो वर्षों से उसकी जानी-पहचानी थीं। हजारों बार उसके कदम उन पर पड़े थे—निहाजोफ स्ट्रीट, बोटेफ स्टोलीटोफ और फिर विद्यालय ...

कई बार तो ऐसा होता कि उसका मन इस जाने-पहचाने रास्ते से ऊब जाता, परंतु फिर भी वह हमेशा इसी रास्ते से गुजरता। इन्हीं राहों पर उसके जीवन के कुछ मधुरतम क्षण बिखरे पड़े थे। पुरानी बेकरी जहां से हर सुबह सारा मुहल्ला बाई स्पीरोवो के स्वादिष्ट केक खरीदता था, अब वहां नहीं थी।

स्टोलीटोफ स्ट्रीट के एक छोर पर स्थित रेस्तरां भी, जहां दानचैफ प्रायः खाना खाता था, वहां से गायब हो चुका था। उसी रेस्तरां में बौनेटसोफ के चित्र 'आलोनश्का' के नीचे बैठकर उसने जवानी के दिनों में रोजीटा बैकीओवा के साथ कई मधुर घड़ियां बितायी थीं। रोजीटा उस समय विश्वविद्यालय की पढ़ाई पूरी करने के बाद नयी-नयी अध्यापिका बनी थी।

इन सुखद स्मृतियों के स्मरण से दानचैफ के हृदय में एक टीस-सी उठी। उस पुराने वातावरण में उसके व्यक्तित्व का भी कुछ महत्त्व था। वे सब स्मृतियां बहुत पुरानी हो चुकी थीं और उनके साथ वह भी बूढ़ा हो गया था, परंतु उसके हृदय में इस बात की तीव्रानुभूति हुई कि वह इस परिवर्तन को देख पा रहा था और नवयुग के निर्माण में उसका भी थोड़ा-बहुत योगदान था। यह बात सोचकर वह कृतज्ञता के भावों से भर गया।

अभी जल्दी थी। स्टाफ रूम में अभी कुछ ही शिक्षक आये थे। एक-एक करके वे आते जा रहे थे। उनमें से अधिकांश नवयुवक थे, जिनसे वह परिचित था। वह उन्हें बताना चाहता था कि 'मेरी क्लास है', पर वह कहे किससे ? वे अपने काम में इतने व्यस्त थे कि उनके पास इस इस बूढ़े शिक्षक की ओर ध्यान देने का भी समय नहीं था। सूर्य की गुलाबी किरणों में नहाया-सा वह

अनुवाद : सुरेंद्रनाथ वर्मा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ी में खड़ा था और विद्यालय की ओर
ुए विद्यार्थियों को निहार रहा था।
नचैफ ने १२-क सेक्शन की कक्षा का
र उठाया और नाम पढ़ने लगा.....
ज्यार्जी, एन्तोनीता ज्हारीवा, ऐना
वा ..... कैसी होंगी इन सबकी
? उसने सोचा। किनके बच्चे होंगे
? बाद में क्लास-रूम को देखने के
ह बरामदे में आया।

वमुच सब कुछ हीं बदल चुका था—
ों का डिस्टेंपर, साज-सामान तथा
ों पर टंगे चित्र। केवल एक चित्र,
ा बैकीओवा का, एक कोने में अभी
ा था और उसके नीचे लिखे हुए शब्द
पड़ चुके थे—"फस्ताईवाद के विरुद्ध
में शहीद—अप्रैल १९४४।" इसके
ूखे लिली के फूलों का गुच्छा लटक
ा।

र बढ़ता गया, लेकिन ज्यों ही दूसरी
ा समय निकट आता गया, एक के
सरा क्लास-रूम खामोश होता गया।
फ वापस स्टाफ रूम में आया, रजि-
लिया और धीरे-धीरे अपनी कमजोरी
ाबू पाते हुए, क्लास रूम की ओर
दया।

ुड मार्निंग बच्चो।" उसे अपने स्वर
ईऔर अनिश्चितता-सी महसूस हुई—
जाओ ..... तुम्हारे अध्यापक एंजोलो
र हैं, इसलिए उनके स्वस्थ होने तक
उनके स्थान पर नियुक्त किया
ई।"

कक्षा में शोर मच गया। स्पष्ट था कि उसे स्वीकारा नहीं गया था—"किसने भेजा है आपको?...बेहतर था अगर आप न आते ..... हमारी मौज थी। हम खूब ऊधम मचाते.....।"

दानचैफ इस मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया से परिचित था। शोर कम होने तक उसने प्रतीक्षा की। फिर बोला—"मुझे दानचैफ कहते हैं। मैं कई साल इस स्कूल में पढ़ाता रहा हूं।"

वे चुप हो गये। उसे पता नहीं चल सका कि वे क्या सोच रहे हैं। वह उनसे परिचित नहीं था। ये वे बच्चे थे, जो उसकी अवकाश-प्राप्ति के बाद की दशाब्दी में पले-बढ़े थे। दानचैफ ने रजिस्टर खोला, उस पर एक

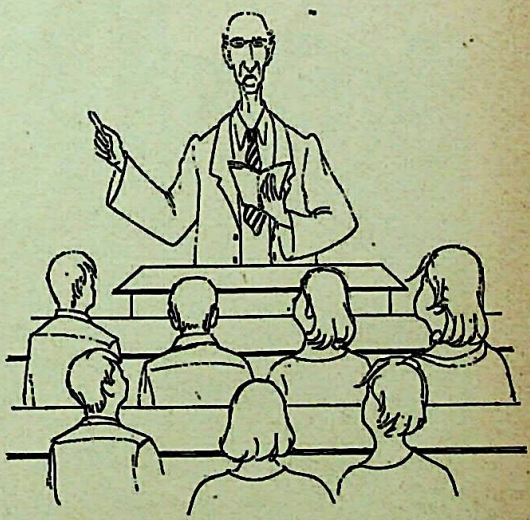

उसने अपने नोट्स के पन्ने उलटे तथा बोलने लगा—"तो मनुष्य...."

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आप खुद ही देखिए आपके घरको हिण्डालियम® ने कितना आकर्षक बना दिया है।

हिण्डालियम के बरतन खरीदने पर आपको मिलती है—
चाँदी की झिलमिलाती हुई चमक
और एक निखरी हुई सादगी.
हिण्डालियम के बरतनों में
पकाना भी मज़ेदार,
खाना भी मज़ेदार.

हिन्दुस्तान अल्युमिनियम कॉरपोरेशन लि.

HINDALCO

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सी दृष्टि डाली और फिर कक्षा देखा।

क भी अंतर नहीं था। वही शरा-वे—उसने इन वर्षों में ऐसे बहुतों को ा—सुडौल सुंदर जवान लड़कियां, नी में पदार्पण कर रही थीं; लड़के ौर गठीले, जिनके चेहरों पर मूंछों दिखाई देने लगे थे और जो एक सैनिक जीवन की प्रतीक्षा में थे। सके सम्मुख थे।

ी अनुभवी आंखों ने आलसी जवान ं,अपने माता-पिता के बिगड़े बच्चों, ए कमजोर अथवा दादा टाइप ी तुरंत भांप लिया। वृद्ध तथा अनु-ध्यापक को कक्षा १२-क के विषय न हो चुका था। वे खामोश थे और की आंखों में झांक रहे थे। अपनी हिसाब से ये बच्चे काफी चतुर थे। कम उनका तो यही विचार था। स्तव में उनकी शरारतें वृद्ध अध्या-लए नयी नहीं थीं।

चैफ मुस्कराया और हाथों के सहारे झुक गया, डैस्क किकियाया और दान फर्श पर जा गिरा। प्रत्यक्ष रूप ब पूर्वायोजित था। कक्षा में तनिक ल नहीं हुई और पूरी तरह चुप्पी ी।

यह है शुरूआत!" अध्यापक ने वह उनकी रग-रग को पहचानता के लिए वह एक बूढ़ा खूसट था, जो ारों पर सवार होकर उनका मजा किरकिरा करने आया था।

"बच्चो इसके बाद वाला पीरियड खेलों का है, लेकिन मुझसे कहा गया है कि मैं उसमें भी पढ़ाऊं; क्योंकि तुम लोग पढ़ाई में काफी पीछे हो।"

किसी ने लगातार सीटी बजायी। दान-चैफ ने उस ओर कोई ध्यान नहीं दिया।

"पहले पीरियड में हम शरीर-शास्त्र के पिछले पाठों को दोहरायेंगे और दूसरे पीरि-यड में आगे के पाठ पढ़ेंगे।"

उसने अपने नोट्स के पन्ने पलटे तथा बोलने लगा—"तो मनुष्य....."

उसी क्षण कक्षा के चारों कोनों से कई प्रकार की आवाजें आने लगीं। रुक-रुककर, लेकिन बड़े कायदे से लकड़ी रगड़ने की आवाज, मेंढक की टरटराहट और झींगुरों की भनभनाहट!

अध्यापक ने अपनी नजरें उठायीं और कक्षा की ओर देखा। प्रत्येक अपने स्थान पर बुत बना बैठा था। और प्रत्येक उसे गंभीर मुद्रा में घूर रहा था। सारी आवाजें कमरे के बाहर से आने लगीं, परंतु ये अधिक तीव्र थीं। बदमाश कहीं के!

दानचैफ के साथ सदा ऐसा होता रहा था। वह उन अध्यापकों में से था, जो पढ़ाना शुरू करने से पहले ही हंसी के पात्र बन जाते थे। देखने में वह कुरूप था। सच तो यह था कि वह एक कार्टून लगता था—सूखा, पीला मुख, लंबी नाक, छोटी टांगें तथा फूला हुआ पेट। वह जैसे भी कपड़े पहनता, यों लगता कि वह किसी और के कपड़े पहने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

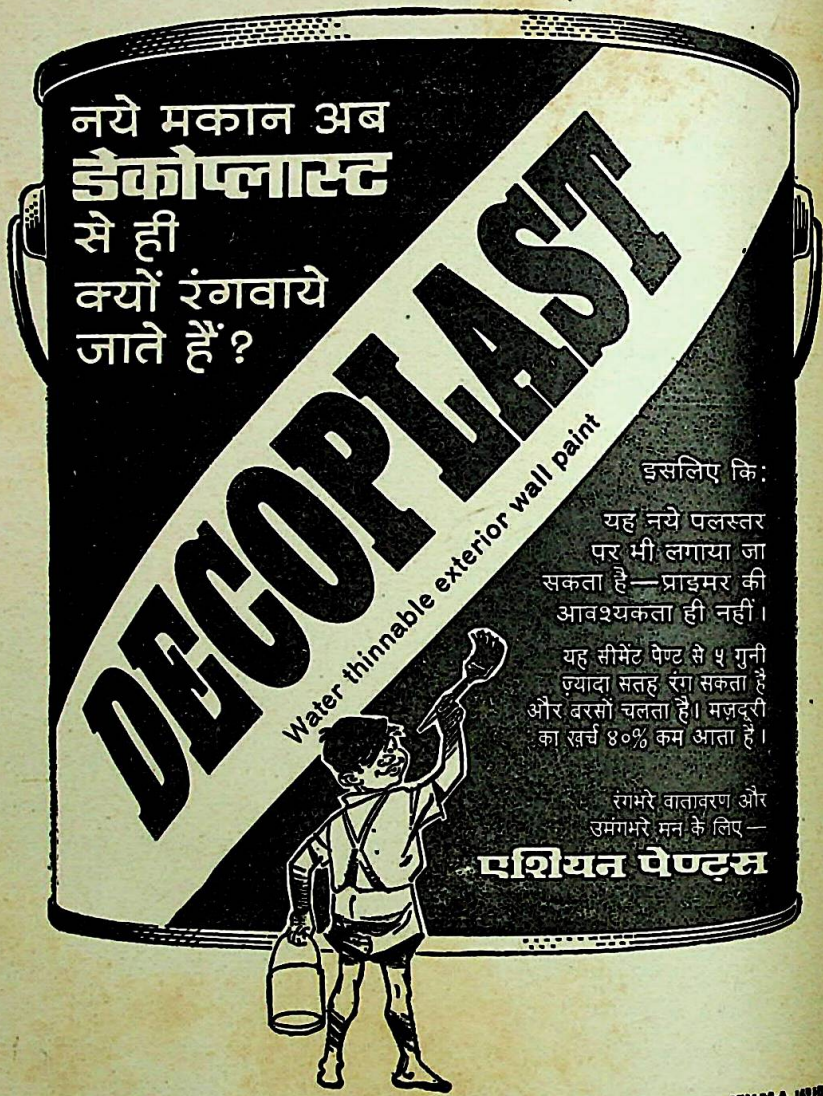
नये मकान अब
डेकोप्लास्ट
से ही
क्यों रंगवाये
जाते हैं?
DECOPLAST
Water thinnable exterior wall paint
इसलिए कि:
यह नये पलस्तर
पर भी लगाया जा
सकता है—प्राइमर की
आवश्यकता ही नहीं।
यह सीमेंट पेण्ट से ५ गुनी
ज़्यादा सतह रंग सकता है
और बरसों चलता है। मज़दूरी
का ख़र्च ४०% कम आता है।
रंगभरे वातावरण और
उमंगभरे मन के लिए—
एशियन पेण्ट्स

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

। इन बातों का बच्चे खूब मजाक
। साथी अध्यापक भी चुटकी लेते।
अध्यापक—जीवन में उसने इन सब-
ौता कर लिया था। पर इस सबके
वह एक बहुत सफल अध्यापक था
क इंसान के तौर पर सभी की गहरी
तथा श्रद्धा का पात्र था। परंतु अब
बातों से दुःख पहुंचा। आखिरकार
का मेहमान था।

दानचैफ शीघ्र क्रुद्ध होने वाला नहीं
खिर ये सब बच्चे ही तो हैं। एक
ीकी मुस्कान अधरों पर लिए उसने
ं ओर देखा और खामोश रहा।
अपने सीने में रोकते हुए उसने एक
र शुरू किया—"मनुष्य....."

इस बार मुर्गे-मुर्गियों ने कुकड़ू-कूं
दीं। और पिछले बैंचों से बकरी
याने की हंसा देने वाली आवाज
ी सारी कक्षा विद्यार्थियों के कहकहों
ठीं।

ीज की सीमा होती है।
हो जाओ।" अध्यापक ने तीखे
ाज्ञा दी।
खड़े हो गये। एक क्षण के लिए
शांति रही और तब उस चुप्पी में
छींकने की आवाज आयी। बीच
र सुनहरे बालों वाली लड़की ने
क मारी, और फिर तीसरी बार।
ानबूझकर हो रहा था। और इससे
का फव्वारा फूट पड़ा।
नाम है तुम्हारा ?" दानचैफ ने
लड़की से पूछा—"तुम, हां, मैं तुमसे पूछ रहा हूं।"

"स्नेजाना।"

उसने अपनी नाक पर से रूमाल हटा लिया और अपने हाथ से अपने बिखरे बाल संवारने लगी। कक्षा एकदम खामोश थी। दानचैफ उस लड़की को अच्छी तरह देख सकता था। कबूतरों की-सी आंखें, सुनहरे घुंघराले बाल और गालों में गड्ढे। कहां देखा है इसे ? यह इतनी जानी-पहचानी क्यों लग रही है ?

"स्नेजाना।" उसने मुंह-ही-मुंह में नाम दोहराया और लड़की पर से अपनी दृष्टि हटाये बिना रजिस्टर के पन्ने उलटे। उसने रजिस्टर देखा और आसानी से उसका उपनाम ढूंढ़ लिया; क्योंकि कक्षा में वही एक स्नेजाना थी।

"बैठ जाओ।" उस ने कहा। वे बैठ गये।

"तुम खेलने के मूड में दिखाई देते हो। चलो, मैं भी यही चाहता हूं। क्या पसंद करोगे ? खेलों ने नाम सुझाओ !"

पहले तो उन्होंने आश्चर्य तथा अविश्वास मिश्रित भावों से देखा, परंतु उसकी आवाज में गहरी आत्मीयता को मांपकर उन्हें राहत मिली। उन्होंने सुझाना शुरू किया—"अंधी दादी, मटका-चोर इत्यादि।

"नहीं। कोई ऐसा खेल, जिसमें शोर कम हो, नहीं तो दूसरे सुन लेंगे।" दानचैफ ने उन्हें बड़े आत्मीयतापूर्ण लहजे में चेतावनी दी और कहा—"अगर मैं तुम्हें ताश के पत्तों से तुम्हारा भविष्य बताऊं तो..... ?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

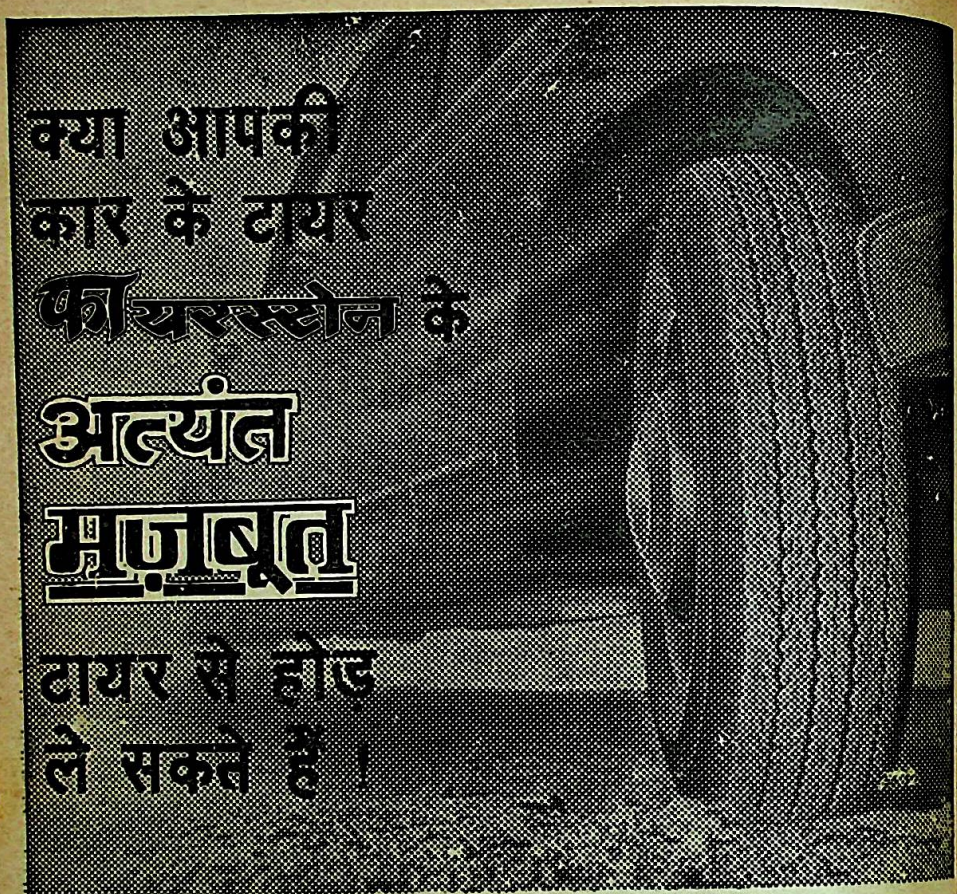

यह टायर ड्राइविंग की कठोर से कठोर ज़रूरतों को ध्यान में रख कर बनाया गया है। यह टायर ऊबड़-खाबड़ सड़कों पर भी सरलता से चलता है, गर्मी का ताप सह सकता है और बारिश में गीली सड़कों पर आवश्यक सुरक्षा प्रदान करता है। बार-बार रोकने और चालू करने से होने वाली घिसाई-पिटाई को सह सकता है।

फ़ायरस्टोन टायर में आपको ये तमाम मज़बूती मिलती है, क्योंकि इसकी तीन तरह से मज़बूती देने वाली खास बनावट होती है। इस टायर के साथ 'ट्रेड' को ख़ास तरीके से जोड़ते हैं, टायर का बाजूवाला भाग ज़्यादा मज़बूत बनाते हैं और हरेक 'कार्ड' को 'इंसुलेट' कर देते हैं।

यदि आप अपने पैसे के बदले में ज़्यादा किलोमीटर तथा ज़्यादा सुरक्षा चाहते हैं तो फ़ायरस्टोन का अत्यंत **मजबूत** टायर ही खरीदिये।

फ़ायरस्टोन

पिछले ५० वर्षों से अधिक समय से भारत की सेवा में

भारत में सब जगह मिलते हैं-आज ही अपने फायरस्टोन विक्रेता से मिलिये!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मारे पास ताश तो हैं नहीं। अच्छा
ाई से भविष्य मालम करें। तुम
ा क्या विचार है? मैं किसी की
देखकर उसके भूत और भविष्य
बताने में बहुत माहिर हूं।"
में नयी स्फूर्ति आ गयी। विद्यार्थी
र आगे सरक आये।
में से कोई एक आगे आये और
र कुछ लिखकर दे। मैं उसके भूत
ष्य के बारे में बताऊंगा। तुम ही
आतीं? क्या नाम था तुम्हारा?"
ाना .....।"
म अपने हाथ से कुछ लिखकर
जाना। मैं कोशिश करूंगा। और
ी कि मैं कैसा विशेषज्ञ हूं।"
ने कुछ लिखकर अध्यापक को
ा। दानचैफने अपनी ऐनक निकाली
ज को ध्यानपूर्वक देखने लगा।
से जानी पहचानी-सी प्रतीत हुई।
." उसने कहना शुरू किया—
ठिन तथा जटिल ..... स्नेजाना,
थ काफी दुर्गम है। यह देखो, बच-
असामान्य रहा है। एक सांवला
ा निकटतम संबंधी..... शायद
ता। उसका नाम है एंजल, ऐंजन
ाम 'ए' से शुरू होता है .....एक
रात को भाग रहा है ..... वह
से बचने के लिए दौड़ रहा है।
दौड़ रही है एक सुनहरे बालों
युवती, जिसे तुम बहुत अधिक
। उसका नाम 'र' से शुरू होता
है—हो सकता है उसका नाम हो रादका, रेना रुमियाना अथवा रोजिस्टा..... कुछ लोग गोली चला रहे हैं। पुरुष गिर पड़ता है और स्त्री एक गंजे, कुरूप, मगर दयालु आदमी के घर शरण लेती है। दूसरे लोग घर को घेर लेते हैं। वे गोली चलाते हैं ..... गंजा आदमी घर से बाहर आकर उन्हें ललकारता है—"कुत्तो, गोली मत चलाओ। सुनो। मत चलाओ गोली। यह स्त्री गर्भवती है।" एक गोली उस गंजे आदमी के माथे पर लगती है। वे उस युवती को जिंदा पकड़ लेते हैं, और फिर....."

अध्यापक ने कागज पर से अपनी नजरें उठायीं। कागज को अपनी उंगलियों में मरोड़ दिया और फर्श पर फेंक दिया। अब सबका ध्यान उसके माथे के लंबे घाव के निशान की ओर आकर्षित हुआ।

"आज के लिए इतना काफी है।" उसने कहा। फिर धीमे स्वर में बोला—"हां, मनुष्य का निर्माण तिरस्कृत होने के लिए नहीं हुआ।" उसने रजिस्टर उठाया और तुरंत कमरे से बाहर चला गया।

जब दूसरे पीरियड के लिए घंटी बजी, दानचैफ ने कमरे में प्रवेश करते हुए देखा, सभी विद्यार्थी खड़े हो गये थे। स्नेजाना, जिसकी आंखें रोने के कारण लाल हो गयी थीं, कक्षा के बीच में से उसके पास आयी और बिना कुछ कहे उसने उद्यान के ताजा फूलों का एक गुलदस्ता उसे भेंट किया।

"बैठ जाओ बच्चो।" उसने कहा। और अपना लेक्चर शुरू कर दिया।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चाँदनी साबुन

का प्रयोग कर
समय बचाइये

—कपड़े जल्दी साफ़ होते हैं!

बेरार ऑईल इन्डस्ट्रीज़, अकोला

अधिक स्वच्छ
अधिक सफेद
अधिक उजले

ASP/C-13 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तीन बिंब

ं गिद्ध-सी पंख फैलाती उतरती है
ुनी खबरों के आकार
र बिलखते हैं
ंद में अकड़ायी सड़कें
ती हैं भीड़ के बोलों में।

आ उतरती है बदनाम-सी शाम
शहर के
जले-बुझे चेहरे पर
क्षणेक के लिए खिल जाती मुस्कान
मेरे भीतर फैलता है
मीलों लंबा रेगिस्तान !

ाता है पूरा शहर
ड़ में, बिंदु में–
ी हरेक दिशा, बैठ जाती
शेष, भारी मशीनों का शोर
ें, निःसंग
हो जाती है रात !

नुवाद : फूलचंद 'मानव' ● ● चरनजीत सिंह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिर्फ
5 पैसे
में
आप अपने
परिवार
को छोटा
रख सकते हैं !

निरोध
इस्तेमाल कीजिये

परिवार नियोजन के लिये
बढ़िया किस्म का रबड़-कण्डोम
15 पैसे में 3
(सरकारी रियायती मूल्य)

बच्चों के जन्म में समयान्तर लाने के लिये

आज बच्चे का जन्म इत्तफाक की बात नहीं रही। अब बच्चे का जन्म आपकी मर्जी पर निर्भर है। 'निरोध' के इस्तेमाल से आपके यहाँ बच्चा तभी होगा, जब आप चाहेंगे।

माँ और बच्चे की भलाई के लिये

डाक्टरों का कहना है कि बच्चे के जन्म के बाद शुरू के तीन-चार वर्षों में उसे अच्छे पालन-पोषण की बहुत जरूरत होती है। इसके साथ माँ को भी अपना स्वास्थ्य सुधारने के लिये कुछ समय की जरूरत होती है। निरोध का इस्तेमाल करके आप अपने अगले बच्चे के जन्म को कुछ समय के लिये टाल सकते हैं।

निरोध यानी कण्डोम बहुत ही बढ़िया किस्म के रबड़ से बना गर्भ निरोधक है। दुनिया भर के पुरुष इसका इस्तेमाल करते हैं क्योंकि यह बहुत ही आसान और कारगर तरीका है। इसके इस्तेमाल से स्वास्थ्य पर भी कोई बुरा असर नहीं पड़ता। निरोध अब हर जगह मिलता है।

परचून और किराना की दुकानों के अलावा दवाफरोशों, जनरल मर्चेन्ट्स तथा पान की दुकानों पर भी मिलता है।

davp 70/67

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विटामिन 'सी' खाइये जुकाम भगाइये

अशोक मिश्र

मिनों की खोज हुई है, लगभग
माना जाता रहा है कि जुकाम
ामिन सी है। लेकिन कितना
? दो-दो नोबल पुरस्कारों के
ा अमरीकी वैज्ञानिक डा०
ग का विचार है कि दिन में
यां खाना काफी नहीं। वे तो
ली की बात कर रहे हैं। कुछ
१०० गोलियों तक की!
ा विटामिन सी यदि आप
जाय आहार द्वारा लेने की
आपको प्रतिदिन २०० गिलास
या ३३ पौंड हरी सब्जी, या
मुनक्का गले से नीचे उता-
ह है अधिकतम मात्रा। मगर
ी कुछ कम नहीं— हर रोज
ंतरा-रस, या ५ पौंड हरी
पौंड काला मुनक्का खाइये
स्त रहिये।
ग ने अपनी इस चौंकाने
मर्थन में कहा है कि मनुष्यों
ा की कमी बहुत पुराना रोग
ए उनमें संक्रमण (इन्फे-क्शन) का प्रतिरोध करने की शक्ति बहुत कम होती है। उनका कहना है कि करोड़ों वर्ष पूर्व हमारे पूर्वज विशुद्ध शाकाहारी थे और प्रतिदिन ३ ग्राम विटामिन सी ग्रहण करते थे। पालिंग मानते हैं कि यही आदर्श मात्रा है, यद्यपि इससे १०० गुना कम मात्रा से भी स्कर्वी रोग दूर हो जाता है।

करोड़ों वर्ष पूर्व के हमारे पुरखों के लिए इतना सारा विटामिन सी क्यों जरूरी था, इस विषय में पालिंग ने तीन तर्क दिये हैं :

१. मनुष्य और गिनी पिग आदि कुछ अपवादों को छोड़कर लगभग सभी पशु अपने लिए आवश्यक विटामिन सी अपने शरीर में तैयार कर लेते हैं। अगर इतना विटामिन सी शरीर के लिए आवश्यक न होता, तो अपना विटामिन सी स्वयं बना लेने की यह क्षमता प्राणि-विकास के दौरान उनमें क्यों शेष रहती?

२. पशु अपने शरीर-भार के अनुपात में जितना विटामिन सी अपने में तैयार करते हैं, उस हिसाब से मनुष्य-शरीर के लिए २-३ ग्राम विटामिन सी प्रतिदिन आवश्यक होना चाहिये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

३. पूर्ण शाकाहारी भोजन से हमें अन्य विटामिन लगभग उतनी ही मात्रा में मिलते हैं, जितनी मात्रा की सलाह डाक्टर दिया करते हैं। फिर विटामिन सी को ही क्यों अपवाद माना जाये ?

डा० पार्लिंग के ये तर्क काफी आकर्षक हैं; लेकिन तब तक इन्हें प्रमाण नहीं मा जा सकता, जब तक अतिरिक्त विटामि सी के लाभ प्रत्यक्ष न दिखाये जा सकें। वै डा० पार्लिंग सचमुच अभी तक यह सि नहीं कर पाये हैं कि अतिरिक्त विटामि सी की मात्राओं से जुकाम से बचाव हो सक

दफ्तर कितने खतरनाक !

दफ्तर में बैठकर काम करना प्रायः बड़े मजे का काम समझा जाता है। मगर स्वीडि की 'बावेरियन एकैडमी आफ लेबर एंड सोशल मेडिसिन' के डाक्टरों की राय तो कु और ही है। वे बताते हैं कि दफ्तर की अफसरी और बाबूगिरी कारखाने में मजदूरी क से ज्यादा खतरनाक है—स्वास्थ्य की दृष्टि से।

इस संस्था के डा० एरिक हाफमन कहते हैं—"जिन कामों में हमें अंगों को हिला डुलाना पड़ता है, उनमें मांसपेशियों का उपयोग होने के कारण शरीर में रक्त का अच्छ संचरण होता है। मगर कुर्सी पर बैठकर किये जाने वाले कामों में मांसपेशियों के ऊप के आंतरिक दबाव के कारण रक्तवाहिनियां आपस में भिंची-सी रहती हैं।"

वे बताते हैं कि इससे वह मल, जो मांसपेशियों में चलने वाली चयापचय-क्रिया कारण पैदा होता रहता है, ठीक से बाहर नहीं जा पाता और परिणामतः मांसपेशियां ज थकने और दर्द करने लगती हैं। इस थकान के कारण मेरुदंड का आकार बेढंगा हो जा है। कटिवात (लंबैगो) और कूल्हे का दर्द (साइएटिका) भी हो सकते हैं। गर्दन की मां पेशियों पर भी दुष्प्रभाव पड़ सकता है।

हाफमन का तो कहना है कि बहुत लोगों की गर्दन की मांसपेशियों के विकार मूल कारण दफ्तर में कुर्सी पर बैठकर काम करना ही है।

डाक्टरों को विश्वास हो चला है कि अंग-संचालन का अभाव शिरा-स्फीति (वैरि कोज वेन्स), बवासीर और स्थायी कोष्ठबद्धता को जन्म दे सकता है। और अगर दफ्त में काम के लिए अनुकूल वातावरण नहीं है, तो अंत में उदर और आंतों का व्रण और क भी हो सकता है।

संस्था के सर्वेक्षणों से यह भी पता चला है कि जिन दफ्तरों में वातावरण अच्छा होता, वहां कर्मचारियों के रोगी पड़ने के कारण ज्यादा कार्य-दिन बरबाद होते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यांत्रिक मानव

— अनातोले द्रनेप्रोव

मानसपुत्री यांत्रिकी क्या एक दिन मानव को निगल जायेगी ? विज्ञान के दुरुपयोग पर एक पैनी रूसी रूपक कथा, रमेश उपाध्याय द्वारा अनूदित।

श्री ओके

लघु रेखाचित्र : श्री राणा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"ए भाई! संभालके!" कुर्कलिंग ने जोर से चिल्लाकर उन नाविकों से कहा जो कमर तक पानी में खड़े हुए नाव की ऊपरी पट्टी से काठ का एक छोटा-सा संदूक खींच रहे थे। इंजीनियर कुर्कलिंग जिन दस बक्सों को इस द्वीप पर लाया था, उनमें यह अंतिम था।

"ओफ्! कितनी गर्मी है! एकदम भट्टी की तरह!" रंग-बिरंगे रूमाल से अपनी लाल गर्दन को पोंछते हुए उसने आर्त स्वर में कहा। फिर पसीने में भीगी अपनी कमीज उतारकर रेत में फेंकते हुए बोला—"अपने कपड़े उतार दो बड, यहां कोई सभ्यता नहीं है।"

मैंने उदास भाव से किनारे से कोई मील भर दूर लहरों पर थिरकते हुए हल्के स्कूनर (जहाज) को देखा, जो अब से तीन सप्ताह बाद हमें लेने वापस आने वाला था।

"आखिर हम तुम्हारी ये मशीनें लेकर इस घोर गर्मी में यहां क्यों आये हैं?" अपने कपड़े उतारते हुए मैंने कुर्कलिंग से पूछा—"इस कड़ी धूप में तो कल तक हम फूट-ककड़ी की तरह फट जायेंगे।"

"चिंता मत करो। धूप हमारे काम

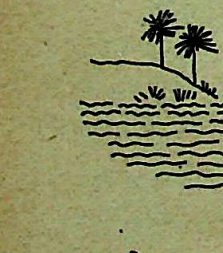

आयेगी। संयोग से इस समय ठीक दुपहर है और सूरज ठीक हमारे सिर पर।"

"भूमध्य रेखा पर यह हमेशा यों ही रहता है।" मैंने अपने जहाज की ओर एक टक देखते हुए कहा—"किसी भी भूगोल की पुस्तक में जाकर देख लो।"

नाविक हमारे पास आ गये थे और इंजीनियर के सामने खामोश खड़े थे। उसने धीरे से अपनी पतलून की जेब में हाथ डाला और नोटों की गड्डी निकाली।

"काफी है?" कई नोट उन्हें देते हुए उसने पूछा। उनमें से एक ने स्वीकृति में सिर हिलाया।

"तब ठीक है, अब तुम जहाज पर जा सकते हो। कप्तान गेल से कहना, बीस दिन बाद हमें लेने आ जायें।"

इसके बाद कुर्कलिंग मेरी ओर मुड़ा—"चलो बड, काम में लगें। मैं शुरू करने के लिए अधीर हो रहा हूं।"

मैंने उसकी ओर घूरकर देखा।

"सच कहता हूं, मुझे नहीं मालूम कि यहां क्यों आये हैं। मैं समझता हूं कि नौकरों के लोगों के सामने तुम्हें इसके बारे में बात करने में दिक्कत रही होगी, पर अब तो तुम बता ही सकते हो।"

कुर्कलिंग ने मुंह बनाया और नीचे रेत की ओर देखने लगा।

"हां, बता सकता हूं। पहले भी बता सकता था, लेकिन समय ही नहीं मिला।"

मुझे लगा, वह झूठ बोल रहा है, पर मैंने कुछ कहा नहीं। कुर्कलिंग अपनी किताब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नी लाल गर्दन को रगड़ता खड़ा
ता था, जब भी वह झूठ बोलने
हमेशा यही करता था और मैं
था।
ता है बड, हम एक दिलचस्प
वाले हैं ..... उसके सिद्धांतों को
ए..... क्या नाम उसका...?"
हुए उसने मुझे मापती-सी
।
?"
अंग्रेज वैज्ञानिक । कमबख्त
भूल गया मैं ..... हां, याद
डार्विन।"
बढ़कर उसके खुले कंधे पर हाथ
ा—"देखो कुर्कलिंग, तुम शायद
गधा समझते हो, जिसे डार्विन
ी न मालूम हो। झूठ बोलना
र साफ-साफ बताओ कि हम
ोबीच इस जलती हुई जमीन
े हैं? और मेहरबानी करके
म मेरे सामने फिर न लेना।"
ोर से हंस पड़ा। हंसी में उसके
नकली दांत मुझे दिखाई दिये।
छे हटकर उसने कहा—"तुम
म यहां डार्विन को ही परखने

ोलिए तुम पुराने लोहे के दस
लाये हो?" मैंने उसकी ओर
। और पसीने में नहाये हुए
मी के लिए मेरे मन में घृणा
गी।

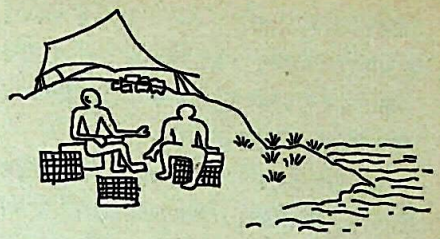

"हां!" उसने कहा और उसकी मुस्कान गायब हो गयी—"और तुम्हारा सबसे पहला काम यह है कि तुम उस एक नंबर वाले बक्से को खोलकर उसमें से तंबू, पानी, खाने-पीने के डिब्बे और दूसरे बक्से खोलने के लिए औजार निकालो।"

कुर्कलिंग ने मुझसे उसी स्वर में कहा, जिस स्वर में वह तब बोलता था, जब मैं पहली बार उससे युद्ध के मैदान में मिला था। उस समय वह भी फौजी वर्दी में होता था और मैं भी।

"बहुत अच्छा।" मैंने कहा और एक नंबर वाले बक्से पर झुक गया।

दो घंटों के अंदर-अंदर हम समुद्र-तट पर अपना तंबू लगा चुके थे और उसमें एक फावड़ा, सब्बल, हथौड़ा, छेनी, कई एक पेचकस और दूसरे औजार लाकर रख चुके थे। इसके अलावा हमने विभिन्न प्रकार के डिब्बाबंद भोजन के कोई सौ डिब्बे और ताजे पानी के बर्तन भी तंबू में सजाकर रख लिये थे।

कुर्कलिंग मेरा अधिकारी होने के बावजूद बैल की तरह काम में जुता हुआ था और प्रयोग प्रारंभ करने के लिए वास्तव में बेहद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उत्कंठित था। काम में व्यस्त रहने के कारण हमें पता ही नहीं चला कि हमारे जहाज ने कब लंगर उठाया और कब वह क्षितिज के पार जाकर अदृश्य हो गया।

भोजन करने के बाद हमने दूसरे नंबर वाला बक्सा खोला। उसमें दो पहियों वाली एक साधारण ठेलागाड़ी थी—जैसी स्टेशनों पर सामान ढोने के काम आती है।

मैं तीसरा बक्सा खोलने जा रहा था कि कुर्कलिंग ने रोक दिया—"पहले नक्शा देख लेना चाहिये। हमें चीजें अलग-अलग जगहों पर ले जानी होंगी।"

मैंने आश्चर्यचकित होकर उसकी ओर देखा।

"प्रयोग के लिए।" उसने मुझे समझाया।

वह द्वीप गोल था और औंधाई हुई प्लेट जैसा लगता था। उत्तर में एक खाड़ी थी, जिसमें आकर हम उतरे थे। चारों ओर लगभग पचास गज चौड़ा रेतीला समुद्र-तट फैला हुआ था। तट के बाद एक निचला पठार था, जिस पर किसी प्रकार की झाड़ियां उगी हुई थीं, जिनकी वृद्धि रुक गयी थी और जो धूप में झुलस गयी थीं। द्वीप का व्यास दो मील से अधिक नहीं था।

नक्शे पर कई जगह लाल पेंसिल के निशान लगे हुए थे, कुछ समुद्र-तट के निक और कुछ द्वीप के भीतरी भाग में।

"इस बक्से में से जो चीजें निकलेंगी उन्हें हम इन जगहों पर ले जायेंगे।" कुर्क लिंग ने कहा।

"चीजें क्या हैं? किसी तरह के मामू यंत्र?"

"नहीं!" इंजीनियर ने कहा और धी से हंसा। यह उसकी बड़ी गंदी आदत थी जब कोई उस बात को न जानता, जिसे व जानता था, वह इसी तरह हंसा करता था

तीसरा बक्सा बहुत ही भारी था। मु लगा, इसमें कोई बहुत बड़ी मशीन होगी लेकिन जब मैंने उसके तख्ते उखाड़े, तो चौ उठा। उसमें से हर आकार-प्रकार की ध की छड़ें और सिल्लियां निकल पड़ीं। बक्स धातु की छड़ों से खचाखच भरा हुआ था।

"क्या खयाल है? इनसे हम ईंट खेलेंगे?" मैंने गोल, तिकोने, चौकोर, च धातु के टुकड़ों को खोलते हुए कहा।

"नहीं।" कुर्कलिंग ने उत्तर दिया और वह चौथे बक्से की ओर चला गया।

मैंने देखा कि चौथे बक्से में और उ बाद नौवें बक्से तक प्रत्येक में वैसे ही ध के टुकड़े निकलते चले गये। टुकड़े त तरह के थे—भूरे, लाल और रुपहले। मैं आसानी से बता सकता था कि यह लो है, यह तांबा और यह जस्ता।

जब मैं आखिरी बक्सा खोलने लगा, कुर्कलिंग ने कहा—"उसे हम बाद में खोल पहले इन धातु-खंडों को ठिकाने लगा दें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नों तक हम उन धातु-खंडों को
भर-भरकर द्वीप पर ले जाते
से कुछ तो हमने यों ही रेत पर
ये और कुछ छोटी-छोटी ढेरियों
। बाकी जो बचे, उन्हें मैंने कुक-
शानुसार जमीन में गाड़ दिया।
उन ढेरों में से कुछ केवल एक
थे और कुछ में हर प्रकार की

काम पूरा हो गया, तो हम
यानी अंतिम बक्सा खोलने के
बू में लौटे।
" कुकलिंग ने आज्ञा दी—"मगर
!"
ा दूसरों की अपेक्षा काफी
छोटा था। उसके अंदर लकड़ी
रा हुआ था, जिसमें फेल्ट और
ज में लिपटा एक पैकेट दबा
मने पैकेट खोला, तो एक बहुत
रण दिखाई पड़ा।
जर में वह केकड़े की शक्ल का,
एक बड़ा खिलौना-सा लगा।
साधारण केकड़ा नहीं था। छः
पंजों के अलावा, उसके सामने
जोड़ी पतली स्पर्शिकाएं भी
रे उस बीभत्स जंतु के बाहर
'मुंह' में ठुंसे हुए थे। उसकी
लवां हिस्से पर पालिश की हुई
छोटा-सा परवलयिक आइना
ा, जिसके केंद्र में गहरे लाल
क्रिस्टल लगा हुआ था। साधा-
रण खिलौने वाले केकड़ों की तो दो ही आंखें होती हैं, पर इसके आगे-पीछे दोनों ओर दो-दो आंखें थीं।

हक्का-बक्का-सा होकर मैं काफी देर उस चीज को देखता रहा।

"पसंद आया?" लंबी चुप्पी के बाद कुकलिंग ने मुझसे पूछा।

मैंने कंधे सिकोड़कर कहा—"ऐसा लगता है, जैसे हम यहां बच्चों के खिलौनों से ही खेलने आये हैं।"

"यह एक खतरनाक खिलौना है।" कुकलिंग ने दंभपूर्वक कहा—"एक मिनिट में ही तुम्हें पता चल जायेगा—इसे उठाकर रेत पर रख दो।"

केकड़ा अधिक भारी नहीं था—"अधिक-से-अधिक दस पौंड वजन का होगा।

"और अब?" मैंने व्यंग्यपूर्वक इंजीनियर से पूछा।

"यह जरा गर्म हो ले, तब तक इंतजार करते हैं।"

हम बैठकर उस छोटे-से दैत्य को देखने लगे। कुछ ही मिनिटों के बाद मैंने देखा कि उसकी पीठ पर लगा आइना धीरे-धीरे सूर्य की दिशा में घूम रहा है।

"अरे, लगता है, यह तो जी उठा!"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैंने आश्चर्यपूर्वक कहा और उठकर खड़ा हो गया।

जैसे ही मैं उठा, संयोग से मेरी छाया उस यंत्र पर जा पड़ी। अचानक केकड़े के पैर चलने लगे और वह फिर धूप में पहुंच गया। मैं इतना चौंका कि एक ओर उछलकर हट गया। कुकलिंग हंस पड़ा—"देखा, यह है तुम्हारा खिलौना! इसने तुम्हें डरा दिया न?"

मैंने अपने माथे से पसीना पोंछते हुए कहा—"कुकलिंग, ईश्वर के लिए, मुझे बताओ हम इससे क्या करने वाले हैं? यहां हम क्यों आये हैं?"

वह उठ खड़ा हुआ, मेरी ओर आया और गंभीर स्वर में बोला—"डार्विन के सिद्धांत की जांच करने।"

"लेकिन वह तो प्राणिविज्ञान का सिद्धांत है.....प्राकृतिक चुनाव, विकास वगैरह की....."

"बिलकुल ठीक। अब देखो, हमारा हीरो पानी पीने गया है।"

मैं स्तंभित रह गया। खिलौना चलता हुआ पानी के किनारे तक जा पहुंचा था और अपनी सूंड़ झुकाकर स्पष्ट ही पानी पीता दिखाई दे रहा था। पानी पीकर वह फिर रेंगकर धूप में आ गया और गतिहीन होकर पड़ रहा।

मैंने उस छोटे-से यंत्र की ओर देखा और मुझे लगा कि मेरे भीतर उसके प्रति घृणा और भय का अजीब-सा मिला-जुला भाव उत्पन्न हो रहा है। एक क्षण के लिए वह बेहूदा खिलौना मुझे कुकलिंग ही प्रतीत हुआ।

"इसका आविष्कार तुमने किया है?" थोड़ी देर चुप रहने के बाद मैंने इंजीनियर से पूछा।

"ओह.....हां।" उसने कहा और रेत पर लेट गया। मैं भी लेटकर चुपचाप उस अद्भुत यंत्र को देखने लगा। अब वह एकदम निर्जीव लग रहा था। मैं पेट के बल सरकता उसकी ओर गया और ध्यान से उसे देखने लगा।

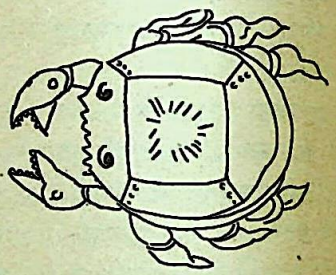

केकड़े की पीठ अर्द्ध बेलनाकार थी, जिसके आगे और पीछे की ओर सपाट ढलानें थीं। दोनों ढलानों पर आंखों से मिलते-जुलते दो-दो छेद थे। आंखों की धारणा इससे भी पुष्ट होती थी कि उन छेदों के भीतर चमकते हुए क्रिस्टल दिखाई देते थे। नीचे पेट की जगह एक सपाट सतह थी। इस पीठिका के ठीक ऊपर तीन जोड़ी बड़ी और दो जोड़ी छोटी संधियुक्त संड़सियां बाहर निकली हुई थीं। केकड़े के अंदर मैं कुछ नहीं देख सका।

खिलौने की ओर देखते हुए मैंने सोचा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह इतना महत्त्वपूर्ण क्यों लगा
लिए इस द्वीप के अभियान पर
विशेष जहाज भेजा ?
और मैं तब तक रेत पर लेटे
क सूरज काफी नीचे नहीं उतर
दूर खड़ी झाड़ियों की छायाएं
धातुई केकड़े पर पड़ने लगीं, तो
फिर हिला और धूप में सरक
एं फिर उस तक पहुंच गयीं, तो
द्र की ओर रेंगना शुरू कर दिया
की ओर बढ़ता गया जहां धूप
ड़ रही थी। ऐसा लगता था,
किरणें उसके लिए अनिवार्य हैं।
खड़े हुए और धीरे-धीरे उस यंत्र
ने लगे। उसके पीछे चलते हुए
मने द्वीप का चक्कर लगाया
उसके पश्चिमी तट पर आ
गभग पानी के पास ही धातु का
था। धातु का ढेर अभी कोई दस
हा होगा कि केकड़ा तेजी से
दौड़ा, मानो धूप की बात बिल-
गया हो, और धातु के ढेर में
बे की छड़ के पास अचानक

ने मेरी बांह पकड़कर कहा—
तंबू में चलें। कल सुबह कोई
ज देखने में आयेगी।"
हुंचकर हमने चुपचाप भोजन
लालेन के हलके कंबल ओढ़-
मुझे लगा, कुर्कलिंग इस बात
क मैंने उससे कोई प्रश्न नहीं

पूछा। सोने से पहले मैंने सुना कि वह इधर से उधर करवटें बदल रहा है और धीमे-धीमे हंस रहा है। इसका अर्थ था कि वह कोई ऐसी बात जानता है, जिसे दूसरा कोई नहीं जानता।

अगले दिन सुबह-सुबह मैं नहाने चला गया। पानी गर्म था और मैंने पूर्व की ओर दूर तक तैरकर उस दृश्य का आनंद लिया, जो समुद्र की मंद महातरंग के कारण अविचलित जल की आइने-जैसी सतह पर उगते हुए सूर्य की किरणों से दीप्त हो रहा था। जब मैं लौटकर तंबू में आया, तो इंजीनियर वहां नहीं था।

"वह अपने यांत्रिक दैत्य से अपनी आंखें तृप्त करने गया होगा।" मैंने सोचा और अनन्नास का एक डिब्बा खोला। लेकिन उसके तीन टुकड़े ही मेरे गले से उतरे थे कि मुझे उसकी आवाज सुनाई पड़ी। पहले दूर से आती हुई और फिर ऊंची, और ऊंची होती हुई आवाज।

"लेफ्टिनेंट ! इधर आओ, जल्दी !" वह चिल्ला रहा था—"काम शुरू हो गया ! जल्दी करो। दौड़कर आओ !"

मैंने तंबू से निकलकर देखा, कुर्कलिंग झाड़ियों के बीच एक टीले पर खड़ा था और हाथों के इशारे से मुझे बुला रहा था।

"आओ-आओ।" उसने भाप के इंजन की तरह धुआं छोड़ते हुए कहा—"जल्दी !"

"कहां ?"

"वहीं, जहां कल हमने अपना प्यारा खिलौना छोड़ा था।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जब हम दौड़ते हुए धातु के उस ढर के पास पहुंचे, सूरज ऊपर चढ़ आया था। धातु के टुकड़े इस तरह चमक रहे थे कि पहली नजर में मैं कुछ नहीं देख पाया। लेकिन धातु के ढेर से तीन-चार कदम के फासले पर पहुंचते ही मैंने देखा कि धातु के ढेर पर से नीले धुएं की दो धाराएं निकल रही हैं और फिर मैं रुक गया.....जैसे मुझे लकवा मार गया हो! मैंने अपनी आंखें मलकर देखा, लेकिन सामने का दृश्य लुप्त नहीं हुआ। धातु के पास दो केकड़े खड़े थे—ठीक वैसे ही, जैसा एक हमने कल बक्सा खोलकर निकाला था।

"क्या एक इस ढेर में दबा रह गया था?" मैंने चकित होकर पूछा।

कुर्कलिंग अपने हाथ मलता और मंद-मंद हंसता झुक-झुककर देखने लगा।

"बेवकूफ मत बनाओ?" मैं चिल्लाया—"दूसरा केकड़ा कहां से आया?"

"यह पैदा हुआ है! यह रात में ही पैदा हुआ है।"

मैंने अपना ओंठ काट लिया और एक शब्द भी बोले बिना सीधा उन केकड़ों के पास चला गया, जिनकी पीठों पर से धुआं निकल रहा था। उन्हें देखकर मुझे लगा जैसे मैं दुःस्वप्न देख रहा हूं—दोनों केकड़े तेजी से काम में लगे हुए थे।

हां, वे काम में ही लगे थे। उनकी सामने वाली पतली स्पर्शिकाएं तेजी से ऊपर-नीचे हो रही थीं। स्पर्शिकाएं धातु की छड़ों को छूकर उनकी सतह पर ऐसा विद्युत्-चाप उत्पन्न कर रही थीं, जैसा विद्युत्-वेल्डिंग में होता है—वे धातु के टुकड़ों को काट रही थीं! केकड़े जल्दी-जल्दी धातु के टुकड़ों को अपने चौड़े मुखों में भरते जा रहे थे। और उन यांत्रिक जीवों के भीतर से एक गूंज-भरी आवाज आ रही थी।

समय-समय पर उनके मुंह से फुफकारती हुई चिनगारियां निकल पड़तीं और स्पर्शिकाओं की दूसरी जोड़ी तैयार पुर्जों को बाहर ला रखती।

केकड़ों के नीचे से धीरे-धीरे एक चपटी शिला-सी निकलती आ रही थी, जिस पर तैयार पुर्जे एक विशेष क्रम से रखकर जोड़े जा रहे थे। एक केकड़े की शिला पर तो बिलकुल उन जैसा ही एक तीसरा केकड़ा तैयार हो चुका था और दूसरे की शिला पर अभी एक अन्य केकड़े की रूपरेखा ही बन पायी थी।

यह दृश्य देखकर मैं स्तंभित रह गया। फिर मैंने आश्चर्यपूर्वक कहा—"लेकिन डरावनी चीजें तो अपनी जैसी ही दूसरी चीजें बना रही हैं!"

"यही तो! इस मशीन का उद्देश्य ही अपनी जैसी दूसरी मशीनें बनाना है!" कुर्कलिंग ने कहा।

"लेकिन क्या यह संभव है?" मैंने अ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न होकर पूछा।

हीं ? लेथ जैसी कोई भी मशीन
लेथ मशीनों के पुर्जे बना सकती
कर मेरे दिमाग में यह बात आयी
चालित मशीनें बनायी जायें, जो
खिर तक अपनी-जैसी मशीनें
बनें। मेरा केकड़ा ऐसी ही मशीन
है।"

पर की बात का अभिप्राय समझने
उसके शब्दों पर विचार करने
समय पहले केकड़े का मुंह खुला
की एक चौड़ी पट्टी निकलने
ने शिला पर रखे हुए पुर्जों को
सरे केकड़े की पीठ का आकार
लिया। पीठ जब ठीक जगह पर
ी केकड़े के अगले फुर्तीले पैरों ने
पीछे खुलने वाली जगहें रख-
क किनारों पर झलाई शुरू कर
नया केकड़ा तैयार था। अपने
की तरह इसकी पीठ की ढलान
में क्रिस्टल वाला चमकदार
ाई दे रहा था।

केकड़े ने शिला को अपने पेट के
लिया और उसका "बच्चा" रेत
आया। मैंने ध्यान से देखा कि
का आईना धीरे-धीरे सूर्य की
गया। थोड़ी देर बाद वह केकड़ा
नारे तक रेंग गया और पानी
फिर वह धूप में लौट आया और
कर स्वयं को गर्म करने लगा।
, मैं सपना देख रहा हूं।

जब मैं उस नवजात जीव को देख रहा था, मैंने सुना, कुकलिंग कह रहा था—"और यह रहा चौथा।"

मैंने सिर घुमाया और देखा कि चौथा केकड़ा जन्म ले चुका है। पहले दोनों केकड़े बिलकुल निश्चिंत होकर धातु के ढेर के पास खड़े थे और धातु के टुकड़े काट-काटकर मुंह में भरते हुए पहले वाली प्रक्रिया को दुहरा रहे थे। चौथा केकड़ा भी समुद्र का पानी पीने चला गया।

"ये कमबख्त पानी क्यों पीते हैं ?" मैंने कुकलिंग से पूछा।

"बैटरी को भरने के लिए। जब इन पर धूप पड़ती है, तो सूर्य की ऊर्जा इनकी पीठ पर लगे आईने और एक सिलिकन बैटरी के द्वारा विद्युत् में परिवर्तित हो जाती है। इतना ही उनके दिन-भर के काम के लिए और संचायक को आवेशित करने के लिए काफी है। रात के समय ये यांत्रिक जीव संचायक में संचित शक्ति से चलते रहते हैं।"

"यानी ये जीव दिन-रात काम करते हैं ?"

"हां, दिन-रात, लगातार।"

तीसरा केकड़ा हिला और धातु के ढेर की ओर सरक आया। और अब तीन यांत्रिक जीव काम कर रहे थे और चौथा सूर्य की ऊर्जा से स्वयं को आवेशित कर रहा था।

"लेकिन सिलिकन बैटरियों का मसाला धातु के इन ढेरों में कहां है ?" मैंने इन स्वयंभू मशीनों की तकनीक समझने की कोशिश करते हुए कहा।

"उसकी कोई जरूरत नहीं। वह यहां

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बहुत है।" कहते हुए कुर्कलिंग ने बेहूदे ढंग से रेत में ठोकर मारी—"रेत सिलिकन का एक ऑक्साइड है। केकड़े के अंदर जाकर एक विद्युत्-चाप के द्वारा यह शुद्ध सिलिकन बन जाता है।"

हम शाम को तंबू में लौटे। तब तक छः केकड़े धातु के ढेर पर काम कर रहे थे और दो धूप में पड़े अपने आपको गर्म कर रहे थे।

भोजन करते समय मैंने कुर्कलिंग से पूछा—"यह सब है किसलिए?"

"युद्ध के लिए। ये केकड़े विध्वंस के भयंकर साधन हैं।" कुर्कलिंग ने मुंहफट होकर जवाब दिया।

"मैं समझा नहीं।"

कुर्कलिंग उबला हुआ मांस चबाता रहा। फिर बड़े आराम से समझाने लगा—"कल्पना करो, यदि ये केकड़े चोरी-छिपे शत्रु-क्षेत्र में छोड़ दिये जायें, तो क्या होगा?"

"क्या?" मैं खाते-खाते रुक गया।

"जानते हो गुणन-वृद्धि का मतलब क्या होता है?"

"हां-हां।"

"कल हमारे पास एक केकड़ा था। आज आठ हैं। कल चौंसठ हो जायेंगे। परसों पांच सौ बारह और उसी तरह बढ़ते जायेंगे। दस दिनों में ये एक करोड़ से ऊपर हो जायेंगे और इतने केकड़ों के लिए तीस हजार टन धातु की जरूरत होगी।"

इन आंकड़ों को सुनकर मैं अवाक् रह गया।

"हां, मगर ....."

"थोड़े ही समय में ये केकड़े शत्रु की सारी धातु को खा सकते हैं—उनके सारे टैंक, बंदूकें और विमान; सारे कल-कारखाने और उपकरण; उनकी सीमा में जितनी भी धातु हो, सब ये खा जायेंगे। एक महीने के अंदर-अंदर धरती से सारी धातु का सफाया हो जायेगा। सारी धातु केकड़ों के पुनरुत्पादन में लग जायेगी। और यह मत भूलो कि युद्ध के दौरान धातु सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण युद्धनीतिक पदार्थ है।"

"तो इसीलिए नौसेना तुम्हारे खिलौने में इतनी रुचि ले रही है!" मैंने धीरे-से कहा।

"बिलकुल! लेकिन यह तो पहला ही नमूना है। अभी तो मैं इनके प्रजनन की प्रक्रिया को तीव्रतर करने के लिए इसमें काफी सुधार करने वाला हूं। मैं इनके प्रजनन की गति दुगुनी या तिगुनी बढ़ा दूंगा; इनके ढांचे को और सख्त, और मजबूत बना-ऊंगा; इनकी गतिशीलता बढ़ाऊंगा; धातु-भंडारों का पता लगाने वाली इनकी संवेदता को और बढ़ाऊंगा। तब मेरे ये यांत्रिक जीव युद्ध के दौरान प्लेग से भी ज्यादा खतरनाक होंगे। मैं चाहता हूं कि शत्रु दो या तीन दिन में ही अपनी धातु-क्षमता से वंचित हो जाये।"

"ठीक है, लेकिन जब वे शत्रु के क्षेत्र की सारी धातु खा चुकेंगे, तो अपने क्षेत्र में लौट पड़ेंगे।" मैंने आश्चर्यपूर्वक कहा।

"वह और बात है। हम उनके काम को नियंत्रित करके ऐसी व्यवस्था कर सकते हैं कि वे हमारी सीमा में प्रवेश करते ही काम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

। और इस तरह अचानक हमें
री धातु प्राप्त हो सकती है।"
ात मैं दुःस्वप्न देखता रहा। झुंड-
कड़े मेरे ऊपर रेंगते रहे, उनकी
सरसराती रहीं, उनके धातुई
उठते हुए नीले धुएं के अंबार मुझे
रहे।

नों में ही पूरा द्वीप कुकलिंग के
कड़ों से भर गया। उसके हिसाब
र हजार हो गये थे। धूप में चम-
वे हर कहीं देखे जा सकते थे।
क ढेर खत्म हो जाता, तो वे सारे
ोजने लगते और दूसरे ढेरों का
लेते।

दिन सूर्यास्त से ठीक पहले मैंने
दृश्य देखा—दो केकड़े जस्ते के
के लिए लड़ रहे थे।
ाई द्वीप के दक्षिणी भाग में हो
हां हमने जस्ते की बहुत-सी छड़ें
दी थीं। द्वीप के अन्य भागों में
हुए केकड़े समय-समय पर जस्ते
ी मात्रा लेने के लिए यहां आया
और अब यह हुआ कि लगभग
एक साथ ही जस्ते के गुप्त भंडार
ड़ पड़े और उनमें सचमुच छीना-
लगी। मशीनें एक-दूसरी की
ठीं। उनमें से एक केकड़ा मुझे
विजयी होता दिखाई पड़ा, जो दूसरों से अधिक फुर्तीला, अधिक ताकतवर और अधिक आक्रामक था।

उसने अपने भाइयों को एक तरफ हटाया और गड्ढे की तली में पड़े जस्ते के एक टुकड़े को हासिल करने की कोशिश में उनकी पीठ पर चढ़ गया, लेकिन ज्यों ही वह जस्ते का टुकड़ा उठाने लगा, एक अन्य केकड़े ने अपनी चिमटियों से उस टुकड़े को उठा लिया। टुकड़े के दोनों सिरे दोनों केकड़ों ने पकड़ लिये और अंततः जो केकड़ा मुझे अधिक फुर्तीला लगा था, उसने जस्ते की छड़ अपने प्रतिद्वंद्वी से झटक ली। दूसरा केकड़ा अपने शिकार को यों जाने देना नहीं चाहता था। वह पीछे से आया, पहले की पीठ पर चढ़ा और अपनी संड़सियां उसने दूसरे के मुंह में ठूंस दीं। संड़सियां आपस में भिड़ गयीं और दोनों केकड़े भयंकर शक्ति के साथ एक-दूसरे से जूझने लगे।

दूसरी किसी मशीन ने इस सबकी ओर तनिक भी ध्यान नहीं दिया, किंतु उन दोनों के लिए यह जीवन-मरण का संघर्ष था। मैंने देखा कि जो केकड़ा दूसरे की पीठ पर चढ़ बैठा था, अचानक उलटा होकर गिर पड़ा और उसकी शिला नीचे सरक जाने से उसके पेट के भीतर की धातु दिखाई देने लगी। पलक मारते उसके शत्रु ने धारा-प्रवाह विद्युत्-चिनगारियों से उसे काटना शुरू कर दिया। जब हारे हुए केकड़े के शरीर के कई टुकड़े हो गये, तो उसने उसके अंदर के तारों, पहियों और कमानियों को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

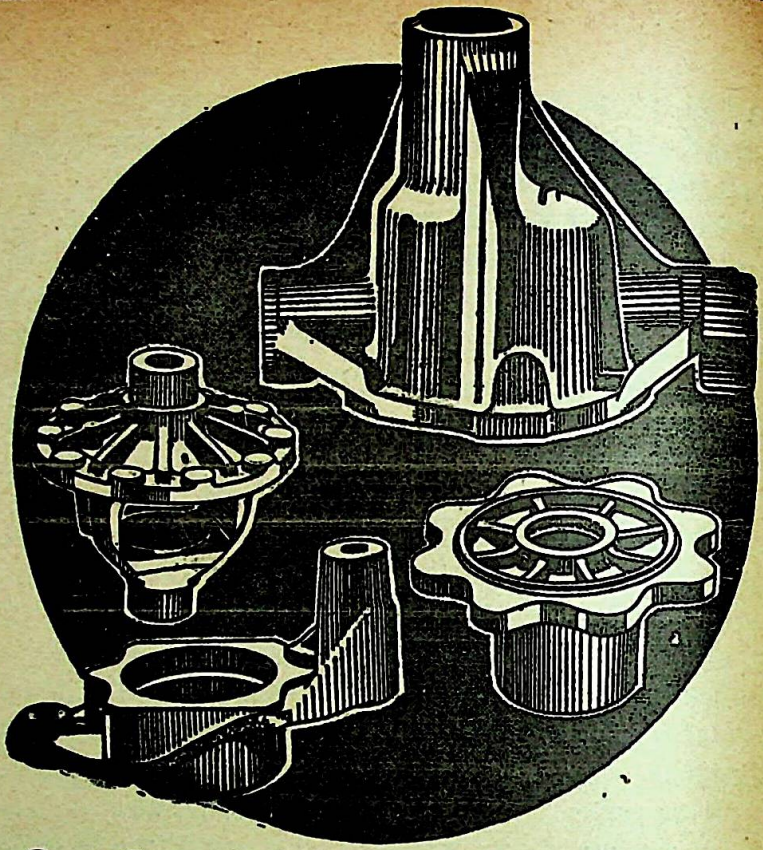

दि इंडियन स्मेल्टिंग एंड रिफाइनींग कंपनी लिमिटेड

का आपको निमंत्रण है, आयात प्रतिस्थापन को सफल बनाइये

एस० जी० आइरन के कास्टिंग

कांसा, पीतल, गनमेटल तथा लौहेतर धातुओं तथा इस्पात के पुर्जों व हिस्सों का स्थान ले सकते हैं।

मैलिएबल आइरन के कास्टिंग

अनेक प्रकार की चीजों में इस्पात के कास्टिंग का काम दे सकते हैं

एस. जी. आयरन और मैलिएबल आइरन के कास्टिंगों में उच्च भौतिक गुण होते हैं, वे खरीदने में सुगम, दृढ़ एवं तन्यतायुक्त होते हैं, उनमें घिसाव कम होता है।

संपर्क कीजिये

फेरस फाउंड्री, पंचपाखाडी, पहला पोखरन लेन, ठाणा (महाराष्ट्र)

उच्च श्रेणी के कास्टिंग्स् व बचत के लिए डबल हैमर ब्रैंड का आग्रह कीजिये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ड़कर अपने मुंह में भरना शुरू कर

रह हासिल किये हुए पुर्जे ज्यों-ज्यों पक्षी के शरीर में जाने लगे, त्यों-ी शिला तेजी से बाहर आने लगी पर तीव्र गति से एक नयी मशीन ण शुरू हो गया।

मिनिट बाद एक नया केकड़ा उस से रेत में उतर पड़ा।

ंने कुकलिंग को अपनी आंखों देखी यी, वह सिर्फ मंद हंसी हंस दिया। तो! यही तो मैं चाहता था।"

ा।

?"

है, मैंने तुम्हें बताया था कि मैं त्रिक जीवों को सुधारना चाहता

पर उससे क्या? तुम अपनी मूल ो और सुधार का तरीका निकालो, द्ध क्यों? अगर यही चीज चलती वे एक-दूसरे को खा जायेंगे।"

कुल ठीक। और वे ही बचेंगे, जो च्छे होंगे।"

क क्षण सोचता रहा, फिर बोला— च्छे? यानी? ये तो सब एक ही हीं हैं क्या? जहां तक मैं समझता ने जैसे ही दूसरे तैयार कर रहे हैं।"

र क्या तुम सोचते हो कि पूरी तरह नकल तैयार करना संभव है? यह जानते ही होगे कि बाल-बेयरिंग क में दो गोलियां ठीक एक सरीखी बनाना असंभव है। दूसरी आसान चीजों की तो बात ही क्या! इन यांत्रिक जीवों में एक अनुकृति-प्रणाली काम करती है, जो इनकी अपनी रचना से इनके द्वारा उत्पन्न किये जाने वाले यांत्रिक जीवों का मिलान करती है। तुम कल्पना कर सकते हो कि तब क्या होगा, जब प्रत्येक क्रमागत अनुकृति मूलभूत नमूने की नकल होने के बजाय अपने से ठीक पहले वाले जीव की नकल होगी? अंततोगत्वा एक ऐसी मशीन तैयार हो सकती है, जो मूल नमूने से बिलकुल भी मिलती-जुलती न हो।"

"लेकिन अगर वह अपने मूल नमूने से मेल नहीं खाती, तो इसका मतलब यह हुआ कि वह अपना मुख्य कार्य नहीं कर पायेगी, यानी अपने प्रजनन का कार्य।" मैंने शंका उठायी।

"खैर, उससे क्या? वह तो बहुत अच्छी बात है। उस कमजोर मशीन को मूल नमूने की बेहतर अनुकृतियां खा जायेंगी और अन्य यांत्रिक जीव उत्पन्न करेंगी, जिनकी रचना में संयोग से ठीक-ठीक वे ही सारे गुण होंगे, जो उन्हें अधिक जीवनक्षम बनाते हैं। इसलिए अधिक मजबूत, अधिक तेज, अधिक सरल अनुकृतियां अस्तित्व में आनी चाहिये। यही कारण है कि मैं अपने मूल नमूने की परवाह नहीं करना चाहता। मुझे तो तब तक सिर्फ इंतजार करना है, जब तक द्वीप पर सारी धातु समाप्त नहीं हो जाती है और वह परस्पर-संहारक युद्ध शुरू नहीं हो जाता, जब ये एक-दूसरे को खाते हुए नये ढंग के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यांत्रिक जीव उत्पन्न करने लगेंगे। इसी तरह वैसे रोबो पैदा होंगे, जैसे मैं चाहता हूं।"

उस रात मैं बहुत देर तक तंबू के सामने रेत पर बैठा सिगरेट पीता रहा और समुद्र की ओर देखता रहा। क्या कुर्कलिंग ने सचमुच कोई ऐसी चीज शुरू कर दी है, जो मानवता के लिए बहुत भयंकर होगी? क्या हमने इस निर्जन द्वीप पर, समुद्र के बीचोबीच, ऐसी भयंकर महामारी पैदा कर दी, है, जो दुनिया-भर की सारी धातु को खा जायेगी?

जब मैं यह सब सोचता हुआ बैठा था, कई धातु-जीव मेरे पास से दौड़ते हुए गुजरे। वे लगातार अपना काम किये जा रहे थे। दौड़ते समय भी उनकी यंत्र-प्रक्रिया चालू थी। एक केकड़ा तो मुझसे टकरा ही गया और मैंने घृणापूर्वक उसे ठोकर मारकर फेंक दिया। वह असहाय होकर अपनी पीठ के बल जा गिरा। तुरंत ही दूसरे दो केकड़े उस पर झपट पड़े और अंधेरे में चकाचौंध पैदा करती हुई विद्युत्-चिनगारियां चमकने लगीं। विद्युत्-चिनगारियों से उस अभागे जीव के टुकड़े-टुकड़े किये जा रहे थे। मुझसे यह सब देखा नहीं गया। दौड़कर मैं तंबू में गया और औजारों के संदूक में से सब्बल निकाल लाया। कुर्कलिंग उस समय खर्राटे भर रहा था।

दबे पांव केकड़ों की उस भीड़ के पास पहुंचकर मैंने अपनी पूरी शक्ति से सब्बल एक केकड़े पर दे मारा। मैंने, न जाने क्यों, यह सोचा था कि इससे दूसरे केकड़े दूर भाग जायेंगे। लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। केकड़े अब उस केकड़े पर टूट पड़े, जिसे मैंने चकनाचूर कर दिया था, और चिनगारियां फिर से उड़ने लगीं।

मैंने फिर कई बार उन पर प्रहार किये, लेकिन उससे सिर्फ इतना हुआ कि विद्युत्-चिनगारियों की मात्रा बढ़ गयी। और द्वीप के आंतरिक भागों से और अधिक केकड़े दौड़ते हुए उस स्थान पर आ पहुंचे।

अंधेरे में मुझे उन मशीनों के धुंधले आकार ही नजर आ रहे थे और मुझे लगा कि उस झुंड में एक केकड़ा बहुत ही बड़ा है। मैंने उस पर सब्बल का निशाना साधा, लेकिन ज्योंही सब्बल उसकी पीठ से छुआ, मैं चीख उठा और उछलकर एक ओर हट गया। सब्बल में करेंट आ गया था और मुझे बिजली का झटका लगा था! हो-न-हो उस दैत्य का शरीर विद्युत्-आविष्ट था।

"विकास के परिणामस्वरूप आत्मरक्षा!" ये शब्द मेरे दिमाग में घूम गये।

ऊपर से नीचे तक कांपता हुआ मैं गूंजती हुई मशीनों के ढेर के पास पहुंचा कि अपना हथियार वापस उठा लूं, लेकिन अब तो उसका सवाल ही नहीं उठता था। अनेक विद्युत्-चापों की कांपती रोशनी में मैंने देखा कि मेरा सब्बल काटा जा रहा है और वह बहुत बड़ा रोबो, जिसे मैं नष्ट करना चाहता था, उस पर सबसे ज्यादा मेहनत कर रहा है।

मैं वापस तंबू में जाकर लेट गया।

जल्दी ही मुझे गहरी नींद आ गयी,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धिक देर के लिए नहीं। अचानक शरीर पर रेंगती किसी ठंडी और ज का अनुभव करके जाग गया ल पड़ा। पहले तो मेरी समझ में आया, फिर मैंने देखा, एक केकड़ा ओर जाकर गायब हो गया। कुछ बीते होंगे कि मैंने एक तेज विद्युत्- देखी। कमबख्त केकड़ा धातु की हमारे तंबू में घुस आया था और का इलेक्ट्रोड उस पीपे को काट जिसमें हमारा पीने का पानी भरा ।

जल्दी से कुकलिंग को झकझोरा लाते हुए बताया कि क्या हो रहा है। पीपे समुद्र में! खाने की सब चीजें ी समुद्र में!" उसने आदेश दिया। पीपे समुद्र के किनारे ले गये और र तक पानी में ले जाकर रेतीली ख दिया। अपने औजार भी हमने रखे।

और थके हुए हम, बिना पलक सुबह तक समुद्र-तट पर बैठे रहे। भारी-भारी सांसें ले रहा था और -मन प्रसन्न हो रहा था कि अपनी ी सजा उसे भी मिल रही है, ब मैं उससे घृणा करने लगा था हता था कि उसे इससे भी भारी ले।

०००

ाद नहीं कि द्वीप पर आये हमें कितने गये थे, पर एक दिन कुकलिंग ने विजय-गर्व के साथ घोषणा की—"अब सबसे अधिक मनोरंजक क्षण आ गया है। सारी धातु खायी जा चुकी है।

वास्तव में हमने उन सब स्थानों पर जाकर देखा, जहां धातु के टुकड़े रखे गये थे, और अब वहां कुछ भी नहीं बचा था। समुद्र के किनारे और झाड़ियों के बीच सिर्फ खाली गड्ढे दिखाई देते थे।

धातु के टुकड़े मशीनों में बदल गये थे, जो भारी संख्या में द्वीप पर दौड़ती फिर रही थीं। उनकी गतिविधियां तीव्र और आक्रामक हो गयी थीं। उनकी बैटरियां पूरी तरह आवेशित हो चुकी थीं, और उनकी शक्ति का उपयोग वे काम के लिए नहीं कर रहे थे, बल्कि वे निरुद्देश्य तट के सहारे-सहारे घूम रहे थे, पठार पर झाड़ियों के बीच रेंग रहे थे। वे एक-दूसरे पर झपटते थे और अक्सर हमारी ओर भी दौड़ पड़ते थे।

मैंने उनका अध्ययन किया, तो पाया कि कुकलिंग ठीक ही कहता था। केकड़े सचमुच विभिन्न प्रकार के हो गये थे। वे एक-दूसरे से आकार में भिन्न थे, उनकी संड़सियों की लंबाई अलग-अलग थी और उनके उदर-कारखानों की क्षमता भी भिन्न थी। कुछ अधिक सक्रिय थे, कुछ कम। उनकी आंतरिक रचना में शायद और भी अधिक अंतर हो गया होगा।

"अच्छा, अब इनकी लड़ाई शुरू होने का समय आ गया है।" कुकलिंग ने कहा।

"तुम मजाक तो नहीं कर रहे?" मैंने पूछा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अखिल भारतीय हिन्दी कहानी, निबन्ध तथा एकांकी प्रतियोगिता—वर्ष १९७१-७२

भाषा विभाग, हरियाणा द्वारा आयोजित अखिल भारतीय हिन्दी कहानी, निबन्ध तथा एकांकी प्रतियोगिता के लिए लेखकों से रचनाएं आमंत्रित की जाती हैं। प्रत्येक विधा की स्थिति में प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय आने वाली रचनाओं के लेखकों-को क्रमशः २५०; १५० तथा १०० रुपये के पुरस्कार दिए जायेंगे। पुरस्कृत रचनाएं, विभाग की मासिक पत्रिका, जनसाहित्य में प्रकाशित की जाएंगी। प्रकाशन के लिये कोई अतिरिक्त पारिश्रमिक नहीं दिया जाएगा। प्रतियोगिता में अपुरस्कृत किन्तु, ऊंचे स्तर की अन्य रचनाएं विभागीय पत्रिकाओं में सपारिश्रमिक प्रकाशित की जाएंगी।

२— रचना मौलिक तथा अप्रकाशित होनी चाहिए। (इस तथ्य की पुष्टि में लेखक द्वारा प्रमाण-पत्र रचना के साथ संलग्न किया जाए।)

३— रचना में कहीं भी लेखक का नाम आदि लिखा नहीं होना चाहिए। लेखक अपना नाम तथा पूरा पता केवल अग्रेषण पत्र में ही लिखें। प्रत्येक रचना के लिए पृथक अग्रेषण पत्र भेजें।

४— रचना की चार टाइप अथवा सुवाच्य अक्षरों में लिखी प्रतियां भेजी जाएं।

५— निर्णायकों का निर्णय अंतिम होगा, जिस पर कोई आपत्ति नहीं की जा सकेगी।

६— परिणाम सितंबर मास में घोषित किया जाएगा। तब तक प्रतियोगिता के लिए भेजी गई रचनाओं को अन्यत्र प्रकाशित न कराया जाए।

७— रचनाएं, निदेशक, भाषा विभाग, हरियाणा (कोठी नं. १५८०, सैक्टर १८—डी) चण्डीगढ़ के पास ३१ अगस्त १९७१ से पूर्व पहुंच जानी चाहिए।

८— पुरस्कृत/अपुरस्कृत रचनाओं की प्रतियां लौटाने का नियम नहीं है।

(त्रि० ना० रंजन)
निदेशक,
भाषा विभाग, हरियाणा
चण्डीगढ़।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुल नहीं। इन्हें कोबाल्ट का
खा देना ही काफी होगा। इनकी
रचना इस तरह की है कि इस धातु
ी मिश्रण से ..... अगर सही शब्दों
ो ..... इनकी पारस्परिक सम्मान-
समाप्त हो जायेगी।"

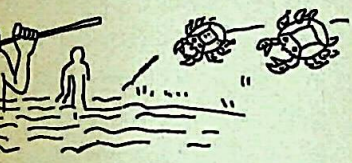

दिन सुबह-सुबह हम अपने "सागर-
" में गये। समुद्र की तह से हमने
ीरपानी के डिब्बे नियमित संख्या में
और निकालीं कोबाल्ट की चार
री छड़ें, जो कुकलिंग ने खास तौर
प्रयोग की निर्णायक स्थिति के लिए
ी थीं।
ह ऊपर उठे हुए हाथों में कोबाल्ट
पकड़े पानी से बाहर निकला, तो
बहुत-से केकड़ों ने उसे घेर लिया।
र झपटे तो नहीं, पर ऐसा दिखाई
जैसे नयी धातु के आ जाने से बहुत
हो गये हैं।
छ ही कदमों की दूरी पर खड़ा था
आश्चर्यचकित होते हुए देखा कि
नें कितने भद्दे ढंग से उछलने की
कर रही हैं।
रहे हो। इनकी चाल-ढाल में कितना
एक-दूसरे से कितने भिन्न हैं ये
र अब हम इनमें जो गृहयुद्ध शुरू
कराने जा रहे हैं, उसमें सिर्फ वे ही बचेंगे, जो सर्वश्रेष्ठ और सबसे अधिक शक्तिशाली होंगे। और उनकी जो संतानें होंगी, उनसे भी ज्यादा अच्छी होंगी।"

इन शब्दों के साथ कुकलिंग ने एक-एक करके चारों छड़ें झाड़ियों में फेंक दीं।

फिर क्या हुआ, इसका वर्णन करना कठिन है।

बहुत-सी मशीनें एक साथ उन छड़ों पर टूट पड़ीं और एक-दूसरे को धक्का देती हुईं वे उन छड़ों को विद्युत् चिनगारियों से काटने लगीं।

अन्य मशीनें रेंगती हुई पीछे से आयीं और प्रयत्न करने लगीं कि उन्हें भी उस धातु का कुछ अंश मिल जाये। उनमें से कुछ बीच में पहुंचने के लिए दूसरी मशीनों की पीठ पर भी चढ़ गयीं।

"देखो, यह है पहली भिड़ंत!" कुकलिंग ने खुशी से तालियां बजाते हुए कहा।

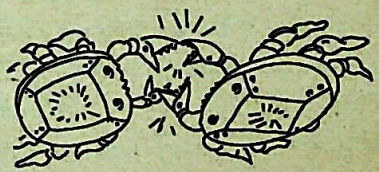

कुछ ही मिनिटों में वह स्थान, जहां उसने कोबाल्ट की छड़ें फेंकी थीं, भयंकर युद्ध-भूमि में परिणत हो गया और उस युद्ध में शामिल होने के लिए और-और यांत्रिक केकड़े दौड़ते चले आ रहे थे।

ज्यों-ज्यों कोबाल्ट के टुकड़े और टूटी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हुई मशीनों के हिस्से अधिक-से-अधिक केकड़ों के पेट में पहुंचने लगे, वे हिंसक और निर्भय परपक्षी होने लगे तथा तुरंत ही अपने साथियों पर आक्रमण करने लगे।

युद्ध के इस पहले चरण में आक्रमणकारी वे थे, जिन्होंने कोबाल्ट का स्वाद चख लिया था, उन्होंने ही उन यांत्रिक जीवों को काट डाला था, जो पूरे द्वीप से अपनी जरूरत की धातु की आशा में दौड़ते आये थे। लेकिन ज्यों-ज्यों अधिक-से-अधिक केकड़ों को कोबाल्ट का स्वाद मिलता गया, लड़ाई तेज होती गयी। और अब तो वे भी, जो इस लड़ाई के दौरान ही पैदा हुए थे, लड़ाई में शामिल हो गये।

यह यांत्रिक जीवों की विलक्षण पीढ़ी थी– आकार में छोटी और असाधारण रूप से त्वरित गति वाली। और मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि वे अपने संचायकों को आवेशित करने के लिए पहले जैसी लंबी प्रक्रिया से नहीं गुजरते। उनके पृष्ठभागों पर अब पहले से कहीं बड़े आईने थे, जिनके द्वारा ग्रहण की हुई सूर्य की ऊर्जा उनके लिए पर्याप्त होती थी। वे विलक्षण रूप से आक्रामक थे और एक साथ कई केकड़ों पर आक्रमण करके वे अपनी चिनगारियों से एक बार में दो या तीन को काट डालते थे।

कुकलिंग पानी में खड़ा था। उसके चेहरे पर अंतहीन आत्मतुष्टि का भाव था और वह हथेलियों को रगड़ता हुआ आश्चर्यपूर्वक कहा रहा था–" बहुत अच्छे, बहुत अच्छे! मुझे अच्छी तरह पता है कि अब क्या होने वाला है!

और मैं मशीनों की उस लड़ाई को घृणा और भयपूर्वक देख रहा था। इस लड़ाई के परिणामस्वरूप क्या उत्पन्न होगा?

दोपहर तक हमारे तंबू के आसपास का पूरा समुद्र-तट एक विशाल रणक्षेत्र बन गया। यांत्रिक जीव पूरे द्वीप से चलकर वहीं आ गये थे और चुपचाप लड़ रहे थे। न कोई रोने-चीखने की आवाज थी, न गोली-बारूद की। इस अजीब लड़ाई में असंख्य विद्युत् चिनगारियों और धातुई शरीरों की टकराहटों में एक विशेष प्रकार की सरसराहट और गड़गड़ाहट शामिल थी।

यद्यपि जो नयी पीढ़ी पैदा हो रही थी, उसमें अधिकांश गोलमटोल और बहुत द्रुतगामी थे, लेकिन कुछ नयी किस्मों के जीव भी प्रकट होने लगे थे। शेष सबसे ये बहुत ही बड़े थे। उनकी गति धीमी थी, लेकिन उनकी शक्ति का पता उन्हें देखकर ही चल जाता था। उन्हें अपने बौने-से आक्रमणकारियों का मुकाबला करने में कोई कठिनाई नहीं हो रही थी।

सूर्यास्त के समय छोटी मशीनों की गतिविधि में एक आकस्मिक परिवर्तन हुआ। वे पश्चिम की ओर जाकर इकट्ठे हो गये और बहुत धीरे-धीरे चलने लगे।

"इन पर शैतान की मार! अब इनका सत्यानाश हुआ!" कुकलिंग ने तीखे स्वर में कहा–" इनमें से किसी के पास संचायक नहीं है। जैसे ही सूरज डूबेगा, ये खत्म हो जायेंगे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यही हुआ। ज्यों ही झाड़ियों की लंबी होकर छोटे यांत्रिक जीवों की ाल मीड़ पर पड़ीं, वे एकदम निष्क्रिय आक्रामक परभक्षियों की वह सेना ा नहीं रही, धातु के निर्जीव डिब्बों ाल संग्रह मात्र रह गयी।

मी की आधी ऊंचाई जितने ऊंचे, केकड़े धीरे-धीरे रेंगते हुए उनके ये और एक-एक करके उन्हें खाने इन विराट् केकड़ों की निर्माण- ों पर उनसे भी बड़ी संतानों की रूप- दिखाई देने लगीं।

लिंग की त्योरियां चढ़ गयीं। स्पष्ट यह वैसा विकास नहीं था, जैसा वह था। विशाल आकार के मंदगति वाले शत्रु की सीमा में जाकर तोड़फोड़ बहुत कमजोर सिद्ध होंगे।

समय विशाल दैत्य वौनी पीढ़ी या कर रहे थे, द्वीप पर एक अस्थायी ा गयी थी। मैं पानी से निकल कुकलिंग भी चुपचाप मेरे पीछे- ला आया। हम द्वीप के पूर्वी भाग में कुछ विश्राम करने चल दिये।

हुत थका हुआ था और ज्यों ही गर्म लायम रेत पर लेटा, मुझे नींद आ

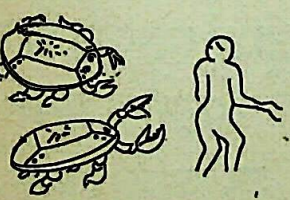

आधी रात के समय एक भयंकर चीख सुनकर मैं जाग उठा। उछलकर खड़ा हुआ, लेकिन मुझे रेत की भूरी-सी पट्टी और समुद्र के सिवा कुछ भी दिखाई नहीं दिया, जो तारों-भरे काले आसमान में जा मिला था।

चीख फिर सुनाई पड़ी, लेकिन इस बार उतने जोर से नहीं, और वह झाड़ियों की तरफ से आती प्रतीत हुई। तभी मेरा ध्यान इस बात पर गया कि कुकलिंग मेरे पास नहीं है। मैं उस स्थान की ओर दौड़ पड़ा, जहां से वह आवाज आती प्रतीत हुई थी।

समुद्र सदा की भांति बहुत शांत था। तट पर टकराने वाली लहरें कम थीं और दूर-दूर से आने के कारण काफी अंतराल के बाद आती थीं। लेकिन मुझे लगा, समुद्र में जिस जगह हमने अपने भोजन और पानी के पात्र जमा कर रखे थे, वहां पानी की सतह में हलचल है। कोई चीज वहां छप-छप और फच-फच की आवाज पैदा कर रही थी। मैंने निश्चय किया कि कुकलिंग वहीं होना चाहिये।

"यहां क्या कर रहे हो, इंजीनियर?" मैं अपने जलगत भंडार के पास पहुंचते हुए चिल्लाया।

"मैं इधर हूं।" अचानक मुझे दाहिनी ओर से आती आवाज सुनाई पड़ी।

"हे भगवान! किधर हो तुम?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

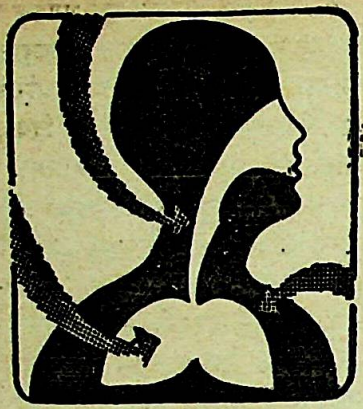

छाती, फेंफडे और गले को निरोग रखने के लिए

ज़ेफ्स गोलिया

छाती और फेफड़ों में जमा बलगम शीघ्र काटती है।
गले की कराल से आराम दिलाती है।
[illegible], [illegible], [illegible] तथा गले की
[illegible] के छुटकारा दिलाती है।
[illegible] [illegible] सूजन, फेरंगाइटिस, [illegible]
[illegible] या यह शर्तिया बढ़िया इलाज है।

इस ज़ेफ्स गोली चूसिए और चुलकर गहरा सीस लीजिए।

ज़ेफ्स की १० गोलियां
[illegible] (स्ट्रिप) में पैकबन्द मिलती है।

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

बवासीर

की पीड़ा से,
बिना ऑपरेशन के,
शीघ्र आराम पाने
के लिये

हडेन्सा

इस्तेमाल कीजिए!

DOL-327/2 HIN

जालिम लोशन

दाद, खुजली की
पेटेन्ट दवा
हर जगह मिलती है

ORIENTAL CHEMICAL WORKS.
RAO (INDORE)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

!" मैंने फिर उसे कहते सुना—
तक पानी में डूबा खड़ा हूं, इधर

ी में घुसा और किसी कठोर चीज
या। वह एक विशाल केकड़ा था,
लंबी संड़सियों के बल पानी की
खड़ा था।
इतनी गहराई में क्यों चले गये ?
रहे हो वहां ?" मैंने पूछा।
पीछा कर रहे थे और मुझे खदेड़-
ले आये हैं।" उस मोटे आदमी ने
वर में कहा।
कर रहे थे ? कौन ?"
!"
नहीं हो सकता ! वे मेरा पीछा
र रहे !"
र पानी में एक केकड़े से टकराया,
लग हट गया, और अंततः इंजी-
निकट आ पहुंचा। वह वास्तव में
ले तक डूबा खड़ा था।
बताओ, क्या हुआ ?"
द भी नहीं समझता।" उसने कांपते
हा—"जब मैं सो रहा था, अचा-
रोबो ने मुझ पर हमला किया
सोचा, यों ही टकरा गया होगा
ग हट गया, लेकिन वह फिर मेरे
या और अपने पंजे से मेरा चेहरा
..... तब मैं उठकर एक तरफ
। उसने मेरा पीछा किया। मैंने
रू कर दिया। केकड़ा भी दौड़ने
र एक और केकड़ा भी उस दौड़
में शामिल हो गया और फिर एक और ...
फिर उनकी एक पूरी भीड़..... और उन्होंने
मुझे यहां तक खदेड़ दिया ....."

"अजीब बात है। ऐसा पहले तो कभी
नहीं हुआ।" मैंने कहा —"अगर वे विकास
के परिणामस्वरूप मनुष्यों से घृणा करने
लगे हैं, तो फिर उन्होंने मुझे क्यों छोड़
दिया ?"

"मुझे नहीं मालूम।" कुकलिंग ने रुंधी
हुई आवाज में कहा —" लेकिन मुझे किनारे
पर जाने में डर लगता है।"

"बकवास !" मैंने कहा और उसकी
बांह पकड़ ली—" किनारे-किनारे पूर्व की
ओर चलो। मैं तुम्हारी रक्षा करूंगा।"

"मगर कैसे ?"

"जल्दी से अपने खाद्य-भंडार के पास
चलते हैं। मैं कोई भारी औजार ले लूंगा—
हथौड़ा या और कुछ।"

"पर वह धातु का नहीं होना चाहिये।"
इंजीनियर ने घबराते हुए कहा—"अच्छा
यह होगा कि लकड़ी की बनी कोई चीज
या किसी बक्से का तख्ता ले लो।"

धीरे-धीरे हम किनारे की ओर बढ़े।
जब हम अपने भंडार के पास पहुंचे, मैंने
कुकलिंग को अकेला छोड़ दिया और पानी
में चलता हुआ किनारे की ओर बढ़ गया।

पानी में जोरदार छप-छप की आवाजें
और मशीनों की परिचित भिनभिनाहट
सुनाई दे रही थी। धातुई जीव हमारे डिब्बों
को तोड़ चुके थे। पानी के बीच बने
भंडार-घर तक उन्होंने अपना रास्ता बना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लया था।

"कुकलिंग, हम लुट गये!" मैं चिल्लाया– "वे हमारे सारे डिब्बे खा गये।"

"खा गये?" उसने सपाट स्वर में कहा– "अब हम क्या करेंगे?"

"यह तो तुम्हें सोचना है कि क्या करें, तुम ही जिम्मेदार हो इस मूर्खतापूर्ण काम के लिए। तुम दुश्मन की तोड़-फोड़ के लिए जैसा यंत्र चाहते थे, विकसित कर लिया। अब तुम ही इस गंदगी को खत्म करो।"

मैं यांत्रिक जीवों का चक्कर लगाता हुआ समुद्र-तट पर पहुंच गया – अंधेरे में केकड़ों के बीच चलते हुए मैंने किनारे पर बिखरे हुए मांस के टुकड़े, डिब्बाबंद अनन्नास और सेब और दूसरी चीजें उठा लीं और उन्हें पठार पर ले गया। किनारे पर बिखरी हुई खाद्यसामग्री को देखने से लगता था कि जब हम सो रहे थे, केकड़े पूरी मेहनत से अपना काम कर रहे थे। एक भी साबुत डिब्बा मुझे नहीं मिला।

जब मैं अपनी बची-खुची खाद्य-सामग्री एकत्र करने में लगा हुआ था, कुकलिंग तट से लगभग बीस कदम दूर गले तक पानी में डूबा खड़ा था। मैं अपने काम में इस तरह सुधबुध खोकर लगा था, और जो कुछ हो चुका था, उससे इतना विक्षुब्ध था कि कुकलिंग के बारे में बिलकुल ही भूल गया। लेकिन जल्दी ही एक चीरती हुई चीख ने मुझे उसके अस्तित्व का भान करा दिया।

"ईश्वर के लिए मेरी रक्षा करो बड! वे मेरे पीछे पड़े हुए हैं।"

मैं तेजी से पानी में घुसा और धातुई दैत्यों से टकराता हुआ जल्दी-जल्दी कुकलिंग की ओर बढ़ चला। उससे लगभग पांच कदम पहले मैं एक और केकड़े से टकराया, लेकिन केकड़े ने मेरी ओर कोई ध्यान नहीं दिया।

"आखिर ये कमबख्त तुमसे ही इतनी नफरत क्यों करते हैं? तुम तो इनके पिता होने का भी दावा कर सकते हो!" मैंने कुकलिंग से कहा।

"मुझे नहीं मालूम।" भर्राये गले से निकलती घरघराती-सी आवाज में इंजीनियर बोला–"लेकिन बड, कुछ करो, इसे यहां से भगाओ। अगर इससे भी बड़ा केकड़ा पैदा हो गया, तो मैं मर जाऊंगा।"

"अच्छा है! यही है तुम्हारा विकासवाद! खैर, यह बताओ कि केकड़े का सबसे कमजोर हिस्सा कौन-सा है? इस यंत्र को कैसे तोड़ा जा सकता है?"

"पहले तो इतना ही काफी था कि इसके परवलयिक शीशे को तोड़ दिया जाये, या इसके अंदर से संचायक निकाल लिया जाये, ...लेकिन अब मुझे नहीं मालूम.....मुझे कुछ विशेष रिसर्च करनी पड़ेगी।"

"जहन्नुम में जाये तुम्हारी रिसर्च!" मैंने दांत पीसते हुए कहा और इंजीनियर के मुंह की ओर बढ़ते हुए केकड़े के सामने वाले पंजे को पकड़ लिया। केकड़ा पीछे मुड़ गया। मैंने उसका दूसरा पैर भी पकड़ लिया। उसकी स्पर्शिकाएं तांबे के तार की तरह आसानी से मुड़ गयीं।

धातुई जीव को यह प्रक्रिया अच्छी नहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

र वह धीरे-धीरे पानी के बाहर
गा। कुकलिंग और मैं किनारे की
ड़ने लगे।

दय के समय सारे यांत्रिक जीव पानी
ल आये और किनारे पर आकर धूप
गे। मैंने पत्थर मार-मारकर लग-
ास केकड़ों के आईने फोड़ दिये और
क्य हो गये।

न दुर्भाग्य से इससे स्थिति में कोई
नहीं हुआ। तुरंत ही वे अन्य जीवों
र बन गये और आश्चर्यजनक तेजी
नये जीवों का निर्माण होने लगा।
तनी शक्ति नहीं थी कि सारी मशीनों
पर लगी हुई सिलिकन वैटरियां
कूं। कई बार विद्युत्धारी केकड़ों के
में आने के कारण उनसे लड़ने की
का मेरा इरादा और भी कमजोर
।

इस बीच कुकलिंग सारे समय समुद्र
रहा।

ही उन दैत्यों का फिर युद्ध शुरू हो
र ऐसा लगा जैसे वे कुकलिंग को
भूल गये हों।

दोनों उस रणस्थली को छोड़कर
दूसरे भाग की ओर चल पड़े। कुक-
टों तक पानी में खड़े रहने के कारण
ठिठुर गया था कि उसने रेत पर लेट-
से दांत कटकटाते हुए कहा—"मुझे
से ढंक दो।"

अच्छी तरह रेत में दबाकर मैं अपने
ओर लौटा कि अपने कपड़े और

खाने-पीने का जो सामान बचा है, उसे उठा लाऊं। वहां पहुंचने पर मुझे पता चला कि तंबू नष्ट हो चुका है। उसे खड़ा करने के लिए रेत में हमने जो धातु की खूंटियां गाड़ी थीं, वे गायब हो चुकी थीं। यही हाल उन छल्लों का था, जो तंबू को रस्सी से बांधने के काम आते थे।

त्रिपाल के नीचे मुझे अपने कपड़े मिले, लेकिन उन पर भी केकड़ों के द्वारा ही गयी धातु की तलाश के चिन्ह अंकित थे। धातु का प्रत्येक हुक और बक्कल और बटन गायब था और उनकी जगहों पर कपड़ा झुलसा हुआ था।

इस बीच यांत्रिक जीवों की लड़ाई सागर तट से हटकर द्वीप के भीतरी भाग में होने लगी थी। पठार के ऊपर से मुझे द्वीप के लग-भग केंद्र में अपनी संड़सियों के बल झाड़ियों के बीच खड़े कई मानवाकार दैत्य दिखाई दे रहे थे।

दो-दो करके वे धीरे-धीरे विपरीत दिशाओं में चले जाते और फिर भयंकर तेजी के साथ वापस एक-दूसरे की ओर दौड़ पड़ते। उनके टकराने से धातु के जोर से बजने की आवाज उठती। इन दैत्यों की मंद गतिविधियों के पीछे स्पष्ट ही अत्यधिक भार और शक्ति छिपी हुई थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आप बस में बैठे हों या टैक्सी में, कार को सवारी कर रहे हों या लॉरी को, स्कूटर चला रहे हों या बाईसिकल, यह टायर कॉर्ड है जो आपको सुगमता और सुरक्षा के साथ तेज़ी से आगे ले जाता है। सभी टायर-निर्माताओं ने एक स्वर से कहा है कि सेन्चुरी रेयॉन टायर-कॉर्ड दुनिया के बेहतरीन टायर-कॉर्ड का मुक़ाबला करता है। हलके या भारी, किसी भी तरह के काम के टायरों के लिये सेन्चुरी रेयॉन के टायर-कॉर्ड का इस्तेमाल होता है।

भारत में टायरों की माँग जिस तेज़ी से बढ़ती जा रही है उसको ध्यान में रखकर सेन्चुरी रेयॉन ने टायर-कॉर्ड के अपने उत्पादन को दुगुना कर दिया है। जहाँ पहले २१ लाख किलोग्राम टायर-कॉर्ड का उत्पादन किया जाता था, वहाँ अब ४६ लाख किलोग्राम टायर-कॉर्ड का उत्पादन किया जायेगा। हिन्दुस्तान में बननेवाले ५० फ़ी सदी टायरों का निर्माण इसी टायर-कॉर्ड से होता है। अब जब कभी आप किसी गाड़ी पर सवार हों तो जान लें कि आप सवार हैं—सेन्चुरी रेयॉन टायर-कॉर्ड पर।

तमाम गाड़ियों के टायरों में सेन्चुरी रेयॉन

Century Rayon

सेन्चुरी रेयॉन

इलहो हाउस, चर्चगेट रिक्लमेशन
बंबई-२०

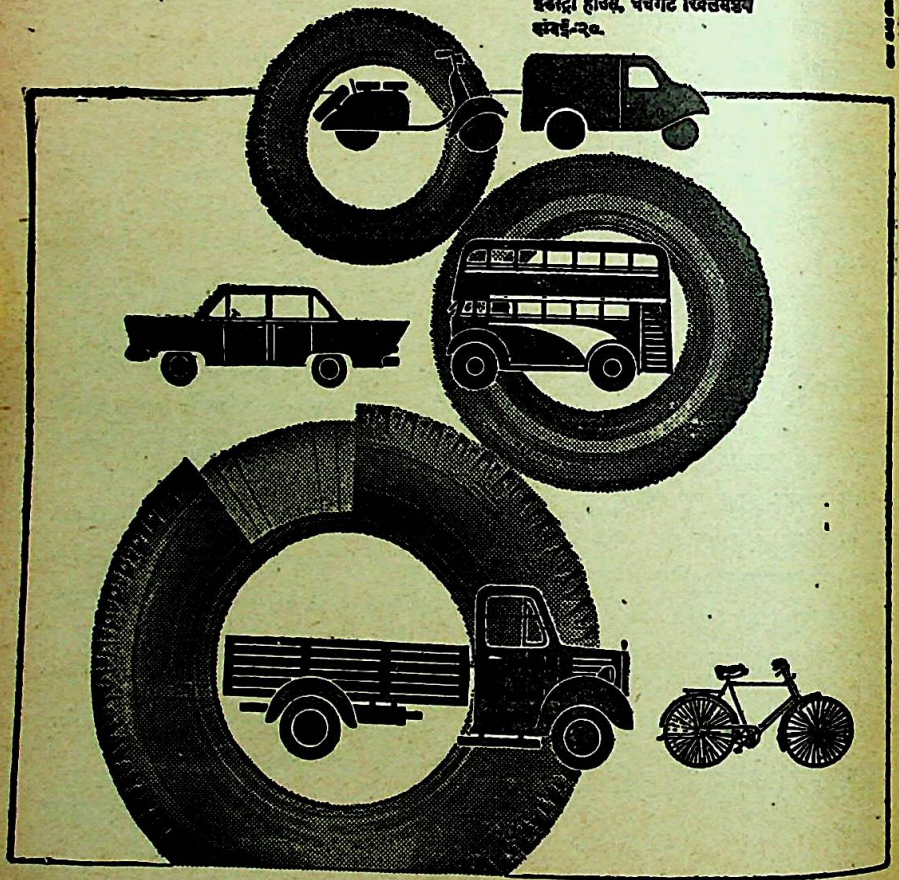

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खते-ही-देखते कई मशीनें पछाड़
और उसके बाद टुकड़े-टुकड़े कर
ं।
मैं उन पागल मशीनों के बीच होते
यों को देख-देखकर पूरी तरह
ा था। इसलिए मैंने तंबू वाली
जो भी सामान मिला, अपनी पीठ
और धीरे-धीरे कुर्कलिंग की ओर
सूर्य बहुत ही निर्दय होकर चमक
इसलिए कुर्कलिंग के पास पहुंचने
मैंने रुककर समुद्र में कुछ गोते
।
र के समुद्र-स्नान के बाद थका
लिंग रेत के जिस ढेर में पड़ा सो
उसके पास मैं पहुंचने ही वाला था
विशालकाय केकड़ा झाड़ियों के
र पर प्रकट हुआ।
उससे भी ऊंचा था। उसके पंजे लंबे
थे और वह बड़े भद्दे ढंग से उछल-
चल रहा था। अजीब-सी मुद्रा में
ोर आगे की ओर झुका हुआ था।
मने वाली स्पर्शिकाएं बहुत ही
और रेत पर कुछ टोह लेती हुई
हीं। उसका उदर-यंत्रागार अत्य-
था और लगभग उसके आधे
घेरे हुए था।

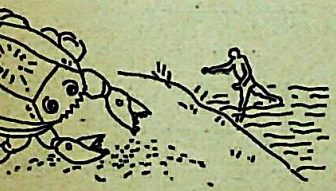

"मगरमच्छी दैत्य!" यह नाम मैंने उसे स्वतः ही दे डाला। वह धीरे-धीरे बड़े घृणास्पद ढंग से चलता समुद्र-तट तक आया और हर दिशा में घूमकर देखने लगा, मानो उसे किसी विशेष स्थान की तलाश हो। अपने आप ही मैंने उस पर तंबू फेंक दिया, वैसे ही जैसे गाय सामने से आ जाने पर उस पर कपड़ा डाल देते हैं। लेकिन उसने मेरी ओर बिलकुल ध्यान नहीं दिया। आड़े-टेढ़े अजीब ढंग से चलता हुआ वह पीछे लौटने लगा और रेत के उस टीले तक पहुंच गया, जिसके नीचे कुर्कलिंग सो रहा था।

अगर मैं समझ गया होता कि वह दैत्य कुर्कलिंग की खोज में है, तो मैं तुरंत उसकी सहायता के लिए दौड़ पड़ता, लेकिन उसके जाने की दिशा इतनी अस्पष्ट थी कि मुझे लगा, वह समुद्र की ओर जा रहा है। लेकिन ज्यों ही उसके पैर पानी से छुए, वह तेजी से मुड़ा और कुर्कलिंग की ओर दौड़ पड़ा। मैं भी सारी चीजें वहीं पटककर उसी दिशा में दौड़ा।

'मगरमच्छी दैत्य' उसके पास जाकर धीरे-से बैठ गया। मैंने देखा कि उसकी लंबी स्पर्शिकाएं रेत में चलती हुई कुर्कलिंग के चेहरे पर पहुंच रही हैं।

अगले ही क्षण रेत का वह ढेर धूल का बगूला बनकर उड़ने लगा। कुर्कलिंग जैसे डंक मारे जाने पर उछल पड़ा था और आतंकित होकर उस विशाल दैत्य की पकड़ से छूटने की कोशिश कर रहा था।

लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

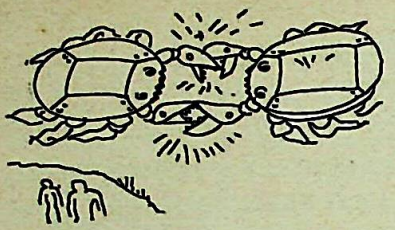

पतली स्पर्शिकाएं कुर्कलिंग की मोटी गर्दन में कसकर लिपट गयी थीं और उसे ऊपर उठा रही थीं– मशीन के मुंह की ओर कुर्कलिंग असहाय होकर हवा में लटका हुआ था और उसके हाथ-पांव भारी होकर झूल रहे थे।

यद्यपि मैं संपूर्ण हृदय से उससे घृणा करता था, फिर भी मैं उसे धातु के बने एक अविवेकी, सनकी जीव के हाथों नष्ट नहीं होने देना चाहता था। कुछ भी सोचे बिना मैंने केकड़े के विशाल पंजे पकड़ लिये और पूरी शक्ति से उन्हें खींचने लगा। लेकिन मुझे लगा, जैसे मैं जमीन में गहरे गड़े हुए फौलादी खंभे को खींच रहा हूं। 'मगर-मच्छी दैत्य' मुझसे हिला तक नहीं।

तब मैं उसकी पीठ पर चढ़ बैठा। एक क्षण के लिए कुर्कलिंग का विकृत चेहरा मेरे चेहरे के करीब आया। अचानक मेरे दिमाग में कौंधा–"इसके दांत! स्टेनलेस स्टील के नकली दांत!"

धूप में चमकते हुए परवलयिक आईने को तोड़ने के लिए मैंने पूरे जोर से मुष्टि-प्रहार किया। केकड़ा खड़े-खड़े ही घूम गया। कुर्कलिंग का स्याह चेहरा और बाहर को निकली पड़ती आंखें अब उस मशीन के मुंह के पास आ गयी थीं। और तब वह भयानक बात हुई। विद्युत्-चिनगारियां उसके मस्तक और कनपटियों से टकरायीं। केकड़े की स्पर्शिकाएं अचानक ढीली पड़ गयीं और यांत्रिक महामारी के जनक कुर्कलिंग का भारी निर्जीव शरीर रेत पर गिर पड़ा।

जब मैं कुर्कलिंग को दफना रहा था, कई विशाल केकड़े द्वीप पर एक-दूसरे का पीछा करते हुए दौड़ रहे थे। उन्हें मेरा या कुर्कलिंग के शव का जरा भी ध्यान नहीं था।

मैंने उसके शव को तंबू के मोमजामे में लपेटा और द्वीप के बीचोबीच रेत में कब्र खोदकर गाड़ दिया। लेकिन ऐसा करते समय मुझे दुःख या खेद की अनुभूति बिलकुल भी नहीं हुई। मेरा झुलसा हुआ चेहरा रेत से किरकिरा हो रहा था और मैं मन-ही-मन उस मृत व्यक्ति को उसके भयानक आविष्कार के लिए कोस रहा था।

इसके बाद मैं कई दिनों तक समुद्र-तट पर निश्चेष्ट पड़ा रहा। मेरी आंखें क्षितिज पर लगी रहतीं, जहां मुझे लेने आने वाला जहाज प्रकट होने वाला था। समय बड़ी यातनादायक मंदगति से बीत रहा था और निर्दय सूर्य मानो मेरे ऊपर आकर ही स्थिर हो गया था। बीच-बीच में मैं घिसटता हुआ पानी तक जाता और अपना झुलसा हुआ चेहरा उसमें डुबा देता।

अपनी भूख और भयंकर प्यास को भूलने के लिए मैंने अमूर्त चीजों के बारे में सोचने की कोशिश की। मैंने सोचा, हमारे समय में कितने योग्य व्यक्ति अपने विवेक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यों का प्रयोग दूसरों को हानि पहुं-
लिए करते हैं। उदाहरण के लिए
का आविष्कार ही लो! मेरा
मत था कि इस आविष्कार को
दृश्य के लिए भी इस्तेमाल किया
ा था—संभवतः धातु की खानों
जीवों के विकास को इस प्रकार
किया जा सकता था कि ये उस
अत्यंत कुशलतापूर्वक कर सकते।
ोचते मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि
ीन को ठीक तरह से पूर्ण बनाया
वह विशाल और कुत्सित दैत्य के
कृत नहीं होगी।
दिन एक विशाल गोलाकार छाया
ड़ी। मैंने बड़ी कठिनाई से अपना
कर देखा कि मेरे और सूर्य के बीच
आ गयी है और पाया कि मैं एक
र कर्कट-दैत्य की स्पर्शिकाओं के
हूं, जो पानी के किनारे चला आया
ऐसा लगता था मानो क्षितिज की

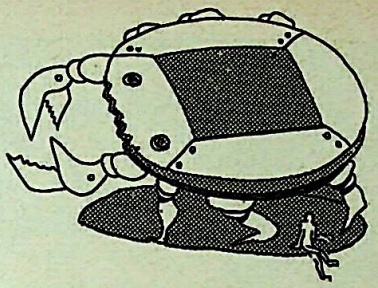

ओर देखता हुआ किसी चीज की प्रतीक्षा कर रहा हो। तब मुझे दृष्टि-विभ्रम होने लगा। मेरे बीमार मस्तिष्क में वह दैत्य केकड़ा ताजे पानी की एक टंकी बन गया, जो इतनी ऊंची उठी हुई थी कि मैं उस तक पहुंच नहीं सकता था।

०००

जब मुझे होश आया, मैं जहाज पर था। और जब कप्तान गेल ने मुझसे पूछा कि क्या समुद्र-तट पर पड़ी हुई उस अजीब-सी दिखाई देने वाली विशाल मशीन को अपने साथ ले चलें, तो मैंने कहा कि अभी उसकी कोई आवश्यकता नहीं है।

★

ज्ञानिक ज्ञान और उद्योगतंत्रीय यंत्र-कौशल की ताजातर प्रगति से उत्तेजना
ारा जीवनक्रम अश्रुतपूर्व गति से बदलता जा रहा है। लोगों के दैनिक जीवन में
रही है। .....मगर वैज्ञानिकों ने हमारे लिए तनाव, खतरें और अवसर का
ी प्रस्तुत कर दिया है। यदि पिछली सभ्यताएं पक्षाघात और पांडुरोग से मरी
ंभव है, हमारी सभ्यता मिर्गी के दौरे से मर जाये। विज्ञान और उद्योगतंत्र ने
यी शक्तियां सौंपी हैं, उनसे हमारी यह क्षमता बहुत अधिक बढ़ गयी है कि हम
अपने भले के लिए, चाहे अपने बुरे के लिए अपने जीवन को बदल लें। इन सब
के सदुपयोग से हमें बल और पूर्णतर स्वातंत्र्य मिल सकता है, व्यक्ति और समाज
क अच्छा मानवीय जीवन मिल सकता है। इन शक्तियों के सदुपयोग से उथल-
र विनाश बरपा हो सकते हैं। वर्तमान क्षण परीक्षा का क्षण है। —डा. राधाकृष्णन्

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

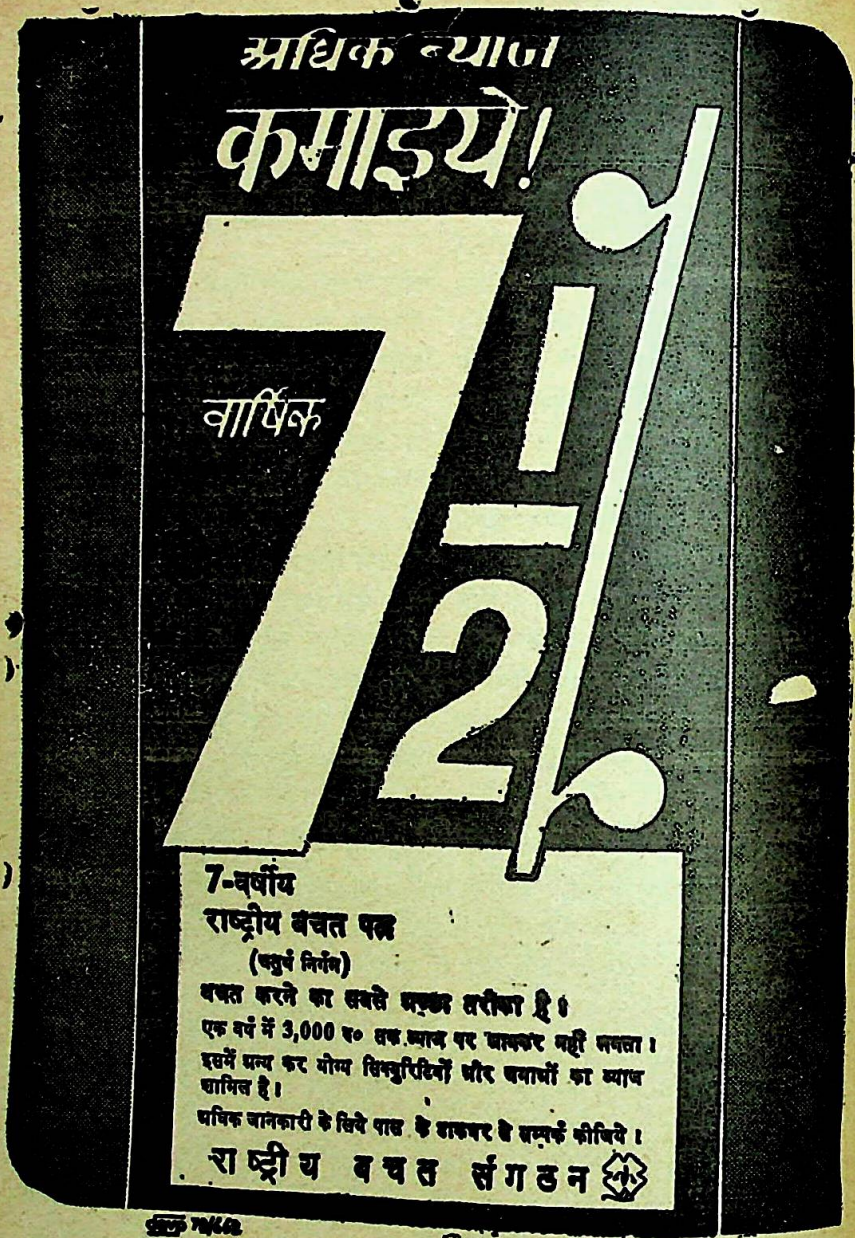

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आम बीमा
अब सार्वजनिक क्षेत्र में

अध्यादेश द्वारा सरकार ने आम बीमा व्यवसाय के प्रबंध को १३ मई १९७१ र्वजनिक क्षेत्र में ले लिया है। प्रस्तुत है इस बारे में यह विशेष विवरण।

डा० सुकमाल जैन

द की दिशा में एक और कदम। के दस सूत्री कार्यक्रम का एक आ। अब आम बीमा का लाभ ी को भी मिल सकेगा। ये हैं वे क्याएं, जो विभिन्न लोगों ने १३ से सरकार द्वारा आम बीमा करण की दिशा में पहला कदम उसका प्रबंध अपने हाथ में लेने कीं।

राष्ट्रपति ने एक अध्यादेश जारी सके अनुसार इस काम में लगी ौर विदेशी कंपनियों का प्रबंध क्षेत्र से छीनकर सार्वजनिक दिया गया। सरकार के इस नये श में कार्यरत बीमा कंपनियों ारतीय और ४२ विदेशी कंप-बंध सार्वजनिक क्षेत्र में ले लिया

नियों की कुल संपत्ति लगभग ड़ रुपये है। इन कंपनियों ने १९६७ ौर १९६९ में औसतन २.७५ करोड़ रुपये लाभ प्राप्त किया था। और १९६९ में इनके द्वारा लिया गया प्रीमियम इस प्रकार था—भारतीय कंपनियां : १०८ करोड़ रुपये और विदेशी कंपनियां : २३ करोड़ रुपये।

इन प्रतिष्ठानों में लगभग २५,००० कर्मचारी काम करते हैं। इस तरह सरकार के इस कदम ने बीमा के सैकड़ों वर्षों के इतिहास में एक नया मोड़ ला दिया है। इससे काफी बड़े पैमाने पर लोग प्रभावित होंगे।

बीमा कब से शुरू हुआ?

बीमा का इतिहास बहुत पुराना है। लगता है, संपत्ति के नष्ट होने के भय और उससे मुक्ति के उपायों ने बीमा को जन्म दिया। इतिहासवेत्ताओं के अनुसार चार हजार वर्ष पहले प्राचीन बेबीलोन में बीमा प्रचलित था, लेकिन यह एक रहस्य ही है कि उस समय लोग किस चीज का और किस खतरे के कारण बीमा कराते थे।

बीमा का एक अत्यंत प्रारंभिक रूप समुद्री बीमा है, लेकिन इस संबंध में यह भी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बड़ी विचित्र बात है कि वेनिस के सुप्रसिद्ध व्यापारी एंटोनियो ने समुद्री बीमा क्यों नहीं कराया कि उसे समुद्री खतरे का सामना करना पड़ा? समुद्री बीमा में भी एक अनोखी बात यह थी कि जहां वस्तुओं का बीमा जरूरी समझा जाता था, वहां नाविकों का बीमा कराने की कोई जरूरत नहीं समझी जाती थी।

हमारे देश में भी वैदिक युग से बीमा की परंपरा चली आ रही है। उन दिनों व्यापारी सहकारी ढंग से बीमा करते थे, ताकि समुद्रों में आये खतरों से उन्हें आर्थिक नुकसान न सहना पड़े; क्योंकि उन दिनों सुदूर पूर्व और भूमध्य सागर के कई देशों से हमारे व्यापारिक संबंध थे। बाद में पश्चिम में हुए औद्योगीकरण ने भारतीय व्यापार को बहुत प्रभावित किया और हमारे देश में अंग्रेजों ने व्यापारिक दृष्टि से बीमा के क्षेत्र में पहल की।

अंग्रेजों ने पहली आम बीमा कंपनी भारत में सन १७१० में स्थापित की। बाद में अठारहवीं शताब्दी के अंत में अंग्रेज कंपनियों के एकाधिकार को खत्म करते हुए पहली भारतीय समुद्री बीमा कंपनी खोली गयी। समुद्री बीमा के बाद सन १८१८ में जीवन-बीमा शुरू हुआ और सन १८२५ में अग्नि-बीमा।

प्रारंभिक अवस्था में आम बीमा प्रायः विदेशी प्रतिष्ठानों के हाथ में ही था। बाद में धीरे-धीरे भारतीय व्यापारियों ने भी इस क्षेत्र में काम शुरू किया। १९ वीं सदी के अंतिम वर्षों में राष्ट्रीयता की भावना ने जोर पकड़ा और बीसवीं शताब्दी के शुरू में कुछ भारतीय कंपनियां सामने आयीं। इसके साथ ही सन १९१२ में सरकार ने बीमा-कानून बनाया।

प्रथम विश्व-युद्ध के बाद तक भारत में राष्ट्रीय प्रवृत्तियां अत्यधिक शक्तिशाली हो चुकी थीं और उस समय लगभग आधी दर्जन ऐसी कंपनियां बनीं, जिनका पूरा स्वामित्व भारतीयों के पास था। उनका सामना डेढ़सौ विदेशी कंपनियों से था, पर भारतीय कंपनियां निराश नहीं हुईं। स्थिति को सुव्यवस्थित करने के लिए १९३८ में नया बीमा-कानून पास किया गया और आम बीमा की प्रगति निरंतर जारी रही।

तालिका—१. देश में बीमा कंपनियों की संख्या

सन	भारतीय	विदेशी	कुल
१९४०	३७	८८	१२५
१९४५	८७	९८	१८५
१९५०	१०३	१००	२०३
१९५५	१००	१०२	२०२
१९६०	८२	७३	१५५
१९६५	७३	६५	१३८
१९६९	७२	५२	१२४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तालिका –२. १९६९ में बीमा कंपनियों की संख्या और क्षेत्र

अग्नि-बीमा	समुद्री-बीमा	विविध	अग्नि और विविध	अग्नि, समुद्री, तथा विविध	कुल
२	१०	८	६	४६	७२
४	१	१	२	४४	५२
६	११	९	८	९०	१२४

का–१ (पृष्ठ १६६) में १९४० से
क भारतीय और विदेशी बीमा
की संख्या देखी जा सकती है।
कंपनियों की प्रगति के साथ-साथ
क्षेत्र में भी विस्तार हुआ। समुद्री-
र अग्नि-बीमा के अतिरिक्त अन्य
समय भी बीमा की सुविधाएं दी
। १९६९ में विभिन्न बीमा करने
नियों का विवरण इसी पृष्ठ पर
ालिका–२ (पृष्ठ १६७) में देखा
है।
रतीय और विदेशी कंपनियों की
का विभिन्न प्रकार से विनियोजन
या था। देखिये तालिका–३
६९)।

रण व समाजवाद

यह उठता है कि सरकार को
चले आ रहे इस व्यवसाय को अपने
ने की जरूरत क्यों महसूस हुई?
रण की प्रक्रिया कैसे पूरी की
राष्ट्रीयकरण के बाद समाज को
ाय से अधिक-से-अधिक लाभ देने
या किया जायेगा? क्या समाज का
भला आम बीमा के राष्ट्रीयकरण से संभव है? इस रास्ते में क्या कठिनाइयां हैं और उन्हें कैसे दूर किया जाना जरूरी है?

जहां तक आम बीमे के राष्ट्रीयकरण का प्रश्न है, कांग्रेस सरकार इस दिशा में बहुत पहले से विचार करती आ रही थी। कांग्रेस के दस सूत्री कार्यक्रम में भी आम बीमा के राष्ट्रीयकरण की बात कही गयी थी। जीवन-बीमा के राष्ट्रीयकरण के समय आम बीमा के राष्ट्रीयकरण की आवाज भी उठायी गयी थी, किंतु ऐसा नहीं किया गया।

बाद में ऐसी कई शिकायतें सामने आयीं, जिनसे इन बीमा कंपनियों में चल रही अव्यवस्था का संकेत मिलता था, जैसे प्रीमियम तय करने में गड़बड़, दावों के भुगतान में पक्षपात और अनावश्यक विलंब, संपत्तियों का गलत ढंग से रखा जाना, उद्योगपतियों के हित में काम करना आदि।

विशेष आरोप यह लगाया जाता था कि ये बीमा कंपनियां किसी-न-किसी औद्योगिक समूह से संबंधित हैं और उनके ही हितों का सबसे ज्यादा ध्यान रखती हैं। समाज का उनसे कोई भला नहीं होता। शहरों को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कास्टिक सोडा (रेयान ग्रेड) सोडा एश, सोडा बाइकार्ब लिक्विड क्लोराइन हाइड्रोक्लोरिक एसिड, ब्लीच लिकर, कैल्शियम क्लोराइड साल्ट, ट्रायक्लोरोथायलीन और परक्लोरोथायलीन आदि, जिनसे उद्योग-धंधे चलते हैं

ऐसे भारी रसायनों के निर्माता

ध्रांगध्रा केमिकल वर्क्स लिमिटेड

'निर्मल' तीसरा मजला
२४१, बैकबे रिक्लेमेशन
नरीमन प्वाइंट, बंबई–२०

अपनी आवश्यकताओं के लिए बंबई कार्यालय को लिखें।

रजिस्टर्ड ऑफिस : ध्रांगध्रा (गुजरात राज्य)

तार : सोडाकेम, बंबई

टेलिफोन : २९३२९४
२९३२३५
२९३३३०

छोटा परिवार–सुखी परिवार

Remember
KORES
for
CORRESPONDENCE

KORES (INDIA) LIMITED

Manufacturers of CARBON PAPERS, TYPEWRITER RIBBONS, "DRYTYPE" STENCILS, DUPLICATING INKS.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न कंपनियों ने कभी ग्रामीण सेवा नहीं की और न इस बारे साह ही दिखाया।

में विदेशी कंपनियों के व्यापार के लिए जरूरी विदेशी मुद्रा का ता था। हमारे यहां १२ देशों ां थीं, यानी इंग्लैंड, अमरीका, स्विट्जरलैंड, आस्ट्रेलिया, हांग-, स्वीडन, कनाडा, जापान, र इटली। भारतीय कंपनियों शी कंपनियों में पुनर्बीमा के करोड़ों रुपयों की विदेशी मुद्रा ारत को उठाना पड़ता था। उदा-ए न्यूजीलैंड की बीमा कंपनियां में काफी प्रीमियम कमाती थीं, शि देश के काम आ सकती है।

इस प्रकार आर्थिक और सामाजिक कारणों से सरकार ने यह महसूस किया कि यदि इन कंपनियों को इसी तरह कार्य करने दिया गया, तो बीमा का वास्तविक लाभ समाज के अधिकांश लोगों को न मिलकर केवल शहरों के कुछ गिने-चुने वर्गों को ही मिलेगा। राष्ट्रीयकरण इस दिशा में इसलिए उपयोगी साबित होगा कि आम बीमा के वर्तमान क्षेत्र के अतिरिक्त नये क्षेत्रों में बसे लोगों का हित भी इसके द्वारा किया जा सकेगा।

जहां तक राष्ट्रीयकरण की प्रक्रिया पूरी करने की बात है, इसे दो स्तरों पर पूरा किया जा रहा है। पहले स्तर पर कंपनियों का प्रबंध सरकार ने अपने हाथ में ले लिया है और इसकी क्षतिपूर्ति के रूप में उन्हें

ा—३. भारतीय और विदेशी कंपनियों की संपत्ति का विनियोजन

विवरण	भारतीय कंपनियां		विदेशी	कंपनियां
कार और अर्धसरकारी तियां	४·८	प्रतिशत	८·७	प्रतिशत
कारों की प्रतिभूतियां	१·४	,,	.....	,,
प्रतिभूतियां—भारतीय ों में	३७·१	,,	२२·५	,,
ति	३·८	,,	५·०	,,
द आदि	२०·२	,,	३६·०	,,
	२·८	,,	५·१	,,
	२१·९	,,	१३·६	,,
	८·०	,,	९·१	,,
	१००·०		१००·०	

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection: Digitized by eGangotri

१९६७, १९६८ और १९६९ में हुए औसत लाभ का बारहवां भाग प्रति माह या १९६९ में हुई प्रीमियम आय के प्रति १,००० रुपये पर २.५० रुपये, इनमें से जो भी ज्यादा हो, दिया जायेगा।।

दूसरे स्तर पर विदेशी कंपनियों की क्षतिपूर्ति की जायेगी। उनकी क्षतिपूर्ति की राशि २८ लाख प्रति माह है। लाभ के आधार पर भी क्षतिपूर्ति करने से यह राशि कुछ ज्यादा होगी; क्योंकि कुछ कंपनियां लाभ के आधार पर क्षतिपूर्ति की रकम प्राप्त करेंगी। क्षतिपूर्ति का यही आधार १९५६ में भी अपनाया गया था।

प्रबंध-संचालन के लिए फिलहाल कस्टोडियनों की नियुक्ति कर दी गयी है, लेकिन सरकारी स्वामित्व के बाद संभावना यह है कि आम बीमा का संचालन करने के लिए चार स्वायत्त निगम बनाये जायेंगे। इनकी स्थापना बंबई, मद्रास, कलकत्ता और दिल्ली में की जायेगी, और उन्हें आपस में प्रतिस्पर्धा करके पूरे देश में आम बीमा व्यवसाय करने की स्वतंत्रता दी जायेगी। पुनर्बीमा का काम भी इन्हीं को सौंपा जायेगा।

अब बात आती है आम बीमा के राष्ट्रीयकरण के बाद आम जनता को उससे लाभ पहुंचाने की। अब तक आम बीमा की सुविधा केवल नगरों तक ही सीमित रही और आम बीमा-व्यवसाय ने ग्रामीण इलाके में प्रवेश करने की कोशिश नहीं की। सरकार इस दिशा में बहुत कुछ काम कर सकती है। उसी तरह जैसे उसने बैंकों की शाखाएं बड़े गांवों में खोलकर किया है।

किसानों को फसल के नष्ट होने, बीज खराब हो जाने, बाढ़ आदि से मकान और संपत्ति के नष्ट हो जाने जैसे खतरों का सामना करना पड़ता है। अगर सरकारी निगम जीवन-बीमा की तरह गांवों में पहुंचकर अधिकांश जनता को आम बीमा की सुविधाएं प्रदान कर सकें, तो व्यापक अर्थों में इससे समाज की भलाई होगी।

लेकिन समाज की भलाई का यह रास्ता इतना सरल नहीं है। प्रबंधक की शिथिलता सरकार के सारे इरादों पर पानी फेर सकती है। जिन कंपनियों को सरकार ने अपने हाथ में लिया है, उनमें से कई कुशल प्रबंध के अंतर्गत संचालित होती रही हैं और अपने ग्राहकों के दावों को निपटाने में उन्होंने हमेशा तत्परता दिखायी है।

यदि दावों के भुगतान में तत्परता न दिखायी गयी, तो जनता का विश्वास सरकारी कामकाज पर से बिलकुल उठ जायेगा। सरकार को ऐसी स्थिति नहीं आने देना चाहिये। इसके लिए उसे प्रबंध की दृष्टि से आधुनिक पद्धतियों को अपनाना होगा, ताकि बीमा के क्षेत्र में संलग्न व्यक्ति अपनी पूरी क्षमता से काम करें और देश की जनता को बीमा की अधिकाधिक सुविधाएं देने का अपना उत्तरदायित्व पूरा कर सकें।

साथ ही कर्मचारियों को जिम्मेदारी महसूस करनी होगी, ताकि सार्वजनिक क्षेत्र के अन्य प्रतिष्ठानों में व्याप्त शिथिलता इस क्षेत्र को अपने पंजे में न जकड़ने पाये।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुस्तक-परिचय

नितान्त मेरी हैं (कवितासंग्रह): राही; प्रकाशक : नेशनल हाउस, दिल्ली; पृष्ठ : ८७; पये ५० पैसे।

आधुनिकता लाने का श्रेय अगर गीतकार को दिया जा सकता है, वालस्वरूप राही। उनका प्रथम लन 'मेरा रूप तुम्हारा दर्पण' वर्ष पूर्व प्रकाशित हुआ था। राही गीतकार की लोकप्रियता न छू रहे थे, लेकिन इन दस वर्षों सस्ती लोकप्रियता से हटकर गीत कूल भाव, भाषा और रूप देने किया है और वे सफल भी हुए हैं। गीत हिन्दी में लिखे और प्राय: ाकर सुनाये जाने वाले गीतों से हैं, यह बताते हुए राही ने प्रस्तुत भूमिका में लिखा है कि तथा-ल गीतों में प्राय: तीन चीजें पायी उनका मधुर स्वर में गाया जाना, त तरल, आर्द्र, सुकुमार भावु-र कोमलकांत शब्दावली। और कहना है कि –"अपने गीतों में इन तीन बहुमान्य गीति-तत्त्वों काफी सोच-विचार किया और पाया कि ये तत्त्व गीत के नियामक तत्त्व हैं ही नहीं। .....वस्तुत: ये तीनों तत्त्व आरोपित तत्त्व हैं, जो गीत के कवित्व को क्षीण कर देते हैं।"

तब नये गीत के तत्त्व क्या हैं, जिन्हें इस कवि ने स्वीकार किया है? वे हैं– गीत पर समकालीन जीवन-पद्धति और संघर्ष की छाप, छायावादी वायव्यता और छायावादोत्तर भावुकता से मुक्ति, एक ही अनुभूति या अनुभूतिमय विचार की सुगठित और पैनी प्रस्तुति, लयात्मकता, छंद के आग्रह से मुक्ति, अतिरंजना और अतिशयोक्ति से मुक्ति, नये मुहावरे की तलाश, जीवंत शब्दों का प्रयोग, नव-स्थापित राग-संबंधों का उद्घाटन। राही मोटे तौर पर गीत के दो ही तत्त्व मानते हैं–लयमयता और रागमयता–"गीत की प्रकृति है लयमयता और उसकी आत्मा है रागमयता।"

संकलन के पहले ही गीत में नये गीत के जन्म का आभास हो जाता है, जब देखते हैं कि पुराने शब्दों और बिंबों को छोड़कर कवि कहता है :

"गूंज-भरे हरे चरागाहों से
क्षितिजों की ओर गयी राहों से
दूर कहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आओ– एक सौदा करें!

मैं तुम्हें अपने सारे खिलौने देती हूं,
तुम मुझे दे दो—

गोला

टॉफियां और मिठाइयां

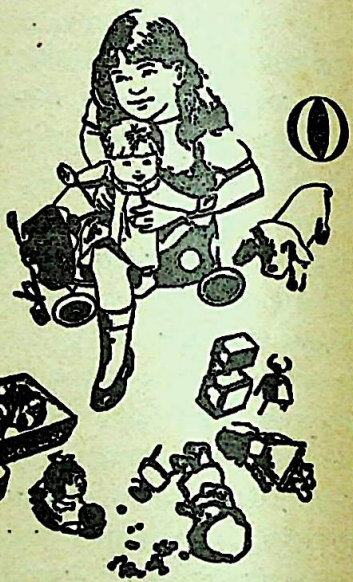

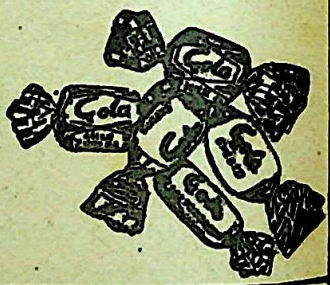

दी हिन्दुस्थान शुगर मिल्स लि. [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धुंधआते शहरों के
सांवली दुपहरों के आस-पास
गीत नया जन्मा !

ह गीत-शिशु "भीड़-भरी सड़कों
ग चलता है, दुर्घटनाओं ही के
लता है। पहियों का कोलाहल,
ीटियां घबराकर सुनता है।"

में परंपरागत रूप से विचित्र
मों की जगह राही के गीत 'शाम
र में' की शाम द्रष्टव्य है :

ी के प्यालों में कब तलक डुबाओगे
कडुआपन
यह पूछा है उकतायी शाम ने
ैं निरुत्तर हूं।"

यह उकताहट का नया मुहावरा
कथित अस्तित्ववादी (फूहड़)
ऊब और घुटन का पर्याय नहीं
नहीं सकता, क्योंकि जब हम गीत
रागमयता को मान लेते हैं, तो
ाने स्वीकार कर लेते हैं कि हम
हैं, आस्थावान हैं। यह अलग बात
आशा और आस्था स्वप्निल,
ी और खोखली नहीं। इसीलिए
सकता है :

और धुंध-भरे इस युग में
हम अर्थ की तलाश करें,
वह व्यर्थ हो।"

जो तिरस्कृत हैं
ो बहिष्कृत हैं
हम उन्हें नये गीतों में ढाल दें।"

चंद पंक्तियां चुनकर कुछ भी बताना, या सिद्ध करना संभव नहीं होता। इसलिए पूरे संकलन को पढ़कर जो प्रभाव पड़ता है, उसकी बात अवश्य की जानी चाहिये। और एक वाक्य में कहा जा सकता है, यह कवि "मिले-जुले चेहरों की भीड़ से अलग है।"

०००

*** अनंत आकाश : अथाह सागर : जयप्रकाश भारती और श्यामसुंदर शर्मा; प्रकाशक : विज्ञान साहित्य संस्थान, नयी दिल्ली; पृष्ठ : १३६; मूल्य : ९ रुपये।**

अंतरिक्ष अनुसंधान-विज्ञान और सागर-विज्ञान जैसे गंभीर और व्यापक विषयों को लेकर सरल और सुपाठ्य भाषा-शैली में लिखी गयी यह एक उपयोगी पुस्तक है। दो खंडों में विभाजित इस पुस्तक के प्रथम खंड 'अनंत आकाश' के लेखक हैं जयप्रकाश भारती और द्वितीय खंड 'अथाह सागर' के लेखक श्यामसुंदर शर्मा।

प्रथम खंड में ब्रह्मांड, भू-उपग्रह, अंतरिक्ष-यात्रा, चंद्र-विजय आदि की प्रारंभिक और सामान्य जानकारी दी गयी है। द्वितीय खंड में सागर, सागर-यात्रा, लहरें, धाराएं, समुद्री जीव, समुद्री भोजन, समुद्री खनिज, अनुसंधान-पोत, पनडुब्बियां आदि वर्णित हैं। इस खंड में भी सागर के बारे में जानने योग्य प्रारंभिक बातें ही हैं। संभवतः यह पुस्तक बच्चों या नवसाक्षरों को ध्यान में रखकर लिखी गयी है। फिर भी उपादेय है। इसकी एक विशेषता यह भी है कि इसे यूनेस्को पुरस्कार मिला है। —बिंदु भास्कर

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हंसने में हर्ज क्या!

• विनोदीलाल •

एक मजलिस में सब एक दूसरे से बढ़-चढ़कर बातें कर रहे थे। एक ने कहा—"आप लोगों को पता है, मेरे गांव में जो नदी है, वहां एक आदमखोर शेर पानी पीने आया करता था। एक बार कुछ महिलाएं घाट पर नहा रही थीं कि शेर आ पहुंचा। महिलाएं घबरा गयीं, पर एक ने जरा सोचा और शेर पर पानी के छींटे उड़ाने शुरू कर दिये। बस क्या था, शेर उलटे पांव भाग चला।"

उसकी बात खत्म होते-न-होते दूसरे ने कहा—"ये बिलकुल ठीक कह रहे हैं। दरअसल उसी समय मैं भी नदी की ओर जा रहा था। रास्ते में शेर मिला। मैंने जब उसके चेहरे पर हाथ फिराया, तो मेरा हाथ गीला हो गया।"

०००

बातचीत एक आयरिश और यहूदी के बीच चल रही थी। आयरिश ने पूछा कि यहूदी बुद्धिमान क्यों होते हैं?

"इसलिए कि हम लोग एक खास तरह की मछली खाते हैं। अगर तुम चाहो तो तुम्हें भी मिल सकती है, लेकिन एक की कीमत १० डालर होगी।" यहूदी ने तुरंत जवाब दिया।

आयरिश ने १० डालर निकालकर यहूदी को थमा दिये और यहूदी ने एक सूखी झिंगा मछली उसे पकड़ा दी। आयरिश ने उसे उलट-पुलटकर देखा और फिर चकित हो बोला—"यह क्या? यह तो झिंगा है और वह भी सूखी!"

"देखो, अब तुम भी बुद्धिमान होते जा रहे हो!" यहूदी ने कहा।

०००

मृत्युशय्या पर पड़े रोगी को अपनी मृत्यु का आभास हो गया था। अपनी पत्नी से बोला—"देखो प्रिये, मुझे पता है कि हम सब नंगे ही इस दुनिया में आये थे, इसलिए मेरी इच्छा है कि तुम लोग जब मुझे दफनाओ, तो मैं नंगा ही रहूं।"

पति की मृत्यु के बाद एक रात जब पत्नी सो रही थी, उसने दरवाजे पर दस्तक और फिर पति की आवाज सुनी—"प्रिये, मुझे कम-से-कम एक सूट और वह दामी ओवरकोट तो चाहिये ही। दरअसल वहां नर्क में काफी संपन्न व्यक्ति भी हैं और उनके लिए वातानुकूलित जगहों की व्यवस्था हो रही है।"

०००

अंग्रेजी के शिक्षक ने बच्चों को बताया—"जब दो चीजें अनपेक्षित रूप से एक साथ

GC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ी हैं, तो 'कोलाइजन' होता है।
या कोई उदाहरण दे सकते हो?"
; जुड़वां बच्चा!" शंकर ने तुरंत
।

०००

प्रिये, मैं तुम्हारे जन्मदिन पर
ार ले आया हूं।" पति ने पत्नी

तुमने तो नयी कार लाने का
था?" पत्नी ने शिकायत-भरे
ा।
तो था, लेकिन बहुत ढूंढ़ने के
झे ऐसा कोई नहीं मिला, जो
कार बेच रहा हो।"

०००

ने कहा—"डार्लिंग, तुम समझते
अगर मैं शादी करती हूं, तो मेरी
ी जायेगी।"
हम उसे गुप्त भी तो रख सकते
ने सुझाया।
ह ठीक है। लेकिन अगर बच्चा
"
! बच्चे को बता देंगे कि हम
हैं।"

०००

में अक्सर सो जाने वाले एक
ी एक दिन प्रोफेसर ने झकझोर-
ा और कहा —"तुम्हारे सो जाने
रा नहीं लगता, लेकिन यह देख-
गता है कि तुम 'गुडनाइट' बोले
जाते हो।"

×××

बर्ट्रेंड रसेल का विरोधाभास

"सीधी-सी बात है, मुझे उन लोगों की डाक पहुंचानी है, जो अपनी चिट्ठियां खुद डाकखाने आकर नहीं ले जाते।"

"और मुझे उन लोगों की डाक नहीं पहुंचानी है, जो आकर अपनी डाक खुद ले जाते हैं।"

"मगर फिर मेरी डाक, अगर मैं अपनी चिट्ठियां लेता हूं, तो मुझे नहीं लेनी चाहिये.....

"और अगर मैं अपनी डाक नहीं लेता हूं तो लेनी चाहिये ..... अजीब चक्कर है!"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साबुन एक फ़ायदे तीन

निको रोगाणुनाशक साबुन

आपकी त्वचा-रक्षा के लिए दूसरे साबुनों से कहीं बढ़िया है

1 निको रोगाणुओं का नाश करता है

2 निको पसीने की बदबू दूर करता है

3 निको से त्वचा की सफ़ाई और हिफ़ाजत होती है

अपनी त्वचा साफ़-सुथरी और निरोग रखने के लिए रोजाना निको साबुन से स्नान कीजिये। निको का रोगाणुनाशक झाग कीटाणुओं का नाश करता है और आपकी त्वचा को रोगमुक्त रखता है। निको के औषधियुक्त तत्व शरीर के पसीने की बदबू हटाते हैं और त्वचा के कई रोगों से बचाते हैं।

आपकी त्वचा में एक नया तेज, एक नयी खूबसूरती, एक नयी कांति आ जाती है। निको त्वचा को रवील-मुँहासे, घमौरियों वगैरह से सुरक्षित रखता है। नियमित रूप से निको इस्तेमाल करने से सर के रूसवेपन से बचाव होता है।

अपनी त्वचा की कांति और हिफ़ाजत के लिए तीन तरह के फ़ायदेवाला निको साबुन आज ही से इस्तेमाल कीजिये।

TRIPLE ACTION

NEKO

The Original Germicidal Soap

PARKE-DAVIS

JAISONS 72 Hin

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क रूप अनेक रंग

सेन्चुरी साड़ियाँ अब नवीनतम प्रिण्टों और अनुपम रंगों में...जैसे दिन में सपने सुहाने! सेन्चुरी के काउण्टर पर तरह-तरह के मनभावन रंगों और डिज़ाइनों की बहार खिल उठी है— अनुराधा, विनोदिनी, मोनिका, लेक्स ट्यूटी। आज ही आइए और देखिए!

दि
सेन्चुरी
स्पि. एन्ड मैन्यु. कं. लिमिटेड
बम्बई-२८ डी डी

सेन्चुरी-१००% सूती कपड़ों के लिए

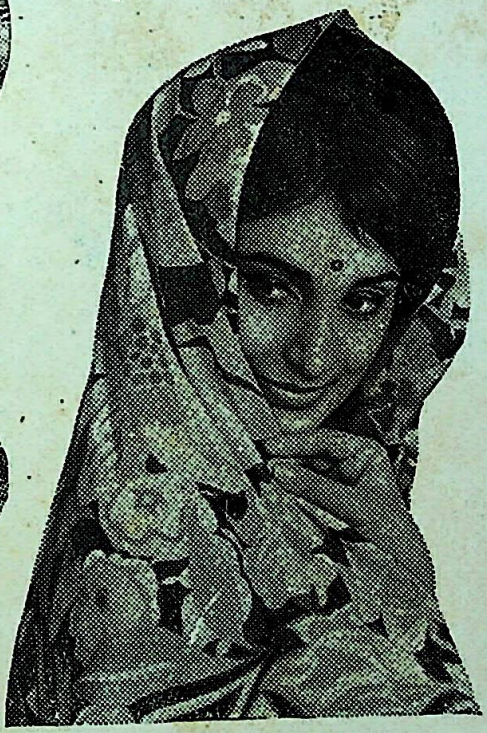

सेन्चुरी साड़ियाँ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जुलाई (१-७-१९७१) मूल्य रु. १-३० Regd. No. MH 260

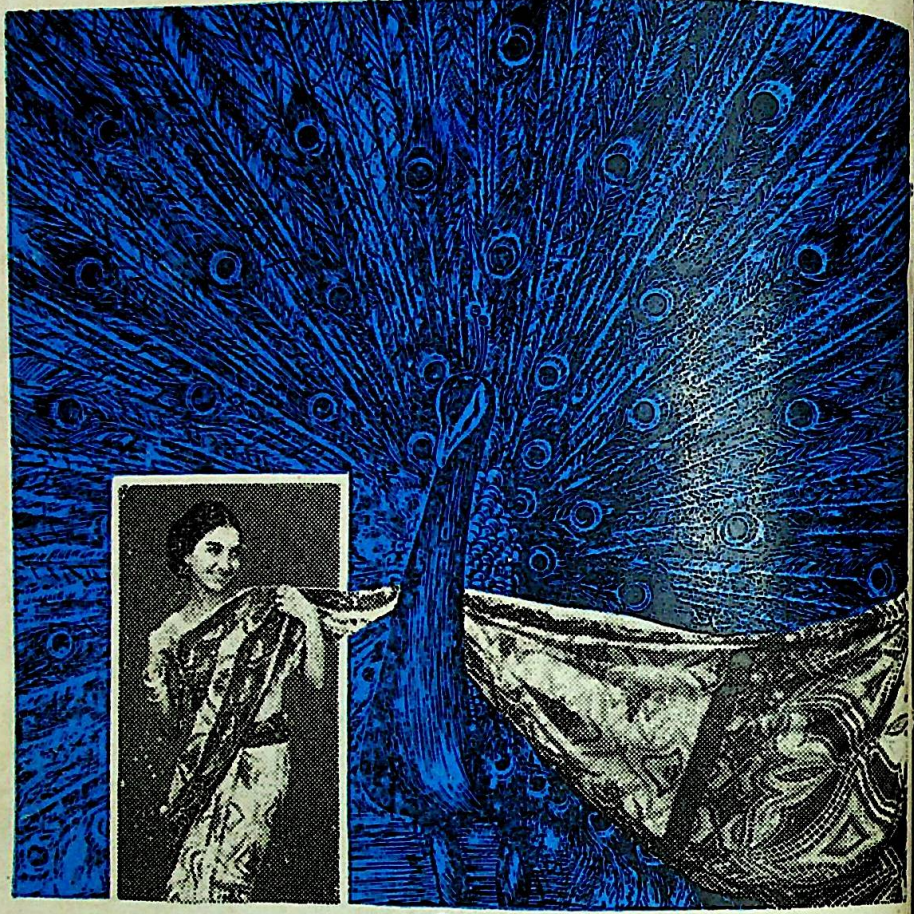

मनमोहक पंख

प्रकृति ने आपको नहीं दिये हैं

पर आपके पास कपडे है। अधिक मनमोहक – अधिक रंगीन – अधिक आकर्षक। ऐसे कपडे जो आप हर रोज बदल सकते है।

पिछले ७५ वर्षों से कोहिनूर आपके लिए सर्वश्रेष्ठ कपडे बनाते आ रहे हैं। ये कपडे आपको फैशन की दुनिया मे सबसे आगे रखते है। कोहिनूर आज विविध प्रकार की शर्टिंग, सूटिंग तथा पोशाक के कपडे – महीन सूती व कोहिट्टिन मिश्रण के, उत्कृष्ट लोग क्लाथ, बढिया पॉपलीन, शीतल केम्ब्रिक, आकर्षक वायल, फैशनेबल लुंगी तथा मनमोहक साडियां बनाते है। ये सभीकपडे विविध आकर्षक रंगों, बिनावट, नमूनों तथा डिजाइनों में मिलते है।

कोहिनूर कपडे पहनिये – फिर देखिये

आ[illegible] आकर्षक दिखेंगे।

कोहिनूर [illegible] साडियां, रूबिया ब्लाउज – ४०० आकर्षक रंगों में और कोहिट्टिन सा[illegible] जवाब नहीं।

कोहिनूर [illegible]ल्स कंपनी लिमिटेड, बम्बई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवनीत

[हिन्दी डाइजेस्ट]

दिल्ली, वाराणसी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

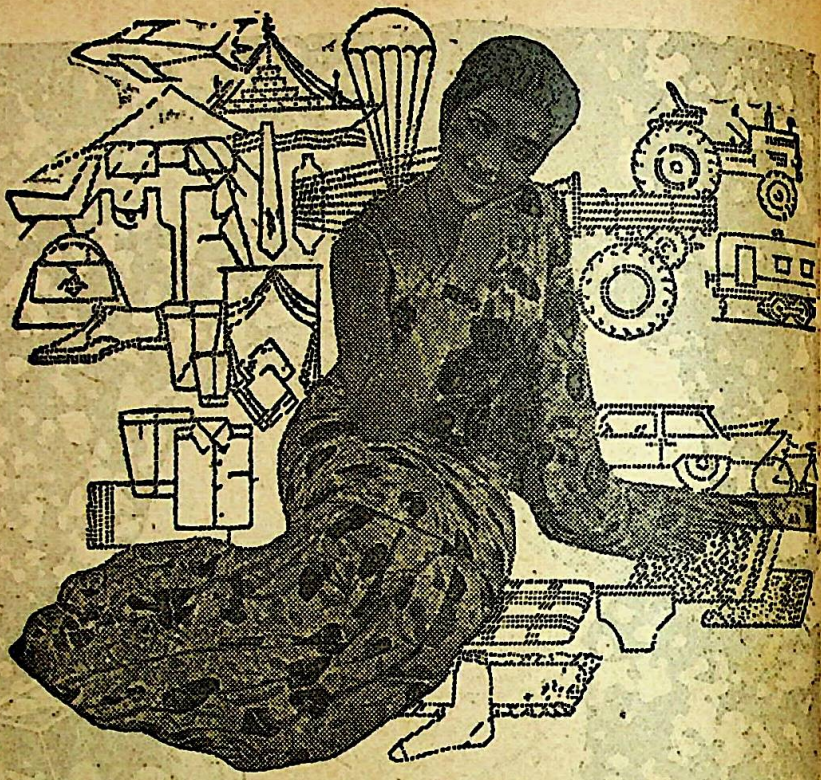

सेंचुरी रेयॉन—हमेशा आपके साथ

जब आप सूट, साड़ियाँ, कमीजें या पोशाकें पहनते हैं, सेंचुरी रेयॉन आपके साथ होता है। जब आप अंडरवियर या होजियरी की चीजें पहनते हैं, यहाँ तक कि जब आप स्लीपरों और हैंडबैगों का इस्तेमाल करते हैं, सेंचुरी रेयॉन आपके साथ होता है। चादरों, तकियों के गिलाफों, कम्बलों, गालीचों, तौलियों, नेपकिनों, रुमालों और नेकटाइयों का इस्तेमाल करते समय भी सेंचुरी रेयॉन आपके साथ रहता है। अपने घर के लिये परदे तैयार करें या उसे फर्नीचर से सजाएँ—अपनी कार के लिये, रेलगाड़ियों के लिये या हवाई और समुद्री जहाजों के लिये अपहोलस्ट्री का सामान लें—सेंचुरी रेयॉन तब भी आपके साथ होगा।

हवाई जहाज से सफर करें या रेल से, कार से सफर करें या स्कूटर से, या साइकिल से—ट्रैक्टर से अपनी जमीन जोतें या एक्सकेवेटर से जमीन की खुदाई करें, जब भी आप किसी ऐसी चीज का इस्तेमाल करें जो टायरों पर चलती हो—या जब भी आपको मशीनों को चलाने के लिये पट्टों की जरूरत हो—सेंचुरी रेयॉन हमेशा आपके साथ होगा।

जी हाँ! यह बिल्कुल सही है कि सेंचुरी रेयॉन के सूत और टायरकॉर्ड बिल्कुल हमेशा आपके पास है। आप कुछ भी हों, कहीं भी जा रहे हों, सेंचुरी रेयॉन हमेशा आपके साथ है और आप हमेशा सेंचुरी रेयॉन के साथ है।

सेंचुरी रेयॉन इंडस्ट्री हाउस, चर्चगेट रिक्लेमेशन, बम्बई-२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

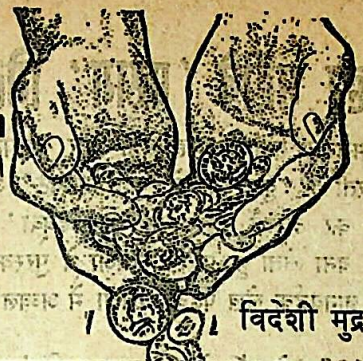

ल्को की

कर ६०,००० टन

कर दी गयी है—

विदेशी मुद्रा बचाने के लिए

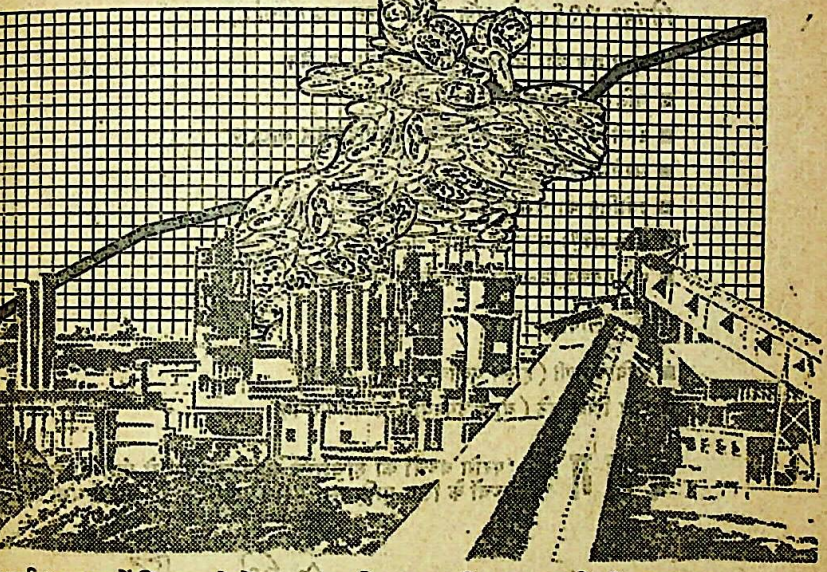

मई १९६२ में हिन्दाल्को ने काम शुरू किया उसकी धातु गलाने की क्षमता २०,०००
लाना थी। नवंबर १९६५ में वह दुगुनी अर्थात् ४०,००० हो गयी और अगस्त
में वह बढ़कर ६०,००० हो गयी। ६०,००० टन के प्राथमिक उत्पादन का अर्थ है
ल के अंतर्राष्ट्रीय भाव के अनुसार ३०·०७ करोड़ अमरीकी डालर या २५ करोड़
ी विदेशी मुद्रा की बचत। लेकिन यदि फैब्रिकेटेड माल की कीमत देखी जाये, तो
की मात्रा और भी बढ़ जाती है।

१९६२ में उत्पादन आरंभ होने से लेकर दिसंबर १९६७ तक कंपनी ने १,६२,५८०
युमिनियम का उत्पादन किया है, जिसने देश के लिए ६७·१९ करोड़ रुपये की विदेशी
चायी है। और बिजली-उद्योग में तांबे के समस्थानीय (सबस्टिटचूट) के रूप में इससे
करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा की बचत हुई है।

हिन्दुस्थान एल्युमिनियम कार्पोरेशन लिमिटेड
कारखाना : पोस्ट रेणुकूट, जिला मिर्जापुर, उ० प्र०
विक्री कार्यालय : कलकत्ता, बंबई, दिल्ली, मद्रास और रेणुकूट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हमें हर महीने 'पराग' मिलना ही चाहिए!

इसकी मजेदार विनोदी कहानियां और चटपटी कविताएं मन में गुदगुदी पैदा करती हैं; 'कुछ अटपटे कुछ चटपटे' और चुटकुले हंसा हंसा कर लोटपोट कर देते हैं; 'खिलौनों का डिब्बा' हर महीने मैं एक मजेदार खिलौना बना लेता हूं; प्रतियोगिताओं में पुरस्कार जीतने पर पौ-बारह हो जाते हैं; ज्ञानवर्द्धक लेख पढ़कर परीक्षा में अव्वल आने का अवसर मिलता है।

सितंबर १९६८ के अंक में ७ सरस कहानियां:

- गूंगी गूंज और नरगिस का फूल: डी. के. जैन
- बुद्धिमान लड़की: हुस्नजमाल छीपा
- टोनी और चिड़िया का बच्चा: विनोदकुमार भारद्वाज
- सरनेम: शीला इंद्र
- ज्योतिष का चमत्कार: अवतारसिंह
- कौन मरे?: यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'
- एक पंक्चर दिल का: फज़लुल बारी

इनके अलावा:

- भविष्यवाणी (हास्य एकांकी): सई परांजपे
- फूल खिल उठे (बाल उपन्यास): बलवंतसिंह

पराग 'पराग बच्चों की रुचिशुचि को रोचक ढंग से संवारता चलता है बच्चों के लिए प्रतिमास 'पराग' खरीदने की आदत बना लीजिए

टाइम्स आफ इंडिया प्रकाशन

ULKA8CP4

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चाँदनी साबुन

का प्रयोग कर
समय बचाइये
—कपड़े जल्दी साफ़ होते हैं!

अधिक स्वच्छ
अधिक सफेद
अधिक उजले

बेरार ऑईल इन्डस्ट्रीज़, अकोला

ASP/C-13 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपके लिए बॉम्बे डाइंग की नयी भेंट — साड़ी!

आज ही पधारिए और हमारी नयी हल्की-फुल्की

स्विस वॉइल **की तथा मनमोहक डिज़ाइनोंवाली आधुनिक**

वॉड्रीन ('टेरीन'/कॉटन) की साड़ियों की बहार देखिए!

हमारी मुलायम-मुलायम स्विस वॉइल की साड़ियों की फ़िनिश बड़ी ही शानदार होती है। ये साड़ियाँ खूब सजती हैं और टेविलाइज़्ड व एण्टिक्रीज़ भी होती हैं। ये बहुत ही हल्की-फुल्की और आरामदेह होती हैं और दिनभर पहनने के बावजूद सजीली रहती हैं। □ वॉड्रीन ('टेरीन'/कॉटन) की साड़ियों को इस्त्री करने की कोई ज़रूरत नहीं। बस, धोइए और पहनिए। काम-काज, खेल-कूद, मेल-मिलाप—किसी भी अवसर पर इन्हें बेखटके पहना जा सकता है। इनमें सिल्वटें पड़ने का कोई डर नहीं। □ डिज़ाइन ऐसे कि देखते ही दिल ललचा जाए! आपको फ़ैशन की दुनिया की चोटी पर पहुँचाने के लिए हर महीने बारह नये डिज़ाइन नये से नये रंगों में पेश किये जाते हैं!

बॉम्बे डाइंग

BD-7481-HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपके सुंदर बालों की देखभाल
एवं पोषण चाहिये।
बंगाल केमिकल्स का

कैंथराइडीन

हेयर आइल

लंबी, चमकदार, रेशम-सी नरम लटों को बढ़ाने में मदद करता है, बालों को चिपचिपाहट से मुक्त रखता है और उनका झड़ना रोकता है।

बंगाल केमिकल

कलकत्ता, बंबई,
कानपुर, दिल्ली

मुहासों को दूर करने के लिये लिचेन्सा!

- १०८ देशों के डाक्टरों की एक ही सलाह!
- सभी मुख्य केमिस्टों के पास मिलता है।

DZ-1076-A-HIN

हर जगह मिलती है

जालिम लोशन

दाद खुजली की पेटेन्ट दवा

प्राण सुधा

पेटदर्द, हैजा, उल्टी (कै), दस्त आदि अनेक रोगों की हाजिर जवाब घरेलू दवा।

ओरिएन्टल केमिकल वर्क्स, राऊ (इन्दौर)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनेक स्वर,
तथापि एकस्वरता !

कोटि कोटि लोग,
तथापि एक देश !

महाराष्ट्र शासन के प्रसिद्धि संचालक द्वारा प्रकाशित

नवनीत के ग्राहकों को सूचना

१) पत्र-व्यवहार में अपना ग्राहक-क्रमांक या रसीद-संख्या अवश्य लिखें।

२) ग्राहक-क्रमांक देने से आपकी शिकायत और सूचनाओं पर हम शीघ्र ध्यान दे सकेंगे।

३) 'नवनीत'की प्रतियां पिछले माह के आखिरी सप्ताह में आपको भेजी जाती हैं। प्रति न मिलने की शिकायत मास की १०तारीख के बाद की जा सकती है।

४) यदि आपको अपने पते में परिवर्तन कराना हो, तो उसकी सूचना माह की १५ तारीख तक हमारे दफ्तर में भेज दें।

५) बहुत थोड़े समय के लिए हम पते में परिवर्तन नहीं कर सकेंगे। अतः डाकघर से ऐसी व्यवस्था कर लें कि वह आपकी डाक नये पते पर भेज दे।

६) नये ग्राहकों को चंदा भेजते समय पूरा पता साफ अक्षरों में लिखना चाहिये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

KORES
(INDIA) LIMITED

Stencils - Carbon Papers - Typewriter Ribbons - Duplicating Inks - Teleprinter Rolls

FOR OFFICE ACCESSORIES

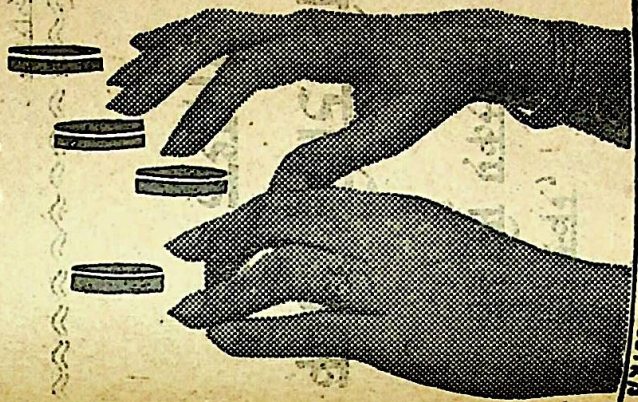

INTERPUBIRA

Kores (India) Limited, Post Box No. 6558, Plot No. 19, Off Haines Road, Worli, Bombay 18. W.B.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

NEW SUPER-ACTIVATED GLOWHITE

MAKES CLOTHES DAZZLING WHITE!

Scientific formula

New, Super-activated GLOWHITE makes all your clothes dazzling white—at half the cost. You use less. Just 5 paise worth for a bucketful of clothes. See how Super-activated GLOWHITE actually whitens your clothes—gives them a new, dazzling whiteness you've never known before!

Handy, pilfer-proof pack

Super-activated GLOWHITE now comes to you in a handy, pilfer-proof aluminium pack. So convenient...so economical!

BUY NEW SUPER-ACTIVATED GLOWHITE TODAY!

AMAR DYE-CHEM LIMITED, 'Rang Udyan', Bombay-16

CC-0
Digitized by eGangotri

लघु उद्योगों के लिये

बड़ी सहायता!

पीएनबी लघु उद्योगों के चक्र गतिमान बनाये रखता है। नई इकाइयां स्थापित करने तथा वर्तमान इकाइयों का विस्तार करने एवं उन्हें आधुनिक स्वरूप देने के लिये वह ऋण देकर उद्योगों की मदद करता है। उद्योग तथा व्यापार संबंधी निशुल्क सलाह भी दी जाती है।

अधिक विवरण के लिये पीएनबी की निकटतम शाखा से संपर्क स्थापित करें। सारे भारत में हमारी ५०० से अधिक शाखाएं हैं।

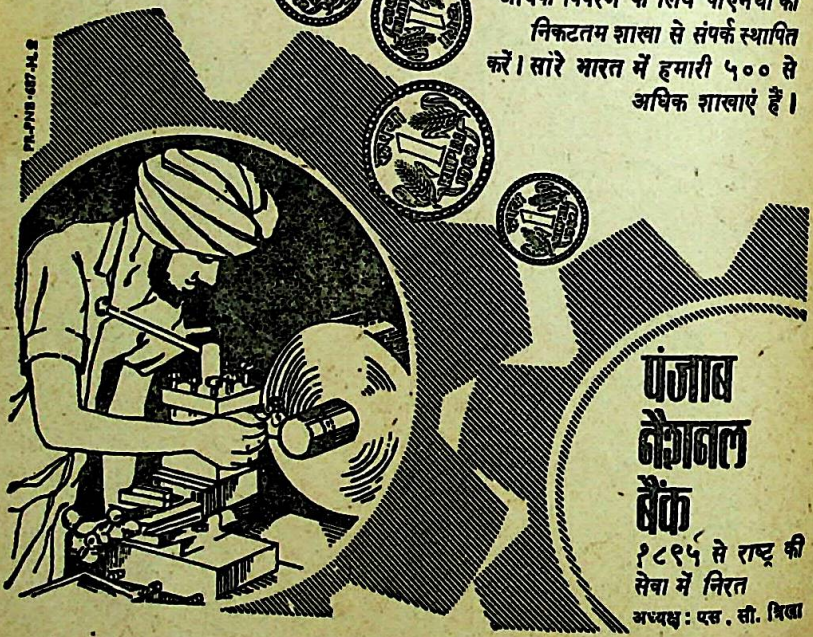

पंजाब नैशनल बैंक

१८९५ से राष्ट्र की सेवा में निरत

अध्यक्ष : एस. सी. त्रिखा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

सितंबर १९६८ अंक ९

संचालक
श्रीगोपाल नेवटिया

संपादक
सत्यकाम विद्यालंकार

सहकारी
नारायण दत्त
गिरिजाशंकर त्रिवेदी

सज्जाकार
ठाकोर राणा

प्रबंध-संचालक
हरिप्रसाद नेवटिया

विज्ञापन-व्यवस्थापक
महेंद्र महेता

इस अंक में

१७ भक्ति और भाप
रविशंकर महाराज

१८ खिलते फूलों से दो शब्द
साधु टी० एल० वास्वानी

२० पुरखों की थाती
....

२१ योग और योगी
चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

२४ नौका-साहस को सबसे विकट चुनौती
रहवर

२९ एक अभियुक्त का जीवन-चरित्र
प्रकाश खन्ना

३२ आर्किड
शमून अब्दुलअली

३५ शब्दवेध
शाकल्यायन

३६ तनाव-मुक्ति की युक्तियां
....

४० भेषजविज्ञान के आचार्यवर
चंदन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

४६	बिजली का झटका लगने पर	धुरेंद्रकुमार गर्ग
४८	पत्र और परामर्श	....
४९	कुछ नये प्राणरक्षक आविष्कार	....
५२	भारतीय दंड-विधान के अनुसार अश्लीलता	डा० अरुणकुमार मुखोपाध्याय
५६	खोज-खबर	मलय
६१	एल० एस० डी० की दुनिया में	रावर्ट गैनन
६५	महाकवि अकबर से इंटरव्यू	नरेश कुमार 'शाद'
७१	अविस्मरणीय जीवन-मंत्र	सत्यपाल शर्मा
७३	शेरों का विद्यालय	....
७९	व्यायाम सिर्फ छः सेकेंड का	राजवहादुर सिंह
८१	सितार का जादूगर	परमेश श्रीवास्तव
८४	चित्तौड़ और वहीद	शशिप्रभा शास्त्री
९०	चाचा कैम	रमापति शुक्ल
९६	मौत ने तीन ओर से घेरा डाला	मेजर कुलवीर राणा
१०२	तरस (तुर्की कहानी)	हंजारलियोग्लू
१०५	मांझी (जर्मन कहानी)	स्टेफान लाकनर
११६	जसमा ओड़न	विमलशंकर शास्त्री
१३३	अमिट रेखाएं	रीति, कृष्णशंकर गांवकर
१३६	महानंदा (धारावाहिक उपन्यास)	जयवंत दळवी
१६३	विम्बलडन का विजेता	महादेव
१६६	सार-सरोवर	....

आवरण-चित्र : वी० एन० ओके

चित्रसज्जा :

वाटिचेली, आर० के० लक्ष्मण, हुसैन, रविशंकर रावल, ओके, शेणै, पंकज गोस्वामी

हमारा पता :

नवनीत प्रकाशन लिमिटेड, ३४१ तारदेव, बंबई ३४. फोन : ३७२८४७

श्री हरिप्रसाद नेवटिया द्वारा नवनीत प्रकाशन लि०. ३४१ तारदेव, बंबई–३४ के लिए प्रकाशित तथा श्रीवेंकटेश्वर प्रेस, ३६/४८ खेतवाड़ी बैक रोड, बंबई–४ में मुद्रित।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

: अंक ९

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

सितंबर १९६८

क जूतन-पुरातन ज्ञान-विज्ञान का प्रतिनिधि मासिक

भक्ति और भाप

हां भक्ति तो है, पर उसकी असीम शक्ति कहीं दिखाई नहीं पड़ती; कि उसमें तीन छेद हैं। पहला छेद है—गाना। रात-रात-भर करताल जीरें बजा-बजाकर गाते रहना। भजन-कीर्तन अच्छी चीज है, पर ी विवेक होना चाहिये। यहां तो केवल गाना ही गाना है, आचरण में नहीं। दूसरा छेद है—रोना। हे राम, दुनिया में दुःख भरे पड़े हैं! केवल शब्दों में ही, किसी का दुःख दूर करने की कतई कोशिश नहीं ी। तीसरा छेद है—दिखावा। मस्तक पर तिलक-त्रिपुंड, हाथ में माला, ी तीर्थयात्राएं करना, ऐसे ही तमाम बाहरी दिखावों में डूबे रहना। नों छेद भर जायें, तो भक्ति की शक्ति प्रकट हो। भक्ति की शक्ति ह। लेकिन वह भाप की तरह है। अगर उड़ जाने दिया, तो वह काम की नहीं; पर यदि उसे र लें, तो बड़े-बड़े इंजिन और लंबी-ाड़ियों को खींच ले जाती है। ौर कर्म दिखाई देनेवाली चीजें भक्ति दिखाई नहीं देती, दिखाई ी नहीं चाहिये। प्रेम प्रदर्शन की नहीं है। क्रिया रूप में भले ही स देख लें। —रविशंकर महाराज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खिलते फूलों से दो शब्द

स्वर्गीय टी० एल० वास्वानी

मेरे मन में एक सपना है, अपने इस देश के पुनर्जन्म का, पुनः एक नया भारत रचने का। और मैं अपने देश की उस युवा पीढ़ी की ओर बड़ी आस्था से देख रहा हूं, जो मेरे सपने को सत्य में बदलने की क्षमता रखती है। क्योंकि युवक का अर्थ है—आस्था, आशा और प्रेम; युवक का अर्थ है—शक्ति, प्राण और सृजनशीलता। ओ युवा प्राण! तुम उज्ज्वल भविष्य के प्रतीक हो।

मैंने अपने परिभ्रमण के दौरान भारत की युवा पीढ़ी में एक नयी चेतना के दर्शन किये हैं। मुझे लगा कि ये युवक नये भारत का निर्माण अवश्य करेंगे। किंतु मनीषी ऋषि-मुनियों की संतान होने के नाते उन्हें अपनी संस्कृति और अपने दायित्व से भी भली-भांति अवगत होना चाहिये। और साथ ही मैं यह भी कहूंगा कि उन्हें आधुनिक युग की उन नवीन चेतनाओं का भी परिचय प्राप्त करना चाहिये, जो मूलतः आर्थिक, वैज्ञानिक और सामाजिक जटिलताओं से संबंध रखती हैं।

ओ युवा प्राण! मैं चाहता हूं कि तुम्हारा जीवन सीधा-सादा हो, ग्रामोन्मुख हो; क्योंकि अगर नये भारत की रचना करनी है, तो हजारों-लाखों गांव तुम्हें बुला रहे हैं! मैं चाहता हूं, तुम दीन-दुखियों की सेवा का व्रत लो!

भारत की अगर कोई सबसे महत्वपूर्ण समस्या है, तो वह है शक्ति के सचेत निर्माण की समस्या। भारत की इस सृजनात्मक शक्ति को विकसित करने की आवश्यकता है। अमरीका इंग्लैंड अथवा रूस के सांचे में भारत नहीं घड़ा जायेगा। ओ युवा प्राण! तुम जो एक नया राष्ट्र घड़ोगे, वह भारत, अपनी परंपरा में सबसे अधिक शक्तिशाली और विराट राष्ट्र होगा।

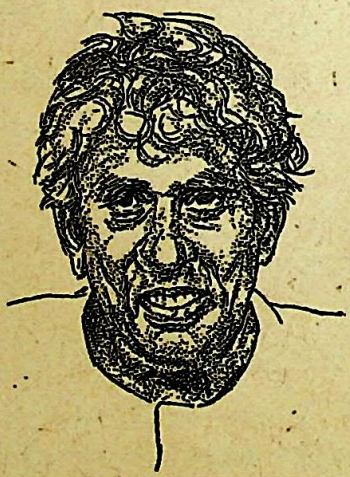

राष्ट्र के उद्गाता वास्वानी

इस धर्म-निरपेक्षता के वातावरण में जो आवाज तुम सुन रहे हो कि धर्म को उ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को भुला दो, वह
क भ्रांति है। मैं
क कह सकता हूं
म्हें निस्तेज नहीं
र्म ही सत्य, शिव,
रचने की क्षमता
र्म शक्ति है, अक्षय
ा भंडार है। ओ
! धर्म को पहचा-
खो। अंधविश्वास
ग्रह का नाम धर्म
जातिवाद, वर्णवाद का नाम धर्म
दुर्बलता अथवा शक्तिहीनता को
ंज्ञा न दो!

राष्ट्रीयतावाद के नाम पर धर्म
ने का फैशन-सा चल पड़ा है।
च्ची राष्ट्रीयता तो राष्ट्र के हृदय
की अभिव्यक्ति करती है। और
हृदय तो धर्म ही है। ओ युवा
म स्वयं अपने हृदय को आलोकित
हारे पूर्वज ऋषि-मुनियों ने आत्म-
जो मंत्र दिये हैं, उन्हें ग्रहण करो।
प्रकाशवान बनो, अपने प्रकाश से
ने हृदय को आलोकित करो और
ज को, राष्ट्र को, सारे संसार को
ा करो।

तात्पर्य यह कदापि नहीं है कि जो

प्राचीन है, परंपरागत है, सिर्फ उसे ग्रहण करो, और आधुनिकता को छोड़ दो। आधुनिक विज्ञान और शिल्प, उद्योग और राजनीति में आधुनिक प्रयोग, अवश्य ग्रहण किये जाने चाहिये। किंतु उन सृजनात्मक जीवन-सूत्रों को भी ग्रहण करो, जिन्होंने अतीत में तुम्हारे भारत को विश्व में महान बनाया था, जगद्गुरु बनाया था। ओ युवा प्राण! उन अनेक जीवन-सूत्रों में प्रमुख जीवन-सूत्र है– ब्रह्मचर्य! मैंने बताया न, तुम स्वयं अपने मन को, हृदय को आलोकित करो– यही तुम्हारा ब्रह्मचर्य है।

एक विशेष युवा-वर्ग में आनंदवाद और भोगवाद का नशा फैल रहा है। यह तुम्हें सृष्टि नहीं, संहार देगा। ओ युवा प्राण! तुम दीन-दुखियों की सेवा का व्रत लो। तुम्हारे देश की पचास-पचपन करोड़ की आबादी में ३५ करोड़ लोग दीन हैं, दुःखी हैं। उन्हें तुम्हारा स्नेह चाहिये, सहयोग चाहिये। उनकी सेवा ही धर्म है; उनकी सेवा ही स्वराज है।

नये भारत के निर्माता ओ युवा प्राण! तुम सेवाव्रती बनो!

★

ज्यों-ज्यों आदमी बढ़ता है, ईश्वर बढ़ता है; क्योंकि आखिर
ईश्वर आदमी के दिमाग का एक नक्श है।

–जवाहरलाल नेहरू

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संसार के समस्त सद्विचारक हमारे पुरखे हैं और
समस्त शुभ विचार हमारी साझी संपत्ति।

पुरखों की थाती

अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुणे एव च ।
निर्ममो निरहंकारः समदुःखसुखः क्षमी ।।

–समस्त प्राणियों के प्रति द्वेषरहित, मैत्री और करुणा से पूर्ण, सीमित ममता से मुक्त, निरहंकार और क्षमाशील।

यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः ।
हर्षामर्षभयोद्वेगैर्मुक्तो यः स च मे प्रियः ।।

–जिससे संसार उद्विग्न नहीं होता और जो संसार से उद्विग्न नहीं होता, जो हर्ष, क्रोध, भय और उद्वेग से मुक्त है, वह मुझे प्रिय है।

अनपेक्षः शुचिर्दक्षः उदासीनो गतव्यथः ।
सर्वारम्भपरित्यागी यो मद्भक्तः स मे प्रियः ।।

–जो निःस्पृह है, अंदर-बाहर से स्वच्छ, उत्साहयुक्त, निष्पक्ष और व्यथाहीन है, जो कामनाओं से प्रेरित होकर कर्म नहीं करता, वह भक्त मुझे प्रिय है।

यो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न काङ्क्षति ।
शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान् यः स मे प्रियः ।।

–जो न हर्ष करता है न द्वेष, न शोक करता है न आकांक्षा, जो शुभ-अशुभ से ऊपर उठा हुआ है, वह भक्त मुझे प्रिय है।

समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः ।
शीतोष्णसुखदुःखेषु समः सङ्गविवर्जितः ।।

–जो शत्रु-मित्र, मान-अपमान, शीत-उष्ण और सुख-दुःख में एक-सा है, निःसंग है।

तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी सन्तुष्टो येन केनचित् ।
अनिकेतः स्थिरमतिर्भक्तिमान्मे प्रियो नरः ।।

–जो निंदा-स्तुति में समान है, मौन रहता है, घर के मोह से मुक्त और स्थिरमति है, वह भक्तिमान् मनुष्य मुझे प्रिय है। [भगवद्गीता, द्वादश अध्याय में से]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्पष्ट एवं निर्भ्रांत चिंतन के लिए आग्रह

योग और योगी

चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

ि भारत के चतुर समाज में यथा-
पवित्र-हृदय लोगों और सच्चे
ी अपेक्षा छली, पाखंडियों और
ंख्या बहुत अधिक है। यह बात
कहनी ही होगी। इससे उन विदेशी
ं की रक्षा हो जायेगी, जिन्होंने
भारत के आध्यात्मिक वातावरण
तिशयोक्तिपूर्ण और भ्रांत धार-
रखी हैं और जिन्हें न केवल भ्रम
ठगे जाने से भी आगाह कर देना
है।

भारतीय दर्शन का एक पारि-
ब्द है, जिसका मुख्य आशय है—सत्य
कार के लिए मानवीय शक्तियों
वनाओं के सामंजस्य की क्रमिक
र्ण प्रक्रिया। भगवद्गीता वह धर्म-
समें योग की स्पष्टतम और यथार्थ
है। गीता के अनुसार योग मन की
, जो कर्म में अनासक्ति और अकर्म
ता के कारण उत्पन्न होती है। योग
श है कि समाज के सहकार से
का पालन करते रहना चाहिये;
किंतु अपने को कर्म-फलासक्ति से दूषित न करते हुए, असफलता होने पर दुःखी न होते हुए, और सफल होने पर गर्व से न फूलते हुए कर्म करना चाहिये।

सभी उद्बुद्ध देशों के जीवन-दर्शनों में अनासक्ति और चित्त की स्थिरता पर वैसा ही बल दिया गया है, जैसा कि हिन्दू योग-दर्शन में। इस पर भारत का कोई विशेषाधिकार नहीं है। हां, केवल इतना कहा जा सकता है कि अनादि काल से भारत में इस विषय पर उच्च स्तर पर बहुत अधिक तथा बहुत गंभीर चिंतन हुआ है।

भगवान के प्रति आत्मसमर्पण तथा भक्ति का आस्तिकवादी दृष्टिकोण भी हिन्दू जीवन-दर्शन का एक अभिन्न अंग है। किंतु वह भी कर्म तथा कर्म-प्रणाली के विधान

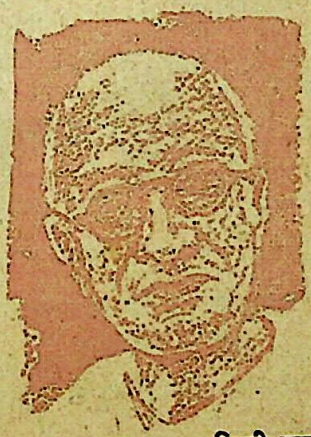

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में अनासक्ति तथा चित्त की स्थिरता के महत्व को घटाता नहीं। वस्तुतः 'योग' शब्द दोनों सिद्धांतों के साथ प्रयुक्त होता है; एक को 'भक्तियोग' और दूसरे को 'कर्मयोग' कहते हैं।

कर्तव्य-पालन के लिए किया हुआ प्रत्येक कर्म तथा अनासक्तभाव से किया हुआ प्रत्येक कार्य भगवान को अर्पण कर देना एवं उसकी इच्छा के सम्मुख नत होना ही योग की शिक्षा है। जैसे-जैसे इसका अभ्यास होता जायेगा, वैसे-वैसे मनुष्य 'कर्मयोग'

कार्टून : आर० के० लक्ष्मण

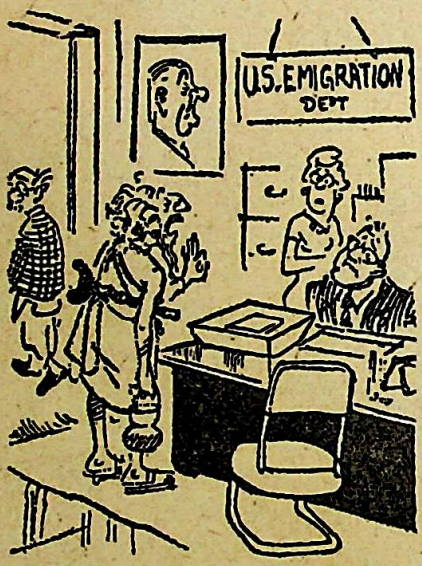

"छः सप्ताह में योग और आत्मसाक्षात्कार, नहीं तो पैसे वापस।"

['टाइम्स आफ इंडिया' से साभार]

(अनासक्त कर्म) और 'भक्तियोग' (भक्ति तथा समर्पण) का तारतम्य बढ़ाता जायेगा और अंततः उसका संपूर्ण जीवन भगवान तथा भगवदिच्छा को समर्पित हो जायेगा।

यह एक बद्धमूल धारणा बन गयी है कि हिन्दू जीवन-पद्धति भाग्यवाद पर आधारित है, जिसमें स्वतंत्र इच्छा एवं नैतिक उत्तरदायित्व पर पर्याप्त बल नहीं दिया गया है। किंतु यह नितांत भ्रमपूर्ण धारणा है और गीता के तीसरे अध्याय के ३७ से ४३ तक के श्लोकों से यह बात स्पष्ट हो जाती है। अर्जुन के इस प्रश्न पर कि मनुष्य विवश होकर पापकर्म क्यों करते हैं, श्रीकृष्ण ने जो श्लोक कहे हैं, उनका आशय यह है :

"काम (आकांक्षा) मनुष्य का शत्रु है। वह रजोगुण से उत्पन्न होता है। कभी तृप्त न होनेवाला यह दुष्ट काम समस्त पापों का कारण है। मनुष्य का यह नित्यवैरी, ज्ञान पर आक्रमण करके उसे आवृत कर लेता है। जैसे अग्नि धुएं से घिर जाती है, कैसे दर्पण धूल से ढंक जाता है, वैसे ही मनुष्य का ज्ञान (विवेक) काम से आवृत हो जाता है।

"काम पहले इंद्रियों पर अधिकार जमाता है, तदनंतर मन पर, और अंत में बुद्धि को वशीभूत कर लेता है। नाना रूप धारण करके वह मनुष्य को ठगता है और आत्मा को ज्ञानप्राप्ति में सर्वथा असमर्थ बना देता है। अतः हे राजन्! सर्वप्रथम इंद्रियों को वश में करो और समस्त ज्ञान विज्ञान का विनाश करनेवाले इस दु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संहार करो ।
ृंखल इंद्रियों का शासन अंततः
ा है, और मन का संचालन बुद्धि
परंतु यह महाशत्रु काम अपनी
से बुद्धि पर छा जाता है और
ा देता है । इस संकट का विचार
आत्मा की स्वाभाविक शक्ति का
रो और इस प्रवंचक महाभयंकर
ष्ट करके अपनी रक्षा करो । "
इन श्लोकों से स्पष्ट है कि गीता
पद्धति भाग्यवादी नहीं है; अपितु
रों के साथ संघर्ष करने के नैतिक
त्व को पूरी तरह स्वीकार करती
ह कहता है कि अपने सामाजिक
कूल सभी कर्तव्य कार्यों को करते
ो निरासक्त बनाये रखो ।
के आचार्य (श्रीकृष्ण) यह नहीं
लोग समाज से विरक्त हो जायें।
कर्तव्य-भावना से किये जाने
र कर्म के परिणाम (सफलता-
से मन को क्षुब्ध नहीं होने देना
और यह निःस्वार्थ अनासक्त-
समस्त कर्मों को ब्रह्मार्पण करने
में सामान्य जनों की भांति जीवन
ाज करते हुए विकसित करनी
चाहिये । गीता में श्रीकृष्ण ने अर्जुन से यह प्रतिज्ञा की है—"इस योग का अभ्यास करो, मैं तुम्हें सभी कठिनाइयों पर विजय पाने योग्य बना दूंगा ।"

भारत की विगत पीढ़ियों के धार्मिक लोगों ने मानवीय स्नायु-संस्थान की पूर्ण शक्ति के विकास के लिए मनोविज्ञान तथा शरीर-विज्ञान संबंधी प्रयोग बहुत किये हैं । स्वभावतः ये शोधपूर्ण प्रयोग गीतोक्त योग के साथ मिल गये । इससे जबर्दस्त भ्रम उत्पन्न हो गया है—विशेषतः हिन्दू योग की ओर आकृष्ट विदेशियों के लिए ।

मानसिक शक्ति-विकास की इन योग-क्रियाओं का गीता एवं अन्य हिन्दू धर्मग्रंथों में प्रतिपादित असली योग से कोई संबंध नहीं है । जिन झूठे दावों और पाखंडों की ओर मैंने लेख के आरंभ में संकेत किया है, वे इन्हीं शक्ति-विकास की योगक्रियाओं के संबंध में हैं । जो लोग जीवन में अनासक्ति और भक्ति के योग का अनुष्ठान करते हैं, वे कभी नहीं कहते कि हम योगी हैं । अतः मार्गदर्शन के लिए यह एक अच्छा नियम है कि जो अपने को योगी कहते हैं, उनसे बहुत सावधान रहा जाये ।

('स्वराज्य' से साभार)

★

रक क्या है ?—अतिविलंब से पहचाना गया सत्य, समय पर उपेक्षा
ा कर्तव्य । — टाइरेन एड्वर्ड्स

नुष्य का चित्त कारुण्य में विचरे, भगवदिच्छा में रमे और सत्य की
घूमे, तो धरती पर ही स्वर्ग है । — बेकन.

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नौका-साहस को सबसे विकट चुनौती

• रहबर •

पानी ! पानी ! और पानी ! चारों तरफ पानी ही पानी, अथाह पानी और उसमें डोलती अकेली नौका में एकाकी नाविक ! अनुमान कीजिये, अगर यह स्थिति पूरे एक वर्ष तक रहे, बड़ी-बड़ी तूफानी लहरों का सामना करना पड़े, फिर भी नाविक के मन में बस एक ही लगन हो कि नौका द्वारा पूरी दुनिया का चक्कर लगाना है, तो मानना ही पड़ेगा न कि नाविक बड़ा साहसी है ।

पिछले साल सर फ्रांसिस चिचेस्टर ने और इस वर्ष सर एलेक रोज़ (दोनों ब्रिटेन के निवासी हैं) ने अकेले ही नाव चलाकर विश्व-परिक्रमा पूरी करके ऐसे महासाहस का परिचय दिया है ।

चिचेस्टर और रोज की देखादेखी इस साल कई व्यक्तियों ने अपनी-अपनी नौकाओं में संसार की प्रदक्षिणा करने की ठानी है । किंतु एक फर्क है । चिचेस्टर और रोज ने केवल निजी प्रेरणा से अपने संतोष या नाम-वरी के लिए ये साहस-यात्राएं की थीं, जब कि नये साहसी एक प्रतियोगिता में भाग ले रहे हैं । चिचेस्टर और रोज अपनी विश्व-यात्रा के दौरान रास्ते में रुके थे; जबकि इन प्रतिस्पर्धियों को बिना कहीं रुके दुनिया का चक्कर लगाना है ।

इस प्रतियोगिता का आयोजन इंग्लैंड के समाचार-पत्र 'संडे टाइम्स' ने किया है । प्रतियोगिता १ जून ६८ से शुरू हो गयी है और ३१ अक्टूबर ६९ तक चलेगी । इसकी पहली शर्त तो आपने पढ़ ही ली है कि नाविक बीच में कहीं भी रुक नहीं सकेगा । और दूसरी शर्तें हैं—यात्रा ४० अक्षांश उत्तर से ऊपर के किसी भी बंदरगाह से शुरू करके उसी बंदर-गाह पर समाप्त की जानी चाहिये; नाविक को अकेले ही यात्रा पूरी करनी पड़ेगी; केप गुड होप (अफ्रीका), ल्यूविन (द० पश्चिम आस्ट्रेलिया) और हार्न (दक्षिण अमरीका) इन तीनों अंतरीपों की प्रदक्षिणा करनी पड़ेगी; नाविक को प्रतियोगिता शुरू होने के पश्चात् बाहर से ईंधन, खाद्य सामग्री, पीने का पानी आदि किसी भी चीज को लेने की अनुमति नहीं होगी, न ही वह बाहर से अन्य किसी प्रकार की भौतिक सहायता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सकेगा ।

टाइम्स' ने प्रतियोगिता में दो पुर-
हैं। एक है, पांच हजार पौंड (८९
ये) नकद । यह उस नाविक को
गा, जो सबसे कम समय में दुनिया
लगा लेगा । दूसरा पुरस्कार है,
लोब' । यह सबसे पहले अकेले
के तीनों अंतरीपों की प्रदक्षिणा
विश्व-परिक्रमा पूरी करनेवाले
दिया जायेगा ।

पुरस्कार एक नाविक भी जीत
या दो अलग-अलग नाविक भी ।
ोगता में किसी भी देश का कोई
भाग ले सकता है और किसी भी
नौका का उपयोग कर सकता है ।
यों को कोई आवेदन-पत्र नहीं
ा । नौका के रवाना होने और
टने के समय की प्रामाणिक जान-
टाइम्स' को दे देना काफी है । यदि
स्पर्धी चाहे कि निर्णायक मंडल
धि प्रस्थान और वापसी का समय
, तो उसकी व्यवस्था की जायेगी।
र का निर्णय करने के लिए आयो-
क निर्णायक-मंडल नियुक्त किया
ांसिस चिचेस्टर इसके अध्यक्ष हैं
टनेंट कर्नल एच० जी० हैस्लर,
रची, एम० एलेन ग्लिक्समैन तथा
हैमिल्टन सदस्य हैं । निर्णायक-
अध्यक्ष चिचेस्टर ने इस दौड़ को
वरेस्ट अभियान' (एवरेस्ट-एक्स-
ाफ द सी) की संज्ञा दी है ।

उनका कहना है—"प्रतिस्पर्धा में भाग लेने के लिए तत्पर नाविकों में से कई यह नहीं जानते कि वे अपने को किस मुसीबत में डाल रहे हैं । यदि उनमें से कोई दौड़ पूरी कर सका, तो यह बहुत बड़ी बात होगी। इस दौड़ की तुलना में, अटलांटिक पार करना तो ऐसा है, जैसे किसी झील में नौका-विहार करना ।' इसलिए चिचेस्टर चाहते हैं कि प्रत्येक प्रतिस्पर्धी को खतरों से पूरी तरह आगाह कर दिया जाये और आवश्यक उपकरणों, साधनों, भोजन और दवाओं के बारे में पूरी जानकारी दे दी जाये ।

'संडे टाइम्स' ने इसके लिए एक दफ्तर खोल दिया है, जहां से प्रतिस्पर्धी आवश्यक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं । यह दफ्तर, विभिन्न प्रतिस्पर्धी समुद्र में किस स्थान पर हैं, इसकी जानकारी प्राप्त करके दुनिया को बताता रहेगा । नाविकों के लिए आवश्यक मौसम-संबंधी जानकारी भी नियमित रूप से प्रसारित की जायेगी ।

यह लेख लिखने के समय तक दस साहसी नाविकों ने इस प्रतिस्पर्धा में भाग लेने की घोषणा की है । इनमें से तीन तो प्रस्थान भी कर चुके हैं; शेष सात भी इस ३१ अक्तूबर तक प्रस्थान कर देंगे । आइये, जरा इन दसों साहसियों से मिल लें ।

१. कप्तान जान रिजवे : २९ वर्षीय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सेनाधिकारी, विवाहित। आप ३० फुट लंबी 'इंग्लिश रोज-४' नामक अपनी नौका पर १ जून को इस यात्रा पर निकल पड़े हैं। एकाकी नौकाचालन का इन्हें विशेष अनुभव नहीं है; पर ये पूर्ण रूप से स्वस्थ हैं। ९२ दिन अटलांटिक में नौका चला चुके हैं। ये अपने साथ ४०० दिन का भोजन लेकर चले हैं। इन्होंने गेलवे बे से अपनी यात्रा शुरू की है।

२. **सार्जेंट चे ब्लाइथ :** उम्र २७ वर्ष। ८ जून को ३० फुट की 'डाइटिस्कस' नामक नौका पर हेम्वल से रवाना हो चुके हैं। यह नौका इन्हें इंग्लैंड की वेस्टर्न इंजीनियरिंग कंपनी ने प्रदान की है। पहले ये पैराट्रूपर थे। एकाकी नौकाचालन का इन्हें भी कोई विशेष अनुभव नहीं है। इस प्रतियोगिता के लिए इन्होंने अभी थोड़ा-सा प्रशिक्षण ही प्राप्त किया है। ये अपने साथ टाफी के डिब्बे तथा काफी मात्रा में शहद लेकर चले हैं। ये भी शादीशुदा हैं।

३. **राबिन नाक्स जान्स्टन :** उम्र २९ वर्ष। ३२ फुट की 'सुहाली' नामक नौका इन्हें 'संडे मिरर' ने प्रदान की है। ये १४ जून को फालमाउथ से प्रस्थान कर चुके हैं। ये एक अनुभवी नौकाचालक हैं; पढ़ने और संगीत सुनने के शौकीन हैं। यात्रा में विशेष सामग्री रखने में ये विश्वास नहीं करते। स्वस्थ रहने के लिए 'खूब पीना' इनका उसूल है। अपने साथ चुइंग-गम, प्याज तथा नींबू आदि लेकर निकले हैं।

४. **बर्नार्ड मोइत्स्येर :** उम्र ४३ वर्ष। सैगोन में जन्मे, विनोदप्रिय मोइत्स्येर फ्रांसीसी बंदरगाह लूलोन से प्रतिस्पर्धा के लिए चले हैं। इन्हें इस प्रतियोगिता का सबसे अनुभवी नाविक कहा जा सकता है। आपमें मौसम की भविष्यवाणी करने की स्वाभाविक शक्ति भी है। अपनी ४२ फुट की नौका का नाम इन्होंने कैप्टन जोशुआ स्लोकम की स्मृति में 'जोशुआ' रखा है। कैप्टन जोशुआ जलमार्ग से पूरी दुनिया की यात्रा पूरी करने वाला प्रथम नाविक था। मोइत्स्येर शराब नहीं पीते। हां, सिगरेट के शौकीन जरूर हैं।

५. **लोइक फूगेरों :** उम्र ४२ वर्ष। निवास-स्थान कासाब्लांका (फ्रांस)। आप एक मोटर-साइकल इंजीनियरिंग फर्म के मैनेजर हैं। आप ३० फुट की 'कैप्टन ब्राउन' नामक नौका द्वारा यात्रा करेंगे। वैसे ये नौकाचालन में अनुभवी हैं। फिर भी शकुन-अपशकुन आदि में विश्वास रखते हैं। यात्रा के दौरान ये मुख्यतः चावल खायेंगे। अपने साथ ये भरपूर स्पेयर पार्ट ले जा रहे हैं, यहां तक कि प्रेशर कुकर के वाल्व भी।

६. **कमांडर बिल लेस्ली किंग :** इस प्रतियोगिता में भाग लेनेवाले नाविकों में सबसे वयस्क हैं—५८ वर्ष के। युद्धकाल में ये ब्रिटिश नौसेना में पनडुब्बी कमांडर थे और अब गालवे काउंटी में खेती करते हैं। इनकी पत्नी एनिटा लेस्ली उपन्यासकार हैं। ४२फुट की 'गालवे ब्लेजर द्वितीय' नाम की नौका आपको 'डेली एक्सप्रेस' ने प्रदान की है। ये अतिनिम्न रक्तचाप के रोगी होने के कारण अपने साथ काफी मात्रा में गर्म कपड़े ले जा रहे हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१८ वर्ष की उम्र इस साहस-यात्रा नहीं होगी ?—इस प्रश्न के उत्तर में हैं कि ५८ वर्ष की उम्र ही ऐसी , जब आदमी को इस प्रकार की ताओं में भाग लेना चाहिये। इस ौरान वे शुद्ध शाकाहारी भोजन ब्बाबंद सूखी सब्जियां, सूखे मेवे ाज ! उन्होंने बताया कि वे नौका सी सब्जी और फल भी उगाने का रेंगे, जिससे दौड़ के दौरान कुछ जें मिलें। इन्हें एक सुविधा यह है रेट के शौकीन नहीं हैं और यात्रा के राब भी नहीं पियेंगे।

डर किंग ने बताया कि वे अपने ी पत्नी के वे उपन्यास लें जायेंगे, अब तक पढ़ नहीं पाये थे। वे विनोद- ते हैं—"मैं अपनी पत्नी के सम्मुख ी नाविक का चरित्र प्रस्तुत करूंगा। कभी कोई उपन्यास इस विषय ना चाहे, तो अपने अनुभव उसे सही ा सकूं, इस उद्देश्य से मैं अपने साथ बुक भी ले जा रहा हूं।"

ोनाल्ड क्रोहर्स्ट : उम्र ३५ वर्ष। न्म भारत में हुआ था और जब ये थे, तब से मच्छीमारों की किश्ती र करांची के आस-पास समुद्र में ी थे। ये नैविगेशनल सामग्री के हैं और इन्होंने अपनी देखरेख में ष नौका तैयार करवायी है, जिसमें १५० मील तक की नौका-यात्राएं की हैं।

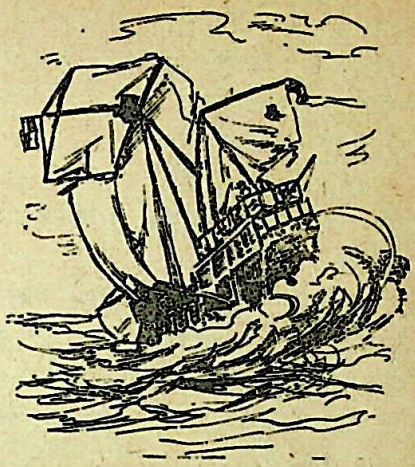

पोतभंग

८. लेफ्टिनेंट कमांडर निगेल टेटले : उम्र ४५ वर्ष। ब्रिटिश जलसेना के एक अधिकारी। ४० फुट की 'ट्रिमरान' में यात्रा कर रहे हैं। आगामी फरवरी में नौ-सेना से निवृत्त हो जानेवाले टेटले का कहना है कि यदि प्रतियोगिता में दो-दो व्यक्ति जा सकते, तो मैं अपनी पत्नी को भी ले जाता।

९. यीव्स वालरेंड : उम्र ४० वर्ष। नौकाचालन के प्रशिक्षक हैं और 'लागीताना' नामक निजी नौका में सेंट ट्रोपेज से प्रस्थान कर रहे हैं। वालरेंड को नौकाचालन का काफी अनुभव है और भूमध्य सागर में खूब घूम चुके हैं। वे अपने साथ चावल तथा शहद ले जा रहे हैं।

१०. 'ताहिती बिल' हावेल : ४२ वर्षीय आस्ट्रेलियाई दंत-चिकित्सक। ४३ फुट की 'गोल्डन काक्रेल' नामक नौका पर यात्रा कर रहे हैं। हावेल को प्रशांत महासागर में २०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हजार मील तक भ्रमण करने का अनुभव है। वे अपने साथ डिब्बाबंद खाद्य सामग्री तथा काफी मात्रा में बीयर ले जा रहे हैं। आपको गंभीर पुस्तकें पढ़ने का शौक है।

संभव है, ३१ अक्तूबर १९६८ तक कुछ और भी नाविक प्रतिस्पर्धा में सम्मिलित हो जायें।

यह निश्चय कि दौड़ ४० अक्षांश उत्तर से ऊपर के किसी बंदरगाह से ही आरंभ की जाये, एक विशेष कारण से किया गया है। यदि आपके पास ग्लोब या कोई अच्छा मानचित्र हो, तो आस्ट्रेलिया के दक्षिण-पूर्व में स्थित टस्मानिया द्वीप पर नजर डालिये। टस्मानिया के दक्षिणी भाग में होबर्ट बंदरगाह है। यदि कोई नाविक यहां से रवाना हो और आस्ट्रेलिया, अफ्रीका और दक्षिण अमरीका के दक्षिण रहते हुए पृथ्वी की परिक्रमा पूरी कर ले, तो लंदन से चलकर लंदन लौटनेवाले नाविक की अपेक्षा उसे १४ हजार मील कम यात्रा करनी पड़ेगी।

सर फ्रांसिस चिचेस्टर का कहना है कि सभी नाविकों को ४० अक्षांश दक्षिण में पहुंचकर मुसीबत का सामना करना पड़ेगा। ४०-५० अक्षांश के बीच का समुद्र बहुत विक्षुब्ध रहता है। इसीलिए नाविक उसे 'गरजती चालीसी' (रोरिंग फार्टीज) कहते हैं। तीनों अंतरीपों के दक्षिण पड़नेवाले इस सागर-प्रदेश में ही चिचेस्टर और रोज दोनों संकट में पड़ गये थे। चिचेस्टर ने तो अपनी किश्ती 'जिप्सी माथ-४' की मरम्मत समुद्र में खुद ही कर ली थी। लेकिन रोज को मरम्मत के लिए न्यूजीलैंड में रुकना पड़ा।

और असली संकट-स्थान होगा हार्न अंतरीप, जहां ९० फुट ऊंची लहरें उठा करती हैं। एक बार ब्रिटिश जलसेना का आधा बेड़ा यहां डूब गया था।

ताजातर समाचार के अनुसार कप्तान रिजवे ने इस प्रतिस्पर्धा से हाथ खींच लिया है। वे ब्राजील के बंदरगाह रेसिफ में पहुंच गये हैं। उन्होंने बताया है कि दक्षिण अटलांटिक में पहाड़-जैसी लहरों और तूफानी हवाओं ने यह खतरा पैदा कर दिया था कि उनकी किश्ती का डेक उखड़ जायेगा।

—संपादक

★

मराठी रंगमंच के सुप्रसिद्ध अभिनेता काशीनाथ घाणेकर के मकान में तीन दिन से रंग लगाने का काम चल रहा था। शनिवार की दोपहर को उनके लोकप्रिय नाटक 'गारंबीचा वापू' का शिवाजी मंदिर में प्रदर्शन था। घाणेकर ने रंग करनेवालों से पूछा—"शनिवार दोपहर के नाटक का आप लोगों को पास दें, तो चलेगा?" उन्होंने कहा—"हां, चलेगा!"

शनिवार को नाटक देखकर रविवार को जब रंगवालों ने अपने काम का बिल भेजा, तो उसमें तीन दिन के काम को हिसाब के साथ लिखा था—"शनिवार दोपहर चार से आठ तक शिवाजी मंदिर में 'ओवर टाइम' किया उसके .....रुपये!"

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अभियुक्त का जीवन-चरित्र

प्रकाश खन्ना

त अच्छा लड़का है वह हमेशा से। उसके स्कूल के मास्टर हमेशा उसकी किया करते थे।" ये शब्द हैं उसके के।

र स्कूल की रिपोर्ट ? ग्यारह वरस त्र तक वह स्कूल गया। १९५५-५६ में उसका अंतिम वर्ष था। उस साल पोर्ट है—धर्म बहुत अच्छा; अरबी अच्छी; अंग्रेजी अच्छी; गणित बहुत प्रद; इतिहास और भूगोल संतोष- विज्ञान उत्तम; परिश्रम उत्तम; ण उत्तम; सफाई उत्तम; सामान्य- संतोषप्रद।

पनी कक्षा के १६ विद्यार्थियों में उसका सातवां ही रहा, तो भी अपनी श्रेष्ठता से विश्वास था। अपने पिता से वह र कहता था—"पापा, मेरे अध्यापक हैं कि मैं एक दिन बहुत बड़ा आदमी ।" पिता से वह यह भी पूछता था— , मैं अपने भाइयों से चतुर हूं न ?" ारह वर्ष की आयु में वह अपनी माता, ाइयों और एक बहन के साथ अमरीका गया। लास एंजेलीस के उपनगर पासा- डेना के एक स्कूल से उसने उच्च श्रेणी में हाईस्कूल पास किया और फिर एक दूसरी श्रेणी के कालेज में भर्ती हो गया। उसके सहपाठियों का कहना है—वह कम बोलता था और उससे मित्रता करना कठिन था; लेकिन उसका स्वभाव मैत्रीपूर्ण था। पढ़ने में बहुत तेज, निर्दोष और शांत। अपने देश जोर्डन में बड़ा आदमी बनने के वह हमेशा सपने देखा करता था।

तो वह क्या चीज थी, जिसने इस लड़के के जीवन को भयानक मोड़ दे दिया ?

बचपन से ही उसके विचार उग्र थे। उसके पिता के कथनानुसार वह हिटलर का प्रशंसक था। कहता था—"हिटलर महान व्यक्ति थे। उसके विचार श्रेष्ठ थे। उसकी गलती यह रही कि उसने अपने देश की अपार क्षति की तथा उसकी नीतियां असफल हुईं।"

फिर भी वह फासिस्ट नहीं था, न दक्षिणपंथी। वास्तव में जब वह ११ वर्ष का था, तब जोर्डन की पुलिस ने वामपंथी होने के संदेह में उसकी जांच की थी। वैसे तो इस उम्र में राजनीतिक विचार पुख्ता नहीं होते,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किंतु इतना प्रकट हो चुका था कि उस लड़के में दृढ़ता थी और उसकी विचार-शक्ति आयु के अनुपात में अधिक विकसित थी।

धर्म के प्रति उसका झुकाव, उसकी उग्रता का एक कारण था। यह झुकाव उसने मां के प्रभाव से प्राप्त किया था। वह नियमित रूप से बाइबल पढ़ता था, प्रार्थना करता था और रविवार को गिरजाघर जाता था। अशिष्ट भाषा का प्रयोग उसे असह्य था। जो बच्चे ऐसी भाषा का प्रयोग करते, वे दूसरी बार उसके घर नहीं आ पाते थे।

धर्म के कारण उसके माता और पिता के बीच् अनबन हुई। माता १९५६ में छः में से पांच बच्चों को लेकर अमरीका चली गयी। पिता ने पहले तो तलाक प्राप्त करना चाहा, फिर यह विचार त्याग दिया और कुछ महीने बाद वह भी अमरीका चला गया। परंतु वहां अपने परिवार के साथ कुछ समय ही रहा और तीन वर्ष बाद वापस जेरूसलम चला गया और वहां से जोर्डन।

पासाडेना की पुलिस ने उस लड़के के बारे में तफ्तीश करके उसके बारे में फाइल तैयार की थी। लेकिन उसमें कोई खराब बात नहीं है। उस फाइल में उस पर कोई इलजाम नहीं है। फाइल और लाखों साधारण आदमियों की फाइलें जैसी ही है।

लेकिन कैलिफोर्निया की दुनिया निर्मम है। तेल, चलचित्र और प्रतिरक्षा के उद्योगों ने लास एंजेलीस को धनाढ्य बना दिया है। घातक होड़ का केंद्र हो गया है यह नगर। एक ओर धनी-मानी अपनी समृद्धि का प्रदर्शन करते नहीं थकते, तो दूसरी ओर गरीब अपनी कमर-तोड़ मेहनत की थकान के कारण सिर नहीं उठा पाते।

इस नगर के उपनगर पासाडेना में वह लड़का आकर वसा। तो यहां क्या हुआ, जिसने उसके जीवन को मोड़ दिया? लगता है कि खराब सोहबत ने सफाई-पसंद, शांत तथा महत्त्वाकांक्षी बालक को बदला। उस पर सबसे अधिक प्रभाव था उसके भाइयों का। हालिवुड की चकाचौंध ने एक भाई को कई बार स्कूल से भगाया। इतना ही नहीं, नशीली चीजों के उपयोग का जुर्म भी लगा उस पर। दूसरा भाई ज्यादा खतरनाक रहा। उसने एक बार अपनी एक मित्र की मोटर के ब्रेक ही काट दिये थे, जिससे वह मर जाये। इस पर उसे सजा भी हुई, लेकिन बहुत मामूली।

वह लड़का घुड़दौड़ के मैदान में काम करके कुछ कमाने लगा था और रेस का जाकी बनना चाहता था, लेकिन यह संभव न था; क्योंकि वह बहुत लंबा था और उसका वजन भी अधिक था। फिर जिस दिन वह अपने काम के दौरान घोड़े से गिर कर घायल हो गया, तो उसका यह सपना भी टूट गया। उसे अदालत ने २,००० डालर का मुआवजा जरूर दिलवाया। फिर वह एक साल बेकार रहा। पिछले साल सितंबर में एक दुकान में उसे काम मिला। इस वर्ष ७ मार्च को उसे इस नौकरी से हटा दिया गया। दुकान के मालिक का कहना है- "लड़का बहुत भरोसे का है; सिद्धांतों-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

; शराब तो दूर, वह सिगरेट भी
ता। लेकिन मानसिक रूप से वह
ा ताबेदार नहीं हो सकता। कोई
ा दे, यह उसे अच्छा नहीं लगता।"
ीका ने इस अरब प्रवासी को कैसे
ा किया? लास एंजेलीस के महापौर
साम्यवाद-समर्थक ठहराया है; परंतु
माण नहीं मिलते। पासाडेना के
हपाठी बताते हैं कि वह दृढ़ साम्य-
रोधी था और यहूदी-विरोधी भी।
के मैदान तथा दुकान की नौकरी
में उसके यहूदी-विरोधी होने के
मिलते हैं। लगता है कि अमरीका
तया उसे यहूदी-विरोधी बनाया।
में वह जियोन धर्म का विरोधी था,
यहूदियों का विरोधी नहीं था। अम-
उसने वह दुनिया देखी, जिसमें लग-
व लाख यहूदी तो धनाढ्यों में भी
हैं, परंतु अरब गंदी वस्तियों में भी
नहीं रह पाते।

घोषणा कोरी कल्पना नहीं लगती
नी यहूदी-विरोधी प्रवृत्ति के कारण
धवार, ५ जून को वह जघन्य अप-
कया, जिसने उसका नाम संसार में
कर दिया। और वह 'बड़ा आदमी'
या—बदनाम होंगे तो क्या, नाम न
उसका नाम—सिरहन बिशारा सिरहन।
अपराध—अमरीका के राष्ट्रपति-पद
ाशी सेनेटर राबर्ट एफ० कैनेडी पर
ों की बौछार करना, जिससे बाद में
मृत्यु हो गयी।

दुर्घटना के बाद सिरहन के घर की तलाशी ली गयी। दो डायरियां मिलीं। एक डायरी में १७ या १८ मई को लिखा गया था —"५ जून तक राबर्ट कैनेडी की हत्या हो जानी चाहिये।" १७ मई तक राबर्ट कैनेडी जोरदार शब्दों में यह मत व्यक्त कर चुके थे कि अमरीका को इजरायल को शस्त्रास्त्र देने चाहिये। ५ जून को ही छः दिन के उस इजरायल-अरब युद्ध की पहली वर्ष-गांठ थी, जिससे सिरहनका जोर्डन का घरबार इजरायल के अधिकार में आ गया था।

दुर्घटना से पहले के दिनों में वह क्या चीज हुई, जिसने यहूदी-विरोधी सिरहन को राजनीतिक हत्यारा बना दिया? अमरीकी न्याय-व्यवस्था इस प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने का प्रयत्न कर रही है।

जेल में वह संतुष्ट लगता है। नियमित रूप से थियोसोफी की दो पुस्तकें पढ़ता है—एक मैडम ब्लावत्सकी की और दूसरी सी० डब्लू० लीडबीटर की।

इस सवाल का जवाब नहीं मिलता कि हत्या में उसके अतिरिक्त किसी और का भी हाथ था या नहीं? हत्या के पूर्व के उसके विचारों और गतिविधियों के बारे में कोई जानकारी नहीं मिली है। मालूम है तो इतना ही कि उस दिन वह बाबी कैनेडी के प्रशंसकों की भीड़ में आ मिला और बीस मिनिट तक अपनी उंगलियों से कागज फाड़ते हुए उस क्षण का इंतजार करता रहा, जिस क्षण कदम बढ़ाकर उसने उन्हीं उंगलियों से अपनी पिस्तौल का घोड़ा दबा दिया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आर्किड

दुनिया के कुछ बहुत ही सुंदर फूल आर्किड परिवार से संबंधित हैं। वैसे तो दुनिया में शायद ही कोई पौधा-परिवार होगा, जिसे इतना अधिक उगाया जाता हो और जिसका उपयोग संकरण और पुष्प-व्यापार में इतना अधिक होता हो। फिर भी औसत भारतवासी को जितना कम परिचय और ज्ञान आर्किड के बारे में है, उतना शायद ही किसी अन्य फूल के बारे में होगा।

यों हमारे देश के वनों में आर्किड का अपूर्व खजाना भरा है। (यह अफसोस की बात है कि तथाकथित सभ्यता के प्रसार के साथ वनों का बड़ी तेजी से सफाया हो रहा है।) पर आर्किड के साथ कुछ रहस्य-सा जुड़ गया है और उसका संबंध अमीरी से जोड़ दिया गया है। इन सब कारणों से लोग आर्किड से बहुत कम परिचित हैं।

दुनिया में आर्किड की २० हजार से भी अधिक जातियां है। ये ठंडे बर्फीले इलाकों से लेकर सूखे रेगिस्तानों और उमस-भरे वर्षाबहुल वनों तक भिन्न-भिन्न जलवायुओं में पनपते हैं। पर्वतों के ऊंचे शिखरों पर, दक्षिण अमरीका के घने बरसाती जंगलों में और दलदलों में आर्किड खिले हुए पाये जाते हैं।

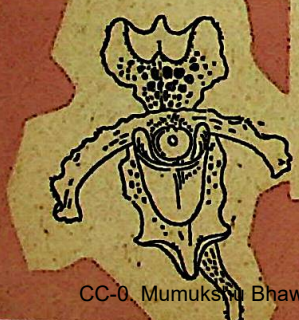

कभी वे समुद्र के खारे पानी में खड़े वृक्षों पर उगे हुए मिलते हैं, जहां ज्वार के समय समुद्र बूंदों की बौछार से उन्हें नहलाया करता है। कभी वे खूब ऊंचे पेड़ों की कलगियों पर लटके हुए मिलते हैं, जहां धूप उन्हें झुलसा डालती है। और एक आर्किड तो जमीन के नीचे खिलता है। वे ऐसी कठोर और प्रतिकूल परिस्थितियों में पनपते हुए मिलते हैं कि जहां उनका तो क्या कहना,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक सुंदर पुष्पजाति, जिसके साथ अमीरी और रहस्य का संबंध जोड़ दिया गया है।

शमून अब्दुल अली

ी पौधे के उगने की आशा नहीं की जा सकती। आर्किड के पौधों और फूलों के आकार-प्रकार र वैविध्य है। कुछ पौधे चौथाई इंच से भी छोटे तो कुछ २५ फुट से भी ऊंचे होते हैं। कुछ लता ते हैं—वेनिला लता की तरह, जो सौ फुट से ी होती है।

फूलों के साइज में भी बड़ा अंतर होता है—कोई के ३२वें हिस्से से भी छोटा, तो कोई ९ ा। और फूल का छोटा-बड़ा होना पौधे के छोटे-ी पर निर्भर नहीं। डेढ़ फुट के पौधे पर आठ इंच चौड़ा फूल लग सकता है और २५ फुट ऊंचे र महज पांच इंच का। किसी पौधे में एक एक ही फूल लगता है, तो किसी में एक साथ फूल खिलते हैं।

आर्किड फूलों की आकृतियां भी इतनी भिन्न-भिन्न हैं कि कई बार यह विश्वास करना कठिन हो है कि कोई दो फूल एक ही परिवार के हैं। फूलों नी अधिक किस्में हैं कि यहां उन सबका वर्णन तो ामोल्लेख करना भी संभव नहीं है। यहां हम त्यंत प्रसिद्ध फूलों की ही चर्चा करेंगे, जिन्हें ड-प्रेमी बहुधा उगाया करते हैं।

असम के 'लेडीज स्लिपर' की पंखुडी स्त्रियों के जैसी लगती है। दक्षिण अमरीका के 'बकेट ड' में एक छोटी बालटी-सी होती है, जिसमें ल भरा होता है। दूसरे लोकप्रिय आर्किड हैं— का 'वी आर्किड' और 'फाक्सटेल', इंग्लैंड का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'मैन मंकी एंड लिज़ार्ड', ब्राजील का 'स्पाइडर' और 'पैन्सी', मलय का 'स्कार्पियन' और इंडोनेसिया का 'माथ आर्किड', जिसकी सुंदरता देखकर आप अवाक् रह जायेंगे।

आर्किड फूलों और पौधों की कीमतें भी अलग-अलग होती हैं। लगभग पचास साल पहले एक बार लंदन के एक नीलाम में भारत के 'स्लिपर' आर्किड का एक पौधा १,००० पौंड (आज के १७,८०० रुपये) में बिका था। आज वही पौधा ४ रुपये अदद के भाव बिकता है। औसत आमदनीवाले पुष्पप्रेमियों के लिए उपयुक्त अधिकांश आर्किड पौधे प्रायः ३।। से लेकर १० रुपये तक में मिल जाते हैं। वैसे कई अत्याधुनिक संकर (हाइब्रिड) आर्किडों की कीमत अमरीका और यूरोप में सैकड़ों-हजारों रुपयों तक पहुंचती है। मगर ये खास कद्रदानों और करोड़पतियों के लिए ही ठीक हैं।

बंबई जैसी जगह में भी आर्किड उगाना आसान है। जमीन पर मिट्टी में बोये जानेवाले आर्किडों को छोड़ दें, तो प्रायः बंबई में आर्किड कोयले और टूटे खपरैल के टुकड़ों के मिश्रण में उगाये जाते हैं। ये लंबे अर्से तक बिना पानी के रह सकते हैं। वैसे कुछ पौधों को रोज पानी देना पड़ता है और कुछ को तो दिन में दो-दो बार।

बंबई आर्किड क्लब की स्थापना मुट्ठीभर लोगों ने मिलकर की थी, जो कि या तो शौकिया तौर पर आर्किड के पौधे उगाया करते थे, या आर्किड-प्रेमी थे। क्लब का मुख्य उद्देश्य है—आर्किड उगाने के तरीके लोगों को बताना और आर्किड को लोकप्रिय बनाना।

★

फूल की तरह मनस्वी मनुष्य की दो ही वृत्तियां होती हैं—या तो सबका सरताज बनकर रहना, या वन में ही मुरझा जाना। —भर्तृहरि

गुन्चे तेरी ज़िंदगी पै दिल हिलता है
बस, एक तबस्सुम के लिए खिलता है ?
गुन्चे ने कहा हंसकर—बाबा,
एक तबस्सुम भी किसे मिलता है ?

—जोश मलीहाबादी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

द आचार्य रामचंद्र वर्मा ने लिखा है कि एक बार किसी पत्रिका में उन्होंने यह टिप्पणी
पढ़ी थी—"खेद है कि प्रकाशक के एकमात्र पिता के स्वर्गवास के कारण यह अंक समय
शित नहीं हो सका।" भोले-भाले शब्दों के ऐसे कुछ हास्यजनक प्रयोग हम सभी
ने को मिल जाते हैं।

अभी कुछ दिन पहले एक मित्र ने चिट्ठी द्वारा मुझे सूचित किया—"तुम्हें यह जान-
ना होगा कि गत शुक्रवार की शाम को पूज्य पिताजी का अनायास देहावसान हो
सचमुच मेरे लिए यह समाचार दुःखदायी था। दिवंगत सज्जन मेरे अत्यंत पूज्य
हितैषी थे।

लेकिन उस शोक में भी मेरी नजर **अनायास** शब्द पर अटक गयी। मित्र ने आगे
लिखा था, उससे स्पष्ट था कि पूज्य पिताजी की मृत्यु अचानक हो गयी। फिर भी
स मृत्यु यह पद-प्रयोग कुछ अखर गया। **अनायास** (अन्+आयास) का अर्थ है—
ायास अर्थात् प्रयत्न या परिश्रम के। इसे **सायास** का उलटा कह सकते हैं।.....
जार में एक पुराने मित्र से अनायास भेंट हो गयी .....आज मुझे एक दुर्लभ
रद्दीवाले के यहां अनायास मिल गयी—ऐसे प्रयोगों में यही अभिप्राय है कि मित्र से
या पुस्तक पाने के लिए प्रयत्न नहीं करना पड़ा। मित्र से भेंट या पुस्तक की प्राप्ति
नक थी। इसीलिए **अनायास** के गौण अर्थ के रूप में अचानक या अकस्मात् शब्द
ं भी सम्मिलित हैं।

मृत्यु के साथ **अनायास** विशेषण अटपटा इसलिए है कि पत्र-लेखक का अभिप्राय यह
कि दिवंगत को मृत्यु के लिए प्रयत्न या परिश्रम नहीं करना पड़ा। मृत्यु के लिए प्रयत्न
श्रम हत्या और आत्मघात इन दो ही स्थितियों में किया जाता है। इसलिए यही
उचित है कि "पूज्य पिताजी की अचानक मृत्यु हो गयी।" इससे "राबर्ट केनेडी की
स हत्या कर दी गयी" ऐसे प्रयोगों का अटपटापन भी स्पष्ट हो जाता है।

वास्तव में शायद ही कोई दो शब्द शतांश में समानार्थक हों। प्रवृत्ति-निमित्त की
के बावजूद व्युत्पत्ति-निमित्त की भिन्नता के कारण उनकी अर्थध्वनियों में थोड़ा-बहुत
हता ही है। विशेषणों पर यह बात विशेष रूप से लागू होती है। —शाकल्यायन

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तनाव-मुक्ति की युक्तियां

आप भी इन आसान उपायों को आजमाकर देखिये

अस्पताल के कमरे में एक अधेड़ औरत बैठी है, खोयी-खोयी-सी, अकेली। वह हाथ मलती जा रही है और रोती जा रही है। वह तीव्र चिंता से आकुल है, जिसने उसमें उग्र मानसिक बेचैनी और भावावेग की स्थिति पैदा कर दी है।

फुटबाल के मैदान में एक स्वस्थ युवा खिलाड़ी तनकर खड़ा है और गेंद की प्रतीक्षा कर रहा है। उसका गला सूख गया है और उसे घुटन-सी महसूस हो रही है; उसका दिल जोर से धड़क रहा है; उसके घुटने कांप रहे हैं और वह विरोधी टीम के खिलाड़ी से भिड़ने की तैयारी कर रहा है।

वह अधेड़ औरत और यह खिलाड़ी दोनों भावावेग और चिंता के बुरे और भले परिणामों के नमूने हैं। दोनों में जो अंतर है, वह समझ का अंतर है। वह अधेड़ औरत सोचने-समझने और अपने भावावेग से जूझने की क्षमता खो बैठी है; जबकि यह युवक न केवल अपने तनाव के कारण को समझता है, बल्कि खेल को जानदार बनाने के लिए उसका उपयोग भी करना चाहता है।

बेचैनी और तनाव जीवन की अनिवार्य प्रक्रियाएं हैं। वे दुर्घटना, बीमारी और आर्थिक संकट आदि खतरों से आत्मरक्षा करने का प्राकृतिक हथियार हैं। वे कोई बुरी चीज नहीं हैं। ठीक से जीने के लिए हमारे दैनिक जीवन में उनका होना आवश्यक है। यदि भावना के ये आवेग न हों, तो मनुष्य को सामने से सरपट चली आती हुई कार को देखकर यह भी नहीं सूझेगा कि उसे उछलकर दूर हट जाना चाहिये।

लेकिन अगर सरपट आती हुई कार को देखकर आदमी इतना ज्यादा घबरा जाये कि सड़क पार ही न कर सके, या घर से निकलना ही बंद कर दे, तो उसे अपने भावावेग की पड़ताल करानी चाहिये।

कठिनाइयां सभी के सामने आती हैं, इसलिए तनाव भी सभी को होता है। कभी कभी ऐसा भी होता है कि बिना किसी समस्या या खतरे के भी यों ही मनुष्य चिंता और तनाव से ग्रस्त हो उठता है।

तनाव का एक और कारण भी है, जो आधुनिक जीवन की जटिलताओं की देन है। वह है व्यग्रता और हताशा का भाव। यह इस अनुभूति से उपजता है कि हम ऐसी समस्याओं और संघर्षों से घिर गये हैं जिनका कोई हल नहीं है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

र इन सबके बावजूद मनुष्य में इतनी
क शक्ति है कि वह बड़ी-छोटी, सच्ची-
तीव्र या मंद भावनात्मक संकटों का
कर सकता है और उनके दूर हो
र पुनः पूर्ववत् प्रकृतिस्थ हो सकता
न तनावों से उसे थोड़ा-बहुत सिरदर्द
जाये, वह मानसिक दृष्टि से बीमार
ो जाता ।

र कुछ लोग पुनः प्रकृतिस्थ नहीं हो
उनका तनाव हर बार पिछली
अधिक दीर्घस्थायी और उग्रतर रूप
करता जाता है । इससे आगे चलकर
और भयंकर स्नायु-विकार आदि
मस्याएं पैदा हो सकती हैं ।

द आपके जीवन में यह स्थिति आ गयी
उसे कैसे पहचाना जाये ? अपने आपसे
ल पूछिये :

क्या छोटी-मोटी विफलताएं भी
एकदम उद्विग्न कर देती हैं ?

क्या आप लोगों के साथ निभा नहीं
ौर लोग भी आपके साथ निभाने में
ई अनुभव करते हैं ?

क्या आप हरदम अपनी ही परे-
ों की बातें सोचते रहते हैं ?

क्या जिन परिस्थितियों में पहले
ो कोई परेशानी नहीं होती थी, अब
आपको घबराहट होती है ?

क्या आपको अपने दोस्तों पर शक
है, आप उन पर विश्वास नहीं कर पाते ?

क्या आपको स्वयं अपने आप पर भी
ास होने लगा है ?

७. क्या आपको ऐसा लगता है कि आप जीवन में फंस गये हैं और निकलने के सब रास्ते बंद हो गये हैं ?

अगर इनमें से अधिकांश का उत्तर 'हां' में है, तो आप घबराइये नहीं । यह कोई बहुत बड़ी मुसीबत नहीं है । यह तो इसका लक्षण-मात्र है कि आपको अपनी भावनात्मक समस्याओं पर रचनात्मक दृष्टि से विचार करना चाहिये ।

और मानस-चिकित्सक इसके दस इलाज सुझाते हैं ।

१. **जरा पलायन कीजिये :** जब परिस्थितियां बिगड़ने लगें, तो कई बार कुछ समय के लिए उनको अनदेखा कर डालना उपयोगी हो सकता है । खेल-कूद, रोचक पुस्तक या सैर द्वारा अपना मन बहलाइये । बिगड़ी परिस्थिति के सामने अनावश्यक रूप से डटे रहना अपने आपको सताना है। यह कोई रचनात्मक तरीका भी नहीं है । दरअसल समस्या के वार से बच निकलना

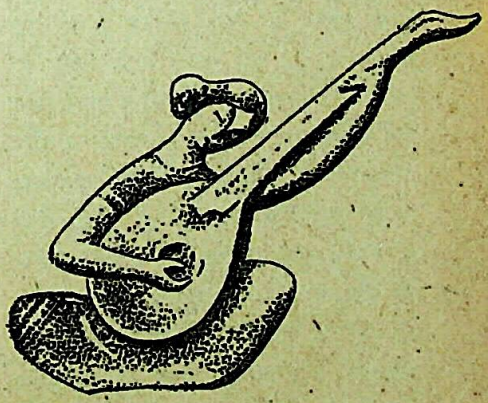

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अव्यग्र मुद्रा
एक जापानी चित्र की अनुकृति

और पुनः मानसिक संतुलन प्राप्त करके उस पर धावा बोलना अधिक बुद्धिमत्तापूर्ण है।

२. बातों में बहा दीजिये : समस्याओं को मन की बोतल में बंद करके भीतर से घुटते मत रहिये। किसी शांत और संतुलित मन-मस्तिष्क वाले व्यक्तिको अपनी समस्या बताइये। बोलने से भी तनाव घटता है और समस्या पर रचनात्मक दृष्टि से सोचने में सहायता मिलती है।

३. दूसरों को अवसर दीजिये : मानसिक तनाव से युक्त व्यक्ति प्रायः यह सोचता है कि उसे सबसे आगे रहना है, दूसरों को पिछाड़ना है। हर चीज उसके लिए एक प्रतिस्पर्धा, एक रेस बन जाती है और प्रतिस्पर्धा में किसी-न-किसी का मानसिक अथवा शारीरिक रूप से, या दोनों रूपों से, घायल होना लाजमी है। प्रतिस्पर्धा छूत की बीमारी है; मगर सौजन्य और सहयोग भी छूत की बीमारियां (या छूत की तंदुरुस्तियां) हैं। जब भी संभव हो, दूसरों को आगे बढ़ाइये। इस तरह वास्तव में आप अपने आपको आगे बढ़ा रहे होंगे।

४. काम करके तनाव मिटाइये : अगर कभी गुस्सा भड़क उठे और भड़ास निकालने की इच्छा हो, तो जरा संयम से काम लीजिये और उस इच्छा को दबा दीजिये। उसके बजाय किसी शारीरिक काम में जुट जाइये। घूमने निकल जाइये। तैरने चले जाइये। फुटबाल या वालीबाल खेलिये—अपना गुस्सा गेंद पर निकाल दीजिये।

५. हाय-तोबा न मचाइये : हर चीज में पूर्णता प्राप्त करना अच्छा आदर्श है; मगर वह असफलता को न्योतने का सबसे आसान रास्ता भी है। कई लोग यही सोचकर परेशानी और तनाव पैदा कर लेते हैं कि वे अपनी योग्यता के अनुसार खूब बढ़िया काम नहीं कर पा रहे हैं। पहले यह पता लगाइये कि कौन-से काम आप खूब बढ़िया ढंग से कर सकते हैं, उन्हें खूब बढ़िया ढंग से कीजिये। बाकी चीजों को यथासंभव अच्छे ढंग से कीजिये; लेकिन असंभव को कर डालने की चेष्टा मत कीजिये।

इसी तरह दूसरों से बहुत ज्यादा आशा मत कीजिये। याद रखिये कि हर व्यक्ति की अपनी खूबियां और कमजोरियां होती हैं और हर एक को स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में विकसित होने का अधिकार है। दूसरे के गुणों को देखिये—इसमें आपका भी लाभ है, दूसरे का भी।

६. बातचीत कीजिये : बहुत-से व्यक्ति अनुभव करते हैं कि लोग उनकी उपेक्षा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैं, उनकी अवहेलना करते हैं; लेकिन व में दूसरे लोग इसका इंतजार कर रहे हैं कि ये सज्जन हमसे बोलें तो हम भी बात करें। सो अपने आप में सिमटे के बजाय, ऐसा दिखाइये कि आप ीत करना चाहते हैं। पहले दूसरा तब उत्तर दूंगा—यह सोचकर बैठे न । यह खुद आगे बढ़कर बातचीत शुरू और गुमसुम बैठे रहने के बीच का ा है। इसे आजमाकर देखिये।

. एक वक्त एक काम कीजिये : तनाव मय में आदमी को सामान्य काम-काज ड़ा बोझा लगने लगता है। अगर आपको भी ऐसा लगे, तो यही मानिये कि यह अस्थायी मनःस्थिति है। इससे पार का सबसे अच्छा तरीका यह है कि अधिक आवश्यक कार्य चुनकर, उन्हें एक करके निपटायें। जब आप उन्हें ा लेंगे, तो आपको अनुभव होगा कि चीजें तो बहुत मामूली हैं।

. दूसरों की खातिर जरूर कुछ-न-कुछ जये : हरदम अपनी ही मुसीबतों की सोचते रहने के बजाय, दूसरों के लिए कुछ करने का प्रयत्न कीजिये। इससे की परेशानियों की चुभन कम हो गी और आपको आत्मिक संतोष भी भव होगा।

. दिल-बहलाव का कार्यक्रम रखिये : लोग निरंतर अपने को काम में जोते ते हैं और दिल-बहलाव के लिए कुछ भी समय नहीं बचाते। अच्छा तो यह है कि आदमी भी बहुत-सी सुरुचियों का विकास करे, जिनमें वह काम-काज के घंटों के बाद के समय का विनियोग कर सके और उनमें डूबकर दुनियादारी की चिंताओं को भुला सके, आनंद पा सके।

१०. चिकित्सक की सलाह मानिये : जब चिंता और व्यग्रता इतनी ज्यादा बढ़ जाये कि आप अपना काम-काज ठीक से न अंजाम दे सकें, तो चिकित्सक से सलाह लेनी चाहिये। और चिकित्सक की सलाह लेते समय सारी बात खुलासे के साथ उसे बताइये; अपनी समस्या की जड़ तक पहुंचने की कोशिश कीजिये। संभव है, आपका डाक्टर कहे कि किसी मानस-चिकित्सक की सलाह लेना आवश्यक है। ऐसी हालत में उसके सुझाव का पालन कीजिये।

इन सभी सुझावों के पीछे मानसिक स्वास्थ्य का एक मूलभूत सिद्धांत निहित है। और वह सिद्धांत है, आस्था का सिद्धांत—अपने आप में आस्था, दूसरों में आस्था, जीवन की जिम्मेदारियों को निभाने की अपनी और दूसरों की क्षमता में आस्था।

लेकिन इस आस्था का आधार यह है कि आदमी अपनी शक्ति, अपनी कमजोरी, अपनी भावनाएं और भावनात्मक प्रतिक्रियाएं—इन सबको ठीक-ठीक पहचाने। अर्थात् जैसा कि सदियों पहले सुकरात ने कहा था—"अपने को पहचानो।" सुकरात की सलाह आज भी बड़े काम की है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

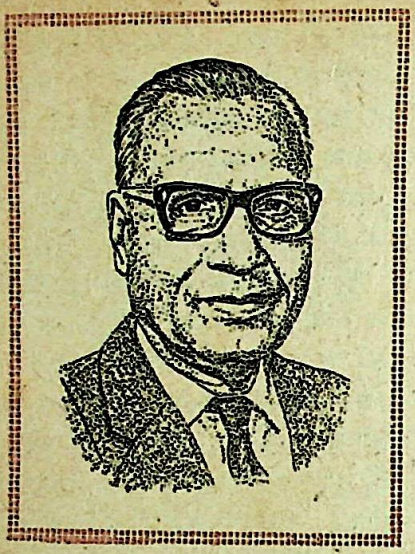

हमारा विज्ञान
हमारे वैज्ञानिक

भेषज-विज्ञान के आचार्यवर

चंदन

"घबराना मत, ईश्वर पर भरोसा रखना और धन के लिए चिकित्सा में किसी प्रकार की कमी न करना।" ..... यह पत्र और पांच सौ रुपये का एक चेक डा० गोरखप्रसाद श्रीवास्तव (फार्मास्युटिक्स विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय) को उस समय मिले, जब उनकी पत्नी सख्त बीमार थीं। चिकित्सा के लिए धन का कोई प्रबंध उनके पास नहीं था और घोर निराशा ने उन्हें आ दबाया था। कहीं से कोई आशा नहीं रह गयी थी। यह प्रेषक और दाता थे आचार्य महादेव लाल श्राफ—एक खरे मनुष्य, परिश्रमी शिक्षक, सदाजवां-सदाबहार राही, और आधुनिक भारतीय भेषज-विज्ञान के जनक।

आज हम आजाद हैं। शिक्षा और उद्योग के क्षेत्र में निरंतर विकास कर रहे हैं। मगर तीन-चार दशक पहले स्थिति इतनी अच्छी नहीं थी। देश में उच्च शिक्षाप्राप्त अध्यापकों का अभाव था। भेषजी अर्थात् फार्मेसी-विज्ञान की शिक्षा का प्रबंध देश के एक भी विश्वविद्यालय में नहीं था। पहले पहल मद्रास में १८९९ में एक 'केमिस्ट-ड्रगिस्ट डिप्लोमा' कोर्स शुरू हुआ। फिर १९२८ में बंगाल में भी एक ऐसा ही कोर्स प्रारंभ किया गया। दोनों कोर्स हाईस्कूल-पास विद्यार्थियों के लिए थे और उन्हें छोड़ दें, तो इतने बड़े देश में भेषजी की शिक्षा के नाम पर कुछ नहीं था; विश्वविद्यालय स्तर की उच्च शिक्षा और अनुसंधान की बात तो दूर।

आज स्थिति बिलकुल बदल गयी है। वाल्टेयर, मद्रास, कलकत्ता, बंबई, अमृतसर,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ढ़, अहमदाबाद, बेंगलूर, पिलानी, नागपुर, पटना, कानपुर और जयपुर अनेक शिक्षा-केंद्रों में भेषजी की उच्च-क्षा और अनुसंधान-कार्य की समुचित थाएं विद्यमान हैं। लेकिन हममें से लोग उस व्यक्ति के नाम तक से परि-हैं, जिसने इस विशाल शिक्षा-तंत्र का रोपण किया, अपने खून-पसीने से उसे र बड़ा किया ?

१९३२ की बात है। तब भेषजी का या व्यवसाय के रूप में कोई नाम-क इस देश में नहीं था; परंतु युवा क महादेवलाल श्राफ ने भेषजी के प्रचार को ही अपने जीवन का परम निर्धारित किया। तीन-चार वर्ष पहले अमरीका से उच्चतम शिक्षा प्राप्त देश लौटे थे। यह वह समय था, जब में स्वातंत्र्य-युद्ध की आग धधक रही हादेव लाल पक्के मानवतावादी होने जूद देशभक्त भी थे। वे आंदोलन में ड़े। सजा हो गयी। सींकचों के पीछे तो राजेंद्र बाबू, श्रीकृष्ण सिंह, सत्य-ण सिन्हा और विनोदानंद झा को गया।

र यह भी १९३२ की ही बात है। पं० ोहन मालवीय तब काशी हिन्दू विद्यालय के उपकुलपति थे। महा-ले को महामना के संपर्क का सौभाग्य । महामना तो रत्नपारखी थे। इस को छोड़ना एक बहुमूल्य हीरे को ा था। पैनी दृष्टि से यह चूक संभव नहीं थी। विश्वविद्यालय के लिए उन्हें ले लिया गया।

रसायन-विभाग में एक छोटे-से कमरे में भेषजी 'सेल' की नींव पड़ी। आगे जाकर यह छोटा-सा 'सेल' एक भरे-पूरे, स्वतंत्र विभाग के रूप में विकसित हुआ और इस तरह देश में विश्वविद्यालय स्तर पर भेषजी-शिक्षा का सूत्रपात हुआ। आज देश में भेषज-विज्ञान के जितने शिक्षक हैं, उनमें से लग-भग नब्बे प्रतिशत प्रत्यक्ष रूप से अथवा परं-परा से आचार्य श्राफ के शिष्य ही हैं।

डा० श्राफ जिस वक्त काशी विश्वविद्या-लय में पहुंचे, वहां की आर्थिक स्थिति संतोष-जनक नहीं थी। आचार्य श्राफ ने नये विभाग के लिए धन-साधन जुटाने के भार को भी स्वयं ही उठाया और दिन-रात घूमकर चंदा जमा किया। उस जमाने में भेषज-विज्ञान पर भारतीय आवश्यकताओं के अनुसार लिखी गयी पुस्तकें नहीं थीं। क्या करते, खुद ही पुस्तकों की भी रचना की। ईर्ष्यालु लोग नहीं चाहते थे कि इस युवक की धाक विश्वविद्यालय में जमे, सो काम में अड़ंगा डालते थे। आचार्य श्राफ ने उनसे भी टक्कर ली। कभी-कभी वे उदास हो जाते, तो महा-मना मालवीय उन्हें ढाढ़स बंधाते। उत्साह की नदी फिर हहराकर बहने लगती।

भारत में भेषजी से संबंधित सभी क्षेत्रों में आचार्य श्राफ की कार्यतत्परता रंग लाने लगी। दिसंबर १९३५ में उन्होंने 'संयुक्त प्रांतीय भेषजी एसोसिएशन' की स्थापना की और संस्थापक-सचिव की हैसियत से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसका सारा कार्यभार भी संभाला। देश में अपने किस्म की यह पहली संस्था थी और आगे चलकर इसने अखिल भारतीय संस्था का रूप ले लिया। आज इसकी शाखाएं सारे देश में फैली हुई हैं। इसी वर्ष उन्होंने 'इंडियन जर्नल आफ फार्मेसी' का प्रकाशन आरंभ किया। प्रधान संपादक की हैसियत से उन दिनों उन्होंने जो संपादकीय लिखे, वे उनकी दूरदृष्टि और प्रतिकूल परिस्थितियों से हार न माननेवाली लगन के प्रमाण हैं।

हिन्दू विश्वविद्यालय के अलावा भी कई उच्च शिक्षा-संस्थानों को आचार्य श्राफ के ज्ञान और उनकी कर्तव्य-शक्ति का लाभ मिल चुका है। बनारस से विदा लेने के पश्चात् उन्होंने पिलानी में भेषज-संस्थान की नींव डाली। वास्तव में राजस्थान एकेडमी आफ सायंसेज की शुरूआत भी आचार्य श्राफ के ही परिश्रम का फल है। सागर और जादवपुर विश्वविद्यालयों को भी आचार्य श्राफ से नेतृत्व मिला है।

भेषजी अर्थात् फार्मेसी-विज्ञान का संबंध औषधों के निर्माण और उनके अध्ययन से है। पेड़-पौधों से प्राप्त साधारण अर्क आदि से लेकर अत्यंत जटिल, संश्लिष्ट पदार्थ तक आधुनिक भेषजी के क्षेत्र में सम्मिलित हैं। इस सदी के पिछले छः दशकों में जितने क्रांतिकारी औषधों का निर्माण हुआ है, उतना पिछले छः सौ वर्षों में भी नहीं हुआ था। शरीर पर औषधों के प्रभाव-संबंधी ज्ञान में आश्चर्यजनक वृद्धि हुई है।

दवाओं की दौड़

विभिन्न प्रकार के जीवाणुओं के कारण उत्पन्न होनेवाली अनेक बीमारियां, जिनकी चपेट में आकर हर साल लाखों मनुष्य मक्खियों या चींटियों की तरह मर जाया करते थे, अब खुद खत्म होकर रह गयी हैं। जानलेवा न्यूमोनिया अब एक इंजेक्शन से भाग खड़ा होता है। तपेदिक अब लाइलाज नहीं है। मधुमेह का रोगी खुशी से पूरा जीवन जी सकता है। कुछ खास किस्म के कैन्सरों में भी मौत को मुल्तवी किया जा सकता है। हाल ही में ऐसी दवाओं ने हलचल मचा दी है, जिनका सीधा और तत्काल प्रभाव मानव-मस्तिष्क पर पड़ते देखा जा सकता है।

लगभग दो सौ साल पहले फ्रेंच मनीषी वाल्टेयर ने व्यंग्यपूर्वक लिखा था—"औषधीय उपचार एक कला है, जिसमें ऐसे पदार्थों को, जिनके बारे में हम कुछ नहीं जानते, रोगी के शरीर में, जिसके बारे में हमारी जानकारी और भी कम है, उड़ेल दिया जाता है।" वाल्टेयर अगर आज अपनी कब्र से निकल आये, तो उसे यह उक्ति रद्द करनी पड़े।

लेकिन आचार्य श्राफ जैसे सत्यनिष्ठ वैज्ञानिक जानते हैं कि भेषजी के क्षेत्र में कुछ ऐसी बातें भी हो रही हैं, जो नहीं होनी चाहिये। उन्हें यह देखकर गहरी पीड़ा होती है कि आर्थिक लाभ के लोभ में डाक्टरों और औषध-निर्माताओं का गठबंधन किस हद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पहुंच चुका है ।

न्होंने बताया—"भारत सरकार ने एक स्यूटिकल इन्क्वायरी कमेटी' नियुक्त ी। १९५४ में कमेटी की रिपोर्ट प्रका- हुई, तो यह बात सबके सामने आ गयी कस प्रकार नये औषधों के पेटेंट लेकर बनानेवाली कंपनियां कई बार मिट्टी ोने के भाव बेचती हैं।.....यों, बाहर ालत अच्छी नहीं है। प्रचार और विज्ञा- स हद तक बढ़ गया है कि सच्चाई को से ढूंढ़ निकालना मुश्किल काम है।"

स संदर्भ में वाल्टर माडेल का 'ड्रग लोजन' नाम का आंख खोल देनेवाला कीय याद आ जाता है :

"यह कैसे संभव है कि बाजार में ानेवाली हर नयी दवा दूसरी वैसी ही वाओं से अच्छी हो ? एक साथ ही एक- ी सैकड़ों दवाएं कैसे सर्वोत्तम हो कती हैं ? जाहिर है, उनमें से एक-दो ी घोषणाओं के अनुकूल हो सकती हैं। सलन, आजकल हमारे यहां (संयुक्त ाज्य अमरीका में) लगभग ४५ 'ट्रैंक्वि- ाइजर', ३० विभिन्न प्रकार के 'साइ- कक एनर्जाइजर' २५ किस्म के 'एन्टी- हिस्टामीन', ३२ प्रकार के 'एन्टी- पैस्मोडिक' और ३० प्रकार के 'डाइ- रेटिक' औषधों के बारे में दावा किया ा रहा है कि उनमें से प्रत्येक जांच-पड़- ाल और परीक्षण-प्रयोग के बाद सर्वो- म सावित हो चुका है। क्या बाजार ें बिकनेवाले डेढ़ लाख औषधों में से हर एक सर्वोत्तम है ? एक औषध-निर्माता ऐसा है, जो एक रोग-विशेष के लिए अमरीका में एक दवा बेचता है और उसी रोग की एक दूसरी दवा विदेशियों के लिए बनाता-बेचता है। और दोनों के बारे में उसका यही दावा है कि यह दवा दुनिया में सर्वोत्तम है। इस प्रकार के विज्ञापन तेल-साबुनवाले करते रहे हैं। मगर दवाएं तो साबुन नहीं हैं।"

ये बड़े खतरे हैं और इनसे सावधान रहने की बड़ी आवश्यकता है। डा० श्राफ ने बड़े आश्वस्त भाव से कहा—"मैंने कभी ऐसी चीजों में साथ नहीं दिया है। दबाव मुझे जीवन में कहीं भी पसंद नहीं। तभी तो संघर्ष मेरा हमजोली बनकर साथ-साथ रहा है।

"भागलपुर में हमारे घर में ही 'होम रूल' का कार्यालय था। उसमें मेरी दिल- चस्पी थी। अठारह वर्ष का होते-होते असह- योग आंदोलन ने मुझे अपनी ओर खींचा। स्वामी सत्यदेव परिव्राजक ने मुझे प्रेरणा दी और अगले वर्ष, अर्थात् १९२१ में मैं अकेला जापान भाग खड़ा हुआ। वहां 'ओसाका गायकोकू गोगाका' में हिन्दी पढ़ाना शुरू कर दिया। किसी दूसरे देश में जाकर अपनी मातृभाषा पढ़ाने में कितना मजा आता है, इसका अनुभव मुझे जापान में हुआ।" उनकी वाणी में कमाल का खिंचाव था। वे एक के बाद एक शब्दचित्र खींचते चले गये।

"लेकिन जापान में ज्यादा नहीं जम सका। डा० सुधींद्र बोस अमरीका में थे उस समय। मैं भी अमरीका जा धमका और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नितांत मानवीय

औषध-सेवन की इच्छा एक ऐसी मानवीय विशेषता है, जो दूसरे किसी भी जीवधारी में नहीं पायी जाती। यह मानव का अपना विशिष्ट गुण है। — सर विलियम रासलर

आयोवा यूनिवर्सिटी में दाखिला ले लिया। वहां रंगभेद का जोर था। पढ़ने की बड़ी इच्छा थी; मगर वर्णभेद मुझे बर्दाश्त न था। मेरे मन ने मुझे उसके विरोध में लिखने को मजबूर कर दिया। लेकिन उसके बाद यूनिवर्सिटी में न रहा—छोड़ दिया मैंने उसे।

"फिर कार्नेल यूनिवर्सिटी में दाखिला लिया और वहीं से १९२६ में रसायनशास्त्र में बी० ए० आनर्स किया। पहला भारतीय था मैं, यह डिग्री पानेवाला। फिर एम० एस-सी० किया और १९२९ में अपने मुल्क लौट आया।"

जिंदगी के इस पहले दौर की दास्तां सुनाते-सुनाते डा० श्राफ के सदाप्रसन्न चेहरे पर कुछ गंभीरता-सी झलकने लगी थी। मुझे अंदाज हो गया कि अब उनके भीतर छिपा वैज्ञानिक उन्हें अंदर कुरेदने लगा है। बड़े धीमे से कहना शुरू किया—"यों, अब मैं रिटायर हो चुका हूं (दिसंबर ६७ में उन्होंने जादवपुर विश्वविद्यालय के फार्मेसी-विज्ञान के प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष के पद से अवकाश ग्रहण किया).....परंतु संतोष मुझे नहीं है। शोध का जो रवैया हमारे विश्वविद्यालयों में चल रहा है, उसमें सुधार की, या यों कहिये, उसे सही दिशा में ले जाने की काफी गुंजाइश है।

"रसायनशास्त्र के अंतर्गत निर्माणप्रक्रमों का विकास इस सीमा तक हो चुका है कि अब किसी नयी दवा (संश्लिष्ट रासायनिक यौगिक) के बाजार में आते ही उससे मिलता-जुलता कोई दूसरा ऐसा ही यौगिक तैयार कर लेना बहुत मुश्किल नहीं रह गया है। नतीजा यह है कि ज्यादा जोर नये-नये यौगिकों के निर्माण पर है, और उनके अध्ययन पर कम। जबकि जरूरत यह है कि किसी भी यौगिक में निहित सक्रिय तत्वों (ऐक्टिव एलिमेंट्स) के अध्ययन पर ज्यादा ध्यान दिया जाये। शरीर के ऊतकों (टिश्यू) की प्रतिक्रिया और यौगिकों के सक्रिय तत्वों में जो पारस्परिक संबंध है, उस पर से परदा उठना ही चाहिये।

"हर दवा के कुछ अवांतर प्रभाव (साइड इफेक्ट्स) होते हैं। ऐसी कोई भी दवा आज तक नहीं बनायी जा सकी, जिसका कोई भी अवांतर प्रभाव शरीर पर न होता हो। कभी-कभी इसके भयंकर परिणाम होते हैं। आंकड़े नहीं हैं, मगर न जाने कितने ही बेगुनाह लोगों की मौत इन्हीं 'साइड इफेक्ट्स' के कारण हो जाती है। आखिर इसका दोष

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किस पर है?" स्वयं ही उत्तर देते हुए वे बोले-"उत्तरदायित्व से न हम लोग बच सकते हैं, न डाक्टर और न निर्माता।"

किंतु इसका इलाज क्या है?

"पहली बात तो यह है कि शौकिया दवाएं खाना ठीक नहीं। दवा का प्रयोग तभी किया जाना चाहिये, जब उसकी सचमुच जरूरत हो। याद रखने की बात यह है कि कोई भी औषध केवल यही कर सकता है कि शरीर के विभिन्न अंगों अथवा ऊतकों में उत्तेजना पैदा कर दे, या उनकी उत्तेजना को दबाकर उन्हें सामान्य कर दे। किसी भी नवीन गुणात्मक लक्षण का विकास औषध द्वारा संभव नहीं है। दूसरी बात यह है कि जब तक किसी औषध की प्रामाणिकता पूरी तरह से सिद्ध न हो जाये, उसका प्रयोग करने से बचना चाहिये।"

नयी दवाओं के प्रति सशंक-सतर्क न रहने का ही परिणाम है—बार-बार गला खराब होने पर 'क्लोरेमफिनीकाल' का प्रयोग करते-करते काफी लोगों को जान से हाथ धोना पड़ चुका है। पर यह प्रतिजैविक (एंटी-बायोटिक) बहुत सस्ता होने के कारण हमारे देश में खूब इस्तेमाल में लाया जा रहा है। यह बहुत गलत काम हो रहा है। विशेषज्ञों के अनुसार इसका प्रयोग केवल 'टाइफाइड' में किया जाना चाहिये।

इसी प्रकार सिर में प्रायः हो जानेवाले दर्द में खायी जानेवाली 'एमीडोपायरिन' युक्त टिकियां कितने ही लोगों को स्वर्ग-वासी बना चुकी हैं। कारण यह है कि इनके 'साइड इफेक्ट' के रूप में रक्त-संबंधी गंभीर गड़बड़ियां हो जाती हैं। गर्भावस्था में उलटी-सीधी दवाओं का प्रयोग कितना खतरनाक हो सकता है, यह 'थैलिडोमाइड' के किस्से ने दिखा दिया है। सच तो यह है कि फार्मेसी-विज्ञान के विकास से जितना भला हो सकता था, उसका काफी बड़ा अंश उद्योगीकरण की खामियों के कारण नहीं हो सका है।

औषध-उत्पादन की दृष्टि से भारत अब तेजी से स्वावलंबन की ओर बढ़ रहा है। लगभग २,८०० छोटे-बड़े कारखाने दवाओं का उत्पादन करते हैं। (इनमें से सवा सौ के करीब तो बड़ी-बड़ी फर्में हैं।) ५० हजार से अधिक कर्मचारी इन कारखानों में काम करते हैं। औषधों का स्तर कई मामलों में उन्नततम देशों में निर्मित औषधों की टक्कर का है। हृषीकेश में एंटी-बायोटिक कारखाना खुल जाने से देश अब कुछ औषधों का निर्यात भी करने लायक हो गया है। डी. डी. टी. और बी. एच. सी. ऐसे दो कीटनाशी हैं, जिन्हें 'हिन्दुस्तान इन्सेक्टिसाइड्स' बड़े पैमाने पर तैयार करके देश की आवश्यकताओं को पूरा कर रहा है।

देश के कई विश्वविद्यालयों में फार्मेसी-विज्ञान के अध्ययन की व्यवस्था हो चुकी है। भेषजीविदों की कई सोसायटियां बन चुकी हैं, कई पत्रिकाएं छप रही हैं।

इस पनपते-फैलते विशाल वट-वृक्ष का बीज बोनेवाले हैं—आचार्य महादेव लाल श्राफ। आज भी वे हमारे देश में भेषजी-संबंधी समस्त सत्प्रवृत्तियों के सूत्रधार हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बिजली का झटका लगने पर

धुरेंद्र कुमार गर्ग

आम तौर से घरों में बिजली का इस्तेमाल करते समय हमें जो झटके लगते हैं, वे हल्के होते हैं और उनके दुष्परिणाम अस्थायी होते हैं। परंतु बिजली तीव्र प्राणघातक झटके भी दे सकती है। नंगे तार (लाइव वायर) के संपर्क में आने से शरीर के जल जाने से लेकर हृदय के टुकड़े तक हो सकते हैं, जिससे तत्काल मृत्यु हो सकती है। अधिकांश परिस्थितियों में, बिजली का तीव्र घातक झटका लगने के बाद भी तत्काल ही समुचित प्राथमिक उपचार करके मनुष्य के प्राण बचाये जा सकते हैं।

बिजली के झटके के कारण अनेक बार मनुष्य मूर्छित हो जाता है। उसकी सांस बंद हो जाती है, परंतु दिल की धड़कन जारी रहती है। ऐसी परिस्थिति में आहत व्यक्ति की सांस पुनः चालू कराने का प्रयत्न तुरंत आरंभ कर देना चाहिये। इसके लिए (कृत्रिम श्वसन की विधि आगे दी जा रही है) यह बात ध्यान देने योग्य है कि यह क्रिया उस समय तक जारी रखनी चाहिये, जब तक आहत व्यक्ति स्वाभाविक रूप से सांस न लेने लगे। इसके लिए कई बार कृत्रिम सांस देने की क्रिया को ६ से ८ घंटे तक जारी रखना पड़ सकता है।

बिजली के झटके से आहत व्यक्ति को हाइपरस्टेटिक निमोनिया होने की संभावना बहुत अधिक होती है। इसलिए उसके शरीर को गर्म रखना चाहिये तथा कपड़े आदि खोलकर उसकी पोशाक को ढीला

क. १. बिजली के झटके से आहत व्यक्ति की सांस पुनः चालू करने के लिए उसकी पीठ पर बैठिये।

ख. २. फिर उसकी पीठ पर धीरे-धीरे जोर डालिये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

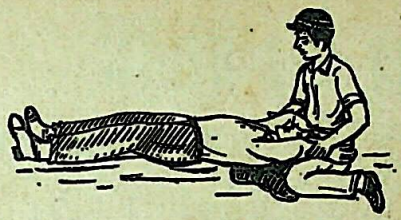

३. बिजली के झटके से वक्ष पर चोट खाये हुए व्यक्ति को पीठ के बल लिटाइये;
४. उसकी भुजाओं को बार-बार कोहनी पर से मोड़िये और फैलाइये।

कर लेना चाहिये।

आहत व्यक्ति को पेट के बल लिटा दीजिये और उसकी पीठ पर चित्र–१ में दिखायी गयी विधि के अनुसार बैठिये। अपने दोनों हाथ आहत व्यक्ति की पीठ के निचले भाग पर इस प्रकार रखिये कि उंगलियां खुली हों और दोनों अंगूठे लगभग मिलते हों तथा रीढ़ के समानांतर हों।

अब अपने हाथों पर झुककर आहत व्यक्ति के शरीर पर धीरे-धीरे लगभग तीन सेकेंड तक जोर डालिये, फिर जोर हटा दीजिये और अपनी पूर्व-स्थिति में आ जाइये। एक-दो सेकेंड के बाद फिर तीन सेकेंड के लिए आहत व्यक्ति के शरीर पर उसी विधि से जोर डालिये (देखिये चित्र–२)। जोर डालने और हटाने के क्रम को उस समय तक जारी रखिये, जब तक आहत की सांस पुनः आरंभ न हो जाये।

कृत्रिम श्वसन की क्रिया में आहत व्यक्ति को कभी झटकना-पटकना नहीं चाहिये।

यदि बिजली के झटके के कारण आहत व्यक्ति के वक्ष पर अथवा शरीर के अगले भाग में चोट लग गयी है, तो कृत्रिम श्वसन के लिए उसे पीठ के बल लिटा लीजिये। (देखिये चित्र–३)। उसके सिर के पास चित्र–४ में बताये गये तरीके से बैठिये। फिर उसकी भुजाओं को कोहनी पर से मोड़िये। दो सेकेंड के लिए उन्हें उसी प्रकार रखिये। फिर उन्हें फैलाकर सिर के ऊपर ले जाइये। और दो सेकेंड के लिए इस स्थिति में रखिये। फिर उन्हें मोड़ दीजिये। भुजाओं को मोड़ने और फैलाने की क्रियाओं को दो-दो सेकेंड के अंतर से उस समय तक करते रहिये, जब तक आहत व्यक्ति की सांस पुनः आरंभ न हो जाये।

झटके के कारण कोई अंग जल जाये, तो उस पर कभी तेल मत लगाइये।

('विज्ञान प्रगति' से साभार)

★

"शहाणे साहब तो बहरे होते जा रहे हैं, सर! कुछ सुनाई ही नहीं देता उन्हें!" बिक्री-विभाग के प्रमुख ने दुकान के मालिक से शिकायत की। "ऐसा है, तो उन्हें ग्राहकों की शिकायत सुननेवाले काउंटर पर बैठा दो!" मालिक ने तुरंत समस्या हल कर दी।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पत्र और परामर्श

आपकी पत्रिका सचमुच नवनीत है । सुपाच्य, रोचक व लाभप्रद । यह इस स्तर की अंग्रेजी पत्रिकाओं से भी बाजी मार ले गयी है ।

— वंशीधर शर्मा, मंडी

० ० ०

अगस्त अंक सामने है । चकित हूं कि रोचकता और ज्ञान-वर्धन का ऐसा संतुलन आप कैसे कर लेते हैं ! एक ओर आचार्य रजनीश का तत्व-चिंतन है, तो दूसरी ओर कालिदास के वर्षा-वर्णन की रसवृष्टि, जो सुंदर चित्रकर्म के कारण विशेष रमणीय हो गयी है । विज्ञान और राजनीति के साथ, खेल और शिकार का समावेश चयनकर्ता की दृष्टि की विशालता का द्योतक है ।

—जयंत पाठक, नैनीताल

० ० ०

'नवनीत' का एक आकर्षण मेरे लिए यह है कि उसमें देश-विदेश के अनेक यशस्वी मूर्तिकारों एवं चित्रकारों के कलाकृतियों की सुंदर अनुकृतियां छपती हैं । हम जैसे अल्प साधनवाले पाठक जो कला-संबंधी पुस्तकें नहीं खरीद सकते, 'नवनीत' द्वारा उनका आस्वादन कर पाते हैं । यह सेवा कम महत्व की नहीं है । आपके सुरुचि-संपन्न कला-विभाग को इसके लिए धन्यवाद ।

— नंदिनी जायसवाल, गोरखपुर

० ० ०

जुलाई अंक पढ़कर लगा कि सुबह का भूला शाम को लौट आया है । यह अंक पिछले कई अंकों की अपेक्षा अधिक रोचक, ज्ञानवर्धक एवं उपादेय बन पड़ा है । महीनों की प्रतीक्षा के बाद अब पुनः उसमें उच्च कोटि के वैज्ञानिक लेख, निबंध, स्तंभ एवं पुस्तक-संक्षेप का समावेश देखने को मिला । शिकार-कथा का पुनरारंभ करने के लिए बधाई । सार-सरोवर एक ऐसा मानसरोवर है, जिसके मोती चुगने के लिए हम हंस व्याकुल रहते हैं । कहानियों की संख्या घटाकर दो कर देने के लिए धन्यवाद ।

—विजय कुमार श्रीवास्तव, ब्रजराजनगर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

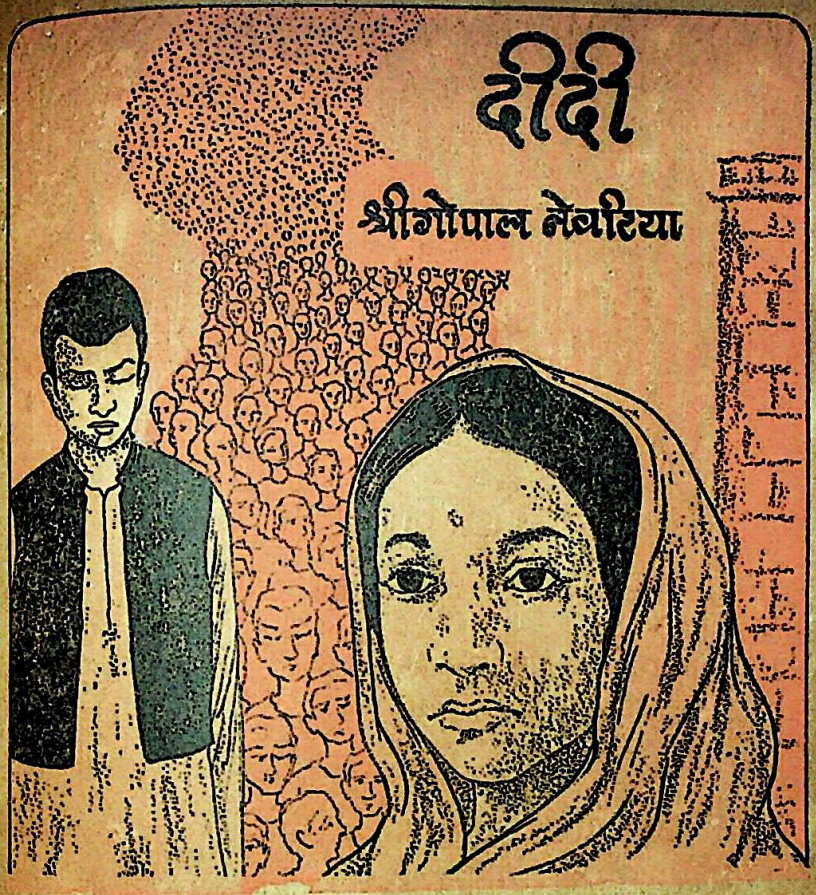

'दीदी' उपन्यास पाने के लिए निम्न कूपन भेजिये। विशेष जानकारी दूसरी ओर।

कूपन

मैंने रु. १२ का मनीआर्डर रसीद नं. ता.

को भेज दिया है। मुझे 'दीदी' उपन्यास भेंटस्वरूप भेज दीजिये।

नाम

पता

पोस्ट जिला

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"……पढ़कर वैदिक युग की नारी का चित्र मन में उभर आया। आज के समाज को ऐसी ही दृढ़प्रतिज्ञ कर्तव्यपरायण नारी की आवश्यकता है।"

ये शब्द एक उच्च शिक्षित महिला ने श्रीगोपाल नेवटिया के उपन्यास 'दीदी' को पढ़ने के उपरांत लिखे हैं।

नारी-हृदय की गरिमा का असाधारण चित्र प्रस्तुत करनेवाला लघु उपन्यास 'दीदी' इस वर्ष मार्च, अप्रैल और मई में 'नवनीत' में धारावाहिक रूप से प्रकाशित हुआ था। और पाठकों के आग्रह पर अब उसे पुस्तक के रूप में छापा गया है। ६० पृष्ठ, कलात्मक सुखपृष्ठ, मूल्य केवल २ रुपये।

दोहरा लाभ

किंतु दो रुपये खर्च किये बिना भी इसे प्राप्त किया जा सकता है। उपाय यह है कि १२ रुपये भेजकर एक वर्ष के लिए 'नवनीत हिन्दी डाइजेस्ट' के ग्राहक बन जाइये। १.२५ रुपये प्रति अंक की कीमत के १२ अंक १२ रुपये में मिलेंगे, ऊपर से उपहार में 'दीदी' उपन्यास प्राप्त होगा।

मनीआर्डर निम्न पते पर भेजें:

व्यवस्थापक—नवनीत प्रकाशन लि०, ३४१ तारदेव, बंबई ३४.

Postage will be paid by addressee

BUSINESS REPLY CARD

No Postage stamp necessary if posted in India

BOMBAY GRANT ROAD,
P. O. PERMIT No. 365

NAVANEET PRAKASHAN LIMITED
341, Tardeo,
BOMBAY-34

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुछ नये प्राणरक्षक आविष्कार

'स्कैंडिनेवियन रिव्यू' में प्रकाशित गुस्टाफ उर्लास के लेख का संक्षिप्त हिन्दी रूपांतर

उत्तर ध्रुव के एक दूरस्थ शहर सैंडट्रास्क में एक सेनेटोरियम है। वहां कुछ ही दिनों पूर्व एक ऐसी घटना घटी है, जो चिकित्सा-विज्ञान के इतिहास में अपना पृष्ठ सदा के लिए सुरक्षित कर गयी है। इस सेनेटोरियम में एक लकड़हारा तपेदिक का मरीज होकर महीनों से पड़ा हुआ था। एक दिन उसकी अवस्था इतनी बदतर हो गयी कि उसे चंद घड़ियों का मेहमान समझ नर्सें 'मुर्दाघर' में ले जाने लगीं।

लेकिन प्रमुख मेडिकल अफसर डा० बी० ओ० कार्सटेन्सन ने नर्सों को रोक दिया। उन्होंने सोचा, जब यह व्यक्ति मरने ही वाला है, तो क्यों न इस पर उस अपरीक्षित दवा का प्रयोग कर लिया जाये, जिस पर मेरी ही क्या, लाखों डाक्टरों की आशा-भरी दृष्टि लगी हुई है। रोगी बच गया, तो दवा की कामयाबी साबित हो जायेगी और नहीं, तो प्राप्त नतीजों के आधार पर उसे और भी कारगर बनाने की कोशिश की जायेगी। फलतः डा० कार्सटेन्सन ने मौत के दामन में छटपटाते इस अभागे प्राणी पर उक्त अपरीक्षित औषध की परीक्षा शुरू कर दी।

एक दिन, दो दिन.....इसी तरह मौत की घड़ियां गिनते-गिनते पंद्रह दिन बीत गये, वह व्यक्ति नहीं मरा और सोलहवें दिन तो सारे सेनेटोरियम-निवासियों के अपरिमित आश्चर्य के साथ उसे जनरल वार्ड में लाया गया। रोग-मुक्त होने के साथ-ही-साथ वह स्वास्थ्य भी प्राप्त करने लगा और कुछ ही हफ्तों में उसका वजन ४० पौंड तक बढ़ गया। चार महीने बाद तो वह पूर्ण नीरोग होकर अस्पताल से घर आ गया।

यही नाटकीय पृष्ठभूमि है, उस जीवन-रक्षक नयी दवा के आविष्कार की, जिससे अब तक सिर्फ स्वीडन में ही २०,००० तपेदिक के मरीजों ने पुनर्जीवन पाया है। यों तो, इस दवा का नाम बड़ा टेढ़ा है—पैरा-एमिनोसेलिसिलिक एसिड; किंतु इसे संक्षेप में 'पास' या पी० ए० एस० कहते हैं।

इसी तरह एक दूसरी अद्भुत दवा का स्वीडन में आज बहुत प्रचलन है। इस दवा की मदद से स्त्रियों को प्रसव-पीड़ा से मुक्ति मिल जाती है। इस अद्भुत दवा का नाम है 'जाइलोकेन'।

'जाइलोकेन' के आविष्कार की कहानी भी बड़ी रोमांचक है। इसका आविष्कारक निल्स लाफग्रेन, जब स्टाकहोम यूनिवर्सिटी

[पंद्रह वर्ष पूर्व के 'नवनीत' से पुनः मुद्रित]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में मेडिकल छात्र था, तभी से उसने अपना यह नया प्रयोग शुरू किया था। लाफग्रेन के पास इतने रुपये नहीं थे कि वह अपना प्रयोग चलाने के लिए आवश्यक जानवर(गिनी पिग) खरीद सके। निदान उसने अपने ऊपर ही प्रयोग करना शुरू किया। इस काम में उसका एक सहपाठी बेंग्त लुंदक्विस्त भी बहुत मदद-गार रहा। दोनों मित्रों ने गरीबी से हार न मानी, प्रयोगों को अंतिम सत्य तक ले जाने के लिए प्राणों की भी बाजी लगा दी। उन्होंने अपने शरीर पर ही जहां-तहां जख्म किये और असह्य पीड़ाएं सहते हुए दवा की वैज्ञा-निक परीक्षा शुरू कर दी। एक बार तो प्रयोग करने के लिए लाफग्रेन को अपनी जीभ का अगला हिस्सा ही काटना पड़ा। उस कटी जीभ पर उसने नये आविष्कृत औषध की कुछ बूंदें डालीं। उसके आनंद का ठिकाना न रहा, जब उसकी जीभ दर्द के प्रति बिलकुल चेतनाहीन हो गयी।

इसी लगन, त्याग और आत्मबलिदान की भावना में खोये दोनों मित्र साल-साल तक अनवरत प्रयोग व परिश्रम करते रहे। शरीर के प्रत्येक अंग को जोखिम में डालकर उन्होंने उस दवा के गुण-अवगुण की परीक्षा की, जिसके सिद्ध होते ही लाखों माताओं के प्राण प्रसव-कष्ट से मुक्त हो गये हैं।

प्रयोग के दौरान उन्हों ने अपनी आंखों की पुतलियां खराब कर लीं; हृदय दुर्बल बना लिया, अगणित घाव अपने शरीर पर बनाये तथा समूचे शरीर को कई रासा-यनिक द्रव्यों से विषाक्त कर लिया। लेकिन अंत में उन्हें जो कुछ मिला, वह इन समस्त पीड़ाओं और बलिदानों का उपयुक्त प्रति-दान था। संसार-भर में उनकी आविष्कृत दवा 'जाइलोकेन' को बीसवीं सदी का एक कीर्ति-स्तंभ स्वीकार किया गया है।

आज लगभग समस्त पाश्चात्य देशों में 'जाइलोकेन' की फैक्टरियां हैं। इस दवा की मदद से प्रसव-वेदना ही निर्मूल नहीं हो जाती है, बल्कि प्रत्येक प्रकार की वेदना के लिए यह दवा रामबाण है।

अब उपचार-संबंधी दो और चमत्कारों पर दृष्टिपात कीजिये :

कोरिया में स्वीडिश डाक्टरों ने बहुत-से घायल रोगियों की प्राण-रक्षा उनके रक्त-हीन शरीर में दूसरे का खून प्रविष्ट कराने के बदले 'चुकंदर का रस' प्रविष्ट कराकर की है। इस नयी खोज की कहानी भी कम रोचक नहीं है। उत्तरी स्वीडन स्थित आरबे बंदरगाह से एक जहाज में जमाया हुआ चुकंदर का रस स्टाकहोम के उत्तर, उप्साला नामक बंदरगाह में ले जाया जा रहा था। लेकिन रास्ते में ही रस की टंकी में 'ल्यूकोनोस्टाक मेसेंटरायडिस' नामक कीटाणु प्रविष्ट हो गये और जब यह रस नियत बंदर-गाह पर पहुंचा, तो इसमें हुए रासायनिक परिवर्तनों के कारण यह एकदम भिन्न पदार्थ बन चुका था।

दो तरुण वैज्ञानिकों ने इस परिवर्तित रस का विश्लेषण शुरू किया और अंत में पता कि 'डेक्स्ट्रोस' (मनुष्य के खून में मूल तत्व के रूप में रहनेवाली चीनी) नामक पदार्थ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के अलावा इसमें मानव रक्त के सभी आवश्यक तत्व वर्तमान हैं। अब क्या था। 'ब्लड प्लाज्मा' (जमाया हुआ मनुष्य रक्त) जैसे कष्टसाध्य उपचार की जरूरत नहीं रही। सैकड़ों घायल सैनिकों को इस नये चुकंदरी रक्त से ही नवजीवन दिया जा रहा है।

स्कैंडिनेविया में एक और जीवन-रक्षक साधन का आविष्कार हुआ है। यह भी एक आकस्मिक प्रयोग ही था। एक वृद्ध सज्जन को बहुत ही खतरनाक किस्म का फेफड़े का नासूर था। डाक्टर ने कहा कि इसके आपरेशन में नौ घंटे लगेंगे और दो घंटे से अधिक किसी को अचेतन नहीं रखा जा सकता।

"लेकिन एक आशा है," डाक्टर ने कुछ सोचकर बताया—"वह है, नाड़ी और हृदय गति की रक्षा करनेवाली नयी मशीन 'स्पाइरोपल्सेटर'।" अब तक इस यंत्र का वास्तविक प्रयोग नहीं हुआ था। बस, नाइट्स आक्साइड-हंसोड गैस—के द्वारा उस वृद्ध को दीर्घ निद्रा में सुला दिया गया। उसके बाद डाक्टर ने रोगी का पूरा सीना चाकू से खोल दिया और पूरी हृदय और फुप्फुस यंत्रावली बाहर निकाल ली। आपरेशन की पूरी क्रिया होने और सिलने में पूरे ११ घंटे लगे। और धन्यवाद दीजिये इस प्रकृति-विजयी विज्ञान को कि वह रोगी अब पूर्ण स्वस्थ है।

जीवन-रक्षक यंत्र की ही बात चल पड़ी है, तो एक और अद्भुत यंत्र की करामात देख लीजिये। इस यंत्र का नाम है 'इन्क्युबेटर'। इस यंत्र के द्वारा अवधि पूरी होने के पहले ही उत्पन्न बच्चे का स्वाभाविक विकास पूरी अवधि तक कराया जाता है। हाल ही में स्वीडन के ट्रालहट्टन अस्पताल में एक स्त्री ने अवधि पूरी होने के तीन मास पूर्व ही एक साथ तीन बच्चियों को जन्म दिया। तीनों में से एक तो पैदा होते ही मर गयी और बाकी दो में, एक का वजन डेढ़ पौंड तथा दूसरी का वजन २ पौंड था। इनके बचने की आशा ही क्या थी। फिर भी आक्सिजन और कृत्रिम शारीरिक ताप देकर तथा नली द्वारा शरीर में भोजन प्रविष्ट कराकर इन्हें उपर्युक्त इन्क्युबेटर में रखा गया। पहले २४ घंटों में तो वजन और घटा, किंतु बाद में धीरे-धीरे वजन बढ़ने लगा। तीन महीने तक इसी प्रकार उन्हें इन्क्युबेटर की कृत्रिम गर्मी में रखा गया। तीन महीने के इस अर्से में ये बच्चियां सिर्फ जीवित ही नहीं रहीं, वरन उनका वजन पूरा हो गया तथा अपूर्ण शारीरिक बनावट पूर्ण स्वाभाविक रूप में विकसित हो गयी।

★

उत्तरी इंगलैंड के 'चारमाउथ' नामक समुद्री किनारे पर एक असाधारण मछली का ढांचा (फासिल) मिला है, और अनुमान किया जाता है कि यह करोड़ों वर्ष पहले पायी जानेवाली मछली का अवशेष है। यह मत्स्यावशेष केवल १४ इंच लंबा है, और चिड़ियानुमा है। ब्रिटिश म्यूजियम के वैज्ञानिकों द्वारा उस 'फासिल' का अध्ययन किया जा रहा है। सन १८११ से ही 'चार माउथ' वैज्ञानिकों के लिए एक आकर्षण की जगह रही है।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भारतीय दंड-विधान के अनुसार अश्लीलता

डा० अरुणकुमार मुखोपाध्याय

स्वाधीन भारत में अश्लीलता से संबंधित जो कानून प्रचलित हैं, उनके बारे में आम जनता की कोई स्पष्ट धारणा नहीं है। और मुश्किल तो यह है कि उनकी धारणा कला और कलाकार की स्वाधीनता के बारे में भी कुछ विशेष स्पष्ट नहीं है। इसीलिए अगर साहित्य, चित्रकला, नृत्यकला अथवा अभिनय-कला के क्षेत्र में कभी सरकार अश्लीलता-निरोधक कानून का प्रयोग करती है, तो समाज में एक आलोड़न, एक आंदोलन उठ खड़ा होता है कि यह सरासर अन्याय है, व्यक्ति-स्वाधीनता के पवित्र अधिकार पर यह कुठाराघात है, साहित्य और कला को संरक्षण देने के नाम पर यह सरकारी व्यभिचार है।

हाल ही में कलकत्ता और बंबई में ऐसे दो मुकद्दमे हो चुके हैं, जिनमें एक अभियुक्त एक पत्रिका के संपादक और दूसरे पुस्तक-विक्रेता हैं। कलकत्ता से प्रकाशित होनेवाली एक पत्रिका के संपादक सुकांत हालदार को अश्लील साहित्य और चित्र छापने के अभियोग में कलकत्ता हाइकोर्ट से सजा हुई और बंबई के पुस्तक-विक्रेता रणजीत उदेशी को डी० एच० लारेन्स का उपन्यास 'लेडी चैटरलीज लवर' बेचने के अभियोग में सुप्रीम कोर्ट से सजा हुई। रणजीत उदेशी के साथ और भी तीन आदमियों को सजा हुई थी। यहां यह उल्लेखनीय है कि डी० एच० लारेन्स का उपन्यास 'लेडी चैटरलीज लवर' का अश्लीलता-निरोधक कानून के अंतर्गत भारत में क्रय-विक्रय निषिद्ध है। हेनरी मिलर की दो कृतियां 'ट्रॉपिक आफ कैन्सर' और 'ट्रॉपिक आफ कैप्रिकॉर्न' भी इस देश में निषिद्ध हैं। और भी ऐसा बहुत सारा साहित्य हमारे यहां निषिद्ध है, जो समाज के शालीनता और नैतिकता के मान-मूल्य को खंडित करता है।

प्रश्न है, अश्लीलता आखिर क्या है और कलाकार की स्वाधीनता में हस्तक्षेप करने का अधिकार किसी भी राष्ट्र को किस हद तक प्राप्त है। इस समस्या पर कानून के बड़े-बड़े पंडित, समाजशास्त्री, साहित्य-शास्त्री और दार्शनिकों ने बहुत माथा-पच्ची की है; मगर इसकी कोई शाश्वत, सर्वजनीन सार्वदेशीय परिभाषा नहीं बनायी जा सकी कि अश्लीलता क्या है और उसकी सीमा क्या हैं ? पाश्चात्य विचारधारा से प्रभावित होकर जो 'आब्सीन' (अश्लील) की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'पोर्नोग्रैफिक' (यौनसंवेग-संपन्न) साहित्य अथवा इतर कलाएं यहां रची जा रही हैं, वे निश्चित रूप से इस समस्या पर पुनर्मूल्यांकन के लिए हमें बाध्य करती हैं।

समस्या इसलिए भी जटिल है कि जहां सरकार एक ओर यौनसंवेग जगानेवाले शब्द, चित्र अथवा अंकन पर प्रतिबंध लगाती है, वहीं दूसरी ओर सरकार द्वारा परिवार-नियोजन के सिलसिले में गर्भ-निरोधक 'लूप' का लाल-लाल तिकोना चित्र सरेआम पोस्टरों और सिनेमा-स्लाइडों द्वारा विज्ञापित-प्रचारित किया जा रहा है। इस लाल चित्र को देखकर किसी का चेहरा लज्जा से लाल नहीं हो उठता; यह अश्लील है, ऐसी कोई भावना किसी के मन में नहीं आती।

आज इंग्लैंड में समलैंगिकता भी गैर-कानूनी नहीं है, किंतु आज से नब्बे वर्ष पूर्व डाक्टर ऐनी बेसेंट को सिर्फ गर्भ-निरोध साधन (कान्ट्रासेप्टिव्स) का समर्थन करने के अभियोग में दंडित किया गया था।

प्राप्त उदाहरणों से यह देखा जा सकता है कि अश्लीलता का स्वरूप देश-विशेष और काल-विशेष के अनुसार बदलता भी रहता है। हमारा नीतिशास्त्र बदलता है, हमारा रुचिबोध बदलता है, हमारी दृष्टि-भंगिमा बदलती है और फलस्वरूप अश्लीलता का अर्थ और उसका स्वरूप बदलता है। अतएव ऐसा लगता है कि अश्लीलता कहीं हमारी दृष्टि में ही तो नहीं है? यों साधारणतया अंग्रेजी में 'आब्सीन' शब्द का मूल खोजने पर तीन शब्द मिलते हैं—ऑफ दि सीन, अर्थात् जिसे खोलकर दिखाया नहीं जा सकता या दिखाना अनुचित है।

भारतीय अलंकार-शास्त्र में 'अश्लील' का अर्थ है ग्राम्य, स्थूल चि का परिचायक। जिससे रस-दोष होता है, वह अश्लील है। जो हमारे मन में घृणा, आतंक और जुगुप्सा का भाव जगाता है, वह अश्लील है। जो मांसलता के प्रति उद्दीपित करता है, वह अश्लील है। और जो अश्लील है, उसका सर्जक-प्रचारक दंड का भागी है। क्योंकि वह अश्लीलता के द्वारा समाज को, राष्ट्र को कलुषित करता है; व्यक्ति को अशालीन, और केवल देह-भोग-परायण पशु बनाता है।

वीनस का जन्म : बाटिचेली

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यशोधरा
अजंता-शिल्प की अनुकृति

१९२३ ई० में जिनीवा में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में अश्लील प्रकाशन प्रचार और व्यवसाय पर निरोधक विधान बनाने की पूरी तैयारी हुई थी। और कुछ हद तक इसमें सफलता भी मिली थी। भारत में अश्लीलता से संबंधित जो विधान बनाये गये हैं, उनका आधार मूलतः यह जिनीवा सम्मेलन ही था। भारतीय दंड-विधान की २९२ धारा अश्लीलता-निरोधक धारा है। भारतीय गणतंत्र भारतीय संविधान के आधार पर गठित हुआ है। संविधान की १९वीं धारा के क भाग के अनुसार मत अभिव्यक्त करने की स्वतंत्रता मिली है। किंतु इस धारा के ख भाग के अनुसार, शालीनता और नैतिकता के संरक्षण के लिए उस मत-प्रकाशन की स्वतंत्रता पर नियंत्रण भी लगाया गया है। शालीनता और नैतिकता बनाये रखनेवाले भारतीय विधान का विस्तृत विवरण यहां प्रस्तुत है :

१. भारतीय दंड-विधान की २९२, २९३ और २९४ धारा। २९२ और २९३ धारा का संशोधित रूप है—अश्लील प्रकाशन कानून; (१९२५ ई० का आठवां कानून) २९४ धारा का संशोधित रूप है—भारतीय अपराध-निरोधक कानून (१८९५ ई० का तृतीय कानून।);

२. ड्रामैटिक परफोर्मेन्स कानून (१८७६), धारा (ग);

३. पोस्ट ऑफिस एक्ट (१८९८) धारा २०;

४. कस्टम्स एक्ट (१९६२) धारा ११;

५. सिनेमैटोग्राफ एक्ट (१९५२ ई० का ३८वां कानून);

६. ड्रग एंड मैजिक रेमेडीज (आब्जेक्शनेबल एडवर्टाइजमेंट) एक्ट (१९५४) धारा ३, ४, ५, ६;

७. यंग पर्सन्स (हार्मफुल पब्लिकेशन्स) एक्ट (१९५६);

८. क्रिमिनल प्रोसीजर कोड (१८९८) आब्सीन पब्लिकेशन्स एक्ट (१९२५ ई० का आठवां कानून संशोधित)।

उपर्युक्त तालिका देखकर ऐसा लगता है कि हमारे देश में अश्लीलता, अनैतिकता अथवा अशालीनता को प्रकाशित-प्रचारित करने का कोई रास्ता नहीं है; क्योंकि चारों तरफ कानून की दीवारें हैं। पर वस्तुतः असलियत कुछ और है। हमारे समाज में अश्लीलता प्रकाशित होती है और प्रचारित भी होती है। मुकद्दमेबाजियां होती हैं, और सजाएं होती हैं; और सजाएं नहीं भी होती हैं। अश्लीलता की तमाम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जटिलताओं के बावजूद, भारतीय सुप्रीम कोर्ट ने बंबई के पुस्तक-विक्रेता रणजीत उदेशी को दंडित करते हुए (ए. आइ. आर. १९६५। एस. सी. ८८१) अश्लीलता के संबंध में जो राय जाहिर की थी, वही संभवतः अश्लीलता पर समीचीन और अंतिम राय है।

विद्वान जज ने कहा था कि किसी भी साहित्य अथवा कला को तब अश्लील कहा जायेगा, जब वह अपने परिवेश और पटभूमि से विच्युत हो जाये; जब उसका संवेदन और इंगित हमारे सामाजिक रुचिबोध को आघात पहुंचाये। साहित्य, चित्रकला अथवा स्थापत्य के नामपर सामाजिक रुचि और सौंदर्य-बोध को रुग्ण बनाने का अधिकार, कलाकार को हर्गिज नहीं है। माइकलेन्जेलो का 'अपोलो' और 'वीनस डि मिलो' नग्न हैं, मगर उनकी नग्नता हमारे सामाजिक रुचिबोध को अथवा सौंदर्यबोध को आघात नहीं पहुंचाती। 'अपोलो' और 'वीनस' अश्लील हो सकते हैं, अगर उनको उनके परिवेश और पृष्ठभूमि से अलग करके प्रदर्शित किया जाये। प्रदर्शनकारी दंड का भागी होगा; क्योंकि उसके प्रदर्शन से कुरुचि, कामोत्तेजना और जुगुप्सा जागेगी, जो समाज और राष्ट्र के लिए अस्वस्थता की स्थिति होगी।

और इस राय के समर्थन में साहित्य से, कला से सैकड़ों उदाहरण दिये जा सकते हैं। इसीलिए हिन्दू पुराण की पंच-कन्याओं की कथा अश्लील नहीं है। इसीलिए माइकेल मधुसूदन दत्त की 'वीरांगना', विद्यापति का काव्य, रवींद्रनाथ का 'कौड़ी-ओ-कोमल' अथवा भारत चंद्र राय की काव्य-पुस्तिका 'विद्या-सुंदर' अश्लील नहीं हैं। इसीलिए वात्स्यायन का 'कामसूत्र' अश्लील नहीं है। मगर इनमें से कोई भी अंश कुरुचिपूर्ण चित्रों के साथ अलग से प्रकाशित किया जाये, तो वह 'अश्लीलता का अपराध' होगा।

साथ ही सुप्रीम कोर्ट का वह रणजीत उदेशी वाले मामले का निर्णय न्याय की कुर्सियों पर बैठनेवालों के लिए भी एक चेतावनी है कि अश्लीलता के नाम पर कला की उत्कृष्ट सृष्टियों से उनके गुण-ग्राहकों को वंचित भी न किया जाये।

★

का करिहौ ?

स्वर्गीय बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' से एक बार आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी ने पूछा—"क्यों जी, तुम्हारी कविताओं में सजनी, रानी, सखी शब्द बहुत होते हैं। आखिर यह सब हैं कौन ?"

'नवीन' जी द्विवेदीजी का बहुत आदर करते थे। किंतु इस प्रश्न पर वे चुप न रह सके। धीरे से बोले—"अब आप बूढ़ भयौ। इनका परिचय पूछिकै का करिहौ ?"

—इस्माईल जगदलपुरी

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खोज-खबर

मौत, शब्दों के पाश में

मौत ? एक आदि प्रश्न चिह्न । कोई नहीं चाहता, फिर भी कोई रोक नहीं सका है । पहले पहल मौत कब आयी ? यह सब अनबूझ है । मौत एक नियति है—हर जन्मे की । यों शब्दों में कोई 'जीवन' (लाइफ) को भी नहीं बांध सका हैं । मगर अब जोर 'मृत्यु' को परिभाषित करने पर है । इसकी क्या जरूरत आ पड़ी ?

आपने सुन ही लिया है कि पिछले दिनों सर्जरी के क्षेत्र में एक और कमाल हुआ । एक मृत व्यक्ति का दिल निकालकर दूसरे मरीज के शरीर में लगा दिया गया—फिर इसका एक सिलसिला चला.....अफ्रीका से लेकर अमरीका, यूरोप और भारत तक में दिल बदले गये । परिणाम बहुत अच्छे तो नहीं रहे, मगर कुछ सफलता तो हाथ लगी है । क्षेत्र पूरी तरह सर्जरी का ही था; मगर एक नैतिक प्रश्न भी स्वाभाविकत: उठ खड़ा हुआ—मृत घोषित व्यक्ति के शरीर में से दिल निकालना कहां तक न्यायसंगत है ? क्या वह व्यक्ति पूरी तरह मर भी चुका था, या नहीं ?

मृतप्राय (परंतु पूरी तरह से मृत नहीं) व्यक्ति के शरीर में से प्रलोभन या दबाववश कोई दिल न निकाल ले, इसकी क्या गारंटी है ? किसी प्रभावशाली व्यक्ति को मृत्यु से बचाने के लिए, आनेवाले कल में किसी निसहाय दीनहीन व्यक्ति के जीवन का सौदा किया जा सकता है, उसके जीवन की बलि ली जा सकती है—इस संभावना को भी नकारा नहीं जा सकता । इस प्रकार की एक शिकायत सुनने में आ भी चुकी है—एक हब्शी परिवार के लोगों ने शिकायत की है कि उनका एक परिजन मरा (?) ही था कि किसी ने बिना पूछे उसका दिल निकाल लिया गया ।

मौत क्या है—एक दार्शनिक झक हो सकती है । आम आदमी के लिए उसका सीधा-सा अर्थ है—जीवन का अंत । मगर मौत के लक्षण क्या हैं—यह आज का एक व्यावहारिक प्रश्न है । इससे बचा नहीं जा सकता । इसके बिना अब काम नहीं चल सकता । साधारण आदमी की निगाह में यह भी कोई मसला नहीं है, उसे मौत के बे-चूक लक्षण मालूम जो हैं—आंखों का पथरा जाना, शरीर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का ठंडा पड़ जाना, नब्ज का रुक जाना- और ऐसे ही कुछ और.....। मगर दिल-बदल सर्जन को इससे संतुष्टि नहीं हो सकती।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के तत्वावधान में इसी वर्ष तेरह और चौदह जून को विश्व के शीर्षस्थ हृदय-विशेषज्ञों की एक गुप्त बैठक हुई–तय करना था–मृत्यु के सर्व-मान्य लक्षण क्या हैं ? इस बैठक का कोई प्रचार नहीं किया गया। बैठक की कार्यवाही भी गुप्त ही रखी गयी–मामला बहुत नाजुक जो था। फ्रांस के कुछ सर्जनों ने मृत्यु की परिभाषा इस बैठक से पहले ही दी थी। उनके अनुसार–किसी व्यक्ति के मस्तिष्क की सक्रियता विद्युतः जब एक क्षैतिज रेखा से दर्शायी जा सके, दूसरे शब्दों में वह शून्य हो, तो उस व्यक्ति को मरा हुआ समझना चाहिये। इस परिभाषा के अनुसार दिल के सक्रिय रहते ही व्यक्ति को मृत घोषित किया जा सकता है और यही एक जटिल समस्या है। एक हृदय-विशेषज्ञ का तो कहना भी यही है कि प्रतिरोपण के लिए ऐसा दिल लेना चाहिये, जो पूरी तरह से 'मरा' न हो।

अब विश्व के दो दर्जन हृदय-विशेषज्ञ जिनीवा में मृत्यु की एक सर्वमान्य परिभाषा पर रजामंद हो गये हैं। आप भी जान लें–"जब व्यक्ति के मस्तिष्क ने पूरी तरह और अनुक्रमणीय रूप से काम करना बंद कर दिया हो, मस्तिष्क और शेष शरीर में कोई संबंध न रह गया हो, पेशी-सक्रियता एक-दम निश्चेष्ट हो गयी हो, रक्त-दाब शून्य हो गया हो तथा बिना किसी यंत्र के स्वतः सांस लेने में वह बिल्कुल असमर्थ हो, तो उसे मृत समझा जाना चाहिये।"

हां, तो जनाब। मौत शब्दों में बंध गयी। मगर बंधने के बाद भी नियति यही है, इस सारे गोचर-अगोचर जगत की।

एक बात और। यह चीज भी आसानी से नहीं पचायी जा सकती कि मृत्यु का संबंध मस्तिष्क से है– दिल से नहीं। दिल की धड़कन रुक गयी, दिल की गति बंद हो गयी, दिल डूबा जा रहा है, दिल बैठा जा रहा है, आदि प्रचलित वाक्य-प्रयोगों से भी जन-साधारण की इसी मान्यता का बोध होता है कि मौत दिल से होती है। कोई सोच भी नहीं सकता कि जीवन का अस्तित्व मस्तिष्क में है। मगर है।

इंसानी बच्चा–सूअरी दिल

मृत्यु की परिभाषा तय हो गयी और यों एक विवादास्पद विषय शांत हो गया। मगर प्रतिरोपण के लिए जितने हृदयों की जरू-रत आगे से विश्व में अनुमानतः पड़ा करेगी, उतने उपलब्ध हो सकेंगे, इसमें संदेह है– यानी सर्जनों के सामने एक दूसरी विकट समस्या उठ खड़ी हुई है। दक्षिण अफ्रीका के हृदय-प्रतिरोपण-सर्जन डा० बर्नार्ड, जिन्हें विश्व में पहला हृदय-प्रतिरोपण करने का श्रेय प्राप्त है, इस विषय पर बड़ी गंभी-रता से विचार कर रहे हैं। हाल ही में हाइ-डेलबर्ग (पश्चिमी जर्मनी) में दो सर्जनों से विचार-विमर्श के दौरान डा०बरनार्ड ने कहा है–"प्रतिरोपण के लिए कृत्रिम अथवा किसी पशु के हृदय का इस्तेमाल किये जा सकने की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिशा में अनुसंधान आज बहुत जरूरी हो गया है।"

उन्होंने कहा है कि आगामी दस वर्षों में सूअर को इस प्रकार तैयार किया जा सकता है कि उसका हृदय मानव-शरीर में उपयोग में लाया जा सके। तैयारी इस प्रकार की करनी होगी कि मनुष्य बाह्य ऊतकों को स्वीकृत कर सके। सूअर का दिल संभवतः मानव-हृदय के सबसे समीप होता है। डा० बरनार्ड का विश्वास है कि यदि निष्ठापूर्वक इस दिशा में काम किया जाये, तो वांछनीय परिणामों की प्राप्ति बहुत कठिन नहीं है।

उनका कहना तो यहां तक है कि यदि किसी मरीज का पहला हृदय-प्रतिरोपण आपरेशन सफल न हुआ, तो उसका दोबारा या तिबारा भी इस प्रकार का आपरेशन किया जा सकता है। जो भी हो, भावी संभावनाएं काफी प्रबल हैं।

अब दिल बैंक भी

पहले रक्त बैंक बने, फिर नेत्र और अब तैयारी हो रही है दिल बैंक स्थापित करने की। बेल्जियम में जन्मे डा० सिल्वेन पिटजेले ने हाल ही में मांट्रियल में घोषणा की है कि वे एक ऐसे यंत्र के निर्माण में सफल हो गये हैं, जो किसी मानव या पशु के शरीर में बाहर निकाल लिये गये हृदय को चौदह घंटे तक 'सक्रिय' रख सकता है।

मैक्गिल विश्वविद्यालय में गत दो वर्षों तक लगातार प्रयत्नशील रहने के बाद अब उन्हें कामयाबी हासिल हो सकी है। पहला परीक्षण एक कुत्ते पर किया गया। चौदह घंटे तक दिल पूरी तरह सक्रिय रहा और इस बीच उसकी कार्यकारी क्षमताएं एकदम बरकरार रहीं। अभी उन्होंने एक सम्मेलन में कहा है—"मुझे विश्वास है कि रक्त बैंक या नेत्र बैंक की तरह एक हृदय बैंक भी स्थापित किया जाना अब नामुमकिन नहीं रह जायेगा। इस बैंक में लगभग तीन सप्ताह तक मृत व्यक्ति से प्राप्त हृदय को 'सक्रिय' रखा जा सकेगा।"

कुछ मिनटों के नोटिस पर हृदय प्राप्त करने जैसी आज की समस्या तब खत्म हो जायेगी।

तब संभवतः सवाल कीमत का उठे। दिल की कीमत एक मानवीय नैतिक उलझन है, जिसका विज्ञान और वैज्ञानिक से क्या सरोकार!

पल्सर

पल्सर एक नया शब्द है—नया अर्थ, नया बोध। शब्द दिया है खगोलशास्त्रियों ने। कुछ समय पूर्व अंतरिक्ष में कुछ खास किस्म के रहस्यपूर्ण रेडियो 'बीकन' सामने आये। गजब की परिशुद्धता (प्रिसिशन) की नियमितता के साथ ऊर्जा-स्पंदन, इनकी विशेषता थी। ये स्पंदन इतने सुस्पष्ट और नियंत्रित थे कि पहले-पहल लगा कि ब्रह्मांड में स्थित कोई बौद्धिक-प्राणी हमारी पृथ्वी से संपर्क स्थापित करने का प्रयत्न कर रहा है। कैम्ब्रिज के ब्रिटिश खगोलविद् ने, जिन्हें सबसे पहले इन स्पंदनों का पता लगा, मजाक में इन्हें एल० जी० एम० (लिटिल ग्रीन मैन) कहना शुरू कर दिया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फिर अमरीकी शामिल हुए—बड़े-बड़े और अति संवेदनशील रेडियो सूक्ष्मदर्शियों के साथ। स्थिति और अधिक स्पष्ट होने लगी। परिणाम निकला—ये संवेदन किसी बौद्धिक प्राणी द्वारा प्रेषित न होकर प्राकृतिक हैं। इस आशय की घोषणा 'यू० एस० एकेडेमी आफ सांइसेज' में हुई 'इंटरनेशनल साइंटिफिक रेडियो यूनियन' की एक बैठक में की गयी है।

कार्नेल यूनिवर्सिटी की रेडियो प्रेक्षणशाला के डाइरेक्टर डा० फ्रैंक ड्रैक ने कहा है कि प्रमाण इतने प्रबल हैं कि अब और अधिक अनिश्चितता की कोई गुंजाइश नहीं है। बात एकदम जाहिर है—ये संवेदन प्राकृतिक घटनाओं के परिणाम हैं।

१९६० में 'क्वासर्स' की खोज के बाद अब 'पल्सर्स' की खोज अपने क्षेत्र की सबसे क्रांतिकारी उपलब्धि है। पल्सर हमारी ही आकाश-गंगा के तारे हैं, जो अब तक अज्ञात थे। अनुमान है कि ये नये तारे हमारी पृथ्वी से लगभग तीन सौ प्रकाश वर्ष दूरी पर स्थित हैं। इनमें से कुछ तो पृथ्वी से कहीं अधिक छोटे हैं—कुछ काफी बड़े भी। एक वैज्ञानिक के अनुसार इनके व्यास बारह सौ किलोमीटर से लेकर बारह हजार किलोमीटर तक पाये गये हैं।

इन तारों में अंतर्निहित तापनाभिकीय भट्टियों में से अनंत ऊर्जा हमारी पृथ्वी पर पहुंचती है। प्रत्येक पल्सर से निरंतर समान किस्म के रेडियो संवेदन नियमित रूप से हमें प्राप्त होते रहते हैं। हमें ये स्पंदन किस प्रकार प्रभावित करते हैं, यह जानना अभी बाकी है। अभी पिछले दिनों वैज्ञानिक समाचार आये थे कि सूर्य और चंद्रमा से आनेवाले विकिरण मनुष्य को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। इस दृष्टि से अब इन पल्सरों को भी देखे जाने की आवश्यकता है।

संकर-शाक

'इंस्टिट्यूट आफ लाइट फिजिआलोजी', लेनिनग्राद के अध्यक्ष प्रो० बी० एम० मोसचोव की प्रयोगशाला में एक छोटा-सा खेत है—यहां जो तरकारी पैदा की जाती है, वह दुनिया में अपने किस्म की अनोखी है। शक्ल में ऊपर से एकदम बंद गोभी—वैसा ही रंग, वैसे ही पत्ते और वैसी ही बनावट। मगर बंद गोभी में लंबी जड़ नहीं होती। इस नयी किस्म की तरकारी में हू-ब-हू मूली जैसी एक काफी लंबी जड़ भी लगी होती है। बताया गया है कि इसे बेशक अपने रोजमर्रा के खाने में शामिल किया जा सकता है। विटामिन सी से भरपूर यह नया संकर-शाक प्रो० मोसचोव के कई वर्षों के प्रयोगों का सफल परिणाम है।

अपने परीक्षण के दौरान प्रो० मोसचोव इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि वनस्पतियों में संकरण वैसी ही एक सहज प्रक्रिया है, जैसी कि मानव समाज में। आवश्यकता है केवल अनुकूल वातावरण तैयार करने की। उन्होंने कंकड़ी बालू का एक संस्तर परीक्षण कक्ष में बिछाकर, अपना वनस्पति-संकरण प्रयोग किया। आवश्यक रोशनी कृत्रिम स्रोतों से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्राप्त की गयी। इसके लिए कमरे में बिजली के बड़े-बड़े वल्व लगाये गये। प्रकाश विकिरण से ऊष्मा को कम करने के लिए बहते हुए पानी के जल-स्पंदकों का प्रयोग किया गया। फर्श पर बिछे कंकड़ों में सिंचाई पोषण विलयनों से की गयी और तब कहीं जाकर यह नया संकर-शाक प्राप्त हुआ। एक साल में इस नयी नस्ल की, बीस से लेकर चौबीस तक फसलें उगायी जा सकती हैं।

प्रो० मोसचोव का कहना है कि भूमिगत गुफाओं, पहाड़ी दरारों और साइबेरियाई बांध जैसी अब तक बेकार पड़ी जगहों में आगे से इस प्रकार की नयी तरकारियों की फसलें पैदा की जाने लगेंगी। घरों में बेकार पड़े स्थानों का प्रयोग भी इस काम के लिए संभवतः किया जाने लगे। इससे जमीन का वह काफी बड़ा भाग, जिस पर आजकल तरकारी के खेत खड़े हैं, अब दूसरे उपयोगी कामों में लगाया जा सकेगा।

दूसरे संकर-शाकों पर भी प्रयोग जारी है। टमाटर और झड़-बेरी का संकर भी शीघ्र प्राप्त किया जा सकेगा, ऐसा अनुमान है।

प्रकृति के मामलों में विज्ञान की इस दखल के निश्चय ही दूरगामी नतीजे होंगे। अब आदमी इस बात के लिए लाचार नहीं होगा कि जो तरकारी या फल प्रकृति में प्राप्य हैं, उनसे ही उसे गुजारा करना पड़ेगा। तब वह मनमाने रंग, साइज, आकार और गुणों वाले नये-नये वनस्पति-उत्पादों का सृजन खुद कर सकेगा।

इस स्थिति की जरा कल्पना करें। तब साग-सब्जियां बे-नाम होंगी। एक समस्या होगी—किसे क्या नाम दें। आपको करेला पसंद है; मगर तब करेले की शक्ल तो करेले जैसी होगी; पर संभव है, स्वाद उसमें आलू का हो। तब जामुनी रंग, शंतरई रंग, केलई रंग, नीबुआ रंग जैसे शब्द बे-मानी हो जायेंगे। सब कुछ कैसा अजीब-अजीब-सा लगा करेगा हमारे चारों तरफ!

बहुत अधिक मजबूत स्प्रिंग

अमरीका की जनरल इलेक्ट्रिक कंपनी ने एक ऐसे मिश्र धातु का लेप तैयार किया है, जो लोहे की स्प्रिंग या अन्य किसी भी धातु से बनी वस्तु पर लेप दी जाये, तो उस चीज में कई गुना अधिक भार सहने की ताकत आ जाती है।

कंपनी के अनुसंधान विभाग ने विद्युत विश्लेषण द्वारा कुछ फ्लुराइड सॉल्ट्स का ऐसा विलायक द्रव तैयार किया है, जिसके लेप से स्प्रिंग की भारवाहक शक्ति बढ़ जाती है। उदाहरण के लिए, मोलेल्डिनम धातु के द्रव में यदि बोरोन के द्रव का मिश्रण करके मिश्रित द्रव तैयार किया जाये, तो मिश्र धातुलेपित स्प्रिंग २५ सेर वज़नी चीज का भार उठाते हुए भी उतनी सीधी नहीं होगी, जितनी एक मामूली स्प्रिंग ५ सेर वजनी भार उठाते हुए सीधी हो जाती है।

इस मिश्र धातु-लेप का एक लाभ यह भी है कि लेपित धातु उपेक्षाकृत बहुत अधिक ताप सहन कर सकता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एल.एस.डी. की दुनिया में

राबर्ट गैनन

एक मिनिट पहले मुझे एल० एस० डी० का इंजेक्शन दिया गया है। मैं एक अस्पताल में हूं, जहां मनोरोगों का इलाज किया जाता है। एल० एस० डी० लेने का यह मेरा पहला अनुभव है। मैं जानता हूं कि यह दवा मन के बंद दरवाजों को खोलकर किस प्रकार की दुनिया का द्वार मनुष्य के सामने खोल देती है।

नौ मिनिट के बाद एल० एस० डी० का असर शुरू होने लगा है। कमरे की छत गोल दायरे में रेंगने लगी है। दीवार का बादामी रंग फीका पड़ने लगा है। फिर वह हरा बन जाता है। अब जो कुछ भी हो रहा है, बड़ी तेजी से हो रहा है। उसके बारे में लिखना संभव नहीं है।.....

ऊपर की पंक्तियां मैंने कुछ हफ्ते पहले लिखी थीं, जब मैं भ्रांति पैदा करनेवाली दवा लाइसर्जिक एसिड डाइथेलामाइड (एल० एस० डी०) के प्रभाव में एक बिलकुल ही नयी दुनिया में प्रवेश करने लगा था।

अगर मैं चाहता, तो किसी 'हिप्पी' के पास जाकर एल० एस० डी० का अनुभव ले सकता था; क्योंकि 'हिप्पी' लोग प्रायः एल० एस० डी० का सेवन करते हैं। लेकिन मैंने इस अनुभव के लिए अस्पताल में जाना ठीक समझा; क्योंकि वहां एल० एस० डी० मुझे शुद्ध रूप में मिल सकती थी और इसके अलावा डाक्टर की निगरानी में दवा लेने के कारण उससे पैदा हो सकनेवाले खतरों से भी बच सकता था।

आजकल एल० एस० डी० द्वारा बहुत-से मानसिक रोगों का इलाज किया जा रहा है। यह दवा मनुष्य के अचेतन मन में दबी बहुत-सी बातों को बाहर निकाल देती है, जो कि प्रायः मानसिक रोगों का कारण होती हैं।

एल० एस० डी० की जो मात्रा मुझे दी गयी (१७३ माइक्रोग्राम), वह मेरे शरीर के वजन (१५२ पौंड) के हिसाब से दी गयी थी। यह मात्रा कितनी सूक्ष्म है, इसका अंदाज एस्परीन की टिकिया से इसकी तुलना करने से हो जायेगा, जिसका वज़न ३ लाख माइक्रोग्राम होता है। लेकिन डाक्टर की नजर में १७३ माइक्रोग्राम एल० एस० डी० कम नहीं थी।

दवा लेने के नौ मिनिट बाद जब उसका असर शुरू हुआ, तो कुछ ही देर में मैं एक नये संसार में जा पहुंचा। वहां हर चीज़ इस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तेजी से होने लगी कि उसके बारे में लिखना मेरे लिए संभव नहीं था। इसलिए मैं बोल कर बताने लगा, जिसे टेपरिकार्डर पर अंकित कर लिया गया। उस रिकार्ड और डाक्टर की रिपोर्ट से मेरी बदलती हुई मानसिक और शारीरिक स्थिति का पता लग सकता है।

११.१५ पर यानी एल० एस० डी० लेने के पंद्रह मिनिट बाद मुझ पर बेहोशी छाने लगी थी; मेरे मुंह से 'वाओ' की आवाज निकल रही थी; और मैं जो कुछ देख रहा था, उसमें दिलचस्पी ले रहा था।

दरवाजे और खिड़कियां अब चौरस नहीं रह गयी थीं और उनमें जगमगाती हुई नीली आभा दिखाई दे रही थी। जब मैंने आंखें झपकीं, तो वह हल्के गुलाबी रंग में बदल गयीं। अगले क्षण फिर नीली बन गयीं। मैं जैसे तैरने लगा। एक बार मैंने डाक्टर की ओर देखा, तो उसके चेहरे के नक्श पिघलते हुए प्रतीत हुए। एक ऐसा अलौकिक संसार मेरे सामने साकार हो रहा था कि मैं आंखें फाड़े, आश्चर्यचकित हो उसे देख रहा था। आखिर मैंने ऐनक उतार डाली; क्योंकि उसके कांच मेरी नजर के रास्ते में रुकावट पैदा कर रहे थे।

लगभग पंद्रह मिनिट बीत जाने पर चीजें इस तेजी से अपने रंग और रूप बदलने लगीं कि मैं कांपने लगा। अपने आपको काबू में रखने के लिए मैंने चारपाई को पकड़ लिया। लेकिन खुद पर काबू पाना बहुत कठिन था। मैं डाक्टर को इस तेजी से सारे अनुभव बता रहा था कि वह उसे पूरी तरह से ग्रहण नहीं कर पा रहा था। इतनी तेजी से तो मैं हर चीज का वर्णन कर भी नहीं सकता था। हर क्षण नयी-नयी चीजें मेरे सामने उभरती हुई गायब हो रही थीं।

११.४५ पर मैं गहरी सांस लेने लगा था। मुझे डर भी लग रहा था। लेकिन मुझे जो कुछ दिखाई और सुनाई दे रहा था, उसका मैं पूरा आनंद ले रहा था। एक मौके पर मेरे मुंह से निकला—"पुह" और फिर दूर-दूर से उसकी प्रतिध्वनियां सुनाई देने लगीं—"पुह ! .....पुह ! ..... !" वे आवाजें इलेक्ट्रानिक संगीत जैसी थीं।

१२ बजे मैं कराहने लगा। मेरा शरीर पसीने से तर हो गया। बड़ी तेजी से हर क्षण नया रूप बदलनेवाली चीजों को मैं समझने और पकड़ने की कोशिश कर रहा था, और हांफ रहा था। मैंने जोर लगाकर, जैसे हुक्म देते हुए कहा कि सब कुछ धीरे-धीरे हो।

एक मौके पर मैंने महसूस किया कि मैं फिल्म-प्रोजेक्टर बना हुआ हूं। मेरी लेंस के सामने से एक फिल्म गुजर रही थी। एक एक करके कई तरह की भावनाएं मेरे अंदर भर गयीं—गुस्सा, प्यार, घृणा, उदासी..... पहले फिल्म धीरे-धीरे चल रही थी, फिर तेजी से चलने लगी। तब मैं कई किस्म के शक्लें देखने लगा। एक-दूसरी में फंसी हुई और आपस में उलझी हुई शक्लें।

क्या यह सब सच है ? मैंने सोचा और सामने की चीजों को पकड़ना चाहा। लेकिन मेरे हाथ में डाक्टर का हाथ आ गया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तब मैं उस तैरने और झूलने की हालत में से निकलकर रुक गया। मैंने जानना चाहा कि मैं कहां हूं और क्या कर रहा हूं। मैंने समय पूछा। डाक्टर ने बताया कि १२ बजकर १० मिनिट हुए हैं। नहीं, यह असंभव है। मुझे लगा कि कई हफ्तों से वहां पड़ा हुआ हूं। मेरे हाथ में पकड़ा हुआ डाक्टर का हाथ एकाएक सफेद पड़ गया, एकदम ठंडा हो गया, फिर हरा बन गया और सिकुड़कर गायब होने लगा। मैंने घबराकर उसे छोड़ दिया। तब मैं फिर झूलने लगा।

उस विचित्र संसार में मैंने डाक्टर को अपने सामने बैठे हुए देखा, तो मुझे कुछ ढांढ़स मिला। ईश्वर का शुक्र है कि डाक्टर सामने बैठा है, मैंने अपने मन में कहा। मैंने फिर उसका हाथ पकड़ना चाहा; लेकिन वह मेरे हाथ से निकल गया। मेरी नजर मेज पर रखे हुए गिलास पर पड़ी, जो संतरे के रस से भरा हुआ था। मैंने संकेत किया कि मैं उसे पीना चाहता हूं। डाक्टर ने गिलास मुझे पकड़ाया, लेकिन मैं उसे अपने ओंठों तक न ला सका—कोशिश करने पर भी न ला सका।

अंत में पता नहीं कैसे वह मेरे ओंठों से लग गया। और उसका स्वाद था कि मैं उसके बारे में क्या बताऊं? संतरे का ऐसा रस मैंने जिंदगी में कभी नहीं पिया है।

१२.३० तक मैं इतना उत्तेजित हो गया था कि ठीक तरह बोल भी नहीं पा रहा था। कई बार 'वा-ओ-वाओ' की आवाज मेरे मुंह से निकलती। एक बार मुझे लगा कि मैं

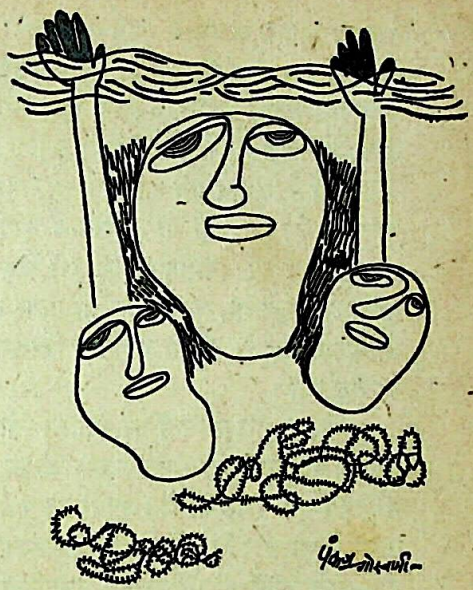

अपने दिमाग के अंदर झांक सकता हूं, उसमें घूमते हुए एल० एस० डी० को देख सकता हूं। अब मुझे बेहद पसीना आ रहा था।

फिर मुझे लगा कि मैं एक बंद कमरा हूं, और उसके दरवाजों और खिड़कियों की दरारों में से अस्पताल के कर्मचारी मुझे देख रहे हैं। वे महसूस करते हैं कि मेरी हालत बहुत बुरी है। डाक्टर मुझे एल० एस० डी० के असर को मारनेवाली दवा क्लोरोप्रोमाजिन देना चाहता है; लेकिन वह कहीं खो गयी है।

१.३० पर मेरी हालत ऐसी थी कि मुझे यह संदेह होने लगा था कि मैं सचमुच हूं भी या नहीं। मैंने डाक्टर से आश्वासन पाना चाहा कि मेरी असलियत गायब नहीं हुई है। और जब मैं डाक्टर की ओर मुड़ा, तो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह मुझे आदमी के बजाय सेल्यूलाइड लगा, वह ऐसा पारदर्शक बन गया था कि मैं उसके आर-पार देख सकता था। फिर मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि वह सीपी बन गया है।

२ बजे मैं बहुत बेचैनी महसूस करने लगा था और गुनगुना रहा था। फिर मैं गाने लगा। गाने की बदौलत ही मैं, जो बेत-हाशा झूल रहा था, जरा स्थिर हो पाया। आखिर मैं बेहोशी की-सी हालत में बिस्तर पर लेट गया।

२.४५ पर एक नर्स कमरे में आयी। उसे देखकर मुझे खुशी हुई। मैंने कहा—"आओ, मेरे साथ झूले में बैठ जाओ। अपनी यह वर्दी उतार डालो और फिर हम फर्श पर लेटकर गोल-गोल घूमेंगे।" लेकिन वह मेरी बात समझ नहीं सकी। और हैरानी से मेरी ओर देखती रही।

३ बजे मैं उठकर गुसलखाने में गया। उसके बाद मेरी हालत सुधरने लगी। मैं जो कुछ देख रहा था, उसका पहले ही की तरह आनंद लेने लगा।

अब एल० एस० डी० का असर कम होने लगा था। मैंने इसे महसूस किया। मैं उठ-कर इधर-उधर घूमने लगा। मेरे कदम इस प्रकार उठ रहे थे, जैसे मैं नाच रहा होऊं।

५ बज गये। डाक्टर मुझे नर्स के हवाले करके चला गया। मुझे एक कप काफी दी गयी। ऐसी काफी मैंने पहले कभी नहीं पी थी। उसकी स्निग्धता मेरे अंग-अंग में समा गयी। चमकदार पीले रंग के कप में ताजे भूरे रंग की काफी का क्या कहना!

जब सातवां घंटा शुरू होने लगा, तो मैं बाग में जाकर घास पर लेट गया। घास के उस ताजगी-भरे हरे रंग और फूलों की महक ने मुझे अजीब-सी खुशी दी। मैं वहां दो घंटे अविचल लेटा रहा और आसमान को देखता रहा। यह बड़ी रहस्यमय अवस्था थी। बादलों को देखते हुए मैं भी अपने आपको एक बादल समझ रहा था। धरती, घास और बादलों के साथ मैं आत्मीयता अनुभव कर रहा था।

फिर मैंने दूर क्षितिज की ओर देखा, तो ऐसा लगा कि मैं इस ब्रह्मांड का एक भाग हूं और उससे किसी भी प्रकार पृथक् नहीं हूं। तब मुझे डेविड रेक्टर के वे शब्द याद आने लगे—"ऐसे कितने लोग होंगे, जो गिरजे में जाकर ईश्वर के बारे में 'सुनना' चाहेंगे, जब कि वे एल० एस० डी० द्वारा ईश्वर को अनुभव कर सकते हैं?"

सूर्यास्त के दृश्य को देखकर तो मैं हैरान ही रह गया। साधारण आंखों को उस दृश्य में उदासी अनुभव होती; किंतु मुझे वह बड़ा रंगीन और अलौकिक लगा। पर जब मेरी दृष्टि अपने हाथ पर पड़ी, तो मैं भयभीत हो उठा। वह हाथ मुझे किसी बूढ़े व्यक्ति का हाथ लगा, जैसे मेरे पिता का हाथ हो। एक दिन में मैं कितना बूढ़ा हो गया था! एल० एस० डी० का असर अभी मिटा नहीं था।

दसवें घंटे में मैं अपने वार्ड में आकर बैठा और दूसरे मरीजों को देखने लगा। अब मुझे अपनी असलियत का अहसास होने लगा था। मैं अपनी असली दुनिया में आने लगा था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अकबरी अजबर से इंटरव्यू

नरेश कुमार शाद

मैं – बुजुर्गवार, मैं आपसे इंटरव्यू लेना चाहता हूं, ताकि आपकी जिंदगी और शाइरी की बाबत कुछ अहम बातें मालूम हो जायें।

अकबर – मेरी लाइफ लिखो अय्यामे-जवानी[1] के सिवा।
सब बता दूंगा तुम्हें उफ्तदो दानी[2] के सिवा॥

मैं – चलिये, अय्यामे-जवानी की रंगीन बातें अगर आप नहीं बताना चाहते तो न सही, पर यह तो बता दीजिये कि आपकी जवानी गुजरी कैसे ?

अकबर – दुश्मने राहत[3] तबीअत हो गयी।
जिस हसीं से मिल गयीं आंखें मोहब्बत हो गयी॥

मैं – और बुढ़ापे में आप क्या महसूस करते रहे ?

अकबर – बढ़ाता जाता है जोफ[4] अपना जोर आहिस्ता-आहिस्ता।
लिये जाती है पीरी[5] सूए-गोर[6] आहिस्ता-आहिस्ता॥

मैं – यह बताइये कि सन १८९० में जब आपको खान बहादुर का खिताब मिला, तो आपने क्या महसूस किया ?

अकबर – शाइराना दाद अच्छी दी यह मुझको चर्ख[7] ने।
तेगे-अबरू[8] का था आशिक खां बहादुर कर दिया॥

मैं – यों तो शोहरत की ख्वाहिश हर फनकार को होती है; लेकिन इस बारे में आपकी क्या राय है ?

अकबर – इक जमाने में यह ख्वाहिश थी कि जानें हम को लोग।
अब यह रोना है–कि हम क्यों इस कदर जाने गये॥

मैं – अच्छा जनाब, अब कुछ शेरो-शाइरी के मौजू पर भी रोशनी डालिये। आप शेर में मानी को मुकद्दम[9] समझते हैं या बयान को ?

अकबर – मानी को छोड़कर जो हों नाजुक बयानियां।
वह शेर क्या है रंग है लफ्जों के खून का॥

मैं – गुस्ताखी माफ, ऐसा खून तो आपने भी अच्छा-खासा किया है, मसलन :
फिक्र साड़ी की है न कंगन की।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब तो धुन है उन्हें फिरंगन की ।।

.....

हम रीश[10] दिखाते हैं कि इस्लाम को देखो ।
मिस जुल्फ दिखाती है कि इस लाम[11] को देखो ।।

.....

हुस्न देखो बुताने-काशी[12] का ।
चेहरा है चांद पूर्णमाशी का ।।

.....

कासिद[13] मिला जब उनसे वह खेलते थे पोलो ।
खत रख लिया यह कहकर "अच्छा सलाम बोलो" ।।

.....

क्या वह दुरुस्त हो मिरी नजरों के फोर्स से ।
फुर्सत कहां है कौम को कालिज के कोर्स से ।।

.....

दिल है ईरान और टर्की में ।
पेट मस्तूफ[14] है किलरकी में ।।

.....

बंगला-ए-जानां[15] सवा दो कोस है ।
चल नहीं सकता बड़ा अफसोस है ।।

.....

पूछते क्या हो कि तू पीरू है या हरबंस है ।
बंदा जो कुछ हो बहर हालत विला लायसंस है ।।

.....

शाप में सब जमा हैं मुझसे न "पी-पी" कीजिये ।
आप इस बोतल को मेरे घर पै वी. पी. कीजिये ।।

मैं – खैर, छोड़िये इस बात को । यह बताइये कि हकीकी[16] और मजाजी[17] शाइरी में आपको क्या फर्क महसूस होता है ?

अकबर – हकीकी और मजाजी शाइरी में फर्क यह पाया ।
कि वह जामे[18] से बाहर है, ये पाजामे से बाहर है ।।

मैं – इसमें कोई शक नहीं कि आप एक अच्छे शाइर होने से पहले एक सच्चे मुसलमान थे; लेकिन फिर आपके कलाम में फड़कते हुए रिदाना शेर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मिलते हैं। जैसे–

हंगामा है क्यों बरपा, थोड़ी-सी जो पी ली है।
डाका तो नहीं मारा, चोरी तो नहीं की है ।।

.....

मेरे लिए शराब यहां भी है क्या हराम।
इस शहर में तो कोई मुझे जानता नहीं ।।

.....

क्या गमे दुनिया का डर मुझ रिंद[१९] को।
और इक बोतल चढ़ा ली जायेगी ।।

.....

वही निगाह जो रखती है मस्त रिंदों को।
गजब यह है कि कभी मोहतसिब[२०] भी होती है ।।

अकबर – और यह भी तो मेरा ही शेर है–

कौम से मैं की सिफारिश क्या करूं ?
नेक को शैतान कर देती है यह
एक जौहर है फकत इसमें मुफीद
खुदकुशी आसान कर देती है यह ।।

मैं – और वह कौन-सा शेर है, जो आपने एक बरतानवी कंपनी को हिजाज लाइन का ठेका मिलने पर कहा था ?

अकबर – मक्के तक रेल का सामान हुआ जाता है।
अब तो इंजन भी मुसलमान हुआ जाता है ।।

मैं – और १९१० की इलाहाबाद की नुमाइश में जब कलकत्ते की मशहूर गायिका गौहरजान ने आप से ताजा कलाम की फरमाइश की, तो आपने एक शेर कह-कर उन्हें भेज दिया था। वह शेर क्या था ?

अकबर – खुशनसीब आज यहां कौन है गौहर के सिवा।
सब कुछ अल्लाह ने दे रखा है शौहर के सिवा ।।

मैं – अच्छा हजरत यह तो बताइये कि वह कौन-सी चीज है, जो दूसरे शाइरों से आपको जुदा करती है ?

अकबर – तुझे हम शाइरों में क्यों न अकबर मुंतखब[२१] समझें ?
बयां ऐसा कि दिल माने, जबां ऐसी कि सब समझें ।।

मैं – लेकिन किब्ला ! अब तो जमाने के साथ-साथ शाइरी की कदरें[२२] भी बदल

CC-0, Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चुकी हैं। यह बताइये कि नयी शाइरी के बारे में आपका क्या खयाल है?

अकबर – तहजीब के खिलाफ है जो लाये राह पर।
अब शाइरी वह है जो उभारे गुनाह पर।।

मैं – और आजकल हमारे यहां जो मुशायरे होते हैं, उनका रद्देअमल[२३] । आप पर क्या होता है?

अकबर – कद्रदानों की तबीअत का अजब रंग है आज।
बुलबुलों को है यह हसरत कि वह उल्लू न हुए।।

मैं – सुभानअल्लाह! क्या बात है आपकी खुशबयानी की। शेरो-शाइरी पर तो बात हो चुकी। अब जरा यह बताइये कि आपका सियासी नुक्त-ए-नजर क्या था?

अकबर – मदखूलए-गवर्रमिंट[२४] अकबर अगर न होता।
इसको भी आप पाते गांधी की गोपियों में।।

मैं – और सेल्फ गवर्नमेंट के बारे में क्या खयाल है?

अकबर – काम इस मुल्क में हो सेल्फ गवर्रमिंट से क्या?
जहर को हज्म करे कोई पिपर्रमिंट से क्या?

मैं – और आपके खयाल में हमारे लीडरों की क्या हालत है?

अकबर – कौम के गम में डिनर खाते हैं हुक्काम के साथ।
रंज लीडर को बहुत हैं मगर आराम के साथ।।

मैं – और हमारे लीडरों की लीडरी के बारे में क्या खयाल है?

अकबर – लीडरों की धूम है और फालोअर कोई नहीं।
सब तो जनरल हैं यहां आखिर सिपाही कौन है?

मैं – अब नयी तहजीब के बारे में भी कुछ फरमाइये।

अकबर – नयी तहजीब में दिक्कत ज्यादा तो नहीं होती।
मजाहिब[२५] रहते हैं कायम फकत ईमान जाता है।।

मैं – और आपका मजहबी नुक्त-ए-नजर[२६] क्या था?

अकबर – पंडित को भी सलाम है और मौलवी को भी।
मजहब न चाहिये मुझे ईमान चाहिये।।

मैं – इसका मतलब यह है कि आप मुतास्सिब[२७] नहीं थे।

अकबर – मिरी नजरों में यकसां हैं शुतर[२८] हो या गऊ माता।
मुझे करते जो वह मदऊ[२९] कथा में भी मैं झूम आता।।

मैं – वैसे आप शिया थे या सुन्नी?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अकबर – मुझे उल्फत है सुन्नी से भी शिया से भी यारी है।
अखाड़े में दिखा सकते हैं दिलकश बांकपन
दोनों ।।

मैं – आप तो बहुत ऊंचे मुसलमान थे; लेकिन
आजकल के बेशतर मुसलमानों के बारे में
आपका क्या खयाल है ?

अकबर – सब्र, खुद्दारी,[10] दिलेरी, हकपरस्ती अब कहां ?
रख लिया अच्छा-सा इक नाम और मुसलमां
हो गये ।।

महाकवि अकबर

मैं – क्या आप समझते हैं कि आपके खयालात के लोग अब भी बाकी हैं ?

अकबर – आज बंगले में मिरे आयी थी आवाजे-अजां[11] ।
जी रहे हैं अभी कुछ अगले जमाने वाले ।।

मैं – पुरानी और नयी तहजीब में आप कोई फर्क महसूस करते हैं ?

अकबर – पुरानी रौशनी में और नयी में फर्क इतना है–
इसे कश्ती नहीं मिलती उसे साहिल[12] नहीं मिलता ।।

मैं – और नयी तालीम के बारे में आपकी क्या राय है ?

अकबर – नयी तालीम को क्या वास्ता है आदमीयत से ?
जनाबे डार्विन को हजरते आदम से क्या मतलब ?

मैं – तालीमेनिस्वां[13] के बारे में आपका क्या खयाल है ?

अकबर – तालीम औरतों की जरूरी तो है मगर ।
खातूने-खाना[14] हों वह सभा की परी न हों ।।

मैं – यानी आप तालीमेनिस्वां के खिलाफ नहीं ?

अकबर – हमारे मुल्क में होता है क्या तालीमेनिस्वां से !
बजुज इसके कि बाबा और भी घबरायें अम्मां से ।।

मैं – जरा खुलकर बताइये कि मौजूदा तालीमेनिस्वां में आपको क्या खराबी नजर आती है ?

अकबर – तालीमेदुख्तरां[15] से यह उम्मीद है जरूर
नाचे दुल्हन खुशी से खुद अपनी बरात में ।।

मैं – बहरहाल यह तो आप मानते हैं कि औरतों के लिए तालीम जरूरी है ?

अकबर – दो उसे शौहरो-अत्फाल[16] की खातिर[17] तालीम ।
कौम के वास्ते तालीम न दो औरत को ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं – माफ कीजिये, यह नुक्ते-नजर तो मेरे नाकिस[१] खयाल में कुछ ज्यादा सेहत-मंद नहीं है, लेकिन आपने जिस माहौल में परवरिश पायी थी, शायद उसका तकाज़ा यही था। और फिर आप तो औरत के पर्दे के भी बहुत बड़े हामी[२] और आपने इस पर कई रुबाइयां भी कही हैं।

अकबर – जनाबे हजरते अकबर हैं हामी-ए-पर्दा,
मगर वह कब तक और उनकी रुबाइयां कब तक?

मैं – और मौत के बारे में आपका क्या खयाल है?

अकबर – दुनिया में मुसीबत जाना है, हरइक ने अजल[३] के आने को
हमने तो तमाशा समझा है इस भीड़ में गुम हो जाने को।।

मैं – और इंसान के बारे में आपका मुशाहिदा[४] क्या कहता है?

अकबर – शिकम[५] से हजरते इंसां निजात[६] पा न सके।
अब अपने पेट में हैं पहले मां के पेट में थे।।

मैं – क्या फिर इस दुनिया में आने को आपका जी चाहता है?

अकबर – सेर[७] हूं सैर से इस दारे कुहन[८] की अकबर।
अब यहां मेरे लिए कोई नयी बात नहीं।।

---

१. जवानी के दिन, २. जवानी के दिन, ३. सुख की दुश्मन, ४. निर्बलता, ५. बुढ़ापा, ६. कब्र की ओर, ७. आकाश, ८. भौंह की कटारी, ९. श्रेष्ठ, १०. दाढ़ी, ११. शरीर, १२. काशी के बुत, १३. पत्रवाहक, १४. व्यस्त, १५. प्रेमिका का बंगला, १६. असली, १७. नकली, १८. कपड़ा, १९. शराबी, २०. उपदेशक, २१. प्रमुख, २२. मूल्य, २३. प्रतिक्रिया, २४. सरकारी नौकर, २५. धर्म, २६. दृष्टिकोण, २७. धर्मांध, २८. ऊंट, २९. निमंत्रित, ३०. स्वाभिमान, ३१. अजान की आवाज, ३२. किनारा, ३३. स्त्रीशिक्षा, ३४. घर की महिला, ३५. लड़कियों की शिक्षा, ३६. पति और बच्चे, ३७. के लिए, ३८. खुद, ३९. मौत, ४०. अवलोकन, ४१. पेट, ४२. मुक्ति, ४३. तृप्त, ४४. पुराना घर (दुनिया)।

★

एक साहित्य-सम्मेलन में जब एक सज्जन ने अपने भाषण में 'इकबाल' को ध्वंसशील तथा प्रतिक्रियावादी कह दिया, तो श्रोताओं में से 'इकबाल' के किसी भक्त ने चिल्लाकर कहा– "अपनी यह बकवास बंद कीजिये! 'इकबाल' की रूह को सदमा पहुंच रहा है।" 'मजाज' ने तुरंत उठकर माइक्रोफोन हाथ में लेते हुए कहा–"जनाब, सदमा तो आपकी रूह को पहुंच रहा है, जिसे आप गलती से 'इकबाल' की रूह समझ रहे हैं।" –विनोदकुमार चतुर्वेदी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अविस्मरणीय जीवन-मंत्र

सत्यपाल शर्मा

संसार में दो प्रकार के व्यक्ति दृष्टिगोचर होते हैं, एक वे जो बुद्धिमानी इसी में समझते हैं कि जैसी परिस्थिति समक्ष उपस्थित हो, वैसे ही अपने आपको ढालते चले जाओ। इसको आजकल की भाषा में 'एडजस्टमेंट' करना कहा जाता है। दूसरे वे हैं, जो अपने आपको 'एडजस्ट' नहीं करते या कर पाते। ऐसे लोगों को असभ्य और रूढ़िवादी, हठी या जिद्दी भी समझा जाता है। पर एक बड़ी विचित्र बात यह है कि इसी वर्ग के व्यक्ति संसार में अपना मस्तक उन्नत रख पाते हैं।

अपने आपको 'एडजस्ट' करके चलनेवाले, कभी भी दूसरों का आदर्श नहीं बन पाते। पर्वत के शिखर को कभी किसी ने अपने आपको आस-पास की परिस्थितियों से एडजस्ट करते देखा है? इसीलिए तो वेद ने बार-बार संदेश दिया है :

ध्रुवस्तिष्ठाविचाचलिः
पर्वत इवाविचाचलिः

पर्वत के समान ध्रुव (स्थिर) और अचंचल बनो।

परमात्मा की सृष्टि में एक पर्वत ही ऐसे हैं, जो अपने को 'एडजस्ट' नहीं करते; इसीलिए उनके गर्वोन्नत मस्तक जहां वीर साहसियों को चुनौती देते हैं, वहां अध्यात्मचेताओं को बहुत बड़ा आध्यात्मिक संदेश भी देते हैं।

इन पर्वत-शिखरों के ठीक विपरीत, दूसरी ओर हैं समुद्र की लहरें। ये अपने आपको 'एडजस्ट' करती चली जाती हैं; इसलिए किन्हीं क्षणों में किंचित्काल के लिए बना हुआ तरंग-पर्वत जैसे ही अपने आपको आस-पास की लहरों से—परिस्थिति से—'एडजस्ट' कर लेता है, उसकी सारी गरिमा विलीन हो जाती है। और इसीलिए आज तक ये लहरें किसी का आदर्श या पथ-दर्शक नहीं बन सकीं। अपितु चूंकि परिस्थितियों से अपने आपको 'एडजस्ट' करनेवाली तरंगों में सही मार्ग लुप्त हो जाता है, इसलिए नौकाओं के मार्ग-दर्शन के लिए उन तरंगों के बीच कुछ स्थिर साधनों—जैसे प्रकाशस्तंभ या बोया आदि—को प्रतिष्ठित करना पड़ता है।

परिस्थितियों से 'एडजस्ट' करते हुए चलनेवाले व्यक्तियों का कोई सिद्धांत नहीं होता, कोई लक्ष्य नहीं होता। वे केवल जीवन चाहते हैं; पर यदि उनसे पूछा जाये कि तुम्हारा जीने का लक्ष्य क्या है, तो वे नहीं बता पायेंगे।

दूसरी ओर जिनको ऐसे 'सुसभ्य' लोग असभ्य और रूढ़िवादी समझते हैं, उनके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुछ सिद्धांत होते हैं, उनकी एक मंजिल होती है, उनका एक लक्ष्य होता है, और वे जानते हैं कि जीना किसे कहते हैं। इसीलिए जहां वे जीना चाहते हैं, वहां उनके पास इस बात का भी उत्तर होता है कि वे जीना क्यों चाहते हैं।

परिस्थितियों से 'एडजस्ट' करनेवाले व्यक्ति चाहे अपने आपको सांसारिक दृष्टि से कितना ही सफल क्यों न समझें, आत्मिक दृष्टि से वे असफल ही रहते हैं। और सांसारिक सफलता उतनी महत्वपूर्ण नहीं है, जितनी कि आत्मिक सफलता। क्योंकि आध्यात्मिक सफलता का संबंध सीधा आत्मा से है, और आत्मा से संबंधित चीज—शक्ति या चेतना—जन्म-जन्मांतरों तक मनुष्य के साथ चलती चली जाती है।

दूसरे शब्दों में सांसारिक सफलता केवल वर्तमान की, अर्थात् इसी जन्म की सिद्धि होती है; परंतु आध्यात्मिक सफलता भविष्य की, कई भावी जन्मों की सिद्धि बन जाती है। साथ ही, आत्मिक सफलता जिसे मिल जाती है, उसे सांसारिक सफलता भी मिल ही जाती है—भले, जीते-जी न मिले।

आत्मिक दृष्टि से अपने आपको परिस्थितियों के अनुकूल बनाकर चलनेवाले व्यक्ति परिस्थिति के दास होते हैं। दार्शनिक भाषा में वे अनर्गल—अर्थात् अर्गला-रहित होते हैं। अनर्गल व्यक्तियों की आत्मा इंद्रियों के कहने पर चला करती है। वे अपनी इंद्रियों को रथ यानी रमण-साधन बनाकर चलते हैं और जब उनकी आत्मा दसों इंद्रियों के रथ में आनंद लेती घूमती है, इंद्रियां शक्तिशाली बनती चली जाती हैं। ऐसे लोग 'दशरथ' कहे जा सकते हैं।

दशरथ और राम में यही बहुत बड़ा भेद है। दशरथ इंद्रियों का दास था, परिस्थितियों के वश में था, इसीलिए रघुवंशी होने पर भी मर्यादा पुरुषोत्तम की तरह आदर्श नहीं बन सका।

दूसरी ओर रामचंद्र ध्रुव थे, अपने धर्म और सिद्धांत के पक्के थे। इसलिए वे आदर्श बने।

★

नेता

प्रत्येक मनुष्य नेता बन सकता है परंतु हर कोई नेता, मनुष्य नहीं बन सकता।

राजनैतिक नेता सोचता कम और बोलता अधिक है। वह भाषण देते समय शरीर के प्रत्येक अंग से काम लेता है, सिवा मस्तिष्क के।

किसी भी नेता का जीवन-चरित्र लिखते समय उसके बाह्य रूप की चर्चा करनी चाहिए। उसके अन्तरंग को उजागर करने पर लेखक खतरे में पड़ सकता है।

—अयोध्याप्रसाद गोयलीय

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शेरों का शिक्षक

'पाप्युलर सायन्स' के आधार पर लिखित एक रोमांचकारी व्यवसाय का संक्षिप्त परिचय

सरकस का पंडाल दर्शकों से खचाखच भरा हुआ था और जब लोहे की सलाखों के एक बड़े पिंजरे में लपकते हुए छः-सात शेर घुस आये, तो देखनेवालों के शरीर एक विचित्र अनुभूति से सिहर उठे। इस सिहरन को उत्पन्न करने के लिए ही सरकस में खूंख्वार शेर लाये जाते हैं।

उसके बाद उस विशाल पिंजरे का एक ओर का दरवाजा खोलकर शेरों का शिक्षक अंदर घुसा और दर्शकों की भीड़ दम साधे उसे देखने लगी। शिक्षक के एक हाथ में लंबा चाबुक था; पेटी में दो पिस्तौलें लटक रहीं थीं। यह डिक क्लीमैंस था, जो अमरीका के चार सबसे बड़े हिंस्र पशु-शिक्षकों में से एक था।

एक के बाद एक, डिक क्लीमैंस ने अपने सिखाये हुए शेरों के खेल दिखाने आरंभ किये। कभी वे शेर कलाबाजियां खाते थे; कभी आदमी की तरह सीधे खड़े होते थे और कभी-कभी बड़ी जोर से दहाड़ते थे और उनकी एक-एक दहाड़ दर्शकों के रोंगटे खड़े कर देती थी।

डिक क्लीमैंस ने एक ऊंचे तख्ते पर बैठे हुए शेर को चाबुक से छेड़ना शुरू किया, एकाएक शेर उत्तेजित हो उठा और दहाड़कर क्लीमैंस पर झपटा। क्लीमैंस अपना चाबुक छोड़-छाड़कर भागा; खटाक से पिंजरे के कोने का दरवाजा खुला; बंदूक की गोली की तरह क्लीमैंस दरवाजे से बाहर हुआ और खटाक से दरवाजा फिर बंद हो गया। छः मन वजनी उत्तेजित शेर जाकर लोहे के सीखचों से टकराया और शिकार हाथ से निकल गया देखकर जोर-जोर से दहाड़ने लगा। दर्शकों की उत्तेजना चरम सीमा पर पहुंच चुकी थी और जब उन्होंने क्लीमैंस को पिंजरे से बाहर निकल जाते और फिर दरवाजे को बंद होते देखा, तब कहीं उन्होंने शांति की सांस ली। सबने समझा कि एक भयानक दुर्घटना होते-होते बच गयी। परंतु यह क्लीमैंस का अत्यंत प्रिय खेल था; दुर्घटना-जैसा इसमें कुछ भी नहीं था।

एक बार यही क्लीमैंस 'नीरो' नामक एक नये मजबूत शेर के साथ खेल दिखा रहा था। खेल के बीच में उसके एक सहकारी ने गलत दरवाजा खोल दिया और नीचे उस चौकी पर जा बैठा, जो उसके लिए नहीं थी—इस चौकी पर एक और शेर को आकर बैठना था। शेरों के साथ खेल करते हुए शिक्षक को इस बात में बहुत सावधान रहना होता है कि खेल सुनिश्चित रूप से उसी तरह किया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाये, जैसा कि शेरों को सिखाया गया है। थोड़ा भी उलट-फेर होने से भयंकर उत्पात खड़ा हो सकता है। अतः क्लीमैंस के लिए आवश्यक हो गया कि नीरो को उस चौकी से उतारकर दूसरी चौकी पर बिठाये। उसने चाबुक के इशारे से नीरो को नीचे उतारा और दूसरी चौकी की ओर इशारा करते हुए पीछे हटने लगा। पीछे हटते हुए वह स्टूल से टकराकर फिसल गया और उसके गिरते ही नीरो उस पर टूट पड़ा।

अपनी रक्षा के लिए अपने पैर ऊंचे करके क्लीमैंस ने शेर के पंजों को अपने पेट पर पहुंचने से रोका, परंतु शेर ने उसकी बांयी जांघ को बुरी तरह जख्मी कर दिया। उस समय क्लीमैंस की पत्नी पिंजरे के बाहर खड़ी थी, वह इस पेशे में अपने पति की सहायिका थी। उसने तुरंत अपनी पिस्तौल की नली ऊपर की ओर करके घोड़ा दबा दिया। पिस्तौल की आवाज से चौंककर नीरो ने क्लीमैंस को छोड़ दिया। उसके छोड़ते ही क्लीमैंस तुरंत उठकर खड़ा हो गया और चाबुक फटकारकर उसने नीरो को निर्दिष्ट चौकी तक जाने को मजबूर कर दिया। उसके बाद वह शांतिपूर्वक धीरे-धीरे पिंजरे से बाहर आ गया। दर्शकों ने इस सबको भी एक बड़े ही रोमांचकारी खेल का भाग समझा। पर यह खेल नहीं था; यह एक खतरनाक दुर्घटना थी, जिसके फलस्वरूप क्लीमैंस पांच सप्ताह तक अस्पताल में पड़ा रहा। उस दिन पिस्तौल छूटने में क्षण-भर का विलंब, क्लीमैंस की जीवनलीला समाप्त कर देने के लिए पर्याप्त था।

शेरों के साथ खेल करते हुए ऐसी दुर्घटनाओं का होना बहुत स्वाभाविक है। दूसरी बार की एक घटना यह है कि क्लीमैंस एक शेर के साथ खेल कर रहा था कि एक सहकारी उस लोहे के तार पर से गुजरा, जो पिंजरे से जुड़ा हुआ था। इस तार के हिलने का परिणाम यह हुआ कि एक छोटा-सा लोहे का दरवाजा जोर की आवाज के साथ खुल गया और उसके साथ ही क्लीमैंस की पीठ की ओर बैठा हुआ शेर क्लीमैंस पर झपट पड़ा और एक ही बार में उसने कंधे से लेकर नितंब तक के चमड़े और मांस को चीर डाला। परंतु इससे क्लीमैंस विचलित नहीं हुआ। उसने तुरंत घूमकर चाबुक की फटकार से शेर को वापस लौटने को बाधित किया और उसके बाद धैर्य के साथ पिंजरे से बाहर आया। अस्पताल में उसकी पीठ में ११८ टांके लगाने पड़े। अगले दिन शाम को फिर क्लीमैंस ने निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार अपना खेल दिखाया, हालांकि इसमें उसे पर्याप्त कष्ट भी हुआ।

"चोट लगने या घायल हो जाने से खेल को बीच में छोड़ देना उचित नहीं है" क्लीमैंस का कहना है—"क्योंकि इससे शेर और बाघ यह समझ सकते हैं कि एक-एक बार हमने आक्रमण करके शिक्षक को भगा दिया है और हम उसे अगली बार फिर भगा सकते हैं। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि इस तरह घायल होकर खेल छोड़ भागने से शिक्षक का दिल कच्चा हो जाता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है; जो उसके लिए किसी भी रूप में लाभकारक नहीं कहा जा सकता। अतः घायल हो जाने के बाद तो शेरों को विनीत बनाकर और खेल पूरा करके ही छोड़ना चाहिये।"

शेर के पंजे और कीले कितने बड़े होते हैं, या शेर की ताकत कितनी होती है, यह बताने की यहां आवश्यकता नहीं है। जंगल में ऊंचे मचान पर बैठकर या हाथी पर चढ़कर बंदूक की गोली से शेर का मुकाबला करनेवाले शिकारियों का साहस, इन सिंह-शिक्षकों की तुलना में बहुत कम जान पड़ता है। मैं यह नहीं कहना चाहता कि जंगल में खुले शेर और सरकस के शेर में कोई अंतर नहीं है; दोनों में अंतर बहुत बड़ा है। परंतु उत्तेजित होकर शेर कंधे से नितंब तक का मांस चीर दे, तो भी साहस और धैर्यपूर्वक शेर को विनीत बनाने की कल्पना भी इन शिकारियों के लिए बहुत बड़ी जान पड़ेगी।

"लोग समझते हैं कि शेरों के साथ प्रदर्शित खेल अभिनय मात्र हैं और यदि शेर को अवसर मिल भी जाये, तो वह मुझे मारेगा नहीं"—क्लीमेंस अपने खेलों का रहस्य बताते हुए कहता है—"पर, यह बात सही नहीं है। ज्यों ही शेर का बस चलेगा, वह तुरंत मुझे मार डालने की कोशिश करेगा; क्योंकि उसकी सहजवृत्ति मुझे मार डालने को प्रेरित करती है और वह अपने इस स्वभाव को छोड़ नहीं सकता। एक बार जब मैं शिकागो में पिंजरे से निकल भागने का खेल दिखा रहा था, तब सहायक ने दरवाजा खोलने में जरा-सी देर कर दी और शेर ने अपने नुकीले पंजे मेरे कंधे में गड़ा दिये। भाग्य से ही मैं उस दिन बचने में समर्थ हुआ। मेरे उस घाव को सीने में डाक्टर को चार घंटे लगे थे।"

फिर शेर उसे क्यों नहीं मार डालते? उसके पास पिस्तौलें होती हैं; पर उनमें बिना गोली के कारतूस होते हैं, जो आवाज तो करते हैं, परंतु चोट बिलकुल नहीं पहुंचाते हैं, शेर इतना सस्ता नहीं होता कि जरा-जरा-सी बात पर उसे गोली मारी जा सके और फिर गोली मार देने के बाद घायल शेर से बच पाना लगभग असंभव-सा ही है। दूसरा हथियार उसके पास होता है, चाबुक। इससे शेर को इशारे किये जा सकते हैं, पर विपत्ति के समय आत्म-रक्षा में यह सहायक नहीं है। फिर?

"मेरी सुरक्षा केवल इस बात पर निर्भर है कि मैं शेरों को इस भुलावे में रखता हूं कि वे चाहे जितना यत्न क्यों न करें, वे मुझ तक पहुंच नहीं सकते। कभी उनकी ओर बांस बढ़ाकर, यहां तक कि कभी कुर्सी को ही उठाकर उनके और अपने बीच में अड़ा देने से मैं शेर को अपने से दूर रखने में सफल रहता हूं और जब तक शेर यह समझता रहेगा कि वह मुझ तक नहीं पहुंच सकता, तब तक वह मुझ पर आक्रमण नहीं करेगा।"

जब शेर किसी अनुचित शैतानी पर उतर आता है, जो उसे नहीं करनी चाहिये, उस समय पिस्तौल छोड़ी जाती है। जोरदार आवाज से शेर का ध्यान बंट जाता है और तब शिक्षक उसका ध्यान दूसरी ओर फेरने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में समर्थ हो जाता है।

चाबुक का प्रयोग इन पशुओं के शरीर पर नहीं किया जाता; उसे केवल हवा में फटकारा जाता है; क्योंकि जो शेर चाबुक की मार से वश में किये जा सकें, वे खेल दिखाने में उपयोगी नहीं होते। वे शेर जल्दी शिक्षित किये जा सकते हैं, जिनमें आत्म-विश्वास की मात्रा पर्याप्त हो। आत्म-विश्वास की यह भावना डेढ़ या दो वर्ष की आयु के बाद ही इन पशुओं में आती है। इन पशुओं को खेलों की शिक्षा देते हुए, इनसे सौहार्द्र स्थापित करना पहली बात होती है। दुर्व्यवहार करके इन्हें कभी शिक्षित नहीं किया जा सकता।

प्रत्येक शिक्षक इन पशुओं को शिक्षित करने के उपायों को गुप्त ही रखना पसंद करता है, क्योंकि ये उसके पेशे के रहस्य हैं। जिन उपायों को उसने अपनी सूझबूझ और वर्षों के परिश्रम से आविष्कृत किया है, यदि वे दूसरे पशु-शिक्षकों को मालूम हो जायें, तो वे कुछ ही घंटों में अपने पशुओं को भी वही सब खेल सिखा सकते हैं।

डिक क्लीमैंस के खेल करनेवाले पशुओं में १० बबर शेर और दो बाघ हैं। ये एक क्लीमैंस के इशारों पर चौकियों पर बैठने, आग के घेरे में से होकर कूदने, लकड़ी के तख्तों पर चलने, कलाबाज़ियां खाने और एक-दूसरे के ऊपर खड़े होकर स्तूपनिर्माण करने के खेलों का प्रदर्शन करते हैं। इसके अतिरिक्त और भी रोमांचकारी खेलों में वह शेर के ऊपर उसी प्रकार चढ़कर दिखाता है, जैसे कि लोग घोड़े पर चढ़ते हैं। शेर को छेड़कर वह उसे अपने ऊपर झपटने को बाधित करता है और जब शेर गुस्से में आकर उस पर झपटता है, तो वह फुर्ती से एक ओर हटकर शेर के वार को बचा सकता है।

सबसे अधिक रोमांचकारी खेल वह है, जिसमें वह शेर के खुले मुंह के अंदर अपना सिर रखता है। परंतु यह खेल वह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने अत्यंत विश्वस्त शेर के साथ ही करता है; क्योंकि सरकसों के इतिहास में ऐसे उदाहरणों की कमी नहीं है, जब कि शेरों ने इस खतरनाक खेल का अंत अपनी इच्छा के अनुसार दूसरे ही ढंग से कर दिया है।

जब शिक्षक के इशारे पर एक शेर शिक्षक पर झपटता है, तो स्वभावतः अन्य शेरों का मन भी उस पर झपटने का हो जाता है। जब तक शिक्षक पूर्णतः सावधान है, तब-तक तो वे शेर चाहते हुए भी झपटने से रुके रहते हैं, परंतु जहां जरा-सी चूक हुई, तो फिर वे सब एक साथ ही टूट पड़ते हैं।

डिक क्लीमैंस की सम्मति में बाघ के साथ खेल करना बबर शेर की अपेक्षा कहीं अधिक खतरनाक है, क्योंकि बाघ न केवल शेर से अधिक शक्तिशाली होता है, बल्कि दुष्टता और धूर्तता में भी वह कहीं अधिक होता है। शेर जब तक अपनी-अपनी चौकियों पर बैठे रहते हैं, तब तक उनसे विशेष खतरा नहीं होता; खतरा तब होता है, जब वे चौकियों से उतरकर चलना-फिरना प्रारंभ करते हैं। परंतु बाघ से सारे समय खतरा बना रहता है।

अड़ियल और शैतान शेरों की शिक्षा प्रारंभ करते समय एक जंजीर उनकी गर्दन में डालकर पीछे की ओर इस प्रकार बांध दी जाती है, जैसे कि तांगे के घोड़े की रासें बांधी जाती हैं। सामने से शिक्षक शेर को आगे बढ़ने के लिए उत्तेजित करता है और दूसरे सहकारी पीछे से इस जंजीर को खींच-कर उसे आगे बढ़ने नहीं देते। इस प्रकार धीरे-धीरे शेर यह अनुभव कर लेता है कि वह शिक्षक तक प्रयत्न करने पर भी नहीं पहुंच सकता और उसे शिक्षक से दूर रहना चाहिये।

जब शेर शिक्षक से दूर रहने का अभ्यस्त हो जाता है, तब फिर चाबुक के इशारे से उसे अभीष्ट दिशा में चलने और निर्दिष्ट चौकियों पर बैठने की शिक्षा दी जाती है। इन चौकियों पर बैठने का अभ्यास शेर को आधे घंटे में भी हो सकता है, नहीं तो दो वर्ष भी लग सकते हैं।

शेर को गरजवाने के लिए मामूली-सी चालाकी काम में लायी जाती है। शिक्षा के प्रारंभिक दिनों में चाबुक को अपनी नाक के सामने फटकारे जाते देखकर शेर स्वभा-वतः ही गुर्राते और दहाड़ते हैं। जब-जब शेर दहाड़ता है, तब-तब शिक्षक उसके सामने अपनी मुट्ठी खोलकर हाथ की उंग-लियां फैलाता है। यह उंगलियों को फैलाने की प्रक्रिया शेर के हर बार दहाड़ने के साथ दुहरायी जाती है।

धीरे-धीरे शेर के दिमाग में दहाड़ने और मुट्ठी की उंगलियों को फैलते देखने का संबंध जुड़ जाता है। परिणाम यह होता है कि उसके बाद वह जब भी उंगलियों को उस प्रकार खुलते देखता है, दहाड़ना प्रारंभ कर देता है। इसी तरह शेरों को अपनी पिछली टांगों पर सीधा खड़ा होने का भी अभ्यास कराया जाता है। पहले शेरों को खड़े होने के लिए सामने कुछ सहारा रखा जाता है। और बहुत धीरे-धीरे इस सहारे को हटा लिया जाता है, यहां तक कि शेर बिना किसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रकार के सहारे के भी खड़ा रहने लगता है।

बाघ को खेल सिखाने के लिए बहुत बार मांस का भी लालच दिया जाता है। शेरों और बाघों में स्वभावतः परस्पर वैमनस्य होता है। एक बार डिक क्लीमैंस ने कुछ नये-नये शेरों के साथ खेल शुरू किया था; इन नये शेरों को देखकर पुराने बाघ और शेर उत्तेजित हो उठे। उसके बाद शिक्षक के सब आदेशों की अवहेलना करके वे आपस में गुथ पड़े। अंत में जब शेरों को अलग किया जा सका, तो उनमें से एक मर चुका था और दूसरा इतना घायल हो चुका था कि उसे भी आखिर में गोली मार देनी पड़ी।

डिक क्लीमैंस के शरीर पर बने अनेक बड़े घावों के निशान इस बात के पर्याप्त प्रमाण हैं कि जीविका-उपार्जन के लिए शेरों और बाघों के साथ खेल करना कुछ बहुत प्रिय कार्य नहीं है। कोई भी बीमा-कंपनी इस शिक्षक के जीवन का बीमा किसी भी शर्त पर करने को तैयार नहीं हो रही है।

क्लीमैंस अपने जीवन में लगभग १०० शेरों और बाघों को खेलों की शिक्षा दे चुका है। उसका एक बड़ा रोमांचकारी खेल यह कि वह एक मांस का टुकड़ा अपने दांतों में दबाकर खड़ा हो जाता था और एक शेर—जो भूखा होता था—आकर उस मांस के टुकड़े को झपट लेता था। क्लीमैंस के मुंह पर एक घाव का ताजा निशान अब भी देखा जा सकता है। यह घाव शेर ने एक दिन तब कर दिया था, जब वह बहुत अधिक भूखा था।

यह सही है कि कितने ही सिखाये हुए शेर क्यों न हों, उन पर विश्वास कभी नहीं किया जा सकता; इस बात का भी कोई ठिकाना नहीं कि कब शिष्य गुरु का भूखा बना डालेगा, परंतु एक शेरों के शिक्षक की जान उसके शिष्य शेर ने अपनी जान को खतरे में डालकर बचायी थी। यह शिक्षक तेरह शेरों के साथ खेल दिखाने के लिए लोहे के कठघरे में घुसा। इन तेरह में से सात शेर उसके अपने शिक्षित किये हुए नहीं थे। कठघरे के अंदर मामूली-सी बात-बघानी से वह गिर पड़ा। उसके गिरते ही दूसरे व्यक्तियों द्वारा शिक्षित किये गये सातों शेर उस पर एक साथ टूट पड़े और उसे समाप्त करने में शायद उन्हें सात सेकेंड भी न लगते; परंतु तभी उसके अपने सिखाये हुए शेरों में से एक उन शेरों पर टूट पड़ा और क्रुद्ध हुए शेर शिक्षक को छोड़कर उन शेर से भिड़ गये।

इसी बीच सरकस के व्यवस्थापकों ने खाली पिस्तौलों के फायर करके शेरों को डराकर काबू में कर लिया। शिक्षक और उसका सिखाया हुआ शेर बहुत बुरी तरह घायल हो गये थे। पर डेढ़ महीने के इलाज के बाद दोनों ही फिर स्वस्थ हो गये और उसके बाद वह शिक्षक सात साल तक अपने उस शेर के साथ खेल दिखाता रहा।

उन दोनों की मित्रता कैसी रही होगी, इसका अनुमान कर पाना जरा कठिन ही है, कोई आसान नहीं।

[‘नवनीत’ में पूर्वप्रकाशित एक लेख पाठकों के आग्रह पर पुनः प्रस्तुत]

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

व्यायाम सिर्फ छः सेकेंड का

राजबहादुर सिंह

क्या करें, काम-धंधे की व्यस्तता में व्यायाम के लिए समय ही नहीं मिल पाता। आपने अक्सर लोगों को मुंह पर विवशता का भाव लाकर ये शब्द कहते सुना होगा। किंतु अगर आपको मानव-स्वभाव की जरा भी पहचान है, तो यह समझते देर नहीं लगेगी कि ये सब कोरे बहाने हैं।

जो लोग व्यायाम के लिए समय न मिलने का बहाना करते हैं, उनके लिए प्रसिद्ध व्यायाम-विशेषज्ञ कीथ मनरो ने एक ऐसी व्यायाम विधि बनायी है, जिसमें केवल छः सेकेंड लगते हैं, और किसी बाह्य साधन या उपकरण की जरूरत नहीं पड़ती। खर्च तो कुछ पड़ता ही नहीं।

अखाड़े या व्यायामशाला में सुबह-शाम घंटों गुजारने की आवश्यकता नहीं। घर या दफ्तर में ही जब भी समय मिले और पेट भरा हुआ न हो, ये छः सेकेंड के व्यायाम कर लीजिये। आप चाहे कितने भी व्यस्त हों, छः सेकेंड तो निकाल ही सकते हैं।

जेन टुनी नामक प्रसिद्ध घूंसेबाज ने कहा है—"व्यायाम नियमित रूप से कीजिये—पर विकट श्रम वाले खेलों द्वारा नहीं, बल्कि इस ढंग से जिसे आप दांत साफ करने के समान ही नित्य जारी रख सकें।" केवल हाथों की मुट्ठियां बांधकर पूरी ऊंचाई तक उठाने से कलाई में बहुत बल आता है, और यह बांहों का सुंदर व्यायाम है। योगाभ्यास के कुंडलिनी आसन में पाकाशय को अंदर खींचकर पेट को नाव जैसा गहरा बना लिया जाता है और कई बार दुहराया जाता है।

डा० स्टीनहास का कहना है कि स्नान के बाद तौलिये से कुछ सेकेंड प्रत्येक अंग का पोंछना और घर्षण भी एक संक्षिप्त और प्रभावशाली व्यायाम है। तौलिये से गर्दन का छः सेकेंड का घर्षण ही बहुत लाभदायक सिद्ध हो सकता है। इसी प्रकार पेट, कूल्हे, जांघ, और पिंडलियों को तौलिये से घर्षण करने का अभ्यास भी एक बड़ा लाभदायक और संक्षिप्त व्यायाम है। हाथ-पैर की उंगलियों तक का घर्षण तौलिये से करना बड़ा ही लाभकारी होता है। इससे सारे शरीर में खून का दौरा पूरे तौर पर होने लगता है। ये व्यायाम थोड़े से स्थान में—कमरे, जहाज और भीड़-भरी ट्रेन तक में किये जा सकते हैं।

श्वास या प्राणायाम के द्वारा व्यायाम की पद्धति भारतीय योगविद्या का एक अंग है। यह प्राणायाम तो लेटे-लेटे भी किया जा सकता है। उत्तान अर्थात् पीठ के बल लेटकर गहरी श्वास-क्रिया द्वारा अपने फेफड़ों को भर लीजिये। फिर मुंह बंद करके नथुनों को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फैलाइये और सिकोड़िये। इस अभ्यास से श्वास पहले से अधिक समय तक खींचा और रोका जा सकता है। यह भी सेकेंडों का ही प्राणायाम है।

लेटे-लेटे व्यायाम करने की पद्धति यह है कि पहले दोनों हाथ सिर की सीध में ऊपर उठाइये। फिर उसे नीचे लाकर कमर के समानांतर कीजिये। वहां दोनों हाथ कुछ देर रखिये। फिर हाथ आसानी से नीचे कर लीजिये।

एक पांव पर बारी-बारी से खड़ा होना भी एक व्यायाम है। इससे पांव ही मजबूत नहीं होंगे, पेट को भी ताकत मिलेगी। जबड़ों को खोलकर फैलाना और दबाना ऐसा व्यायाम है, जो कुछ ही सेकेंडों का है, पर जिससे गर्दन के ऊपर के सभी अंगों को पूरा लाभ होता है। पेट पर अनेक बार हाथ फेरना भी एक संक्षिप्त, किंतु लाभदायक व्यायाम है। छाते को खोलकर ऊपर ले जाना और तेजी से नीचे खींचना भी हाथों का एक व्यायाम है। पैरों के पंजों पर खड़े हो शरीर का पूरा बोझ उठाना, फिर उसे नीचा कर एड़ी को फर्श पर छुआना भी सेकेंडों का ही व्यायाम है; पर है टांगों और पैर के पंजों के लिए पूर्णतः लाभदायक।

रीढ़ का व्यायाम करने के लिए दीवार में पीठ सटाकर खड़े हो जाइये और फिर सिर से एड़ी तक सारे अंग दीवार से हटाने का प्रयत्न कीजिये। इसमें कुछ ही सेकेंड लगेंगे, पर लाभ बहुत होगा।

इन सबके अलावा नौ ऐसे बुनियादी और आवश्यक व्यायाम हैं, जिनका निरंतर अभ्यास शरीर के लिए लाभदायक है, पर जो समय की दृष्टि से अत्यंत संक्षिप्त हैं:

१. बैठे, लेटे और खड़े तीनों अवस्थाओं में शरीर को पूरा फैलाइये पूरे खिंचाव और लंबाई तक।

२. अपनी रीढ़ को सीधी कीजिये—चाहे अकड़कर बैठिये। वैसा न कर पायें तो किसी सीधी चीज या दीवार से सटकर बैठिये।

३. गले को मोड़िये—दायें-बायें जितना मोड़ सकें, मोड़िये।

४. बैठे-बैठे या झुककर पेट को अंदर खींचिये।

५. अपने सीने (छाती) को फैलाइये।

६. बांहों को पूरी तरह फैलाइये, नीचे झुकाइये, आगे बढ़ाइये और ऊपर उठाइये।

७. पांवों को मोड़िये—उकड़ू बैठकर, कूदकर और चलकर।

८. पंजों और पैर के बल पर शरीर का भार उठाइये, तौलिये और झुकाइये।

९. अपनी मांस-पेशियों को झटके और खिंचाव, सिकोड़ और प्रहारपूर्वक ढीला और कड़ा कीजिये।

इनमें से अपने अनुकूल कुछ व्यायाम चुनकर प्रतिदिन अभ्यास करें, तो आप शरीर से इकहरे, मजबूत और गठित रहेंगे जिससे सुंदरता कायम रहेगी। कुछ ही मिनट प्रति दिन इसमें लगाकर भी बहुत-सा लाभ उठा सकेंगे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सितार का जादूगर

परमेश श्रीवास्तव

पंडित रविशंकर से जब जापान में किसी श्रोता ने बातों ही बातों में उनके धर्म के बारे में पूछा, तो उन्होंने बड़ी गंभीरता से कहा—"मनुष्य द्वारा बनाये हुए धर्म के अनुसार यह मेरा प्यारा भाई अल्लारक्खा (तबलावादक) मुसलमान है, और मैं हिन्दू, मगर हमारा सच्चा धर्म है—भारतीय संगीत। हम दोनों उसी धर्म में दीक्षित हैं; हम दोनों की आत्मा एकाकार हो गयी है।"

अमरीका के विश्व-विख्यात संगीतज्ञ यहूदी मेनुहीन ने रविशंकर का सितार-वादन सुनकर कहा था—"सितार की सुर-लहरियों में मैं सम्मोहित-सा हो गया। इसके पहले भारतीय संगीत मेरे लिए अजनबी था; मगर आज लगता है, जैसे मैं इसे युग-युग से जानता हूं और मैं अपनी अनंत संगीत-यात्रा में शायद इसे ही खोज रहा था? रविशंकर को सुनकर अमरीका सचमुच धन्य हो उठा।"

मगर उपलब्धियों के इस ऊंचे शृंग पर पहुंचने में रविशंकर को भयानक वीहड़ों और आंधी-तूफान से गुजरना पड़ा है।

पंडित रविशंकर का सौम्य रूप देखकर लगता है, उनका नाम सार्थक है। रवि की प्रभा से जैसे शंकर उद्भासित हो। लंबी और तीक्ष्ण नासा, बड़ी-बड़ी आंखें, गठा हुआ कसरती वदन, घुंघराले रेशमी केश, और हर वक्त ओंठों पर खिलते हुए मुस्कानों के फूल बस, जैसे साक्षात् कांति हो, श्री हो!

७ अप्रैल, १९२० को पंडित रविशंकर का जन्म बनारस में हुआ। आज भी जब कोई बंगाली उन्हें 'बंगाली' कहकर गौरवान्वित होना चाहता है, तो रविशंकर बड़ी सरलता से कहते हैं—"मैं सत्तूखोर हूं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और सिर्फ बनारस का हूं।" संकीर्णता पर और प्रांतीयता पर गौरवान्वित होनेवालों के लिए रविशंकर जीते-जागते व्यंग्य हैं। बचपन से ही उनके बड़े भाई, विश्व-विख्यात नर्तक उदयशंकर ने उन्हें अपने साथ रखा और १० साल की छोटी उम्र में ही रविशंकर उनके साथ विश्व के कोने-कोने में भ्रमण करते रहे। उस छोटी उम्र में भी जैसे रविशंकर को इस बात का ज्ञान था कि विदेशों में श्रोता भारतीय संगीत अथवा कला को किस हद तक ग्रहण करते थे, या बिलकुल ध्यान ही नहीं देते थे। और उन्हीं दिनों रविशंकर के मन में भारतीय संगीत के द्वारा संपूर्ण यूरोप और एशिया की आत्मा पर विजय पाने की अदम्य आकांक्षा घर कर गयी।

अपने प्राथमिक जीवन में उन्होंने नृत्य की शिक्षा ली। इसके बाद सन १९३८ में उन्होंने उस्ताद अलाउद्दीन खां का शिष्यत्व ग्रहण किया। उस्ताद अलाउद्दीन खां सभी तरह के भारतीय वाद्य-यंत्रों में निपुण और दक्ष थे। किंतु रविशंकर को सितार अधिक प्रिय लगा और प्राण-पण से वे सितार-शिक्षा में जुट गये। एक कठिन तपस्या का जीवन शुरू हुआ। ऐसी तपस्या, जो साधारण आदमी अनुमान भी नहीं कर सकता। और एक दिन उस तपस्या की आग से एक दिव्य आभा निकली, जिसने आदमी के मन की अंधेरी गुफाओं को आलोकित कर दिया। रविशंकर की सुर-स्रष्टा उंगलियों ने जब सितार के तारों को छुआ, तो जैसे स्वर्ग पृथ्वी पर उतर आया और उस्ताद ने आशीर्वाद दिया—"खुदा, तुम्हें लंबी उमर दे, क्योंकि दुनिया का हर इंसान तुम्हारा इंतजार कर रहा है।"

पंडित रविशंकर बड़े चिंतित थे। बचपन से ही वह सुनते आ रहे थे कि भारतीय संगीत बड़ा एकरस है, क्लांतिकर है। उन्होंने शास्त्रीय संगीत के गुणियों को सुना था और उनके श्रोताओं को भी देखा था। गानेवाला तो उधर सुर और लय के ताने-बाने में उलझा है, इधर श्रोता नींद में। रविशंकर बेहद उदास। रविशंकर ने सोचा किस तरह भारतीय संगीत की शैली परंपरा की विशिष्ट को अक्षुण्ण बनाये कर भी उसे जन-जन लिए हृदयग्राही बना जाये? किंतु शंकित थे कि थोड़ी-सी भ्रांति पर भारतीय संगीत बजाय आगे के पीछे फिसल जाये

सितार-वादन : चित्र : मकबूल हुसैन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अभी पिछले दिनों उन्होंने जापान में अपने एक भारतीय मित्र से कहा—"मैं अभी भी खड्ग की धार पर हूं। मैं कितने भयानक मानसिक द्वंद्व से गुजर रहा हूं, बताना कठिन है। प्रत्येक पल, प्रत्येक पदक्षेप, अपनी हर बात पर मैं बहुत ही सावधान हूं कि किसी भी तरह भारतीय संगीत का अपमान न हो, उसके मूल्यों-मानों को कोई छेड़ने न पाये। सामयिक रूप से विदेशियों की करतल ध्वनि पाकर कहीं मैं गिर न जाऊं! यह सामयिक प्रशंसा कहीं मेरी साधना को तोड़ न दे! मैं जानता हूं कि पाश्चात्य संगीत की उद्दामता के साथ थोड़ा-सा भी समझौता करूं, तो करोड़ों-करोड़ों हाथों की तालियां गड़गड़ा उठेंगीं, लाखों रुपये मिलेंगे, मगर इन तालियों की गड़गड़ाहट और रुपयों की खनक मेरी आत्मा को नहीं खरीद सकती।"

संगीत-परिवेशन के लिए सर्वप्रथम उसके अनुकूल एक परिवेश, एक वातावरण की सृष्टि करनी पड़ती है। उस्ताद अलाउद्दीन खां के घर मइहर में उन्होंने यह परिवेश देखा था। गाने-बजाने का कमरा ऐसा सजा रहता था कि बस कोई पवित्र मंदिर लगता था। इसलिए उन्होंने इस परिवेश-सृष्टि की दिशा में सबसे पहले दक्षिण भारत की कर्नाटक संगीत-पद्धति—'कृति-रागम-तानम्-पल्लवी' को अपनाया। छोटी-छोटी सुर-रचना के माध्यम से मन से चंचलता हटाकर एक आवेग की सृष्टि करना।

पंडित रविशंकर ने बताया—"मैंने इसी पद्धति से आश्चर्यजनक सफलता पायी। पहली बात तो यह कि विदेशों में अथवा भारत में भी, आज का आर्थिक और सामाजिक जीवन कुछ ऐसा है कि समय का मूल्य बहुत ज्यादा बढ़ गया है। अगर मैं शुरू में परिवेश के द्वारा चुंबकीय वातावरण तैयार न कर लूं, तो कुछ भी देना संभव नहीं। और आज तो लासएंजेल्स, न्यूयार्क, लंदन, पेरिस, जापान जहां जाता हूं, लोग चार-चार, पांच-पांच घंटे बेसुध बने रहते हैं।"

पंडित रविशंकर ने स्पष्ट कर दिया है कि—"मैं जब भारतीय संगीत-परिवेशन करने बैठता हूं, तो मैं भारतीय संगीत को उसकी सच्ची परंपरा और विशुद्ध शैली में प्रस्तुत करता हूं; मगर जब मैं किसी 'आर्केस्ट्रा' के लिए बजाता हूं, तब मैं दूसरा ही व्यक्ति होता हूं। इस अंतर को नहीं समझनेवाले लोग मुझे गलत समझते हैं।"

उन्होंने कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में संगीत-शिक्षा देनी शुरू की और अब तो उन्होंने कई जगह 'किन्नर' नाम से अपना संगीत-विद्यालय भी खोल रखा है। बंबई में भी उसकी एक शाखा है। पं० रविशंकर पाश्चात्य श्रोताओं के साथ आत्मीयता का संपर्क सहज ही स्थापित कर लेते हैं, क्योंकि उनका अंग्रेजी, जर्मनी, और फ्रेंच आदि पर मातृभाषा जैसा, अधिकार है। प्रसिद्ध पाश्चात्य शास्त्रीय संगीतज्ञ बाख, मोजार्ट, बीथोवन से लेकर लोकप्रिय 'पाप' संगीत तक से उनका शिल्प-गत परिचय उन्हें पश्चिमी श्रोताओं के बीच अत्यंत लोकप्रिय बनाता है।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

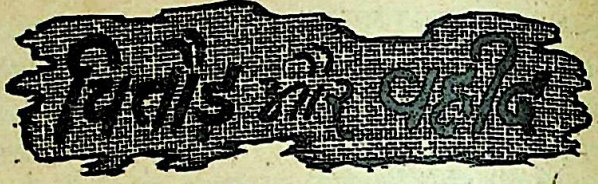

शशिप्रभा शास्त्री

जनवरी मास की एक धुंधियाती सर्द सुबह। वहीद तांगेवाले ने स्टेशन के रिटायरिंग रूम के दरवाजे को आकर ठकठकाया—"साहब तैयार हो लें, सात बजे तक निकल पड़ेंगे।"

"सात बजे नहीं भाई, आठ तो बजने दो, गजब की ठंड है और फिर अभी चाय-वाय भी तो नहीं पी है।"

"हां साहब, चाय-पानी से जरूर निबट लें, वहां कुछ नहीं मिलेगा।" कहकर चाबुक थामे हुए वहीद दरवाजे से लौट गया तो मैंने कहा—"आपने नाहक इस तांगेवाले को ठीक किया, यह मुसलमान हमें चित्तौड़ क्या दिखायेगा। क्या भावना होगी इसके मन में भला!"

"अरे वो अब सब कुछ नहीं है। अब हरेक को अपनी रोटी-रोजी से मतलब है। इस मामले में न कोई हिन्दू है, न मुसलमान।" बिस्तर को होलडाल में सहेजते हुए पति-देव ने मेरा समाधान कर दिया।

वहीद ठीक आठ बजे तांगा लेकर फिर आ खड़ा हुआ और हम चित्तौड़गढ़ की ओर रवाना हो गये। दुर्ग के प्रथम द्वार पाड़ल-पोल के दर्शन करके ही आंखें विमुग्ध हो उठीं। किले की विशाल सन्नाती दीवार ऊंचे-ऊंचे परकोटे बनाती हुई सीधी ले खड़ी थी। सबेरे की सर्द हवा इस समय नहीं लग रही थी। वहीद तांगे से उतर घोड़े के साथ-साथ पैदल चलने लगा था। भैंरोपोल के बाद चढ़ाई बेढब हो रही थी।

"हम भी उतर जायें भइया?" पूछा तो वहीद मौन स्वीकृति देकर पानी पानी हो गया। पतिदेव और मैं पैदल चलने लगे। मार्ग अधिक मधुर हो उठा। के परकोटों के भीतर निरंतर उठती कंकरीली सड़क, दीवारों में स्थान-स्थान छोटे-छोटे ताकनुमा शिवालय उनके भीतर रखे नन्हे-नन्हे शिवलिंग, नीला उन्मुक्त आसमान और उजला चंचल सुखद तल पवन। आंखें आसमान में उठतीं, की दीवार को छूकर फिर जमीन पर रातीं, तो हृदय प्रथम दर्शन से ही व्याकुल उत्कंठित हो दुर्ग की अंतिम को छू लेने को आतुर हो उठता।

दुर्ग की हर विशाल पोल को देखकर गद होते, रुकते-ठिठकते नाम पढ़ते हनुमानपोल, गणेशपोल, जोरलापो लक्ष्मणपोल, तथा रामपोल—हम आगे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चले जा रहे थे। न जाने किस पोल पर वहीद हमें बैठने का आदेश दे, खुद तांगा बढ़ा बैठा था। तांगे में बैठकर इन पोलों का इतिहास जानने के लिए हम आतुर हो उठे। सोचा, वहीद से पूछें, आखिर तो रोज ही एक बार यह यहां आता होगा। पूछा, तो वहीद गुमसुम। हमने एक दूसरे की ओर अर्थपूर्ण दृष्टि से देखा—"आखिर वही बात निकली न।" क्षण-भर के लिए हृदय हतोत्साहित हो गया। उदयपुर गये थे, तो कितनी चीजें तो तांगेवाले ने ही समझा दी थीं। पर यह भावनाहीन मनुष्य समझायेगा भी क्या। काश.....अभी हम सोच रहे थे कि तभी वहीद विनयपूर्वक बोला—

"यहां उतरकर रामचंद्रजी का मंदिर देख लीजिये। इसीलिए इस दरवाजे का नाम रामपोल पड़ा है।"

"बेचारा! गरीब साथ निभाने की कोशिश कर रहा है।" फुसफुसाते स्वर में कहते हुए हम तांगे से उतरकर मंदिर के भीतर चले गये। सामने रामचंद्र की प्रतिमा, किनारे तुलसी का चौरा। तुलसी के दो-चार दल अपनी अंजलियों में साध हम लौट आये। तुलसी की जानी-पहचानी पत्तियां इस समय इतनी महत हो उठीं कि दो हजार योजन दूर अपने घर सहेजकर ले जाने के लिए हमने पत्तियों को रूमाल की खूंट में बांध लिया।

किले की विशाल, कई फुट चौड़ी दीवारों की घुमावदार कतारें समाप्त हो चुकी थीं। वहीद ने हमें बजरीवाले सपाट मैदान में लाकर छोड़ दिया था। हमारी पीठ पीछे विराट दुर्ग खड़ा था, सामने मीलों नीचे चित्तौड़ का नन्हा-सा नगर बिछा हुआ था—छोटे-छोटे गुड़िया जैसे मकान, बारीक-बारीक गलियां, सटे-सटे बाजार। "यह पहले लड़ाई का मैदान था।" पास खड़ा एक पर्यटक बता रहा था।

"सच!" आंखों में आश्चर्य की रक्तिमा बढ़ चली थी और हम झुके हुए सर्दीले आसमान के नीचे देर तक खड़े, आज से हजारों

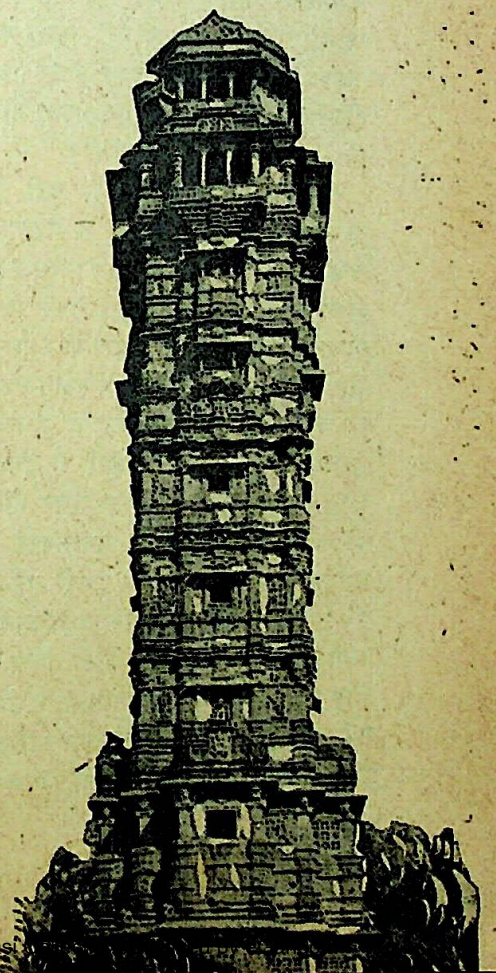

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi

वर्ष पूर्व इस मैदान में झनझनाती तलवारों की गूंज को सुनते रहे थे।

दिन उदास था। बादलों के मध्य से सूरज की नरम किरण ने अभी उझककर बाहर नहीं झांका था, पर हमारे उल्लास की नयी किरण किले के भीतर प्रविष्ट होने के लिए मचल रही थी। एक तेज-तर्रार गाइड के साथ हम आगे बढ़ने लगे थे—"यह है नौलखा भंडार। लड़ाई के लिए हमेशा नौ लाख रुपया इस स्थान पर जमा रहता था। यह किले का पिछला भाग है। यहां पर स्थित इस धनागार को कोई देख भी नहीं सकता था। इसलिए इसका नाम 'न लखा भंडार' पड़ा। 'नौलखा' इसका अपभ्रंश रूप प्रतीत होता है।" गाइड हमें बतला रहा था।

नौलखा भंडार के सामने, टूटी हुई हवेलियों के खंडहर सामने के मैदान में बिखरे पड़े थे। यह उन प्रसिद्ध भामाशाह की हवेली के खंडहर हैं, जिन्होंने राणा प्रताप को अनेक बार धन देकर उबारा था। भामाशाह जैन थे, इसीलिए किले में स्थान-स्थान पर जैन और राजपूती कला का समन्वय दिखाई देता है। इन खंडहरों से हमारी दृष्टि हटाकर गाइड ने पातालेश्वर मंदिर की ओर संकेत किया। पातालेश्वर की असंख्य मूर्तियां, दीवारों पर उभरी हुई थीं, पर विचित्र चीज थी, भीतर के तहखाने में अवस्थित शिवजी की वह पिंडी, जिस पर शिव की १,००० मूर्तियां समानांतर उरेही गयी हैं। शृंगार चौरी, राणा सांगा का देवरा इत्यादि भवनों की स्थापत्यकला को सराहते हुए हम आगे बढ़ रहे थे कि तभी गाइड ने कुछ सीढ़ीविहीन भवनों की ओर संकेत करते हुए कहा—"ये महाराणा कुंभा की पद्मिनी के महल हैं।"

पांचवीं शताब्दी से सोलहवीं शताब्दी पर्यंत चित्तौड़ राज्य गहलोत तथा मेवाड़ के सीसोदिया राजाओं की राजधानी था। अतः आरंभ में महाराजा चित्रांगद (जिन्होंने इस किले का निर्माण अपने नाम पर करवाया था) के वंशज इन भवनों में रहे। तत्पश्चात् राणा कुंभा इस महल में रहे। इन महलों की दीवारें और फर्श एकदम खुरदरे और जीर्ण—से हैं, पर इनकी पुख्तगी में कमी नहीं है। यहां यह दृष्टव्य है कि चित्तौड़गढ़ के अनेक महलों में राजपूत कला के साथ-साथ मुस्लिम वास्तुकला के दर्शन भी होते हैं। यह परिवर्तन संभवतः मुसलमान बादशाहों के द्वारा किया गया।

महलों के सामने की फैली टूटी धरती के नीचे अभी कितने मकान दबे पड़े हैं, इसका पता समय-समय पर पुरातत्व विभाग लगा रहा है। गाइड ने उस ऊबड़-खाबड़ जमीन में एक धंसे हुए स्थल की ओर संकेत किया। पास जाकर हमने देखा, यह एक बड़ा छेद था, जिसमें से नीचे एक विशाल हाल स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा था। "किसी पर्यटक के अकस्मात् पैर धंस जाने से यह गड्ढा बना है।" गाइड बता रहा था और हम चुपचाप खड़े उन महलों को देख रहे थे जिनके वक्ष में एक नहीं, अनेक कहानियां छिपी पड़ी हैं। राजा भोज (राणा संग्राम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रथम के पुत्र) की कहानी, रतनसिंह (द्वितीय) और पद्मिनी की कहानी, पन्ना धाय की कहानी, कृष्ण भगवान के प्रेम में मत्त मानिनी मीरा की कहानी, कर्णवती और परम सुंदरी पद्मिनी के जौहर की कहानी–आज केवल कहानियां हैं और कहानियों के साक्षी ये भव्य खंडहर, जिनको देखकर आंखें फटी रह जाती हैं, हृदय स्तब्ध हो जाता है, कदम ठिठके खड़े रहते हैं।

गाइड ने हमें फिर घसीटा–"यह है फतेह-प्रकाश महल और मोतीबाजार"–यों तो वर्तमान महाराज भगवतसिंह के दादा और महाराणा भूपालसिंह के पिता महाराज फतेहसिंह ने चित्तौड़ तथा उदयपुर के सभी किलों एवं महलों की मरम्मत और आवश्यकतानुसार जीर्णोद्धार करवाया है, किंतु इस फतेहप्रकाश महल को तो उन्होंने बिलकुल नये ढंग से बनवाया है। इस महल की भव्यता निस्संदेह व्यक्ति को चकित कर देती है। पास ही मोतीबाजार की दुकानों के खंडहर बिखरे पड़े हैं, जहां एक दिन मोती और हीरे-जवाहरातों की दुकानें थीं।

चित्तौड़ के किले में बयालीस पानी के स्रोत थे, जिनमें से अब केवल सात-आठ ही शेष रह गये हैं। 'सात बीस देवरिया मंदिर' भी इस गढ़ का विशेष आकर्षण है। यह मूलतः जैन मंदिर है, इसका जीर्णोद्धार आनंद कल्याणजी ट्रस्ट अहमदाबादवालों ने करवाया था। इस मंदिर में सत्ताईस देवरियें यानी तीर्थंकर होने से इसे 'सात बीस देवरिया का मंदिर' कहा जाता है। इस

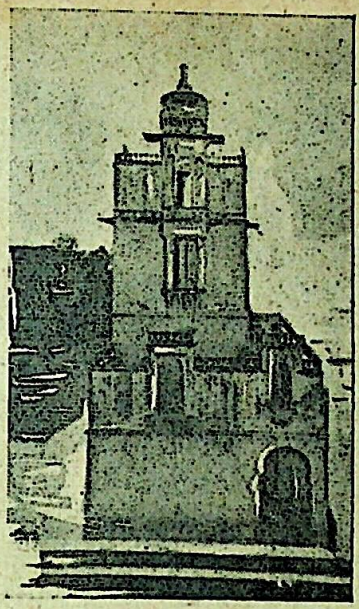

पद्मिनी का जलमहल

मंदिर की शिल्पकला मूर्तियों की गढ़ाई, दीवारों पर खुदाई अद्भुत है।

इस अद्भुत जैन स्थापत्यकला के दर्शन करते हुए हमने 'कुम्भाश्याम मंदिर' तथा मीराबाई के मंदिरों के दर्शन किये, जिनमें राजपूती स्थापत्यकला बोल रही थी। मीराबाई के मंदिर में पुराने ढंग के गायक और वादक सरीखे कुछ व्यक्ति बैठे हुए मीरा के भजन गा रहे थे। मीराबाई की श्वेत सुचिक्कण अति सुंदर सौम्य प्रतिमा के सम्मुख मीराबाई के ये गूंजते हुए भजन हमें पुनः भावलोक में उठा ले गये।

"इधर देखिये।" गाइड अब उस विराट कीर्तिस्तंभ की ओर संकेत कर रहा था, जो चित्तौड़ के हर कोने और हर सीमा से किले

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की कीर्तिपताका के रूप में साफ दिखाई पड़ता है। राणा कुंभा ने अपनी मालवा-गुजरात-विजय के उपलक्ष्य में इस नौ मंजिल वाले १२२ फुट उंचे विजयस्तंभ का निर्माण करवाया था। इसकी चक्करदार १२७ सीढ़ियां चढ़कर, व्यक्ति जब इस स्तंभ के ऊपरी भाग में पहुंचता है, तो आठ मील के विस्तृत क्षेत्र में फैले हुए दुर्ग का भव्य स्वरूप उसे आतंकित एवं चकित कर देता है उसके ओंठ अचानक बुदबुदा उठते हैं—"ताल तो भोपालताल और सब तलैयां, गढ़ तो चित्तौड़गढ़ और सब गढ़ैयां।"

कीर्तिस्तंभ के बायीं ओर का खाली भूखंड, उस काल में जौहरभूमि थी अथवा श्मशानभूमि, यह अभी तक निश्चित नहीं किया जा सका है। पुरातत्वविभाग के द्वारा इस भूमि की गहराई में प्राप्त, अस्थियां तथा राख, दोनों ही पक्षों की पुष्टि करती हैं। भूमि के पार्श्व में भूतनाथ का विशाल मंदिर है, जिसकी विराट प्रतिमा के सम्मुख मृतक व्यक्तियों के शवों को, दाह संस्कार से पूर्व लाकर रखा जाता था। इस स्थल की चुटकी-भर राख को सहेजकर हम गोमुख-कुंड पर पहुंचे, जहां पद्मिनी अपने महल में निर्मित सुरंग से चलकर प्रतिदिन स्नान करने के लिए आती थी। इस गोमुख-कुंड की मछलियां अपनी अपरिमित संख्या के लिए दूर-दूर तक प्रसिद्ध हैं। एक चना पानी में छोड़ने पर यहां हजारों मछलियां, अपने गोल गिलगिले मुंहों को सूराखों सदृश खोल-कर गदर-पदर उछल आती हैं।

हमारा आगामी आकर्षण आठवीं शता-ब्दी में निर्मित कालिका माता का मंदि था। अन्य मंदिरों के सदृश इस मंदिर स्थापत्यकला भी हृदय तथा आंखें दोनों बांध लेनेवाली है। प्राचीन काल में यहां एक दिन, यहां देवी के सम्मुख बकरे की दी दी जाती थी। इस मंदिर में सूर्य की विभि मूर्तियां, तथा पास ही पूर्व की ओर सूर्यमु होने के कारण यह मंदिर, पहले सूर्य मंदिर भी कहा जाता था। ऊंचाई पर स्थि होने के कारण यह मंदिर दूर-दूर से दिख देता है। राज्य की ओर से एक गांव इ मंदिर को समर्पित किया गया है। वैशा शुक्ला अष्टमी को यहां मेला लगता है, कालिका देवी अथवा चित्तौड़ आठम मेला कहते हैं।

गाइड हमें सब विस्तार से बता रहा और हम अब थककर चूर-चूर हो चुके ऊबड़-खाबड़ धरती, टूटे-फूटे खंडहर, दुपहरी की तपती धरती, सर्दी की ऋतु हम गर्मी तथा थकान से बेहाल हो चुके अकस्मात् वहीद तांगे समेत हमारे सा आकर खड़ा हो गया, जैसे साक्षात् स्व वाहन उतरा चला आ रहा हो।

"मैंने इसे किले की दूसरी सड़क से इ आने के लिए कह दिया था।" गाइड बताया। "ओह!" हम उचककर अ तांगे में जा बैठे। हमारी प्रसन्नता और का ठिकाना न था। घोड़ा दुलकी चाल चलने लगा। "बस अब हम पद्मिनी के म में पहुंचेंगे।" गाइड ने कहा, तो आन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और औत्सुक्य ने हमें अधीर बना दिया।

दो-तीन फर्लांग चलकर गाइड हमें महल के भीतर उस कमरे में ले गया, जहां दीवार पर चार शीशे लगे थे। इस कक्ष में खड़े होकर गाइड ने हमें अलाउद्दीन खिलजी-वाली चिरपरिचित कहानी सुनायी—शीशे में देखे जानेवाली प्रक्रिया कितनी रोचक व्यवस्थित एवं विचित्र सूझबूझ से युक्त थी, इसका ज्ञान हमें यहीं हुआ। शीशेवाले कक्ष के सामने जलमहल है। इस जलमहल से उपर्युक्त शीशेवाला कक्ष पर्याप्त ऊंचाई पर स्थित है। सुंदर सरोवर में अवस्थित महल की, पानी में उतरनेवाली सीढ़ियों में से सबसे अंतिम सीढ़ी पर पद्मिनी को खड़ा किया गया था। यह कोण इस प्रकार था, कि यहां पर खड़े होने से प्रतिबिंब, सीधा सामनेवाले महल के कक्ष की खिड़की से दर्पण में पड़ता था। इसी प्रतिबिंबित रूप को अलाउद्दीन ने देखा था।

यह व्यवस्था वस्तुतः अद्‌भुत थी, क्योंकि अलाउद्दीन अन्य किसी प्रक्रिया द्वारा पद्मिनी की सजीव देह को कदापि नहीं देख सकता था। यदि वह पीछे मुड़कर देखता, तो जल में खड़ी सीढ़ियों के अतिरिक्त और कुछ दृष्टि-गोचर नहीं हो सकता था। पद्मिनी काफी नीचे रह जाती थी। व्यवस्था इसी कोण से की गयी थी। खुली खिड़की के पास जाकर झांकने का प्रश्न ही नहीं उठता था, क्योंकि तब तो राजपूतों की सनसनाती तलवारें उसकी छाती के आर-पार हो जातीं।

सहस्रों वर्ष पुरानी कहानी हमारी आंखों के सम्मुख सजीव हो उठी—कहां है आज वह पद्मिनी, जिसके अपरिमित सौंदर्य ने दिल्लीश्वर को बेवस बना दिया था और जिसने अपनी कंचन काया को क्षण-भर में भस्म बनाकर युग-युगांतर के लिए एक आश्चर्यजनक अमर कहानी छोड़ दी थी। हृदय भर आया, आंखें गीली हो उठीं। भारी कदमों से हम महल के बाहर आये।

चित्तौड़गढ़ के विशाल द्वार से हम बाहर आ रहे थे। वहीद का तांगा हमें चित्तौड़गढ़ से नीचे उतार रहा था। हमारी आंखें अब भी गढ़ की विशाल दीवारों, अट्टालिकाओं और गुंबदों में उलझी हुई थीं। सर्द घुंधियाती सुबह, इस समय तक एक खिले दिन में परिवर्तित हो चुकी थी। मुड़-मुड़कर पीछे देखती हुई हमारी दृष्टि को भांपते हुए, गुमसुम वहीद बोल उठा—"साहब, उस दिन एक बाबू शराब पीकर इस चित्तौड़गढ़ को देखने हमारे तांगे में चला आया था। हमने उसे बीच में ही उतार दिया। भला कहीं शराब पीकर यहां आना चाहिये?"

हमने आश्चर्य से एक-दूसरे की ओर देखा—"रोटी-रोजी कमानेवाला कह रहा है यह।" आंखें भर आयीं, हाथ जुड़ गये और मस्तक एक बार फिर नत हो उठा। सामने चित्तौड़गढ़ खड़ा था—स्वतंत्रता पर मर मिटनेवाले अमर सेनानियों की ढेरों अमर स्मृतियों को अपने हृदय में समेटे हुए—एक अपूर्व तीर्थस्थल, जहां काबा-काशी दोनों ही एक साथ जुड़े ही खड़े हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रमापति शुक्ल

चाचा कैम की कहानी दक्षिण अमरीका के आदिवासियों में साक्षरता-प्रचार की अपूर्व कथा है। चाचा कैम का पूरा नाम विलियम कैमरन टाउनसेंड है। वे लगभग ७१ वर्ष के अमरीकी हैं। छात्रावस्था में ही उनके मन में ईसाई धर्म के प्रचार की धुन उठी। अतः १९१७ में २१ वर्ष की अवस्था में एक दिन उन्होंने अपने कालेज को नमस्कार किया और स्पेनी भाषा में बाइबल की कुछ प्रतियां एक संदूक में भरकर ग्वातेमाला की ओर चले। वहां उन्होंने आदिवासियों में बाइबल का प्रचार और वितरण करना आरंभ किया। परंतु वे आदिवासी न तो स्पेनी भाषा जानते थे, जो दक्षिणी अमरीका की राष्ट्रभाषा है, और न उन्हें ईसाई धर्म से ही प्रेम था। अतः एक दिन जब कैमरन टाउनसेंड एक आदिवासी को बाइबल देने लगे, तब उसने व्यंग्य किया कि यदि तुम्हारा ईश्वर इतना उत्साही है, तो हमारी भाषा क्यों नहीं सीख लेता। बात साधारण थी; पर टाउनसेंड को लग गयी और उसने तुरंत बाइबल का वितरण बंद करके उन आदिवासियों की भाषा सीखने का निश्चय किया।

यह कार्य साधारण न था, परंतु वह लगन से पंद्रह वर्ष तक ग्वातेमाला राज्य वे कैक्शिकोल नामक जाति की भाषा सीख रहे। उन्होंने अपना रहन-सहन, खान-पा सब उन्हीं जैसा बना लिया। इस लंबी अवधि में टाउनसेंड ने केवल आदिवासियों कठिन भाषा ही नहीं सीखी, वरन् एक ऐसी विधि भी निकाली, जिससे कोई भी ध्वनात्मक लिखित भाषा सिखायी जा सके।

१९३२ में जब टाउनसेंड को यक्ष्म हो गया, तब वे आदिवासियों को छोड़ सभ्य संसार में लौट आये। आने के पूर्व पांच विद्यालय, एक छोटा अस्पताल, एक मुद्रणालय, बीसों छोटे-छोटे गिरजाघर और अनेक शिक्षित ईसाई तैयार कर चुके थे।

रोग से मुक्त होने पर उन्हें एक उत्साही मित्र लेवनार्ड लेग्टर्स मिल गये, जिन्हों उनसे कहा कि आपने जो कुछ एक आदि वासी जाति के लिए किया है, वही दक्षिण अमरीका की अन्य जातियों के लिए भी कर सकते हैं। टाउनसेंड ने वादा किया; परंतु एक शर्त पर। वह यह थी कि दोनों मिलकर लिखेंगे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पहले एक प्रशिक्षण केंद्र स्थापित करें, जहां आदिवासियों में कार्य करने और उनकी भाषा सीखने के लिए युवक-युवतियां तैयार किये जायें। अतः १९३४ की ग्रीष्म में दोनों मित्रों ने अपना विद्यालय एक परित्यक्त स्थान पर स्थापित किया। पहले तो केवल दो ही छात्र आये; परंतु आठवें ग्रीष्म में विद्यालय इतना बढ़ गया कि उसे ओक्लहोमा विश्वविद्यालय के प्रांगण में ले जाना पड़ा। अब यह संस्था 'समर स्कूल आफ लिंग्विस्टिक्स' (ग्रीष्मकालीन भाषाशास्त्र विद्यालय) के नाम से पांच सौ छात्रों को ओक्लहोमा (उत्तरी डकोटा, संयुक्तराज्य) और वाशिंग्टन के विश्वविद्यालयों में प्रशिक्षण देता है। इंग्लैंड, कनाडा तथा आस्ट्रेलिया में इसकी शाखाएं हैं। अब तक लगभग पांच हजार स्नातक तैयार हो चुके हैं, जो संसार के पचीस देशों में आदिवासियों की भाषा सीखकर उन्हें लिखित रूप प्रदान करने तथा साक्षरता के साथ-ही-साथ ईसाई धर्म का प्रचार करने में लगे हैं।

सैद्धांतिक प्रशिक्षण के पश्चात् शिक्षार्थियों को एक व्यावहारिक परीक्षा के लिए तीन महीने किसी वन-शिविर में रहना पड़ता है। वहां उन्हें अपनी झोंपड़ी, अपने हाथों बनानी पड़ती है, जिसमें आरी, हथौड़ा या कीलों का उपयोग न करके केवल जंगली बेंतों के खंभों तथा पत्तियों का प्रयोग करना पड़ता है। मगरों से भरी वेगवती नदियों को पार करने के लिए बेड़े बनाना, पेड़ के तने को खोखला करके एक प्रकार की नाव (कैनो) बनाना, जंगली जानवरों, अजगरों आदि का सामना करना, प्राथमिक चिकित्सा में टूटी हड्डी को जोड़ने से लेकर महामारी की रोकथाम करने तक में प्रवीणता प्राप्त करना और बिना पथ के पचीस मील तक मार्ग ढूंढ़ना, इत्यादि उनकी व्यावहारिक परीक्षा के मुख्य विषय हैं। जो इन कठिन परीक्षाओं में उत्तीर्ण हो जाते हैं—और ९० प्रतिशत हो ही जाते हैं—वे तीन मास के लिए 'परीक्षित आदिवासियों' के बीच कार्य करने के लिए भेजे जाते हैं।

टाउनसेंड ने ज्यों ही अपने विद्यालय में कुछ शिष्य प्रशिक्षित कर लिये, त्यों ही वे उन्हें साथ लेकर विसको की ओर चले। परंतु यह उत्साही टोली राज्य की सीमा पर ही यह कहकर रोक दी गयी कि हमें अनुवादकों की आवश्यकता नहीं है, हम तो इन आदिवासियों की भाषाओं का लोप करना चाहते हैं। टाउनसेंड ने बड़ी चतुराई से उत्तर दिया—"हम भी तो यही चाहते हैं। परंतु यदि उनकी भाषाओं को सीखकर हम उन्हें स्पेनी सिखायेंगे, तो वे और भी शीघ्र समाप्त होंगी।" अतः बड़ी कठिनाई के पश्चात् वे लोग आगे बढ़ पाये। परंतु एक बार प्रवेश मिल जाने पर उन्होंने आदिवासियों में ऐसा कार्य किया कि आरंभ में उनका विरोध करनेवाले सरकारी कर्मचारी अब उन्हें अपना परम हितैषी मानते हैं और इस समय सरकार की सहायता से २१६ अनुवादक ५१ आदिवासी जातियों में कार्य कर रहे हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

टाउनसेंड के कार्यकर्ताओं में मैरियाना स्लोकम् नाम की एक युवती की कथा बड़ी कारुणिक एवं विस्मयोत्पादक है। उसने अपने प्रेमी के साथ ही प्रशिक्षण प्राप्त किया और दोनों ने निश्चय किया कि विवाह कर, चालीस हजार की जनसंख्यावाली जेल्टास नामक आदिवासी जाति के बीच काम करेंगे। परंतु दुर्भाग्य से विवाह के एक ही दिन पूर्व उसके प्रेमी का देहांत हो गया। फिर भी मैरियाना अपने संकल्प पर दृढ़ रही। उसने अपने प्रेमी के साथ निश्चय किये हुए कार्य को करना ही अपना सर्वोत्तम कर्तव्य माना। अतः घरवालों को बड़ी कठिनाई से राजी करके वह अपने अभीष्ट कार्यक्षेत्र की ओर चली। वैवाहिक जीवन के मधुर स्वप्न के भंग हो जाने पर भी उसका अदम्य उत्साह शिथिल न हुआ।

उसने बड़ी लगन से आदिवासियों के बीच कार्य करना आरंभ किया। उसने उनकी भाषा सीखकर विद्यालयों के लिए पाठ्य पुस्तकें तैयार कीं और अनेक स्थानों पर पढ़ने-लिखने के लिए कक्षाएं खोलीं। सोलह वर्ष के भीतर उसने सात उन्नतिशील द्विभाषी विद्यालय स्थापित किये, अनेक पुस्तकों का वहां की भाषा में अनुवाद किया और आदिवासियों को मेक्सिको की संस्कृति में ढाला। साथ ही उनमें व्याप्त चोरी, मद्यपान, जादूगरी के अंधविश्वास आदि का भी उसने उन्मूलन किया। जादूगर चिकित्सकों के जाल से बचाने के लिए उसने आधुनिक चिकित्सा के ज्ञाता डाक्टरों को नियुक्त किया और पांच हजार से अधिक सूर्योपासक आदिवासियों को ईसाई बनाया। इसके पश्चात् वह दूसरी जाति में कार्य करने के लिए आगे बढ़ी।

इस बीच 'ग्रीभावि' (ग्रीष्म भाषाशास्त्र विद्यालय) की प्रशंसा दक्षिण अमरीका के अनेक राज्यों में फैल चुकी थी और मेक्सिको में किये गये उनके कार्यों से प्रभावित होकर अनेक राज्य उनके कार्यकर्ताओं को आमंत्रित कर रहे थे। सबसे पहले पेरू के राष्ट्रपति ने टाउनसेंड को निमंत्रित किया। अतः १९४५ में टाउनसेंड वहां गये और पेरू के वनों में महीनों सर्वेक्षण करते रहे। इस बीच उन्होंने अनेक आदिवासी जातियों के मुखियों से मिलकर उनकी राय जानी और उनका संकेत पाकर उन्होंने पहले तीन जातियों में कार्य आरंभ किया।

वे जातियां सुदूर घोर जंगलों में बसती थीं। उनके पास पहुंचने के लिए 'ग्रीभावि' के युवक-युवतियों को कैनो (पेड़ के तने की बनी नावों) द्वारा अथवा बेड़े बनाकर नदियों के माध्यम से यात्रा करनी पड़ती थी और उन्हें ढूंढ़ना पड़ता था। कभी-कभी उन्हें ऐसी खूंखार जंगली जातियों के बीच जाना पड़ता था, जो गौरांगों को देखते ही उन्हें जान से मार डालती थीं।

इन जातियों में काम करते हुए टाउनसेंड को एक विमान की अनिवार्य आवश्यकता जान पड़ी। और इच्छा करते ही उन्हें एक दानी मित्र की सहायता से वह मिल भी गया। कार्यक्षेत्र का विस्तार होने पर धीरे-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वीरे विमानों की आवश्यकता बढ़ती गयी और वे मिलते भी गये। अब टाउनसेंड के पास १९ विमान, २१ चालक तथा अन्य कर्मचारी हैं। विमानों में नदियों में उतरने योग्य पीपे भी लगे हैं, जिससे वे जहां चाहें नदियों में उतर सकते हैं। घने जंगलों में हवाई अड्डे कहां ? टाउनसेंड के पास एक ऐसा विमान भी है, जिससे वे थोड़ी जगह में भी उतर सकते हैं तथा उड़ते-उड़ते ही किसी व्यक्ति को भूमि से विमान पर उठा सकते हैं।

टाउनसेंड ने पेरू में यारिनाकोचा नामक स्थान पर चार सौ एकड़ भूमि में 'ग्रीभावि' का एक केंद्र खोला है, जहां एक रेडियो स्टेशन तथा पेरू के कार्यकर्ताओं के लिए पूर्तिकेंद्र है। विमानों की मरम्मत तथा उनकी देखभाल के लिए कुशल कर्मचारी रहते हैं, जिनके परिवारों के रहने के लिए दो सौ के लगभग जंगली ढंग की झोंपड़ियां हैं। इसके अतिरिक्त औषधालय, जलपान-गृह तथा विश्रामगृह भी हैं। यहां एक ऐसी कक्षा भी चलती है, जहां उच्च शिक्षा के लिए आदिवासी प्रशिक्षित किये जाते हैं और शिक्षामंत्रालय की ओर से अपनी ही जाति-के सरकारी स्कूलों में अध्यापक बनकर जाते हैं। उन्हें अपनी भाषा के अतिरिक्त स्पेनी भाषा की शिक्षा भी प्राप्त करनी पड़ती है। यहां एक अच्छा मुद्रणालय भी है, जहां आदि-वासियों के लिए पाठ्यपुस्तकें, कोश तथा अन्य पाठ्य-सामग्री का मुद्रण होता है।

टाउनसेंड ने अपने सभी कार्यकर्ताओं के लिए लड़ाई के बाद बचे हुए सस्ते रेडियो खरीद लिये हैं, जिनके द्वारा वे उनसे संपर्क स्थापित करते रहते हैं। मुख्य-मुख्य केंद्रों पर संवाद-प्रेषक (ट्रांसमीटर) भी लगे हैं, जिनसे कभी-कभी बड़े संकटापन्न काल में सरलता से कार्य सिद्ध होते हैं। उदाहरणार्थ, एक बार कैशीनाहुआ जाति में कार्य करने-वालों को अकस्मात् युद्ध की तैयारी देखकर आश्चर्य हुआ। कारण पूछने पर बताया गया कि समाचार मिला है कि उनकी जाति के एक युवक को, जिसने क्युलिना नामक दूसरी जाति की युवती से विवाह कर लिया था, उसकी ससुरालवालों ने जादू से मार डाला है। उसी का बदला लेने की तैयारी हो रही थी। भाले चमकाते, तीर-धनुष संभालते हुए वीर चिल्ला रहे थे—"क्युलिनों का अंत कर डालो।"

'ग्रीभावि' के कार्यकर्ता स्काट ने पूछा—"तुम्हें कैसे मालूम कि यह समाचार सत्य है। आओ पता लगायें।" यह कहकर वह संदेश-प्रेषक यंत्र के पास गया। आश्चर्य-चकित लोगों की भीड़ उस यंत्र के चारों ओर एकत्र हो गयी। क्युलिनों के बीच कार्य करनेवालों से संपर्क स्थापित किया गया। कुछ ही मिनिटों के बाद तथाकथित मृत व्यक्ति की आवाज रेडियो में सुनाई पड़ी, जिससे उसके संबंधियों को विश्वास हो गया कि वह केवल सकुशल ही नहीं है, वरन् ससुराल में दामाद का-सा यथोचित आदर पा रहा है। अतः उन्मत्त वीरों ने हंसकर अपने शस्त्र डाल दिये और तीन दिन के बाद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दोनों जातियों के सरदारों का सम्मेलन एवं प्रीतिभोज हुआ, जिससे दोनों के बीच मित्रता और भी दृढ़ हो गयी।

कार्यकर्ताओं को समय-समय पर रेडियो-संपर्क स्थापित करना पड़ता है। यदि अधिक दिनों तक कोई केंद्र संपर्क नहीं करता, तो तुरंत विमान भेजकर उसका समाचार मंगाया जाता है। प्रत्येक रेडियो तथा संदेश-प्रेषक यंत्र की मरम्मत के लिए कुशल कर्मचारी घूमते रहते हैं, ताकि संयंत्र सर्वदा ठीक दशा में रहें और किसी केंद्र को समाचार भेजने में असुविधा न हो।

चाचा कैम की 'उत्सर्जित पुत्रियां' अर्थात् युवती कार्यकर्त्रियां उसी साहस के साथ भयंकर जंगलों में जाती हैं, जिस प्रकार युवक जाते हैं। कुछ कारणों से वे युवकों की अपेक्षा अधिक सफल होती हैं। जंगली लोग पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों को कम संदेह की दृष्टि से देखते हैं। वे सोचते हैं, ये बेचारी स्त्रियां कर ही क्या सकती हैं? संभव है वे पतियों की खोज में हों। पहले तो टाउनसेंड युवतियों को ऐसे संकटापन्न कार्य में भेजने से हिचकते थे; पर उनका साहस और तत्परता देखकर उन्हें विश्वास हो गया कि ईश्वर उनकी रक्षा करेगा और वे सफल होंगी। इस संबंध में लौरेटा ऐंडरसन नाम की युवती की घटना उल्लेखनीय है।

जिस समय लौरेटा अपनी सहयोगिनी डौरिस कोक्स के साथ शप्रा नामक जंगली जाति में कार्य करने गयी, उस समय वहां का सरदार तरीरी अपने खूंखारपन और रक्तपात के लिए प्रसिद्धि प्राप्त कर चुका था। जब दोनों युवतियां नदी के तीर पर तरीरी की अधिकार-सीमा में उतरीं, तब अकस्मात् पहले तरीरी ही सामने पड़ा। उसे देखकर युवतियों ने तनिक भी भय नहीं दिखाया, वरन् साहस-पूर्वक उस घूरते हुए सरदार से कहा—"हम आपके बीच रहने और आपकी भाषा सीखने आयी हैं।"

तरीरी उनके अदम्य साहस से दंग रह गया। अतः उसने अपने अनुचरों को आज्ञा दी कि इन युवतियों को एक झोंपड़ी दे दो और इनकी सहायता के लिए कुछ बूढ़ी स्त्रियां नियुक्त कर दो। वर्षों पश्चात् तरीरी ने टाउनसेंड से कहा कि यदि उस समय आपने युवतियों के बदले युवकों को भेजा होता, तो हम उन्हें देखते ही मार डालते। यदि दंपति होते, तो पति को मारकर स्त्री को मैं अपनी पत्नी बना लेता। परंतु निरीह युवतियों को, जो मुझे भाई कहकर पुकारने लगीं, मेरे जैसा महान सरदार क्यों हानि पहुंचाता?

परंतु एक रात लौरेटा के ऊपर संकट आ ही पड़ा। दोनों सहेलियां अपनी झोंपड़ी में बैठी मोमबत्ती की रोशनी में अपना कार्य-विवरण लिख रही थीं। उसी समय एक बूढ़ी स्त्री ने आकर समाचार दिया कि कुछ आदमी मद्यपान से उन्मत्त होकर उन दोनों के साथ बलात्कार करने आ रहे हैं। अतः वे भागकर जंगल में चली जायें। तुरंत दोनों युवतियों ने मोमबत्ती बुझायी और घने अंधकार में जंगल में छिप गयीं। रात-भर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रक्षा के लिए भगवान से प्रार्थना करती रहीं। सवेरा होते ही वे संदेश-प्रेषक यंत्र के पास गयीं और ४०० मील दूर यारीनाकोचा समाचार भेजा कि हम दोनों संकट में हैं। तुरंत उत्तर मिला—"तरीरी को यंत्र के पास बुलाओ।" तरीरी आया और यंत्र के सम्मुख बैठा। वह थोड़ी-सी स्पेनी भाषा जानता था। उसने कठोर शब्दों में सुना—"तुम अपनी जाति के राजा हो और अपनी प्रजा को वश में नहीं रख सकते?" तरीरी के सम्मान की बात थी। मर्म को स्पर्श कर गयी। उसने उत्तर दिया—"मैं राजा हूं और प्रतिज्ञा करता हूं कि इन बहनों को कोई हानि नहीं पहुंचा सकेगा।" और सचमुच उसके बाद उनकी ओर दृष्टि उठाने की किसी की हिम्मत नहीं हुई।

इस प्रकार टाउनसेंड के कार्यकर्ता जीवन उत्सर्ग करके अपना संकल्प पूरा कर रहे हैं। टाउनसेंड का कार्यक्षेत्र दिन पर दिन बढ़ता ही जा रहा है। परंतु उन्हें कार्यकर्ताओं की कमी कभी अनुभव नहीं हुई। नित्य युवक-युवतियां उनके कार्य से प्रेरणा प्राप्त करके 'ग्रीभावि' को अपना जीवन समर्पित कर रहे हैं।

टाउनसेंड की इस सफलता का मुख्य कारण है, उनकी आस्तिकता और अपने धर्म में अनन्य श्रद्धा। इसी धर्मप्रेम के कारण उन्होंने विश्वविद्यालय की पढ़ाई छोड़ी और धर्म-प्रचारक बने। वही प्रेम आज भी उन्हें प्रेरणा प्रदान कर रहा है। उन्हें ईश्वर पर इतना अखंड विश्वास है कि वे सारे कार्यों में उसी की इच्छा पाते हैं। उन्हें कभी निराशा नहीं होती।

उनका वार्षिक व्यय लगभग ७५ लाख रुपये है, फिर भी वे किसी से एक पैसा भी नहीं मांगते। अनिच्छा से दिये हुए धन को वे ईश्वर में अविश्वास मानते हैं। उनके मतानुसार अनिच्छा-दान भगवान के कार्य का अपमान है, अतः दाता की उससे कोई भलाई नहीं होती। टाउनसेंड चाहते हैं कि उनका दाता ईश्वर की प्रेरणा से—उसकी इच्छा समझकर—दान करे।

टाउनसेंड की ईश्वरेच्छा पर निर्भरता 'ग्रीभावि' के प्रत्येक कर्मचारी को प्रभावित करती है। वे सभी ईश्वरेच्छा को प्रधान मानते हैं। उनमें से किसी को वेतन नहीं मिलता और न ही किसी को नियमित निर्वाह-व्यय ही मिलता है। ईश्वर ने भेज दिया तो ठीक, नहीं भेजा तो उसकी इच्छा; और वे थोड़े ही में संतोष कर लेते हैं।

टाउनसेंड के समान ईश्वरार्पण बुद्धि से कार्य करने की लगन यदि हमारे देश में भी किसी नेता में हो जाये, तो हमारे आदिवासियों की भाषाओं का अध्ययन सरल हो जाये और उनमें हिन्दी का प्रचार ही न हो, वरन् उनकी राजनीतिक समस्याएं भी सरलता से हल हो जायें।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मौत ने तीन ओर से घेरा डाला

मेजर कुलवीर राणा

"शुभरात्रि, बवाना!" कोम्बो ने मुझसे विदा ली और फिर वह बस्ती की ओर लौट पड़ा। मैं कैंप के भीतर चला आया और सोने की तैयारी करने लगा।

तो या बू पहुंचे मुझे कोई बहुत देर नहीं हुई थी। वहां मैं पहुंचा था जंगल विभाग के एक अधिकारी के अनुरोध पर। अफ्रीकी सरकार के इस विभाग में जरूरत से कम आदमी नियुक्त किये जाने की परंपरा-सी बन गयी है और बहुधा आदमखोर शेरों, गुस्सैल हाथियों या अन्य खतरनाक जानवरों से छुटकारा पाने के लिए इस विभाग को कुशल शिकारियों से अनुरोध करना पड़ता है। शिकारी भी सहर्ष इस अनुरोध की रक्षा करते हैं। उन्हें तो मौत को बार-बार ललकारने में ही जीवन की सार्थकता प्रतीत होती है।

जंगल विभाग का वह अधिकारी मेरा मित्र था। तो या बू बस्ती से उसके पास कुछ बिगड़ैल हाथियों के उधम मचाने की खबर पहुंची थी। उसने मुझे बताया था—"लगभग चालीस हाथियों का झुंड है। ये हाथी बस्ती में बेतरह उधम मचा रहे हैं। फसलें रौंद रहे हैं, झोंपड़ियां उजाड़ रहे हैं—रात में बस्ती में—पूरी बस्ती में घूमा करते हैं। वहां लोगों का रहना दूभर हो गया है। उन्हें हर क्षण अपने प्राण संकट में नजर आते हैं। मैंने सुना है, आप उसी ओर जा रहे हैं। अगर आप इन हाथियों से उन्हें छुटकारा दिला दें, तो .....उसने अपना वाक्य पूरा नहीं किया।" वैसे, इसकी जरूरत भी नहीं थी।

मैंने उसकी बात मान ली। उसने ठीक ही सुना था कि मैं उसी ओर जा रहा था। यह सही है कि मेरी मंजिल कहीं और थी—उस बस्ती से बहुत आगे; लेकिन वहां रुककर उन हाथियों से दो-दो हाथ करने में कोई नुकसान नहीं था। इसके विपरीत, खतरों से जूझने की मेरी प्रवृत्ति के अनुकूल ही बात थी यह। फिर मेरा वह अफ्रीका-प्रवास शिकार के लोभ में ही था।

उस अधिकारी ने मुझे यह भी बताया कि वहां इन दिनों कोम्बो भी था; लेकिन ये हाथी उसके लिए भी भारी पड़ रहे थे।

कोम्बो को मैं अच्छी तरह जानता था। वह एक स्वस्थ और युवा आदिवासी था और खतरों से खेलने में उसे भी बेहद आनंद आता था। राइफल और बंदूक चलाने में वह माहिर था; लेकिन उससे भी ज्यादा कमाल उसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाता फेंकने में हासिल था। कई ऐसे मौके आये थे, जब हमने साथ-साथ मौत को चुनौती दी थी; मौत हम पर हावी हो चली थी; लेकिन हर बार उसे शिकस्त खानी पड़ी थी। कोम्बो की चुस्ती, फुर्ती और निर्भीकता ऐसे मौकों पर देखते ही बनती थी।

उसी कोम्बो के वहां होने की बात सुन मेरा मन और भी उल्लास से भर गया। वैसे पल-भर के लिए यह जानकर ताज्जुब भी हुआ कि हाथियों का वह झुंड उसके लिए भारी पड़ रहा था। लेकिन मैंने उस अधिकारी से कुछ कहा नहीं।

मैं जब उस बस्ती में पहुंचा, तो शाम उतर आयी थी। कैंप के लिए अच्छी-सी एक जगह तलाश कर मैंने अपने साथ के आदमियों को वहां तंबू लगाने के लिए कहा और कोम्बो को बुलवा भेजा। मैंने जो जगह तलाश की थी, वह खेतों में लहलहाती फसल के पास ही थी।

मेरे वहां पहुंचते ही चारों ओर से आदिवासियों का झुंड उमड़ आया। सबकी जुबान पर एक ही बात थी कि किस तरह 'शैतान' हाथियों ने वहां तबाही मचा रखी थी।

कोम्बो भी वहां जल्दी ही पहुंच गया। मुझ पर नजर पड़ते ही उसने संतोष की एक सांस ली। उसके चेहरे का रंग जर्द पड़ गया था और वह देखने में बड़ा अजीब-सा लग रहा था। आंखों में भय की छाया-सी उभर आयी थी। जाहिर था कि उसे बड़े कटु अनुभव हो रहे थे और उसका हौसला पस्त होता जा रहा था।

कोम्बो के साथ जब-जब मुझे मौत को ललकारने का मौका मिला है, मैंने कोम्बो के धैर्य, साहस और हौसले की तारीफ की है। उसी कोम्बो की यह हालत देख मुझे अनुमान लगाते देर नहीं लगी कि स्थिति सच ही, बड़ी गंभीर है।

कोम्बो को मैंने बैठने के लिए कहा और चाय पीने को दी। जब हमारी चाय खत्म हो चली, मैंने सहज ढंग से कहा—"कोम्बो! यह शैतान हाथियों के बारे में क्या सुन रहा हूं मैं? क्या हो रहा है यहां?"

"बवाना!" कोम्बो ने क्षणभर की चुप्पी के बाद कहना शुरू किया—"मैं यहां ७-८ दिनों से हूं और अब तक एक हाथी को भी नहीं मार पाया हूं। ये हाथी इतने खतरनाक हैं कि पलक झपकते आपकी गंध सूंघकर पहुंच जाते हैं। वे आप पर इकट्ठे हमला बोल देते हैं और दैत्यों की तरह लड़ते हैं। वे सच ही दैत्य हैं, बवाना! कल ही, मुझे

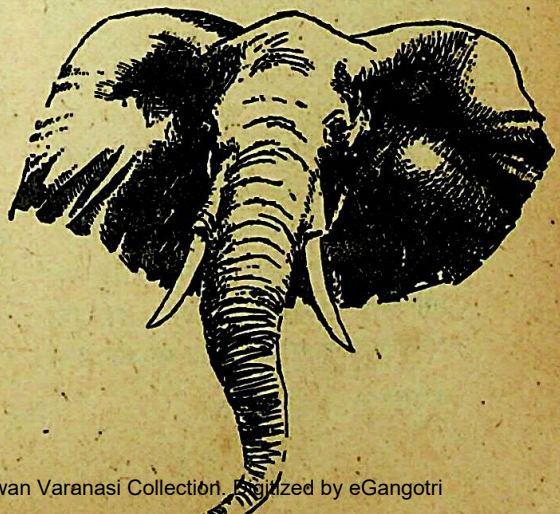

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उनसे अपनी जान बचाने के लिए दौड़कर छुपना पड़ा।"

मैंने ताज्जुब के साथ कोम्बो की ओर देखा। एक कुशल शिकारी की, जिसने जाने कितने जंगली भैंसे और गैंडे मारे थे; सैकड़ों हाथियों को मौत के घाट उतारा था, इस तरह की बातें निश्चय ही अकल्पनीय-सी थीं। याने वे हाथी वास्तव में बड़े खतरनाक थे—जैसा, कोम्बो कह रहा था, दैत्य थे!

मैंने उसे सांत्वना दी—"चिंता मत करो कोम्बो! अब हम उन दैत्यों को जरूर पराजित कर देंगे। मेरे साथ दो भारी और मजबूत दुनाली राइफलें हैं; उनमें से एक तुम अपने पास रख सकते हो।"

"वे खुद ही तोप हैं, बवाना!" कोम्बो ने जवाब दिया—"और उन्हें मार गिराने के लिए आपको भी तोप की जरूरत महसूस होगी—ढेर सारे कारतूसों की जरूरत पड़ेगी।"

मैं मुस्करा पड़ा। बात को वहीं खत्म करते हुए मैंने कहा—"अच्छी बात है, कोम्बो! अब तुम भी आराम करो। कल दिन निकलने पर तुम्हारे इन दैत्यों को देखा जायेगा।"

और, कोम्बो 'शुभ रात्रि' कहकर चला गया था।

रात्रि के वस्त्र पहनकर मैं आराम से बैठ गया। व्हिस्की का पेग तैयार कर मैं उसे पीने जा रहा था; लेकिन मुश्किल से तीन-चार घूंट ही लिये होंगे कि एक आदिवासी उसी ओर दौड़ता नजर आया। वह हवा की तरह भागा चला आ रहा था और गला फाड़कर चिल्ला रहा था—"वे यहां आ गये! वे यहां आ गये!"

समझते देर नहीं लगी कि उसका मतलब उन हाथियों से था। मैंने उसे आवाज दी—"यहां से क्या मतलब तुम्हारा? कहां आ गये वे?"

भय से कांपते स्वर में जवाब मिला—"वे बिलकुल आपके कैंप की ओर चले आ रहे हैं, बवाना!"

दूर उनके भागते आ रहे पैरों की धमक अब मुझे भी सुनायी देने लगी थी। एक ही घूंट में मैंने बची हुई शराब अपने हलक में उंड़ेल ली और फिर उठ खड़ा हुआ। दूसरे ही क्षण मैंने रात्रि में पहने जानेवाले पाजामे के ऊपर ही बुशशर्ट पहन लिया और उसकी जेबों में कारतूसें ठूंस लीं। अब तक कोम्बो भी दौड़ता हुआ वहां आ पहुंचा था। मैंने एक राइफल खुद उठायी और दूसरी उसे पकड़ा दी। फिर हम खेमे से बाहर निकले और सामने, आदिवासियों द्वारा लगाये गये पेड़ों के झुंड से होते हुए उस ओर पहुंच गये।

तत्काल ही, हमने अपने से थोड़ी दूर पर धूल की गुब्बार उड़ती देखी और उस धूल से नहाये हुए सात विशालकाय हाथी इस ओर भागते नजर आये।

अब तक रात उतर आयी थी और पूनो का चांद अपनी पूरी गोलाई में चमक रहा था। उसके प्रकाश में वहां का जर्रा-जर्रा नहाया हुआ था और हर चीज साफ नजर आ रही थी।

हाथी जिस तेजी से और जिस तरह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जमीन रौंदते चले आ रहे थे, सचमुच ही वे साँड नजर आ रहे थे। उनके पैरों की तेज धमक करीब होती जा रही थी। "तैयार होओ!"—मैं चिल्लाया और तभी सात सूंड़ हवा में लहरा उठे। हाथियों ने भी हमें देख लिया था और वे वहीं रुककर बड़े क्रोध से अपने पांव पटक रहे थे।

धूल की गुब्बार फिर उड़ी और वे हाथी क्षण-भर के लिए उसमें छिप-से गये! "होओ!" मैं चिल्लाया—"सिर्फ उनके सिर पर निशाना लेना! बीचवाले हाथी को मेरे लिए छोड़ देना।"

धूल की वह गुब्बार आगे बढ़ती नजर आने लगी और हमने अपनी राइफलें तान लीं। उसी क्षण तीन हाथी सामने की ओर दौड़ते नजर आये। बाकी के चार वहीं खड़े अपने पैर पटक रहे थे।

"शूट!" मेरे मुंह से आवाज निकली और एक साथ दोनों राइफलें गरज उठीं। उन तीनों हाथियों में भी बीचवाला हाथी कुछ आगे निकल आया था। एक साथ ही हम दोनों ने, एक-एक कर तीन फायर किये। गोलियां अपने निशाने पर लगीं और आगे निकल आया हाथी लड़खड़ाया। फिर वह चीखों से चिंघाड़ उठा।

धूल की परत काफी मोटी थी और हम सिर्फ इतना ही देख सके कि किस तरह उसके साथ के दोनों हाथियों ने आगे बढ़कर अपनी सूंड़ों से उसे सहारा दिया और अपने-अपने दांतों से धक्का देते हुए उसे पीछे हटाने

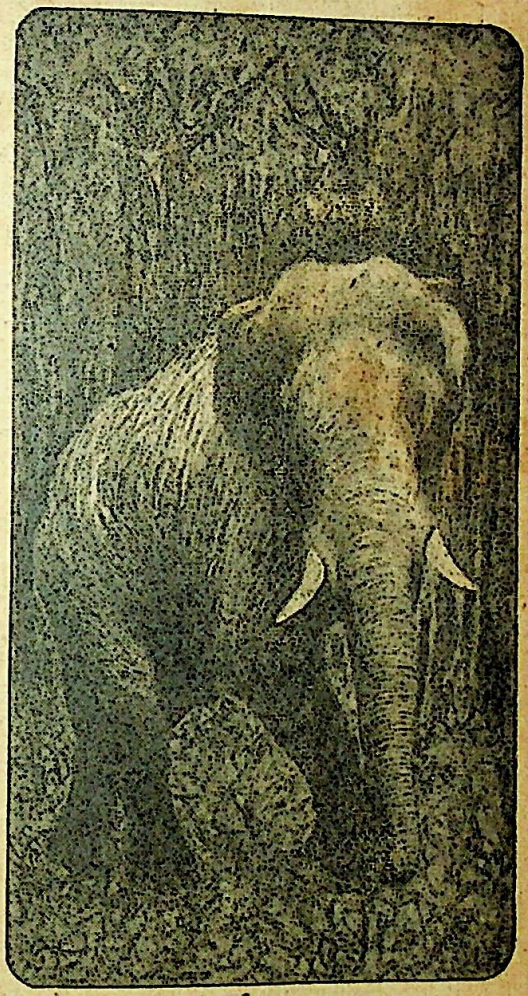

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लगे। उस एक हाथी के सिवा और कोई हाथी जख्मी नहीं हुआ था। अतः स्पष्ट था कि हमारी सभी गोलियां निशाने पर नहीं लगी थीं। धूल की परत से या हाथियों के दौड़ते हुए आगे बढ़ते रहने के कारण कुछ गोलियां बहककर अलग निकल गयी थीं।

मैंने और कोम्बों ने अपनी राइफलों में फिर से कारतूस भर दिये और तभी कोम्बो चिल्ला पड़ा—"देखिये बवाना, वे फिर आ रहे हैं।"

वे वास्तव में, फिर चले आ रहे थे। धूल के नये बादल सामने से उमड़ते चले आ रहे थे। हमने अपनी राइफलें संभाल लीं और उसी वक्त कोम्बो फिर चिल्लाया—"बवाना! जरा अपनी दाहिनी ओर भी देखिये।"

मैंने नजरें घुमायीं और उधर से भी धूल के बादल इधर बढ़ते नजर आये। याने हाथी उधर से भी चले आ रहे थे। मन में एक खयाल आया, तो मैंने अपनी बायीं ओर नजरें फेरीं और जैसी मुझे आशंका थी, उधर से भी धूल की गुब्बार उठती नजर आ रही थी; जो क्षण-क्षण हमारे करीब होती जा रही थी। जाहिर था, हाथियों ने अपनी युद्ध-कुशलता का परिचय दिया था और एक साथ उन्होंने तीन ओर से अपने दुश्मनों को घेरने की कोशिश की थी। मैं उनके चातुर्य की प्रशंसा किये बिना नहीं रह सका।

तो क्या और हाथी आ पहुंचे थे? मैंने नजरें गड़ाकर देखने की कोशिश की। ना, नये हाथी नहीं पहुंचे थे। दो हाथी सामने से और दो-दो बायीं और दायीं ओर से बढ़े चले आ रहे थे। कुल ६ हाथी थे वे—क्रोध से चिंघाड़ते हुए तूफान की तेजी से हमारी ओर बढ़ रहे थे। अपने जख्मी हाथी को किसी सुरक्षित स्थान पर छोड़ दिया था उन्होंने और अब मिलकर उसका बदला लेना चाहते थे।

स्थिति की गंभीरता देखते हुए, यों खुले में रहकर उन्हें रोकने की कोशिश करना निरी मूर्खता थी। यह वही बात हो जाती कि 'आ बैल, मुझे मार!' हमें जल्दी ही किसी सुरक्षित स्थान में पहुंच जाना था।

तीनों ओर से उमड़ते आ रहे धूल के बादलों में बायीं ओर के बादल ही अपेक्षाकृत कुछ दूर-से थे। मैंने अपनी राइफल की नली दाहिनी ओर से आ रहे हाथियों की ओर घुमायी। 'कोम्बो!" मैंने चिल्लाकर कहा—"तुम सामने से आ रहे हाथियों को संभालो और साथ ही पीछे की ओर खिसकते चलो! हमें जल्दी ही किसी और का सहारा लेना होगा।"

दोनों राइफलों से एक साथ गोलियां छूटीं। दोनों ओर का एक-एक हाथी लड़खड़ाया और धूल का वह बादल पलभर को ठहरता नजर आया। दोनों गोलियां अपने निशाने पर लगी थीं।

हम इसके साथ ही पीछे हटते जा रहे थे। पलभर को लगा, दो तरफ से खतरा टल गया। हमने अपने चेहरे पर छलक आये पसीने की बूंदें पोंछी; लेकिन तभी मालूम हो गया कि हमारा सोचना कितना गलत था। धूल के बादल जो क्षणभर के लिए रुक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थे; फिर आगे बढ़ते नजर आये। क्रोध से कांपते और चिंघाड़ते हुए सामने और दायीं ओर से एक-एक हाथी भागा चला आ रहा था। अपने घायल साथियों को उन्होंने वहीं छोड़ दिया था और प्रतिशोध की भावना से उबलते हुए वे तूफान की तरह बढ़े आ रहे थे।

"शूट!" मेरे मुंह से आवाज निकली और राइफलें पुनः गरज उठीं। दोनों हाथी पलभर को लड़खड़ाये; लेकिन फिर जोरों से चिंघाड़ते हुए वे दौड़ पड़े।

मैं और कोम्बो अब तक पीछे हटते जा रहे थे। कोम्बो मेरी बायीं ओर था। हमारी नजरें सामने थीं और कदम पीछे खिसक रहे थे और तभी मैं कोम्बो के मुंह से एक कराह सुनकर चौंक-सा पड़ा। नजरें घुमाकर देखा। पीछे हटते हुए एक छोटे-से गड्ढे में कोम्बो का पांव चला गया था और संभल न पाने के कारण वहीं पीठ के बल जमीन पर जा गिरा था। उसके हाथ की राइफल छूट गयी थी।

विपत्ति जब आती है, तो अकेले नहीं आती, यह गलत नहीं कहा गया है। अपनी दायीं ओर और सामने से आ रहे हाथियों से उलझने में बायीं ओर से बढ़नेवाले हाथियों की बात पलभर के लिए जैसे दिमाग से उतर गयी थी और इस बीच वे काफी करीब आ चुके थे। मौत को इतने करीब पाकर एक बार तो मेरा साहस जवाब छोड़ गया।

लेकिन जब प्राणों पर आ बनती है, तो मनुष्य गजब का साहसी हो उठता है और उसका यह अद्भुत साहस ही उसे मौत के मुंह से आश्चर्यजनक ढंग से निकाल लाता है। मैंने अपनी दायीं ओर और सामने से बढ़नेवाले हाथियों की चिंता छोड़ दी और बायीं ओर से करीब आ पहुंचे हाथियों की ओर राइफल तान दी। बिना तनिक देर किये मैंने ट्रिगर दबा दिया। गोली छूटी और एक हाथी लड़खड़ाया। वह घूमा और मेरी राइफल की दूसरी गोली उसके कानों के पास लगी। जोरों से चिंघाड़ता हुआ वह पीछे की ओर भागा और इधर मैंने भागकर एक झाड़ी की ओट ले ली।

राइफल में पुनः गोलियां भरना जरूरी था। मेरी राइफल इतनी ज्यादा गर्म हो गयी थी कि मैं उसे पकड़ने में कठिनाई अनुभव कर रहा था।

"कोम्बो!" मैं चिल्लाया—"किसी तरह भागकर यहां आ जाओ।"

"बवाना!" कोम्बो की भय और दर्द से मिली-जुली आवाज आयी—"मैं उठ नहीं पा रहा हूं। रीढ़ की हड्डी शायद बुरी तरह मोच खा गयी है।"

बायीं ओर से बढ़नेवाले हाथियों में से जो दूसरा बच गया था, उसने पीठ दिखानेवाले अपने साथी की ओर देखा और फिर क्रोध से चिंघाड़ता हुआ आगे की ओर दौड़ पड़ा। अब तक वह कोम्बो के बिलकुल पास पहुंच चुका था। क्षणभर—सिर्फ क्षणभर बाद ही, उसका सारा क्रोध कोम्बो के ऊपर टूट

(शेष पृष्ठ १११ पर)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तरस

तुर्की कहानी
हंजारलियोग्लू

रजब बिस्तर में उठ बैठा और अपनी बीवी पर नजर डाली, जो पलंग पर उसकी बगल में इस तरह पड़ी सो रही थी, जैसे कोई मरीज पड़ा-पड़ा दम तोड़ने की तैयारी कर रहा हो। वह उसकी थकी हुई सांसों की सुस्त सरसराहट सुनता रहा, जिसके सिलसिले को बीच-बीच में गहरी आहें तोड़ देती थीं। उसके माथे से निकलता हुआ पसीना मौसम की मार से मुरझाये हुए उसके चेहरे पर से मैल की पपड़ियों को घोलकर अपने साथ लिये, धूप में झुलसी हुई उसकी गर्दन पर से होते हुए कंधे के गढ़ों में जमा हो रहा था और वहां से छलककर जिस्म पर फैल रहा था। जब वह सांस लेती थी, तो उसकी छाती धीरे-से ऊपर को उठती थी। उसके भारी और बेडौल स्तन, औंधे कटोरों की तरह मानो अंधेरे के बोझ से छूटने के लिए कसमसा रहे थे। देर तक अपनी बीवी को देखते रहने के बाद रजब बड़बड़ाया—"कोई अंधा ही इसे औरत कहेगा।"

यों रात काफी गुजर चुकी थी, मगर हवा में जरा भी ठंडक नहीं आ पायी थी। रजब ने अंधेरे में ही टटोलकर अपने जूते पहने।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह उठा और आदत के बल पर उसके पांव अंधेरे में खुद ही ठीक दिशा में चल पड़े। घर से निकलकर वह जमीन पर लेट गया। गांव मानो उस गर्म-गर्म काली रात के दबाव में पिघलकर बह गया था।

वक्त काटने के लिए उसने लकड़ी का तंबाकू का डिब्बा खोला और एक सिगरेट लपेटी। उसे अपने दिल में अजीब-सी बेचैनी महसूस हो रही थी। इस बेचैनी की तुलना उस दिन के दुःख से नहीं की जा सकती थी, जब वह गांव की मुखियागिरी के चुनाव में हार गया था, न उस दिन के दर्द से जब उसे पुलिस ने बुरी तरह धुनका था। और न उस दिन की कसक से जब उसके गाड़ी-भर तरबूजे ५० लीरा में बिक गये थे और घंटे-भर बाद ही उसके लिए ७५ लीरा देने-वाला ग्राहक मिल गया था।

पिछले कुछ दिनों में ऐसा कुछ भी तो नहीं हुआ था, जिससे वह विचलित हो। चुकंदर ठीक वक्त से रोप दिये गये थे। उसका बैल जो एक टांग तुड़ा बैठा था, उसका घाव भी अब भर चुका था। उसकी गाय बछिया जनी थी। पुलिस के हवलदार ने उसके साथ बैठकर कहवा-घर में ताश खेले थे। मजबूत इसका कोई कारण नहीं था कि अपने जीवन से उसे असंतोष हो। बेचैनी से वह दायें से बायें बायें से दायें करवट बदलता रहा ठंडी जमीन पर। फिर उसने सोचना छोड़ दिया और उसे नींद आ गयी।

जब उसकी आंखें खुलीं, तो दिन काफी चढ़ चुका था। उसकी बीवी और बेटियां बहुत पहले ही नीचे मैदान में जा चुकी थीं। आलस के साथ अंगड़ाई लेकर वह उठा और ईंटों की बनी कुटिया की ओर चल दिया। वहां उसने चूल्हे के पास रखे हुए मट्ठे के कटोरे में रोटी के टुकड़े भिगोये और अपनी भूख शांत की। बीवी ने सब बिस्तर लपेटकर एक कोने में एक के ऊपर एक जमा दिये थे। उसने आटा सानकर डंगरों को पानी भी दिखा दिया था। सो रजब के करने-कराने के लिए कोई काम बाकी नहीं रहा था, सिवा इसके कि जाकर कहवा-घर में ताश खेले, हालांकि आज उसकी ऐसा करने की बिलकुल मर्जी नहीं थी। उसके दिल की बेचैनी सारे बदन पर छा गयी थी। या खुदा, यह क्या चीज है? बारिश न हो तो उसे हमेशा बेचैनी होती है, मगर ऐसी नहीं .....अगर फस्ल ठीक से न उगे, तो उसे बेचैनी होती है, मगर ऐसी नहीं.....जब माल महकमे का कारिंदा आकर दरवाजे पर दस्तक देता है, तो उसे बेचैनी होती है, मगर ऐसी नहीं.....

'जरा खेत पर हो आऊं,' उसने सोचा—'शायद दिल बहल जाये..... और यह भी देख लूंगा कि औरतों ने क्या काम किया है।'

बारिश को थमे बहुत रोज हो चुके थे। अब तो आग-जैसी धूप जमीन को झुलसा रही थी। ईंट की बनी कुटियों के गायों के बाड़ों में से तेज बू उठ रही थी। धूप में गांव ऐसा लग रहा था, जैसे कोई 'हाल' में आकर पड़ा हुआ हो—बिना बोले, बिना डुले।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गांव के आखिरी घरों को पार करके रजब क्षण-भर रुका । रूमाल से पसीना पोंछते हुए बड़बड़ाया– 'अगर दोजख इतना गर्म हो, तब तो बहिश्त की राह ढूंढ़नी ही पड़ेगी।" धूप से चुंधियाती हुई आंखों से उसने मैदान को निहारा। चुकंदर के खेत औरतों से भरे हुए थे, जो अपने चौड़े सुर्ख पाजामों में बड़े-बड़े लाल करमकल्लों जैसी लग रही थीं। भौंहों से चूकर आते हुए खारे पानी से उसकी आंखें जल रही थीं। गीली वरौनियों में से उसे खेत बहुत दूर, और सपनों की तरह गायब होते हुए-से दिखाई दे रहे थे। फावड़े लगातार चल रहे थे; धूप में सूखकर तड़की हुई जमीन उनकी मार से भुरभुरा रही थी; चुकंदरों की जड़ें ताजी हवा में गहरी सांस ले रही थीं।

जैसे-तैसे रजब अपनी बीवी के पास पहुंचा और उसके सामने खड़ा हो गया।

"आधा काम निबट गया क्या ?" उसने बीवी से पूछा।

अपने ही पसीने की बूंदों से सिंची जमीन की ओर सिर झुकाये, उसकी बीवी मानो कराह रही हो, ऐसी आवाज में बोली– "अभी तो बीस एकड़ बाकी हैं।"

"तो दस दिनों से तुम कर क्या रही हो ?"

मर्द होने के घमंड में रजब कठोर आवाज में चिल्लाया–"मैं तुझसे कह रहा हूं री, सत्यानाश हो तेरा ..... बहरी है क्या तू ?"

औरत ने आहिस्ते-से सिर उठाया। बिना एक भी शब्द बोले वह अपने पति को देखती रही। दम तोड़ते हुए जानवर की तरह हांफ रही थी वह। पसीने और धूल से सूजी हुई उसकी आंखें बादल-भरी रात की तरह काली थीं। मानव-जाति का तमाम दुःख-दर्द उसके चेहरे पर झलक रहा था, जीवन की तमाम वेइज्जती उसके चेहरे पर कांप रही थी।

रजब एकाएक चकरा-सा गया, कांप-सा उठा। आखिरकार अपनी बेचैनी का कारण उसकी समझ में आ गया, जो उसके दिल को कुचले डाल रही थी, उसे अपनी बीवी पर तरस आ रहा था।

अगले दिन शाम को रजब बाजार से दो जहाजी लालटेनें हाथ में लिये घर लौटा और अपनी बीवी से बोला–" लो, लालटेनें। दिन में बेहद गर्मी पड़ने लगी है–तुम बहुत थक जाती हो। अब से तुम रात को काम कर सकती हो।" –अनुवादक : ना. द.

★

जंगल का राजा शेर समतल इलाके में अथवा घाटियों-पहाड़ों में भी रह सकता है; मगर पेड़ों पर रहने की बात आश्चर्यजनक है। पेड़ों पर तो सिर्फ चीते रहा करते हैं। टांगानिका के लेक मनियारा जिले में पाये जानेवाले शेरों की एक जाति ने अपना विकास करने के लिए ऊपर उठने का संकल्प किया। (उस इलाके में यह जनश्रुति प्रचलित है) और शेर पेड़ों पर चढ़ने लगे–ऊपर और ऊपर। मगर शेर पेड़ों पर सिर्फ आमोद और आराम के लिए ही रहते हैं, शिकार नीचे ही करते हैं।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जर्मन कहानी :

मांझी

स्टेफान लाकनर

ऐ.....हो ..... ! ऐ.....हो ! यह पुकार फिर्मिन की जवानी के दिनों में अक्सर सुनाई देती थी। यह पुकार मांझी के लिए होती थी कि वह आये और यात्रियों को ठंडे और नीले जलवाली नदी के उस पार पहुंचाये।

पहले ये पुकारें फिर्मिन के पिता के लिए उठा करती थीं। इलो नदी पर वही एक-मात्र मांझी था। बड़ा अहम आदमी था वह, उसके बगैर कोई फलों का टोकरा, कोई जानवर या कोई नयी-नवेली बहू एक तट से दूसरे तट पर नहीं पहुंच सकती थी; रिश्ते-संबंधी एक दूसरे से नहीं मिल सकते थे; विचारों का विनिमय नहीं हो सकता था। फिर्मिन का पिता पक्का कर्तव्यपालक मांझी रहा था। एक बार, चट्टान से टकरा-कर नाव के उलट जाने से उसकी रीढ़ की हड्डी टूट गयी और वह पूरे एक साल तक असहाय होकर अपनी झोंपड़ी में पड़ा रहा। तब फिर्मिन उस प्रदेश का सबसे महत्वपूर्ण आदमी बन गया। अब जो भी 'ऐ.....हो .....!' की हांक लगाता था, वह जानता था कि नौजवान फिर्मिन नाव लेकर जरूर आयेगा, चाहे ओले पड़ रहे हों, चाहे धूप खिली हो, चाहे सुबह हो या आधी रात हो।

मगर यह सब तभी तक रहा, जब तक इलो नदी पर पुल नहीं बन गया। पुल तैयार होते ही फिर्मिन का महत्व समाप्त हो गया।

अब फिर्मिन अपनी झोंपड़ी के सामने निठल्ला बैठा रहता और पुल पर से दनदनाते हुए निकलनेवाले यात्रियों और वाहनों को देखा करता। यह यातायात उसे बिलकुल अर्थहीन प्रतीत होता था। जब उसे पैसे की जरूरत होती, तो वह अपनी नाव में माल लादकर नदी के ऊपर या नीचे जहां भी पहुंचाना हो पहुंचा आता था। कभी वह अनमनेपन से मछलियां पकड़ने लगता था। किसी भी काम से उसे संतोष न होता था। मांझी के रूप में ही वह मजे में रहा था और उसी रूप में उसे दुनिया दुरुस्त लगती थी। क्रोधपूर्ण नेत्रों से वह पुल को देखा करता था, जिसने उसे अनावश्यक बना डाला था।

निठल्ले बैठे बेकार की बातें सोचना उसके अनुकूल नहीं पड़ा। उसकी दाढ़ी बढ़ गयी थी और सिर के बाल भी बढ़ गये। उसका कोट फट गया और उसके मन में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बेकार के विचार चक्कर काटने लगे।

रात को जब हवा भांय-भांय बह रही थी, उसने सुना कोई 'ऐ..... हो.....' की हांक लगा रहा है। कहीं यह सपना तो नहीं था? तीर की तरह वह बिस्तर में से निकला और झोंपड़ी के दरवाजे पर जा पहुंचा। नदी और जंगल पर हल्की-हल्की चांदनी झिलमिला रही थी। "बचाओ!" किसी स्त्री की आवाज सुनाई दे रही थी—"मुझे बचाओ।"

"लो मैं आया....." नदी-गर्जन को दबाते हुए वह चिल्लाया और जंजीर खोल-कर नाव को धार की ओर धकेल दिया।

नदी के बीच रेती के एक टापू पर भीगी, कांपती और ठंड से जमकर नीली पड़ी हुई एक लड़की को उसने देखा। उसने युवती को अपना कोट ओढ़ाया और उसे ले जाकर नाव में बैठा दिया। उसने पूछा—"तू किस किनारे जाना चाहती है?" मगर वह इस हालत में नहीं थी कि जवाब दे सके। सो वह उसे अपनी झोंपड़ी में ले आया और उसने अलाव जलाया। धीरे-धीरे लड़की के शरीर में गर्मी आयी और उसका भय दूर हुआ। फिर्मिन ने उसे प्याले में शराब ढालकर दी और लड़की अपनी दास्तान सुनाने लगी। उसके बाप ने उसे घर में बंद कर दिया था, क्योंकि पड़ोस के नौजवान लड़के को लेकर घर में झगड़ा हो गया था। इस पर वह खिड़की में से हहराती नदी में कूद पड़ी, क्योंकि वह माता-पिता को जताना चाहती थी कि उन्हें उसे इस तरह क्रूरतापूर्वक बंद करने का कोई अधिकार नहीं है।

"सवेरे मैं तुझे पड़ोसी के लड़के के पास पहुंचा सकता हूं।" फिर्मिन ने कहा। मगर लड़की ने फीकी मुस्कान के साथ इन्कार में सिर हिला दिया। "तो शायद तू अपने मां-बाप के पास वापस जाना चाहती है।" दूसरी दफा इन्कार में सिर हिलाते-हिलाते लड़की सो गयी।

सूर्योदय के पहले ही फिर्मिन ने नदी के किनारे जाकर हजामत की, हाथ-मुंह धोया, घर लौटकर अपने कोट में टांके लगाये, उसे ब्रश से साफ किया और एक मछली तली। यह उसे एक चमत्कार-सा लग रहा था कि एक इतना सुकुमार सुंदर जीव झोंपड़ी में सोया पड़ा था। लेनोर को भी इस बात की खुशी थी कि कोई उसकी देखभाल करे; उसे लाड़-प्यार करके बिगाड़े। सो वह उसके पास ही रही।

लेनोर को इलो नदी प्यारी लगती थी, मगर वह उससे खौफ भी खाती थी। नदी के साथ भूत न सही, इतिहास तो जुड़ा ही हुआ था। जाने कितनी सेनाएं नदी के ऊपर इस ओर से उस ओर और उस ओर से इस ओर आयी-गयी होंगी, उन्होंने कभी इस किनारे को, तो कभी उस किनारे को जीता और उजाड़ा होगा और नदी के जंगलों और दलदलों में डूबकर इतिहास के तख्ते पर से गायब हो गयी होंगी। दासता और सीमित स्वतंत्रता सागर के ज्वार-भाटे की तरह आती-जाती रही।

आज भी यदि कोई ध्यान लगाकर सुने,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

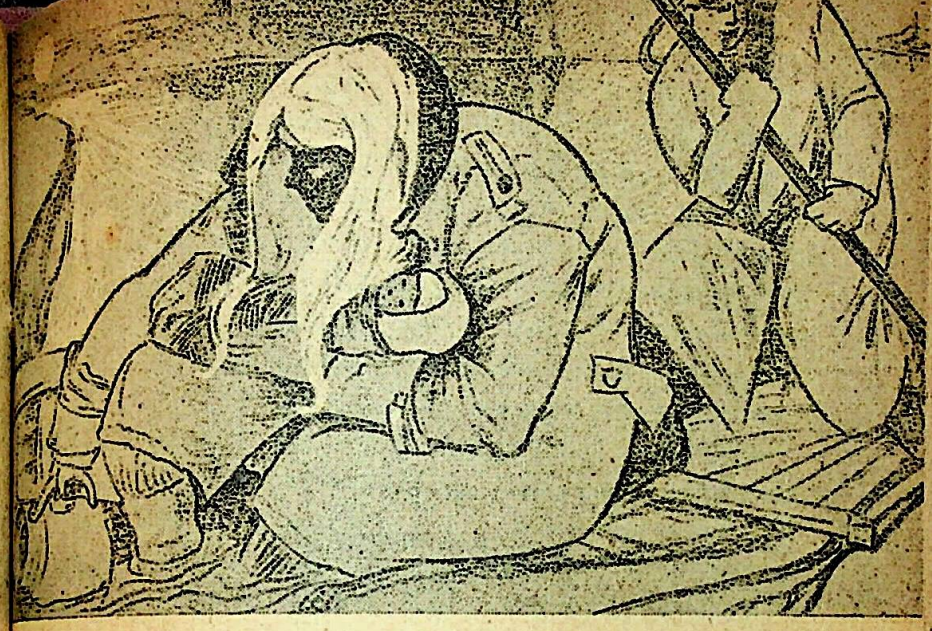

तो नदी की कलकल में और जंगल की सरसराहट में प्राचीन रणसिंहों, बाणों, तोप के गोलों और घायलों की आवाजें सुनाई दे सकती थीं। कभी इलो दो शक्तिशाली राज्यों के बीच की सीमा बनी थी, फिर वह दो प्रांतों के बीच सीमा रही और अब नक्शे पर लाल बिंदुओं की रेखा-भर रह गयी थी, जो खोये हुए प्रदेश, बासी दावों और राख के नीचे सुलगते हुए द्वेष का संकेत-मात्र थी। सामने के किनारे को स्वतंत्र करने के लिए वहानों की कमी नहीं रही। सेनाएं और सेनापति दूसरी ओर पहुंच भी जाते, मगर उससे कभी कोई समस्या हल नहीं हुई।

मृदु स्वभाव की लेनोर कभी ठीक-ठीक नहीं जान सकी कि उसे इलो नदी से डर क्यों लगता था। भय का कुछ कारण यह था कि उसका अंतर्मन जानता था कि नदी कई बार आदमी के खून से लाल हो चुकी थी। जब वह फिर्मिन से शादी करने को सहमत हो गयी, उसके बाद वह अक्सर कहा करती—"चलो हम इलो से कहीं दूर चले जायें। यहां तो बड़ी मायूसी—बड़ी सीलन लगती है।"

"नाव और झोंपड़ी—बस यही तो मेरी संपत्ति है। इन्हें मैं छोड़ नहीं सकता।"

"मगर अब तो यहां मांझी की जरूरत नहीं रही।"

"शायद.....कभी..... किसी दिन....." वह बुदबुदाया।

"तुम तो निरे शेख चिल्ली हो। क्या तुम समझते हो कि पुल टूट जायेगा? अच्छा, जाने दो, जहां तुम वहां मैं। मुझे और कुछ नहीं चाहिये।" उसने फिर्मिन को चूम लिया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शादी में लेनोर के मां-बाप ने भरपूर आशीर्वाद दिये। फिर्मिन ने झोंपड़ी की छत की मरम्मत की। झोंपड़ी के आस-पास की थोड़ी-सी जगह साफ करके बाड़ लगा दी। इसमें लेनोर शाक-माजी और फूल उगाने लगी। मुर्गियां और एक बकरी भी आ गयीं। फिर्मिन अब ज्यादा समय मछलियां पकड़ने में लगाता। अपने सौभाग्य में अब उन्हें केवल बच्चे की ही कमी महसूस होती थी।

लेनोर अपने अधीर पति को आश्वासन देती—"थोड़ा सब्र रखो। बच्चा भी हो जायेगा।"

झोंपड़ी के पीछे घना, डरावना जंगल था। सदियों से वह लुटेरों के छिपने का स्थान था। जब-तब सरकारें डाकुओं के सफाये के लिए जंगल पर चढ़ाई करतीं। डाकुओं को खत्म करना असंभव था। कभी-कभी राजनीतिक भगोड़े भी वहां आ छिपते थे। इन्हें भी कुचलने की कोशिश की जाती थी। फिर्मिन को याद था कि उसके बचपन में लुटेरों के नाश का भारी प्रयत्न किया गया था। उस समय के राजा आल्विन ने जंगल को घेर लिया था और उसे रीछ की खाल की तरह झंझोड़ डाला था। कम-से-कम फिर्मिन का तो यही खयाल था। मगर रीछ की खाल को चाहे जितनी जोर से झटकें, उसमें कीड़े बने ही रहते हैं। इस साल पतझड़ में सरकार ने निश्चय किया कि इन रक्त पिपासुओं का अंत ही कर डालना है।

मार्शल सिक्स्टीन को भरपूर सैनिक धन और अधिकार देकर भेजा गया। उसने जंगल का चप्पा-चप्पा छान डाला। हफ्तों तक लेनोर और फिर्मिन जंगल की गहराइयों में गूंजती गोलियों की आवाजें सुनते रहे। एक आंधी-तूफान वाली शाम को जनूनी आंखोंवाले और तरह-तरह के हथियारों से लैस पांच आदमी झोंपड़ी पर आ धमके और दरवाजा पीटने लगे। उन्होंने फिर्मिन और लेनोर को एक कोने में धकेल दिया और छिपे हथियारों के लिए झोंपड़ी छान डाली। हथियारों के बजाय शराब उनके हाथ लगी। उनका सरदार बोला—"तुम्हें हमसे डरने की जरूरत नहीं। हम जो कहें, सो करते जाओ। मैं इनका सरदार हूं। मेरा नाम हास्सो है। तुमने मेरे बारे में जरूर सुना होगा।"

"क्या डाकुओं का सरदार हास्सो?" फिर्मिन ने भोलेपन से उनसे पूछा। सुनकर वे लोग हंस पड़े।

"मैं राजनेता हूं," हास्सो ने गंभीरता से कहा—"इतिहास ने मुझे एक सीधा-सादा काम सौंपा है। मैं इलो नदी के दायें और बायें किनारे को एक ही राज्य में मिला देना चाहता हूं।"

फिर्मिन अविश्वास से बुदबुदाया—"हम तो सुनते आये हैं कि तुम लोग डाकू हो।"

"हम अपने न्यायपूर्ण लक्ष्य के लिए धन और हथियार इकट्ठे करते हैं। यह क्या कोई डाका है? हम तुझसे इतना ही चाहते हैं कि तू हमें पार पहुंचा दे।"

"मैंने तो अरसे से मांझी का काम छोड़ रखा है। वह रहा पुल।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"पुल पर तो मार्शल सिक्स्टीन के डाकुओं का पहरा है। हम उधर नहीं जा सकते। जैसे ही अंधेरा होगा, हम तेरी नाव में इलो को पार करेंगे। समझा ?"

"ठीक है।" फिर्मिन विचार करते हुए बोला और उसने इशारे से लेनोर को शराब की नयी बोतल लाने को कहा।

हास्सो के नौजवान साथियों ने बड़े व्यंग्य और घृणा के साथ इसका वर्णन किया कि जंगल में मार्शल सिक्स्टीन किस प्रकार शांति स्थापित कर रहा है। उसके सैनिकों ने राह में पड़नेवाली तमाम झोंपड़ियों को तोड़कर जला दिया है, स्त्रियों की इज्जत लूटी है और लोगों पर जुल्म किये हैं। फिर्मिन ने अपनी राय दी—"कभी-कभी तो बीमारी से बदतर होती है।"

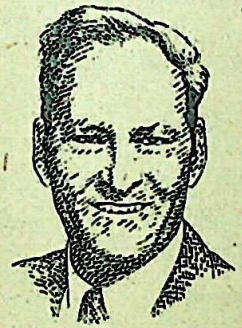

स्टेफान लाकनर

एक नौजवान बोल उठा—"बीमारी कैसी ? देख दोस्त, अगर तू हमारी मदद नहीं करनेवाला है, तो साफ-साफ कह दे। तब हम तेरी नाव रास्ते में कर लें।"

हास्सो सुलह-समझौता कराने के इरादे से बात काटते हुए बोला—"हमें एक मांझी की जरूरत है। इन चट्टानों और प्रवाहों में हम खुद नाव नहीं चला सकते और वह भी इस अंधेरे में। मांझी, तुझे मालूम है कि दुनिया के इतिहास की कितनी बड़ी जिम्मेदारी तुझ पर अचानक आ पड़ी है ?"

"हम बिलकुल मामूली आदमी हैं।" फिर्मिन ने कहा—"दुनिया के इतिहास से हमें कुछ नहीं लेना-देना है।"

इस पर दूसरा नौजवान अपनी बंदूक संभालते हुए कहने लगा—"दुनिया की शोहरत तेरे घर के दरवाजे पर आयी है और तू हिचकिचा रहा है ?"

लेनोर अपने पति के नजदीक आकर खड़ी हो गयी। बोली—"इसका इरादा कोई बुरा नहीं है। इसकी तो ऐसे ही रूखा बोलने की आदत है। अब तक यह मार्शल सिक्स्टीन को गालियां देता रहा है। हमें तो सचमुच इस बात की बड़ी खुशी है कि आप लोग क्रांति करनेवाले हैं।"

फिर्मिन समझ न सका कि लेनोर उसे बचाने की कोशिश कर रही थी या सचमुच उनसे सहमत थी। कुशल मच्छीमार के नाते उसमें यह ताड़ने की शक्ति थी कि मछली कांटे में फंसने के लिए यों ही आती रही है या कोई रहस्यमय शक्ति उसे खींचकर ला रही है। उसने बेचैनी के साथ देखा कि लेनोर सरदार को खाना परोस रही है और उसके निकट काफी बेतकल्लुफी और चैन अनुभव करती है।

"अब हमें चल देना चाहिये। उसने सुझाव दिया—"थोड़ी ही देर में चांद निकल आयेगा।" हास्सो उछल पड़ा। बोला—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"मांझी ठीक कहता है।" सबके सब झोंपड़ी से निकल आये। नाव में चढ़ते वक्त लेनोर विदा लेना चाहती थी कि हास्सो ने फैसला किया—"यह लड़की भी हमारे साथ आयेगी।"

"यह तो मेरी औरत है।" फिर्मिन ने प्रतिवाद किया।

हास्सो हंस पड़ा—"हम उसे सिर्फ उस पार तक ले जा रहे हैं। तेरी औरत किश्ती में साथ रहेगी, तो तुझे नाव उलटने की खुराफात न सूझेगी।" लेनोर फुर्ती से नाव में कूद पड़ी।

मांझी भंवरों में से होकर उस अंधरे में नाव को आगे बढ़ाने लगा।

उस पार हास्सो के साथी घोड़े लिये तैयार खड़े थे। बड़ी उमंग के साथ उन्होंने एक दूसरे का स्वागत किया। हास्सो घोड़े पर सवार हो गया और बोला—"अब हम दुनिया को दिखा देंगे कि क्या होनवाला है।

उसकी मंगल कामना करते हुए लेनोर ने उसकी ओर हाथ बढ़ाया। हास्सो ने उसे पकड़ा और खींचकर अपने घोड़े पर बैठा लिया, घोड़े को एड़ लगायी और अंधेरे में गायब हो गया।

फिर्मिन इसके सिवा कर ही क्या सकता था कि उन्हें गालियां देता हुआ किश्ती वापस ले आये। उसकी निरर्थक गालियां लौट-लौटकर उसी के कानों में गूंजकर अपने बेतुकेपन का इजहार कर रही थीं। वह अपने दर्द और द्वेष को कड़वी घूंट की तरह पी गया।

मगर दर्द और द्वेष अच्छी खूराक नहीं हैं। सो वह क्षीण होने लगा। वह बावला-सा हो गया। उसकी दाढ़ी और सिर के बाल फिर से बढ़ने लगे। जब भी वह अपनी झोंपड़ी में कदम रखता, उसे लेनोर की अनुपस्थिति की टीस अनुभव होती। छत चू रही थी, बिस्तर की चादरें मैली होकर सड़ने लगी थीं। उसके कपड़े तार-तार हो गये थे। मगर अब इन चीजों का महत्व ही क्या था।

सिर्फ एक ही चीज को वह हमेशा व्यवस्थित रखता था—वह थी उसकी नाव। कोई इसका कारण पूछता, तो कहता—"हास्सो के लिए।"

"हास्सो के लिए? क्या मतलब? हास्सो तो बहुत दूर चला गया है।"

फिर्मिन कठोरता से मुस्कराता और अपने आपसे कहता—"मुझे मालूम है हास्सो वापस आयेगा। एक दिन वह सामने के तट पर आकर खड़ा होगा और मुझसे प्रार्थना करेगा कि भैया, मुझे पार कर दो और मैं उसे पार ले आऊंगा।"

लोग कहते थे कि मानसिक आघात ने फिर्मिन को विक्षिप्त बना दिया है। और उस समय हास्सो के पीछे लौटने की संभावना न थी, उसका तो सितारा खूब बुलंदी पर था। उसने जंगलों में क्रांति की आग लगायी थी, वह अब गांवों, शहरों और सारे प्रदेश में फैल चुकी थी। उसमें काफी संगठन शक्ति थी, उसकी अधिकार-लिप्सा अदम्य थी।

कभी-कभी जब अखबारों में हास्सो के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

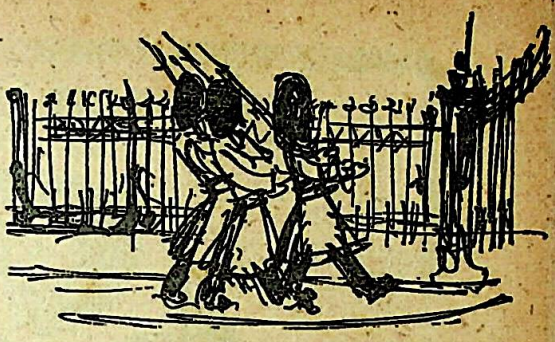

नामहीन सरदार की माशूका की शोहरत बढ़ती गयी। अनघड़ काष्ठ-चित्रों में वह बंदूक कंधे पर रखे दिखायी जाती थी। उसके और सरदार के बारे में लोकगीत गाये जाने लगे। जब फिर्मिन गांव की सराय में इन बेढंगे गीतों को सुनता, तो अपने कान बंद कर लेता।

जब दो साल बीत गये और हास्सो नदी के उस पार के प्रदेश पर अपनी सत्ता जमाने में लगभग सफल हो गया था, एकाएक परिस्थिति बदल गयी। जनरल दाइवे ने सरकार का तख्ता उलट दिया और मार्शल सिक्स्टीन से संधि कर ली और क्रांतिकारियों के विरुद्ध उससे मदद मांगी। मार्शल सिक्स्टीन बड़ी शान से अपने सैनिकों को इलो नदी के पुल पर से कूच करवाता हुआ ले गया। जो देशभक्त दोनों तट-प्रदेशों के दोनों राज्यों को एक हुआ देखना चाहते थे, उन्होंने सैनिक सरकार का विरोध छोड़ दिया और खुले दिल से अपने इस तारनहार का भव्य स्वागत कया।

सिक्स्टीन के चुनिंदा सैनिकों की अधिकांश सेना इलो नदी पार कर चुकी थी कि हास्सो के अनुयायी पुल उड़ा देने में सफल

चित्र छपते थे, तो पृष्ठभूमि में एक पतली-दुबली लड़की क्रांतिकारियों की वर्दी में कंधे पर बंदूक रखे, उलझे बालों पर बेढ़ब-सी टोपी लगाये दिखाई देती थी। किसी को उसका नाम मालूम न था। अखबारों में वह 'कटरे की माशूका' के नाम से प्रसिद्ध थी। उस बड़े आदमी की छाया में खड़ी घुंघली आकृति पर जब कभी फिर्मिन की नजर पड़ती, तो उसके दिल पर तेज छुरी-सी चल जाती थी।

वह सोचता—"एक-आध चिट्ठी तो वह मुझे लिख ही सकती थी, या क्या मेरे लिए उसके हृदय में अब कुछ भी भावना नहीं रह गयी है? अगर हास्सो उसे जबर्दस्ती अपने साथ ले गया था, तो वह जरूर किसी भी तरह भागकर आ ही सकती थी। नहीं, वह उसे छोड़ना नहीं चाहती। धीरे-धीरे फिर्मिन के मन में बेवफाई के लिए, इस बेवफा भगोड़िन के लिए ऐसा द्वेष भर गया कि उसने अपनी प्रतिशोध योजना में उससे बदला लेना भी सम्मिलित कर लिया। अपनी कल्पनाओं में वह सुनता कि लेनोर हांक लगा रही है "ऐ.....हो.....मुझे पार कर दो और माफ कर दो।" मगर उसने उसे कभी माफ न किया। वह हास्सो और लेनोर को पानी में धकेल देता अथवा जानबूझकर नाव को चट्टानों में भिड़ा देता। और तीनों जने नदी में डूब मरते। प्रतिशोध के ये विचार इतने उग्र होते थे कि वह जब इन दिवा-स्वप्नों से जागता, तो चकित होकर अपने कमरे में चारों ओर नजर डालता।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खांसी पर पूर्ण नियंत्रण के लिए

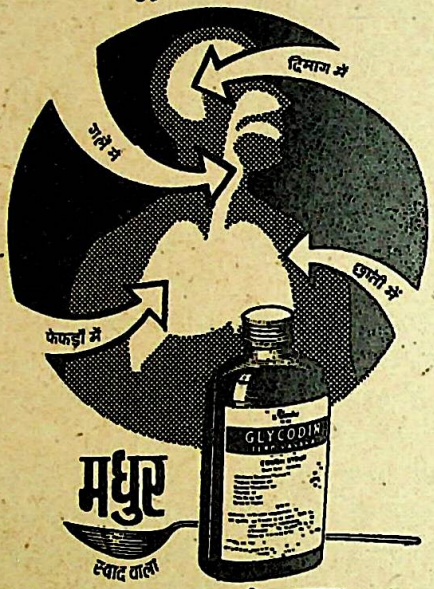

ग्लायकोडिन कर्प वसाका

ग्लायकोडिन का औषधि विज्ञान द्वारा स्वीकृत फार्मूला सभी पीड़ित मार्गों से खांसी को दूर भगाता है! यह है ग्लायकोडिन की विविध और असरकारक कार्यशक्ति ● दिमाग में–ग्लायकोडिन खांसी के प्रकोप पर ठीक समय पर बिना हानि और प्रभावकारी तरीके से नियंत्रण रखता है। ● गले में–ग्लायकोडिन जकड़न को दूर करता है, खराश और दर्द से आराम पहुंचाता है और गले के नाजुक भागों को कीटाणुओं से रक्षा करता है। ● छाती में–ग्लायकोडिन बन्द श्वास नली को खोलता है, छाती की जकड़न को दूर करता है और आप आसानी से श्वास लेने लगते हैं। ● फेफड़ों में– ग्लायकोडिन जकड़े हुए कफ और खराब द्रव को निकालता है, भीतर जमे बलगम को साफ करता है और जकड़न को दूर करता है। ग्लायकोडीन हमेशा अपने पास रखिये

ग्लायकोडिन– ३० साल से अधिक समय से खांसी की सबसे अधिक बिकने वाली घरेलू औषधि

४ साइज़ों में मिलता है * अलेम्बिक का उत्पादन Alembic

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
everest/363k/ACW hn

हो गये। पुल के आधार-स्तंभ टूटकर चट्टानों पर गिर पड़े, लोहे के शहतीर गिरकर पानी में डूब गये। फिर्मिन निर्विकार भाव से इस विनाश को देखता रहा। वह सोच रहा था, मैं जानता ही था। अब लोगों को मेरी जरूरत पड़ेगी।

मगर पुल जरा विलंब से टूटा, जिससे निक्स्टीन और दाइवे की फौजों का मिलन रोका नहीं जा सका। फलतः हास्सो के क्रांतिकारी घेर लिये गये और कुचल दिये गये। इस दुर्गति के बाद हास्सो का क्या हुआ, किसी को मालूम नहीं।

कई दिन तक मांझी फिर्मिन अपनी नाव में बड़े-बड़े अफसरों और अधिकारियों को पार उतारता रहा। एक बार फिर वह इलोट का अत्यावश्यक आदमी बन गया। रात को बड़ी देर से वह थका-हारा घर लौटता और बिस्तर पर लुढ़क जाता।

एक बार आधी रात को जैसे वह कोई आवाज सुनकर उठ बैठा। ऐसा लगा कि वह कहीं किसी रात्रिचर पक्षी की आवाज थी? "ऐ.....हो.....पार पहुंचाओ" साफ-साफ आवाज गूंज उठी। वह अपनी झोंपड़ी के बाहर निकला। चांदनी में उसने किसी को उस पार से हाथ का इशारा करते देखा, नाव खोलते वक्त उसने बड़ी राहत से सोचा। आखिरकार, दूसरे किनारे पहुंचा। उसने नाव के फर्श में से एक खूंटी खींच ली। पानी अंदर आने लगा और धीरे-धीरे नाव को भरने लगा।

परले पार उसने हास्सो के लिए नजर दौड़ायी; परंतु वहां कांपती अकेली लेनोर खड़ी थी। सर्दी से ठिठुरती छोटी-सी आकृति! उसके सिर के बाल खून से सने थे। उसके हाथों में एक छोटा बच्चा था।

"हास्सो कहां है?" मांझी ने निर्विकार भाव से पूछा।

"वह वहां नहीं है।"

फिर्मिन अपनी बेताबी को दबा न सका और तट पर कूद पड़ा। मैं हास्सो को ढूंढूगा, मुझे उससे बदला लेना है।"

"तो तुम्हें परलोक जाना पड़ेगा।" लेनोर ने शांत भाव से जवाब दिया—"हास्सो मर चुका है। क्या तुम मुझे और मेरे बच्चे को पार पहुंचा दोगे?"

फिर्मिन ने सिर झुका लिया। उसे नाव में बिठाकर उसने नाव को धक्का लगाया। नाव में पानी में पैर पड़ते ही वह घबरा उठी और चिल्लायी—"यहां कितना पानी है? क्या तुम हमें डुबाना चाहते हो?"

फिर्मिन ने नाव के तले में तुरंत डाट लगा दी— "इस पुराने डब्बे में अब पानी घुस जाता है। यह डोल ले और पानी उलीचना शुरू कर दे।"

वह चुपचाप तरंगों के थपेड़ों में नाव खेता रहा। झोंपड़ी के सामने नाव किनारे लगाकर उसने लेनोर को सहारा देकर बाहर खींच लिया। लेनोर जमीन पर उतरकर भी उसका हाथ थामे रही। "पार उतारने के लिए धन्यवाद!" उसने बिलकुल सहज भाव से कहा—"अब शायद मुझे बच्चे के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब! कोलगेट डेंटल क्रीम

सुपर साइज़

खरीद कर ज़्यादा पैसे बचाइये

कोलगेट से सांस की दुर्गंध रोकिये और दंत-क्षय का दिनभर प्रतिकार कीजिये

क्यों कि: एक ही बार दांत साफ़ करने पर कोलगेट डेन्टल क्रीम मुंह में दुर्गंध और दंत-क्षय पैदा करने वाले ८५ प्रतिशत तक रोगाणुओं को दूर कर देता है।

वैज्ञानिक परीक्षणों से यह सिद्ध हो चुका है कि १० में से ७ लोगों के लिए कोलगेट सांस की दुर्गंध को तत्काल खत्म कर देता है, और कोलगेट-विधि से-खाना खाने के तुरंत बाद दांत साफ़ करने पर अब पहले से अधिक लोगों का ...अधिक दंत-क्षय रुक जाता है। दंत-मंजन के सारे इतिहास की यह बेमिसाल घटना है।

इसका पिपरमिंट जैसा स्वाद भी कितना अच्छा है-इसीलिए बच्चे भी नियमित रूप से कोलगेट डेंटल क्रीम से दांत साफ़ करना पसंद करते हैं।

ज़्यादा साफ़ व तरोताज़ा सांस और ज़्यादा सफ़ेद दांतों के लिए... दुनिया में अधिक लोगों को दूसरे टूथपेस्टों के बजाय कोलगेट ही पसंद है।

आप को यदि पाउडर पसंद हो तो कोलगेट टूथ पाउडर से भी ये सभी लाभ मिलेंगे-एक डिब्बा महीनों चलता है।

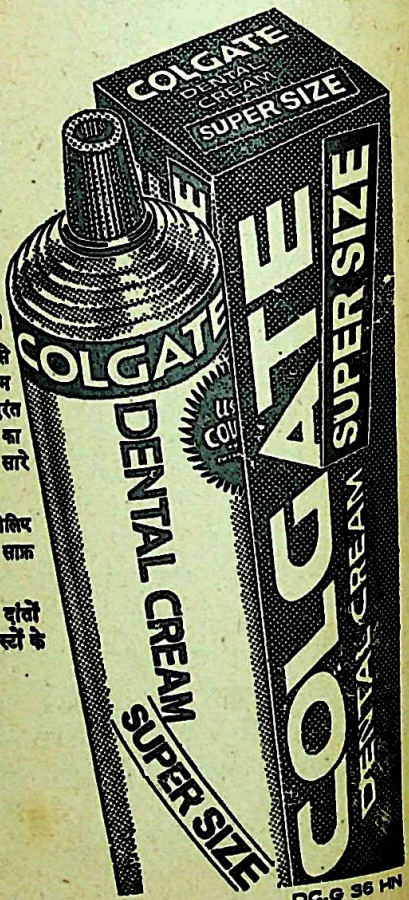

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आप आगे चलना होगा। यह एक लड़का है। अच्छा, अलविदा!" उसने उसका हाथ छोड़ा और छोड़ दिया।

"रात ठंडी है," फिर्मिन थोड़ा ठहरकर बोला–"अगर चाहो तो झोंपड़ी में चलकर आग ताप लो।"

मारे थकान के वह लड़खड़ाती हुई झोंपड़ी में प्रविष्ट हुई। फिर्मिन ने उसे बिस्तर पर सुला दिया। उसने उसे शराब और मछली का एक टुकड़ा दिया। उसने खा-पिया और थोड़ी देर रोयी।

बेचारी, घायल लेनोर! अरे, तो गाल झुलसे हुए हैं। उसके बालों के गुच्छे नोच डाले गये हैं।

अब लेनोर बच्चे को दूध पिलाने लगी, फिर्मिन उसे देखता रहा, कुछ लजाता हुआ, कुछ मुग्ध।

बिस्तर के पास ही एक जगह दिखाते हुए वह बोला–"पलने के लिए यह जगह अच्छी रहेगी।"

"क्या कहा तुमने?" वह नींद को झटकारती हुई सी बोली–"नहीं, हम तुम पर बोझ नहीं बनना चाहते।"

"रहने दो वे सब बातें, सब ठीक है।" फिर्मिन बोला–"मुझे बच्चा चाहिये। मांझियों का वंश खत्म नहीं होना चाहिये। आगे चलकर कभी कोई 'पार लगाओ' की पुकार लगाये, तो कोई तो यह कहनेवाला हो–"हां, मैं पार ले चलता हूं।"

–मूल जर्मन से (अनुवाद : नरेंद्र नायक)

(पृष्ठ १०१ का शेष)

लगा कि मेरी राइफल फिर गरज उठी। एक हाथी लड़खड़ाया और तभी मेरी राइफल से दूसरी गोली छूटी। निशाना अचूक था। दोनों गोलियां उसके माथे में लगी थीं।

अपने आप ही मेरे मुंह से एक सांस निकल गयी और तभी मुझे सामने और दायीं ओर से आनेवाले हाथियों का खयाल आया। जल्द से जल्द उन्हें वहां आ पहुंचना चाहिये था; पर वे रह कहां गये, खुद कुछ ताज्जुब-सा हुआ और मैंने दोनों ओर नजरें दौड़ायीं। चांद की रोशनी में दोनों ही ओर दो भूरे पहाड़-से जमीन पर नजर आ रहे थे।

मैंने अपने माथे से पसीना पोंछा और फिर कोम्बो के पास पहुंच गया। जिंदगी और मौत की वह भयानक लड़ाई खत्म हो चुकी थी। मुझे यकीन था कि झुंड के बचे हुए हाथी आज के बाद फिर कभी बस्ती में उधम मचाने का साहस नहीं करेंगे। एक-एक कर वे अपने ६ साथी खो चुके थे और उनका सातवां जख्मी साथी भी, जिसे वे ६ बहादुर कहीं पीछे छोड़ आये थे, मौत को अधिक समय तक भुलावा नहीं दे सकेगा!

अब तक चारों ओर से प्रसन्नता से चिल्लाते आदिवासियों का आना भी शुरू हो गया था। मैंने उन्हें कोम्बो को सहारा देकर लाने को कहा और खुद अपने कैंप की ओर बढ़ गया। अब जबकि सारा संकट समाप्त हो चुका था, मौत पराजित होकर मुंह छिपा चुकी थी, एक अजीब-सी थकान मुझ पर हावी होती जा रही थी।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जसमा ओड़न

गुजरात के जनमानस-मंदिर में
बसी एक लोकनायिका की गाथा

विमलशंकर शास्त्री

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सदियों पुरानी बात है। महाराज सिद्धराज तब गुजरात के अधिपति थे और उनके सुशासन के कारण गुजरात स्वर्ग से प्रतिस्पर्धा करता था। परंतु एक वर्ष बहुत भयंकर अकाल पड़ा। धरती के स्वामी और प्रजाओं के राजा मेघराज न जाने क्यों गुजरात से रूठ गये, आषाढ़ और श्रावण सूखे निकल गये। कृषक मेघराज को मनाने के लिए देव-देवियों की मनौती मनाने लगे। यज्ञ-याग रचे जाने लगे। परंतु परिणाम-शून्य। वर्षा नहीं ही हुई।

घास से पशु-पक्षी छटपटाने लगे। शस्य-श्यामला धरती सूखकर श्मशान-सी बन गयी। चारों ओर 'पानी-पानी' की पुकार सुनाई देती थी। लोगों की आंख रात-दिन आकाश पर लगी रहती थी कि शायद कोई बादल मेघ उनके उद्धार के लिए आ निकले। किंतु सूने आकाश को ताकते-ताकते उनकी आंखें पथराने लगीं।

लोग नाना प्रकार के तर्क-वितर्क करते। किसी का कहना था कि धरती पर पाप बढ़ गया है, वर्षा हो भी तो कैसे? दूसरे कहते, धरती पर से दया का नामोनिशान मिट गया है, फिर कैसे वर्षा हो। कुछ का यह मंतव्य था कि सृष्टि में चारों ओर असत्य का साम्राज्य छा गया है, ऐसी स्थिति में भला और क्या होगा!

पेड़ों के पत्ते सूखकर झड़ गये। घास सूखकर धरती से इस तरह चिपक गयी कि उसे खाने के लिए जब पशु मुंह मारते, तो उनके मुंह में धूल भर जाती थी। बुद्धिमानों का कहना सही है कि मेघ, मृत्यु और महंगाई का क्या भरोसा!

अकाल की घोषणा हो गयी। उदार राजा ने राज्य के अन्न-भंडार लुटा दिये। जो कुछ था, सबको दे दिया। जहां से भी हो सकता था, राजा ने अनाज मंगवाया और प्रजा की भूख मिटाने का भरसक प्रयत्न किया। किंतु अंत में उसे हार माननी पड़ी। आकाश के फटने पर क्या उसे पेबंद लगाकर जोड़ा जा सकता है?

राजा सिद्धराज ने इस परिस्थिति पर विचारणा करने के लिए राजसभा बुलायी। मंत्रियों के साथ सरदार-सामंत, धनी नगर-सेठ एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति इस सभा में आमंत्रित किये गये। सबके मुख पर विषाद की गहरी छाया थी और स्वयं राजा की आंखें गीली थीं।

गुजरात की राजधानी पाटण में पानी की स्थायी व्यवस्था करने के लिए सर्वानुमति से यह निश्चय हुआ कि वहां एक विशाल तालाब बनाया जाये। तालाब के चारों ओर भगवान शंकर के एक सहस्र छोटे मंदिर बनवाये जायें। इस सहस्रलिंग तालाब से जलाभाव तो दूर होगा ही, साथ ही धर्म की भी वृद्धि होगी।

यह काम बहुत जल्द किया जाना आवश्यक था और उसके लिए आवश्यकता थी लगन वाले मेहनती मजदूरों की, सो भी दो-चार नहीं, हजारों की संख्या में। वे कहां से लाये जायें?

किसी ने सुझाव दिया—"महाराज! इस

[चित्रकर्म : शिल्पगुरु रविशंकर रावल एवं ठाकोर राणा]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काम के लिए तो राजस्थानी मजदूर अधिक उपयुक्त रहेंगे। उनमें भी यदि मालवा के मजदूर मिल जायें, तो और भी अच्छा। और यदि ये मजदूर ओड़ जाति के हों, तो फिर बेड़ा पार ही समझिये।"

मालवा से हजारों की संख्या में ओड़ जाति के पुरुष और स्त्रियां आ गयीं। खुदाई का सारा सामान जुट गया। पाटण नगर पानी की आशा में नाच उठा।

सहस्रलिंग तालाब की खुदाई का काम बड़ी तेजी से चलने लगा। ओड़ लोग धूप और गर्मी की चिंता किये बिना डटकर परिश्रम कर रहे थे। ओड़ों का नायक त्रिकम मजदूरों से बड़ी कड़ाई से काम लेता था। साथियों को बढ़ावा देकर उनसे कम समय में अधिक-से-अधिक काम लेने में नायक त्रिकम कुशल था। मजदूरों के रहने व खाने-पीने का प्रबंध अच्छा था। इसलिए वे प्रसन्न थे और शक्ति से अधिक काम कर रहे थे। कामचोरी तो उनके स्वभाव में थी ही नहीं। राजा सिद्धराज प्रति-दिन प्रातः-सायं तालाब पर आता और काम की प्रगति देख-देखकर प्रसन्न होता।

ओड़ों का नायक त्रिकम यदि साथी मजदूरों पर रौब जमाता था, उनसे ज्यादा काम लेता था, तो स्वयं भी खूब काम करता था। अपनी पत्नी जसमा से भी, जो कि ओड़ जाति में अप्सरा मानी जाती थी, वह खूब काम कराता। नायक की पत्नी होते हुए भी वह अन्य मजदूर स्त्रियों के साथ टोकरा सिर पर उठाकर मिट्टी उठाने-फेंकने का काम करती थी। उसका उत्साह और फुर्ती देखने योग्य थी। दूसरी मजदूर स्त्रियां अधिक काम करने पर थकान से मुरझा जाती थीं, परंतु जसमा के रूप में परिश्रम से निखार आ जाता था।

जसमा की उम्र अठारह के लगभग थी। यौवन उसके अंग-प्रत्यंग पर छाया हुआ था। वर्ण-कांति, रूप-लावण्य और यौवन की वह त्रिवेणी थी। जैसे सोने में सुगंध ही नहीं, मिठास भी मिल गयी हो।

जसमा के एक बच्चा था। तालाब के किनारे किसी पेड़ की डाली पर झूला बांधकर वह बच्चे को उसमें सुला देती थी। आते-जाते उस पर एक नजर डाल देती। बच्चा रो उठे, तो उसे दूध पिलाकर झूला हिला देती और फिर अपने काम में लग जाती। यह उसका दैनिक कार्यक्रम था।

* * *

आज राजा सिद्धराज बड़े सवेरे ही तालाब पर आ गया था। ओड़ तेजी से खुदाई का काम कर रहे थे। कुछ लोग फावड़े से टोकरों में मिट्टी भर रहे थे और पंक्ति में खड़ी ओड़नों के सिर पर रख रहे थे। और ओड़ने गाती-हंसती, नाचती-कूदती, बतियाती निर्दिष्ट स्थान पर मिट्टी फेंकने जातीं और खाली टोकरे लिये लौटतीं।

आज राजा सिद्धराज पूरे दिन वहीं रहा। उसे शायद प्रतीत हुआ कि उसकी उपस्थिति से काम में तेजी आती है। मजदूरों में उत्साह आता है।

सांझ हो गयी। मजदूरों के छूटने का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समय हो गया था। राजा यों ही चहलकदमी कर रहा था। सभी मजदूर और मज़दूरिनें राजा के सामने से गुजरीं। अचानक राजा की आंखें नायक त्रिकम की रूपवती पत्नी जसमा पर गड़ गयीं। चंद्रमुखी जसमा को देखते ही राजा के मुंह से अपने आप ये शब्द निकल पड़े – "विधाता ने यह रूप, यह यौवन मिट्टी खोदने के लिए नहीं सिरजा है। आम्रकुंज में रहने योग्य कोयल क्या बबूल की डाल में उलझी रहेगी।"

जसमा

[चित्र : ठाकोर राणा]

राजा विचार-परंपरा में ऐसा खो गया कि उसे समय का ध्यान ही न रहा। जब उसे होश आया, तो चारों ओर अंधेरा छा चुका था। तालाब पर कोई नहीं था, उसके अंगरक्षकों के अतिरिक्त सभी मजदूर जा चुके थे। राजा भी उदास मन से महल की ओर चल पड़ा। उसके हृदय और मस्तिष्क ने गुप्त मंत्रणा करके यह निर्णय कर लिया था कि जसमा को एक-न-एक दिन रानी अवश्य बनाना है।

दूसरे दिन जब जसमा सिर पर मिट्टी की टोकरी लिये अकेली निकली, एक पेड़ की ओट में छिपे राजा ने उसे इशारा किया। परंतु परपुरुष की परछाईं से भी दूर भागने-वाली जसमा उसे अनदेखा करके वहां से निकल गयी। जितनी भी बार जसमा वहां से गुजरी, राजा ने इशारा किया। वह जसमा को अपने पास बुलाना चाहता था। और गुजरात की महारानी के पद का प्रलोभन देना चाहता था।

जसमा राजा की भावना को ताड़ गयी। यदि वह राजा न होकर कोई साधारण मनुष्य होता, तो शायद जसमा अपनी हाथीदांत की चूड़ियों से उसका सिर फोड़ डालती। शाम तक राजा की इशारेबाजी चलती रही और जसमा उसकी उपेक्षा करके अपना काम करती रही।

दिन छिपने पर राजा भारी हृदय से राजमहल में लौट गया। उसकी संपूर्ण चेतना पर जसमा छा गयी थी। रात साल-भर की हो गयी। राजा बिछौने में पड़ा करवटें बदलता रहा। नींद ने तो मानो उससे तलाक ले लिया था।

ब्राह्म मुहूर्त में राजमहल में घंटारव हुआ और वेदघोष और स्तुतिपाठ आरंभ हो गया। राजा उठ बैठा। नित्यकर्म से निवृत्त होकर श्रमण के बहाने सीधा उस ओर चल पड़ा, जहां ओड़ों का पड़ाव था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रात न आकाश से अभी अपना डेरा पूरी तरह नहीं उठाया था। सूर्योदय तो क्या अरुणोदय भी अभी नहीं हुआ था। खेत मानो अंधेरे के काले कंबल ओढ़कर सोये पड़े थे। राजा के पग तेजी से आगे बढ़ रहे थे।

धीरे-धीरे अरुणोदय हुआ। रात बिखरे हुए तारों को बटोरकर अपनी टोकरी में डालकर चलने को उद्यत थी। ठंडी हवा चल रही थी। उषा ने अपनी मांग में ओस-कणों की मोती-लड़ी पिरो ली थी। सिद्धराज का मन प्रफुल्लित एवं पुलकित था। उसके पग तेजी से बढ़ रहे थे ओड़ों के पड़ाव की ओर।

सूर्योदय हुआ। छोटे-मोटे पेड़, तालाब का किनारा, भूख से कृश गायों को हांकते हुए ग्वाले, लंबे-चौड़े वीरान खेत, सब स्पष्ट दिखाई देने लगे। दूर स्थित वे छोटी-छोटी पहाड़ियां दिखाई देने लगीं, जो पहले हरियाली की राशियां प्रतीत हुआ करती थीं, किंतु अब अपनी नग्नता पर लज्जित-सी थीं। मजदूर काम पर जाने लगे थे। राजा की आंखें उनमें जसमा को खोज रही थीं। जसमा उनमें थी ही, सो राजा की खोजी आंखों से भला वह कैसे बची रहती। परंतु राजा उसे केवल देख ही पाया, उससे बोल नहीं पाया; क्योंकि जसमा अकेली नहीं थी, अन्य मजदूरिनों के साथ थी।

रूपलुब्ध राजा सिद्धराज अपनी पद-मर्यादा भूलकर मजदूरिनियों के पीछे-पीछे चल पड़ा और जिस राह वे मिट्टी फेंकने के लिए जाती थीं, उसी राह एक बड़ी शिला पर जा बैठा और प्रतीक्षा करने लगा।

उसकी प्रतीक्षा व्यर्थ नहीं गयी। कुछ ही देर में अन्य स्त्रियों की तरह जसमा भी सिर पर मिट्टी की टोकरी उठाये वहां से गुजरी। राजा ने ध्यान से उसे देखा। कई बार ऐसा हुआ; परंतु राजा को जसमा से मिलने और बात करने का अवसर नहीं मिला। सारा दिन यों ही बीत गया।

तब से राजा प्रतिदिन मुंह-अंधेरे वहां आ जाता और दिन छिपने तक बैठा रहता। इस तरह कई दिन बीत गये; किंतु जसमा से मिलने का मौका न मिला।

मजदूरों का नायक, जसमा का पति त्रिकम बड़ा भोला आदमी था। उसे पता था कि राजा सिद्धराज सवेरे ही तालाब पर आ जाता है और अंधेरा होने पर ही महल को लौटता है। वह यह समझता था कि काम तेजी से कराने के लिए ही वह आता है। उसे इस बात का तनिक भी अंदेशा नहीं था कि राजा उसकी पत्नी पर मुग्ध है।

आज राजा यह निश्चय करके आया था कि जसमा के साथ बात करनी ही है। और जहां चाह, वहां राह। जसमा बच्चे को झुला रही थी, राजा वहां पहुंचा और जसमा से पूंछ बैठा—"क्या नाम है तुम्हारा?"

"मेरा नाम जसमा है.....मैं मजदूरों के..... ओड़ों के नायक त्रिकम की पत्नी हूं।" जसमा ने नपा-तुला हुआ उत्तर दिया।

"नायक की पत्नी होकर भी तुम मजदूरी करती हो? तुम्हारा पति बड़ा निर्दय आदमी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है जो तुम जैसी फूल-सी सुकुमार पत्नी से मजदूरी कराता है। तुम्हारा यह रूप क्या सिर्फ़ रोने के लिए है?"

जसमा का उत्तर था—"महाराज, मेरे भाग्य में जो था, वह मुझे मिला है।"

"जसमा!" तुम्हारे चाहने-भर की देर है चाहो तो तुम गुर्जर नरेश की राजरानी बन सकती हो।"

"महाराज! अगर मेरे भाग्य में राजरानी पद बदा होता, तो क्या मैं किसी राजघराने में न जन्म लेती?..... और आप गुजरात के राजा होकर मुझ जैसी एक मजदूर स्त्री पर मुग्ध हो गये हैं! मुझमें आप ऐसी क्या विशेषता देख रहे हैं?"

"जसमा! तुम भाग्य को गलत समझ रही हो। तुम अपने को ही नहीं समझ सकी हो, इसीलिए पूछती हो कि तुममें ऐसा क्या है। खैर, छोड़ो इन बातों को। तुम केवल इतना समझ लो कि गुजरात की महारानी का पद तुम्हारे चरणों में बिछा है। चाहो तो स्वीकार करो।"

"महाराज! जो राज्य आप इस तरह एक मजदूर, अनपढ़, गंवार स्त्री के चरणों में रख देने को तैयार हो गये हैं, उसकी क़ीमत ही क्या! आपके दूसरी किसी स्त्री पर मुग्ध हो जाने पर बड़ी आसानी से यह राज्य उस स्त्री के चरणों में पहुंच सकता है। इस प्रकार का आपका यह स्त्री-मोह कहीं आपकी और आपके राज्य की उन्नति में रोड़ा न बन जाये।"

"जसमा उन्नति-अधोगति की बातें छोड़ो।

राजा सिद्धराज सोलंकी
[रविशंकर रावल के चित्र की
सरल रेखानुकृति]

अपने जीवन की सोचो।"

जसमा ने उत्तर दिया—"अच्छा तो महाराज! यह बताइये कि आपके राजमहल में मेरा स्थान रखैल का होगा या गृहिणी का?"

राजा को आशा बंधी। वह उत्साह से बोला—"हमारा गांधर्व विवाह होगा जसमा! तुम मेरे यहां गृहिणी ही नहीं, धर्मपत्नी बनकर रहोगी। तुम मेरी शकुंतला बनोगी, शकुंतला!"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुबह की तरोताज़गी दिनभर महसूस कीजिए

नहाने के बाद बदन पर पॉन्ड्स ड्रीमफ्लावर टाल्क छिड़क लेने से सुबह की तरोताज़गी का मज़ा दिनभर मिलता रहता है।

पॉन्ड्स ड्रीमफ्लावर टाल्क पसीने को फ़ौरन सोख लेता है...कड़ी गर्मी में भी निरन्तर ठंडक और आराम पहुँचाता है। इसकी भीनी-भीनी महक घण्टों बदन पर छायी रहती है। यह एक ऐसा टाल्कम पाउडर है जो बारहों महीने इस्तेमाल किया जा सकता है।

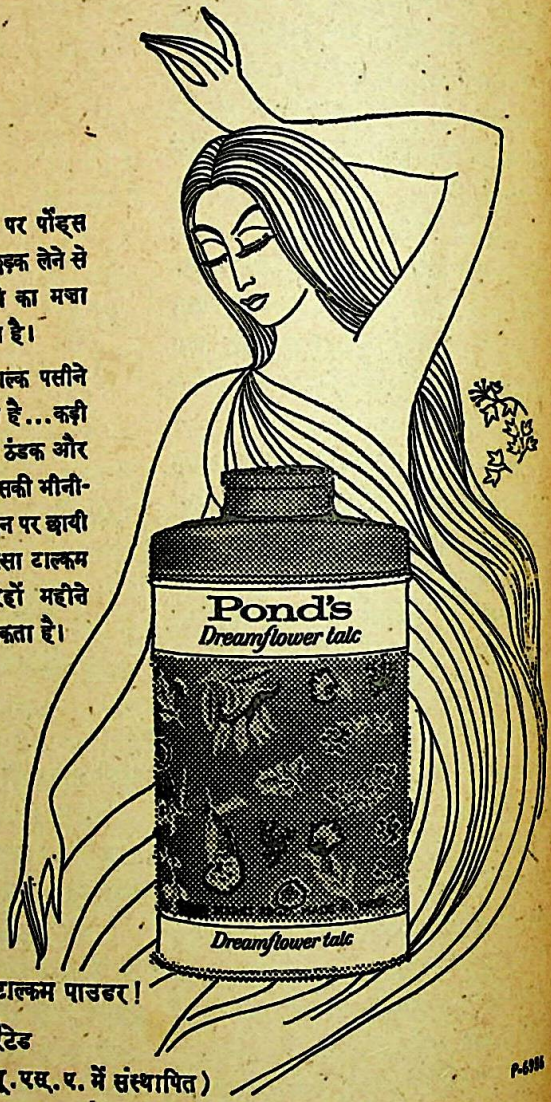

पॉन्ड्स

ड्रीमफ्लावर टाल्क

आज़ का सबसे महीन टाल्कम पाउडर!

चेशब्रो-पॉन्ड्स इन्कॉर्पोरेटेड

(सीमित दायित्व सहित यू.एस.ए. में संस्थापित)

P-6986

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"लेकिन महाराज, शकुंतला को तो दुष्यंत भूल गया था।"

"जसमा ! मेरे बारे में तुम यह गलत सोच रही हो। यदि मैं तुम्हें किसी भी स्थिति में तनिक भी भूल सकता, तो आज तुम्हारे सामने याचक बनकर न खड़ा होता।"

"महाराज ! ये सब तो कहने की बातें हैं और बातों का क्या भरोसा !

असली बात यह है कि हम लोग ऐसे कमजोर और कायर नहीं हैं कि बिना मेहनत किये इतनी महंगी मजदूरी आपसे चाहें। हम जैसे हैं, उसी में प्रसन्न हैं।"

सिद्धराज समझ गया; जसमा को मनाना खीर है।

जब यह लंबा वार्तालाप चल रहा था, कुछ और ओड़ राजा जसमा की ओर ताक रहे थे। राजा लज्जित होकर महल में लौट गया। परंतु कामी को चैन कहां ? सिद्धराज के चेहरे से उदासी झांक रही थी। रानी ने व्यथित होकर पूछा—"क्या आप मुझसे अप्रसन्न हैं? मुझसे कोई अपराध हुआ है ?"

राजा ने मन की बात छिपाकर उत्तर दिया—"प्रिये, प्रजा की विपदा से मैं दुःखी हूं। प्रतिक्षण अनुभव हो रहा है कि मेरे ही किसी पाप का फल प्रजा को भोगना पड़ रहा है। जीवन मुझे भार-सा प्रतीत हो रहा है। मैं अब भगवान से मौत की भिक्षा मांग रहा हूं।"

रानी ने उसे सांत्वना देने का यत्न किया—"स्वामी ! आप जैसे पराक्रमी और प्रतापी को इस तरह हिम्मत नहीं हारनी चाहिये; आप प्रतिदिन सुबह-शाम स्वयं तालाब पर जायें और तालाब का काम शीघ्र-से-शीघ्र पूरा करवायें, जिससे आपकी यह बेचैनी दूर हो।"

राजा सुबह-शाम तालाब पर जाता ही था; किंतु रानी से छिपाकर। अब रानी ने स्वयं ही अनुमति दे दी।

* * *

अगले दिन राजा तालाब पर बहुत जल्दी पहुंच गया। सभी मजदूर समय से पहले ही काम पर लग गये थे। राजा ने मजदूरों के नायक त्रिकम को बुलवाया और उससे पूछा—"नायक, खुदाई का काम तो बहुत दिनों से चल रहा है। पर अभी तक पानी निकलने के लक्षण नहीं दिखाई देते। क्या पानी निकलेगा ?"

"अन्नदाता ! मिट्टी तो गीली निकल रही है। इसलिए पानी जरूर निकलना चाहिये। कब निकलेगा, यह तो मैं नहीं कह सकता। परंतु महाराज एक बात मैं कह अवश्य सकता हूं—आज तक हम लोगों ने जितने भी तालाब खोदे हैं, सब में पानी निकला है। भगवान कृपालु है। उसकी कृपा होगी तो पानी अवश्य निकलेगा। बिना उसकी इच्छा के पत्ता भी नहीं हिलता महाराज !" त्रिकम के स्वर में गहरी आस्था भरी हुई थी।

"अच्छा, तो काम और तेजी से कराओ। जो भी साधन चाहिये, प्रधानजी से कहकर मंगवा लो। मैं तालाब को बहुत जल्दी जल से भरा देखना चाहता हूं।" राजा की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इच्छा थी कि किसी तरह बातचीत की दिशा मोड़कर जसमा की चर्चा छेड़े। परंतु अब उसे भय हुआ कि कहीं त्रिकम बुरा न मान जाये और आवेश में आकर अपमान न कर बैठे। सो उसने बात आगे न बढ़ायी।

त्रिकम को काम में लगाकर राजा घूमता हुआ उस जगह पहुंचा, जहां जसमा का बच्चा झूले में सोया पड़ा था। और वह जसमा की प्रतीक्षा करने लगा। अप्सरा-सी जसमा दूसरी मजदूरिनों के साथ वहां से कई बार गुजरी भी, परंतु उससे बात करने का अवसर राजा को नहीं मिला। संयोगवश एक बार वहां से गुजरते समय जसमा के पैर में कांटा चुभ गया। वह रुक गयी, सब सहेलियां आगे बढ़ गयीं। थोड़ी दूर जाकर जब सहेलियों को पता चला कि जसमा साथ में नहीं है, तो एक ने मुड़ कर आवाज दी—"अरी जसमा! कहां रुक गयी? क्या हो क्या तुझे?"

नायक त्रिकम

[चित्र : ठाकोर राणा]

"आ रही हूं, पैर में कांटा चुभ गया है। बच्चे को दूध भी पिलाना है। तुम लोग चलो।" यह कहकर जसमा पैर में लगा कांटा निकालकर और बच्चे को देखने झूले के पास गयी। बच्चा आराम से सो रहा था। जसमा ने सोचा, इसके उठने तक थोड़ा काम और कर लूं और वह चल पड़ी।

"देवी! जरा सोचो तो,".....

जसमा चलने के लिए मुड़ी, तभी उसके कान में ये शब्द पड़े—"जरा ठहरो।" और राजा सिद्धराज सामने आ गया और बोला—"मैंने मालवा को जीता है; किंतु आज मालवा की एक स्त्री ने मुझे परास्त कर दिया है। लाख कोशिश करने पर भी मैं तुम्हें भूल नहीं पाता हूं जसमा! तुम नहीं जानतीं कि तुम्हें ऐसी धूप में मेहनत करते देख मुझे कितना दुःख हो रहा है। कुछ देर बैठो, कुछ आराम कर लो।"

"मजदूरों को आराम कहां महाराज! यों भी बिना परिश्रम के खाया हुआ अन्न हमें पचता नहीं।" और जसमा चलने को उद्यत हुई। राजा ने उसे रोकते हुए कहा—"इतनी जल्दी क्या है? जरा बैठो भी। बच्चे को जरा झुला दो, लोरी सुना दो। मैं भी तुम्हारा कोयल-कंठ जरा सुनूं तो।"

"सरकार! मैं जानती हूं कि आप मेरे बच्चे पर नहीं, मुझ पर रहम कर रहे हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह व्यवहार आपको शोभा नहीं देता।" जसमा की आवाज में नम्रता और दृढ़ता दोनों थीं।

सिद्धराज के स्वाभिमान को धक्का-सा लगा। कुछ लज्जित-सा होकर वह राजमहल की ओर चल पड़ा। परंतु वह निराश नहीं हुआ था। उसे पूरा विश्वास था कि एक दिन जसमा अवश्य उसकी होकर रहेगी।

अगला दिन, वही समय, वही स्थान। राजा ने जसमा को मनाने का एक और प्रयत्न किया। बोला—"जसमा! यदि तुम अकेली मेरे यहां आने में संकोच अनुभव करती हो, तो त्रिकम को भी अपने साथ ला सकती हो। मुझे कोई आपत्ति नहीं। वह भी चैन से महल में रहेगा।"

जसमा का मुखड़ा एकदम तमतमा उठा—"सरकार! क्या आप समझते हैं कि गरीबों के केवल शरीर होता है, हृदय नहीं होता? क्या आपका खयाल है कि गरीबों में स्वाभिमान नहीं होता? बड़े आश्चर्य की बात है कि आप जैसा बड़ा आदमी महल के सुख के लिए शील और स्वाभिमान को बेचने की सिफारिश दे रहा है।" और वह तेजी से वहां से चली गयी।

राजा ने हार नहीं मानी। वह प्रतिदिन वहां आता और जसमा को मनाने का यत्न करता। एक दिन त्रिकम ने यह देख लिया। उसे अपनी पत्नी पर पूरा भरोसा था। हां, राजा पर कुछ क्रोध जरूर आया; लेकिन वह क्रोध को पी गया, यह सोचकर कि राजा के साथ संबंध बिगड़ने से सारी ओड़ जाति का अहित होगा।

* * *

अंत में एक दिन राजा ने तिलमिलाकर जसमा से कहा—"तुम बहुत जिद्द कर रही हो जसमा! मेरी बात तुम सुनती ही नहीं। मेरा यह निश्चय है कि चाहे कुछ भी हो, मैं तुम्हें पाकर ही रहूंगा। समझ से काम लो, वरना परिणाम अच्छा नहीं होगा।"

"सरकार! जब आप जैसे बुद्धिमान आदमी परिणाम का विचार नहीं कर पा रहे हैं, तो हम गंवारों की तो बात ही क्या? आप तो प्रजा के पिता हैं। प्रजा की बहू-बेटियां आपकी संतान हैं। आपने पिता होकर बेटी पर कुदृष्टि की है। आपकी बात मैंने कान खोलकर सुन ली है, अब मुझे और नहीं सुननी है।" जसमा की आवाज में बिजली की कड़क थी।

सिद्धराज ने आशा नहीं छोड़ी, उसे प्रलोभन दिया—"यदि तुम मेरी बात मान लोगी, तो त्रिकम को समस्त सुख-भोग सुलभ हो जायेंगे। तुम गुजरात की राजरानी बन जाओगी और तुम्हारा बच्चा राजकुमार माना जायेगा। आगे चलकर वह युवराज और महाराज बन सकेगा।"

"सरकार! यह सब तो तब हो, जब जसमा शील का सौदा करे। और वह बात कभी होनेवाली नहीं है। शायद अब पाटण का सूरज डूबनेवाला है, तभी आपको यह दुर्मति सूझी है। आप भी संभल जायें, तो बहुत अच्छी बात है। वरन् प्रभु के कोप और सती के शाप से आप बच नहीं पायेंगे।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

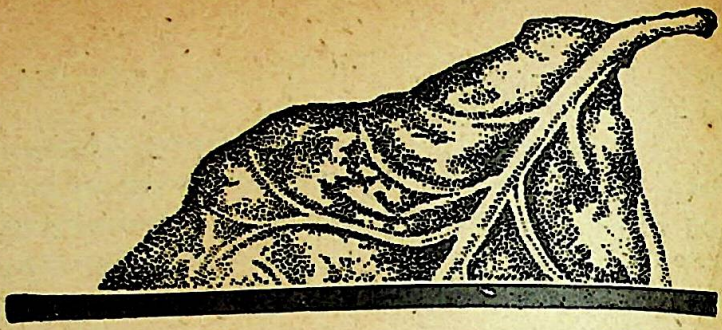

अच्छी
तम्बाकुओं से
अच्छी
सिगरेट
बनती है

पनामा

एक अच्छी सिगरेट है!

मनभावन सुवास और ताज़गी से पूर्ण चुनिंदा वर्जीनिया तम्बाकुओं के विशेषज्ञतापूर्ण योग का सुफल है आपकी प्रिय पनामा। पीने में अच्छी और पिलाने में भी अच्छी!

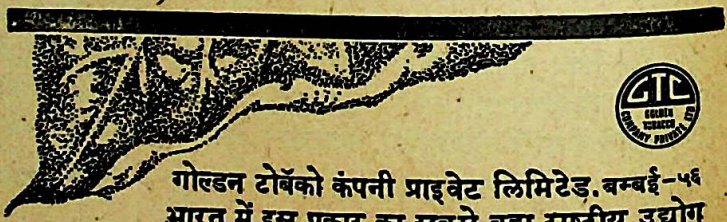

गोल्डन टोबॅको कंपनी प्राइवेट लिमिटेड, बम्बई-५६
भारत में इस प्रकार का सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्योग

GT (P)-67J HIN Greens' Advtg.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राजा ने इस चेतावनी की उपेक्षा करते हुए कहा—"जसमा, पति और सतीत्व को तुम इतना महत्व क्यों देती हो ! ओड़ों में तो पुनर्विवाह चलता है, और तलाक की भी प्रथा है ?"

जसमा का उत्तर था—"सतीत्व का इन प्रथा से संबंध नहीं होता। और आप अभी ही संतान पर कुदृष्टि कर रहे हैं। इसका यही अर्थ है कि पृथ्वी का पुण्य चुक गया है। तो कान खोलकर सुन लीजिये ....आपके सहस्रलिंग तालाब में पानी नहीं निकलेगा, और यदि निकलेगा, तो भी टिकेगा नहीं।"

राजा सिहर उठा और महल की ओर मुड़ पड़ा। राजा दुःखी था कि उसके मन की बात नहीं बन पा रही है। जसमा दुःखी थी कि उसे गुर्जर-नरेश के साथ झगड़ा करना पड़ा।

जसमा और राजा का संघर्ष छिपा नहीं रहा। बहुतों ने छिपकर या दूर से उन दोनों को देर तक बातें करते देखा था। तरह-तरह की बातें होने लगीं। कोई कहता था—जसमा को राजरानी बनने का लोभ हुआ है। कोई कहता—कैसी निर्लज्ज औरत है कि सबके सामने घंटों तक राजा से बातें करती है। तीसरा कहता—भाई, यह सब रूप की करतूत है, रूप तो सिर भी कटवाता है। ऐसे लोग भी कम नहीं थे, जो कहते—"जसमा तो सती है सती। उस पर राजा का जादू कभी नहीं चल सकता।"

* * *

महामात्य मुंजाल

[रविशंकर रावल के चित्र की सरल रेखानुकृति]

तालाब की खुदाई का काम बहुत कम शेष था। उसके पूरा होते ही मालवा से आये हुए ओड़ मजदूर पारिश्रमिक लेकर चले जानेवाले थे। इसलिए सिद्धराज ने एक और दांव लगाने की ठानी। अपने परम नीतिकुशल मंत्री के द्वारा शायद काम बन जाये, इस आशा से उसने महामात्य मुंजाल को सारी बात बतायी और उससे सहायता चाही।

गुजरात के महामात्य मुंजाल को गुर्जर-नरेश सिद्धराज की बात नहीं रुची। नीतिमत्ता और चारित्र्य में चाणक्य-तुल्य मुंजाल ऐसे कामों में पड़नेवाले व्यक्ति नहीं थे। उन्होंने राजा की बात केवल सुन ली, और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

केवल
2 शब्द
किन्तु कितने
महत्वपूर्ण

ग्वालियर सूटिंग

"बिलकुल
अद्वितीय"

NPS/GR-241

GWALIOR FABRICS

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कोई उत्तर न दिया।

चारों ओर जसमा और राजा को लेकर जो चर्चा थी, इससे ऊबकर त्रिकम अपनी पत्नी, बच्चे और कुछ साथियों के साथ मालवा की ओर भाग जाने की सोच रहा था। राजा को इसका सुराग मिल गया। वह कुछ अंगरक्षक सैनिकों के साथ ओड़ों के पड़ाव की ओर चल पड़ा। दूर से उसने जसमा की झोंपड़ी सैनिकों को दिखायी और कहा—"समझ गये ?" उत्तर मिला—"हां अन्नदाता !"

* * *

रात हुई। दिन-भर के परिश्रम से थके-हारे ओड़ अपने डेरों में निद्रा में बेसुध पड़े थे। चारों ओर सन्नाटा था। मध्यरात्रि के समय सिद्धराज के संकेत के अनुसार अंग-रक्षक वहां पहुंचे। उन्होंने त्रिकम की झोंपड़ी में देखा, तो वहां बच्चे को बीच में लिटाये त्रिकम और जसमा गहरी नींद में सोये थे।

दो अंगरक्षक झोंपड़ी के अंदर घुसे और उन्होंने सोती हुई जसमा को उठाया और बाहर खड़े घोड़े पर लादा और उसे लेकर भाग निकले। झटके के साथ जसमा की नींद टूटी और उसने अपने को घोड़े पर लदा पाया। घोड़ा हवा से बातें कर रहा था और जसमा अंगरक्षकों के अधिकार में थी।

घोड़ा सीधे राजमहल के रनवास में पहुंच-कर रुका। वहां पहले से ही सिद्धराज उसकी प्रतीक्षा में बैठा था। जसमा अपने को महल में पाकर सारी स्थिति समझ गयी।

"देखा जसमा, मेरा राजमहल ! यह तुम्हें पसंद है न ? यहां तुम्हारा जी बहल जायेगा ?" राजा ने पूरी आशा में भरकर बड़ी उत्सुकता से पूछा।

आंखों से घृणा बरसाते हुए जसमा बोली—"हम झोंपड़ी के निवासियों को और कोई स्थान पसंद नहीं आता, हमारा जी और किसी जगह नहीं बहल सकता।"

दोनों के बीच में इसी तरह काफी बहस हुई। अंत में राजा क्रुद्ध होकर जसमा को बंदी रूप में छोड़ शयनगृह में चला गया।

* * *

सुबह जब त्रिकम को पता चला कि जसमा घर में नहीं है, वह बेचैन हो उठा। उसने सारा पाटण शहर छान डाला। समा-चार चारों ओर फैल गया। कुछ लोगों को राजा पर संदेह हुआ, गुस्सा भी आया। लेकिन राजा तो राजा है, उसका वे कर ही क्या सकते थे ?

त्रिकम सारी बात का ठीक-ठीक पता लगाकर रात के समय चुपचाप राजमहल में पहुंचा। एक झरोखे की राह वह उस कक्ष में गया, जहां जसमा कैद थी। असहाय जसमा सिर पटक-पटककर रो रही थी। त्रिकम जिस रास्ते से आया था, उसी रास्ते से बहादुरी के साथ जसमा को निकाल लाया। भागकर दोनों चुपचाप झोंपड़ी में पहुंचे। त्रिकम ने कुछ निजी आदमियों को जगाया और सारा किस्सा उन्हें सुनाया। और सबकी सलाह के अनुसार बीवी-बच्चे और कुछ साथियों के साथ भाग निकला।

* * *

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आज मैं धनी हूँ !

मैं प्रतिमाह थोड़ा-थोड़ा रुपया यूकोबैंक की रेकरिंग डिपाज़िट स्कीम के अन्तर्गत जमा करती रही हूँ ये ढेर से रुपये मेरे हैं।

प्रति मास जमा की कम से कम रकम रु० १०, अधिक से अधिक रु० ४५०। रेकरिंग डिपाज़िट खाते वैयक्तिक व संयुक्त नाम से खोले जा सकते हैं।

आप संचय कर सकते हैं—
यूकोबैंक
आपकी सहायता करेगा

दि युनाइटेड कमर्शियल बैंक लिमिटेड

मुख्य कार्यालय : कलकत्ता

ASP/UCO-10/68

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अगले दिन तालाब पर काम के लिए जुटे मजदूरों में एक ही चर्चा थी कि नायक त्रिकम भाग गया, जसमा चली गयी।

बात राजा के कानों तक भी पहुंची। वह स्तब्ध रह गया। एक मामूली मजदूर रनवास में घुसकर राजबंदिनी को छुड़ा ले गया! कैसी विचित्र बात है!

राजा ने हिसाब लगाया कि जसमा और त्रिकम रात के पिछले पहर भागे हैं, तो अभी बहुत दूर नहीं जा पाये होंगे। घोड़े पर चढ़कर वह स्वयं उन्हें पकड़ने के लिए निकल पड़ा। साथ में कुछ सैनिक भी थे।

कुछ ही देर में घोड़े पलायनकारियों के निकट पहुंच गये। त्रिकम और जसमा दोनों जान गये कि सिद्धराज उन्हें छोड़ेगा नहीं। फिर भी त्रिकम ने साथियों को सावधान कर दिया।

राजा ने सैनिकों को आज्ञा दी कि वे त्रिकम को पकड़ें। जसमा को वह अपने हाथों बंदी बनाना चाहता था।

सिपाही त्रिकम को पकड़ने के लिए ज्यों ही आगे बढ़े, उसके साथी कुदाली, फावड़े आदि खुदाई के औजार तानकर खड़े हो गये। पर सिपाहियों के पास तो तलवारें थीं, कुदाली-फावड़ों और तलवारों के बीच लड़ाई हुई। त्रिकम के कई साथी मौत के घाट उतर गये। त्रिकम भी घायल हुआ और लहू-लुहान होकर जमीन पर गिर पड़ा। जसमा की गोद में बच्चा था। वह करती भी क्या! बेबस-सी यह घमासान देखती रही और आंसू बहाती रही।

जब उसने देखा कि त्रिकम इतना अधिक घायल हो गया है कि अब बच नहीं सकता, तो उसने अपना बच्चा एक गोड़न को सौंपते हुए कहा—"रत्ना! इस बच्चे को संभालना। मुझे बच्चा जितना प्यारा है, उससे कहीं अधिक मुझे अपना शील प्यारा है।"

उसने बालों का जूड़ा खोल दिया और घायल पति का सिर अपनी गोद में लेकर बैठ गयी और जगदंबा से प्रार्थना करने लगी। राजा अपनी तलवार फेंककर उसके पास पहुंचा; किंतु जसमा को स्पर्श करने की हिम्मत उसे नहीं हुई। दूर ही खड़ा होकर वह बोला—"जसमा! जो होना था, सो हुआ! अब भी तुम मेरा कहना मान लो! तुम देख रही हो कि त्रिकम अब चंद क्षणों का मेहमान है।"

राजा का वाक्य पूरा होते-होते त्रिकम ने आखिरी सांस ली। जसमा का संसार उजड़ गया। उसका सौभाग्य लुट गया। किंतु सती का सुहाग मांग में ही नहीं, उसकी रगरग में बसा होता है।

जसमा ने एक बार अपने बच्चे को गोद में लिया, उसे चूमा और सहेली रत्ना के हाथ में सौंप दिया। फिर, कमर से बंधी कटारी निकालकर अपनी छाती में घोंप लेने के पहले उग्रता और व्यग्रता के साथ राजा को संबोधित किया:

"महाराज! मैं अपने पति के साथ परलोक जा रही हूं। तुमने मुझे शील से डिगाने की भरसक कोशिश की; पर अंबा माता की असीम कृपा से तुम मुझे छू तक नहीं सके,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह मेरे लिए आनंद की बात है। मैं मरते-मरते तुम्हें शाप देती हूं कि लाख कोशिश करने पर भी तुम इस तालाब में पानी की बूंद भी नहीं पाओगे। तुम्हारा यह आचार तुम्हारे यश के चंद्रमा में हमेशा कलंक बनकर चमकेगा।"

इतना कहकर जसमा ने कटारी अपनी छाती में घोंप ली। उसका हाथ उस समय कांप रहा था; उसकी आंखें अपने बच्चे पर गड़ी हुई थीं; उसके चेहरे पर अलौकिक आभा थी। शरीर से रक्त की धाराएं बह निकलीं!" उसने अपने पति को गोद में लिटा लिया। पति की मृत देह का उसकी गोद में आना था कि जसमा की काया से अग्नि की लाल-पीली लपटें उठने लगीं। अग्नि देवता ने उन अनन्य प्रेमी पति-पत्नी के पावन शरीरों को प्रेम से अपनी गोद में ले लिया। सिद्धराज मूक-सा, अचेत-सा होकर यह सब देखता रहा। गर्वी गुजरात के अधिपति का मस्तक लज्जा से अवनत हो गया।

"जय अंबे!" "जय जसमा!" के नारों से धरती और आकाश कांप उठे। कुछ क्षण बाद वह अभौतिक अग्नि शांत हो गयी। राख का एक ढेर अब वहां शेष था। सबके साथ सिद्धराज ने भी वह भस्म मस्तक पर लगायी और राजधानी को लौट आया।

"जसमा सतियों का सिरमौर है, जिसने प्राण लुटाकर अपने शील की रक्षा की।"

"धन्य है जसमा, जिसने इतने बड़े राजा से टक्कर ली और जीते-जी जो न कर सकी, वह मरकर कर दिखाया।"

बहुत दिनों तक प्रजा की जबान पर बस यही चर्चा थी।

* * *

आज भी गुजरात में गरबी, रास, दोहे और कवित्त के रूप में जसमा की शीलकथा गायी जाती है।

सिद्धराज सोलंकी इतिहास का विषय रह गया है। पाटण अपनी प्रभुता खो चुका है। परंतु जसमा के शाप के अनुसार आज भी सहस्रलिंग तालाब में एक बूंद भी पानी नहीं टिकता। जसमा के शाप का वर्णन करनेवाला प्रस्तर लेख और जसमा का छोटा-सा मंदिर आज भी उस रीते सरोवर के किनारे विद्यमान हैं। हजारों स्त्रियां मनौती करने के लिए आज भी वहां जाती हैं। वे जसमा की जय बोलती हैं। वे जसमा से अचल सुहाग का आशीर्वाद मांगती हैं।

जीना जानो

जो दुःख नहीं जानता, वह जीना नहीं जानता। जो जीवन में हार-जीत को गले नहीं लगाता, वह प्रयत्न का महत्व नहीं जानता। जो फूटकर रोना नहीं जानता, वह हंसना भी नहीं जानता। जो संदेह नहीं करता, वह चिंतन करना नहीं जानता।—जे. पी. गुप्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काबुलीवाला

जाने क्यों खाली समय में फेरीवालियों को देखना रुचता था। उनके उठते-गिरते कदम, आवाज देने की अदा तथा उनके जीवन के विषय में अपने आपसे बातें करना मेरी आदत-सी थी। उस दिन भी अपने बरामदे में खड़ी थी। और उस दिन आया था—एक पठान। गौर वर्ण, लाल ओंठ, ऊंची हुई नासिका। सुबह के नौ बजे की कोमल धूप ने गालों पर लाली बिखेर दी थी। एड़ी चूमता कुर्ता और उसके नीचे ढीली-ढाली शलवार। हृष्ट-पुष्ट देह। कुल मिलाकर आकर्षक व्यक्तित्व।

मन कसमसाया—"धनोपार्जन की अनिवार्यता क्या नहीं कराती—जन्मभूमि से दूर, गलीयों से दूर, अनजान परिचितों के बीच आ पटकती है।" तभी मेरे भीतर से दूसरी आवाज आयी थी—"ये अच्छे नहीं होते।" और अनेक 'इंप्रेशन' चलचित्र की भांति आंखों के सामने घूम गये—नकली रंगीन पत्थर बेच लोगों को ठगते पठान। कालेज से लौटती लड़की को भगानेवाले पठान।

तभी देखा, वह ठीक मेरे सामनेवाले घर की सीढ़ियों पर बैठते हुए मुझसे ही कह रहा था—"बहन, हींग, सुरमा लोगी?"

बिना उत्तर दिये मैं पीछे सरक गयी। मन में कहा—"हो सकता है यह भी बदमाश हों। मुंह से 'बहन' कहते हैं, पर मन के ....." और मेरा मन घृणा से भर आया।

तभी मेरी कल्पना के आंगन में रवींद्रनाथ के 'काबुलीवाला' की मिनी आयी। बोली—"नहीं, सब काबुलीवाले एक-से नहीं होते। मेरे काबुलीवाले को देखा था?"

मैंने उसे निरुत्तर करने के लिए जोर से कहा—"तुम्हारा काबुलीवाला अनोखा था। अनोखा भी इसलिए किरवीं द्रनाथ ने उसे भावुक दृष्टि से देखा था। पर यथार्थ यही है कि ये अच्छे नहीं होते।"..... उसने (पठान ने) फिर आवाज लगायी थी—"बहन, हींग, सुरमा लोगी?"

बात अनसुनी कर मैं निश्चल खड़ी रही थी। कुछ क्षण पश्चात् सलाखों के मध्य से छिपी दृष्टि से देखा, वह उठते हुए सीधी दृष्टि से ऊपर देखकर मुस्करा रहा था। मुझे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अरविंद

उच्च कोटि के कपड़े — अरविंद

पॉपलीन
सूटिंग : धारीदार, डॉबी, चारखाना, पायजामा
धोतियां : प्लॉटिनम, मशहूर
मर्सराइज्ड लॉन: ५५३१
सूटिंग : गबर्डिन
प्रिण्ट : प्रिण्टेड लॉन, वॉयल, पॉपलीन

बुने हुए रंगीन बूटे :
२×२ फ्रेंसी फुल वॉयल
जालीदार व बूटेदार

SANFORIZED

TEBILIZED * AND
TEBILIZED DOUBLE TESTED
*REGISTERED USERS.

अरविंद
मिल्स लिमिटेड अहमदाबाद

LALBHAI GROUP

रिटेल शॉप: प्रिमियर फर्निशिंग डेकोरेटिंग प्राइवेट लिमिटेड, वेकॉन स्टेडियम, वीर नरिमन रोड, बम्बई—१. सोल सेलिंग एजेंट्स: मेसर्स चिनूभाई मदर्स, ३६ चंपागली, बम्बई-२. सोल एक्सपोर्ट एजेंट्स: मेसर्स लालभाई एक्सपोर्ट्स लिमिटेड, कॉर्पोरेशन बिल्डिंग, बैलार्ड रोड, बैलार्ड एस्टेट, बम्बई—१.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

टकराना अच्छा नहीं लगा। गुस्से में मन-हीमन उसे कुछ कहने जा रही थी कि तभी सुनाई पड़ा–"मां ! हींग, सुरमा लोगी ?" 'मां' का पवित्र और सर्वोच्च संबोधन, जिसके साथ कभी धोखा या छल नहीं जुड़ा हुआ होता, सुनकर मैं अचकचा गयी। आदत के अनुसार संबोधन में परिवर्तन आया था, या मेरे अंतर्द्वंद्व को वह भांप गया था, यह मैं नहीं जान सकी हूं। किंतु किसी जाति के हर व्यक्ति को एक-सा मानने के बदले हर व्यक्ति को पृथक् इकाई अवश्य मानने लग गयी हूं। –रीति

०००

गरिमामय

मैट्रिक का परीक्षा-शुल्क भरने की आखिरी तारीख थी। मेरे पास पैसे नहीं थे। घर की हालत यह थी कि हफ्ते में एक-आध दिन ठंडे पानी पर गुजारा करने की नौबत आ जाती थी। क्लास में बैठे मेरी आंखों से आंसू बहे जा रहे थे। पांडुरंग ने देख लिया। खाने की छुट्टी में मेरे एक दोस्त ने पूछकर उसने कारण पता लगा लिया, सीधे घर गया और पंद्रह रुपये लाकर मेरे हाथ में रख दिये। बोला–"किसी से कहना नहीं। मां से झूठ बोलकर ले आया हूं।" इसी पांडुरंग को पिछले साल मैंने 'स्कूल-डे' की दौड़-प्रतियोगिता में अपने से आगे निकलते देख टांग अड़ाकर गिरा दिया था, जिससे उसकी हड्डी टूट गयी थी।

श्री.....से मेरी पुरानी खटपट थी। हम एक ही राजनीतिक पार्टी में थे। मेरी ही अड़ंगेबाजी के कारण उन्हें पार्टी की जिला-कमेटी की अध्यक्षता छोड़नी पड़ी थी। बाद में जब मैं अध्यक्ष बना और विरोधी गुट ने पार्टी के धन के दुरुपयोग का लांछन लगाकर मेरे विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव रखा, तो केवल एक वोट के कारण प्रस्ताव पास होने से रह गया। और वह वोट श्री .....का था। उन्होंने अपने साथियों की परवाह न करते हुए खुल्लमखुल्ला कह दिया था–"गांवकरजी और बातों में चाहे कैसे भी हों, पैसे के मामले में बिलकुल पाक-साफ हैं। मैं प्रस्ताव के विरोध में वोट दूंगा।"

मेरी पत्नी अन्नदान करके ही दोपहर का भोजन ग्रहण करती है। वह अपने हाथों से रोज दो रोटियां सामने के विठोबा मंदिर के आंगन में बैठनेवाली बूढ़ी लंगड़ी भिखारिन को दे आती है। अभी पिछले साल पत्नी को एक आपरेशन के सिलसिले में चार सप्ताह अस्पताल में रहना पड़ा। पत्नी का व्रत न टूटे, इसलिए मैं नौकरानी के हाथों उसे रोटी भिजवाता रहा।

तीन-चार दिन बाद बैसाखी के सहारे चलकर वह मेरे घर आयी और तीन संतरे और खील-बताशे की पुड़िया मेरे सामने रखती हुई बोली–"मालकिन जल्दी ठीक हो जायें, इसके लिए मैंने पूजा करायी है। यह प्रसाद उन्हें दे देना बाबूजी ! विठोबा की कृपा से सब ठीक हो जायेगा। मैं तो चलकर देखने नहीं आ सकती। मालकिन से कहना, माफ कर दें !" –कृष्ण शंकर गांवकर

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

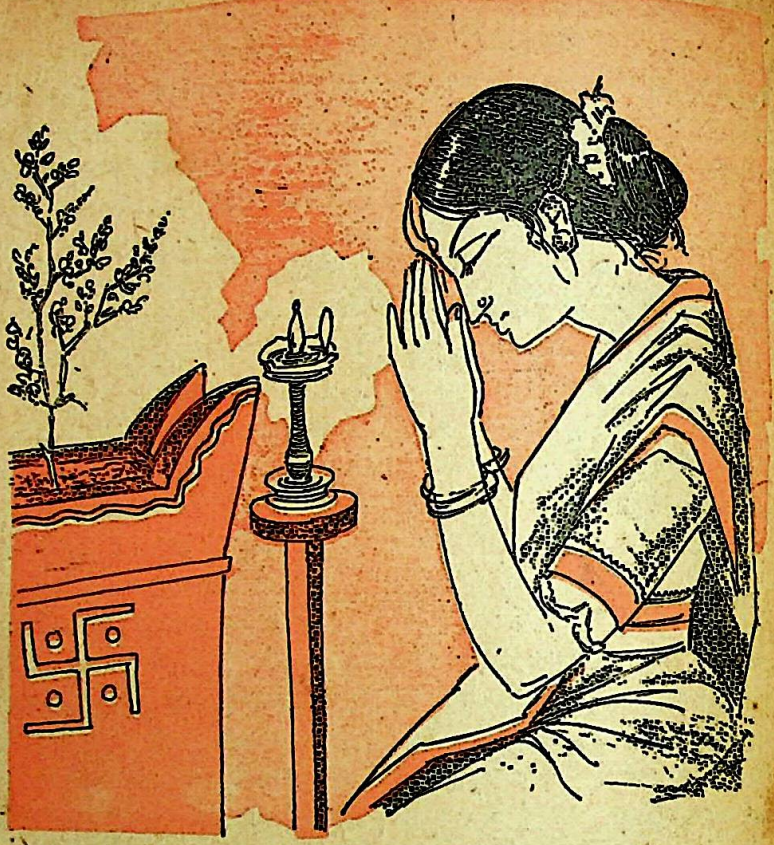

महानंदा

जयवंत दळवी

महाराष्ट्र के निसर्ग रमणीय कोंकण प्रदेश के आंचलिक जीवन और लुप्तप्राय देवदासी प्रथा के साथ गुंथा हुआ एक लोकप्रिय उपन्यास, जो गत वर्ष 'नवनीत मराठी डाइजेस्ट' में धारावाहिक रूप से प्रकाशित हुआ था। [दूसरी किस्त]

अनुवादक : विष्णु निवसरकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बक्स खोलते ही जूही की गंध बिखर गयी। अगर यह गजरा मानू ने दिया होता तो! इस विचार से ही मन के भीतर वीणा के तार झंकृत हो उठते थे। उसी समय मामी बाहर आयी और किवाड़ की चौखट से टिककर खड़ी हो गयी। मैं सहम गया और बक्स से दो-एक किताबें निकालकर झट से बक्स बंद कर दिया। फिर भी उसने पूछ ही लिया—"कौन-सी किताबें हैं?"

"उपन्यास हैं!"

"बाहर जा रहे हो?"

"हां!"

"कहां?"

"जरा मंदिर में जाकर बैठूंगा।"

"इतनी जल्दी? और मंदिर में किताबें किसलिए?"

"वहीं दालान में पढ़ूंगा। जरा एकांत रहता है।"

"यहीं आंगन में बैठकर पढ़ो न!" उसने लखोबा को बुलाकर आंगन में आरामकुर्सी डालने को कहा!

मजबूरी थी! आंगन में बैठकर पढ़ने का नाटक किया। सोचा जीवन कितना बंधनमय है! मानू को लेकर घूमने का जी होता है.....मानू आकर्षक साड़ी पहने हुए है। बड़े घर की बहू जैसे सिर पर आंचल लिये है। मेरे बाजू से उसके बाजू का मधुर स्पर्श होता है। वह साथ चल रही है। लजा रही है। कुछ अस्पष्ट-सा बोल रही है। उसके बालों में गुंथे जूही के गजरे की मादक गंध तैरती है। नारियल के बागों और अमराइयों के बीच से हम गुजर रहे हैं। सागर के किनारे मिल-जुलकर रेती की मीनारें बना रहे हैं और मानू लहरों के गुंजरित ताल पर एक मधुर गीत गाती है.....लेकिन सब व्यर्थ-सा है। उसके दरवाजे तक जाने की मनाही-सी है। हाथ, पैर, मन सब कुछ जकड़ गया है। फिर उठकर चक्कर काटने लगा। तुलसी-वृंदा में एक जूही का गजरा पड़ा था। शायद वही, जो पिछली शाम कल्याणी ने मामा को दिया होगा। गजरे का यह निर्माल्य देखकर क्या मामी को शंका न होती होगी! और होती हो, तब भी कर क्या सकती है!

दोपहर को खाना खाने के बाद मैंने धीरे-से लखोबा से कहा—"लखोबा, एक खास काम है और देखो किसी को कानों-कान खबर न हो!"

"करूंगा! ऐसे ही काम करते तो जनम कटा है।"

"अच्छा जाओ, जरा अपनी जाकिट पहन आओ।" और लखोबा अपनी जाकिट पहनकर हाजिर हो गया।

"लखोबा, ये दो किताबें लेकर मंदिर जाओ, मैं अभी आता हूं।"

"क्यों?"

"जो कहता हूं करो! पूछताछ नहीं!"

"अच्छा।" कहकर सींक से दांत खरोंचता हुआ लखोबा आगे बढ़ गया।

कुछ देर बाद हाथ में लकड़ी लेकर मैं भी निकला। मामी से कहा—"जरा बाहर हो आऊं!"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"इतनी दोपहरी में कहां ?"

"मानू के घर।"

"मानू के घर ?"

मैंने घबराकर पूछा—"कौन मानू ?" लेकिन मामी मेरे मुंह की ओर देखती रही। उसकी नजरें कुछ ऐसी थीं, जैसे अंधी आंखों में एकाएक दृष्टि आ गयी हो। मैं डर गया और इसीलिए फिर से पूछा—

"कौन मानू ?"

"किसके यहां जाने को कहा तुमने ?"

"मनू रेगे के घर।"

"अच्छा-अच्छा !"

"जरा देर होगी।"

"वहां से मंदिर जाओगे।"

"हां, ठाकुरजी का प्रसाद लेना है !"*

"कैसा प्रसाद ! क्या ब्याह रचाना है ?"

"नहीं, नौकरी का प्रसाद।" मैं घबराहट में बोले जा रहा था। मामी सिर्फ देख रही थी। किसी बात पर उसका विश्वास न जमता था।

फिर मैं सीधे मंदिर पहुंचा। लखोबा जाकिट दबोचे दूसरे हाथ से अपने गालों पर उगे खूंटे-से बाल सहलाता मेरी प्रतीक्षा कर रहा था। मैंने किताबें लेते हुए उसके हाथ पर दो आने रख दिये। कहा—"लो, रावत की दुकान पर कुछ खा लेना।"

"नहीं, एक आने की शक्कर लूंगा। वरना घरवाली गड़बड़ करेगी और एक आने के लूंगा खीलों के लड्डू, बच्चों के लिए। खाकर वे आपको दुआएं देंगे।"

.....और उसने पीठ मोड़ ली।

मुझे विचित्र-सा लगा। आवडाबाई। कोई उसकी घरवाली नहीं है। उसने पति को या पति ने उसे परित्यक्त किया है। और भी लोग उसके घर आते रहते हैं और उन लोगों जैसे ही दो बच्चे आवडाबाई ने जने हैं, यह भी जग-जाहिर बात है। फिर भी लखोबा उसे अपनी घरवाली और बच्चों को अपने बच्चे समझ बैठा है ! जैसे सब उस पर हंसते हैं, मैं भी हंसा।

लखोबा के आंख से ओझल होते ही मैं मंदिर में गया। प्रदक्षिणाएं कीं और गर्भगृह में झांककर देखा। कोई न था। न सही। मानू को किताबें देने का बहाना तो था ही। मैंने कल्याणी की बिखारी का बेंडा लांघा और उसके आंगन में आ गया।

छप्पर के नीचे बूढ़ा मृदंगी मृदंग की डोरियां कस रहा था। भाग्य से उसका ध्यान कहीं न था। वह मृदंग को सुर पर लाने में रमा था। दूसरी ओर से झुककर छप्पर में से मैं भीतर चला आया।

चबूतरे पर बिछी चटाई के ऊपर भींत से टिककर कोई बूढ़ा बैठा था। एक हिकारत से उसने मेरी ओर देखा। उसके सामने ही कल्याणी बैठी माला जप रही थी। वह

---

* गोवा की लोकश्रद्धा है कि किसी निर्णय के लिए पुजारी देवता की मूर्ति पर पक्ष और विपक्ष या 'हां' और 'ना' के प्रतीकस्वरूप फूलों की दो पांखें या पत्तियां चिपका देता है। जो पत्ती पहले गिरे वही निर्णय या 'प्रसाद' है !

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लगकर आंखें मूंदे हुए थी और बूढ़ा शायद उसी को देखता बैठा हुआ था। मुझे देखते ही बूढ़े ने पूछा—"कौन ?"

फिर कल्याणी ने भी आंखें खोलीं। बोली—"बाबुल, आ गये तुम ! आओ-आओ, बैठो....." और उसने चटाई पर हाथ रखा।

"किताबें देने आया हूं..... !"

"अच्छा किया। उसे कुछ पढ़ने को चाहिये। सवेरे से कह रही थी।..... वहां बैठो है।" कल्याणी ने उस कमरे की ओर उंगली उठा दी। इसलिए कि मैं वहां जाऊं। कम-से-कम मैंने तो यही समझा। मैं उन लोगों की ओर पीठ करके उस कमरे में चला गया।

दरवाजे पर ही मैं सहम गया। कमरे में एक पिछला दरवाजा था और एक खिड़की थी, जिसमें से पश्चिमी सूरज की उतरती किरणें भीतर आ रही थीं। खिड़की की चौखट पर एक मोटी-ताजी बिल्ली अपनी देह चाटती बैठी थी। मानू खिड़की से झांकती, इधर पीठ किये कुछ बुन रही थी। जी चाहा कि जाकर चुपके-से उसकी आंखें मूंद दूं। मानू ने मेरी ओर देखा, जीभ निकालकर वह शरमायी। आंचल संवारा। मैं मंत्रमुग्ध-सा देखता रहा।

"कभी आये ?"

"नहीं, काफी देर हुई। देख रहा था।"

वह मीठी-सी हंसी हंसी। मैं सोच रहा था—अगर मानू एकदम पास खड़ी हो, तो उसका सिर मेरे सीने पर लगेगा। अगर उसकी ठोढ़ी को उंगली से जरा उठाऊं और अपना चेहरा जरा-सा झुकाऊं, तो ओंठों से ओंठ मिलेंगे ! क्या आदर्श जोड़ी रहेगी !

"बैठो न !"

मैं नीचे ही बैठ गया, लिपे हुए ठंडे फर्श पर।

"ऊपर-ऊपर, पलंग पर बैठो न !"

"नहीं, यहीं ठीक है।"

"क्यों..... ?"

"तुम्हारे पास !"

मानू धीमे-से हंसी। बिल्ली खिड़की से कूदकर मेरे पास आ गयी। मैंने दूर धकेल दिया। कुत्ते-बिल्लियां मुझे वैसे भी पसंद नहीं। मानू ने उसे बुलाया—"आ भागी !" और बिल्ली को पुचकारने लगी। मैंने पूछा—"क्या नाम है इसका ?"

"भागी ! भागीरथी !" और फिर बिल्ली को उठाकर उसने 'टक' से उसके ओंठों को चूम लिया। मुझे विचित्र-सी सिहरन हुई। काश, मैं किसी जादू-टोने से बिल्ली हो सकता ! अपनी यह कल्पना मानू को बता देने की इच्छा हुई, लेकिन साहस न हुआ।

"ये किताबें लाये हो ?" उसने किताबों की ओर देखकर कहा।

और किताबें आगे बढ़ाते ही उसने उन्हें लगभग झपट लिया। फिर वह अनजाने ही एक किताब पढ़ने में खो गयी। वैसे तो अच्छा ही था कि वह पढ़ती रहे और मैं उसे देखता रहूं, लेकिन यह अच्छा नहीं लगता कि पास-पास बैठे दो व्यक्ति बिना बोले बैठे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हर्क्युलिस

सिर्फ साइकिल ही नहीं- यह तो जीवन भर का साथी है

मजबूत तो है ही सवारी करना भी कितना आसान है—हर्क्युलिस इस तरह बना है कि जिन्दगी भर साथ दे। उत्कृष्टता के सर्वोत्तम मान के अनुसार बना होने पर भी दाम मुनासिब से अधिक नहीं—हर्क्युलिस का सौदा सचमुच लाभजनक है।

®
दि हर्क्युलिस साइकिल एण्ड मोटर कं० लि०, यू०के० का रेजिस्टर्ड ट्रेड मार्क ● भारत में निर्माता : टी० आई० साइकिल्स ऑफ इण्डिया, अम्बात्तूर, मद्रास-५३ ● प्रोप्राइटर्स : ट्यूब इन-वेस्टमेंट्स ऑफ इण्डिया लिमिटेड, मद्रास-१ रजिस्टर्ड व्यवहारकारी।

TIC/H-4397A

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हूं। इसलिए मैंने पूछा—"बाहर मृदंग इसे ठीक कर रहा है?"

"वह.....सीतू मृदंगी!" उसने किताब बंद करते हुए कहा।

"तुम्हारा कौन है?"

"कोई नहीं! लेकिन उसका सारा जीवन यहीं मंदिर में बीता है। अच्छा सधा हुआ हाथ है। ठाकुर की पालकी के समय यही मृदंग बजाता है।"

"और वे चबूतरे पर बैठे हैं....."

"वे हैं सोमजी मास्टर!"

"हां कैसे आये?"

"पोस्टआफिस यहां पास ही है। आ बैठते हैं।"

"वैसे ही!"

"सभी पोस्टमास्टर यहां बैठते हैं।"

"लेकिन ये तो बूढ़े-से हैं!"

"इसीलिए देखते बैठते हैं।"

"तुझे देखते!"

"नहीं, मां को!" उसने हंसते हुए कहा और न जाने क्यों ऐसा मुझे लगा, जैसे मैं मुक्त हूं।

"फिर तुम्हारी मां को कार्ड-लिफाफे तो खरीदने न पड़ते होंगे?"

"हमें उनकी क्या आवश्यकता? किसे चिट्ठी भेजनी है? लेकिन वे मजेदार चिट्ठियां पढ़कर सुनाते हैं!"

"किसकी चिट्ठियां?"

"गांव में किसी की भी। फिर भी सोमजी मास्टर उतने पत्र नहीं खोलते, जितने पहले पोस्टमास्टर खोला करते थे। उनकी बदली हो गयी।"

"तो अगर कल मैं तुम्हें चिट्ठी भेजूं, तो ये मास्टर..... "

"नहीं, हमारी नहीं!"

"क्यों?"

"वे यहां आते जो हैं!"

एक ओर तो मुझे इन तथाकथित मास्टरों पर गुस्सा आया और दूसरी ओर दया भी आयी। यह सोमजी! जो पचास साल पार कर चुका है। कुबड़ा, शरीर में ताकत नाम को नहीं। बैठे-बैठे कल्याणी को देखते रहना और बदले में दूसरों के पत्र पढ़कर सुनाना, यही तो धंधा है। मगर किसी की आदतों के लिए क्या कहा जाये!

फिर मानू कुछ बुनने लगी।

"क्या बना रही हो?"

उसने अधूरा बुना रंग-बिरंगा बंदनवार मेरे सामने रखा। पूछा—"कैसा है?"

"बहुत आकर्षक!"

फिर उसने एक संदूक में से कांच की पुंगरियों और मोतियों के छोटे-बड़े कितने ही बंदनवार दिखाये। मैंने काफी दाद दी। और अब मानू खुलने लगी।

"दरवाजे में लगाने पर कितने सुंदर लगेंगे।" मैंने कहा।

"पूजाघर में सिंहासन पर भी....."

"हां, सच!"

"तुम जाते समय बंबई ले जाना।"

"और क्या ले जाऊं?"

"क्या चाहिये?"

"तुम!" अब की बार मैं हिम्मत कर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ही गया।

सुनते ही जैसे वह भीतर से हिल उठी; लेकिन उसने कहा कुछ नहीं।

"क्यों, चुप क्यों ?"

"किसलिए बेकार की आशा !"

"बेकार क्यों ?"

"मैं एक देवदासी की लड़की ! तुम बड़े घराने के..... !"

"रहने दो। जन्म से मिलनेवाला छोटा-पन या बड़प्पन मैं नहीं मानता।"

"सब कहने की बातें हैं।"

"अच्छा देखेंगे !"

उसने हल्की-सी आवाज में कहा — "दीवाली तक यह बंदनवार तैयार कर देना है।"

"क्यों ?"

"दीवाली के बाद जाने का विचार है न ? तुम्हारे ही लिए बना रही हूं। बन जाये तो अच्छा है।"

"बन जायें तो ठीक, नहीं तो मैं बड़े दिन की छुट्टी में फिर आ रहा हूं।"

"बंबई में क्या काम..... "

"कालेज में पढ़ाता हूं—मराठी।"

"लड़कियां भी होती हैं ?"

"हां।"

"सुंदर भी होंगी !" उसने मां की भांति तिरछी गर्दन करके पूछा।

"तुम जैसी प्रिय एक नहीं !"

"यानी कैसी ?" एक गुदगुदी से उसने पूछा।

"हंसमुख, ऊंची और छरहरी देह। रीति-रिवाज और मर्यादा समझनेवाली। देव-धर्म माननेवाली....."

"किसने बताया यह सब..... ?"

"मैंने तुम्हें तुलसीजी के सामने पाठ करते देखा है।"

यह सुनकर वह शायद सुख से भर गयी। जोर से हंस उठी, इतनी हंसी कि आंखें गीली हो आयीं।

".....और फिर मीठा गला।"

"बस, मैं अभिमान से फूलकर कुप्पा हो जाऊंगी न !" उसने कहा। कहा तो, लेकिन वह वास्तव में अभिमान से भर गयी थी।

अवसर का लाभ उठाते हुए मैंने कहा— "एक मीठा-सा गीत गाओगी ?"

मन तो चाहता था कि बंदरगाह के ऊपर पहाड़ पर स्थित उस शुभ्र डाकबंगले में मानू को मधुचंद्र के लिए ले जाऊं, सो भी पूनम के दिन ! मानू की गोद में सिर रख-कर सो जाऊं—उसका एक मधुर गीत सुनते-सुनते !

मानू ने गला साफ किया।

बाहर बैठा मृदंगी मृदंग के बोल निकाल रहा था। अगर मानू गाना शुरू करती, तो शायद वह ताल भी देता।

पोस्टमास्टर चला गया हो तो अच्छा।

"कौन-सा गीत गाऊं ?" मानू ने पूछा।

"कोई भी.....भावगीत, भजन, कुछ भी सही....."

उसने फिर से गला साफ किया। उसी समय बाहर से कल्याणी ने कहा—"मानू, मामा आये हैं री !"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"कौन ?" मैंने धीमे-से पूछा। मानू ने मेरी कुहनी पकड़कर लगभग उठाते हुए पिछले दरवाजे की ओर ले जाकर कहा—"जाओ, जाओ! तुम्हारे मामा आये हैं।"

बाहर संध्या घिर आयी थी।

"अच्छा!"

"आना फिर!" मेरे आगे बढ़ने से पहले ही वह पास आयी। बोली—"ठाकुरजी की सवारी के बाद ही जाना। मेला लगेगा। दीवाली के आठ दिन बाद ही उत्सव होगा। उससे पहले न जाना।"

"देखेंगे!"

एकाएक मामा के आ जाने से छाती धड़क उठी। नारियल के बागों से होकर पीछे के रास्ते से मैं दौड़ चला।

* * *

जब घर आया, घना अंधेरा घिर आया था; पर मामी ने दिया भी न जलाया था। वह भूत की तरह अंधेरे में बैठी थी। लेकिन अब तक मानू ने अपने घर दीवट जला ली होगी। तुलसी-वृंदा के सामने नीराजन रखा होगा। "शुभं करोति....." का पाठ किया होगा। एक ओर गांव के मुखिया का वह घर, और दूसरी ओर वह एक देवदासी का घर!

मुझे वह अंधेरा अच्छा न लगा। लालटेन जलाकर मैं चबूतरे पर बैठ गया। मन में शांति न थी। अंदर कहीं वसंत खिल रहा था। किसी ताल पर नाचने की इच्छा हो रही थी। मानू के ही घर बैठे रहने का जी हो रहा था। वहां कुछ जादू-सा था। सांझ के समय वहां का सारा आकाश जूही की गंध से स्पंदित होता था। रात उतरती-उतरते रातरानी की भारी-सी सुवास उसमें घुल जाती। ऐसे समय मन पागल होने लगता है। देह में लहरें हिलोरें लेने लगती हैं।.....मामा के घर ऐसा कुछ भी नहीं। जैसे एक रात काटने के लिए किसी सराय में टिके हों।

"हो आये मंदिर ?" मामी ने पूछा। अंधेरे में मामी भीतर से कब बाहर आयी, मुझे पता ही न चला।

"हां।"

"ये मिले थे ?"

"नहीं।"

"मंदिर की ओर ही तो गये हैं।"

"गये होंगे। मैं मंदिर से समुद्र की ओर निकल गया था।"

"अच्छा।" शायद मामी का समाधान हुआ हो।

"ठाकुर का 'प्रसाद' लिया ?"

"प्रसाद ? हां-हां, लिया।"

"क्या बताया !"

"मैंने पूछा था कि सरकारी नौकरी करूं या कालेज की ही नौकरी रहने दूं। ठाकुरजी की इच्छा है कि मैं कालेज की ही नौकरी करूं।"

"विवाह के बारे में नहीं पूछा ?"

"क्या पूछना है ?"

"कब होगा, यही पूछ लेते।"

"उसमें पूछना क्या है। जब करूंगा, तभी होगा।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गृह लक्ष्मियों

आमदनी के साथ खर्च का मेल बैठाने में क्या आपको कठिनाई होती है?

नेशनल एण्ड ग्रिण्डलेज़ बैंक में सेविंग्स एकाउन्ट आपकी मदद कर सकता है

क्योंकि
नेशनल एण्ड ग्रिण्डलेज
बैंक आपके खर्च को
साधे रखता है। बैंक आपको
पास बुक देता है जिसमें रुपये जमा
और रुपये निकालने का पूरा हिसाब रहता है।
हिसाब आपको नियमित रूप से देता रहता है।
मकान किराया, बीमे की किस्त आदि का भुगतान
आपके आदेशानुसार समय पर करता है।
अधिकाधिक महिलाएँ नेशनल एण्ड ग्रिण्डलेज बैंक
में सेविंग्स एकाउन्ट खोल रही हैं। वे कहती हैं कि
इससे जीवन कितना सरल और निर्झंझट हो जाता है।
इसी सप्ताह पधारिये और आप हमारे यहां एक एकाउन्ट
खोलिये। आप केवल १ रुपये से ही एकाउन्ट खोल सकती हैं।

नैशनल एण्ड ग्रिण्डलेज़ बैंक लिमिटेड

(संयुक्त राज्य में संस्थापित, सदस्यों का दायित्व सीमित है)

छोटे हो या बड़े—यह बैंक सबका काम करें

नेशनल एण्ड ग्रिण्डलेज बैंक की मजदीकी शाखा से बिना मूल्य "हाउ टु स्टॉप वरीइंग एण्ड स्टार्ट सेविंग" नामक पुस्तिका लेकर पढ़िये

NGB-19A/58 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"फिर कर लो जल्दी, जब तक हम लोगों की आंखें खुली हैं।"

"देखेंगे!"

"इधर की लड़की करोगे, या बंबई की?"

"इधर की, देखो....."

"मनू ने नहीं पूछा?"

"किसने?"

"मनू रेगे ने। उसकी बहन की भी तो शादी होनी है।"

अब मेरा जी हल्का हुआ। मैंने मानू सुन लिया था। बोला—

"नहीं!"

"अच्छी देख-भालकर करना। हम-जैसी नहीं।"

"यानी कैसी?"

मामी ने उत्तर नहीं दिया। हम-जैसी नहीं—उसने एक गहरी और जली आवाज में कहा था। एक संकेत था, जो मैं ठीक से नहीं समझ पाया।

"ऐसा क्यों कहती हो मामी?" मैंने फिर से पूछा। तब मैंने ही कहा—"अपनी ओर से फूंक-फूंककर कदम रखना चाहिये, फिर हम, वह और हमारा भाग्य!" मैंने किसी अत्यंत अनुभवी वृद्ध पुरुष की तरह कहा।

"सच है। आखिर बात भाग्य पर ही आकर रुकती है।"

मामी ने एक निःश्वास छोड़ते हुए कहा। कुछ समय वह चुप रही। मैं भी चुप था। उस उदास काली शांति में मुझे चैन न पड़ता था।

एकाएक मन में एक मजाक सूझा। कम-से-कम मामी की प्रतिक्रिया जाननी चाही। इसलिए हंसी में कहा—"देवदासी की लड़की व्याहनी चाहिये।"

"ठीक है! तुम आजकल के लड़के जो न करो सो थोड़ा।"

मैंने हंसकर कहा—"इसमें बुरा क्या है? अपनी जाति की बुरी लड़कियों से अगर देवदासी की अच्छी लड़की मिली तो क्या हर्ज है?"

"क्या मानू को देखा है?"

मामी ने ठीक जख्म पर उंगली रखी। क्षण-भर के लिए मैं घबरा गया। संभालने के लिए पूछा—"कौन मानू?"

"अच्छा, नाटक कर रहे हो!"

"सच, मुझे नहीं मालूम मामी! मानू कौन है?"

"कल्याणी की लड़की!"

"सच, मैंने उसे नहीं देखा!"

फिर कुछ देर मामी कुछ न बोली। दिया नाममात्र को ही जला था, लेकिन आंगन में अंधेरा ही था। इसलिए मैं मामी के चेहरे के भाव न पढ़ सका। वह चुपचाप, अंधे की भांति अंधियारे में देख रही थी।

"लेकिन इसमें बुरा क्या है?" मैंने जान-बूझकर कुरेदा।

"कुछ बुरा नहीं! बाद में रखैल रखने से तो यही अच्छा है।" एक जला-कटा छींटा उछालकर मामी अंदर चली गयी।

* * *

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रात नींद आने तक मैं मन में घबराया हुआ था। डर लगता था कि कहीं बातों-ही-बातों में कल्याणी ने मामा से कह दिया कि मैं वहां गया था, तो व्यर्थ की समस्या उठ खड़ी होगी। लेकिन वैसा कुछ न हुआ। कल्याणी ने कुछ न कहा होगा। कहेगी भी नहीं। मामा का चेहरा भी पाषाणवत् भावनाहीन था। क्या मजाल कि उनके चेहरे से कोई कुछ ताड़ ले। कल्याणी कहती है कि मामा को मां की भांति खूब बोलने में आनंद आता है। लेकिन इस बात पर विश्वास ही नहीं होता। हो सकता है कि वे कल्याणी से भरपूर बातें करते हों। किसी के मन की कौन जानता है? कौन कहां अपने हृदय के पट खोलेगा, कौन कह सकता है!..... और कल्याणी का घर ही वैसा है। वहां मन प्रसन्न न हो तो आश्चर्य है। वहां पत्थर के खंभे बोल सकते हैं, घास और पेड़ गंध उगल सकते हैं।

मैं बिस्तर पर चित लेटा था। नींद न आती थी। आंखें एकदम खुली थीं, मन आशाओं-भरा था और शरीर झनझना रहा था। लगता था, तारे गिनते रात बीत जायेगी। सोच रहा था, अगर मानू आकर माथा सहलाये और गीत गाये, तो ही नींद आयेगी, अन्यथा अब सारे जन्म नींद का दर्शन न होगा!

दीवार-घड़ी के घंटे बजते जा रहे थे। क्षण-भर पहले साढ़े ग्यारह का घंटा बजा था। मामा सोये थे, बल्कि खर्राटे भर रहे थे। बीच में दरवाजा खुला। ढिबरी उठाकर धुएं के बीच से मामी ने देखा। मामा तख्त पर सो रहे थे। मामी को संतोष हुआ होगा। दरवाजा बंद हो गया। भीतर से बेंड़ा सरकाने की आवाज आयी। और फिर सब कुछ एकदम शांत हो गया।

दूर कहीं सियार, कुत्ते और भालू एक लय में चिल्ला रहे थे। और उससे भी कहीं दूर से झागदार सागर की विशाल लहरों का धीमा-सा मर्मर स्वर सुनाई पड़ रहा था। दिन में लोगों के काम-काज के शोर में सागर के अस्तित्व का पता ही न चलता था। लेकिन रात को सागर किसी जीवित देवता की भांति प्रकट हो जाता था। ऐसी रातों को मानू को लेकर सागर-तट पर जाया जाये। शुभ्र बालुका पर बैठकर तारों की गिनती की जाये। उसके कंधे पर सिर रखकर, लहरों का शोर भूलकर, उसका गाना सुना जाये। सागर की खारी गंध को उपेक्षित कर उसके श्वासों की गंध ली जाये। सामने अथाह भयानक सागर! उस पर मछियारों की एक-आध छोटी-सी नाव। वह भी इसलिए दिखाई पड़ जाती है कि उस पर जलती लालटेन बीच-बीच में झिल-मिला उठती है। शेष अंधकार! भयानक नीरवता! लेकिन प्रेम की मादकता में दो जीव भयानकता भूल गये हैं। मादकता में आंखें मुंदती जाती हैं! जीभ घुलती जा रही है! सांसें तूफान का आकार लेती जा रही हैं। सारे शरीर पर रोंगटे ऐसे खड़े हैं, जैसे रेती के कण चिपक गये हों।

आंखों में आग लग गयी! न जाने कैसे,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उ उठ खड़ा हुआ। रात ठंड से अकड़ रही
ी। मैंने कश्मीरी शाल कंधों पर डाली।
ार्च हाथ में थामी। बाहर आया और चल
ा। चहारदीवारी पार कर आंगन में आया।
छप्पर तले दिया जल रहा था। सामने
ाजाब खोले मानू औंधी लेटी पढ़ रही थी!
ैंने धीमे से पुकारा—"मानू ..... !"
वह एकदम हड़बड़ाकर उठ बैठी।
ुंह एक शब्द भी बोलने की मनःस्थिति
ें नहीं था।
मैंने इतने जोर से आलिंगन किया कि
ो वह मेरे शरीर में समाहित हो जायेगी।
ांस, बाँह, जीभ, श्वास सब कुछ एक हो
ये। कुछ भी पार्थक्य शेष न रहा। कुछ
ण चेतना ही विलुप्त हो गयी।
ब बीच में ओंठ मुक्त हुए, तो उसने
हा—"नींद नहीं आती थी। लगता था, तुम
आओगे!".....और फिर हम एक-दूसरे
ें समा गये। कुछ हल्कापन लगा। मैंने
छा—"तुम्हारी मां कहां है?"
"अंदर सोयी है। तुम जाओ। मामा को
ता चल जाएगा तो?'
"मामा..... ?" मैं चौंक पड़ा।
"जाओ....."
"अच्छा!"..... मैं किसी प्रकार अलग
आ।
"कल आना!"
"मेरी चप्पलें कहां हैं?" टार्च जलाकर
मैंने देखा। चप्पलें नहीं मिलीं।
"जाने दो!"
मैंने बिसारी लांघकर पीछे देखा। मानू
ने फूंक मारकर दिया बुझा दिया था।
घबराकर मैं नंगे पैर ही दौड़ चला। इस
तरह मैं आया ही कैसे? यह विचार क्यों
नहीं किया कि अगर मामा जाग गये, तो
क्या होगा? अंधे रास्ते के गड्ढे-गड़हियों में
लड़खड़ाता मैं भागता रहा।

घर आकर मुक्ति की सांस ली। मामा
शान्ति से सोये खर्राटे भर रहे थे। सीढ़ी
चढ़ते समय पांव चप्पल पर पड़ा। टार्च से
देखा, तो मेरी चप्पलें वहीं थीं। मन-ही-मन
हंसा। क्या गत बनती है! प्राण पागल हैं!
..... जब बिस्तर पर बैठा, तो पता चला
कि शाल मानू के आंगन में ही गिर गयी है।

* * *

जैसे किसी ने जकड़कर खींचा हो, शाम
को मानू के घर चला आया। जूही के छप्पर
के नीचे कोई न था। सीधे मानू के कमरे में
गया। वह खिड़की के पास बैठी जूही का
गजरा बना रही थी।

"आज किसे गजरे दोगी?" मैंने पूछ
ही तो लिया।

मनुष्य अपने मन के रहस्य स्वयं ही नहीं
जानता, तो मानू कैसे जानेगी। उसने पूछा—
"किसे, यानी?"

"उस दिन मुझे मिला और बाद में मामा
को भी। सभी एक हैं।"

मानू मेरी ओर एकटक देखती रही।
उसकी मुद्रा में क्रोध दिखाई पड़ा। अब राम
जाने कि वह मुद्रा असली थी, या नकली।
कुछ देर उसी तरह देखकर उसने कहा—
"उस दिन तुम्हें किसी ने कुछ नहीं दिया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुछ समय ऐसे होते हैं जब आपको सेरिडॉन से मिलनेवाली राहत की खास ज़रूरत होती है

महिलाएँ अच्छी तरह जानती हैं कि कभी-कभी महज़ दर्द से आराम मिल जाना ही काफ़ी नहीं होता...

जब कभी तबीयत गिरी-गिरी-सी हो, सुस्ती या दर्द महसूस हो तो सेरिडॉन की एक ही टिकिया लेने से बदन में एक नयी फुर्ती, एक नयी जान-सी आ जाती है। सेरिडॉन से दर्द के साथ-साथ उससे पैदा होनेवाला तनाव भी दूर हो जाता है। इसे लेते ही आपके विचार सुलझने लगते हैं... दिनभर के काम-काज में आप जुट सकती हैं...और हँसी-मज़ाक़ में आपको फिर से मज़ा आने लगता है! सेरिडॉन तेज़ी से पूरा-पूरा आराम पहुँचाती है। यह सिर के दर्द, दाँत के दर्द और बदन के दर्द से भी छुटकारा दिलाती है। इसलिए इसे हमेशा अपने पास रख लेना अच्छा है। सेरिडॉन की एक ही टिकिया दर्द दूर करती है, आराम पहुँचाती है और ताज़गी भी देती है।

'रोश' उत्पादन

सोल डिस्ट्रिब्यूटर्स: वोल्टास लिमिटेड

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

था!"

"तब ?"

"माँ ने मामा को दिया था।"

"और मुझे....."

"तुम्हें मामी को देने के लिए दिया था। माँ बताना भूल गयी और गजरा तुमने दबा लिया।" मानू किसी बच्ची की भांति हंसती रही।

मैं अनाड़ी-सा वहीं खड़ा रहा।

"बैठो न! आज मैं तुम्हें एक गजरा दूंगी। यह मेरा अधिकार है।"

मैं नीचे बैठ गया और बात बदलने के लिए बोला—"रात मेरी शाल चुरा ली न?"

मानू मुस्करा उठी। बोली—"तुम्हारी शाल तो मिल गयी, लेकिन चप्पलें नहीं मिलीं।"

"वे तो घर ही थीं। मैं नंगे पैर आ गया था, जैसे आदमी सपनों में चलता है।"

फूल पिरोना रोककर वह गहरी नजरों से मेरी ओर देखती रही। बोली—"देखो!" और उसने अपनी बांह मेरी ओर बढ़ा दी। मैंने उसकी बांह धीमे-से सहलायी। उसे बड़ी तरह रोमांच हो आया था, जैसे शरीर में रेणु-कण चिपका दिये गये हों।

"रात की याद ही से ऐसा हो जाता है!"

"मैं भी आधी रात कैसे आया!"

"मुझे पूरा विश्वास था, तुम आओगे। अवश्य आओगे। न आते, तो मैं सारी रात जबार करती रहती।"

"और मेरे जाने पर?"

"तुम्हारी शाल ओढ़कर सो गयी। ठीक किया?"

"तुम्हीं रखो! कश्मीर में ली थी। मेरी याद के लिए रख लो!"

उसने शाल सहेजकर रखते हुए कहा—"कितने दिन रहना तय किया?"

"मेले और उत्सव के बाद जाऊंगा।"

"बहुत अच्छा!" उसने गजरा मेरी कलाई पर बांध दिया। "तब तक तो मेरा बंदनवार भी बन जायेगा।"

"लेकिन सब अपने ही पास रखना।"

"क्यों?"

"सब तुम्हारे साथ ही ले जाऊंगा।"

"मुझे ले जाओगे! सच?"

"क्यों, संशय क्यों?"

"सच नहीं लगता।"

"तुम्हारी मां विरोध करेगी?"

"करेगी ही!"

"क्यों ..... ?"

"उसका कहना है, हम देवता के हैं। अगर देवता के चरण छोड़कर हमने विवाह किया, तो हमारा कभी कल्याण न होगा।"

"सब बकवास है।"

"वह पुरानी जो ठहरी।"

"लेकिन उसने विरोध किया, तब.....?"

"उसकी कौन सुनेगा। चार दिन रोयेगी। हम उसे गुजारे के लिए कुछ भेज दिया करेंगे।"

"अवश्य।"

"लेकिन तुम्हारे अपने लोग?"

"मैं तो स्वतंत्र हूं। बंबई जाते ही कहीं बाहर तबादला करा लूंगा। वहां कौन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विरोध करेगा ? मैं अपने मन का राजा, तुम..... "

"दासी....." मानू ने हंसकर कहा।

"फिर वहां घर सजाने के लिए तुम्हारे बंदनवार....."

"ठीक-ठीक !"

"तुमने इस विषय में कल्याणी से कुछ कहा ?"

"कुछ यों ही। स्पष्ट कुछ नहीं।"

"उसने क्या कहा ?"

"ना ! मत करो !"

"मैं पुछूं ?"

"पूछ देखो।"

"और उसने मना कर दिया तब .....?"

"तब तुम्हारे साथ जब कहोगे, जहां कहोगे चल दूंगी !"

मैं गर्दन सीधी कर मानू की ओर देखता रह गया। गांव में जन्मी यह लड़की, इतनी दृढ़निश्चयी ! मैं अवाक् रह गया।

"चुप क्यों हो गये ? संदेह है ? छाया की भांति तुम्हारे साथ आऊंगी।"

फिर भी मैंने कुछ नहीं कहा, देखता रहा। उसकी आंखों के बादामी बिंदु अपनेपन की भावना से पानी में डूबने लगे थे।

"मुझपर संदेह है न ?"

"नहीं, मानू ! कितना सुख, कितना समाधान....." मैंने उसकी गोदी में सिर रख दिया। न जानें कैसे उसने मेरे मन की बात जान ली और माथा सहलाने लगी। मुझे कुछ भी न कहना पड़ा। फिर बहुत धीमी आवाज में कोई गीत गुनगुनाने लगी।

किसी बच्चे की तरह मैं वैसे ही लेटा रहा। जूही की गंध अपना सागर उंड़ेल रही थी। पांखों से पतले ओंठ, काली बरौनियां, हवा में झूमते बाल और कुंकुम की गहरी रेखा। सब कुछ गीत के साथ सिहर रहा था।..... मैं शायद सो गया था, दिये जल चुके थे।

लगता था, जैसे मेरा विवाह हो चुका है। इच्छानुसार संतति है। सुख से संसार चल रहा है। मन पूर्णतः तृप्त है। उसी तृप्ति से मैं उठा और घर आया।

मामा के उस मंद-मंद सांस लेनेवाले घर में आने पर सोचा—व्यर्थ वहां से उठा। व्यर्थ जागा.....। और व्यर्थ ही उस गोदी से सिर उठाया।

* * *

गोविंदऽऽ ! गोविंदऽऽ ! चिल्लाते हुए सवेरे जब लखोबा ने नारियल फोड़ना शुरू किया, तब मैं जागा। तुलसी-वृंदा में दो फूटे फल पड़े थे। मामा ने चढ़ाये होंगे। जब मैं खड़ा-खड़ा आलस से अंगड़ाइयां भर रहा था, मामा गीले कपड़ों में ही देवगृह से बाहर आये। पूजा आज जल्दी खत्म हुई थी। खूंटी से धोती उतारते हुए उन्होंने मुझसे कहा—"जल्दी नहा-धो लो !"

मैं कुंए की ओर चल पड़ा।

तुलसी के सामने रंगोली की कुछ टेढ़ी-मेढ़ी लकीरें थीं। एक टिमटिमाता दीप भी जल रहा था। कुएं पर तेल और उबटन रखा था। पानी के हंडे के मुंह में गेंदे के दो-एक फूल बंधे थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बस यही थे दीवाली के चिह्न ! शेष सब होली की तरह ठंडा और क्षीण था। जैसे ही मैं नहाने लगा, लखोवा दौड़ा आया। बोला—"अरे यह क्या, आज तो दीपावली है!" फिर उसने मेरी मालिश की और नहलाया।

मामा मेरी राह देख रहे थे। मैंने देवघर में जाकर भगवान को नमन किया। फिर मामी ने दीवाली का नाश्ता परोसा, नारियल और धान के पदार्थ थे। मामा तेजी से खा रहे थे, मामी परोसे जाती थी। कोई बातचीत नहीं। शांति, मौन! मामा ने मेरे हाथ मामी को शायद कोई उपहार दिया था। लेकिन मामी ने वह बंडल खोला भी नहीं, अलग रख दिया। फिर मामा उठकर चल दिये। मामी ने मुझसे पूछा—"तुम्हें क्या परोसूं ?"

"अब कुछ नहीं!"

तब मामी लखोवा को परोसने लगी। मैं बाहर आया। मामा अपना संदूक खोले बैठे थे। उन्होंने मुझे चोरी की नजर से देखा, इसलिए मैं जाकर पागल की तरह आंगन के चक्कर लगा उठा।

मामा तिन्नियां निकाल-निकालकर धोती पहन रहे थे। फिर उन्होंने रेशमी कुरता पहना। साटिन का लंबा सफेद कोट चढ़ाया। कोट में सोने के सात बटन थे। सुनहरी जरी का सफेद साफा बांधा। अपने ही आप में बुदबुदाते हुए उन्होंने अपने कान का इत्र का फाहा सूंघा और हाथ में लकड़ी लिये बाहर हो लिये। मामा के जूते कर्र्-कर्र् बज रहे थे। वे आज कुछ अलग ही दिखायी दे रहे थे।

"मंदिर जा रहे हो, मामा ?" मैंने पूछा।

"हूं!" कहकर वे ऐन मेरी नाक पर से आगे बढ़ गये। हिना की सुगंध दूर तक वातावरण में फैल गयी।

तभी लखोवा आ टपका। वह अच्छी-खासी धोती पहने था। ऊपर से एक साफ पीला कोट था। सिर पर रेशमी साफा—शायद मामा का उतारा हुआ। वह दुपट्टे में कुछ पुड़िया बांधे था।

"यह क्या बांध रखा है ?"

"खीलों की पुड़ियां।" लखोवा खड़ा रहा।

"क्या बात है ?" मैंने पूछा।

"एक बंधा रुपया चाहिए।"

"क्यों!"

वह कुछ शरमाया और ओंठों पर जीभ फिरायी। जैसे ही मैंने रुपया दिया, वह जल्दी-जल्दी में चला गया। आवडाबाई के यहां गया होगा।

दोपहर सोकर उठने के बाद मुझसे न रहा गया। थैली लेकर मैं बाजार गया। मिट्टी के दिये खरीदे। एक कंदील भी ले आया। दरवाजे पर एक बांस लगाकर कंदील चढ़ायी। चार जगह मिट्टी के दीपक जलाकर रख दिये।

फिर पांव मंदिर की दिशा में उठ गये।

चहारदीवारी के पास मानू खड़ी थी। आज उसने जसवंती के रंग की मलमल की साड़ी पहन रखी थी। उसी रंग की जर-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तारी चोली थी। यों ही मानू गोरी-चिट्टी है, फिर उसके शरीर पर कपड़ों की लाल छाया पड़ रही थी। चोली इतनी कसी हुई थी कि पीठ पर एक गहरी रेखा अंकित हो गयी थी।

"तुम्हारी ही राह देख रही थी।" उसके शब्दों में एक आरजू और आवाज में गंभीरता थी। उसके पीछे-पीछे मैंने आंगन में पैर रखा।

सारे अहाते में मिट्टी के दियों की सजावट थी। पचासों दिये—चबूतरे पर, सीढ़ियों पर, जूही के मंडप के नीचे एक सादा और एक नक्काशी वाला घूमता आकाशदीप। तुलसी-वृंदा के सामने रंग-बिरंगी रंगोली। दो दीवटें जल रही थीं। दरवाजों पर कांच के बंदनवार थे। यह सब देखकर मन प्रसन्न हो उठा।

"बहुत देर कर दी?" कल्याणी ने पूछा।

"घर दिये जलाकर आया।"

"मामी ठीक हैं न?"

"हां....."

"अच्छा, बैठो-बैठो।"

मैं कमरे में गया। चांदी के फूल जड़ा एक पटा बिछा था। पटे के चारों ओर सुंदर-सी रंगोली थी, जिस पर अबीर चमचमा रहा था। सामने दो चमचमाती दीवटें थीं, जिनमें एक साथ कई बत्तियां जल रहीं थीं।

"बैठो न पटे पर....."

वह सारा किसी वैभव-सा आश्चर्यमय लग रहा था। मैं शान से जम गया। कल्याणी ने पकवानों से भरी थाली मानू के हाथ में दी। मानू ने वह मेरे सामने रख दी। जब वह रखने के लिए झुकी, तो उसके भीगे बालों की गंध मेरी श्वास और आत्मा में समा गयी। मैं अशांत-सा हो उठा। मैंने खाना आरंभ किया, मानू लजायी-सी खड़ी थी। फिर कल्याणी के कहने पर उसने आग्रह किया। नीराजन के प्रकाश में उसका हंसमुख चेहरा अत्यंत आकर्षक दिखाई दिया।

"यह माला देखी?" कहकर कल्याणी ने अपने गले की सोने की माला निकालकर मुझे दिखायी। उसने बताया कि मामा ने दी है। मैंने पूछा—"कब?"

"आज सवेरे ही। उनका कुछ-न-कुछ आधार तो है ही।"

यह सुनकर मुझे एक धक्का लगा। मुझे तो कल्पना भी न थी कि आज उपहार दिया जाता है, इसलिए खाली हाथ ही आ गया था।

"लेकिन यह जरूरी नहीं कि कुछ दिया ही जाये।" मानू ने यह कहकर मुझे बचा लिया। उसने मेरे माथे पर कुंकुम और अक्षत लगायी। न जाने, मुझे क्या सूझा, मैंने अपने सोने के बटन, जिनमें सोने की ही जंजीर लगी थी, मानू के कुंकुम-पात्र में डाल दिये। तब तक कल्याणी बाहर चली गयी थी। शायद जान-बूझकर हमें एकांत देने के लिए ही वह बाहर गयी।

मानू घुटने पर ठोड़ी रखे बैठी थी। वह उड़ती नजर से मेरी ओर देख रही थी। हमने खाया और एक-दूसरे को खिलाया भी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बाहर कल्याणी बात कर रही थी और अंगनवाली पोस्टमास्टर ऐसे खांस रहा था, जैसे सिक्के ठनका रहा हो। और सीतू मृदंगी की आवाज कुछ ऐसे अंदाज से बजा रहा था, मानो कहीं नृत्य हो रहा हो।

* * *

घर कल्याणी अकेली ही थी। कल ठाकुर की सवारी निकलेगी। मानू उत्साह से मंदिर में तैयारी कर रही थी। मुझे एक बार कल्याणी से पूछना ही था। वैसे मानू तो उसके विरोध के बावजूद आनेवाली थी। अतः कल्याणी से पूछना या न पूछना विशेष महत्वपूर्ण नहीं था। लेकिन पूछना तो चाहिये ही। अगर अनुमति दे दे, तो भागने की कला से बच जायेंगे।

कल्याणी सामने ही बैठी थी; लेकिन एकाएक पूछने की हिम्मत न पड़ती थी।

"तुम बंबई क्यों नहीं आती हो?" मैंने बात घुमाकर बातचीत शुरू की।

"मैं?..... हरे राम!" पान की एक गिलौरी मुंह में दबाते हुए कल्याणी ने सांस छोड़ी।

"तुम्हारी आंख में मोतियाबिंद उतर रहा है न! आपरेशन करा लेंगे।"

"अब हमें क्या करना है!" चोली की गांठ टटोलती वह हंसी।

"तुम्हारे आने से मेरी मां को भी खुशी होगी।"

"हां-हां, दुर्गी को आनंद क्यों न होगा!"

"फिर आओ न, पंद्रह-एक दिन के लिए।"

"अरे बेटा, तुमने कहा, यही क्या कम है! हम कहां जायेंगे ठाकुर के चरण छोड़कर?"

"पंद्रह दिन ही रहना पड़ेगा। आपरेशन हो जायेगा। तब तक मंदिर की सेवा मानू करेगी।"

"वह तो करेगी, लेकिन अब बुढ़ापे में नजर का कौन-सा मोल है?"

"वाह, अगर आंखें चली गयीं, तो पराधीनता....."

"नहीं..... नहीं.....ठाकुरजी आंखें ठीक करेंगे।

रोज चरणामृत लगाती हूं। अब तो काफी ठीक हैं।"

मेरी बात ही कट गयी। मनुष्य ईश्वर पर कितना ही विश्वास करे, लेकिन यह मान लेना कि चरणामृत लगाने से मोतियाबिंद कट जायेगा, सरासर पागलपन है। लेकिन कल्याणी यह न समझ सकती थी। वह पिछले जमाने की जो थी। मैं काफी देर तक चुप रहा। फिर डरते-डरते बोला—"तो फिर मानू को ले जाऊं.....?"

"कहां?"

"बंबई।"

"किसलिए, कांजी हाउस में डालने...!"

"तुम्हें मुक्त करने के लिए।"

वह तिरछी गर्दन से आंखों पर जोर देकर मुझे देखती रही।

"हम शादी करेंगे....."

"ओ, मेरे भगवान.....!" वह माथे पर हाथ मारकर हंसी। पता नहीं, उस हंसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक अमर संदेश....

पौराणिक राजा नल दमयन्ती को अपना प्रेम संदेश हंस के माध्यम से भेजा करते थे। वह सुन्दर हंस उन दोनों के मध्य संदेश वाहक बन गया।

वर्तमान युग में कागज़ के अत्यन्त शक्तिशाली माध्यम द्वारा कोई भी संदेश मनुष्य जाति को सरलता से दिया जा सकता है।

ओरियन्ट के छापने व लिखने के कागज़ देश की आवश्यकता पूर्ति हेतु प्रस्तुत हैं।

ओरियन्ट के कागज़ परम्परा को अक्षुण रखते हैं

ओरियन्ट पेपर मिल्स लि०

झरराजनगर, उड़ीसा तथा
अमलाई, मध्यप्रदेश

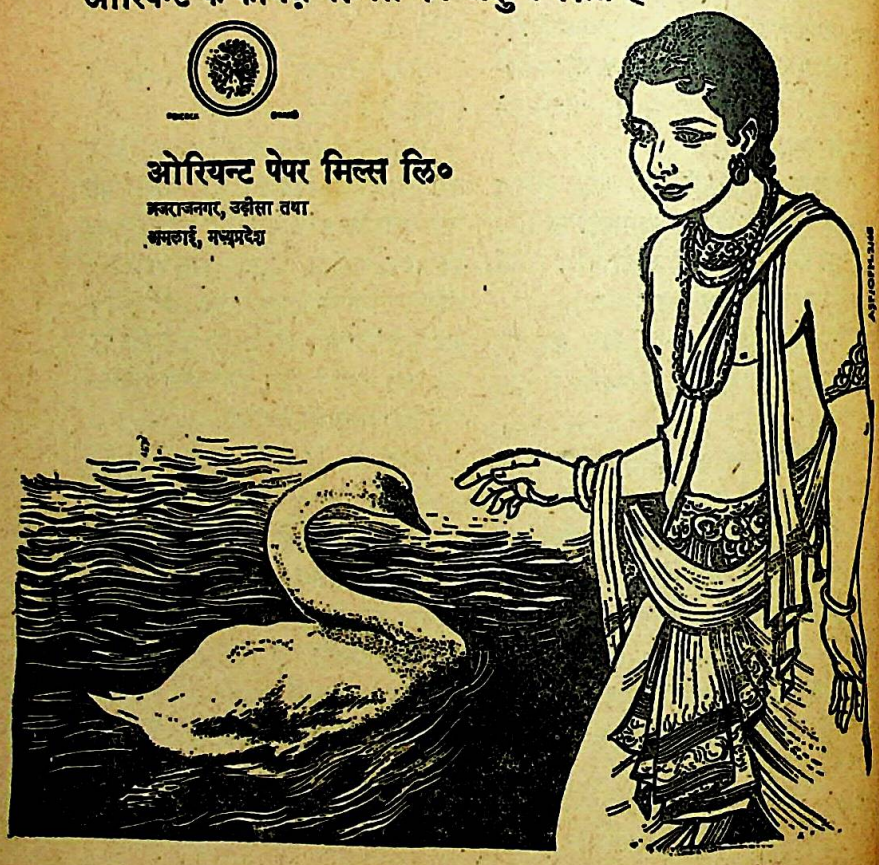

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में सम्मति थी, या विरोध।

"क्यों?"

"देवदासी की बच्ची और विवाह ?"

"क्यों नहीं ?"

"क्या हमने विवाह किया ?"

"वह जमाना और था, अब वह खत्म हो चुका है। आज की लड़कियां शादी करने लगी हैं।"

"करती हैं और फिर पछताती हैं!"

"कैसे ?"

"तुम्हें पता है या नहीं, उस जमुनियां का क्या हुआ!"

"कौन जमुना..... ?"

"वह डाकखाने की बगल वाली, चंद्रा की लड़की।"

"क्या हुआ उसका ?"

"पांचवीं तक पढ़ी थी। उसने सोचा, बड़ी अकल आ गयी है। सबने मना किया, लेकिन न मानी। बाहर जाकर ब्याह कर लिया।"

"किससे ?"

"भागो के बच्चे से। करम-दरिद्री कहीं का! अपना नास किया और उस बच्ची का भी।"

"आखिर हुआ क्या ?"

"अरे होना क्या था! जब देवदासी ब्याह रचायेगी, तो देवताओं का कोप न होगा? जागृत देवता! पचास-पचास कोस से लोग दर्शन के लिए आते हैं। ऐसे देवता के चरण छोड़ने पर कोप न होगा? और ब्याह करके क्या हो जायेगा? हमने कौन-सा ब्याह किया था? लेकिन भगवान ने हमें क्या कम दिया है? दो वक्त के खाने में कभी कमी नहीं पड़ी।"

"लेकिन उस जमुना पर कौन-सा कोप हुआ ?"

"अरे, साल-भर भी न बीता था कि पागल हो गयी और एड़ी रगड़-रगड़कर मरी।"

वैसे कुछ विश्वास तो नहीं होता था, लेकिन सारा किस्सा सुनकर मन सुन्न-सा हो रहा था।

"भाऊ भट्ट की हालत तुम्हें मालूम है? अपनी मां से, दुर्गी से पूछना! उसे मालूम है। भाऊ भट्ट का घराना कोई ऐसा-वैसा नहीं है। बड़ा मानी घर है। एकादशी के दिन भगवान की पालकी उसके घर जाती है। उसके देवघर में भगवान विठोबा हैं! लेकिन ससुरे की मत मारी गयी। ब्राह्मण की लड़की छोड़, गंगा की सुंदरी ब्याह ली! गंगू, वह पुल के पार वाली, देवदासी! तुम्हारी मां जानती है। सारा गांव विरुद्ध, लेकिन भट्ट काहे को मानने लगा! एकादशी आयी। ठाकुरजी का 'प्रसाद' लिया, तो ठाकुरजी ने कहा, भट्ट के यहां इस बार पालकी नहीं जायेगी। देवी के मंदिर तक जाकर पालकी लौट आयी। छः महीने में भट्ट का शरीर सड़ गया और फूल उठा। दसों गांव के बैद आये, लेकिन भट्ट वैसा-का-वैसा! बीमारी न घटी। आखिर ठाकुरजी के सामने नाक घिसी। भट्ट होश में आया। सुंदरी को छोड़ दिया। अपनी गांठ के पांच

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सौ खर्च करके काशी से दो ब्राह्मण बुलाये। शुद्धि की गयी। गाय के गोबर में गंगाजल मिलाकर भट्ट का घर लीपा गया। तब भट्ट की हालत सुधरी। उस साल फिर से पालकी भट्ट के घर गयी।"

"सुंदरी का क्या हुआ?"

"वह कहां मरघट में जायेगी! देवी की सेवा करती है। भट्ट उसके यहां आता-जाता है। संबंध रखने में ठाकुरजी की मनाही नहीं। देवदासी को रखने से देवता कुपित नहीं होते। लेकिन ब्याह....."

मैं इतना ठंडा पड़ गया कि बोल ही न पाया। आखिर बड़े कष्ट से एक ही प्रश्न पूछा—"फिर तुम्हारी राय क्या है?"

"ठाकुरजी की राय, सो हमारी राय!"

"यानी..... ?"

"यानी तुम ब्याह के चक्कर में न पड़ो। देवता का कोप तो पत्थर की लकीर है। मेरी लड़की मरघट जाये, तो भी मुझे चिंता नहीं। मुझे तो तुम्हारे कल्याण की चिंता है। तुम दुर्गी के बेटे हो। पढ़े-लिखे हो। अगर भगवान ने तुम्हारा कुछ भला-बुरा किया, तो मुझे गांव में मुंह दिखाना भारी हो जायेगा। इसलिए तुम अपनी जात की अच्छी-सी लड़की से ब्याह करो। हमें ब्याह में बुलाओ। मानू को एक साड़ी-चोली दो, तो हमें सब कुछ मिल जायेगा।"

मेरी आंखों में पानी आ गया। कल्याणी जान न ले, इसलिए मैंने आंख में कचरा गिरने का बहाना बनाकर रूमाल से आंखें पोंछ लीं।

"एक बात मैं और साफ बता दूं।" कल्याणी बोली—"ठाकुरजी को साक्षी करके कहती हूं, अगर तुम्हारी इच्छा हो, तो साल में दो बार आ जाया करो। उसे खाने-भर को दो। अपनी घरवाली के उतरे कपड़े दोगे, तो भी बहुत है। भगवान साक्षी हैं, वह तुम्हारी रहेगी। मैं नजर रखूंगी। अगर उसे रखना चाहो, तो भगवान मना न करेगा। लेकिन ब्याह का विचार मन से निकाल दो!"

वह उठी और भीतर जाकर एक नारियल ले आयी। बोली—"यह नारियल ठाकुरजी के सामने रखकर वचन दो कि उससे ब्याह न करोगे; लेकिन नियम से आते-जाते रहोगे। भगवान की कृपा रहेगी।"

"रहने दो!" मेरी आवाज डूब चुकी थी।

मैं कुछ नहीं बोला। लौटने के लिए उठ खड़ा हुआ। अच्छा हुआ कि मानू लौटी नहीं थी। अगर वह होती, तो अवश्य रोती और उसके साथ मैं भी रो पड़ता।

भारी कदमों से मैंने विखारी पार की। घर के कोने पर मुड़ते-मुड़ते तुलसी-वृंदा से टिकी कल्याणी ने कहा—"बाबुल बेटे, बुरा न मानना! आते-जाते रहना। मैंने देव-धरम के लिए ही सब कहा है!"

आस-पास घिरते हुए अंधेरे में मैं कण-कण करके घुल रहा था। जी चाहता था कि सीधे सागर पर जाकर जार-जार रोऊं।

* * *

उत्सव के पहले दिन मंदिर गया। मंदिर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की सीमा में कितने ही मंडप ताने गये थे। दुकानों और होटलों के लिए। मानू मंदिर के भीतर से दो दीवटें लेकर बाहर आ रही थी। वह धोती ऊंची खुरसे थी और आंचल लहरा रहा था। वह हंसी, लेकिन मैं पहले की तरह हंस न सका। भारी दीवटें हाथ में ही लिये उसने कहा—"मां ने मना कर दिया न!"

"तुम्हें कैसे मालूम?"

"रात-भर वही किस्सा तो चल रहा था।"

"फिर?"

"फिर क्या?"

"तुम्हारा क्या कहना है?"

"तुम कहो तो दीवटें यहीं रखकर तुम्हारे पीछे आऊं। आगे हम और हमारा भाग्य!"

"ठीक है। मैं 'प्रसाद' लेता हूं।"

मैंने हंसने का प्रयत्न किया। यद्यपि असफल रहा। मंदिर में जाकर परिक्रमा की। चरणामृत लिया और नारायण पुजारी से कहा—"नारायण, एक 'प्रसाद' लेना है!"

"लो।"

"कब..... कल.....?"

"कल उत्सव है। भगवान का सिंगार होगा, वस्त्र पहनाये जायेंगे। चाहो तो अभी लो।"

नारायण पुजारी ने तुरंत पत्ते भिगोकर मूर्ति के नंगे बदन पर चिपका दिये।

"क्या पूछना है?"

"मन में एक इच्छा है। इच्छानुसार करूं, या नहीं?"

"ठीक। हाथ जोड़ो!"

पुजारी ने स्वयं भी हाथ जोड़े और 'ओ प्रभु' कहकर लंबा-सा मंत्र पढ़ा। मैं पत्तों की ओर देखता हाथ जोड़े बैठा रहा। थोड़ी देर बाद मूर्ति की छाती पर चिपका बायीं ओर का पत्ता नीचे गिर गया। मैं कुछ अधीर हो उठा। मूर्ति की ओर देखकर नारायण पुजारी बोला—"प्रसाद नकारात्मक है! जो मन में है, मत करो। उसमें कल्याण नहीं!"

सुनते ही मेरी कमर झुक गयी। लगा कि अब मैं हाथ टेककर भी न उठ सकूंगा।

"एक प्रसाद और लो पुजारी जी....."

"कैसा?"

"एक मुर्गा चढ़ाने पर कुछ होगा.....?"

पुजारी ने फिर से पत्ते लगाये। फिर से मंत्र द्वारा भगवान से कुछ कहा। मैं फिर से हाथ जोड़कर बैठ गया। जीभ थर्रा रही थी। मन में जप कर रहा था कि अबकी स्वीकारात्मक प्रसाद मिले।

फिर से दो पत्ते नीचे गिर पड़े। मुझे साफ दिखाई दिया कि मूर्ति हिली है। हो सकता है, भ्रम हो! पुजारी चिल्लाया—"नारायण!" और बोला—"नहीं भाई! मन की इच्छा छोड़ दो, वह कल्याण का मार्ग नहीं है।"

पुजारी की पूजा की थाली में एक रुपया डालकर मैं उठा और रुपया कान में खुरसकर निर्विकार भाव से पुजारी भी चला गया।

बाहर निबिड अंधकार था और मंदिर में तो और भी घना अंधियारा था। जी चाहता था कि मंदिर के गहन अंधकार में लीन हो जाऊं। दीवटें लिये मानू आयी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जैसे २×२ पॉपलिन जो तेज गर्मी में भी आपको शीतल रखे। आप की पसंद के लिए, 'टेरीन'/कॉटन मिला बाटिस्ट मौजूद है, जो पहनने में चुस्त और धोने में आसान है। फिर सनफोराइज्ड पॉपलिन का क्या कहना– न सिलवट, न ज्यादा इस्त्री की जरूरत। इन आकर्षक कपड़ों की कीमतें हर व्यक्ति के माफिक हैं और डिजाइन हर दिल को पसंद है। चमकीले, शीतल और मृदु कोमल रंगोंमें प्राप्य हैं।

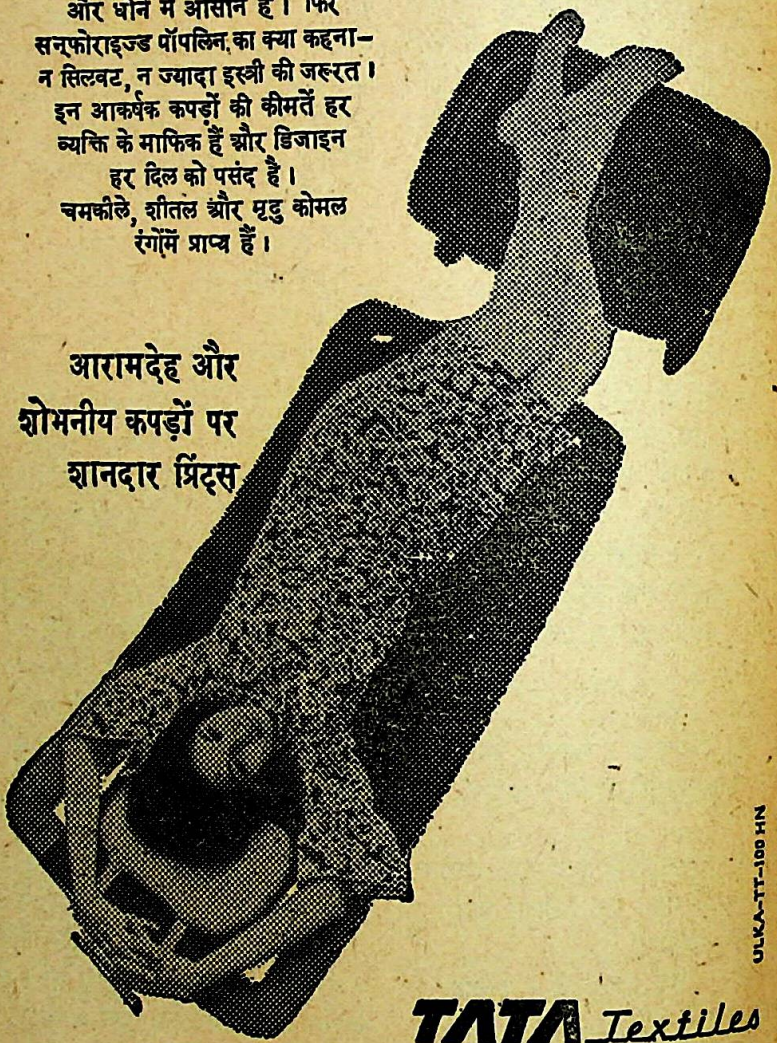

आरामदेह और शोभनीय कपड़ों पर शानदार प्रिंट्स

ULKA-TT-108 HN

TATA Textiles

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"प्रसाद लिया ?"

"हां !"

"क्या प्रसाद मिला..... ?"

"स्वीकारात्मक !"

मानू हंसी। एक ऐसी हंसी, जैसे गहरी घाटी में जाकर शब्द लौटकर प्रतिध्वनि बन जाते हैं।.....उस आवाज से मेरा हृदय अक्षरशः फटने लगा।

मैं बाहर आया, तो मानू भी पीछे-पीछे आयी। वह मंदिर में दीवटें रखना भी भूल गयी थी।

"मैंने तन-मन से भगवान की सेवा की है। भगवान मेरा कुछ बुरा न करेंगे।" कहकर वह वहीं खड़ी हो गयी।

"अच्छा, चलूं !" कहकर मैं अंधेरे में खो गया।

* * *

रात उत्सव में बेहद भीड़ थी। मंदिर के आस-पास दो-तीन हजार लोग शान-बान के कपड़े पहने जुट गये थे। औरतों ने बालों में जूही और केतकी के फूल और पांखें पिरोयी थीं। लोग फल-फूल लेकर देवता की मूर्ति के सामने भीड़-भड़क्का मचाये हुए थे।

आस-पास मिठाई की कितनी ही दुकानें थीं। परातों में करीने से मिठाइयां सजी थीं। खाजा, बताशे, सिंगार-पांक और शक्कर के खिलौनों की मालाएं। गट्टापारचे के खिलौनों और गुब्बारों की भरमार में पीपियों की आवाज कान फोड़ रही थी। धर्मशालाओं में टंगे रहनेवाले ढोल आज बजाये जा रहे थे। नक्कारखाने में शहनाई और नौबत बज रही थी। लेकिन यह मधुर स्वर ध्यान देने पर ही सुनाई देता था, वरना पानीपत के मैदान-सा कुहराम मचा था।

मध्यरात्रि में ठाकुरजी की सवारी निकलनेवाली थी। पालकी वापस आने पर दशावतार का नाटक खेला जाना था। नाटक ऐन भोर तक चलता रहता है।

मैं पागल की तरह भीड़ में घम रहा था। न तो खिलौनों से खेलने का मन था, न जुआ खेलने का ; न खाने-पीने की ही इच्छा थी। किसी दृष्टिहीन की भांति भीड़ से टकरा-टकराकर मंदिर के सामने आ जाता था।

बीच में एक बार कल्याणी के घर का चक्कर काट आया। छप्पर तले अंधेरा था और आंगन में ताशवालों की संख्या बढ़ गयी थी। पोस्टमास्टर भी दिखाई दिया, बोला—"घर में कोई नहीं है। आज तो उन लोगों का घर मंदिर में ही है।" मैंने कुछ न कहा। थोड़ी देर बाद जोर-जोर से ढोल बजने लगे। नक्कारखाने से नौबत की आवाज गूंजी। मंदिर में सींग भी फूंके गये।

पालकी मंदिर से निकल रही थी। पालकी के पास तो भीषण भीड़ थी। नर-नारी, बालक-वृद्ध। बहुतों के कंधों पर बच्चे थे। औरतों की गोदी के बच्चे भीड़ में पिसकर चीख रहे थे। हर कोई इस प्रयत्न में था कि आगे बढ़कर पालकी में रखी ठाकुरजी की चांदी की मूरत देख ले। इसी घपले में जब किसी का पैर किसी के पैर पर पड़ जाता, तो झगड़ा-बखेड़ा ही नहीं, बल्कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुरभारती

।। भाषासु मधुरा दिव्या पवित्रा सुरभारती ।।

चमत्कार का युग

	कई कारखानों के खेत	महाराष्ट्र	जावा	हवाई	समस्त भारत
गन्ने की प्रति एकड़ उपज (टनोंमें)	६४.०	५४.५	५६.०	६२.०	१८.०
चीनी प्रति एकड़ (टनों में)	७.५	६.१५	६.४	६.४	१.८

दक्खन के पठार में यह चमत्कार कैसे हुआ ? जीवन के दूसरे क्षेत्रों की भांति इसमें भी सफलता का कोई छोटा रास्ता (शार्टकट) नहीं है । यह कायापलट प्रकृतिमाता की कृपा या अन्य किसी आकस्मिक परिस्थिति का सुफल नहीं है बल्कि ऐसे उच्च शिक्षित कार्यकर्ताओं के कठोर परिश्रम का फल है, जो भव्य कल्पना और सपनों से प्रेरित हैं और खेती के नवीनतम तरीकों के उपयोग के द्वारा गांवों में क्रांति करना चाहते हैं । दैवी चमत्कारों का जमाना लद चुका है; लेकिन मानव की सूझबूझ और परिश्रम के चमत्कार आज भी हो सकते हैं, होते रहते हैं ।

दि गोदावरी शुगर मिल्स लिमिटेड, बंबई–१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राती-गलोज शुरू हो जाती।

पालकी छज्जे से बाहर आयी। आगे धमा-धम ढोल बजानेवाले बजंघरिये। फिर ताशे, तुरही बजानेवाले। मखमली छड़ी और चांदी की छड़ें लिये चोबदार। उनके पीछे रेशमी धोतियों में पुजारी लोग। फिर बंजारी रंग की मखमल की छत वाली भव्य पालकी! दो सेवादार पालकी कंधे पर लिये थे। पालकी के दोनों ओर आरतियां लिये, सिंगार की हुई चार-चार देवदासियां! पालकी के पीछे मामा तथा अन्य प्रतिष्ठित लोग थे।

पालकी बाहर आ जाने पर भी उसके आस-पास जाना कठिन था। बीच-बीच में पालकी रुकती जाती थी। तब ढोल थम जाते थे। ब्राह्मण स्तोत्रपाठ करते थे और देवदासियां चंवर डुलाती थीं। फिर वे भजन गातीं। और तब फिर ढोल, सींग, ताशे .....और पालकी आगे सरकती।

आगे सरकते-सरकते मैं पालकी के काफी पास आ गया। आगे की चार देवदासियां अपरिचित थीं। अतः पीछे घूमा। भीड़ में राह बनाता चक्कर काटता हुआ उलटी दिशा में गया।..... और वास्तव में जकड़ा गया। पीछे कल्याणी किसी महारानी-सी दिखाई दी। उसके साथ ही महानंदा थी। जरतारी साड़ी पहने थी—शैवाल के रंग की। हाथों में कांच की चूड़ियां, पट्टे और चूड़े! बांहों में नागिन। गले में सोने का हार और गोफ। कानों में मोतियों के कर्णफूल। बालों में आकर्षक फूल। नाक में मोतियों की बड़ी-सी नथ और हाथों में पंचारती।

ओह! कल्याणी का विरोध भूल गया। देवता का प्रसाद भूल गया। एक मनोहर मोह में डूब गया—जी चाहा कि पीछे से चुपके-से जाकर मानू के आंचल की गांठ अपने कुरते के छोर से बांध लूं। यह होश ही न था कि सामने पालकी है। पालकी के बीच से मैं दूसरी ओर महानंदा को देख रहा था। उसका ध्यान इस तरफ नहीं था। वह अपने हाथों की पंचारती को देख रही थी। सारा चेहरा प्रकाश में दमक रहा था और नीराजनों की ऊष्मा से लाल-सुर्ख हो गया था। मैं चाहता था, वह क्षण-भर के लिए नजर उठाये; देखे और लजाये, कुछ और गुलाबी हो।

चक्कर लगाकर पालकी मंदिर में गयी। भीड़ ऐसी थी कि अंदर जाना असंभव हो गया। मैं इधर-उधर देख रहा था। तभी कंधे को छूकर एक आंचल निकल गया। मानू ने घूमकर देखा और आने के संकेत में गर्दन हिलायी। मैं पीछे-पीछे चलता रहा और वह चलते-चलते कहीं अंधियारे में घुल गयी। सिर्फ जरी और बालों में गुंथे फूल दिखाई दे रहे थे। राह अनजानी थी। क्या पता, कहां ले जा रही थी। अंधेरे में लगभग टटोलते हम उसी के घर पिछवाड़े से पहुंचे। उसने ताला खोला और सांकल निकाली। अंदर जाकर उसने दीवट जलायी। बाहर दूसरी ओर लोग ताश खेल रहे थे। मैं उसे देखता रहा। देखते हुए स्वयं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को भूल गया। मैंने हाथ बढ़ाया ही था कि उसने कहा—"ठहरो..... !"

उसने फूलों का एक बड़ा हार बनाया था, वह मेरे गले में डाल दिया। हमने मेले की मिठाई खायी। हार गले में पड़ जाने पर, न जाने क्यों, मेरा पहला उन्माद कम हो गया। अपना विवाह हो जाने का आभास हुआ। कुछ पवित्रता झांक उठी। छाती पर टिके उसके सिर को सहलाता रहा। फिर उसने हाथ हिलाकर दीवट बुझा दी। ..... जगते-जगते भी सवेरा कब हुआ, इसका पता ही न चला।

आंगन का गुल-गपाड़ा शांत हो चुका था। मंदिर का दशावतार का नाटक समाप्त हो चुका था। दर्शक अपने-अपने घर लौट रहे थे। मानू ने खिड़की खोली, तो उजियाला फैल चुका था। मैंने जल्दी से सांकल खोली, कितनी देर हो गयी थी, अब समझ में आया। कमीज के बटन लगाता हुआ मैं बाहर निकला।

मानू दरवाजे में जरा बायीं ओर झुककर खड़ी थी। मैंने कहा—"अच्छा, चलता हूं।" मानू ने एक नकली गुस्से से देखा। फिर हंस दी।

रास्ते के हरे पेड़ों के आकर्षक पत्तों पर पड़े ओस के कण देखता घर लौटा। घर पर मामी राह देख ही रही थी।

"इतनी देर कहां थे ?"

"नाटक देखा।"

"कैसा था ?"

"बहुत सुंदर।"

"नहा लो, जिससे जगवार की तकलीफ न हो।"

चबूतरे पर मामा बड़ी शांति से खर्राटे भर रहे थे।

नहाने चला, लेकिन शरीर पर पानी डालने की इच्छा न होती थी। डर लगता था कि स्पर्श-सुख पानी के साथ वह न जाये। शरीर में एक विचित्र गंध बस रही थी।

* * *

बैलगाड़ी से मैं बंदरगाह की ओर चला। राह में मंदिर के पास कल्याणी और मानू खड़ी थीं। कल्याणी ने मुझे एक थैली दी, जिसमें प्रसाद के नारियल और केले थे। पूछा—"अब कब आओगे ?"

"जल्दी ही आऊंगा !"

जल्दी का अर्थ मानू को पता था। लेकिन वह कुछ न बोली। उसकी आंखें भरी थीं। गाड़ी चल दी, तो उसने हंसने के लिए ओंठ हिलाये। गाड़ी आगे बढ़ने पर कल्याणी तो लौट गयी, लेकिन मानू हाथ हिलाती खड़ी रही। बंदर पर उतरने पर पहाड़ पर स्थित वह बंगला देखा। मानू को लेकर यहीं तो आना है।

नाव चल पड़ी। सारा वातावरण जैसे कांप रहा था। बंदर पर खड़े लोग अपने रूमाल हिला रहे थे। ऐसा आभास हुआ कि उन्हीं लोगों के बीच मानू खड़ी है। आंखों में पानी तैर आया।

नाव जैसे-जैसे आगे बढ़ी, पहाड़ी बंगला बिंदु बनकर धूमिल होने लगा। मेरी आंखों में छलके पानी से वह और भी धूमिल हो गया था। [क्रमशः]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विम्बलडन का विजेता

महादेव

अगर तुम्हें इस प्रकार चौबीसों घंटे रैकेट ही पटकना है, तो अच्छा है पढ़ाई-लिखाई छोड़कर टेनिस ही खेलो। अगर पढ़ना-लिखना है, तो यह रैकेट खूंटी पर टांग दो और उसे फिर कभी हाथ भी मत लगाना।.....

आज से लगभग पंद्रह बरस पहले एक आस्ट्रेलियाई शिक्षक ने जब अपने एक शिष्य से ये शब्द कहे, तो शिष्य ने शिक्षक की दो बातों में से पहली बात मान ली। रैकेट को उसने छाती से लगा लिया और पुस्तकों को ताक पर रख दिया। यह शिष्य था आज का विश्वप्रख्यात टेनिस खिलाड़ी राडनी जार्ज लेवर उर्फ राड लेवर।

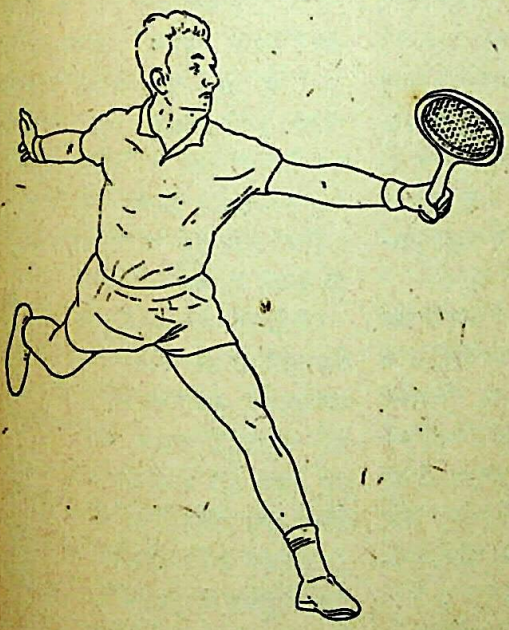

उस समय लेवर की कलाई इतनी मज़बूत और कंधे इतने पुष्ट न थे। लेकिन दिमाग में कुछ तस्वीरें जरूर थीं—जैक क्रैमर, डोनाल्ड बज, बिल टिल्डन, ल्यू होड आदि की। उसने अभ्यास प्रारंभ कर दिया। दो वर्ष तक निरंतर अभ्यास करने के पश्चात् वह क्वींसलैंड (आस्ट्रेलिया) का श्रेष्ठ खिलाड़ी हो गया। आस्ट्रेलिया की ओर से वह सबसे पहले डेविस कप की प्रतियोगिता में एक गैर-पेशेवर खिलाड़ी के रूप में उस समय उतरा, जिस वर्ष ल्यू होड प्रथम बार विम्बलडन चैम्पियन बना।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अभ्यास और लगन से लेवर आगे बढ़ता ही गया। देश-विदेश की प्रतियोगिताओं में जब भी उसे अवसर मिला, उसने डटकर मुकाबला किया। एलेक्स आल्मीडो, फ्रैंक सेग्मैन, ल्यू होड आदि विदेशी खिलाड़ियों के विरुद्ध ही उसने अपना क्रीड़ा-कौशल नहीं दिखाया, बल्कि अपने ही देश-बांधव मार्टिन म्युलिगन, राय इमर्सन आदि को भी मैदान में अच्छी तरह नचा चुका था।

सन १९६१ में जब राड लेवर पहली बार विम्बलडन में आस्ट्रेलिया का प्रतिनिधित्व करने आया, तो सबकी आंखें उस पर टिक गयीं। बायें हाथ से खेलनेवाल इस खिलाड़ी के खेल में गंभीरता थी, स्फूर्ति थी। लेकिन निहायत शर्मीला लेवर कभी किसी को हराने पर भी हंसा नहीं।

५ जुलाई, १९६१ को इंग्लैंड के प्रख्यात सेंटर कोर्ट पर जब लेवर ने भारत के मशहूर टेनिस खिलाड़ी रामनाथन् कृष्णन् को पुरुष एकाकी से भी फाइनल में हराया, तो कृष्णन् ने बड़े गर्व-भरे स्वर में कहा था—"बेहतर खिलाड़ी की जीत हुई।"

और फाइनल में अमरीकी खिलाड़ी चक मैकिन्ली को लेवर ने केवल ५७ मिनिट में तारे दिखा दिये। गणित का विद्यार्थी मैकिन्ली अपने नपे-तुले 'शाट्स', 'प्लेसिंग' और 'हुक' से लेवर को विचलित करने को उद्यत था, मगर लेवर ने 'स्मैश', 'पिक' और 'सर्विस' से उसे उठने नहीं दिया और मैकिन्ली को घुटने टेकने पड़े।

लेवर ने प्रतियोगिता की समाप्ति पर कहा था—"इस प्रतियोगिता में मेरा सबसे जबर्दस्त मुकाबला अगर हुआ है, तो भारत के रामनाथन् से। वे मेरे सबसे जोरदार प्रतिद्वंद्वी थे।"

१९६२ के शुरू में जब आस्ट्रेलिया १९५० के बाद दसवीं बार डेविस कप प्रतियोगिता के फाइनल में पहुंचा, तो मुकाबला इटली से था। लेवर ने इटली के ओलांडो सिरोला तथा निकोला पीट्रेंग्ली को दोनों एकाकी प्रतियोगिताओं में जिस खूबी से हराया, उससे उसके खेल की धाक पुनः जम गयी। वह १९६१ का विम्बलडन चैम्पियन तो था ही, लेकिन दिनोंदिन उसके खेल में निखार आता जा रहा था।

सिरोला को ऐसा लग रहा था, जैसे लेवर खिला रहा हो। ६–१, ६–४ तथा ६–३ से उसने सिरोला को परास्त कर दिया। सिरोला यद्यपि एक श्रेष्ठ खिलाड़ी था, लेकिन लेवर की विशेषता थी, उसकी कलात्मकता। उसका हर 'शाट', हर 'स्ट्रोक' और हर 'कवर' इतना सुंदर था कि देखते ही बनता था।

पीट्रेंग्ली भी अपने समय का श्रेष्ठ खिलाड़ी था और उसने पांच सेट तक लेवर का डटकर मुकाबला किया, लेकिन लेवर की 'वालीज', 'शाट्स' और 'प्लेसिंग्स' से वह उबर नहीं पाया और आस्ट्रेलिया पुनः डेविस कप प्रतियोगिता जीत गया।

१९६२ के विम्बलडन में जब लेवर पुनः विजयी हुआ, तो एक समीक्षक ने बड़े ही रोष से कहा था—"एक विम्बलडन आया और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बना गया; किंतु यह स्पष्ट संकेत छोड़ गया कि विश्व के गैरपेशेवर खिलाड़ियों की सबसे बड़ी टेनिस प्रतियोगिता अभी कुछ वर्ष तक आस्ट्रेलिया के ही कब्जे में रहेगी। आस्ट्रेलियाई खिलाड़ी इस बार भी विम्बलडन लान टेनिस चैंपियनशिप में छाये रहे और पुरुषों की एकाकी प्रतियोगिता में उन्हीं का बोलबाला रहा।"

इस फाइनल में मुलिगन ने यद्यपि लेवर का काफी जमकर मुकाबला किया, लेकिन लेवर ने उसे ५३ मिनिट में ही परास्त कर दिया। दूसरे महायुद्ध के बाद कभी भी विम्बलडन फाइनल का फैसला इतने कम समय में नहीं हुआ था।

१९६२ में ही लेवर ने 'ग्रैंड स्लैम' आस्ट्रेलियाई, अमरीकी, फ्रांसीसी तथा विम्बलडन प्रतियोगिताएं जीतकर पूरा किया।

लगातार १९६१ तथा ६२ का विम्बलडन विजेता और विश्व का सर्वश्रेष्ठ गैरपेशेवर खिलाड़ी हो जाने के बाद लेवर को पेशेवर खिलाड़ी बनने के लिए प्रलोभन दिये जाने लगे। लेवर को जैक क्रैमर के सर्कल में शामिल करने के लिए प्रयत्न प्रारंभ हो गये। उसे पहले जो प्रलोभन दिया गया, वह एक बार उसने ठुकरा दिया। उसे फिर ३० हजार पौंड का वचन दिया गया और यह भी आश्वासन दिया गया कि अगर वह इस वर्ष अमरीकी टाइटल जीत लेता है, तो रकम और भी बढ़ायी जा सकती है। १९६२ की विम्बलडन विजय के बाद जब लेवर ने खेल को ही अपना पेशा बना लिया, तो टेनिस-जगत् में और रौनक आ गयी।

यह कहानी थी सन १९६१ और ६२ की। राड लेवर अब जब पेशेवर हो गया, तो १९६७ तक विम्बलडन प्रतियोगिता में उसका नाम नहीं आया। इस बरस १९६८ में जब विम्बलडन प्रतियोगिता को एक खुली प्रतियोगिता का रूप दिया गया, तो वह पुनः प्रकाश में आया। इस वर्ष इस प्रतियोगिता में जब 'सीडिंग' हुई, तो लेवर उसमें प्रथम आया, और अपने ही देश के टोनी राक को उसने ६–३, ६–४, ६–२ से परास्त कर १९६८ की विम्बलडन चैम्पियनशिप एक बार फिर जीत ली।

विम्बलडन की पुरुषों की एकाकी प्रतियोगिता में लेवर के विजयी होने पर किसी को ज्यादा ताज्जुब नहीं हुआ; क्योंकि इससे पहले ही लोग लेवर को दुनिया का सर्वश्रेष्ठ टेनिस-खिलाड़ी मान चुके थे।

लेकिन इस प्रतियोगिता का जो पुरस्कार २,००० पौंड (३५ हजार रुपये) घोषित हुआ है। उससे लेवर संतुष्ट नहीं है। उसका कहना है–"मैं तो एक पेशेवर खिलाड़ी हूं। दुनिया के मशहूर प्रोमोटर जार्ज मैकाले ने एक साल के लिए मेरे खेल की ९०,००० डालर (६,६७,५०० रुपये) की गारंटी मुझे दे रखी है। इस बार मुझे जो पुरस्कार मिलेगा, वह इस गारंटी में से काट लिया जायेगा, तो मुझे फिर लाभ क्या होगा? इसलिए आर्थिक दृष्टि से मुझे कोई लाभ नहीं हुआ। खैर, मेरी एक इच्छा थी और मैं विश्वविजेता बन गया।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खोखले नारे

'हिन्दी-चीनी भाई भाई' के नारे भारत के लोगों ने बहुत लगाये और बहुत सुने। 'भारत-रूसी भाई भाई' का नारा वे अब भी लगाते और सुनते हैं। लेकिन नारों से न तो नीयत का पता चलता है और न दिल बदलते हैं। अमरीका के आश्वासन अंत तक मौखिक रहे, यह भारत ने देख लिया। रूस के आश्वासन भी जबानी रहेंगे, यह भी भारत जानता है। श्री ख्रुश्चेव ने यकीन दिलाया था कि 'हम हिमालय के दूसरे किनारे पर हैं। किसी चोटी पर खड़े होकर आवाज लगाना, हम तुम्हारी मदद को आयेंगे।"

श्री ख्रुश्चेव का अब रूस में नाम भी नहीं लिया जाता। शायद अब वहां किसी को यह याद भी न होगा कि रूस के प्रधान-मंत्री ने कभी भारत को यह वचन दिया था। रूस के वर्तमान प्रधानमंत्री को भी याद नहीं, क्योंकि रूस की राय में कभी कश्मीर भारत का अंग था; लेकिन अब वह भारत और पाकिस्तान के बीच झगड़े का विषय है, जिसे दोनों देशों को मिलकर तय करना चाहिये। अगर झगड़ा तय नहीं होता है और युद्ध का खतरा होता है, तो श्री कोसीगिन ने अब पाकिस्तान की रक्षा के लिए हथियार देने का भी जिम्मा ओढ़ लिया है।

पाकिस्तान के जिन मंसूबों को पूरा करने के लिए चीन ने टैंक और विमान दिये, वे फालतू पुर्जों की कमी के कारण बेकार न हो जायें, यह जिम्मेदारी रूस ने संभाल ली है और इस दावे के साथ ही यह सब भारत-मैत्री को और ज्यादा मजबूत बनाने के लिए किया जा रहा है।

.....'दूसरे शब्दों में, भारत को इस भुलावे में रखने की कोशिश की जा रही है कि वह राजनीतिक दोस्ती को परंपरागत दोस्ती मानकर खामोश रहे—उफ् भी न करे।

सोचने की बात है कि जब अमरीका सैनिक प्रेक्षक रखकर और संधियों को बांध-कर भी पाकिस्तान को अमरीकी हथि-यारों से सज्जित करके भारत पर हमला करने से नहीं रोक सका, तब रूस, जिसका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पाकिस्तान पर कोई अंकुश और नियंत्रण नहीं, उसे भारत पर हमला करने से कैसे रोक सकेगा? अमरीका ने पाकिस्तान को हथियार दिये थे। वह इस भ्रम में था कि इनका प्रयोग कम्यूनिस्ट देशों के खिलाफ होगा। लेकिन आज रूस के सामने ऐसा कोई भ्रम या भुलावा नहीं। पाकिस्तान ने स्वयं अपने हथियार देनेवालों को किसी भ्रम में रखने की कोशिश नहीं की। आश्चर्य यह है कि हमारा सबसे बड़ा दोस्त रूस ही अब हमें भ्रम या भुलावे में रखना चाहता है।

–रामपाल सिंह (नवभारत टाइम्स)

०००

वृक्ष की आयु

वृक्ष की जड़ें उसे धरती में जमाये रखती हैं। वे जल का अवशोषण करके खनिज पदार्थों का विलयन तैयार करती हैं। तना तथा शाखाएं रसादि का वहन करते हैं और पत्तियों को ऊपर उठाये रहते हैं, ताकि उन्हें सूर्य का प्रकाश मिलता रहे और वे भोजन बना सकें। सूर्य का प्रकाश न मिलने पर पत्तियां भोजन नहीं बना सकतीं।

वृक्ष की टहनियां व शाखाएं ज्यों-ज्यों लंबी होती जाती हैं, वृक्ष भी अधिक ऊंचा होता जाता है तथा उसकी टहनियां, शाखाएं व तना आदि मोटे होते जाते हैं। ज्यों-ज्यों वृक्ष की आयु बढ़ती जाती है, प्रति वर्ष उसके ऐधा (कैम्बियम) में कोशिकाओं की एक परत की वृद्धि होती जाती है। हरएक परत एक वलय (रिंग) बनाती है। इन वलयों को गिनकर वृक्ष की आयु का पता लगाया जा सकता है। जिस वर्ष वर्षा अच्छी होती है, ये वलय मोटे होते हैं और कम वर्षा वाले वर्ष में ये पतले होते हैं। इस प्रकार वृक्षों के इन वलयों से पुराने इतिहास का भी पता चलता है।

वृक्षों में कई नकली वलय भी पाये जाते हैं, जो कि वर्धन-काल में पानी की उचित मात्रा न मिलने पर बन जाते हैं। सूखा, पाला, आग या बीमारी के कारण कई बार या तो यह वलय बनता ही नहीं या फिर अधूरा बनता है। वास्तविक वार्षिक वलय का बाहरी किनारा तीक्ष्ण होता है और नकली वलय का किनारा कुछ रूएंदार होता है।

–विज्ञान-प्रगति

०००

वाणी का उपयोग

जब अंग्रेज भारत पर शासन करते थे और राजा-महाराजा उनसे भी अधिक पाशविक हुकूमत चलाते थे, तब बहुत अधिक विचार-स्वातंत्र्य की आशा नहीं की जा सकती थी। तथापि विद्यार्थी सार्वजनिक मामलों पर ऐसे जोश और तीव्रता से बहस करते थे कि अधिकारियों का रक्तचाप बढ़ जाता था। आज हमें पूर्ण विचार-स्वातंत्र्य प्राप्त है, मगर ऐसा लगता है, जैसे हमारे पास अभिव्यक्त करने के लिए विचार ही नहीं हैं। कितने हैं ऐसे युवक-संघटन, जिन्होंने समाजवाद, गोरक्षा, भाषा-फार-मूला, अणुशक्ति नीति, अन्न-क्षेत्र आदि मुद्दों पर वाद-विवाद किये हैं? क्या युवकों ने इन समस्याओं को हल कर लिया है? इनके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आधुनिक शैली के वस्त्रों के लिये

सरसिल्क

के कपड़े

SIRSILK

अद्भुत लावण्य, बनावट व रंग

सूटिंग्स, पॉपलिन, टफेटा, साटन, छापल व सादे

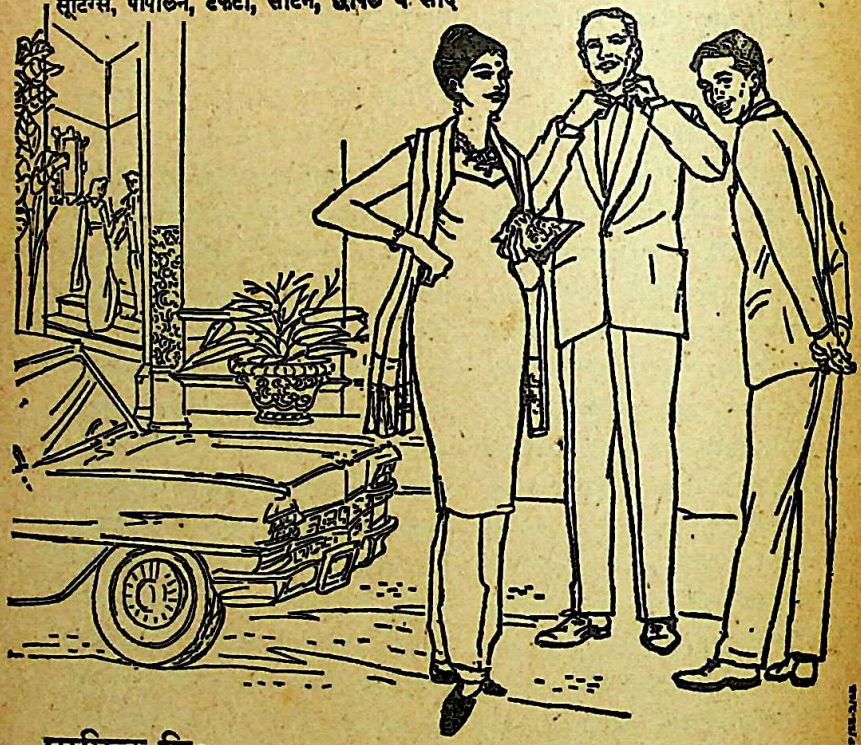

सरसिल्क लि० सिरपुर, कागजनगर, आंध्र प्रदेश

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समाधान खोज लिये हैं? अधिक संभव तो यह लगता है कि हमने बहस की जगह ईंट-पत्थर से काम चलाना शुरू किया है और वाणी का सच्चा उपयोग भुला दिया है।

—बी० बी० जान (आकाशवाणी)

०००

वियतनाम : वनस्पति-हत्या

वियतनाम में जो रसायन छिड़के जा रहे हैं, वे मोटे तौर पर तीन प्रकार के हैं। इनमें एक है २, ४-डी, दूसरा है २, ४, ५-टी (२, ४, ५ ट्राइक्लोरोफिनाक्सि एसिटिक एसिड)। दोनों को छिड़काव में मिश्रित किया जाता है, और सवेरे-सवेरे छिड़का जाता है जब हवा धीमी होती है और वार निशाने पर बैठता है। छिड़काव से और उसके द्वारा उत्पन्न एथिलीन के फैलने से तो खतरे हैं ही, उनके अलावा वृक्ष-वनस्पति के पत्ते समाप्त हो जाने से भी भारी क्षति का खतरा है। प्रायः समझा जाता है कि मिट्टी एक जड़ वस्तु है, जिसमें संयोगवश पौधे उगे हुए हैं। वास्तव में मिट्टी एक अत्यंत सक्रिय जैविक समाज है। किसी-किसी मिट्टी में आधे से ज्यादा वजन अति सूक्ष्म जीवाणुओं का होता है। अगर आप किसी वृक्ष के सारे पत्ते झाड़ दें, तो वह फोटो सिंथेसिस की क्रिया बंद कर देता है। ऐसा होने पर वृक्ष जड़ों के जरिये जो पदार्थों को मिट्टी में छोड़ना बंद कर देता है, जो मिट्टी के जीवाणुओं का जीवनाधार है। यदि ये जीवाणु काम बंद कर दें, तो मिट्टी का स्वरूप सदा के लिए बदल जाता है। बहुत ही उपजाऊ सिल्ट-भरी क्ले-लोम मिट्टी चंद साल में सख्त पड़ जाती है।

दूसरे वर्ग के रासायनिक मिश्रण पिकोलिनिक एसिड जनित द्रव्यों से बनते हैं। इनमें से एक है पिक्लोरैम, जिसके छिड़के जाने की बात अमरीका ने हाल में कबूल भी की है। हाल में प्रकट हुआ है कि यह इतना टिकाऊ होता है कि क्ले-लोम मिट्टी में पूरे ४०० दिन पड़े रहने पर भी इसका केवल ५ प्रतिशत ही जीवशास्त्रीय दृष्टि से नष्ट हुआ। हम नहीं जानते कि वियतनाम में कितना पिक्लोरैम उपयोग किया जा रहा है और कितने एकड़ जमीन पर उसका छिड़काव किया गया है; हम इतना जरूर जानते हैं कि आनेवाले अनेक वर्षों तक इसमें से बहुत-सी जमीन खेती के लिए बेकार रहेगी। मेरा अंदाज है, लगभग एक दशक के लिए।

अब तक मैंने जिन मिश्रणों की चर्चा की है, वे या तो जमीन को पूर्णतया कीटाणुयुक्त कर देते हैं, या खास किस्म के, बड़े पत्तेवाले पेड़-पौधों के पत्ते गिरा देते हैं। इनके अलावा धान पर योजनापूर्वक ऐसे रसायन छिड़के गये हैं, जो मेरे खयाल से आदमी और प्राणियों के लिए बहुत जहरीले हैं।

फसलों का विनाश वियतनाम में हमारे युद्ध अभियान का एक कम ज्ञात पहलू है। यह काम कैकोडिलिक एसिड की मदद से किया जाता है, जिसमें ५४ प्रतिशत संखिया होता है। उसकी अत्यल्प मात्रा से भी मितली, वमन, आंतों की गड़बड़ और जिगर की तरह-तरह की शिकायतें पैदा होती हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दी हिन्दुस्तान शुगर मिल्स लि०

गोलागोकर्णनाथ (जिला-खीरी) उत्तरप्रदेश

ऊंचे दर्जे की सफेद दानेदार शक्कर
शुद्ध अल्कोहल

व

'गोला' कन्फेक्शनरी

के

उत्पादक

रजिस्टर्ड आफिस : ५१ महात्मा गांधी रोड, बम्बई–१
टेलिफोन : २५५७२१ टेलिग्राम : SHREE

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह दावा किया गया है कि कैकोडिलिक एसिड बहुत जल्दी नष्ट हो जाता है, मिट्टी में रिस जाता है और जीवशास्त्रीय दृष्टि से अन्य पदार्थों में बदल जाता है, जो हानिकारक नहीं होते। मगर इस बात के कोई छपे हुए प्रमाण नहीं हैं। आप फोर्ट डीट्रिक (अमरीकी सरकार के रासायनिक शास्त्रागार) के वैज्ञानिकों की बात पर विश्वास कर सकते हैं, तो ठीक है।

आधुनिक युद्ध-इतिहास में यह पहला ही अवसर है कि जानबूझकर रासायनिक तत्वों का उपयोग पौधों को विषाक्त करने, खाद्योत्पादक पौधों को मारने के लिए किया जा रहा है। दलील यह है कि इससे वियतकांग को खाने के लाले पड़ेंगे और जनता को कई सैनिक दृष्टियों से महत्वपूर्ण स्थान खाली करने पड़ेंगे।

—श्री गाल्स्टन (बी. बी. सी. लिसनर)

०००

दैनिक जीवन में विज्ञान

तकनीकी विकास के सामाजिक और बौद्धिक पक्ष पर अच्छी सामग्री का पर्याप्त अभाव है। हाल ही में दिल्ली के एक अखबार में बिजली से दो व्यक्तियों की मृत्यु का एक दुःखद समाचार छपा था। एक व्यक्ति अपने गीले कपड़े सुखाने के लिए तार पर डाल रहा था, अचानक ही झटका लगा और वह तार में उलझ गया। पिता ने उसे बचाने का प्रयत्न किया, तो वह स्वयं भी उलझ गया और दोनों ही समाप्त हो गये।

इसी प्रकार की एक दुर्घटना का अन्य समाचार आज से लगभग एक वर्ष पूर्व मलयालम के अखबार में प्रकाशित हुआ था। जिसमें १० वर्ष के एक बालक का चित्र भी छापा गया था, जिसने बांस की सहायता से बिजली के तार में उलझे व्यक्ति की जान बचायी थी। जब उससे यह पूछा गया कि उसने यह तरकीब कहां से सीखी, तो बालक ने बताया कि उसने इसे एक अखबार में पढ़ा था।

वस्तुतः आज दैनिक उपयोग में आनेवाले तकनीकी साधनों के ठीक उपयोग के लिए तथा उनसे होनेवाले खतरों की रोकथाम के लिए रेडियो-प्रसारण की अत्यंत आवश्यकता है। विज्ञान का संबंध केवल कौतुककारी अंतरिक्ष और सूक्ष्म तकनीकी ज्ञान से ही नहीं है। अपने चारों ओर के परिवेश की चीजें, घर के उपयोग में आनेवाली चीजें और कृमि-हत्या आदि भी हमारे लिए कम आकर्षक नहीं होतीं। क्योंकि इसका संबंध हमारे दैनिक जीवन से होता है, अतः सामान्य पाठक के लिए भी इसमें रोचकता बनी रहती है।

—बालकृष्ण क० नायर(सायंस राइटर)

०००

चावल का विकल्प

मिशिगन विश्वविद्यालय के विदेशी छात्रों ने चावल का स्थान लेनेवाले एक नये खाद्य पदार्थ को खाकर देखा और उसे पसंद किया। चावल के इस विकल्प का नाम 'बेटिना' बीज है। इसे विश्वविद्यालय के रासायनिक इंजीनियरिंग विभाग के प्रोफे-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लोक भविष्य निधि योजना

में शामिल होकर
अपने भविष्य के लिये बचत कीजिये !

इस योजना की स्थापना भारत सरकार ने की है। इसके लिये जमा की रकमें स्टेट बैंक आफ इण्डिया की शाखाओं तथा उसके सहायक बैंकों में स्वीकार की जाती हैं।

रकम जमा करने का तरीका

आप कभी भी और कितनी ही रकम अपने फण्ड में जमा कर सकते हैं, लेकिन आपकी रकम ५ के गुणितों में होनी चाहिये। जमा करने की किस्त भी जितनी आप चाहें बना सकते हैं, लेकिन वह महीने में एक बार से ज्यादा नहीं होनी चाहिये। फण्ड में आप की रकम १०० रु० वार्षिक से कम और १५,००० रु० वार्षिक से ज्यादा नहीं होनी चाहिये। आपकी जमा-रकमों पर ४.८ प्रतिशत के हिसाब से लाभांश दिया जायेगा।

कर-छूटें

जमा की रकमें कर-योग्य आमदनी में नहीं जोड़ी जायेंगी और यह छूट उसी हद तक दी जायेगी, जितना कि आयकर कानून में इसकी व्यवस्था है। ब्याज की रकम पर आयकर नहीं लगेगा और बकाया जमा रकम पर कोई सम्पत्ति कर भी नहीं लगेगा।

रुपये निकालना व ऋण

पूरी रकम १५ वर्ष बाद निकाली जा सकती है। जमाकर्ता की मृत्यु हो जाने की दशा में इस अवधि से पूर्व ही पूरी रकम उसके कानूनी उत्तराधिकारी को सौंप दी जाती है। धन राशि का कुछ भाग निकालने तथा सीमाओं के अन्दर ऋण प्राप्त करने की सुविधायें दी जाती हैं।

कुर्की से सुरक्षा

कोई भी न्यायालय आपकी जमा रकम को कुर्क करने का आदेश नहीं दे सकता।

पेशेवर लोग, जैसे डाक्टर, वकील, अभिनेता, व्यापारी यहाँ तक कि अवकाश प्राप्त व्यक्ति भी अपनी स्वेच्छा से इस भविष्य निधि योजना के जरिये बचत कर सकते हैं। उन्हें भी कर-छूटों की सभी सुविधायें दी जायेंगी।

अधिक जानकारी के लिये स्टेट बैंक आफ इण्डिया और उसके सहायक बैंकों से सम्पर्क कीजिये।

लोक भविष्य निधि योजना

जनता के लिये एक वरदान है

वित्त मंत्रालय, भारत सरकार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नर लायड ई० ब्राउनवेल ने तैयार किया है। प्रोफेसर ब्राउनवेल का कहना है कि 'बेटिना' बीज, जो देखने में ठीक चावल जैसा लगता है, आटे, दालवाली फसलों के सेंके गये फूलों, गेहूं के अंखुओं, सुखाये गये खमीर तथा विटामिन एवं खनिज संपूरकों के मिश्रण से बनाया गया है।

मिशिगन विश्वविद्यालय के इंटरनेशनल सेंटर के छात्रों ने चावल के स्थान पर 'बेटिना' बीज का प्रयोग करके अपने-अपने देशों के व्यंजन तैयार किये। उन्होंने देखा कि इसे चावल की तरह पकाया जा सकता है और इसका स्वाद भी अच्छा है।

'बेटिना' बीज लगभग १० मिनिट में पक जाता है और उसकी लागत चावल के बराबर ही पड़ती है। यह मैकरोनी मशीन जैसे एक तीव्र गति से चलनेवाले प्रेस में तैयार होता है।

प्रोफेसर ब्राउनवेल का विश्वास है कि इस नये खाद्य पदार्थ से उष्ण देशों में कुपोषण की समस्या हल करने में बड़ी सहायता मिलेगी। —संकलित

०००

बिलकुल नयी बात

मैं प्रायः हर दूसरे-तीसरे साल भारत आता रहता हूं। पिछली बार १९६६ में आया था और मैंने देखा कि आप विदेशी मुद्रा के अभाव की समस्या का कैसे समाधान करते हैं। अब फिर आया हूं। इस बीच दो साल मंदी रही है, जिसका प्रभाव सर्वत्र एक-सा नहीं है—कुछ उद्योग बहुत ढीले पड़ गये हैं, जबकि कुछ पूरे जोर से काम कर रहे हैं। दो बार सूखा भी पड़ चुका है, जिसने मंदी का असर और बढ़ा दिया है। ऐसे समय भारत की यात्रा बहुत निराशाजनक हो सकती थी। मगर मैं आपको बता दूं, मेरी यात्रा निराशाजनक नहीं रही। कारण यह है कि भारतीय किसान कैसा आदमी है, भारत का ग्रामीण समाज कैसा है, इसकी बिलकुल नयी छाप मुझ पर पड़ी है।

आप जानते हैं, दूर बैठे हम लोग भारतीय कृषकों के बारे में यही खयाल किया करते हैं—उनका जीवन-यापन स्तर सदा नीचा रहा है, उन्हें सदा बारिश और जलवायु की गड़बड़ों से जूझते रहना पड़ा है, और उनकी भावनाएं, उनके साधन और उनकी महत्त्वाकांक्षाएं शहरी लोगों से बिलकुल भिन्न हैं। मगर अब मैं समझ गया हूं कि यह सब मूर्खतापूर्ण है।

पहला धक्का मुझे तब लगा, जब मैं कलकत्ता पहुंचा। मुझे आई० सी० आई० के श्री सिरिल पिट्स ने बताया कि उनके कार्यकर्ता दल ने उत्तरी पंजाब में ग्रामीण खरीदारों को आई० सी० आई० के उर्वरक कारखाने के १।। करोड़ रुपये के ईक्विटी शेयर बेचे हैं। यह मेरे लिए भारी आश्चर्य का विषय था।

जब मैं बंबई पहुंचा, तो मैंने श्री अरविंद मफतलाल से इसकी चर्चा की। वे बोले—"ओह! आप हमारे बड़ौदा-स्थित उर्वरक कारखाने में चलिये। यह सार्वजनिक क्षेत्र का कारखाना है, इससे काफी फर्क भी पड़ता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है। हमने वहां के किसानों को २ करोड़ रुपये के ईक्विटी शेयर बेचे हैं। और उससे बड़ी बात यह है कि उनमें से ५,००० किसान तो कंपनी की साधारण सभा में भाग लेने सपरिवार आ पहुंचे।" कमाल है, सचमुच कमाल!

मैं मन में सोचने लगा आखिर भारतीय किसान भी दूसरों जैसे ही हैं, वे भी औरों की तरह रहना चाहते हैं। यदि उनके पास भी पैसे हों, तो वे भी औरों की तरह चीज लेना चाहेंगे। यह सर्वथा एक नयी परिस्थिति है। मैंने कई उद्योगपतियों से पूछा कि वे इस संबंध में क्या कर रहे हैं? उनके उत्तर तो मैं यहां प्रकट नहीं कर सकता। मगर उन्होंने जो कुछ बताया, उससे मेरे सामने नयी-सी तस्वीर खिंच गयी। वे ट्रकों में माल लादकर गांवों में भेज रहे हैं। एक कारखाना पहले गांव में अपना उत्पादन बिलकुल नहीं बेच पा रहा था, पिछले साल उसने ६० हजार रुपये का माल ट्रकों से ही बेचा है।

दो भारतीय उद्योगपतियों ने बंबई में मुझसे कहा—"हमने जम्मू में एक दुकान खोली। इसमें काफी खर्च हुआ और सफलता भी संदिग्ध ही थी। मगर जब से वह शुरू हुई, तभी से उससे ३०० रुपये दैनिक की आय हो रही है। अब हमने ऐसी ८९ दुकानें और खोल दी हैं।"

इसी तरह एक अन्य सज्जन ने बताया—"हम तो ट्रकों के दो काफिले बना रहे हैं, जो सामान लादकर नियमित रूप से गांवों का दौरा लगाया करेंगे।"

मैंने यह भी देखा कि परिवहन में कितना सुधार हुआ है। मैं जब श्री मोरारजी देसाई से मिलने गया और जैसे ही हमारी कार अंदर पहुंची, मैंने देखा कि लगभग आधा दर्जन लारियां वहां खड़ी हैं। और सामने लान पर १५० व्यक्ति मौजूद हैं, जो इन लारियों में आये हैं। श्री देसाई उनका स्वागत कर रहे थे। और मैंने सहज ही पूछ लिया—"कौन हैं ये लोग?"

"ये महाराष्ट्र के ग्रामीण हैं, जो छुट्टियों में यात्रा पर निकले हैं और मुझसे मिलने आ गये। आप जानते हैं, महाराष्ट्र से मेरा संबंध रहा है और मैंने उनका स्वागत किया। यह हमारा नया लोकतंत्र है। और यह सब हमें करना ही पड़ता है।" मैंने पूछा—"इस यात्रा के लिए उन्होंने कितना पैसा खर्च किया होगा?" वे बोले—"लगभग पांच-पांच सौ हरएक के हिस्से पड़े होंगे।"

फिर मैं मद्रास में ब्रिटिश हाई कमिश्नर से मिला और उन्होंने बताया कि वे पास के ही किसी स्थान पर मेला देखने गये थे। और वहां उन्होंने लारियां ही लारियां देखीं। लोग उनमें लद-लदकर मेले में आ रहे थे।

आप लोग यह कह सकते हैं कि तब तो पैसे की कमी नहीं है। सो मेरे मन पर लगातार यही छाप पड़ी है कि कम-से-कम कुछ देहाती इलाकों में काफी खुशहाली है, जो मेरे लिए बिलकुल नयी बात है।

—सर नार्मन किर्पिन

(नयी दिल्ली के संवाददाता-सम्मेलन में)

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बड़ा होकर मैं जहाजी बेड़े का कप्तान बनूँगा और सारे संसार की सैर करूँगा तथा दिनभर बहुत सी मॉर्टन की मिठाइयाँ खाऊँगा।

MORTON

विशुद्ध पदार्थों से बनी, मॉर्टन की मिठाइयाँ, क्रीम-टॉफी व टफ्टोबॅनबॅन बहुत ही स्वादिष्ट हैं। आज ही खरीदिये।

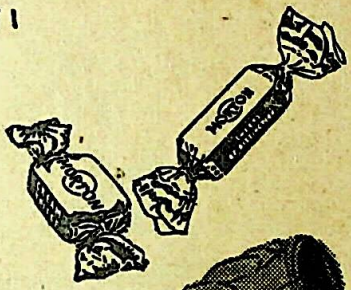

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धवलदंत

टूथ पाउडर

दांतों को निरोग, मजबूत और उज्वल रखता है तथा दंतक्षय को रोकता है।

अभयासन

गोलियाँ

पेट के विकारों के लिए उत्तम इलाज.

पंचारि[illegible]

पाचक और शक्तिवर्ध[illegible]नक के रूप में लेने की सलाह। यह भूख बढ़ाता और स्नायु के तनाव से आराम देता है।

A DEPENDABLE NAME IN HOUSE HOLD REMEDIES
ZANDU
TRADE MARK

झण्डू फार्मास्युटिकल वर्क्स लिमिटेड
बम्बई-२५.

I brothers/M

बवासीर

की पीड़ा से,
बिना ऑपरेशन के,
शीघ्र आराम पाने
के लिये

हडेन्सा

इस्तेमाल कीजिए!

DOL-327/2 HIN

आँखों की सुरक्षा तथा सुंदरता के लिये!

दरबार काजल

इस्तेमाल कीजिये

दरबार सेंध और काजल के निर्माता:-
रामबीर कंपनी बम्बई-१ (भारत)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CM 3 68 HN

इसमें कपड़ा ही महत्वपूर्ण है!

छाता खरीदते समय उसकी उपयोगिता को ध्यान में रखें। (और यह भी कि कपड़ा पक्के रंग का व टिकाऊ हो और इसका आकार सही रहे।) इसके लिये बस छाता ही देख लें कि क्या वह 'सेन्चुरी' का है।

सेन्चुरी के छाते का कपड़ा उत्कृष्ट रुई से बनाया जाता है और अपनी विशेष बनावट के कारण वह टिकाऊ और वाटर-प्रूफ रहता है।

यह कपड़ा विशेष प्रक्रिया से रंगा जाता है व रंग गारण्टी के साथ पक्का रहता है। शानदार रेशमी चमक के लिए इसे 'मर्सराइज्ड' व 'आइनर कलेण्डराइज्ड' किया जाता है।

छाते की दूकानों में सर्वत्र सेन्चुरी के कपड़े से बने छाते सुलभ हैं—आप भी यही छाता खरीदिये—क्योंकि यह सर्वोत्तम है।

सेन्चुरी का छाते का कपड़ा उच्चतम क्वालिटी की गारण्टी है।

वार्षिक मूल्य रु. १२] [मूल्य रु. १.२५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सितंबर (१-९-१९६८) मूल्य रु. १.२५ Regd. No. MH 260

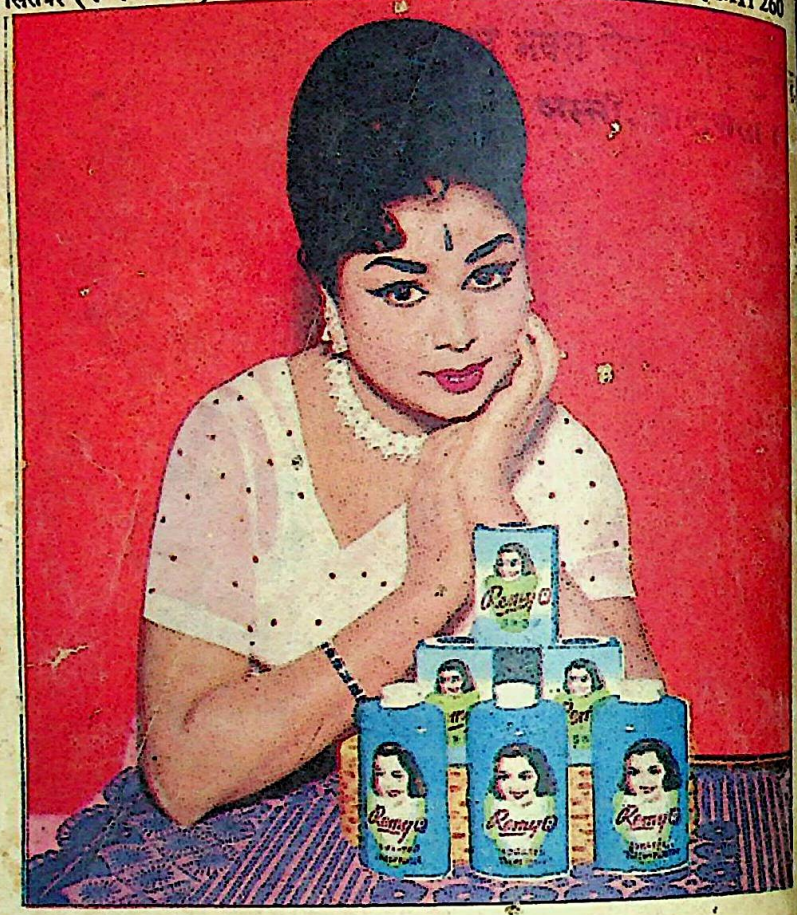

अनुपम सुंदरता के लिए

रेमी®

सौंदर्यप्रसाधन—

इस्तेमाल कीजिये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवनीत

[हिन्दी डाइजैस्ट]

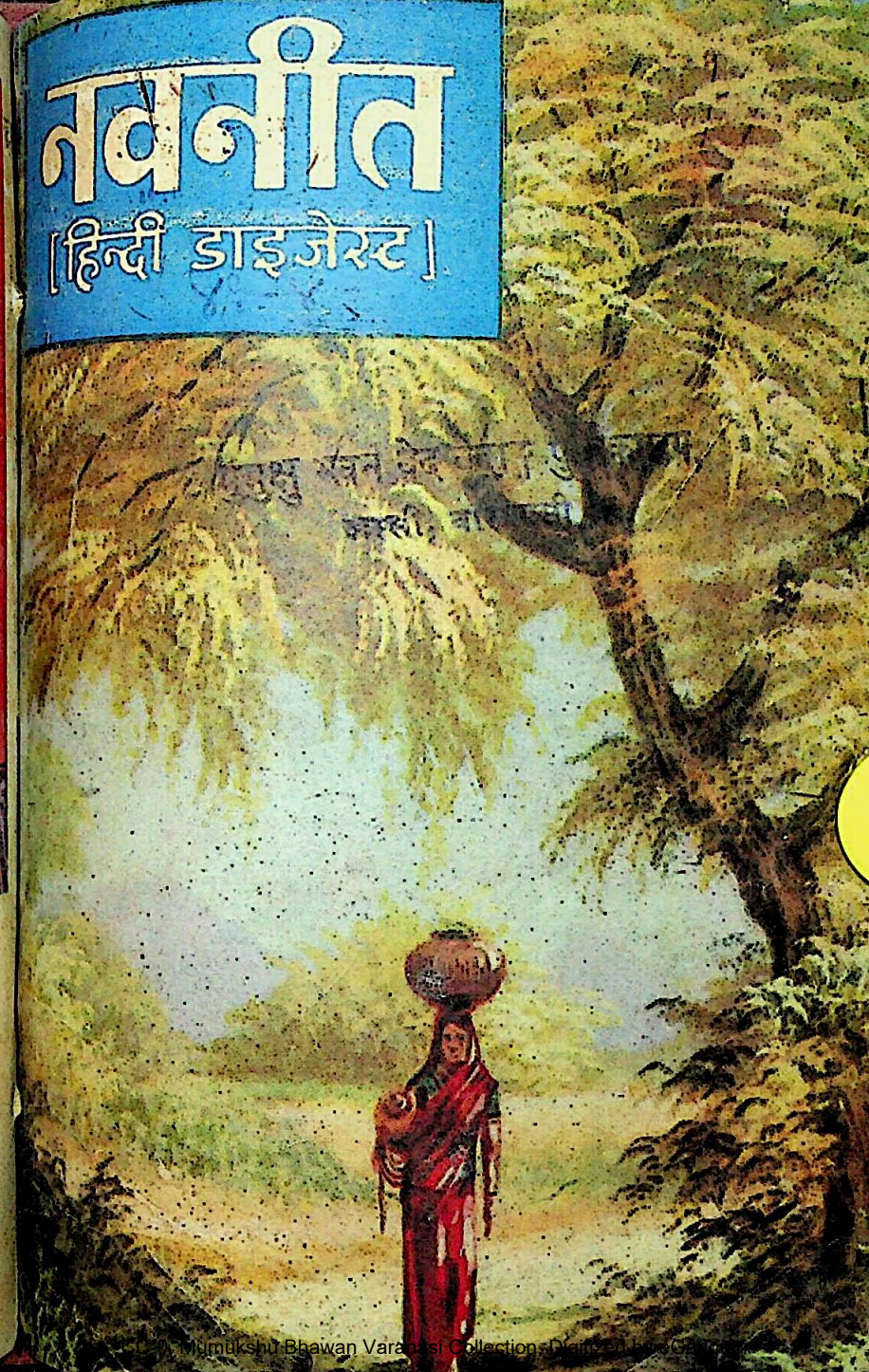

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

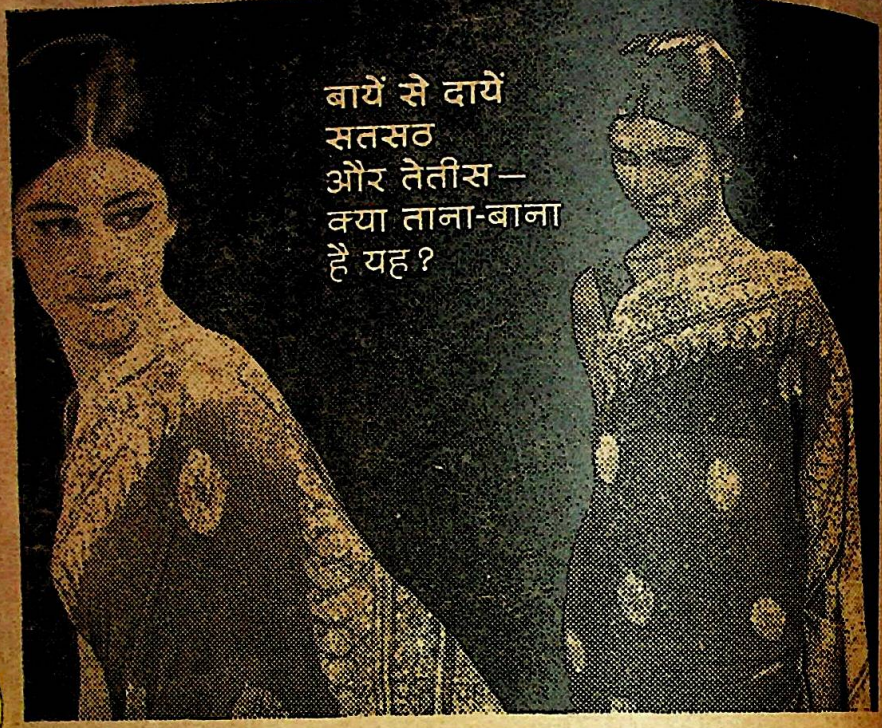
बायें से दायें
सतसठ
और तेतीस—
क्या ताना-बाना
है यह?

बायें से दायें वही सुन्दरी है, उसी साड़ी में। फिर
यह सतसठ और तेतीस का ताना-बाना क्या है?
हाँ, समझा... यह ताना-बाना है केलि-कट साड़ी का,
जिसमें सतसठ प्रतिशत सिंथेटिक यार्न है और
तेतीस प्रतिशत सूती धागा।
इसीलिए तो सुखद शीतल केलि-कट साड़ी में
सिलवटें नहीं पड़तीं। कितनी सुन्दर लगती है वह
इस केलि-कट साड़ी में।

cali—kut special

केलि-कट स्पेशल

बुने हुए कट-वर्क
व सुनहले प्रिण्ट्स की
साड़ियाँ

Shilpi cm 2/80 A

मुखपृष्ठ—'नवनीत प्रकाशन लिमिटेड' मुद्रण विभाग द्वारा मुद्रित—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय,
अस्सी, वाराणसी।

हर हफ़्ते
लन्दन के लिए
13
और
न्यू यॉर्क के लिए ७
बादशाही
सर्विसें

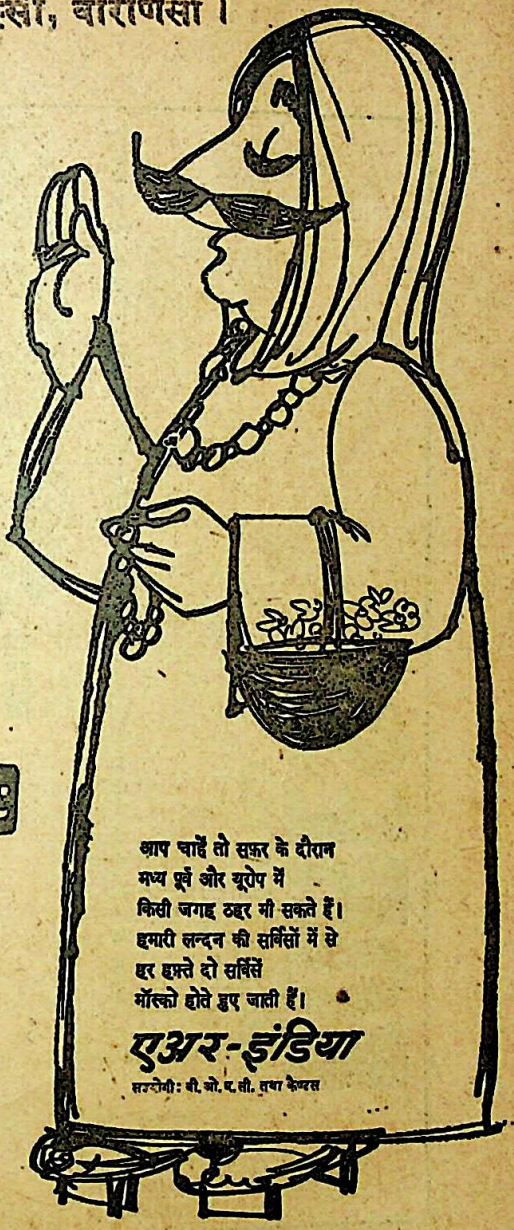

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

KORES
(INDIA) LIMITED

Stencils - Carbon Papers - Typewriter Ribbons - Duplicating Inks - Teleprinter Rolls

FOR OFFICE ACCESSORIES

INTERPUB/KO

Kores (India) Limited, Post Box No. 4559, Plot No. 10, Off Haines Road, Worli, Bombay 18. W.B.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुबह की तरोताज़गी दिनभर महसूस कीजिए

नहाने के बाद बदन पर पॉन्ड्स ड्रीमफ्लावर टाल्क छिड़क लेने से सुबह की तरोताज़गी का मज़ा दिनभर मिलता रहता है।

पॉन्ड्स ड्रीमफ्लावर टाल्क पसीने को फ़ौरन सोख लेता है...कड़ी गर्मी में भी निरन्तर ठंडक और आराम पहुँचाता है। इसकी भीनी-भीनी महक घण्टों बदन पर छायी रहती है। यह एक ऐसा टाल्कम पाउडर है जो बारहों महीने इस्तेमाल किया जा सकता है।

पॉंड्स

ड्रीमफ्लावर टाल्क

आज़ का सबसे महीन टाल्कम पाउडर!

चेसब्रो-पॉंड्स इन्कॉर्पोरेटेड

(सीमित दायित्व सहित यू.एस.ए. में संस्थापित)

I-6986

'नेम पॉंड्स ड्रीम फ्लावर गर्ल' प्रतियोगिता में भाग लीजिये और पुरस्कार जीतिये।

अंतिम तारीख : १५ जुलाई १९६८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

SIRUBBER

moulded rubber parts for trucks and cars

- SIRUBBER kits for Fiat 1100, Hindustan Ambassador and Landmaster
- SIRUBBER kits for front suspension
- SIRUBBER parts for Fargo and Ashok Leyland Comet trucks and Plymouth car

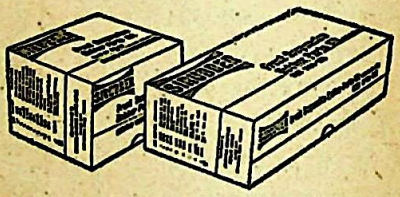

Sirubber moulded parts are superior in quality and are used as original equipment by leading automobile manufacturers.

Most SIRUBBER parts are made from imported synthetic rubber to the most exacting standards for greater resistance to friction and impact. All SIRUBBER parts are rigorously tested and conform to manufacturers' specifications.

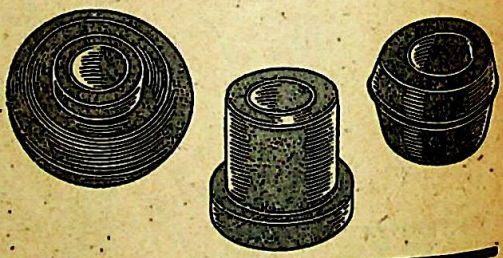

For your requirements, contact:

SUNDARAM INDUSTRIES PRIVATE LIMITED

Industrial Estate, Rubber Unit, Madurai 7

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गौर कीजिए
यह है नवीना का
नया रूप रंग

बाटा की नवीना का फैशन है कोमल व नवल और बनावट है नारी चरण सुशोभन, सुशीतल एवं सुखकर। एड़ी की तरफ छोटी और पंजे की तरफ चौड़ी होने के कारण पैर में आराम से ठीक फिट बैठती है। इसके रंग विरंगे लचीले स्ट्राप हर साड़ी पर खिलते हैं। गोल्डेड सोल और सुन्दर हील से हर कदम में आराम और आनन्द मिलता है।

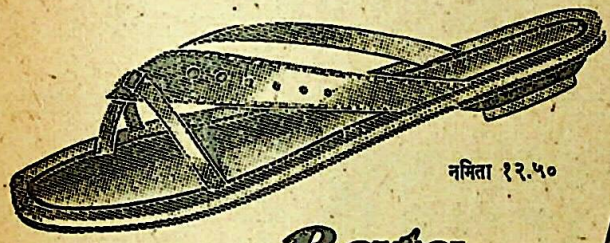

नमिता १२.५०

Bata

नवीना

मंजुल, मृदुल, मनोहर

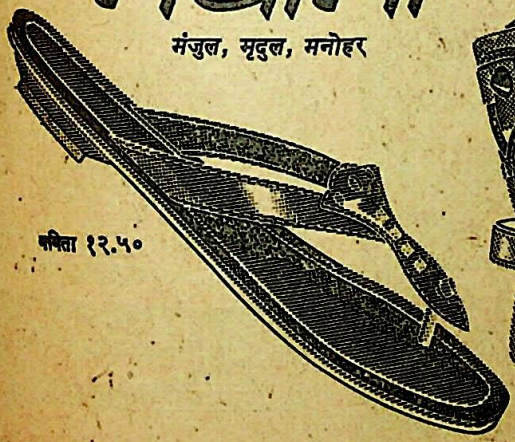

नमिता १२.५०

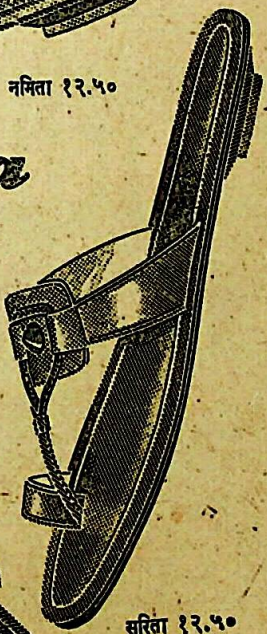

सरिता १२.५०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धवलदंत

टूथ पाउडर

दांतों को निरोग, मजबूत और उज्वल रखता है तथा दंतक्षय को रोकता है।

अभयासन

गोलियाँ

पेट के विकारों के लिए उत्तम इलाज.

पंचारिष्ट

पाचक और शक्तिवर्धक टानिक के रूप में लेने की सलाह। यह भूख बढ़ाता और स्नायु के तनाव से आराम देता है।

A DEPENDABLE NAME ZANDU PRODUCT IN EVERY WORLD MARKET

झण्डू फार्मास्युटिकल वर्क्स लिमिटेड

बम्बई-२५.

brothers/M

बवासीर

की पीड़ा से, बिना ऑपरेशन के, शीघ्र आराम पाने के लिये

हडेन्सा

इस्तेमाल कीजिए!

DOL-327/2 HIN

हर जगह मिलती है

जालिम लोशन

दाद खुजली की पेटेन्ट दवा

प्राण सुधा

पेटदर्द, हैजा, उल्टी (के), दस्त आदि अनेक रोगों की हाजिर जवाब घरेलू दवा।

ओरिएन्टल केमिकल वर्क्स, राऊ (इन्दौर)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आइये, आपका स्वागत है !

मैं इलाहाबाद बैंक का एक अधिकारी हूँ और इस बैंक में खाता खोलने के लिए आपको आमन्त्रित करता हूँ। इस सम्पूर्ण व्युत्क्रितन बैंकिंग सुविधाओं—जैसे, बचत खाता (सेविंग्स बैंक अकाउण्ट), आवर्तक जमा खाता (रिकरिंग डिपाजिट अकाउण्ट), मियादी जमा खाता (फिक्सड डिपाजिट अकाउण्ट), विदेशी विनिमय (फॉरेन एक्सचेन्ज), सेफ डिपाजिट लाकर्स प्रभृति—के साथ आपकी सेवा में सदैव प्रस्तुत हैं। कार्यकुशलता, सद्व्यवहार एवं व्यक्तिगत सेवा तो हमारी अपनी विशेषता है। स्वाभाविक भी है, हमें इस क्षेत्र में १०३ वर्षों से अधिक का अनुभव है। आइये, आपका स्वागत है।

सर्व प्राचीन भारतीय ज्वाइण्ट स्टाक बैंक

स्थापित १८६५

इलाहाबाद बैंक लिमिटेड

(चार्टर्ड बैंक से संबद्ध)

रजिस्टर्ड ऑफिस : १४, इंडिया एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता-१

के० एम्० नन्जप्पा, चेयरमैन डब्लू० स्मिथ, जनरल मैनेजर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सेंचुरी रेयॉन—हमेशा आपके साथ

जब आप सूट, साड़ियाँ, कमीजें या पोशाकें पहनते हैं, सेंचुरी रेयॉन आपके साथ होता है। जब आप अंडरवियर या होजियरी की चीजें पहनते हैं, यहाँ तक कि जब आप स्लीपरों और हैंडबैगों का इस्तेमाल करते हैं, सेंचुरी रेयॉन आपके साथ होता है। चादरों, तकियों के गिलाफों, कम्बलों, ग्रालीचों, तौलियों, नेपकिनों, रुमालों और नेकटाइयों का इस्तेमाल करते समय भी सेंचुरी रेयॉन आपके साथ रहता है। अपने घर के लिये परदे तैयार करें या उसे फर्नीचर से सजाएँ...अपनी कार के लिये, रेलगाड़ियों के लिये या हवाई और समुद्री जहाजों के लिये अपहोलस्ट्री का सामान लें...सेंचुरी रेयॉन तब भी आपके साथ होगा।

हवाई जहाज से सफर करें या बस से, कार से सफर करें या स्कूटर से, या साइकिल से... ट्रैक्टर से अपनी जमीन जोतें या एक्सकैवेटर से जमीन की खुदाई करें, जब भी आप किसी ऐसी चीज का इस्तेमाल करें जो टायरों पर चलती हो...या जब भी आपको मशीनों को चलाने के लिये पट्टों की जरूरत हो...सेंचुरी रेयॉन हमेशा आपके साथ होगा।

जी हाँ! यह बिल्कुल सही है कि सेंचुरी रेयॉन के सूत और टायरकॉर्ड बिल्कुल हमेशा आपके पास है। आप कुछ भी हों, कहीं भी जा रहे हों, सेंचुरी रेयॉन हमेशा आपके साथ है और आप हमेशा सेंचुरी रेयॉन के साथ है।

Century Rayon

सेंचुरी रेयॉन इंडस्ट्री हाउस, चर्चगेट रिक्लेमेशन, बम्बई-१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर्दी-ज़ुकाम और फ़्लू?

एनासिन

सारे शरीर के आराम के लिए बेहतर है क्योंकि यह ४ प्रकार से काम करती है

एनासिन डॉक्टर के नुसखे की तरह दवाओं का बेजोड़ सम्मिश्रण है, इसीलिए यह ४ प्रकार से जल्द आराम दिलाती है :

१. एनासिन सर्दी-ज़ुकाम और उसके कारण होने वाली बेचैनी से आराम दिलाती है—और फ़ौरन।

२. एनासिन फ़्लू में तनाव और बदन के दर्द को कम करती है।

३. एनासिन थकावट को दूर करती है, जोकि सर्दी-ज़ुकाम और फ़्लू के साथ अक्सर हो जाती है।

४. एनासिन उदासीनता को खत्म करती है—और आपके चेहरे पर फिर मुस्कान आ जाती है।

एनासिन सरदर्द, दाँत के दर्द और बदन के दर्द से भी आराम दिलाती है।

झटपट आराम पाने के लिए २ एनासिन लीजिए

Regd. User: Geoffrey Manners & Co. Ltd.

A-29

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और उसका मज़ा,
कहा नहीं जा सकता !

उसके यह नाज़ुक हाथ भले ही खराब रहें,
घर का काम करे हमेशा, पर उसे ख्याल कहाँ
रहे। अपनी नाज़ुक उँगलियों पर ज़रा-सा
होमाकोल ले कर, साफ़ और भरपूर झाग
की खुशबू का मज़ा लीजिए।

क़िफ़ायती और बेकार न जाने वाला
होमाकोल, नये ज़माने के रहन-सहन के
लिये अनमोल। घर-घर में तो चाहिए ही,
अस्पताल, दफ़्तर और कारख़ानों में भी !
होमाकोल तरह-तरह की पैकिंग में
और मन-पसन्द खुशबुओं में !

वॉश बेसिन हो जहाँ
होमाकोल
हो वहाँ !

नन्द किशोर खन्ना एण्ड सन्स
अरुण चैम्बर, वालचन्द टैरेस के सामने, तारदेव रोड, बम्बई-३४ फ़ोन : ३७८०६०

VAPI:NK :1/68 -HI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तेज गर्मी में कितनी ठंडक!

इसलिए टाटा टेक्सटाइल्स की वॉयल्स पहनिये। मजबूत बुनावट के कारण ये वॉयल्स ज्यादा दिन चलती हैं और हर रोज पहनने लायक होती हैं। इनके प्रिंटस् और बढ़िया रंग ऐसे होते है कि इन्हे पहनकर आप के अंग-अंग में दिनभर शीतलता और तरोताजगी समायी रहती है। इन्हे खूब पहनिये, बार-बार धोकर पहनिये, और पूरा आनंद उठाइये।

आप के लिए सबसे अच्छा सौदा टाटा टेक्सटाइल्स की वॉयल्स

TATA Textiles

ULKA-TT-105 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varahasi Collection. Digitized by eGangotri

शिक्षा मंत्रालय

संस्कृत यूनिट

संस्कृत के लिए शोध छात्रवृत्तियां

केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय

भारत सरकार ने प्राचीन शास्त्रीय पद्धति से संस्कृत पढ़े हुए व्यक्तियों को १९६७–६८ में संस्कृत में शोधकार्य करने के लिए छात्रवृत्तियां देने का निश्चय किया है। प्रत्येक छात्रवृत्ति २०० रुपये मासिक की होगी। (छात्रवृत्तियां किन्हें दी जायें, यह निर्णय केंद्रीय संस्कृत बोर्ड की सिफारिश से होगा।)

आवश्यक है कि प्रत्याशी ने किसी भी विश्वविद्यालय अथवा राज्य-सरकार द्वारा संचालित सर्वोच्च प्राच्य विद्या परीक्षा में डिग्री या डिप्लोमा (संस्कृत एम० ए० से भिन्न) प्राप्त किया हुआ हो। जो ऐसी परीक्षा में इस वर्ष बैठ चुके हों या बैठनेवाले हों, वे भी आवेदन दे सकते हैं।

केंद्रीय शिक्षा-मंत्रालय में अर्जी पहुंचने की अंतिम तारीख २० अगस्त १९६८ है। इस तारीख के बाद आनेवाली कोई अर्जी अंगीकार नहीं की जायेगी। अधिक जानकारी और अर्जी के फार्म सेक्शन-अधिकारी, संस्कृत यूनिट, शिक्षा मंत्रालय, (कमरा नं. ३३०, सी विंग, शास्त्री भवन) नयी दिल्ली, से प्राप्त किये जा सकते हैं। अर्जी के फार्म की मांग के साथ अपना पता लिखा आ २३ सें. मी. × १० सें. मी. आकार का लिफाफा भेजें।

डीएपीवी ६८।१३५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मनमोहक सफ़ेद झाग के लिए

लायन ब्राँड
विक्टोरिया
ब्लू ओ ओ बी (OOB)

(लाजवाब नील)

जी हाँ! विक्टोरिया ब्लू ओ ओ बी के थोड़े-से नील द्वारा आपको अपने कपड़ों की सफ़ेदी में फ़र्क नज़र आएगा। यह नील आपके कपड़ों को चमकीली धूप जैसा सफ़ेद रखता है। आपकी कमीज़ों, साड़ियों और चादरों को ज़्यादा सफ़ेद रखने के लिए सिर्फ़ यही एक तरीक़ा है, कि आप विक्टोरिया ब्लू ओ ओ बी नील इस्तेमाल करें।

निर्माता : अल्ट्रामेरिन एण्ड पिग्मेन्ट्स लिमिटेड, अम्बातूर, मद्रास-५३
सोलसेलिंग एजेण्ट्स : कैमडाइस ट्रेडिंग कम्पनी, ३५, कावसजी पटेल स्ट्रीट बम्बई-१

VAPI:UP:2/68-HI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करारी खबर...

आपके मनपसंद
साठे
पिकनिक
बिस्कुट
अब खूबसूरत और
हवासे बचाव करने वाले
कारटन में मिलते हैं।

साठे बिस्कुट एण्ड चॉकलेट कं. लि., पूना-२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

वर्ष १७ जुलाई १९६८ अंक ७

संचालक
श्रीगोपाल नेवटिया

संपादक
सत्यकाम विद्यालंकार

सहकारी
नारायण दत्त
सत्यनारायण मिश्र
गिरिजाशंकर त्रिवेदी

प्रबंध-संचालक
हरिप्रसाद नेवटिया

विज्ञापन-व्यवस्थापक
महेंद्र महेता

इस अंक में

१७ कौन खड़ा है द्वारे !
अविनाश

१८ भारत का आध्यात्मिक राजदूत
ऊ थांत

२० जीवन वह जो आस्थामय हो
मार्टिन लूथर किंग

२५ अमिट रेखाएं
शर्मा, खन्ना, दत्त

२७ शब्दवेध
विजयेंद्र कुमार माथुर

२८ खोज-खबर
मलय

३२ जीवन ने मुझे क्या सिखाया ?
इल्या एहरनबर्ग

३६ पुरखों की थाती
... ...

३७ हमारा विज्ञान, हमारे वैज्ञानिक
चंदन

४१ चांद पर हम क्यों जायें
यूरी गागारिन, लेबेडेव

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

४६	राष्ट्र की एक वेतन नीति हो	संजय
४८	पत्र और परामर्श	... ...
४९	कोढ़ियों का देवता	जे० पी० वास्वानी
५३	जापान ने विज्ञान कैसे अपनाया	डा० रघुवीर
५६	बाजी कबूतर की और तीतर-बटेर की	ब्रजकिशोर नारायण
६१	अमरता की प्रतीक्षा में	रमेश दत्त शर्मा
६५	तड़प उठी महाराष्ट्र की धरती	डा० खड्गसिंह वल्दिया
७१	काफी की महक	मुश्ताक अहमद यूसुफी
७६	जादू की सूई	शरद राकेश
८०	निवारण (कविता)	यज्ञ शर्मा
८०	रात (कविता)	कन्हैयालाल सराफ
८१	पानी शुद्ध रहे	... ...
८३	बर्बरता (कविता)	रमेशचंद्र कुंडलिया
८५	भेड़ियों की तलाश में	यदुनाथ मिश्र
९३	कितनी है अक्ल घोड़े म	वान्स पैकार्ड
९७	स्वर्णहार (बंगला कहानी)	नारायण गंगोपाध्याय
१०५	मेडल (गुजराती कहानी)	चंद्रकांत बक्षी
११३	यंत्र-प्रतीकों द्वारा उपासना	ताराप्रणव ब्रह्मचारी
११६	घर-परिवार	... ...
१२१	सिगरेट के धुएं का बढ़ता हुआ मोह	र० द० श०
१२५	भारत का पूर्वांचल	देवेश ठाकुर
१३६	गठिया	गंगाप्रसाद गौड़ 'नाहर'
१४१	क्या पेरिस जल रहा है ? (पुस्तक-संक्षेप)	लैरी कोलिन्स और लेपियर
१६५	सार-सरोवर	... ...
१७३	बिना बिंब के प्रतिबिंब	सुरेश सिन्हा

चित्रसज्जा :

पापास, हेब्बार, ओके, शेणै, जान तुरोप, राना, प्रोरोकोव ।

हमारा पता :

नवनीत प्रकाशन लि०; ३४१ तारदेव, बंबई ३४; फोन : ३७२८४७

श्री हरिप्रसाद नेवटिया द्वारा नवनीत प्रकाशन लि०, ३४१ तारदेव, बंबई-३४ के लिए प्रकाशित तथा श्रीवेंकटेश्वर प्रेस, ३६/४८ खतवाड़ी बैक रोड, बंबई-४ में मुद्रित।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

मई १९६८ नूतन-पुरातन ज्ञान-विज्ञान का प्रतिनिधि मासिक वर्ष १७ : अंक

कौन खड़ा है द्वारे !

दादू दयाल तब अभी संत नहीं बने थे। एक दिन वे दुकान पर बैठे हिसाब लिखने में मग्न थे। उनके गुरु आकर द्वार पर खड़े हो गये; किंतु दादू को इसकी सुध तक न हुई। बाहर मूसलाधार पानी बरस रहा था। अचानक ही दादू की नजर बाहर की ओर गयी। द्वार पर गुरु को खड़ा देखकर वे तुरंत दौड़कर उनके चरणों से लिपट गये। आंखों में आंसू भरकर बोले—"माफ कर दीजिये गुरु-देव! दुनियादारी के कामों में मैं इतना डूब गया था कि आप आकर दहलीज पर खड़े रहे, तो भी मेरा ध्यान उस ओर नहीं गया।" गुरु ने वात्सल्यपूर्वक कहा—"मैं तो थोड़ी देर से खड़ा हूं; परंतु बेटा, प्रभु तो अनंत काल से तुम्हारे द्वारे खड़ा तुम्हारे बुलावे की बाट जोह रहा है।" दादू के जीवन की दिशा उसी दिन से बदल गयी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भारत का आध्यात्मिक राजदूत

भारतीय आत्मचेतना के आद्य अंतर्राष्ट्रीय उद्घोषक को राष्ट्रसंघ के महामंत्री की श्रद्धांजलि

राष्ट्रसंघ में आने के पहले मैं बर्मा में रामकृष्ण मिशन के कार्य-कलापों से वराबर ही संबद्ध रहा था। राष्ट्रसंघ में आने के बाद मैं बिलकुल ही मशीन बन गया हूं। फिर भी एक बात मुझे बराबर सूझती रहती है कि अगर पश्चिम अपने बौद्धिक दुराग्रहों को छोड़कर स्वामी विवेकानंद के बताये हुए रास्ते पर चले, तो उसकी सारी उलझनें दूर हो सकती हैं और वह बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास की चरम सीमा तक बहुत सहज ही पहुंच सकता है। स्वामी विवेकानंद भारत के ही नहीं, संपूर्ण एशिया के आध्यात्मिक दूत थे। उनकी ऐतिहासिक अमरीका-यात्रा का सबसे बड़ा उद्देश्य था, पूर्व और पश्चिम के बीच एक आध्यात्मिक समीकरण की स्थापना।

एशियावासी होने के नाते मैं यह जानता हूं कि एशिया में लोग साधारणतः देह से अधिक मन को महत्व देते हैं; और मन से भी अधिक महत्व आत्मा को देते हैं। एशिया में शिक्षा की परंपरा ऐसी रही है कि हमें अलग से कोई आध्यात्मिक शिक्षा लेने की आवश्यकता नहीं पड़ती। हमारे अंदर जो कुछ घटता है, उस पर अधिक जोर दिया जाता है। अर्थात् शिक्षा हमारे अंतर के सत्य को उद्घाटित करती है।

पश्चिम में इसके विपरीत स्थिति है। वहां मन अथवा आत्मा के बजाय केवल बुद्धि के विकास पर ही जोर दिया जाता रहा है। आदमी के बौद्धिक विकास को ही पश्चिम में सर्वांगीण विकास माना जाता है। पश्चिम में शिक्षा का उद्देश्य रहा है डाक्टर, वैज्ञानिक और इंजीनियर बनाना; बाहरी दुनिया, अंतरिक्ष के दुर्गम नक्षत्रों की खोज, जैसे चांद और मंगल को भेजे गये राकेट और अंतरिक्ष-यात्रियों का एक विशेष दल तैयार कर लेना ही जैसे पश्चिम के लिए आज सब कुछ हो उठा है। यह चिंता पश्चिम को नहीं है कि उसकी नैतिक और आध्यात्मिक प्रगति, जो मनुष्य की सारी सांसारिक उपलब्धियों से भी बड़ी है, कितनी हुई है। इसीलिए मुझे लगता है कि यह अज्ञान पश्चिम को एक विपदा से खींचकर हमेशा दूसरी विपदा पर ही ले गया है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऊ थांत

स्वामी विवेकानंद ने अपनी ओजस्वी वाणी में पश्चिम को चेतावनी दी थी कि एक साथ बुद्धि और आत्मा, दोनों का विकास नहीं किया गया, तो मानव-समाज को भारी खतरे का सामना करना पड़ेगा। सारी भौतिक उपलब्धियां हित के बजाय, अहित करने लगेंगी। मैं अगर ठीक-ठीक स्वामी विवेकानंद की बातों को समझ सका हूं, तो यह कहूंगा कि स्वामी विवेकानंद ने पूर्व और पश्चिम की सभ्यता और संस्कृति के मूल्यों-मान्यताओं के बीच समन्वय स्थापित करने की चेष्टा की थी।

स्वामी विवेकानंद का दूसरा जीवन-संदेश है, मानवीय संबंधों में सहिष्णुता की स्थापना। सहिष्णुता से उनका तात्पर्य सिर्फ धार्मिक सहिष्णुता ही नहीं है; बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में सहिष्णुता को उन्होंने अपरिहार्य माना है। और ऐसी संक्रांति के युग में, जब सब देश एक दूसरे से राजनीतिक मतों के दुराग्रह के फलस्वरूप उलझते दिखाई पड़ते हैं, एक प्रकार की राजनीतिक सहिष्णुता की अत्यंत आवश्यकता है। अमरीकावासियों और यूरोपवासियों को भी इस बात की ओर ध्यान देना चाहिये।

मुझे पूरी आस्था है कि अगर आज इस बढ़ती हुई घृणा और तनाव के वातावरण में स्वामी विवेकानंद की वाणी को याद किया जाये, तो हममें से हर एक को सहिष्णुता, अर्थात् 'जियो और जीने दो' की भावना को जीवन में उतारने की आवश्यकता महसूस होगी। आज इस बात की जरूरत है कि हर देश एक दूसरे के विचारों को धैर्यपूर्वक सुने और तनाव की स्थिति से बचे। मैं मानता हूं कि स्वामी विवेकानंद ने आज से ६०-६५ वर्ष पूर्व अमरीका-यात्रा के दौरान अमरीकावासियों को सहिष्णुता का उपदेश देकर आज के बहुचर्चित 'सहअस्तित्व' पर ही बल दिया था।

यह कहना कि दो भिन्नधर्मी सभ्यता-संस्कृतियों का संघर्ष दो देशों के बीच युद्ध और तनाव का कारण है, बिलकुल निराधार है। मैं तो समझता हूं कि संघर्ष और तनाव के मुख्य कारण मनुष्य के अंदर छिपे उसके अपने ही दुर्गुण हैं। भौगोलिक सीमा-रेखाएं तो बस बहाना हैं। और इस तथ्य की ओर स्वामीजी ने भी अपनी वक्तृताओं में अक्सर इशारा किया है।

पूर्व में ध्यानयोग के माध्यम से अपने अंतर के सत्य को उद्घाटित करने की विद्या बोधगम्य हो सकती है; मगर पश्चिम को यह पथ बड़ा दुरूह और असंभव-सा लगा। इसलिए स्वामी विवेकानंद ने पश्चिमवालों के लिए ध्यानयोग के कुछ बहुत ही सहज और सरल उपाय बताये। और जैसा कि आप जानते हैं, अमरीका में स्वामीजी की यात्रा के बाद इस ध्यानयोग से संबंधित बहुत सारी चीजें छपीं। लोगों ने उन्हें पढ़ा, समझने की कोशिश की और बहुतों ने स्वामीजी के बताये हुए उपायों को प्रयोग करके देखने-जानने की चेष्टा भी की।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

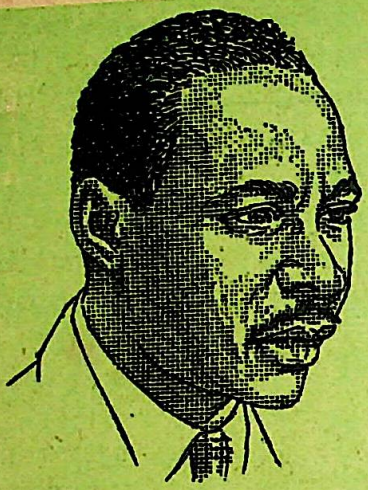

[मार्टिन लूथर किंग

जीवन वह जो आस्थामय हो

जातिभेद के प्रति विद्रोह मेरे रक्त में है

मेरी स्मृति जहां तक भी पीछे लौटती है, मैं पाता हूं कि मुझे वर्णभेद सदा ही बुरी तरह अखरता था और मैं अपने माता-पिता से इसके संबंध में तीखे सवाल पूछा करता था। जब मैं अभी इतना बड़ा भी नहीं था कि स्कूल भेजा जाऊं, तभी मैं वर्णभेद से परिचित हो चुका था। तीन-चार साल की उम्र तक मेरे अभिन्न हमजोली थे दो गोरे लड़के, जिनके माता-पिता अटलांटा में हमारी ही गली में, हमारे घर के सामने दुकान चलाया करते थे। फिर न जाने क्या शुरू हो गया।

जब भी मैं अपने हमजोलियों को बुलाने सड़क के उस पार जाता, उनके माता-पिता कहते कि उनके बच्चे खेलने नहीं आ सकते। उनमें कोई द्वेषभाव नहीं था; बस वे बहाना बना दिया करते थे। आखिरकार मैंने अपनी मां से इसका कारण पूछा। हर माता-पिता को एक-न-एक दिन जीवन की यथार्थताएं बच्चों को समझानी पड़ती हैं। इसी तरह हर नीग्रो माता-पिता के सामने भी वह अनिवार्य घड़ी आ ही पहुंचती है, जब उन्हें अपनी संतान को वर्णभेद की सच्चाई समझानी पड़ती है।

मां ने मुझे गोद में बैठाया और समझाने लगी कि दासता क्या थी और किस प्रकार गृहयुद्ध से उसका अंत हुआ। उसने मुझे दक्षिण की विभक्त प्रणाली को समझाने की कोशिश की। कालों व गोरों के लिए पृथक् स्कूल, रेस्तरां, थियेटर, रहाइशी मकान, पीने के पानी व

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

औषधालयों और शौचालयों पर काले और गोरे की तख्तियां, ये सब चीजें भी समझायीं—प्राकृतिक नियम के रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक व्यवस्था के रूप में।

और तब उसने वे शब्द कहे, जिन्हें इस व्यवस्था को आवश्यक बनानेवाले अन्याय को समझ पाने से भी बहुत पहले से हर नीग्रो का हृदय समझता है। मां बोली—"मगर तुम किसी से कम अच्छे नहीं हो।"

मुझे याद है कि जब मैं बहुत छोटा था, एक बार पिताजी के साथ जूतों की एक दुकान में गया था। दुकान के अगले हिस्से में जो भी खाली कुर्सियां दिखीं, उन पर हम बैठ गये। एक नौजवान गोरा क्लर्क पास आया और शिष्टता-से फुसफुसाया—"अगर आप पीछे की उन सीटों पर आ जायें, तो आपकी सेवा करने में मुझे खुशी होगी।"

पिताजी ने उत्तर दिया—"ये कुर्सियां भी बुरी नहीं हैं। यहां हम काफी आराम से हैं।"

"माफ कीजियेगा," क्लर्क बोला—"आपको यहां से उठना पड़ेगा।"

पिताजी का जवाब था—"या तो हम यहां बैठकर जूते खरीदेंगे, या खरीदेंगे ही नहीं।" और इसके साथ वे मेरा हाथ पकड़कर दुकान से बाहर निकल गये। पहला ही अवसर था, जब मैंने पिताजी को इतना क्रुद्ध देखा। मुझे अब भी याद है कि सड़क पर चलते-चलते वे बड़बड़ाये थे—"चाहे कितने ही बरस तक मुझे यह व्यवस्था सहनी पड़े, मैं इसे स्वीकार नहीं करूंगा।" और उन्होंने उसे कभी स्वीकार नहीं किया है।

मुझे याद है, और एक दिन मैं कार में उनके साथ जा रहा था। भूल से उन्होंने 'स्टाप' के निशान के सामने रुके बिना ही कार आगे बढ़ा दी। पुलिस का एक सिपाही कार के पास आया और बोला—"लाओ बच्चा, जरा तुम्हारा लाइसेंस तो देखूं!" पिताजी ने गुस्से में कहा—"मैं बच्चा नहीं हूं।" फिर मुझे दिखाते हुए बोले—"बच्चा यह है। मैं आदमी हूं और जब तक तुम मुझे आदमी नहीं कहोगे, मैं तुम्हारी बात नहीं सुनूंगा।" पुलिसवाला ऐसा सकपकाया कि जल्दी-से-जल्दी जुर्माने की पर्ची काटकर खिसक गया।

मेरे जन्म के पहले से ही पिताजी ने शहर की बसों में चढ़ना छोड़ दिया था; क्योंकि उन्होंने एक बार काले यात्रियों की निर्ममतापूर्ण मार-पिटाई होती देखी थी। उन्होंने अटलांटा में सब अध्यापकों को समान वेतन दिलवाने के आंदोलन का नेतृत्व किया था और अदालतों में टिकटिकी हटवाने में वे कारण बने थे।

एबेनेजर बैप्टिस्ट गिरजे के पादरी के रूप में (जहां वे आज भी चार हजार धर्मप्रेमियों की प्रार्थना-सभाओं के संचालक हैं) नीग्रो समाज पर उनका गहरा प्रभाव है और शायद गोरों ने भी उन्हें अनिच्छापूर्वक आदर अर्पित किया है। इस विरासत के रहते यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि मैंने भी वर्णभेद से नफरत करना सीखा और उसे बौद्धिक दृष्टि से असंगत और नैतिक दृष्टि से नितांत असमर्थनीय माना।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भेदहीन समाज के लिए हमें कीमत चुकानी होगी

जातीय न्याय के संघर्ष में हिंसा की व्यर्थता हाल के नीग्रो दंगों में बड़े दुःखद ढंग से उभरकर सामने आयी है। दंगों में कोई बड़ी ही दर्दनाक, विषादजनक बात होती है। हम उनमें चीखते-चिल्लाते बच्चों और क्रुद्ध बालिगों को असाध्य विघ्नों के साथ बेबस और निरुद्देश्य जूझते देखते हैं। हम उनके दिलों में बहुत गहराई में आत्मविनाश की कामना, आत्मघात की इच्छा छिपी हुई देख सकते हैं।

जब कोई हिंसा के हिमायतियों से यह कहलवाने की कोशिश करता है कि कौन-से (हिंसात्मक) काम कारगर होंगे, तो उनके उत्तर सरासर बेतुके होते हैं। कई बार वे वर्ण-भेद समर्थक सरकार और स्थानीय शासन-संस्थाओं को उलट देने की बातें करते हैं। यह नहीं समझ पाते कि आज तक कोई भी आंतरिक क्रांति हिंसा द्वारा सरकार को पलटने में सफल नहीं हुई है, बशर्ते वह सरकार सेना की वफादारी और सेना पर नियंत्रण न खो चुकी हो। और जिसका भी दिमाग ठीक-ठिकाने है, वह जानता है कि संयुक्त राज्य अमरीका में यह बात नहीं होगी।

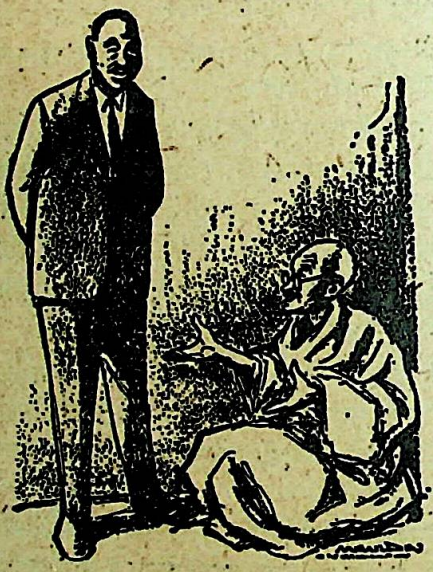

हत्यारे भी कैसे अजीब हो हैं डा० किंग ! वे समझते हैं, उन्होंने आपको खत्म कर दिया।

[माल्डिन, 'शिकागो सन टाइम्स' में]

हिंसा की व्यावहारिक पंगुता से भी बड़ी बात है, अंतरात्मा को अपील करने की उसकी असमर्थता। 'काली शक्ति' के कई समर्थक अंतरात्मा को अपील करने को असंबद्ध बात समझते हैं। 'काली शक्ति' के एक समर्थक ने कुछ ही दिन पहले मुझसे कहा था- "भाड़ में जायें अंतरात्मा और नैतिकता। हमें तो शक्ति चाहिये।"

मगर शक्ति और नैतिकता को सदा साथ-साथ चलना चाहिये-एक दूसरे को लागू करते हुए, एक दूसरे को पूरा करते हुए, एक दूसरे को उदात्त बनाते हुए। शक्ति की तलाश में मैं नैतिकता की चिंता को नजरअंदाज नहीं कर सकता। शक्ति के संबंध में मेकियावेली

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऐसी आदर्शहीन मान्यता को अपनाने के लिए विवश किये जाने से मैं इन्कार करता हूं। शक्ति का अच्छे-से-अच्छा रूप क्या है? बल का सही प्रयोग। अल्फ्रेड महान के शब्द आज भी सत्य हैं कि "शक्ति केवल तभी अच्छी है, जबकि जिसके हाथ में शक्ति है, वह भी अच्छा हो।" अहिंसा शक्ति है; किंतु वह शक्ति का सही और समुचित उपयोग है। रचनात्मक रूप से, वह गोरे और काले दोनों को तार सकती है।

गोरे अमरीकियों में से बहुसंख्यक अपने आपको नीग्रो लोगों को न्याय दिलाने के लिए प्रतिबद्ध समझते हैं। वे मानते हैं कि मूलतः अमरीकी समाज न्याय-स्थापना और जातिभेद-हीन समरस मध्यमवर्गीय आदर्श समाज की प्रतिष्ठा के लिए अनुकूल है। परंतु दुर्भाग्य से यह कोरी कल्पना है, जिसे आत्मप्रवंचक अभिमान ने जन्म दिया है। जब कोई मिथम या सेल्मा कांड हो जाता है, तो संकट की मनःस्थिति में कानून पास किये जाते हैं; लेकिन वहां कानून पर बाकायदा हस्ताक्षर हुए कि जोश ठंडा पड़ जाता है। कानून का पास कर दिया जाना ही वास्तविक सुधार समझ लिया जाता है।

अब तक परिवर्तन का असली खर्चा देश को बहुत सस्ता पड़ा है। जो सीमित सुधार हुए हैं, वे कौड़ियों के दाम मिले हैं। भोजनालय, पुस्तकालय, बगीचे, होटल और दूसरी सुविधाओं का उपयोग नीग्रो लोगों को करने देने के लिए न कोई खर्चा करना पड़ता है, न टैक्स लगाने पड़ते हैं।

असली खर्च की नौबत तो आगे आनेवाली है। और गोरों का बढ़ता आ प्रतिरोध उसी सच्चाई के भान का सबूत है। नीग्रो लोगों को अभी जो कमखर्चीली शिक्षा दी जाती है, उसकी जगह यदि ऊंचे स्तर की शिक्षा की व्यवस्था करनी है, तो उसके लिए पूरा दाम चुकाना पड़ेगा। मतदाताओं की सूचियां निर्माण करने की अपेक्षा, नौकरियां निर्माण करना अधिक कठिन और खर्चीला काम है। बसों और भोजनालयों में से भेदभाव मिटाने की अपेक्षा, लाखों की आबादीवाली गंदी बस्तियों को मिटाना अधिक जटिल काम है। ये हैं आज के जातीय दंगों के असली और गहरे कारण।

जातिवाद की जड़ें बहुत गहरी जमी होने के कारण, और इस अहसास के कारण कि नीग्रो लोगों की मांगों की वजह से समाज के ढांचे में परिवर्तन आवश्यक होंगे—उत्तर और दक्षिण में गोरों के प्रतिरोध का नया दौर शुरू हुआ है। ऐसी एक तीव्र मनोभावना बनने लगी है कि नागरिक अधिकार आंदोलन को एकदम ठप कर दिया जाये, या सिर्फ घुटनों के बल चलने दिया जाये। नीग्रो लोगों की मांगें, जो कल तक प्रशंसा और समर्थन का विषय थीं, अब बहुतों को उबानेवाली, अनावश्यक और जीवन के आनंदोपभोग में खलल डालनेवाली लगने लगी हैं। 'काली शक्ति' के नारे और जातीय दंगे गोरों के प्रतिरोध का कारण नहीं, अपितु उसका परिणाम हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अहिंसा मेरा ध्रुवतारा है, प्रेम मेरा अधिकार

कई लोगों ने मुझसे कहा है—"आज नया नारा हिंसा का है, इसलिए अगर आप अहिंसा के बारे में अपने विचार नहीं बदलेंगे, तो क्या इस बात का खतरा नहीं है कि आप गंदी बस्तियों में रहनेवाले (नीग्रो) लोगों से कट जायेंगे और अलग पड़ जायेंगे ?"

मेरा उत्तर हमेशा एक ही रहा है। वैसे तो मुझे विश्वास है कि नीग्रो लोगों का विशाल बहुमत हिंसा को अस्वीकार करता है; परंतु यदि वे उसे अस्वीकार न करें, तो भी मैं बहु-सम्मति (कान्सेन्सस) का नेता बनने को तैयार नहीं हूं। क्या सही है, क्या गलत—इसका निर्णय मैं जनमत-गणना या जमाने के रुख के आधार पर करने को तैयार नहीं हूं।

मेरा खयाल है कि जर्मनी में ऐसे नेता भी थे, जो यहूदियों के साथ हिटलर जो बर-ताव कर रहा था, उसके सचमुच विरुद्ध थे। मगर उन्होंने जनमत-गणना की और देखा कि यहूदियों के साथ द्वेष करना जमाने का रुख है। "ज़माने के साथ चलने" और "लोगों से संबंध रखने" के लिए वे मानव-इतिहास के एक सर्वाधिक कलंकपूर्ण पाप के आगे झुक गये।

वास्तव में, सच्चा नेता बहुसम्मति का खोजी नहीं, बल्कि बहुसम्मति का निर्माता होता है। एक अवसर पर मैंने कहा था—"अगर संयुक्त राज्य अमरीका का प्रत्येक नीग्रो हिंसा को अपना ले, तो मैं वह एकाकी आदमी बनना पसंद करूंगा, जो उपदेश देता रहेगा कि यह रास्ता गलत है।" शायद यह गर्वोक्ति-सी लगी थी। लेकिन उसके पीछे ऐसी कोई भावना नहीं थी। वह तो सिर्फ मेरा यह कहने का ढंग था कि मुझे सबके साथ चलने-वाले के बजाय, अपनी आस्था के साथ चलनेवाला आदमी होना पसंद है। इंसान कभी-कभी जीवन में कोई ऐसी मूल्यवान और अर्थपूर्ण आस्था विकसित कर लेता है कि वह अंत तक उस पर डटा रहना पसंद करता है। अहिंसा में मैंने यही चीज पायी है।

निहत : टी० ए० राना

काल-प्रवाह उन व्यक्तियों और समुदायों के खंडहरों से पटा पड़ा है, जिन्होंने घृणा और हिंसा के आगे आत्मसमर्पण कर दिया। अपने राष्ट्र के उद्धार के लिए, मानव-जाति के उद्धार के लिए हमें दूसरे ही मार्ग का अनुसरण करना चाहिये। इसका यह अर्थ नहीं कि हम अपने जोरदार प्रयत्न छोड़ दें। अपनी रत्ती-रत्ती शक्ति हमें अपने राष्ट्र को वर्ण-विद्वेष के भूत के चंगुल से छुड़ाने में लगाये रखनी है। किंतु यह आवश्यक नहीं कि इस प्रक्रिया में हम प्रेम करने का अपना अधिकार और कर्तव्य छोड़ बैठें।

[स्वर्गीय किंग के अंतिम लेख से]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मासूम इच्छा

आज बाजार में बाबू ..... मिल गये। वे दफ्तर में मुझसे तेरह-चौदह साल सीनियर थे। जब वे हमारे दफ्तर में नियुक्त होकर आये, उनका विवाह हुए सात-आठ साल हो चुके थे। पत्नी से उनका बड़ा गहरा अनुराग था। मगर उनके दांपत्य में एक गहरा विषाद छाया हुआ था। घर बसाने के लिए पितृगृह आने के चार-पांच दिन बाद ही पत्नी को भयंकर पक्षाघात हो गया और तबसे बिस्तर पर पड़ी थीं। एक बार घर-गिरस्ती की बातें करते हुए मुझसे वे बोले थे—"भाई साहब, बाल-बच्चों की तो कोई आशा है ही नहीं। उसकी एक छोटी-सी इच्छा है कि किसी दिन मेरे साथ शाम को टहलने जाये। .....अभी तो शाम को बरामदे में खाट बिछवाकर मुझे टहलने भेज देती है और मुझे लौटते देखकर अपने मन को मना लेती है कि वह भी टहल आयी।" कुछ साल बाद उनका तबादला हो जाने से वे कहीं अन्यत्र चले गये और मैं रिटायर हो गया। वर्षों बाद आज मिलते ही मैंने उनकी पत्नी के स्वास्थ्य के बारे में पूछा। बोले—"भाई साहब, वह दो साल पहले मुझे छोड़ गयी।.....खाट पर से कभी उठी नहीं .....और उसकी जो मासूम-सी इच्छा थी कि एक दिन मेरे साथ टहलने जाये, भगवान ने कभी पूरी नहीं होने दी।"

विधि की क्रूरता का बड़ा तीव्र अहसास मुझे हो रहा है। —वैशंपायन शर्मा

०००

मेरे पड़ोसी

बिनमांगी सलाह दुनिया में सबसे सस्ती और सुलभ चीज है। मैं कभी उस पर कान नहीं देता। कई बार इसका मुझे कुछ नुक्सान भी हुआ है। लेकिन एक प्रसंग में जबर्दस्त लाभ हुआ है।

जब मैंने अंबाला में घर-गिरस्ती बसायी, तो पड़ोस के धींगड़ाजी से परिचय हुआ, जो धीमे-धीमे घनिष्ठता में बदलता गया। हमारे मकान-मालिक लाला.....जी भी उसी मकान में दूसरी मंजिल पर रहते थे। उन्होंने मुझसे दो-तीन बार स्वयं ही बात चलाकर कहा—"खन्नाजी, धींगड़ा साहब से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ज्यादा घनिष्ठता न बढ़ाइये, जरा खतरनाक आदमी है।" मैंने सुनी अनसुनी कर दी। हंसमुख संवेदनशील धींगड़ा में मुझे कोई खतरनाक बात न दिखाई दी। हमारी मित्रता पूर्ववत् जारी रही और मकान-मालिक लालाजी की आंखों में खटकती रही। हालांकि लालाजी से मेरे संबंधों में कोई बिगाड़ न आया।

जिस फर्म में मैं कैशियर था, उसने कुछ साल पहले गबन का मामला बनाकर मुझे पकड़वा दिया। दस हजार रुपये की जमानत जमा करानी थी। इतने पैसे कहां से जुटते! मकान-मालिक लालाजी ने साफ इन्कार कर दिया। धींगड़ाजी ही आगे आये। जिंदगी-भर खाने-पहनने में कटौती करके, मकान बनवाने के लिए जमा किये दस हजार पये जमानत में चढ़ा दिये। यही नहीं, मेरे बचाव का केस तैयार कराने में दिन-रात एक कर दिये। उनकी सहायता और मेरे पुण्य से मैं बेदाग छूट गया।

सोचता हूं, लालाजी का अयाचित हितोपदेश मान लिया होता, तो मेरा क्या हश्र होता! —देवेंद्र कुमार खन्ना

०००

पहला पाठ

पत्रकारिता का भूत बहुत बचपन में ही सिर पर सवार हो गया था। गुरुकुल में तीसरी या चौथी में पढ़ते समय एक हस्तलिखित पत्रिका शुरू कर दी थी—'लोकसेवक'। उसके दीपावली अंक के प्रथम पृष्ठ के लिए एक कविता की आवश्यकता थी। एक सज्जन से प्रार्थना की, जो गुरुकुलीय कवि-सम्मेलनों में कवित्त आदि पढ़कर वाहवाही लूटा करते थे। बोले, कल आ जाना।

अगले दिन पहुंचा तो सुडौल अक्षरों में कविता लिखी हुई थी। "द्विज वेद पढ़ें, सुविचार बढ़ें, बल पाय चढ़ें, नित ऊपर को....." आदि चार पंक्तियां और नीचे उन सज्जन का नाम। मैंने भी निःशंकभाव से उसे पत्रिका में उतार दिया।

चार दिन बाद नौवीं के एक विद्यार्थी ने पत्रिका पढ़ते-पढ़ते पूछा—"यह कविता .....जी के नाम से कैसे छप गयी?" मैंने कहा—"कैसे क्या? उन्हीं की कविता है।" इस पर उस लड़के ने "अच्छी बात है देखो" कहकर अपनी एक पाठ्य पुस्तक खोलकर सामने रख दी।

"द्विज वेद पढ़ें, सुविचार बढ़ें, बल प्राय चढ़ें नित ऊपर को" आदि चार पंक्तियां, फिर चार-चार पंक्तियों के तीन पद, और उनके नीचे यह नाम—महाकवि पंडित लाबूराम 'शंकर'।.....सिर चकरा गया।

साहित्यिक चोरी के साथ यह मेरा प्रथम परिचय था। —नारायण दत्त

०००

ईश-प्रार्थना

एक शाम मंदिर के द्वारे एक बूढ़ा और एक युवक प्रार्थना कर रहे थे। बूढ़ा लंगड़ा था। बैसाखी टेके खड़ा था। उसके मुख पर अपार शांति विराज रही थी। नवयुवक ने बूढ़े का मजाक उड़ाते हुए उपहास के स्वर में कहा—"अब इस बुढ़ापे में भी कौन-सी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक मनोरंजक शब्द है–'सौगंध'। इसका हिन्दी में सामान्य अर्थ, शपथ अथवा कसम है। ब्रजभाषा की 'सौंह' भी 'सौगंध' की ही विकृति है। (सौंह करे भौंहन हँसै-बिहारी।) पंजाबी 'सौं' भी सौगंध का ही संक्षिप्त रूप है। सौगंध का मूल अर्थ है-सुगंध से संबंधित कोई भाव या क्रिया। किंतु सुगंध और शपथ में किस प्रकार से परस्पर संबंध स्थापित हुआ? प्राचीन काल में भारत में यह सामान्य प्रथा थी कि माता-पिता अपने बच्चे का सिर सूंघकर उसके प्रति वात्सल्य प्रकट करते थे। वाल्मीकि रामायण में वर्णन है कि वन जाने से पूर्व राम जब कौशल्या से मिलने के लिए गये, तो स्नेहमयी जननी ने बाहुओं से गाढ़ आलिंगन करते हुए अपने प्यारे पुत्र का सिर सूंघा–स मातरमुपक्रांतागुपसंगृह्य राघवः परिष्वक्तश्च बाहुभ्यामवघ्रातश्च मूर्धनि (अयोध्याकांड, सर्ग २०)। वास्तव में घ्राणशक्ति का यह उपयोग मानवेतर प्राणियों में भी मिलता है, जैसे गाय को अपने नवजात बछड़े को सूंघकर प्यार करते हुए सभी ने देखा होगा। स्नेह-प्रदर्शन की इस सामाजिक प्रथा के आधार पर ही एक ऐसा रिवाज भी चल पड़ा कि जब कभी किसी व्यक्ति को किसी प्रकार की शपथ लेनी होती थी, तो वह अपनी शपथ की गुरुता दर्शाने के लिए अपने बच्चे के प्रति हृदय के वात्सल्य को ही दांव पर लगा देता था और शपथ की क्रिया बच्चे का सिर सूंघकर संपन्न करता था। कुछ ऐसा ही भाव उस प्रथा में भी निहित है, जिसमें आज भी हमारे यहां देहात में कहीं-कहीं बच्चे के सिर पर हाथ रखकर माता या पिता कसम खाते हैं। इस प्रकार धीरे-धीरे शपथ का संबंध ही सूंघने के भाव या उसकी क्रिया अर्थात् सौगंध से जुड़ गया और शपथ और सौगंध कालांतर में पर्यायवाची ही बन गये।

–विजयेंद्र कुमार माथुर

कामना शेष रही है, जो इतनी तन्मयता से प्रार्थना में लीन हुए जा रहे हो?". बूढ़े के मुख पर मुस्कान की एक हल्की-सी रेखा दौड़ गयी। वह आत्मीयता से बोला –"प्रभु से प्रार्थना कर रहा हूं, मेरी तरह वह किसी और को लंगड़ा न बनाये, नहीं तो भव की तप्तता घटने के स्थान पर और बढ़ेगी।"

नवयुवक लज्जित हो चलता बना। बूढ़े के ये शब्द आज भी मेरे कानों में मंत्रों से गूंज उठते हैं। –लक्ष्मीनारायण 'शोभन'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खोज-खबर

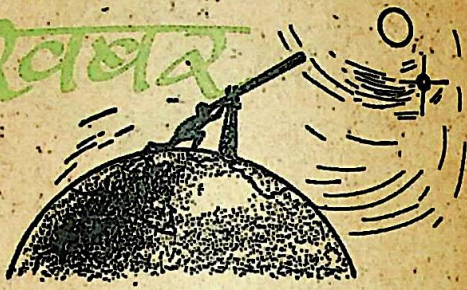

मलय

नशा नहीं, नाशक

एल० एस० डी० अब हमारे मुल्क के पढ़े-लिखे लोगों में चर्चा के सबसे गर्म विषयों में से एक बनता जा रहा है। आम तौर पर लोग यह समझते हैं कि भांग, चरस और अफीम वगैरह की तरह एल० एस० डी० भी एक नशा मात्र है, जिसके सेवन से कुछ देर के लिए गमगीनी से छुटकारा पाया जा सकता है। मगर बात सिर्फ इतनी ही नहीं है। पिछले कुछ दिनों में जो व्यापक खोजें एल० एस० डी० को लेकर हुई हैं, उनके परिणाम चौंका देनेवाले हैं। एल० एस० डी० का असर केवल उसके उपभोक्ता पर ही नहीं, बल्कि आगे आनेवाली पीढ़ियों पर भी पड़ सकता है, ताजा खोजों से यह बात साफ नजर आने लगी है।

न्यूयार्क स्टेट साइकिएट्रिक इंस्टिटचूट और ब्रान्क्स स्टेट हास्पिटल के जी० जे० एलेक्जेंडर, बी० ई० माइल्स, जी० एम० गोल्ड और आर० वी० एलेक्जेंडर ने इसका अध्ययन किया है कि गर्भावस्था पर एल० एस० डी० का क्या प्रभाव पड़ता है। एक परीक्षण के दौरान कई चुहियों को एल० एस० डी० के इंजेक्शन दिये गये। परिणाम-स्वरूप उनमें से कुछ चुहियों को शीघ्र ही गर्भपात हो गया, कुछ के बच्चे मरे हुए पैदा हुए तथा शेष के बच्चे जिंदा तो जरूर थे, मगर उनमें से कई का स्वाभाविक विकास नहीं हो सका था।

इसी प्रकार के परीक्षण कुछ अन्य वैज्ञानिकों ने भी किये हैं और उनसे भी कुछ इसी प्रकार के परिणाम सामने आये हैं। बहरहाल पिछले दिनों अमरीका और यूरोप के कई देशों में तेजी से एल० एस० डी० की खपत बढ़ने लगी है। अगर इस पर नियंत्रण नहीं किया जा सका, तो आनेवाली पीढ़ी पर क्या गुजरेगी, इसका अनुमान लगाना अब मुश्किल नहीं रह गया है।

दिलपसंद पत्नी और

इंग्लैंड, ६ मई ६८। भूतपूर्व द० अफ्रीकी राजनयिक सत्ताईस वर्षीय डोरी और उनकी नवविवाहिता अंग्रेज पत्नी एलिजाबेथ फर्द कल हनीमून मना रहे थे। गहरे खुमार में खोयी आंखों को आधी-सी खोलते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हुए डोरी ने पत्र-संवाददाताओं से कहा—"मुझे फ्रेड से अच्छी पत्नी मिलना संभव नहीं था।" लगभग अठारह महीने पूर्व डोरी और एलिजाबेथ की पहली बाकायदा मुलाकात न्यूयार्क में हुई थी। मुलाकात कराने का श्रेय प्राप्त है, एक कंप्यूटर को, जो हारवर्ड यूनिवर्सिटी में लगा हुआ है।

जीवन के लिए सर्वोचित साथी सुझाने का काम, पिछले दिनों से इस कंप्यूटर से बड़ी कामयाबी के साथ लिया जा रहा है। अनेक लोगों से संबंधित आवश्यक सूचनाएं कंप्यूटर को 'फीड' करा दी जाती हैं। कंप्यूटर 'प्रोसेसिंग' करने के बाद आवेदक के लिए उचित साथी की सूचना देता है।

कंप्यूटर से सूचना मिलते ही डोरी ने फ्रेड को फोन किया। "हमने एक साथ शराब पी और खाना भी साथ ही खाया।" डोरी ने बताया। और दोनों ने एक साथ यह भी महसूस किया—"मेरे मन का महबूब मेरे सामने है।"

कंप्यूटर के नये-नये कारनामे और करामातें हर रोज सामने आती जा रही हैं। सिलसिला रफ्तार पकड़ रहा है, कुछ और नमूने पेशे खिदमत हैं :

कैलिफोर्निया की एक कंपनी ने हाल ही में एक ऐसा कंप्यूटर तैयार कर डाला है, जो अपनी देखभाल और टूट-फूट की मरम्मत भी खुद कर लेने में पूर्ण समर्थ है। जैसे ही कोई खामी इस कंप्यूटर में पैदा होगी, वैसे ही उसकी सूचना इसमें लगे एक विशेष यंत्र को पहुंच जायेगी और तुरंत उसकी मरम्मत का भी प्रबंध हो जायगा। इस प्रकार यह अपनी किस्म का पहला कंप्यूटर है। यों तो इस नये यंत्र का अपना अलग ही महत्व है; परंतु अंतरिक्ष-यात्रियों के लिए तो यह वरदान सिद्ध हो सकता है।

स्वीडन की पुलिस ने कंप्यूटर-तकनीक और माइक्रो-फिल्म की सहायता से अब इतनी दक्षता प्राप्त कर ली है कि अपराधियों का बच निकलना जरा टेढ़ी खीर होगा। कुख्यात अपराधियों के बारे में सभी आवश्यक सूचनाएं केंद्रीय पुलिस स्टेशन में स्थित कंप्यूटर को 'फीड' करा दी गयी हैं। साथ ही लगभग ७५ हजार अपराधियों की उंगलियों की छाप माइक्रो-फिल्मों में अंकित कर दी गयी हैं। जैसे ही कोई पुलिस थाना किसी भी दुर्घटना या अपराध की सूचना केंद्रीय स्टेशन को भेजता है, कंप्यूटर की सहायता से उस क्षेत्र के नामी अपराधियों के संबंध में पूरी जानकारी तत्काल उस स्टेशन को भेज दी जाती है। यह काम इतनी फुर्ती से होता है कि अपराधी का कहीं दूर फरार हो जाना बहुत मुश्किल हो जाता है।

हवा, गर्म हवा की

हवा साहब हवा है, उसका क्या मुकाबला! ठंडी हवा के लिए लोग तरसते हैं। नयी खोजों से पता चला है कि तरसनेवाले गर्म हवा के लिए भी तरस सकते हैं। गर्म हवा की जरूरत उन्हें पड़ सकती है, जो आग से बुरी तरह जल गये हों, या जिनका खतरनाक किस्म के किसी चर्मरोग से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पाला पड़ गया हो।

स्टाकहोम के कैरोलिन्स्का अस्पताल के दो डाक्टर गुन्नार बर्क और लिलजेडाल ने बताया है कि उन्होंने एक ऐसा पलंग निर्माण कर लिया है, जिसकी सहायता से जले हुए जख्मी को ठीक किया जा सकता है।

खास डिजाइनवाले इस पलंग में शुष्क हवा की व्यवस्था रहती है, जो मरीज के शरीर की नमी को सोख सकती है, और जख्मों को भी सुखाने की क्षमता रखती है। अनेक रोगियों पर यह व्यवस्था आजमायी गयी। इनमें से कुछ के शरीरों के ४५ प्रतिशत से भी अधिक भाग जख्मों से भरे हुए थे। सबसे अच्छे नतीजे २९ शतांश ताप और ३० प्रतिशत सापेक्षिक आर्द्रता पर पाये गये।

खोजियों का दावा है कि उनकी खोज से चर्मरोगी भी लाभान्वित होंगे।

हम यहां चांद वहां, फिर भी .....

चांद पर मानव के निकट भविष्य में उतरने की संभावनाएं अब खबर नहीं रह गयी हैं। रूस और अमरीका में से किसी-न-किसी के चंद्रयात्री दो-चार साल में चांद पर उतर ही जायेंगे, ऐसा विश्वास अब आप लोगों के मनों में घर कर चुका है। लेकिन चांद के संबंध में एक खास किस्म का अध्ययन पिछले दस वर्षों से अनेक साम्यवादी और गैर-साम्यवादी देशों में गुप्त रूप से चलता आ रहा है।

अमरीका की नार्थ वेस्टर्न यूनिवर्सिटी में एक अच्छा-खासा तालाब है। तालाब में भरा है सागर का पानी और उसमें मस्त पड़े हैं छः घोंघे। ये घोंघे विश्वप्रसिद्ध हैं। कारण ? ये प्रो० फ्रैंक ए० ब्राउन के उन प्रयोग-परीक्षणों के विषय हैं, जिनकी ओर अनेक खोजी निगाह गड़ाये बैठे हैं। चांद और मानव-व्यवहार पर उसके प्रभाव के बीच ये घोंघे अब एक कड़ी का रूप ले चुके हैं।

इस बात को अब निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि रूस और अमरीका दोनों जगहों के अनेक वैज्ञानिक और मानसे-चिकित्सक पिछले कुछ वर्षों से इस विषय के गहन अध्ययन में रत रहे हैं। इन दोनों ही देशों के अनेक अस्पतालों में चुपचाप मरीजों के व्यवहार और 'मूड' के चार्ट तैयार किये जाते रहे हैं। इन ग्राफों में दो चोटियां (पीक्स) साफ देखी जा सकती हैं—एक छोटी जो, शुक्ल प्रतिपदा के और दूसरी अपेक्षाकृत बड़ी, जो पूर्णिमा के ठीक पहले की मनःस्थितियों को क्रमशः प्रकट करती हैं। कुछ विद्वानों का कहना है कि चांद मानव को प्रभावित करे, यह ठीक ही है, क्योंकि वह सागर में आने-वाले शक्तिशाली ज्वार-भाटों को भी तो संचालित-नियंत्रित करता है। फिर मानव-शरीर का निर्माण भी तो ६० प्रतिशत तरल पदार्थों से ही हुआ है। दूसरी विचारधारा इससे भिन्न है। वह तो वह भी मानती है कि चांद का निश्चित प्रभाव मानव-जाति पर पड़ता है। मगर कारण के संबंध में उसका कहना यह है कि विश्व की विद्युत्-चुंबकीय शक्तियों पर चांद का असर पड़ता है, जिसके परिणामस्वरूप मनुष्यों में मानसिक स्थिर-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तरह पैदा हो जाती हैं।

ब्राउन ने स्वयं जो परीक्षण किये, उनमें एक दिक्कत यह थी कि प्रेक्षण (आब्जर्वेशन) परस्पर विरोधी थे और इस कारण उनसे कोई नतीजा निकालना संभव नहीं हो पा रहा था। यह तो साफ था कि चांद के वृद्धि-क्षय के साथ-साथ परिवर्तन होते थे, मगर कोई तारतम्य नहीं बैठ पा रहा था। इसीलिए उन्होंने अपने प्रयोगों के लिए घोंघों को चुना। समें एक फायदा यह था कि घोंघ ज्वार-भाटे के साथ खुलते बंद होते हैं। परीक्षण के दौरान ब्राउन ने उनमें ऐसी परिस्थितियां पैदा कीं कि वे ज्वार की बाबत सब कुछ भूल गये; मगर चंद्र-कलाओं के साथ उनका खुलना, बंद होना बदस्तूर जारी रहा। कोई नहीं जानता कि क्यों? मगर उनका परस्पर संबंध स्थापित हो चुका है।

ब्राउन ने कुछ परीक्षण चूहों पर भी किये। एक ऐसे कमरे में उन्हें रखा गया, जहां न खिड़की थी और न रोशनदान। मगर बावजूद इसके जैसे ही चांद क्षितिज से ऊपर उठता, चूहों के व्यवहार में स्पष्ट अंतर दिखाई देने लगता—वे अशांत हो उठते।

अनेक डाक्टरों को अब विश्वास होने लगा है कि आदमी की दिमागी गड़बड़ी—यहां तक कि उसके पागलपन का—चांद से गहरा संबंध है। हालत यहां तक पहुंच चुकी है कि अमरीका के कुछ बड़े पागलखानों में पूर्णिमा के दिन डाक्टरों को छुट्टी लेने की इजाजत नहीं दी जाती; क्योंकि उस दिन या उसके आस-पास के दिनों में दिमागी मरीज अधिक खतरनाक हो जाते देखे गये हैं।

प्रसिद्ध अमरीकी सर्जन डा० एडिसन जे० एंड्रूज ने हाल ही में अपना एक शोध-पत्र प्रकाशित किया है, जिसमें उन्होंने अनुभव और परीक्षणों के आधार पर यह साबित करने की कोशिश की है कि पूर्णिमा का दिन आपरेशन के लिए सबसे खतरनाक समय होता है और जहां तक संभव हो, उस दिन कोई बड़ा आपरेशन नहीं किया जाना चाहिये।

एक दिलचस्प बात इस संबंध में और सामने आयी है। शिकागो में पिछले कई वर्षों में हुई मोटर-दुर्घटनाओं में से ८५ प्रतिशत पूर्णिमा के आस-पास के दिनों में ही घटीं। शिकागो ट्रैफिक रिसर्च विभाग के डा० जेम्स कैन्टनर ने कहा है कि संभवतः भविष्य में सैकड़ों लोगों की जानें बचायी जा सकेंगी, जो आजकल मोटर-दुर्घटनाओं में यों ही चली जाती हैं और जिन पर कोई नियंत्रण कर पाना अभी मुमकिन नहीं है।

गत अंतर्राष्ट्रीय भू-भौतिकी वर्ष के दौरान हुए अध्ययनों से इस बात में कोई शक नहीं रह गया है कि चांद हमारी पृथ्वी के विद्युत्-चुंबकीय क्षेत्र को काफी हद तक प्रभावित करता है। चांद और पृथ्वी के पारस्परिक संबंधों पर पड़े रहस्य के आवरण को हटाने के लिए कैरोलिन यूनिवर्सिटी में एकदम नये प्रकार के इलेक्ट्रानिक यंत्र लगाये गये हैं। खोज जोरों पर है। परिणाम आशा से अधिक उत्साहवर्धक है।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मनुष्य ऐसी चीज है, जिससे अन्य सब चीजों की अपेक्षा अधिक सीखा जा सकता है; और जब तक आदमी में सांस है, उसे सीखते रहना चाहिये।

जीवन ने मुझे क्या सिखाया?

इल्या एहरनबर्ग

मुझसे पूछा गया है कि जीवन ने मुझे क्या सिखाया है। मेरा उत्तर है—सब कुछ। मैं जन्म के समय, सभी बच्चों की तरह अशिक्षित था। मैं रोज देखता हूं कि कितना कुछ है, जो मुझे आता नहीं है। पिछले १५ वर्षों से मैं यह सीखने का प्रयत्न कर रहा हूं कि बूढ़ा आदमी कैसे बना जाता है। यह उतना आसान नहीं है, जितना मैंने जवानी के दिनों में सोचा था। मैं सोचा करता था कि ज्यों-ज्यों हमारी इच्छाओं की पूर्ति होती जाती है, वे मरती जाती हैं; पर फिर मुझे इस बात का ज्ञान होना शुरू हुआ कि मन के मुकाबले में शरीर जल्दी बूढ़ा होने लगता है, और आदमी को बूढ़े की तरह जीना सीखना चाहिये। आदमी मरते समय भी सीख सकता है — इस तरह मरते हुए कि मौत उसके जीवन की सही मंजिल प्रतीत हो।

मैं उन बूढ़े व्यक्तियों को पसंद नहीं करता, जो नयी पीढ़ी के लोगों पर नाक-भौंह चढ़ाते हैं। वे उन लैंपों की तरह हैं, जो प्रकाश देने के बजाय धुआं छोड़ते हैं।

यहां मैं जो कुछ कहने जा रहा हूं, उसका अभिप्राय नौजवानों को शिक्षा देना नहीं है; बल्कि यह एक ऐसे आदमी की आत्म-स्वीकृति है, जो पिछली सदी में जन्मा था और जिसका मन उस सदी के अधिकांश विचारों के अनुसार ढला था। शायद ऐसी आत्मस्वीकृति का नौजवानों को कुछ लाभ हो सके। यह भी संभव है कि एक बूढ़े आदमी की गलतियों से नौजवानों को उनसे बचने के लिए कुछ संकेत मिल सकें। इसीलिए पिछले सात सालों से मैं अपनी जीवन-स्मृतियों पर एक पुस्तक लिख रहा हूं—'लोग, साल, जिंदगी'।

यह एक जानी-पहचानी सच्चाई है कि बचपन में देखी हुई चीजें बहुत बड़ी प्रतीत होती हैं। अब जैसे, मैं सोचा करता था कि मैं एक बहुत बड़े घर में रहा करता था; पर जब मैंने अपने बचपन के उस 'बहुत बड़े' घर को कुछ सालों बाद देखा, तो वह मुझे बहुत छोटा लगा। उन दिनों मैं यह भी सोचा करता था कि दुनिया बड़ी तेज रफ्तार से आगे बढ़ रही है, हालांकि उन दिनों हवाई जहाज नहीं थे, और रेलगाड़ियां दमे के मरीज बूढ़े आदमियों की तरह बड़ी शान से धीरे-धीरे चला करती थीं। तब मुझे इस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

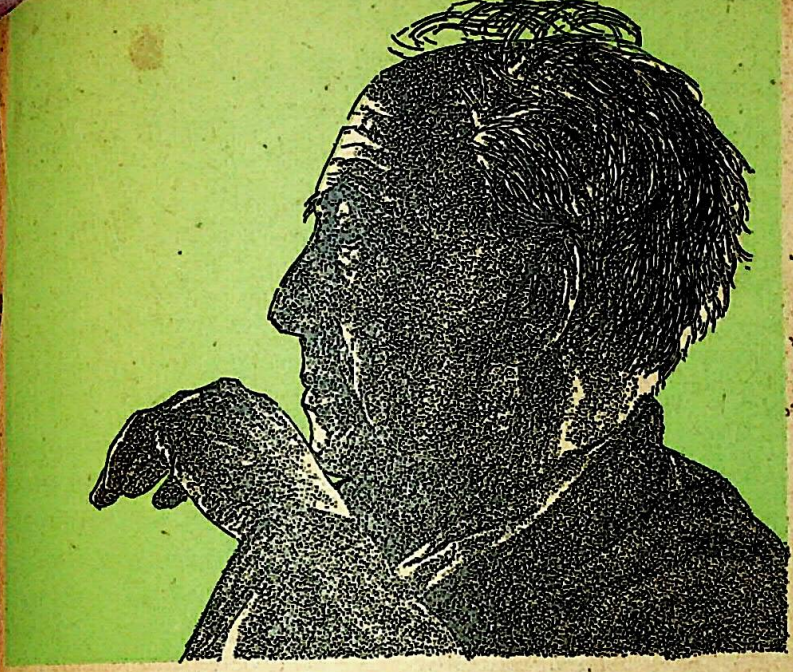

चित्र : वी० एन० ओके

बात का ज्ञान नहीं था कि जिंदगी पेचदार रास्तों से गुजरती हुई, जो कई बार एक गोल घेरे में घूम जाते हैं, बड़ी कठिनाई से आगे बढ़ रही है।

जब मैं पंद्रह साल का था, तो मुझे राजनीति से बेहद लगाव हो गया था, मैं बोल्शेविकों की तरह भूमिगत संस्था में काम करने लगा था, और पकड़े जाने पर छः महीने जार की जेल में भी काटे थे। १८ साल की उम्र में मुझे अपनी जान बचाने के लिए देश से भागना पड़ा था और मैंने पेरिस में जाकर शरण ली थी। वहां मैं कविताएं लिखने लगा था, कला से मुझे प्यार हो गया था, और मैं राजनीति को भूल गया था। पर कुछ ही समय के बाद राजनीति ने मुझे फिर दबोच लिया, जैसे कि उसने यूरोप में हर किसी को दबोच लिया था। पहला विश्व-युद्ध छिड़ा, और उसके खत्म होने से पहले ही रूसी इन्कलाब आ गया।

उसके बाद के वर्षों में मैंने क्या सीखा? सबसे पहली बात यह कि किसी देश की राजनीतिक व्यवस्था के, यहां तक कि आर्थिक व्यवस्था के भी मुकाबले में, लोगों की मनोवृत्तियों को बदलना कहीं ज्यादा मुश्किल है। राजनीतिक परिवर्तन कुछ घंटों में लाये जा सकते हैं, आर्थिक परिवर्तनों को कई साल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लग सकते हैं; पर मनोवृत्तियों को बदलने में सदियां लग जाती हैं।

मैं दो विश्व-महायुद्धों में से गुजरा हूं और युद्ध से मैं केवल इसलिए घृणा नहीं करता कि उसमें हर देश के लोगों की सबसे बढ़िया पनीरी नष्ट हो जाती है, बल्कि इसलिए कि उसमें आध्यात्मिक और भौतिक मूल्य भी नष्ट हो जाते हैं, और लोग अपने विकास में पिछड़ जाते हैं। मुझे मनुष्यता की रक्षा के लिए सिर्फ एक ही रास्ता दिखाई देता है कि हर देश का पूर्ण रूप से निःशस्त्रीकरण हो जाये। इतनी बड़ी तबाही में से गुजरने पर भी मैं आशावादी रहा हूं, और मेरा दृढ़ विश्वास है कि लोगों की जीवित रहने की आकांक्षा एक दिन हर किसी को बाध्य करेगी कि संसार-भर में हथियारों का खात्मा हो जाना चाहिये।

अपनी जवानी के दिनों में भी मैं न्याय और आत्मिक सौंदर्य से प्यार करता था। आत्मिक सौंदर्य आदमी के लिए उतना ही जरूरी है, जितनी की घास की हरियाली, या बच्चे की मुस्कराहट। जिन पदार्थों को मैंने पंद्रह साल की उम्र में अपनाया था, उन्हें मैं किसी कीमत पर भी छोड़ने के लिए तैयार नहीं हूं। आज भी मेरा इस बात में पूरा विश्वास है कि समाजवादी आर्थिक व्यवस्था पूंजीवादी आर्थिक व्यवस्था के मुकाबले में अधिक तर्क-संगत ही नहीं, बल्कि अधिक नैतिकतापूर्ण भी है। पर हमें न्याय के साथ सुंदरता को भी जोड़ना चाहिये, और नये समाज के आदर्शों में मानवीय गुणों का समावेश करना चाहिये।

जब मैं छोटा था, तो चांद का मुख्य काम यह समझा जाता था कि वह अपनी रश्मियों से प्रेमियों को नहलाता है। आज वैज्ञानिक दृष्टिकोण से चांद का अध्ययन हो रहा है और एक दिन आदमी उस पर कदम भी रख देगा। पर क्या इससे नौजवानों के प्यार का रोमांस कम हो जायेगा? मेरा खयाल है कि वह कम नहीं होगा।

सन १९३३ में मैंने कहा था कि जर्मनी सांस्कृतिक तौर पर एक उन्नत देश है। हां, उस समय मैंने ऐसा सोचा था, जबकि लोग संस्कृति के बाह्य पक्ष को ही देखा करते थे। जर्मनी में काफी अर्सा पहले ही निरक्षरता खत्म हो चुकी थी, अच्छी सड़कें बन गयी थीं, काफी बड़ी संख्या में कारें दिखाई देती थीं, बहुत बढ़िया अस्पतालों, छापाखानों और अन्य कई संस्थाओं का निर्माण हो चुका था। पर यह सब कुछ संस्कृति का एक पक्ष ही था। .....काफी समय से मैंने संस्कृति-संबंधी अपने विचार बदल दिये हैं। संस्कृति को पूर्ण रूप से समझने के लिए विकसित प्रबुद्ध दिमाग, संवेदनशील हृदय, और नैतिक दृष्टि की जरूरत है।

गत आधी शताब्दी में हमारी मनोवृत्ति में काफी बड़ा परिवर्तन आया है। विज्ञान ने आश्चर्यजनक रूप से उन्नति की है। हम ब्रह्मांड-विजय की ओर अग्रसर हो रहे हैं। मैं अपनी जवानी की उम्र में मानता था कि हर क्षेत्र में ही उन्नति हो सकती है; पर आज मेरा खयाल है कि एक क्षेत्र में उन्नति नहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हो सकती, और वह है कला का क्षेत्र ! विभिन्न कलाओं में केवल परिवर्तन होते हैं, उनके सिर्फ रूप बदलते हैं, उनमें उन्नति नहीं होती। आधुनिक मनुष्य के ज्ञान के मुकाबले में तीन हजार साल पहले के मनुष्य का ज्ञान कुछ भी नहीं था। उस युग की कला साज-संजावटवाली थी। पर उस समय के भित्ति-चित्रों के स्त्री-पुरुष हमारे आधुनिक युग के चित्रकार तुलूज लात्रे के स्त्री-पुरुषों से मिलते-जुलते हैं। इसी प्रकार अजंता के भित्ति-चित्र बाटिचेली के चित्रों के बहुत निकट प्रतीत होते हैं।

कला के क्षेत्र में कोई उन्नति नहीं हुई है, और यह कहना पागलपन होगा कि आधुनिक मूर्तिकला एलोरा या मेसेना की मूर्तिकला से बढ़िया है। मनुष्य अपने युग की कला से अधिक प्रभावित होता है—इसलिए नहीं कि वह अधिक ऊंची कला है; बल्कि इसलिए कि उसका बुनियादी तौर पर उससे संबंध है।

साथ ही मैं यह भी कहना चाहता हूं कि मेरी जवानी के दिनों में साहित्य और कला का लोगों के जीवन में, आज के मुकाबले में कहीं महत्वपूर्ण स्थान था। आज जितनी बड़ी संख्या में लोगों तक कला की पहुंच संभव हो सकती है, उतनी आज से पहले के दौर में न पूंजीवादी देशों में थी, न समाजवादी देशों में। आज सस्ते दामों की पुस्तकों, रेडियो, टेलिविजन आदि द्वारा कला आम आदमी तक पहुंच गयी है। फिर भी व्यक्ति के दैनिक जीवन में कला एक 'केक' बन गयी है, जबकि पहले वह 'रोटी' होती थी।

जब मैं १६ वर्ष का था, तो मैं इब्सन के नाटक के एक पात्र की तरह कहा करता था, "या तो सब कुछ चाहिये, या कुछ भी नहीं चाहिये।" परंतु फिर जल्दी ही मैंने महसूस किया कि दुनिया आदमी को इस बात का हक नहीं देती कि वह सब कुछ पा ले, या कुछ भी न पाये। मैंने जाना कि जिंदगी बड़ी पेचीदा है, और कोई चित्र न सिर्फ काले रंग से बनाया जा सकता है, न सफेद रंग से। मैंने लोगों के दिलों को पकड़ना सीखा, और आज भी सीख रहा हूं।

विभिन्न व्यवसायवाले लोगों को चाहिये कि वे नौजवानों को सिखायें। कोई शिक्षक सिर्फ सिखाता ही नहीं है, खुद भी सीखता है। हर चित्रकार जानता है कि वह उन पदार्थों से सीखता है, जिनका वह चित्र बनाते समय उपयोग कर रहा होता है। पिकासो ने एक बार मुझसे कहा था कि ८० साल की उम्र में उन्होंने बहुत कुछ सीखा, जब उन्होंने चित्रकला में नये पदार्थों का प्रयोग करना शुरू किया था। पर मनुष्य एक ऐसा पदार्थ है कि उससे अन्य पदार्थों की अपेक्षा कहीं ज्यादा सीखा जा सकता है।

वर्षों के हिसाब से मैं बूढ़ा हो गया हूं; पर अब मैं विश्वस्त रूप से कह सकता हूं कि मुझे बहुत कम ज्ञान है। जब तक आदमी में सांस बाकी है, उसे सीखते रहना चाहिये। और बूढ़े आदमी को जितना विद्यार्थी का डेस्क रास आ सकता है, उतना किसी उपदेशक का मंच या विद्वान का आसन रास नहीं आ सकता। यह मेरा दृढ़ विश्वास है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संसार के समस्त सद्विचारक हमारे पुरखे हैं; और समस्त शुभ विचार हमारी साझी संपत्ति।

पुरखों की थाती

भले ही हमारी आंखों को कोई अपवित्र वस्तु दिख जाये, परंतु हमारा मन अपवित्र वस्तु को न देखे। भले ही कोई अपवित्र शब्द हमारे कान में पड़ जाये, परंतु हमारा मन अपवित्र शब्द न सुने।

०००

हे गगन के तले जीनेवालो! गगन को अपना पिता, पृथ्वी को अपनी माता और समस्त चराचर पदार्थों को अपने भाई-बहन समझो। तब तुम दुःख और द्वेष से मुक्त दिव्य-देश में आनंद से विचरोगे।

०००

दिव्यता के साथ तादात्म्य संबंध साधने का पहला और अचूक साधन है—हृदय की सच्चाई। यदि सच्चे हृदय से प्रार्थना करोगे, तो प्रभु-सान्निध्य अवश्य पाओगे।

०००

आसमान जब साफ हो और चीड़ के वृक्षों में हवा सनसना रही हो, तो यह समझो कि प्रभु अपने मन की बात तुमसे कह रहा है।

०००

तुम लोग, जो अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए मेरे पास आते हो, सुनो! असत्य से बिलकुल अछूते हृदय से प्रार्थना करो—ऐसे हृदय से प्रार्थना करो, जिसमें दर्पण की भांति सत्य निहारा जा सके।

०००

हृदय की सचवाई ही मनुष्य को दिव्यता से जोड़नेवाला एकमात्र गुण है।

०००

पुष्प-वृक्ष बनो—जो उसे झकझोरनेवाले हाथों पर फूल बरसाता है।

—शिंतो धर्म-साहित्य से जुआन मेस्कारो द्वारा संकलित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चंदन

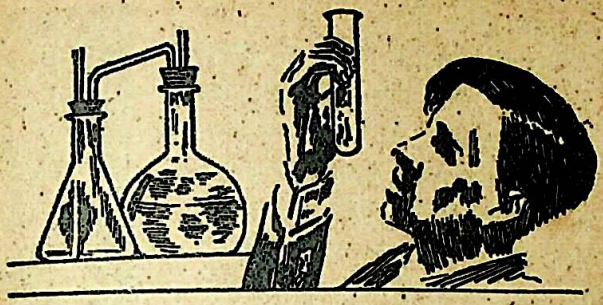

हमारा विज्ञान, हमारे वैज्ञानिक

बंगली-मंगली

यों मौत किसी के रोके रुकती नहीं। कोई-न-कोई बहाना उसे मिल ही जाता है किसी खेलते-खाते जीवन को निगल जाने का। फिर भी असामयिक मृत्युओं में हृदय-रोगों की वारदात की संख्या खतरनाक ढंग से लगातार बढ़ रही है। कहने को इलाज और दवाएं कई हैं; मगर माकूल दवा की कमी शुरू से अनुभव की जाती रही है।

पिछले दिनों जर्मनी के एक दवा-विक्रेता ने परीक्षण के लिए एक नयी दवा जारी की। 'पेन्टोसाइड' नाम की इस दवा से दिल के सैकड़ों मरीजों को अप्रत्याशित आराम पहुंचा और डाक्टरों ने यह राय जाहिर की कि आज तक दुनिया में प्राप्य सभी दवाओं से यह नयी दवा कहीं अधिक कारगर मालूम होती है। अब इस जर्मन फर्म ने भारत में इस दवा का निर्माण शुरू करने की अनुमति के लिए भारत सरकार के औषध-नियंत्रक (ड्रग कंट्रोलर) के कार्यालय में अर्जी दाखिल की है। फर्म भारत में भी इस दवा का एक कारखाना खोलना चाहती है। इस जर्मन औषध-निर्माता को आखिर भारत में इतनी दिलचस्पी क्यों? कारण स्वाभाविक ही है, और उसे जानकर आपको कुछ गर्व भी होगा और कुछ दुःख भी।

गर्व इसलिए कि इस नये लाभकारी औषध की खोज भारतीय वैज्ञानिकों ने भारत में ही की है। दुःख की बात यह है कि हमारे यहां कोई अपने ही देशवासियों की उपलब्धियों पर ध्यान देने की जरूरत नहीं समझता। वर्ना जो काम आज एक विदेशी फर्म करनेवाली है, उसे काफी पहले ही किसी भारतीय फर्म को पूरा कर लेना चाहिये था। लेकिन अब दूसरों की देखा-देखी दो-एक भारतीय भेषजी (फार्मास्यूटिकल) फर्में भी इस नयी दवा के उत्पादन-अधिकारों को हस्तगत करने के लिए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उछल-कूद करने लगी हैं।

दवा की खोज की है दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो० एस० रंगस्वामी ने। सहयोग प्रदान किया है देश के प्रख्यात रसायन-शास्त्री डा० शेषाद्रि ने। इस संबंध में प्रो० रंगस्वामी ने कहा है—"हृदय-रोग के लिए किसी उचित औषध पर खोज करने का विचार मेरे मन में पहले-पहल दूसरे विश्व-युद्ध के दौरान उठा। तब मैं और प्रो० शेषाद्रि दोनों आंध्र विश्वविद्यालय में पढ़ाते थे। यह वह समय था, जब देश में दवाओं का सख्त अभाव था और ऐसा लगता था कि रोगियों की ही नहीं, रोगों की भी संख्या लगातार बढ़ती जा रही है।"

'पेरूवोसाइड' के निर्माण के लिए किसी ऐसे पदार्थ की जरूरत नहीं होती, जो कीमती हो अथवा जिसे प्राप्त करना मुश्किल हो। जंगली पीला कनेर भारत में खूब पैदा होता है। हर प्रकार की भूमि में इसकी पौध लगायी जा सकती है। डा० रंगस्वामी ने इसी कनेर से दवा निकालकर तैयार की है।

इस खोज का ही नतीजा है कि जंगली कनेर, जिसकी अब तक कोई खास उपयोगिता नहीं थी, अब मंगली बन सकेगा।

दफा, दमा भी

दिल के दौरे पड़नेवाले लोगों को तो 'पेरूवोसाइड' से दिलासा मिला है; अब 'श्वास' के रोगी भी यह समाचार जानकर कुछ संतोष की सांस ले सकते हैं कि भारत में ही हाल में हुई विकसित एक उपचार-विधि से संसार के लाखों दमा के रोगी अब

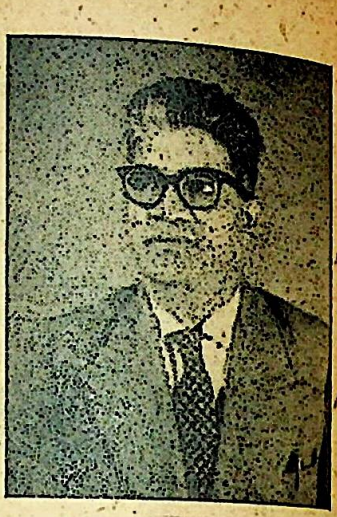

प्रो० एस० रंगस्वामी

इस महादुःखदायी रोग से राहत पा सकेंगे। 'ओपन वन-ड्राप' नामक इस विधि की खोज हुई है। दिल्ली के ही पटेल चेस्ट इंस्टिट्यूट में। श्रेय है सहायक-निदेशक डा० डी० एन० शिवपुरी और उनके सहकर्मियों को।

'वेगस' एक बहुत ही महत्वपूर्ण तंत्रिका है, जो मानव-शरीर में काफी भीतर की ओर स्थित है। मस्तिष्क और फेफड़ों के बीच आवेगों (इम्पल्स) के आदान-प्रदान का कार्य यही तंत्रिका संपन्न करती है। दमा के भयंकर रोगियों में इस तंत्रिका का एक भाग अत्यधिक सक्रिय हो जाता है, जिसके कारण दौरे जल्दी-जल्दी और तेजी से पड़ते हैं। 'ओपन वन-ड्राप' विधि से 'वेगस' तंत्रिका में एक 'ब्लाक' उत्पन्न किया जाता है, जिससे यह अधिक सक्रिय भाग नियंत्रित किया जा सके।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

डा० शिवपुरी का कहना कि उन्होंने पिछले दस वर्षों में कई मरीजों पर इस तकनीक को आजमाया है और उनमें से कई एक को आश्चर्यजनक लाभ हुआ है। यह दुनिया में अपनी किस्म की पहली खोज है।

बूढ़ी.....बच्चे

संतति-नियमन का कोई भी नया हानि-रहित उपाय आज देश के लिए वरदान समझा जाता है। दिब्रूगढ़ के असम मेडिकल कालेज अस्पताल के परिवार-नियोजन अधिकारी श्री एम० आई० हुसैन का कहना है कि असम के अनेक भीतरी गांवों में अनेक महिलाएं संतति-नियमन के लिए कुछ ऐसी दवाओं का प्रयोग कर रही हैं, जो शत-प्रतिशत कारगर होती हैं और जिनसे कोई खोदगी भी नहीं होती। ये दवाएं कई स्थानीय पौधों और झाड़ियों के अर्क आदि से तैयार की जाती हैं। श्री हुसैन का तो यहां तक कहना है कि इनमें से कुछ दवाओं की सिर्फ एक खुराक से ही स्थायी बंध्यता प्राप्त की जा सकती है।

आज जब कि केंद्रीय शासन बाढ़-सी बढ़ती आबादी को रोकने के लिए काफी बड़ी धनराशि खर्च कर रहा है, क्या यह वांछनीय नहीं होगा कि सरकार असम में प्रचलित इन औषधों और बूटियों पर शोध-कार्य प्रारंभ कराये? बहुत संभव है, इससे कोई ऐसा रास्ता निकल आये, जो देश की मौजूदा हालत में नियामत साबित हो।

बांसी सीमेंट :

हमारा देश अभावों का देश है। चारों ओर अभाव—खाने का, दवा का, रहन के लिए मकानों का। मकानों की छतें पाटने के लिए एसबस्टस सीमेंट की चादरों की कितनी सख्त जरूरत चारों तरफ है! मगर हमारे यहां एसबस्टस नहीं होता। प्रतिवर्ष उसके आयात पर करोड़ों रुपये खर्च होते हैं।

मगर अब समस्या का सुलझाव निकल गया है। जोरहाट स्थित रीजनल रिसर्च लेबोरेटरी ने बांस की लुगदी से एक ऐसा पदार्थ तैयार कर लिया है, जो एसबस्टस के स्थान पर काम में लाया जा सकेगा। मजबूती और अन्य गुणों में यह नया पदार्थ एसबस्टस जैसा ही रहेगा। इस नये प्रक्रम को प्रयोगशाला ने पेटेंट करा लिया है।

अब तक हम बांसी कागज से ही परिचित थे, अब आगे बांसी चादरें भी हमारे जीवन का अंग बननेवाली हैं।

जल : रसायन

विज्ञान ने उपयोगी पदार्थों के लिए सागर को भी टटोलना शुरू कर दिया है। यों तो मोती, मछली और नमक सागर की ही देन हैं; मगर ये चीजें तो सीधे-सीधे मिल जाती हैं। विज्ञान की निगाह और गहरी है।

भावनगर के 'सेंट्रल साल्ट एंड मेरीन केमिकल रिसर्च इंस्टिट्यूट' ने अब खोज द्वारा जलीय पदार्थों से ऐसे कई कीमती रसायन प्राप्त कर लिये हैं, जिनके लिए हम अब तक विदेशों पर निर्भर रहे हैं। ये पदार्थ हैं—कोलायडीय बहुशर्कराएं—जैसे 'अगर' और एलगिन आदि—जो अनेक महत्वपूर्ण उद्योगों की जान हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जेली, जैम, मृदु पेय और आइसक्रीम के निर्माण में एलगिन की सख्त जरूरत होती है। कपड़ा और कागज छापने की स्याहियों में भी इसके बिना काम नहीं चल सकता। रबर उद्योग में भी इसका उपयोग किया जाता है। 'अगर' एक बहुत ही महत्वपूर्ण 'जेलिंग एजेंट' है और हमारे देश में काफी मात्रा में इसकी खपत होती है।

डा० सुदर्शन का सम्मान :

स्वीडन में 'उच्च ऊर्जा भौतिकी' पर आयोजित एक विश्व-संगोष्ठी के लिए नोबेल फाउंडेशन ने इस विषय के संसार के तीस मूर्धन्य वैज्ञानिकों को आमंत्रित किया है। भारतीय वैज्ञानिक डा० ई० सी० जी० सुदर्शन इन तीस वैज्ञानिकों में से एक हैं। डा० सुदर्शन इस संगोष्ठी की एक बैठक का सभापतित्व भी करेंगे।

प्रकाश से भी तीव्र आवेगवाले कणों के विषय में अपने क्रांतिकारी सिद्धांत के कारण सुदर्शन वैज्ञानिक जगत् में चर्चा का विषय बन गये हैं। यही वजह है कि मास्को के 'इंस्टिटचूट आफ न्यूक्लियर फिजिक्स' और लेनिनग्राद विश्वविद्यालय ने संयुक्त रूप से उनसे प्रार्थना की है कि वे अपने बहुचर्चित नवीन सिद्धांत पर एक भाषण-माला के लिए यथाशीघ्र रूस पधारें।

इस सिद्धांत के अनुसार ब्रह्मांड में केवल प्रकाश-वेग ही अधिकतम वेग नहीं है, जैसा कि अब तक माना जाता रहा है, बल्कि ऐसे कण भी विद्यमान हैं, जिनका वेग प्रकाश से कहीं अधिक है।

बिरवा से माटी का :

'अमेरिकन इंस्टिटचूट आफ माइनिंग, मैटलर्जिकल एंड पेट्रोलियम इंजीनियर्स' द्वारा आयोजित राष्ट्रीय विद्यार्थी प्रतियोगिता का विषय था—प्राकृतिक गैस की संग्रहण विधियां। अमरीका के भावी वैज्ञानिकों ने प्रतियोगिता में भाग लिया। प्रथम स्थान पाया भारत के अनिल कुमार ने।

स्टैनफर्ड यूनिवर्सिटी में शोधरत लखनऊ निवासी अनिल कुमार ने अमरीकी पेट्रोलियम इंजीनियर डा० ओ० के० किम्बलर के साथ प्राकृतिक गैस को जमा करने की एक ऐसी विधि का पता लगाया है, जिस के जरिये गैस के अपव्यय को कम किया जा सकता है। इसके लिए उनकी काफी प्रशंसा हुई है और उन्हें पुरस्कृत भी किया गया है।

अमरीका में अनेक गैस सप्लाई कंपनियां गर्मी के मौसम में जमीन के नीचे गैस को इकट्ठा कर लेती हैं, ताकि सर्दी के दिनों में जब मांग बढ़ जाती है, तब सप्लाई को बरकरार रखा जा सके। आज जो संग्रह की विधि प्रचलित है, उनमें लगभग चालीस प्रतिशत गैस का अपव्यय हो जाता है, यानी भंडार में से आठ प्रतिशत उपयोगी गैस ही प्राप्त हो पाती है। नतीजा साफ है—एक बड़ी धनराशि की निरंतर हानि। इसे रोका जाना चाहिये। इसका उपाय खोजकर अनिल कुमार ने गैस-कंपनियों को लगातार होनेवाली हानि से छुटकारा दिलाया है और अपनी प्रतिभा प्रमाणित की है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मानव की असीम महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए नहीं, विज्ञान की गुत्थियों के सुलझाव के लिए चंद्रलोक की यात्रा आवश्यक है। प्रथम अंतरिक्ष-यात्री स्व० यूरी गागारिन और रूसी विज्ञानी व्लादीमीर लेबेडेव का एक संयुक्त लेख।

चांद पर हम क्यों जायें?

ब्रह्मांड के रहस्यों को खोलने-समझने की साध मनुष्य को सदा प्रेरित करती रही है। मनुष्य की चंद्रलोक-यात्रा और चंद्रमा पर स्थायी अनुसंधान-केंद्रों, प्रयोगशालाओं और वेधशालाओं की स्थापना से निश्चय ही विज्ञान और तकनीकी की मूलभूत शाखाओं के विकास का नया दौर शुरू होगा।

वातावरण-विहीन होने के कारण चंद्रमा सब प्रकार के खगोलशास्त्रीय अध्ययनों तथा वाह्य अवकाश में से आते हुए विद्युत्-चुंबकीय तथा अन्य विकिरणों के पूरे भेदोपभेदों के अध्ययन के लिए आदर्श स्थान है। वहां पर अत्यंत विकसित सूर्य-सूचना केंद्र स्थापित किया जा सकेगा, जो सूर्य की दशाओं के संबंध में तथा उनसे प्रभावित होनेवाली एवं मानव-जीवन पर प्रभाव

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

डालनेवाली भूभौतिक प्रक्रियाओं के बारे में भविष्यवाणियां कर सकेगा।

चंद्रमा के भूगर्भशास्त्रीय अध्ययन से सौर मंडल तथा विशेषतः हमारी पृथ्वी की उत्पत्ति-संबंधी समस्याएं बड़ी हद तक सुलझेंगी और पृथ्वी में खनिजों के निर्माण एवं वितरण के बुनियादी नियमों को समझने में सहायता मिलेगी।

पृथ्वी पर चलनेवाली मौसम-संबंधी, सागरीय तथा इतर प्रक्रियाओं के निरीक्षण के लिए चंद्रमा बहुत अच्छा स्थान होगा। इससे मौसम की अधिक निर्भ्रांत भविष्यवाणी करना संभव होगा और यातायात, कृषि एवं उद्योग को बड़ा लाभ पहुंचेगा।

चंद्रमा पर उच्च शून्यता (हाइ वैक्युअम) इंजीनियरी, इलेक्ट्रानिक्स तथा अतिनिम्न तापमान से संबंधित भौतिकी, रसायन एवं तकनीकी के क्षेत्रों में अत्यंत महत्वपूर्ण सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक शोध की भी गजब की संभावनाएं हैं।

चंद्रमा पर स्थापित रिले-स्टेशन की मदद से पृथ्वी पर रेडियो-टेलिफोन व्यवस्था एवं टेलिविजन-प्रसारण को सुधारा जा सकेगा।

लेकिन अगर चंद्रमा पर प्रयोगशालाएं खोलनी हों, तो उन प्रयोगशालाओं के कर्मचारियों को हमें बाह्यावकाश के घातक प्रभावों से बचाना पड़ेगा। हमें उनके लिए कृत्रिम परिस्थितियां पैदा करनी पड़ेंगी। और छोटे-से-छोटे प्रयोग-केंद्र के लिए भी जल-भंडार, भोजन, आक्सिजन, इमारती सामान तथा अन्य वस्तुएं आवश्यक होंगी, जिनका वजन हमारी धरती के हिसाब से हजारों टन होगा।

हिसाब लगाया गया है कि कुछ रासायनिक पदार्थों एवं इमारती सामान को पृथ्वी पर से ले जाने के बजाय, चंद्रमा पर ही तैयार करना कम खर्चीला पड़ेगा। चंद्रमा की शिलाओं से कई इमारती सामान प्राप्त किये जा सकते हैं और अगर वहां हाइड्रोकार्बनिक पदार्थ मिल गये, तब तो उनसे जीवन के लिए आवश्यक आक्सिजन और पानी के अलावा राकेटों के लिए उपयोगी ईंधन-सामग्री भी मिल जायेगी।

इसकी भी बहुत बड़ी संभावना है कि चंद्रमा की साधन-संपदा का पृथ्वी पर औद्योगिक तथा अन्य उपयोग किया जा सके। यदि वहां बहुमूल्य धातुएं और रत्न (जैसे प्लैटिनम या हीरे), नये पदार्थ या खनिज प्राप्त हों, तो उन्हें पृथ्वी पर भी लाया जा सकेगा।

पृथ्वी पर से किये गये निरीक्षण तथा चांद्र जांच-यंत्रों (लूनार प्रोब्स) के चंद्रमा पर उतरने के अनुभव के आधार पर ऐसा माना जाता है कि चंद्रमा पर पहले उतरनेवाले खोजी वहां एकदम बियाबान और सूनी जमीन देखेंगे। चंद्रमा के 'समुंदों' में उन्हें समतल जमीन दिखाई देगी, जिसमें कंकड़ों और चट्टानों से भरे छोटे-बड़े गढ़े होंगे। जमीन कोयले के चूरे या दूब जैसी होगी और पांवों के नीचे काफी मजबूत लगेगी।

चंद्रलोक की दृश्यावली भूरी या लगभग काली होगी, जिसमें न वृक्ष होंगे, न नदियां

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और न हवा, न बारिश। सर्वत्र घोर निःस्तब्धता होगी। अंतरिक्ष-यात्री ऊपर आकाश में अथाह काला आकाश देखेंगे और ऐसे तारे जो टिमटिमाते नहीं। सूर्य और पृथ्वी बहुत चमकदार दीखेंगे और पृथ्वी के चौगिर्द हल्का नीला परिमंडल होगा। आसमानके उल्टे कटोरे का भ्रम बना रहेगा; क्योंकि मानव की आंख विभिन्न अंतरिक्षीय पिंडों की दूरी के अंतर को नहीं पहचान सकती। इसलिए दर्शक को ऐसा लगगा कि तारे, सूर्य और पृथ्वी सब एक गोलाकार परिधि पर उससे (दर्शक से) एक-सी दूरी पर रखे हुए हैं।

अभी भी यह मान्यता जीवित है कि चंद्रमा में विकीर्ण (डिफ्यूज्ड) प्रकाश का अभाव होने से, वहां छाया में स्थित वस्तुएं नजर नहीं आयेंगी। (पृथ्वी पर विकीर्ण प्रकाश वातावरण के कारण है।) किंतु यह मान्यता सही नहीं है। यद्यपि चंद्रलोक में आकाश कभी चमकता नहीं और बिलकुल काला होता है, तो भी सूर्य द्वारा प्रकाशित वस्तुएं विकीर्ण प्रकाश छोड़ती हैं, भले ही यह प्रकाश अत्यंत क्षीण हो। हिसाब लगाया गया है कि चंद्रमा का धरातल अपने पर पड़नेवाले ७ प्रतिशत प्रकाश को प्रतिक्षिप्त करता है। इसलिए वहां पहाड़ी की ओट में या किसी विवर की दीवार की छांव में घोर अंधकार नहीं होगा।

हां, यह तो संभव है कि जो अंतरिक्ष-यात्री छाया में चला जाये, वह बाहर धूप में खड़े अपने साथियों को दिखाई न दे। लेकिन खोह या दरार में उतरनेवाले आदमी की आंखों को थोड़ी देर के अभ्यास के बाद, कगार से टकराकर प्रतिक्षिप्त होकर आती हुई रोशनी में आस-पास की चीजें सूझने लगेंगी।

ये सब असाधारण इंद्रियानुभव और अहसास अंतरिक्ष-यात्री में बौद्धिक और स्नायविक दबाव पैदा कर सकते हैं, खासकर चंद्रलोक-निवास के प्रारंभ-काल में।

चंद्रमा पर पहुंचने के बाद अंतरिक्ष-यात्री अंतरिक्ष-पोशाक पहनकर अंतरिक्ष-यान से उतर आयेंगे। अंतरिक्ष-पोशाक चंद्रमा की शून्य (वैक्युअम) परिस्थिति में उसे स्वाभाविक ढंग से जीने देगी तथा उसे तापमान के आकस्मिक परिवर्तनों से, उल्काओं के प्रहार से तथा विकिरण के खतरों से बचायेगी।

चंद्रमा पर पृथ्वी की अपेक्षा छः गुना कम गुरुत्वाकर्षण है। सो पृथ्वी पर जिस आदमी का वजन १५३ पौंड है, वह चंद्रमा पर सिर्फ २५.५ पौंड का रह जायेगा। लेकिन उसकी मांसपेशियों की शक्ति उतनी ही बनी रहेगी। इसलिए वहां वह पृथ्वी पर बोझिल प्रतीत होनेवाली अंतरिक्ष-पोशाक पहनकर भी आसानी से चल फिर सकेगा।

अंतरिक्ष-पोशाक की उपेक्षा करते हुए यह कहा जा सकता है कि पृथ्वी की अपेक्षा चंद्रमा पर अंतरिक्ष-यात्री छः गुना ऊंची और छः गुना लंबी छलांग भर सकेगा और जब उसके पैर जमीन छूयेंगे तो कम आघात लगेगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परंतु जब मनुष्य पहले-पहल चंद्रमा पर उतरेंगे, तो क्या वे अपनी हलचलों में ठीक तालमेल रख सकेंगे? संभवतः बिलकुल नहीं। फिलहाल उपलब्ध तथ्यों से प्रकट होता है कि आरंभ में गुरुत्वाकर्षण संबंधी नयी परिस्थिति अंतरिक्ष-यात्रियों पर काफी असर डालेगी।

चंद्रमा पर मनुष्य का भार तो घट जायेगा, लेकिन द्रव्यमान (मास) उतना ही रहेगा। भार और द्रव्यमान का यह बदला हुआ पारस्परिक संबंध ध्यान देने योग्य होगा। जब पृथ्वी पर मनुष्य अपनी मांसपेशियों के जरिये हाथ-पैर ऊपर उठाता है, उसे उस अवयव के भार और द्रव्य की जड़ता दोनों का प्रतिरोध करना पड़ता है। चंद्रमा पर हाथ और पैर उठाने के लिए उसे कम प्रयत्न करना पड़ेगा; परंतु पृथ्वी पर पड़ी हुई आदत के कारण वह शुरू-शुरू में अनावश्यक शक्ति लगायेगा।

पृथ्वी पर ही विशेष उपकरणों के भीतर चंद्रमा के जैसा गुरुत्वाकर्षण उत्पन्न करके, उसमें प्रयोग करने पर देखा गया है कि धीमी चाल से चलने में कोई कठिनाई नहीं होती; मगर तेज चाल से चलते हुए संतुलन बिगड़ जाता है और अक्सर गिरने की नौबत आ जाती है। यह सिद्ध करता है कि चंद्रलोक-यात्रियों को शारीरिक हलचल में तालमेल बैठाना और निम्न गुरुत्वाकर्षण में चलना अच्छी तरह सिखाना होगा।

यह सिद्ध हो चुका है कि चंद्रमा पर विशेष चुंबकीय क्षेत्र नहीं है। इसका यह अर्थ है कि अन्वेषकों को वहां अपनी भौगोलिक स्थिति का हिसाब लगाने के लिए चुंबकीय कुतुबनुमा (मैग्नेटिक कंपास) से कोई मदद नहीं मिलेगी। उन्हें आकाशीय पिंडों से दिशा जाननी पड़ेगी, या चुंबक तत्व से भिन्न किसी सिद्धांत पर आधारित उपकरणों से सहायता लेनी पड़ेगी।

इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि चंद्रमा पर (और अन्य ग्रहों की यात्रा में भी) चुंबकीय क्षेत्र मनुष्य पर प्रभाव डालना बंद कर देगा।

पृथ्वी के समस्त जीवित पदार्थ उसके चुंबकीय क्षेत्र में विकसित हुए हैं और उससे निरंतर प्रभावित होते रहते हैं। इसलिए स्वभावतः यह प्रश्न उठता है कि क्या चुंबकीय क्षेत्र का अभाव मनुष्य पर मानसिक प्रभाव डालेगा? उत्तर के लिए हमें चुंबकीय जीवशास्त्र की शरण में जाना होगा, जो कि एक नया विकसित होता हुआ विज्ञान है।

आंकड़ों के अध्ययन से ऐसा संकेत मिलता है कि चुंबकीय तूफानों के दौरान (जबकि पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र की तीव्रता और फ्रीक्वेन्सी तेजी से बदलती है) स्नायविक बेचैनी (नर्वसनेस) और मनोरोगों के मामलों की संख्या में वृद्धि होती है, और इन रोगों से रोगियों की मृत्यु-दर बढ़ जाती है।

इस क्षेत्र में रूसी वैज्ञानिक व्लादीमीर देस्यातोव का शोधकार्य बहुत रोचक है। उन्होंने १९५४-६४ के बीच की आत्महत्याओं और सड़क-दुर्घटनाओं का सूर्य की ज्वाला-प्रकोप (फ्लेयर) के साथ मेल बैठाया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है। यह एक सुविदित बात है कि इन ज्वाला-प्रकोपों के समय पृथ्वी पर प्रचंड चुंबकीय तूफान आते हैं।

अपनी रिपोर्ट में देस्यातोव कहते हैं—"ऐसा प्रतीत होता है कि दुर्बल स्नायु-संस्थानवाले व्यक्ति और पुराने शराबी ज्वाला-प्रकोप के बाद बहुत ही पस्त हो जाते हैं। परिणामतः ज्वाला-प्रकोप के अगले दिन आत्महत्याओं की संख्या शांत अवधि की अपेक्षा चार-पांच गुना अधिक होती है।"

सूर्य के ज्वाला-प्रकोप के अगले दिन मोटर-दुर्घटनाओं की संख्या भी शांत अवधि की तुलना में चार-पांच गुना बढ़ जाती है।

विविध प्रकार के जीव-जंतुओं पर किये गये अनेक परीक्षणों से यह संकेत मिलता है कि बहुत भिन्न-भिन्न फ्रीक्वेंसीवाले चुंबकीय क्षेत्र स्नायु-संस्थान को प्रभावित करते हैं और जीवित पिंड में नाना प्रतिक्रियाओं को जन्म देते हैं।

पृथ्वी का चुंबकीय क्षेत्र प्रतिक्षण ८ से १६ बार तक टिमटिमाता है। वैज्ञानिकों का विश्वास है कि मस्तिष्क की क्रियाक्षमता की बुनियादी लय भी, विज्ञान की भाषा में जिसे 'आल्फा' लय कहा जाता है, पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र की धड़कन के साथ जुड़ी हुई है। (आल्फा की लय की फ्रीक्वेंसी भी लगभग इतनी ही है।)

संभव है, चुंबकीय तूफान के समय फ्रीक्वेंसी में होनेवाले उग्र परिवर्तन जीवंत पिंडों में चल रही प्रक्रियाओं को प्रभावित करते हों और मस्तिष्क की सामान्य सूचना-व्यवस्था को गड़बड़ा देते हों।

यह सुविदित है कि स्वस्थ मनुष्य का स्नायु-संस्थान अपने की परिस्थितियों के अनेक परिवर्तनों के अनुकूल ढाल सकता है; लेकिन जब वह निर्बल और बीमार हो गया हो, तब परिस्थितियों के प्रतिकूल प्रभावों के प्रति वह संवेदनशील हो जाता है। निर्बल स्नायु-संस्थान ऐसे दबावों को सफलता के साथ झेल नहीं पाता और इससे स्नायु-रोग उत्पन्न होते हैं, या विद्यमान स्नायु रोग उग्र हो जाते हैं।

मस्तिष्क की लयबद्ध क्रियाशीलता पर चुंबकीय क्षेत्र के प्रभाव का यह तात्कालिक सिद्धांत या प्रमेय प्रमाणित हो सके, इसके लिए उसे प्रयोगों का सहारा जरूरी है। यदि प्रयोगों से वह प्रमाणित हो जाता है, तो यह आशंका की जा सकती है कि पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र से बाहर जानेवाले अंतरिक्ष-यात्रियों में मानसिक एवं शारीरिक (फिजियोलाजिकल) गड़बड़ प्रकट होगी।

वैसे हमारे विचार में, चंद्रमा पर चुंबकीय क्षेत्र का न होना, मानव की मानसिक-शारीरिक प्रक्रियाओं पर कोई दुष्प्रभाव नहीं डालेगा; क्योंकि पृथ्वी पर जीवन के विकास की लाखों वर्ष लंबी परंपरा के कारण मनुष्य की जीवरासायनिक प्रतिक्रियाओं की एक स्थिर लय बंध गयी है।

यदि यह प्रमेय सही सिद्ध हो भी जाये तो भी, इतने मात्र से मनुष्य बाह्य अवकाश की, विशेषतः चंद्रमा की छानबीन करने से बाज नहीं आयेगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राष्ट्र की एक वेतन-नीति हो

संजय

आज देश के सब वर्गों में जिस तरह अनुशासनहीनता फैल रही है, उसके अनेक कारण हो सकते है। इन कारणों पर बहुत गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है, ताकि उनके मूल में जाकर उन्हें दूर किया जा सके। असंतोष, प्रदर्शन, घेराव, हड़ताल और हिंसात्मक उपद्रवों का एक मुख्य कारण अपने वेतन से भारी असंतोष है। सरकार ने समय-समय पर अनेक उद्योगों और सेवाओं के लिए वेतन-मंडल नियुक्त किये हैं। किंतु सच्चाई यह है कि वेतन-मंडलों की सिफारिशों और उनके क्रियान्वय से वेतनभोगी वर्ग—मजदूर, सरकारी नौकर, अध्यापक व पत्रकार आदि किसी को भी संतोष नहीं होता और प्रतिदिन किसी-न-किसी वर्ग की हड़ताल के समाचार आते रहते हैं।

वस्तुतः स्वाधीनता के २० वर्षों के बाद भी हम किसी एक वेतन नीति का निर्धारण नहीं कर पाये। वेतन की कसौटी क्या हो, यही अब तक विवादास्पद विषय है। वेतनभोगी श्रमिक या शिक्षित वर्ग को किस आधार पर वेतन मिलने चाहिये? उसकी कार्यक्षमता, योग्यता या विनियोग की देयक्षमता आदि में से किस तत्व को हम प्रमुखता दें? साधारण अर्थशास्त्र का नियम यह है कि मांग और उपलब्धि के अनुसार वेतन निर्धारित होते हैं। किसी वर्ग की अधिक मांग होगी और उसके मुकाबले में उसकी उपलब्धि कम होगी, तो उसे वेतन अधिक दिये जायेंगे। इसके विपरीत अवस्था में कम वेतन हों।

परंतु आज की संगठन और संघर्ष की स्थिति में यह नियम काम नहीं कर रहा है। अब तो जो वर्ग जितना अधिक संगठित और संघर्ष में सक्षम होता है, उसके वेतन उतने ही अधिक हो जाते हैं। विनियोजकों का मत है कि वेतन को उत्पादन के साथ संबद्ध करना चाहिये, अर्थात् जो श्रमिक जितनी अधिक उपार्जन-योग्य संपत्ति का निर्माण करता है, उसे उतना अधिक वेतन मिलना चाहिये। केवल विनियोजक की देयक्षमता को नहीं देखना चाहिये।

नयी-से-नयी मशीनरी और विनियोजन के आधार पर बड़े उद्योग में कार्यकर्ता को बहुत कम परिश्रम करना पड़ सकता है। छोटे उद्योग में उसी तरह का काम करने वाले और उसी योग्यतावाले कर्मचारी को बहुत कठोर परिश्रम करना पड़ता है। तब दोनों के वेतन का आधार क्या हो? और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अध्यापक को उपार्जन-क्षमता के आधार पर शायद शून्य वेतन ही दिया जायेगा; क्योंकि शिक्षा-विभाग कुछ कमाता नहीं है। दूसरी ओर उससे कहीं कम योग्य व्यक्ति को भाग्य से किसी बड़े बैंक या बड़े व्यापारी के यहां स्थान मिलने पर सैकड़ों-हजारों रुपये दिये जा सकते हैं।

आज हमारे देश के अध्यापक, पत्रकार, चिकित्सक, सरकारी नौकर सभी अपनी वर्तमान स्थिति से असंतुष्ट हैं। राज्य सरकारों की आय और क्षमता कमोवेश होती है; परंतु सभी राज्यों में केंद्र के समान वेतन लेने की मांग जोर पकड़ रही है। फिर एक स्थान पर ही काम करनेवाले श्रमिकों के वेतनों में भी कम अंतर नहीं होता। केवल कर्मचारी के कठोर या कम परिश्रम के आधार पर वेतन नहीं दिये जाते। वस्तुतः श्रम और वेतन समस्या इतनी जटिल हो गयी है कि उस पर नेताओं को समग्र दृष्टि से विचार करना चाहिये। सभी उद्योगों और सभी राज्यों व नगरों में वेतन-निर्धारण की एक समान कसौटी के निर्धारण की बड़ी आवश्यकता है।

कर्मचारियों और श्रमिकों के असंतोष को मनोवैज्ञानिक रूप से भी कम करना चाहिये। इसके लिए यह आवश्यक है कि बड़े अधिकारी, उदाहरण के लिए ५०० रुपये या अधिक पानेवाले अफसर, अध्यापक, पत्रकार, चिकित्सक या व्यापारिक कंपनियों में काम करनेवाले तकनीकी कर्मचारी अपना वेतन कम करने की ओर ध्यान दें। यदि उदाहरण के तौर पर अधिक वेतन पानेवाले सभी कर्मचारी अपना एक प्रतिशत वेतन कम करने को तैयार हो जायें, तो अपने उद्योग, व्यापार अथवा शिक्षा-विभाग के नीचे के कर्मचारियों को भी वे अधिक वेतन पर आग्रह न करने के लिए प्रेरित कर सकेंगे।

हमारी अर्थ-व्यवस्था की एक बड़ी कमी यह है कि बड़े अधिकारियों के वेतन तो कम नहीं होते और उनकी संख्या भी बराबर बढ़ती जाती है। दूसरी ओर धनाभाव का कुठार सामान्य कर्मचारियों और श्रमिकों पर ही पड़ता है। अधिक वेतन-भोगी कर्मचारी अपने कार्य के द्वारा सामान्य कर्मचारियों और श्रमिकों के असंतोष को इसी तरह कम कर सकते हैं। फिर ऐसा करने से हम समाजवाद के महान उद्देश्य को भी अधिक निकट ला सकेंगे और जनता पर कर-भार कुछ कम कर सकेंगे।

हमारा सुझाव यह है कि एक तरफ सरकार और सरकारी संस्थाएं मितव्यय का आदर्श उपस्थित करें, दूसरी ओर उद्योग और व्यापार क्षेत्र से भी इस आदर्श को अपनाने का आग्रह करें। यह विचार प्रारंभ में कुछ अटपटा और अव्यावहारिक दीखेगा। उच्चवर्ग अपने जीवन-मान को कम नहीं करना चाहेगा। परंतु उसे त्याग की यह कड़वी गोली लेनी ही पड़ेगी, चाहे प्रसन्नता से, चाहे अप्रसन्नता से। हमारे साधन सीमित हैं। इसलिए हमें अपने साधन अनिवार्य प्राथमिकताओं पर ही खर्च करने चाहिये।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पत्र और परामर्श

कागज के घटियापन के लिए नवनीत-संचालक ने क्षमा-याचना की है। निःसंदेह कागज के घटियापन से पत्रिका की शोभा घटती है। किंतु चाहे मनुष्य हो या पत्र-पत्रिका, असली चीज अंतःसौंदर्य है। विषय-वस्तु सारवान और सत्वशाली हों, शैली चुस्त और सरस हो—इसकी पूरी जागरूकता आप बरतते रहेंगे, तो हम पाठक कागज की असुंदरता को थोड़े समय सहार लेंगे।

—जगदीश मित्तल, कानपुर

०००

'दीदी' की आखिरी किस्त पढ़कर वैदिक युग की नारी का चित्र मन में उभर आया। आज के समाज को ऐसी ही दृढ़प्रतिज्ञ, कर्तव्यपरायण नारी की आवश्यकता है।

—डा० सुशीला शर्मा, नयी दिल्ली

०००

दाक्षिणात्य नामों के सही उच्चारण का प्रश्न (शब्द-वेध, जून १९६८) बड़ा ही व्यापक है, पूरी एक लेखमाला के योग्य। यों उत्तर के नाम भी दक्षिण में काफी तोड़े-मरोड़े जाते हैं। टंडनजी जीवन-भर दक्षिण में 'तांदन्' रहे और कैरों कैरान्। जब तक हम संवाद और समाचार का प्रेषण रोमन में करते रहेंगे और हमारे पत्रकार अपना बौद्धिक आलस्य नहीं छोड़ेंगे, स्थिति नहीं सुधरेगी।

—ई० शंकरन्, बेंगलूर

०००

'क्या पेरिस जल रहा है' फ्रांस की वर्तमान उथल-पुथल के कारण विशेष रोचक हो गया है। स्व० भोबेजी की कथा 'अंतर्वेदना' मर्मस्पर्शी है। काश, उनके जीवन-काल में यह पढ़ने को मिलती!

—वीणापाणि गुप्त, रायपुर

०००

गेय कविताओं की संख्या जरा बढ़ा दीजिये, 'नवनीत' का रस-पक्ष पुष्ट हो जायेगा। विचार-पक्ष काफी सबल है।

—विमलेश खन्ना, जालंधर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कोढ़ियों का देवता

जे० पी० वास्वानी

एक पहुंचे हुए भक्त से लोगों ने पूछा — "आप अध्यात्म में बहुत ऊंचे पहुंच चुके हैं। आपकी इस सिद्धि का रहस्य क्या है?"

भक्त ने उत्तर दिया—"मैं ऊंचा पहुंचा हुआ हूं या नहीं, मैं नहीं जानता। मैं तो इतना जानता हूं कि मैंने एक काम किया है, जो कुछ भी मुझे मिला, उसे मैंने लुटा दिया।"

फादर दामियेन के जीवन का भी यही रहस्य था। जो कुछ भी उन्हें प्राप्त हुआ, उन्होंने लुटा दिया। उन्होंने अनुभव किया कि जीवन बटोरकर रखने के लिए नहीं, बल्कि ईश्वर और उसकी दुखिया संतान की सेवा में लुटा देने के लिए मिला है।

अपना सारा जीवन उन्होंने कोढ़ियों की सेवा में बिता दिया। कोढ़ियों के घिनौने जख्मों और रिसते घावों में उन्होंने ईसा का सौम्य मुखड़ा देखा। कोढ़ियों की वीरान और अंधेरी जिंदगियों में वे वसंत ऋतु की भांति नयी रोशनी और खुशी लेकर आये।

कोढ़ियों को अछूत ही समझा जाता था। हवाई द्वीपों में सरकार ने कानून बनाकर कोढ़ियों को समाज से बाहर कर दिया था। उन सबको 'मोलोकाई' द्वीप में भेज दिया गया था। बाहरी दुनिया से उन्हें कोई संबंध नहीं रखने दिया जाता था। जो भी एक बार मोलोकाई द्वीप चला जाये, वह वहां से लौटकर नहीं आ सकता था।

फादर दामियेन ने इन्हीं बहिष्कृतों की सेवा में अपना जीवन समर्पित कर देने का संकल्प किया। वे जानते थे कि इसका क्या अर्थ होगा। वे अभी जवान थे, सिर्फ तैंतीस वर्ष के। शरीर उनका स्वस्थ और हृष्ट-पुष्ट था। आशाओं और संभावनाओं से भरी लंबी जिंदगी उनके सामने पड़ी थी।

जब उन्होंने यह गंभीर संकल्प किया, तो मित्रों और साथियों ने उन्हें चेताया। किसी ने कहा—"दामियेन, पागल न बनो। कोढ़ियों के बीच रहोगे तो तुम्हें भी यह रोग जरूर ग्रस लेगा।" दूसरा बोला—"कोढ़ी की जिंदगी तो कुरूपता, यातना और तिल तिल करके मरने की जिंदगी

चित्रकार: जान तुरोप

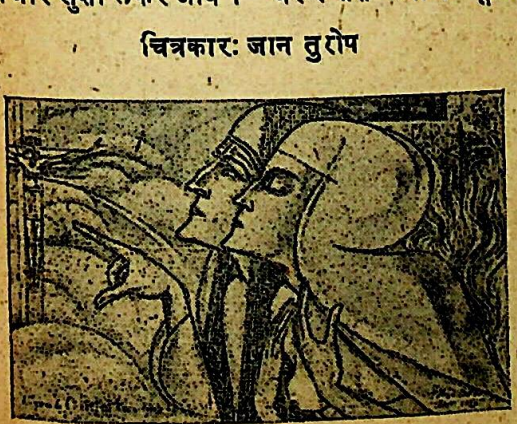

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होती है।" तीसरे ने चेतावनी दी—"उन लंबे एकाकी वर्षों की सोचो, जब तुम मित्र-हीन, बहिष्कृत पड़े-पड़े मौत का इंतजार करोगे।"

परंतु फादर दामियेन संकल्प कर चुके थे। जवाब में उन्होंने कुछ नहीं कहा, सिर्फ मुस्करा दिये। और उनके साथ फूल मुस्करा उठे और पेड़ खुशी में झूमने लगे।

और बादलों की ओट से झांककर सूरज ने उन्हें आशीर्वाद दिया। उन्होंने अपने माता-पिता को लिखा—"मैं मोलोकाई जाऊंगा और कोढ़ियों की सेवा करूंगा, जिनके शारीरिक और आध्यात्मिक दुर्भाग्य पर अक्सर मैं खून के आंसू बहाता हूं।"

फादर दामियेन ईसा के भक्त थे। वे प्रायः कहा करते थे—"मैं तो प्रभु के हाथों में हूं—जैसे कुशल मिस्त्री के हाथ में औजार हो। जीवन और मृत्यु दोनों में मैं ईसा का हूं।" साथ ही वे बड़े कर्मशील व्यक्ति थे। और कर्मशील व्यक्ति बोलते कम हैं।

दामियेन मोलोकाई जा रहे थे, अपने प्रिय के निकट पहुंचने के लिए, कोढ़ियों की सेवा द्वारा प्रभु का सान्निध्य पाने के लिए। और उन्हें प्रभु के ये दिव्य वचन याद आ रहे थे—"इन छोटों में से छोटे-से-छोटे के लिए भी तुम जो कुछ करोगे, वह मेरे ही लिए करोगे।"

चित्र : जान तुरोप

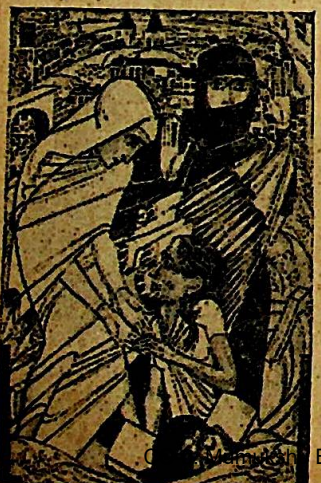

जब वे मोलोकाई के लिए रवाना हुए तो मित्रों की आंखों में आंसू और हृदयों में आशीर्वाद थे। मगर युवा दामियेन के दिल में न भय था; न चिंता थी, न भविष्य की आशंका थी। उनकी चमकती आंखों में एक सपना तैर रहा था, और उनके हृदय में एक गीत गूंज रहा था :

मैं अकेला नहीं हूं—
प्रिय मेरे संग है
मेरे संग, मेरे हृदय में।
और मैं खुश हूं
जैसे कि सागर पर
नाच रही हो लहर।

मोलोकाई में फादर दामियेन का किसी ने हार्दिक स्वागत नहीं किया। द्वीप के एक छोर पर आठ सौ कोढ़ी रहते थे। उनके एक ओर समुद्र था और दूसरी ओर २,००० फुट लंबी पहाड़ी दीवार। वे मानो चलते-फिरते शव थे। जीवन में कोई दिलचस्पी नहीं थी उन्हें। वे बैठे शून्य में ताका करते और मौत की प्रतीक्षा करते। फादर दामियेन जिधर भी जाते, कोढ़ियों की भावशून्य नजरें उनका स्वागत करतीं। कौन था यह अजनबी, जिसके शरीर पर कोढ़ का कोई निशान नहीं था। उसे उनके बीच में आने का क्या अधिकार था?

कोढ़ी नाराज थे। मगर इससे क्या! दामियेन को तो उन्हें प्यार करना था, उनकी सेवा करनी थी; क्योंकि वे लोग ईश्वर के जीते-जागते प्रतिरूप थे। दामियेन को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उनके दिलों में स्थान पाने में ज्यादा समय नहीं लगा। बहुत जल्दी कोढ़ियों को विश्वास हो गया कि दामियेन उनके सच्चे भाई थे, जो उनका दुःख-दुर्भाग्य बंटाने के लिए वहां आये थे।

फादर दामियेन के प्यार और नम्रता ने चमत्कार कर दिखाया। क्या प्यार में चमत्कार की दिव्य शक्ति नहीं है? क्या विनम्रता दिलों को जीत नहीं लेती? कोढ़ियों की बस्ती में नयी जिंदगी की लहर दौड़ गयी। उनके जीवन में एक नयी आशा का संचार हुआ।

फादर दामियेन ने उन्हें बताया कि वे सब ईश्वर की प्रिय संतान हैं और वे अपने रोगग्रस्त शरीरों के कारण ईश्वर के मातृ-हृदय को अधिक प्यारे हैं। वे उन्हें बार-बार यह संदेश देते :

ईश्वर के राज्य में कोई कोढ़ी नहीं।
कोढ़ी है केवल वह
कि जिसके हृदय पर
पाप और दुष्टता के जख्म हैं।
शरीर तो नश्वर है
केवल प्यार सदा जियेगा,
क्योंकि वह अमर है।
और प्यार जो करता है,
वही सचमुच जीता है—
शेष सब सांस लेती लाशें हैं!

यह सादा-सा गीत, कोढ़ी अपना दैनिक काम करते हुए गाते। उनके जीवन बदल गये। अब वे एक दूसरे से कहते—"फादर दामियेन हमें प्यार करते हैं।" किसी का प्यार पाना उनके लिए बहुत बड़ी बात थी। वे उनके कामों में हाथ बंटाने लगे। फादर दामियेन में संघटन और व्यवस्था की अद्भुत शक्ति थी। वे मेहनत से मुंह नहीं मोड़ते थे। उनका शरीर हृष्ट-पुष्ट और सशक्त था। उन्हें अपने कंधों पर शहतीर ढोने में शर्म नहीं आती थी। उन्होंने कोढ़ियों के लिए मकान बनाये, गिरजे बनाये। बस्ती में नालियां खोदीं, स्वच्छ पानी का इंतजाम किया। जिनके माता-पिता कोढ़ से मर चुके थे ऐसे अनाथ बच्चों के लिए उन्होंने अनाथालय और स्कूल खोला।

यह सब फादर दामियेन ने यश और प्रतिष्ठा पाने के लिए नहीं किया। वे निर्लिप्त और अनुद्विग्न भाव से काम करते जा रहे थे—भगवान का काम। एक पत्र में उन्होंने लिखा—"सांसारिक चिंताओं और सुखों से जितने ही निर्लिप्त होओगे, उतना ही यह अनुभव करोगे कि प्रभु ही श्रद्धालुओं की सच्ची संपत्ति है।"

सन १८८१ में हवाई द्वीपों की महारानी मोलोकाई पधारी और फादर दामियेन के काम से बहुत प्रभावित हुई। उसने फादर को बहुत बड़ा खिताब दिया और साथ में लाल रंग की सोने की सलीब भेजी।

कुछ महीने बाद एक मित्र दामियेन से मिलने आया। उसने उनके कमरे के एक कोने में पड़ा एक छोटा-सा डिब्बा देखा, जिस पर धूल की तह जमी हुई थी। उसे खोला, तो उसमें वही खिताबवाली सलीब पड़ी हुई थी। हैरान होकर उसने फादर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

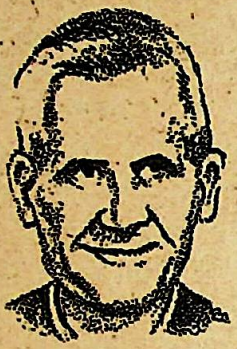

कार्डिनल पाल एमिलि लीजर, जो मांट्रियल का आर्चबिशप पद छोड़कर जापान में कोढ़ियों की सेवा में जुट गये हैं। लीजर द्वितीय विश्वयुद्ध से पहले भी जापान में थे। रोमन कैथलिक चर्च का एक वर्ग इस पक्ष में है कि अगला पोप कोई गैरइतालवी होना चाहिये। यदि यह विचार जोर पकड़ गया, तो संभव है कनाडावासी कार्डिनल लीजर पोप चुन लिये जायें।

दामियेन से पूछा कि शाही खिताब की ऐसी उपेक्षा क्यों कर रखी है? "मैं इसकी खातिर मोलोकाई नहीं आया था," फादर का सादा-सा जवाब था।

जब भी फ़ादर दामियेन होनोलूलू जाते, तो उन्हें शाही महल में मेहमान के रूप में ठहराया जाता। परंतु वे कभी वहां के नर्म बिस्तर पर नहीं सोते थे, हमेशा अपना मोटा कंबल ओढ़कर फर्श पर सोते थे।

बारह साल तक उन्होंने कोढ़ियों की सेवा की। वे दिन-रात उनकी देखभाल में लगे रहे। वे उनकी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते, उनकी आत्माओं को शांति और समाधान देते। इन बारह सालों में यदि उन्हें कोई दुःख था, तो यही कि पूर्ण रूप से स्वस्थ होने के नाते वे कोढ़ियों से अलग पड़ जाते थे, जबकि वे उनसे एकाकार होना चाहते थे।

आखिर बारह साल की सेवा के बाद वह दिन आया, जब उन्होंने गर्म पानी में पांव डाला, तो उन्हें गर्माहट महसूस न हुई। हां, उन पर कोढ़ का आक्रमण हो गया था। अब वे कोढ़ी थे। "भाइयो, अब मैं तुमसे भिन्न नहीं हूं।" वे घबरा नहीं उठे। अपितु इसे उन्होंने ईश्वर का वरदान ही माना।

अब फादर दामियेन अधिक उत्साह से काम करने लगे; क्योंकि वे महसूस करने लगे थे कि शीघ्र ही वे काम करने में असमर्थ हो जायेंगे। अगले पांच साल तक वे लगातार काम करते रहे। आखिर १५ अप्रैल १८९९ को, उनचास साल की अवस्था में वे ईश्वर को प्यारे हो गये।

कांपते हाथों और दुःख से दबे दिलों से कोढ़ियों ने उनका अंतिम संस्कार किया। सबकी आंखों में आंसू थे। तभी उनमें से एक व्यक्ति रुदन-भरे कंठ से गा उठा:

रोशनी बुझ गयी है,
सूरज डूब गया है,
हम सबको
रात के अंधेरे में छोड़कर!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जापान ने विज्ञान कैसे अपनाया

डा० रघुवीर

सन १८६७ में जापान सरकार ने अपने देश में विदेशी पर्यटकों को प्रवेश की छूट दी। बीस वर्ष पश्चात् जापान ने अपनी शिक्षा-प्रणाली का पुनर्निर्धारण आरंभ कर दिया। कार्य दुःसाध्य था, पर जापानी इससे भयभीत नहीं हुए। वे बड़े कर्मठ थे, उनमें तारुण्य था। जापान दासों का देश नहीं था। वह ऐसा देश था, जो सदा स्वतंत्र रहा था। सो जब उन्होंने आधुनिकीकरण का निश्चय कर लिया, तो कोई शक्ति उन्हें रोक नहीं सकती थी।

युवकों के दल-के-दल यूरोप तथा अमरीका के लिए निकल पड़े। उन्होंने पाश्चात्य विज्ञान तथा साहित्य की शिक्षा प्राप्त की तथा स्वदेश लौट आये। परंतु चिंतन और शिक्षण का निजी माध्यम अपनाये बिना स्वदेश में पाश्चात्य वातावरण की सृष्टि करना असंभव था। और यह बड़ा कठिन कार्य था; क्योंकि जो व्यक्ति राष्ट्र के नव-निर्माण के इस कार्य के लिए नियुक्त किये गये, वे यूरोपीय शब्दों की सही अर्थछायाओं तथा उनके अनुषंगों की व्यापकता को समझने में सिद्धहस्त नहीं थे।

परंतु जापानी जल्दी में थे और अधिक प्रतीक्षा नहीं कर सकते थे। भली-बुरी जैसी भी शब्दावली उन्होंने अपनी भाषा में प्रस्तुत कर दी। वैज्ञानिक शब्दावली विशाल होती है। सो नवयुवकों के दल वर्षों तक दिन-रात कार्य में जुटे रहे, जब तक उन्होंने अपने निजी तकनीकी विशेषज्ञ, दस्तकार, खनिक, पोत-वणिक्, बिजली-मिस्त्री और विज्ञान की प्रत्येक शाखा के प्राध्यापक (विश्वविद्यालय स्तर के) प्रशिक्षित नहीं कर लिये।

जापानियों ने हर काम अपनी ही भाषा के माध्यम से करने का निश्चय किया और एक विचित्र बात उन्हें पता चली, जो हमारे लिए एक खोज से कम न होगी। जो लोग विदेशों में गये, वे श्रेष्ठ कार्यकर्ता नहीं सिद्ध हुए। पर जिन मेधावियों ने अपनी भाषा के माध्यम से काम किया, उन्होंने सर्वाधिक ज्ञान प्राप्त किया, अपेक्षाकृत अधिक काम किया और उनका विषय-ज्ञान असंदिग्ध था।

स्वभाषा-माध्यम का जापानियों को एक और लाभ भी पहुंचा। जब वे किसी नये व्यापार-योग्य उत्पादन का पता लगाते, या शुद्ध विज्ञान के क्षेत्र में कोई नवीन आविष्कार करते थे, तो वह बाह्य जगत् के लिए वर्षों तक अज्ञात बना रहता था। अन्य देशों को उनका पता तभी लगा, जब जापानियों ने और भी उन्नति कर ली और वे इस योग्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हो गये कि शेष जगत् को संपन्न बनाने के लिए स्वयं ये रहस्य प्रकट कर दें।

हमारे देश में शिक्षा का माध्यम अनिवार्यतः अंग्रेजी होने के कारण, हम अपनी ही भाषा के प्रति जागरूकता और आस्था खो बैठे हैं। हम दीर्घकाल तक पराधीन रहे हैं; अतः स्वयं अपना भी मूल्य नहीं समझते। भावना का प्रश्न तो है ही, उसके अलावा यह एक शिक्षा-संबंधी समस्या है, जो शुद्ध उपयोगितावादी दृष्टिकोण से ही सुलझेगी।

लगभग एक सहस्र अंग्रेजी शब्द हमारे देश में इतने प्रचलित हो गये हैं कि उनके अनुवाद का कोई प्रयत्न करना पाखंड समझा जायेगा। परंतु यूरोपीय सभ्यता अपनाते समय जापानी स्वतंत्र थे। कोई विदेशी भाषा उन पर लादी नहीं गयी थी और वे अपने पर या अपनी भावी पीढ़ियों पर कोई विदेशी भाषा थोपने की कल्पना तक नहीं कर सकते थे। स्वभावतः वे किसी अन्य भाषा की शब्दावली में विचार नहीं कर सकते थे।

नीचे कुछ सामान्य अंग्रेजी शब्द उनके जापानी पर्यायों के साथ दिये जा रहे हैं :

'एस्बस्टस' का पर्याय जापानी भाषा में दो संकेतों से बनाया गया है, जिनका उच्चारण 'सेकी-मेन' है और अर्थ है 'शिला-तंतु'। 'आटो-जाइरो' का पर्याय है 'फु-शा-शिकी-ही-को-की' और इन छः पदांशों का अनुवाद होगा 'वायु-चक्रयान-प्रतिरूप-द्रुत-गति-यंत्र-प्रणाली'। जापानी इसे लंबा शब्द नहीं मानते।

'बेंगलोर टारपीडो' सदृश शब्द में जापानियों ने स्थानवाचक पद बंगलोर छोड़ दिया है। इसे वे 'बाकू-याकू-तो' कहते हैं, जिसका अनुवाद होगा 'विस्फोटन-भेदक-नलिका'। 'बैरोमीटर' जापानी में 'सेइ-यू-की' अर्थात् 'आतप-वर्षा-मापक' है।

'बैटरी' का पर्याय 'डेन-चि' है; अर्थ है 'विद्युत्-तडाग'। वाइसिकल को 'जि-तेन-शा' कहते हैं; इसका अर्थ है 'स्व-परिक्रामी-चक्रयान'। 'अस्पताल' को 'ब्यो-इन' कहा जाता है, जिसका अर्थ है 'रोग-भवन'। फोटोग्राफ को 'शा-शीन' कहते हैं, जिसका भाव है 'प्रतिबिंबित वास्तविकता'।

'रेल्वे' का अनुवाद जर्मन तथा फ्रेंच नाम से किया गया है, अंग्रेजी शब्द से नहीं। इसका पर्याय 'तोत्सू-दो' है, जिसका अर्थ है 'लौह-पथ'। 'प्लैटफार्म' कहलाता है 'जो-को-दाइ' और उसका अर्थ है 'चढ़ने-उतरने का चबूतरा'। 'स्विच' जापानी में 'डेनरो-काइ-ही-की' है और उसका अनुवाद होगा 'विद्युत्-संचारक-बंधक यंत्र'।

ये शब्द सर्वथा उसी अर्थ में मान्य नहीं, जिसमें संस्कृत शब्द हैं। वे अन्वर्थक और यहां तक कि कुछ काव्यात्मक हैं और मुख्यतया, व्यवहार्य हैं। उनके बिना जापानी विज्ञान में दक्षता नहीं प्राप्त कर सकते थे, साधारण जनता में शिक्षा-प्रसार नहीं कर सकते थे। दुःख की बात है कि उन्होंने विज्ञान के साथ-साथ सैन्य-शक्ति का भी जर्मनी की भांति विकास किया और इस कारण उनकी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रगति मंद पड़ गयी।

विज्ञान को अपना बनाने के लिए हमें अपनी शब्दावली अवश्य बनानी पड़ेगी। पारिभाषिक शब्दावली अंग्रेजी से ग्रहण करने की नीति हमें सदा अंग्रेजी का दास बनाये रखेगी।

हमें अपना वैज्ञानिक साहित्य निर्माण करना है। अन्य भाषा के बजाय हमारी भाषा माध्यम हो, तो यह साहित्य अधिक शीघ्र निर्मित होगा। अपनी भाषा के माध्यम से चिंतन तथा अपनी पारिभाषिक शब्दावली द्वारा विज्ञान हमारा अपना ही बन जायेगा; तब वह विदेशी नहीं रहेगा।

[भाषा से साभार; अनु० रामचंद्र तिवारी]

दिल की बीमारी की एक नयी दवा

डा० फ्युसन अमरीका की ड्यूक यूनिवर्सिटी में सर्जन हैं। उन्होंने एक नये औषध का आविष्कार किया है। उनका दावा है कि इस औषध से दिल की बीमारियों का प्रभावपूर्ण इलाज हो सकेगा। उन्होंने इस औषध के प्रयोग से अपने रक्त में कालेस्टेरोल का स्तर नवजात शिशु के रक्त-स्तर तक उतारने में सफलता पायी है। यह औषध पीले रंग का चूर्ण है, जिसे डा० फ्यूसन ने 'कालेस्टेरामाइन' नाम दिया है। वे इसे पानी के साथ दिन में तीन बार खाते हैं। इसका प्रयोग और भी ६५ रोगियों पर किया जा रहा है; और उनमें कालेस्टेरोल का स्तर औसत ६० प्रतिशत तक उतरा है।

जख्मी और कटे हुए अंगों का पुनर्जन्म

मिशिगन विश्वविद्यालय के जीवन-विज्ञानी डा० जान आर० प्लाट ने यह भविष्यवाणी की है कि मनुष्य अपने कटे हुए अथवा नष्ट हुए अंगों को उन्हीं स्थानों पर फिर जन्म दे सकता है। यानी अगर किसी का हाथ कट गया हो, तो फिर एक नया हाथ प्राकृतिक तौर पर बन सकता है। आये दिन होनेवाली दुर्घटनाओं में लाखों आदमी पंगु होते हैं, उनका अंग-भंग होता है, और उनके इलाज में करोड़ों रुपये खर्च होते हैं। अगर प्रयोगवादी जीवन-विज्ञानियों को वही अवसर और साधन दिये जायें, जैसे अंतरिक्ष-यात्रा संबंधी प्रयोग करनेवाले वैज्ञानिक को दिये जाते हैं, तो यह भविष्यवाणी कुछ ही वर्षों में सच हो सकती है।

विचित्र रक्त-दानी

एक बड़ा-सा भयानक दीखनेवाला केंकड़ा, जो बड़ी आसानी से नारियल के छिलकों को कुतर डालता है, अमरीका के डा० एसियस कोहेन ने पकड़ा है। डा० कोहेन के अनुसार इस केंकड़े के रक्त को मनुष्य की रक्त-कोशिकाओं के साथ परख-नली में रखकर बहुत उपयोगी शोध-कार्य किया जा सकेगा और मनुष्य के रक्तों के बहुत सारे प्रकार, जो अभी पहचाने नहीं जा सके हैं, इस केंकड़े के रक्त के सहारे पहचाने जा सकेंगे। डा० कोहेन ने ऐसे बहुत सारे केंकड़े न्यागरा प्रपात के 'एक्वेरियम' में एकत्र किये हैं।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बाजी कबूतर की और तीतर-बटेर की

ब्रजकिशोर नारायण

क्या जमाना था, जब मकसद मियां बटेर की बिरियानी उड़ाया करते थे। कबूतर के कोफ्ते से नाश्ता हुआ करता था और तीतर के कबाब पर चोंचले चला करते थे! अब वह बात कहां। वक्त ने ऐसी अंगड़ाई ली कि जेब ठंडी पड़ गयी और बटेर वनों में उड़ गये। कबूतरों ने कबूतर-खाने को टूटा पाया, गोया उनकी किस्मत फूट गयी। दाने-दाने की मुहताजी आयी, तो जंगलों की राह ली। नन्हे तीतर बेचारे की क्या हस्ती! वह तो यों ही एक अदना-सा जीव! आसमान में जाकर कहीं खो गया। हवाओं में गायब हो गया।

उफ्! सचमुच, वे गुजरे हुए दिन अब एक सपने से लगते हैं। अमन-चैन की जिंदगी थी। शांति का समुंदर था। न इस लोक की चिंता, न परलोक का गम। समय कैसे कटे, बस इसी उधेड़बुन में दिमाग लड़ते थे। और दिमागों की लड़ाई जहां जाकर रुक जाती थी, वहां तीतर-बटेर की लड़ाई रूबरू हो जाया करती थी। कोमल कबूतर लड़ाये तो नहीं जाते थे; मगर उड़ाये बे-तरह जाते थे। इधर जमीन पर तीतरों-बटेरों का संग्राम चल रहा है, तो आकाश में कबूतरों की उड़ानों के तेवर गिने जा रहे हैं। मुसाहिबों का मजमा पीछे है और तमाश-बीनों का आगे। हर लमहा सनसनीखेज है और प्रत्येक पहलू पुरलुत्फ!

मैं बड़े-बड़े शौकीन शहरों की बातें नहीं सुनाऊंगा। एक मामूली कस्बे का किस्सा बयान कर रहा हूं। किस्सा, परियों और भूतों का नहीं, जीती-जागती सच्चाई का है—आंखों देखी, कानों सुनी!

लखनऊ और अजीमाबाद से कोसों दूर, निपट देहाती वातावरण में दुबककर भी मेरे गांव के जमींदार अताउल्लाह खां, अपनी आलीशान आदतों से इलाके भर में मशहूर थे। यों तो मेरा खानदान जमींदारी की जोरदारी में उनसे बीस था, मगर शान-दारी में वे ही अव्वल थे। हाथी तीन-तीन। घोड़े सात। एक ऊंट भी। बैलगाड़ी के ग्यारह चक्के, साखू के ग्यारह जबर्दस्त खंभों पर दस-बारह हाथों की ऊंचाई में औंघा दिये गये थे। और उन पर ऐसे लाजवाब घोंसले बनवा दिये गये थे कि कबूतरों को महलों में रहने के मजे मिलते थे।

मोर और हिरन तो कई थे। बारादरी में बेहिसाब पिंजड़े टंगे हुए थे। किसी में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तोता, तो किसी में मैना। किसी में काका-तुआ, तो किसी में चकोर। उनकी किस्मों की गिनती आसान न थी। कोई सिक्किमी, तो कोई भूटानी। कोई कश्मीरी तो कोई नेपाली। गरज यह कि खां साहब की हवेली, एक छोटा-मोटा चिड़ियाघर ही थी। अहाता भी इतना बड़ा था कि उसमें खुदा हुआ तालाब एक छोटी-सी झील का दृश्य उपस्थित करता था।

मैं करीब बारह-तेरह बरसों का रहा होऊंगा। मिडिल पास कराने के बाद पिताजी मुझे पंजाब के एक गुरुकुल में भेजना तय कर चुके थे। जाने के पहले मैं पूरी छुट्टियों में था। ज्यादा वक्त खां साहब की ड्योढ़ी में ही गुजरता था। उनका बड़ा लड़का मुझ से एक-आध साल छोटा था। उससे मेरी खूब पटती थी। हाथियों के सूंडों, ऊंट की गर्दन, हिरनों की चौकड़ी, मोरों के नाच और पंछियों के बोलों पर हम लोग पागल बने रहते थे। और कबूतरों को तो दाना चुगा-चुगाकर उन्हें इतना तंग करते थे कि खाने-वाले हार जाते थे और खिलानेवाले बाजी मार लेते थे।

मेरी इस गहरी दिलचस्पी को देखकर एक दिन खां साहब ने मुझसे पूछा—"बेटे! तुमने कभी तीतर-बटेरों की लड़ाई देखी है?" मैंने सच्ची बात बतायी—"जी नहीं।" इस पर उन्होंने अपने साहबजादे पर नजर डाली और बोले—"इकबाल! जाकर जुम्मन मियां को कह दो कि कल शाम तीतरों और बटेरों की लड़ाई होगी। अभी से तैयारी शुरू कर दें।" इकबाल मेरे साथ अपने साईस जुम्मन मियां के तबेले में गया और अपने अब्बा मियां का हुक्म उन्हें सुना आया।

दूसरे दिन ऐन वक्त पर इलाके भर के रईस आमंत्रित हुए। जनता भी बेशुमार आयी। बंगले के सामने हजारों आदमियों के बीच चार पिंजड़े मंगाये गये। उनमें से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दो पर लाल-लाल कपड़ों के खोल चढ़े थे। बाकी दो पर के पर्दे गहरे हरे रंग के थे। उन पिंजड़ों के अंदर क्या है, किसी को दिखाई नहीं दे रहा था। सभी की आंखें उन पर लगी थीं। चबूतरे पर जैसे ही खां साहब और उनके बुजुर्ग चचाजान आये और कुर्सियों पर बैठे कि सभी रईसों के आगे नाश्ते और चाय की प्यालियां रख दी गयीं। लोगों ने तालियां बजाकर इशारा किया कि अब खेल शुरू किया जाना चाहिये।

पिंजड़े जिन लोगों के हाथों में थे, उनमें से एक आदमी खां साहब के चचाजान के पास गया और उनके कान में कुछ कहा। इस पर वे तमककर बोले –"हां-हां! इसमें पूछते क्या हो। मेरी बारह अशर्फियां रहीं!" उनकी वह तमक दूसरे गांव से आये हुए जाफर साहब से सही नहीं गयी। वे अपनी जगह से उठकर बोले–"मेरी भी!"

इसके बाद ही दोनों पिंजड़ों पर से सुर्ख पर्दे हटाकर उनमें से दो तगड़े-तगड़े तीतर बाहर निकाले गये। दोनों को पिंजड़े-दारों ने अलग-अलग अपने हाथों में रोक-कर रखा। उन्हें पुचकारा। गर्दन सुगबु-गायी। टांगों को धीरे से झंझोड़ा और "या अली!" का गगनभेदी नारा लगाकर एक-दूसरे के सामने किया। खां साहब ने बैठे-बैठे पूछा –"क्यों जाफर साहब! आपका तीतर कौन रहेगा?" जाफर साहब निहा-यत अदब से बोले–"हुजूर! मैं बड़े मियां पर ही छोड़ता हूं। वे अपना चुन लें। दूसरा मेरा ही होगा।" इस पर चचाजान खफा हो गये। बोले–"सरासर गलत बात है। आप हमारे गरीबखाने पर तशरीफ लाये हैं। पहला चुनाव आपका होगा।"

बेचारे जाफर साहब लाजवाब हो गये और एक तीतर के पास जाकर बोले– "जिसके गले में चीती कौड़ी है, वही मेरा तीतर है।" इसके फौरन बाद दोनों तीतर छोड़ दिये गये। दोनों सोहराब-रुस्तम की तरह एक-दूसरे पर टूट पड़े। भीड़ में तह-लका मच गया। कोई चीती कौड़ीवाले का पक्ष लेकर हल्ला करने लगा, तो कोई सफेद कौड़ीवाले का। चोंचों पर चोंचें चलीं। पंजे गड़े। पंख फड़फड़ाये। और दस मिनिटों के घनघोर युद्ध और हैरत-अंगेज हंगामे के बीच चीती कौड़ीवाला तीतर जीत का सेहरा लेकर अपने पिंजड़े के आगे जा खड़ा हुआ। सफेद कौड़ीवाला जो बेहोश हुआ, तो बेचारा बेहोश ही रह गया।

अपने ही घर पर अपनी हार देखकर चचाजान के माथे पर बल बराबर भी बल नहीं पड़ा। उलटे वे कांपते हुए उठे और जाफर मियां से हाथ मिलाकर उन्हें बधा-इयां दीं। उनके हाथों में गिन-गिनकर बारह अशर्फियां भी रख दीं।

तीतरों के बाद थोड़ी ही देर में बटेरों की बारी आयी। पिंजड़ेदारों ने अपने-अपने हरे पर्दे हटाये और बटेरों को अपनी मुट्ठियों में बांधकर उन्हें गर्माना शुरू किया। लग-भग पंद्रह-बीस मिनिटों के अंदर ही फिर वही "या अली!" का भीम गर्जन हुआ और अताउल्लाह साहब ने उठकर ऐलान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किया—"इन बटेरों पर आज बीस-बीस अशर्फियों की बाजी लगेगी। जिन साहबान को हिस्सा लेना हो, वे अपना बटेर चुन लें और उसी की तरफ हो जायें।" इस घोषणा पर मेरे ही कस्बे के डाक्टर अनारस सिंह ने उठकर कहा—"खां साहब! मैं चितकबरे रंग का बटेर चुनता हूं और, उस पर बीस नहीं, पच्चीस अशर्फियों की बाजी लगाता हूं।"

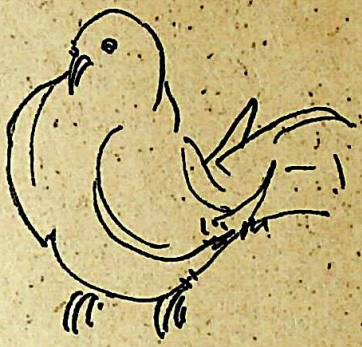

डाक्टर साहब के इस हौसले पर वेहिसाब वाहवाही हुई। लोगों ने तारीफ के शोर से आसमान को सिर पर उठा लिया। इसके तुरंत बाद, दोनों बटेर मैदानेजंग में छोड़ दिये गये।

वाह! क्या कयामत की झड़पें थीं। गजब के हमले थे और कमाल के बचाव। सात-आठ मिनिटों तक ऐसे हंगामों और ऐसी चीख-पुकार का आलम रहा, जैसे दशरथ और भीम का मल्लयुद्ध हो रहा हो। अंत में डाक्टर साहब का चितकबरा बटेर बुरी तरह घायल होकर देखते-देखते परलोक सिधार गया। बेचारे खां साहब मायूस चेहरा लिए हुए उठे और डाक्टर साहब से पच्चीस अशर्फियां लेकर बोले—"जनाब! पच्चीस अशर्फियां तो मिलीं, मगर पांच हजार अशर्फियों का मेरा शेरे बब्बर मारा गया। आज तो मेरे घर चूल्हा तक नहीं जलेगा। उफ्! लड़ाकू जवान था!"

तीतर-बटेर की जंग देखकर जब रईसों और जनता की जमात उठने लगी, तो चचाजान ने अपनी बुजुर्ग आवाज में फरमाया—"अताउल्लाह! लोगों को जरा देर के लिए और क्यों नहीं रोक लेते?"

"क्यों?" खां साहब ने पूछा।

चचाजान खांसते हुए बोले—"अरे मियां, मेरा पोता पंजाब जा रहा है। उसे सिर्फ तीतर-बटेर की लड़ाई ही दिखाओगे कि कबूतरों की उड़ाई भी देखने दोगे?" चचाजान की इस सूझ पर सभी लोग खुशी के मारे झूम गये। जुम्मन मियां ने चिल्लाकर कहा—"भाइयो! अब आप लोग अपनी आंखें जमीन से ऊपर कीजिये और आसमान की तरफ देखिये।" इतना सुनना भर था कि भीड़ जहां थी, वहीं गड़ गयी। सभी लोग सचमुच आसमान की ओर ताकने लगे।

इस बीच जुम्मन मियां बारी-बारी से चक्केवाले दो छज्जों पर चढ़े और कबूतरों के कानों में कुछ कहकर उन्हें ऊपर उड़ा दिया। उत्तरी छज्जेवाले सारे कबूतरों का रंग सफेद था और दक्खिनी छज्जेवालों का सलेटी। दोनों झुंड पल-भर में ही आसमान में दाखिल हो गये और खां साहब की हवेली

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर उड़ानें भरने लगे।

जुम्मन मियां ने अपने मुंह पर दायां हाथ रखा और एक खास ढंग की कड़ाकेदार आवाज की। आवाज करते हुए वे खां साहब की ओर मुखातिब होकर बोले –"हुजूर! अब बाजी लग जाये।" खां साहब ने फिर पहले की ही तरह बाजी के लिए ललकारा। इस बार मेरे चचेरे भैया ने ताव दिखाने की हिम्मत कर दी। बोले –" उजली पार्टी मेरी।" मुकाबले में दूसरे गांव के हरभजन चौधरी ने कहा–"सलेटी मेरी।" भाई साहब ने हाथ उठाकर घोषणा की–"मगर बाजी तीस-तीस अशर्फियों की!" चौधरी-जी ने हंसकर कहा –" मंजूर!"

इसके तुरंत बाद जुम्मन मियां ने कबूतरों के दोनों दलों को जोरदार हिदायतें दीं और वे बात की बात में, एक सौ गज की दूरी रखकर, नदी की ओर उड़ गये। जुम्मन मियां ने ऊंची आवाज में सूचित किया– "बाजी छठही गांव तक की है। दस मिनिटों तक आप लोग सांस रोककर इंतजार कीजिये।"

सारी भीड़ दस मिनिटों तक पूरबी आसमान की ओर आंखें गड़ाये और धड़कनें रोके प्रतीक्षा करती रही। कुछ ही क्षणों में लोगों ने देखा कि उजले रंगवाले कबूतर आगे आ रहे हैं। बाजी जीत जाने की खुशी में भैया ने मुझे कंधे पर बैठा लिया और उछल-उछलकर नाचने लगे।

इस बीच अचानक पांसा पलट गया। पीछे आता हुआ सलेटी रंगवाला दल एका-एक तेजी से आगे आ गया और तपाक से हम लोगों के सामने के मैदान में उतर गया। अब तो भैया की सूरत देखने लायक थी। उन्होंने जबर्दस्ती की मुस्कान ओंठों पर बुलायी और चौधरीजी के हाथों में तीस अशर्फियां गिनकर बोले–"बबुआ के पंजाब जाने के मौके पर आपको मिठाई खाने के लिए दे रहा हूं चौधरीजी!"

इस पर चौधरीजी ने हंसते हुए पूछा– "और, लौटकर आने पर कितने की मिठाई खिलाइयेगा लछमन बाबू?"

ब्रिटिश पार्लमेंट में सर विलियम जाय्सन-हिक्स धुआंधार भाषण दे रहे थे कि उनकी नजर विंस्टन चर्चिल पर पड़ी। चर्चिल विरोध में सिर हिला रहे थे। जाय्सन-हिक्स ने भाषण जारी रखते हुए कहा–"मैं देख रहा हूं कि मेरे मान्य मित्र चर्चिल अस्वीकृति में सिर हिला रहे हैं, जबकि मैं तो केवल अपनी निजी राय जाहिर कर रहा हूं।" चट से चर्चिल ने जवाब दिया–"और श्रीमत्, मैं भी केवल अपना निजी सिर हिला रहा हूं।"

× × ×

कश्मीर के एक लोकप्रिय होटल का विज्ञापन :

"यदि आप एकांत-प्रेमी हैं, तो हमारा होटल ही आपके लिए उपयुक्त है। देश-विदेश से हमारे यहां हर महीने हजारों एकांत-प्रेमी आकर ठहरते हैं।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अमरता की प्रतीक्षा में

रमेश दत्त शर्मा

मृत्यु का प्रश्न अनादि काल से मानव को त्रस्त करता रहा है। हम न जाने कितने सपने बुनते रहते हैं.....सोने से पहले शीशों तक जाने के सपने। पर तभी एक अदृश्य पंजा उठता है और पल-भर में हमारे सपनों को चकनाचूर करता हुआ हमेशा के लिए हमारी आंखें मूंद जाता है। हम उस गहरी नींद में सो जाते हैं, जो कभी नहीं खुलती। हम उस देश चले जाते हैं, जहां से कोई नहीं लौटता। जिसे अभी हम 'है' कह रहे हैं, वही पलक झपकते ही 'था' बन जाता है। इस 'होने' और 'न होने' के बीच कौन-सा सूत्र है, जिसके टूटते ही अस्तित्व समाप्त हो जाता है? इस गुत्थी को सुलझाने का प्रयत्न उपनिषत्कारों से लेकर मामूली प्रवचनकार तक सभी अपने-अपने दृष्टिकोण से करते आये हैं। पर मृत्यु की पहेली ज्यों-की-त्यों बनी रहती है।

प्रकृति के अनेक रहस्यों का उद्घाटन करनेवाले वैज्ञानिक मृत्यु की गूढ़ पहेली को सुलझाने के लिए जी-जान से जुटे हुए हैं। मौत अपने आगमन के लिए जो-जो बहाने ढूंढती है, एक-एक करके उन सबको काबू में करने की कोशिशें चल रही हैं। मलेरिया दम तोड़ चुका है, क्षयरोग अब हौआ नहीं रहा है, चेचक चुकने लगी है, प्लग पलायन कर गयी है, हृद्रोग और कैन्सर जैसे घुसपैठियों पर हमारी निगाहें लगी हुई हैं — कुछ वर्षों में कैन्सर का टीका बन जायेगा। लोहे और प्लास्टिक के दिल बनने लगे हैं। पर मौत की क्या है, कल कोई नया बहाना खोज निकाले!

परियों की कहानियों में हम सुना करते थे कि किस तरह किसी जिन्न या दानव की जिंदगी दूर किसी दुर्गम पहाड़ी पर बने किले के किसी अंधेरे तहखाने में लटके पिंजरे के अंदर बैठे तोते की गर्दन में अटकी हुई है। वह तोता किस रास्ते से उड़ता है—हृदय-पथ से या मस्तिष्क-पथ से, इसी को लेकर पिछले दिनों चिकित्सा-विज्ञानियों में एक बहस शुरू हो गयी। हुआ यह कि तुर्की के कोई डाक्टर महोदय एक आपरेशन के दौरान बिजली का झटका खाकर बेहोश हो गये। उनके दिमाग में कोई हरकत नहीं थी, हालांकि हाथ-पांवों की हलचल जारी थी। नली डालकर उन्हें भोजन दिया गया।

डाक्टरों के एक वर्ग ने कहा है कि ऐसे आदमी को मृत घोषित कर देना चाहिये; क्योंकि यह फिर से जीवित तो हो नहीं सकता। उसके मस्तिष्क ने काम करना बंद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर दिया है और हृदय को मशीनों के द्वारा चालू रखा जा रहा है। इस तरह मृत्यु की एक नयी परिभाषा पनप रही है, जो मस्तिष्क को तो महत्व देती है, पर हृदय को नहीं। क्योंकि सभी अंगों का नियंत्रक तो मस्तिष्क ही है। फिर ग्लूकोज और आक्सिजन के बल पर उसे चलाये रखने से लाभ ही क्या? हां, हानि अवश्य होती है; क्योंकि उस मरीज की जगह खाली हो, तो वहां किसी ऐसे मरीज का इलाज किया जा सकता है, जिसके दिमाग ने साथ नहीं छोड़ा है।

हमारे बड़े-बूढ़े इसी बात को 'माटी खराब करना' कहते हैं। पर अब वैज्ञानिकों ने ऐसी तरकीब खोज ली है कि माटी खराब न हो। गत वर्ष के जनवरी से अमरीका में एक मुर्दा आदमी एक खोल में बंद है और उस दिन का इंतजार कर रहा है, जब कल के वैज्ञानिक उस कैन्सर का इलाज खोज लेंगे, जिसके कारण उसकी मृत्यु हुई थी। इस आदमी का नाम है—जेम्स एच० बेडफोर्ड। ये सज्जन कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान के प्राध्यापक थे। इन्हें शून्य से १९० अंश नीचे तापमान पर द्रव नाइट्रोजन में डुबाकर रखा गया है। अब उनकी माटी और खराब नहीं होगी। कल को कैन्सर का इलाज निकल आया, तो डा० बेडफोर्ड को हिमगुफा जैसे खोल से निकालकर उनका उपचार किया जायेगा; और बहुत संभव है कि वे फिर से जीवित हो जायें।

मृत मनुष्यों को पुनर्जीवित करने की अनेक घटनाएं प्रकाश में आयी हैं। रूसी अखबार 'इजवेस्तिया' में एक घटना छपी थी कि एक आदमी के सिर पर किसी चोर ने ईंट दे मारी। आदमी तेईस दिन तक बर्फीली सड़क पर पड़ा रहा। फिर उसे अस्पताल पहुंचाया गया। जो डाक्टर उसकी शवपरीक्षा के लिए आये, वे यह देखकर चकित हुए कि उसकी आंखें मरे आदमी जैसी तो नहीं लगतीं। वह आदमी जीवित कर लिया गया।

लंदन के नेशनल स्पोर्टिंग क्लब की घटना है कि दंगल देखने के लिए आये हुए एक दर्शक महोदय को ही मौत ने चित कर दिया। डाक्टर आया तो नाड़ी बंद, दिल की धड़कन बंद और सांस रुकी हुई। ९० सेकंड तक यह आदमी मरा रहा। फिर डाक्टर ने बायें हाथ से स्मेलिंग साल्ट सुंघाया और दायें हाथ से हृदय की रक्षा करनेवाली हड्डी उरोस्थिका (स्टर्नम) को थोड़ी-थोड़ी देर बाद दबाया। धीरे-धीरे चेतना लौट आयी और वह दर्शक उठकर फिर दंगल देखने लगा। उसे नहीं याद था कि थोड़ी देर पहले वह मौत से जूझ रहा था।

न्यूयार्क के मोन्टेफ्लोर अस्पताल में एक सेल्समैन तो पूरे चार साल और आठ महीने तक जिंदगी और मौत के बीच झूलता रहा था। यह आदमी बारह वर्षों की अवधि में इतनी बार 'मरा' था कि उसे खुद याद नहीं था कि वह कब-कब मरा। हृदय के एक ऐसे रोग ने उसे दबोच रखा था, जो बहुत कम पाया जाता है। कभी-कभी एक दिन में ही कई बार दौरे पड़ जाते थे, तो कभी छः

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महीने में एक-आध बार। जब दौरा पड़ता तो नब्ज ऐसी गायब होती कि स्टेथोस्कोप से भी पकड़ में न आती। अंततः यहां भी विज्ञान की विजय हुई और इस सेल्समैन के हृदय-विकार को दूर करके उसे काल के चंगुल से छुड़ा लिया गया।

दिल्ली के इर्विन अस्पताल में भी फिलहाल तीन पलंग ऐसे मरीजों के लिए हैं, जिनके साथ मौत आंख-मिचौनी का खेल खेलती है।

मौत को झुठलाने के प्रयोग सबसे पहले रूस में हुए थे—कुत्तों पर। सन १९१३ में आंद्रेयेव नामक रूसी चिकित्सक ने जहर के असर से मरे हुए कुत्ते के हृदय में एड्रिनेलिन से भरपूर द्रव पदार्थ पहुंचाकर उसे कुछ घंटे के लिए जीवित कर दिया था। इस कार्य को प्रो० नेगोव्स्की ने आगे बढ़ाया और आज रूस के चिकित्सक हृदय-गतिरुक जाने पर दिल की मालिश द्वारा पुनः प्राण डाल देने में सिद्धहस्त माने जाते हैं।

इन चिकित्सकों ने मृत्यु को दो वर्गों में बांट दिया है—लाक्षणिक मृत्यु (क्लिनिकल डेथ) और जैव मृत्यु (वायोलाजिकल डेथ)। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, लाक्षणिक मृत्यु में मृत्यु के सभी लक्षण तो होते हैं, जैसे कि दिल की धड़कन बंद हो गयी और श्वसन-क्रिया में अवरोध पैदा हो गया; पर वस्तुतः अभी आदमी मरा नहीं होता। दूसरी ओर, जैव मृत्यु में प्राण-पखेरू उड़ चुके होते हैं। लाक्षणिक मृत्युवालों को यदि समय पर सही उपचार मिल जाये तो उनके प्राण लौट सकते हैं।

आदमी की जैव मृत्यु भी कोई अचानक नहीं होती। वाल्तेयर ने कहा था—आदमी जिस दिन जन्म लेता है, उसी दिन मरण की प्रक्रिया भी प्रारंभ हो जाती है। हम तिल-तिल कर मरते हैं। देह में अनेक विषैले पदार्थ इकट्ठे होते रहते हैं। धमनियों में काठिन्य की शुरूआत हो जाती है। जिन कोशिकाओं से हमारी देह बनी है और जो देह के सभी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अंतरंग व्यापारों की नियामक हैं, वे कोशिकाएं टूट-फूट की मरम्मत करने की क्षमता खो देती हैं।

जीवन की खोज करते-करते वैज्ञानिक जिस 'डी-एन-ए' (डीऑक्सीराइबो-न्यूक्लिइक एसिड) नामक रसायन तक पहुंचे हैं, हो सकता है कल वही मृत्यु की कलई भी खोल दे। इस अद्‌भुत रसायन की कुंडलीनुमा बनावट बड़ी मायाविनी है। उसमें मौजूद एडिनोसाइन, थाइमाइन, ग्वेनाइन और साइटोसाइन नामक यौगिकों का क्रम ही हमारी देह के भीतर चलनेवाली तमाम क्रिया-प्रक्रियाओं के लिए उत्तरदायी है। इस क्रम के भंग होते ही गड़बड़ी शुरू हो जाती है। पिछले बीस वर्षों में हुई आधुनिक विज्ञान की इस महत्वपूर्ण खोज का जब ध्यान आता है, तो उर्दू के कवि चकबस्त की ये पंक्तियां मन में कौंधने लगती हैं :

जिंदगी क्या है? अनासिर में जहूरे तरतीब।
मौत क्या है? इन्हीं अजजा का परीशां होना॥

यानी भौतिक तत्वों के एक 'क्रम' का नाम ही जीवन है और इस क्रम का भंग हो जाना ही मृत्यु है।

कुछ भी हो, इस क्रम-भंग के बाद फिर से क्रम जोड़ने की ओर विज्ञान के महारथी अग्रसर हो रहे हैं। और ठंडे हुए आदमी को बेहद ठंडा कर देने की खोज का तो इतना गर्मागर्म स्वागत हुआ है कि अमरीका की लाइफ एक्स्टेंशन सोसायटी के ढाई सौ सदस्य अपने वसीयतनामे में यह लिख चुके हैं कि उनकी मृत्यु के बाद उनका शव बर्फ से नीचे के तापमान पर जमाने के लिए सोसायटी को दे दिया जाये, ताकि उसे आगे कभी, किसी समय फिर से जीवित किया जा सके।

★

स्मगलरों के विरुद्ध नया कदम

स्वीडन के चुंगी अधिकारियों ने विकिरण-चालित यंत्र का प्रयोग शुरू किया है। वह ऐसी मोटर-गाड़ियों का पता लगाता है, जिसमें अवैध वस्तुएं छिपायी जाती हैं। अवैध वस्तुओं को छिपाने के लिए उपयोग की जानेवाली मोटरों में कई गुप्त स्थान होते हैं, जिनमें अवैध माल रहता है। इस रेडियो-एक्टिव अनुसंधान यंत्र से निकली हुई किरण ज्यों ही मोटर-गाड़ी पर पड़ती है, गाड़ी में छिपी अवैध वस्तु की सूचना यंत्र को मिल जाती है। लेकिन यंत्र यह बताने में असमर्थ है कि वह अवैध वस्तु क्या है?

विमानों में प्लास्टिक का उपयोग

गुड इयर ऐरोस्पेस कारपोरेशन द्वारा प्लास्टिक की एक ऐसी तह तैयार की गयी है, जो जेट विमानों के ईंधन-टैंकों पर बतौर ढक्कन के चढ़ाये जायेंगे। जेट-विमानों में सात ईंधन टैंक होते हैं, और हर ईंधन-टैंक पर यह प्लास्टिक की तह चढ़ी रहेगी। इससे दो फायदे होंगे। टैंकों को यह प्लास्टिक ढक्कन फटने से बचायेगा और जेट के टकराने या टूटने के पहले जो आग लग जाती है, वह भी इसके द्वारा रोकी जा सकेगी।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तड़प उठी महाराष्ट्र की धरती

कोयना-भूकंप के कारणों का एक भूविज्ञानी द्वारा विवेचन

डा० खड्गसिंह वल्दिया

भूविज्ञानियों को विस्मय है कि महाराष्ट्र की ठोस, सुदृढ़ और कल्प-कल्पांतरों से अचल-अपराभूत भूमि पिछले साल ११ दिसंबर को सहसा डांवांडोल क्यों हो गयी। कोयना-बांध से दस किलोमीटर दूर उद्भूत इस भूचाल ने भूविज्ञानियों की वर्षों से अंगीकृत इस मान्यता को भीषण आघात पहुंचाया है कि प्रायद्वीपी दक्षिण भारत करोड़ों वर्षों से भूचालों से अछूता और अप्रभावित रहा है।

प्रश्न है कि क्या वास्तव में पश्चिमी घाट में भूचाल का उठना एक अनहोनी, विस्मयजनक घटना है? यदि पश्चिम भारत के अतिपुरातन इतिहास पर दृष्टिनिक्षेप करें, तो पता चलेगा कि विगत करोड़ों वर्षों से पश्चिमी घाट और नर्मदा की घाटी की धरती तनावों से पीड़ित रही है। वस्तुतः भारत का यह भू-भाग अतिशय विदीर्ण है।

कोयना-भूकंप के दो कारण सुझाये गये हैं। कुछ लोगों का मत है कि कोयना-बांध में अवरुद्ध विपुल जल-राशि के भार से धरती अस्थिर हो गयी और कांप उठी। वस्तुतः बांध के बनते ही सन १९६२ की वर्षाऋतु के पश्चात् हल्के धक्के आने लगे थे। सन १९६३ के उत्तरार्ध में तो धक्कों के

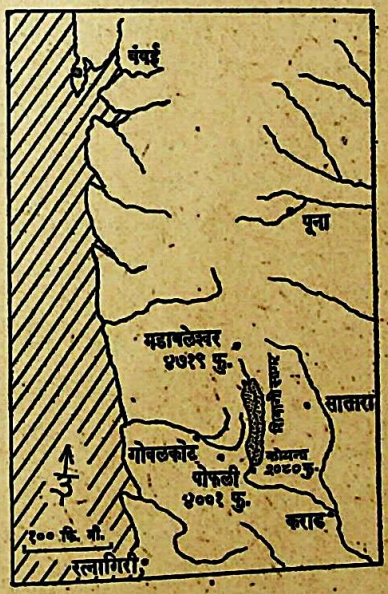

१ कोयना-बांध और भूकंपग्रस्त क्षेत्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साथ गड़गड़ाहट भी होती रही। इसके साथ यह भी कहा गया कि सह्याद्रि पर्वतांचल की लावा-निर्मित चट्टानों के गर्भ में छोटी-बड़ी कंदराएं तथा गुफाएं रही होंगी। जल-भार की वृद्धि से ये कंदराएं ध्वस्त हो गयीं और ऊपर की भूमि उद्वेलित हो उठी।

किंतु ११ दिसंबर के भूकंप की प्रचंडता और उससे प्रभावित क्षेत्र की व्यापकता को देखते हुए कहना पड़ेगा कि उपर्युक्त सुझाव में दम नहीं है। प्रतिकलनों के आधार पर ज्ञात हुआ है कि भूकंप का उद्गम-केंद्र २० किलोमीटर (६६ हजार फुट) की गहराई पर था और भूचाल से १,४०० किलोमीटर लंबा-चौड़ा भू-भाग प्रभावित हुआ। इस तथ्य से प्रकट होता है कि वास्तव में भूकंप का कारण पृथ्वी की पर्पटी यानी पपड़ी का विवर्तन था। दूसरे शब्दों में, भूपर्पटी के भंग होने या तड़कने से धरती तड़प उठी थी।

मन में सहज ही प्रश्न उठता है, क्या हमारा सुदृढ़, अपराभूत भूपटल भी टूट सकता है, भंग हो सकता है? एक-दो मामूली उदाहरणों से उसका समाधान हो जायेगा। यदि किसी ठोस पिंड को दबाया जाये, तो उसका रूप न्यूनाधिक विकृत हो जाता है और उसके भीतर प्रतिबल (स्ट्रेस) उत्पन्न हो जाते हैं। प्रत्यास्थ (इलास्टिक) अर्थात् लचीले पदार्थों की विकृति स्थायी नहीं होती—बाहरी दबाव के हटते ही वे अपने मूल रूप में आ जाते हैं। किंतु यदि दबाव एक निश्चित सीमा से अधिक हो जाये, तो पिंड टूट जायेगा। इस सीमा को 'प्रत्यास्थता

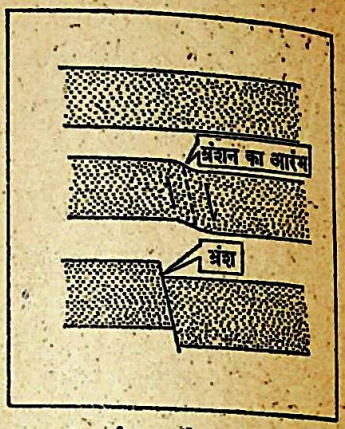

२. भ्रंशन और भूकंप

सीमा' कहते हैं। उदाहरणार्थ, यदि छड़ी को दबाया जाये तो वह मुड़कर धनुषाकार हो जायेगी। यदि इसके बाद भी दबाते ही जायें, तो एक सीमा आयेगी, जब यह 'धनुष' टूट जायेगा।

भूपर्पटी (पृथ्वी की पपड़ी) की चट्टानें भी कुछ हद तक लचीली होती हैं। भूमि की सतह पर जल और हवा की अविराम एवं निर्मम क्रियाओं से पर्वत-पहाड़ कट-घिस रहे हैं और इस प्रकार उत्पन्न मलबे की विपुल राशि अरबों-खरबों टन प्रतिवर्ष की दर से सागरों में संचित हो रही है। इस तरह पृथ्वी पर द्रव्य का निरंतर स्थानांतरण हो रहा है। फलतः भूपर्पटी पर असमान दबाव पड़ रहा है — कहीं बोझ घट रहा है, तो कहीं बढ़ रहा है। इस प्रकार पर्पटी में प्रतिबल उत्तरोत्तर संचित हो रहे हैं, विशेषतः घिसाव (अपरदन) तथा संचयन के संधि-स्थलों में। इसके अतिरिक्त किसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहस्यमय विधान से भूगर्भ में बहती हुई ऊर्जा (एनर्जी) भी इन्हीं स्थलों में एकत्र हो जाती है।

जब कभी और जहां कहीं यह प्रतिबल तथा तनाव चट्टानों की सहन-शक्ति अथवा लोच की सीमा से अधिक हो जाते हैं, भूपपटी टूटकर खिसक जाती है। इस घटना को भ्रंशन (फॉल्टिंग) कहते हैं (चित्र-२)। भ्रंशन के फलस्वरूप धरातल में दरारें खिल उठती हैं। महाराष्ट्र में नानवेल से लेकर वरुण घाटी तक उत्तर-दक्षिणाभिमुख ३० मील लंबी दरार इसका उदाहरण है। इन दरारों के पृष्ठों पर खंडित भूमि खिसक जाती है और धरती का सर्वांग कांप उठता है। यह कंपन ही भूकंप है।

भू-भ्रंशन के काफी समय बाद तक धरती का विदीर्ण भाग संतुलित नहीं हो पाता। पुनः संतुलन-प्राप्ति की चेष्टा में धरती महीनों तक जब-तब कांप उठती है। ऐसे हल्के-छोटे धक्के कोयना-क्षेत्र में कई महीने बाद तक आते रहे।

दरारमय एवं अप्रभावित चट्टानों की एक ऐसी ही पट्टी पर कोयना का बांध अवस्थित है। ये दरारें कभी हलचल का स्थान रही होंगी। किंतु दिसंबर के भूकंप में वे निष्क्रिय रहीं। इसका स्पष्ट प्रमाण है अक्षत, अप्रभावित कोयना-बांध। कोयना नदी के उद्गम की ओर ३० मील की दूरी पर पूर्व-पश्चिम दिशा में विस्तीर्ण जर्जरित चट्टानों की एक दूसरी पट्टी है। और तीसरी पट्टी गोवलकोट तथा शिवाजी-सागर के बीच उत्तर-दक्षिण दिशा में फैली हुई है। इनसे स्पष्ट होता है कि सह्याद्रि पर्वत की यह भूमि अतीत में तनावों से विदीर्ण हो चुकी है। ११ दिसंबर का भूकंप अतीत की घटनाओं की पुनरावृत्ति ही है।

गोदावरी, कृष्णा, कावेरी नदियां तथा पश्चिमी घाट की तटरेखा इसकी गवाह हैं कि भारत का पश्चिमी अंचल करोड़ों वर्षों से तनावों तथा भ्रंशन की घटनाओं से पीड़ित रहा है।

त्रिकोणाकार प्रायद्वीपी दक्षिण भारत की नदियां एक अर्थ में बड़ी विचित्र हैं। अरब सागर से चालीस-पचास मील की दूरी पर उनके उद्गम हैं; किंतु पूर्व की ओर बहती हुई, आठ-नौ सौ मील दूर बंगाल की खाड़ी में वे विसर्जित होती हैं। निकटवर्ती अरब

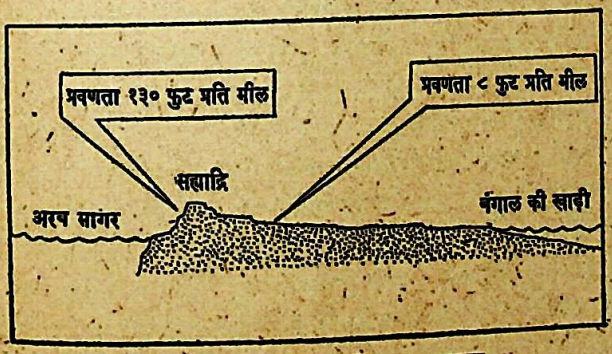

३. दक्षिण पठार की विषम प्रवणता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

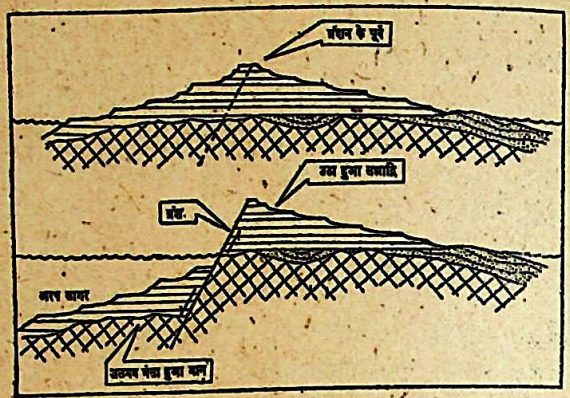

४. सह्याद्रि-नीलगिरि के पश्चिम की भूमि भ्रंशन के फल-स्वरूप धंस गयी और अरब सागर में जलमग्न हो गयी। रह गया है पूर्वी पार्श्व जिसकी नदियां पूर्वाभिमुख बहती हैं।

सीढ़ीदार पठार विकसित हुआ है। इस पठार का एक ढाल खड़ा और दूसरा मंद है। इस लक्षण के उद्भव का कारण यह नहीं हो सकता कि लावा का प्रवाह एक ओर दूर-दूर फैलकर मंद ढाल-वाली सीढ़ियां बनाये और दूसरी ओर परतें इतनी निकट जम जायें कि खड़ा ढाल विकसित हो जाये। तो पश्चिमी ढाल इतना कराल क्यों है? यदि निम्न तथ्यों को परखें, तो इसका कारण समझ में आ जायेगा।

हजार मील लंबी सह्याद्रि श्रेणी का पश्चिमी ढाल ज्वलंत कगार है। खड़े ढाल-वाले कगारों की उत्पत्ति प्रायः भ्रंश के कारण होती है। भ्रंश वे दरारें हैं, जिनके एक ओर की भूमि नीचे धंस गयी हो और दूसरी ओर उठ आयी हो। ऐसा लगता है कि सह्याद्रि-नीलगिरि पर्वतमालाएं भूमि का उत्थित भाग हैं और धंसा हुआ पार्श्व अरब सागर में डूब गया है (चित्र-४)।

प्रायद्वीप के कटे-फटे पूर्वी तट की तुलना में पश्चिमी तट आश्चर्यजनक रूप से सीधा है। न कहीं खाड़ियां हैं न घुमाव। लहरों के घात-प्रतिघातों से तटरेखा साधारणतः टेढ़ी-मेढ़ी हो जाती है; किंतु भ्रंश-निर्मित तटरेखा सीधी होती है, विशेषतः यदि भ्रंशन

सागर को छोड़कर सुदूर बंग सागर के प्रति उन्हें यह आकर्षण क्यों? कहने की आवश्यकता नहीं कि भूमि का ढाल पूर्व की ओर है। यह मंद-मंद ढाल है, जिसकी औसत प्रवणता ८ फुट प्रतिमील है, अर्थात् पूर्व की ओर एक मील चलिये तो औसतन ८ फुट उतरेंगे। इसके विपरीत पश्चिमी ढाल की औसत प्रवणता १३० फुट प्रतिमील है। इसका यह अर्थ है कि प्रायद्वीपी भारत की भूम्याकृति विषम है (चित्र-३, पृष्ठ ६७)।

और यह बड़ी विचित्र, असाधारण बात है; क्योंकि महाराष्ट्र तथा आंध्र प्रदेश का पठार ज्वालामुखीय उद्गारों में निकले लावा से निर्मित हुआ है। लावा की हजारों बाढ़ें आयीं और जम गयीं। प्रत्येक बाढ़ से एक सपाट समतल, २० से १०० फुट मोटी परत बनी थी। ऐसी हजारों परतों के संचय से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की घटना बहुत पुरानी न हो।

हाल ही में रूसी सागर-विज्ञानियों को अरब सागर के नितल में लावा से बनी चट्टानें मिलीं। ये चट्टानें बिलकुल वैसी हैं, जैसी सह्याद्रि के शिखर या दक्खनी पठार की शिलाएं। ऐसा लगता है कि ये समुद्री चट्टानें दक्खनी पठार का पश्चिमी भाग हैं, जो जलमग्न हो गया है।

महाराष्ट्र के समुद्र-तट के समानांतर काले शैलों के हजारों 'डाइक' हैं। तनाव से उत्पन्न दरारों में लावा जम जाये, तो डाइकों की रचना होती है। अतः डाइकों की उपस्थिति पूर्ववर्ती दरारों की परिचायक है। सुविख्यात भूविज्ञानी जे० बी० आडन का मत है कि पश्चिमी घाट में लावा का १० हजार फुट मोटा संचय नीचे की भूपर्पटी

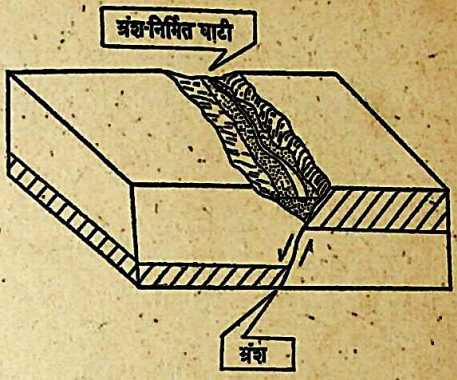

६. भ्रंशनिर्मित घाटी में नदी का सीधा बहाव

के साथ वलित हो गया है। उसका पश्चिमी भाग मुड़कर समुद्र में डूब गया है। महत्तम वलन के स्थान पर अनेक दरारें अथवा भ्रंश उत्पन्न हो गये। इन्हीं भ्रंशों के कारण पश्चिमी अंचल धंसकर जलमग्न हो गया। शेष दरारों में लावा जम गया (चित्र-५)।

हाल के भू-भौतिक सर्वेक्षणों से खंभात की खाड़ी के पूर्वोत्तर तथा उत्तर में साबरमती के मैदान के नीचे दो महत्वपूर्ण बृहत्, समानांतर

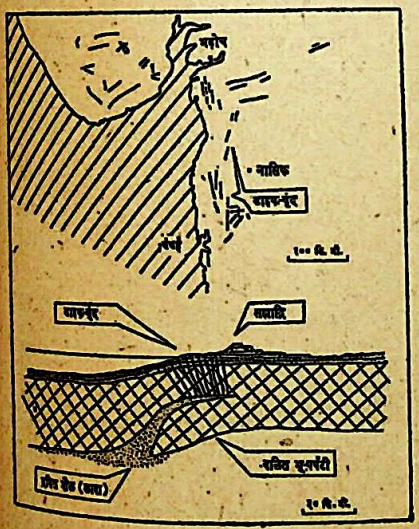

५. ऊपर : पश्चिमी घाट तथा सतपुड़ा प्रदेश में डाइक वृंद हैं; नीचे : लावा-रहित भूपर्पटी वलित हो गयी। महत्तम वलन के स्थान पर दरार या भ्रंश उत्पन्न हुए। इन दरारों में लावा जम गया और डाइकों की रचना हुई।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भ्रंशों का पता चला है। इन भ्रंशों के मध्य की धरती १०,००० फुट से अधिक धंस गयी और उसके संग ही धंस गयीं लावा की परतें। इस भ्रंश-निर्मित घाटी में साबरमती तथा सहायक नदियों की रेत तथा बालुका संचित हो गयी और यह अब सपाट मैदान बन गया। यदि इन भ्रंशों को दक्षिण दिशा में बढ़ायें, तो वे पश्चिमी घाट के समुद्र-तट के निकट से होकर गुजरेंगे।

उपर्युक्त प्रमाणों से विदित होता है कि दक्षिणावर्त के सीढ़ीदार पठार का पश्चिमी भाग भ्रंशन के परिणाम से नदी-नाले समेत धंसकर अरब सागर में डूब गया। बाकी रह गया आधा पूर्वी भाग, जिसकी नदियां पूर्व दिशा में बहती हैं। किंतु वह जल-विभाजन अधिक स्वाभाविक रहा होगा और उसके दोनों ओर जोड़ की नदियां रही होंगी। आज जैसा बेजोड़ नदी-तंत्र नहीं रहा होगा।

किंतु नर्मदा और ताप्ती केंद्रीय भारत में उत्पन्न होकर पश्चिम दिशा में बहती हैं। नर्मदा का स्रोत पूर्वी मध्य प्रदेश के अमरकंटक पठार में है, जहां सोन तथा महानदी के उद्गम भी हैं। बिना मुड़े, बल खाये नर्मदा सैकड़ों मीलों तक सीधी बहती है। इसके विपरीत चंबल, बेतवा, केन व सोन नदियां घूमती-घामती पूर्वोत्तर दिशा में बहती हैं, जब कि प्रायद्वीपी भारत की अन्य नदियां पूर्व की ओर बहती हैं। नर्मदा और ताप्ती का बहाव उलटी दिशा में क्यों है?

नर्मदा और ताप्ती का विलक्षण सीधा पथ इस बात का सूचक है कि उसकी घाटियां भ्रंश या दरारों से बनी हैं। दरारों की उपस्थिति को पुष्टि करते हैं घाटियों के समानांतर सतपुड़ा अंचल के सैकड़ों डाइक।

ऐसा लगता है कि ये दो नदियां भ्रंश-निर्मित घाटियों में बहती हैं। इन भ्रंशों का पश्चिमी घाट के भ्रंशों से निकट संबंध है। अतः यदि दुर्भाग्यवश दक्षिणी गुजरात के सतपुड़ा अंचल में भी भूचाल आ जाये, तो आश्चर्य नहीं (चित्र, पृष्ठ ६९)।

भारत का पश्चिमी अंचल भूकंप से आज पहली बार आक्रांत नहीं हुआ है। वास्तव में ढाई करोड़ वर्ष पूर्व मायोसीन कल्प में व्यापक रूप से भूकंप तथा भ्रंशन की घटनाओं से महाराष्ट्र की धरती तड़पी थी। अब फिर से तड़पने लगी है।

★

कोयनानगर में पति-पत्नी और तीनों बच्चों का एक कुटुंब। भूचाल आने पर सभी चौंककर उठ बैठे। पति ने पत्नी से तुरंत बाहर निकल जाने को कहा और स्वयं दो बच्चों को उठा लिया। तीसरा बच्चा पिता की धोती का छोर पकड़कर बाहर आ गया। तभी उनका मकान ढह पड़ा। बाहर खड़ी पत्नी ने पति के हाथ में दो ही बच्चे देखे। अंधियारे में तीसरा बच्चा उसे नजर न आया। उसे लगा कि मैं बच्चे को अंदर ही छोड़ आयी हूं! अब तो मेरा बच्चा कुचलकर मर चुका होगा। तीव्र अकुलाहट के साथ उसने "प्रकाश! मेरा प्रकाश!" का विलाप शुरू कर दिया। प्रकाश उनके सामने है; पर वह उसे पहचान नहीं पाती। "प्रकाश, मेरा प्रकाश" रटते-रटते उसका मस्तिष्क बिगड़ गया है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काफी की महक

मुश्ताक अहमद यसुफी

मैंने उनसे सवाल किया—"आप काफी क्यों पीते हैं ?"

उन्होंने जवाब दिया—"आप क्यों नहीं पीते ?"

"मुझे इसमें सिग़ार की-सी बू आती है।"

"अगर आपका इशारा उसकी सोंधी-सोंधी खुशबू की तरफ है, तो यह आपकी नाक का कसूर है।"

गोकि उनका इशारा मेरी नाक की तरफ था, फिर भी उनके व्यंग्य का शरीफाना ढंग से जवाब देते हुए मैंने कहा—"थोड़ी देर के लिए यह मान लेता हूं कि काफी में से वाकई भीनी-भीनी महक आती है, मगर यह कहां का इन्साफ है कि जो चीज नाक को पसंद हो, वह हलक में उंडेल ली जाये। अगर ऐसा ही है, तो काफी का इत्र क्यों न खींचा जाये, ताकि शिष्ट समाज की महफिलों में एक दूसरे के लगाया करें।"

तड़पकर बोले—"साहब ! मैं शिष्ट खाद्य-पेय में शिष्ट आचार-व्यवहार का दखल नहीं समझता। काफी की महक का मजा लेने के लिए ऊंची संस्कारपूर्ण रुचि की जरूरत है। यही सोंधापन लगी हुई खीर और धुंगारे रायता में होता है।"

मैंने कहा—"माफ कीजिये, खुरचन और धुंगार दोनों से मुझे मितली होती है।"

वे खिसियाकर कहने लगे—"आप कायल या निरुत्तर हो जाते हैं, तो फिजूल बहस करने लगते हैं।"

मैंने जवाब में अर्ज किया—"गर्म मुल्कों में बहस का प्रारंभ सही माने में निरुत्तर होने के बाद ही होता है। खुली आजादी हमारे धर्म में गुनाह मानी जाती है। लिहाजा हम अपनी असल राय का इजहार सिर्फ नशे और गुस्से के आवेश में ही करते हैं। खैर, ये तो बहस की बातें हैं। लेकिन अगर यह सच है कि काफी खुशजायका होती है, तो किसी बच्चे को पिलाकर उसकी सूरत देख लीजिये।"

वे झल्लाकर बोले—"आप मासूम बच्चों को बहस में क्यों घसीटते हैं ?"

मैं भी उलझ गया—"आप लोग हमेशा 'बच्चों' से पहले लफ्ज 'मासूम' क्यों लगाते हैं ? क्या इसका यह मतलब है कि कुछ बच्चे गुनहगार भी होते हैं ? खैर, आपको बच्चों पर एतराज है, तो बिल्ली को लीजिये।"

"बिल्ली ही क्यों ? बकरी क्यों नहीं ?" वे सचमुच मचलने लगे।

मैंने उन्हें समझाया—"बिल्ली इसलिए कि जहां तक ीने की चीजों का संबंध है, बच्चे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और बिल्लियां बुरे-भले की कहीं बेहतर तमीज रखते हैं।"

बोले—"कल को आप यह कहेंगे कि चूंकि बच्चों और बिल्लियों को पक्के गाने पसंद नहीं आते, इसलिए वे भी फिजूल हैं।" अक्सर मैंने देखा है कि जब भी मैं काफी की बाबत खयाल पेश करता हूं, तो लोग मेरे सवाल का जवाब देने के बजाय उलटी जिरह करने लगते हैं। और अब तो मैं इस नतीजे पर पहुंच गया हूं कि काफी और शास्त्रीय संगीत के बारे में सवाल करना बड़ी नासमझी की बात है। यह बिलकुल ऐसी ही बदमजाकी है, जैसे किसी नेक मर्द की आमदनी या खूबसूरत औरत की उम्र दरियाफ्त करना। (इसका यह मतलब नहीं कि नेक मर्द की उम्र और खूबसूरत औरत की आमदनी दरियाफ्त करना खतरे से खाली है।) जिंदगी में सिर्फ एक शख्स ऐसा मिला, जो वाकई काफी से बेजार था; लेकिन उसकी राय इस लिहाज से मानने लायक आकर्षक नहीं कि वह एक मशहूर काफी हाऊस का मालिक निकला।

एक साहब अपनी पसंद के बारे में सिर्फ यह कहकर चुप हो गये :

छूटती नहीं है मुंह से यह काफी लगी हुई

मैंने खुलासा पूछा तो कहने लगे—"दरअसल यह आदत की बात है, यह कम्बख्त काफी भी काबुली चने और डोमनी की तरह एक दफा मुंह लगने के बाद छुड़ाये नहीं छूटती है, ना?"

इस मुकाम पर मुझे अपनी मजबूरी कबूल गवारा है।

मालूम नहीं काफी क्यों, कब और किस मनहूस मर्द ने ढूंढ़ी होगी; लेकिन यह यकीन के साथ कह सकता हूं कि यूनानियों को इसका इल्म नहीं था। अगर उन्हें जरा भी इल्म होता, तो चिरायते की तरह इसका भी यूनानी जड़ी-बूटियों में शुमार होता। इस खयाल को इस बात से और भी ज्यादा मजबूती मिलती है कि कस्बों में काफी की बढ़ती हुई खपत की गालिबन एक वजह यह भी है कि नीम हकीमों ने 'अल्लाहाफी अल्लाकाफी' कहकर इसका चूरन नुस्खों में लिखना शुरू कर दिया है। पुराने जमाने में इस किस्म की जड़ी-बूटियों का इस्तेमाल दुश्मनी और फिर शादी के लिए ही खास होता था। चूंकि आजकल इन दोनों बातों को ऐब से भरा खयाल किया जाता है, इसलिए इसे सिर्फ आपसी निश्छल व्यवहार के लिए इस्तेमाल करते हैं।

सुना है कि चाय के बड़े खूबसूरत बाग होते हैं। यह बात यों भी सच मालूम होती है कि चाय अगर खेतों में पैदा होती, तो एशियाई मुल्कों में इतनी ज्यादा नहीं मिलती, बल्कि गल्ले की तरह विदेशों से मंगायी जाती।

वैसे तो मेरी जानकारी बहुत थोड़ी है; मगर दिमाग यही कहता है कि काफी भी जमीन ही से उगती होगी; क्योंकि इसकी गिनती उन न्यामतों में नहीं, जो अल्लाताला अपने नेकबंदों पर आसमान से बराहे रास्त नाजिल करता है। तो भी मेरी कल्पना में किसी तौर यह बात नहीं आती कि काफी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बागों की पैदावार हो सकती है और अगर किसी मुल्क के बागों में यह चीज पैदा होती है, तो अल्ला जाने वहां के जंगलों में क्या जमता होगा ? ऐसे अजीब लोगों की कमी नहीं, जिन्हें काफी इस वजह से प्यारी है कि वह हमारे मुल्क में पैदा नहीं होती। मुझसे पूछिये तो मुझे अपना मुल्क इसीलिए और भी अजीज है कि यहां काफी पैदा नहीं होती।

मैं सभी पीने-पिलाने की चीजों का पारखी नहीं हूं, लिहाजा उनके अच्छे या बुरे होने का अंदाजा उनके प्रभावों से लगाता हूं, जो इसे पीने के बाद जाहिर होते हैं। स लिहाज से मैंने काफी को शराब से भी कहीं बदतर पाया। मैंने देखा है कि शराब पीकर संजीदा हजरात बेहद गैर-संजीदा गुफ्तगू करने लगते हैं, जो बहुत जानदार होती है। इसके खिलाफ काफी पीकर गैरसंजीदा लोग इंतहाई संजीदा गुफ्तगू करने की कोशिश करते हैं। मुझे संजीदगी से चिढ़ नहीं, बल्कि इश्क है, इसीलिए मैं संजीदा आदमी की मजाक बर्दाश्त कर लेता हूं, मगर मसखरे की संजीदगी का मैं समर्थक नहीं। शराब के नशे में लोग बिला वजह सच नहीं बोलते। शराब पीकर आदमी अपना गम औरों को देता है, मगर काफी पीनेवाले औरों के फर्जी गम अपना लेते हैं। मदहोश होने के बाद गैर भी एक दूसरे के गले में बाहें डाल देते हैं, काफी पीकर दोस्त भी दुश्मन बन जाते हैं।

यहां मुझे काफी से पैदा होनेवाली अपनी बेचारी का खूब खुलासा करना है। लेकिन

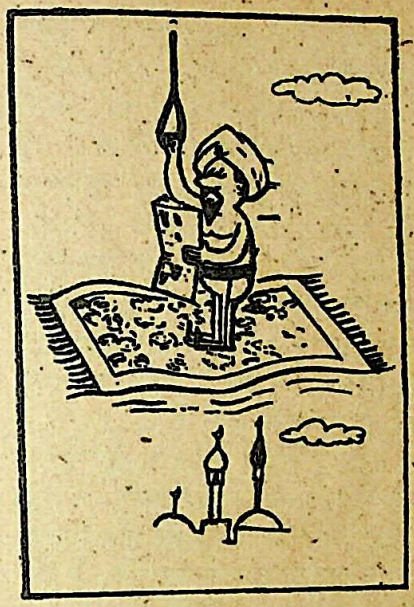

अगले स्टेशन पर उतरकर काफी पी लूंगा।

अगर किसी साहब को यह शराब का इश्तहार मालूम हो, तो उसे जबान व बयान का धोखा ही समझें।

काफी के तरफदार अक्सर यह कहते हैं कि यह बेनशे की प्याली है। अगर यह दावा दुरुस्त है, तो मुझे उनसे दिली हमदर्दी है; मगर इतने कम दामों में आखिर वे और क्या चाहते हैं ?

काफी हाउस की शाम का क्या कहना ! फिजां में हर तरफ दिमागी कुहरा छाया हुआ है, जिसको सरमायादार तबका और तुलबा (विद्यार्थी) सुर्ख सवेरा समझकर डरते और डराते हैं, चीख-चिल्लाहट का यह आलम कि अपनी आवाज सुनाई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं देती और बार-बार दूसरों से पूछना पड़ता है कि मैंने क्या कहा। हर मेज पर ये बुद्धिजीवी, अपनी अक्ल पर घमंड करनेवाले नौजवान जमा होते हैं और काफी पीते हैं और सांझ से आधी रात तक, 'इंकिलाब जिंदाबाद' वाले लहजे में बहस करते हैं। देखते-ही-देखते काफी अपना रंग दिखाती है और तमाम दुनिया के इंसानों को एकबिरादरी समझनेवाले थोड़ी देर बाद एक दूसरे की बल्दियत के बारे में अपने शक-शुबह का इजहार करने लगते हैं।

काफी ी-पीकर समाज को कोसनेवाले इन इंटलेक्चुअल (बुद्धिजीवियों) ने मुझे बताया कि काफी से हृदय-कमल खिल जाता है और आदमी चहकने लगता है। मैं इस राय से सोलह आने सहमत हूं। कोई भी भला आदमी काफी का काढ़ा पीकर अपना मुंह बंद नहीं रख सकता। उनका यह दावा भी गलत नहीं मालूम होता कि काफी पीने से बदन में चुस्ती आती है, तभी तो लोग दौड़-दौड़कर काफी हाउस आते हैं और घंटों बैठे रहते हैं।

बढ़िया काफी बनाना भी जादूगरी से कम नहीं। यह इसलिए कह रहा हूं कि दोनों के संबंध में यही सुनने में आया है कि बस एक आंच की कसर रह गयी। हर काफी हाउस और खानदान का एक खास नुस्खा होता है, जो पुश्त-दरपुश्त अमल में आता रहता है। पूर्वी अफ्रीका के उस अंग्रेज अफसर का नुस्खा तो सभी को मालूम है, जिसकी मजेदार काफी की सारे जिले में धूम थी। एक दिन उसने एक दावत दी, जिसमें उसके हब्शी खानसामा ने बहुत ही मजेदार काफी बनायी। अंग्रेज मालिक ने उसको शाबाशी देते हुए मेहमानों के सामने ही उससे काफी बनाने की तरकीब पूछी।

हब्शी ने जवाब दिया—"बहुत ही सरल तरीका है। मैं बहुत-सा खौलता हुआ पानी और दूध लेता हूं, फिर उसमें काफी मिला देता हूं।"

"लेकिन उसमें घोलते कैसे हो, बहुत महीन छनी होती है?"

"हुजूर के पुराने मोजे में छानता हूं।"

"क्या मतलब? क्या तुम मेरे कीमती रेशमी मोजे इस्तेमाल करते हो?" मालिक ने गजबनाक होकर पूछा।

खानसामा सहम गया—"नहीं सरकार! मैं आपके साफ मोजे कभी इस्तेमाल नहीं करता।"

सच अर्ज करता हूं कि मैं काफी की तुंदी और तलखी से जरा नहीं घबराता। बचपन ही-से यूनानी दवाओं का आदी रहा हूं और मेरी सहनशक्ति तनी बढ़ गयी है कि कड़वी-से-कड़वी गोलियां खाकर भी बेमजा न हुआ।

लेकिन कड़ुवाहट और मिठास के मेल से जो कोसा-सा काढ़ा बनता है, वह मेरी बर्दाश्त से बाहर है। मेरी तबीयत उस मीठे जहर का ताव नहीं ला सकती। लेकिन दिक्कत यह आन पड़ती है कि मैं मेजबान की हठ को अदावत और वे मेरे इन्कार को तकल्लुफ मानते हैं। लिहाजा जब वे मेरे कप में शक्कर डालते वक्त पूछते हैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक चम्मच, या दो?" तो मजबूरन यही सिफारिश करता हूं कि मेरे लिए शक्कर-दान में काफी के सिर्फ दो चमचे डाल दीजिये।

साफ ही क्यों न कह दूं कि जहां तक खाने-पीने का ताल्लुक है, मैं हविस के पीछे भागने का कायल नहीं। मैं यह फैसला दिमाग के बजाय जबान पर छोड़ना पसंद करता हूं। पहली नजर में जो मुहब्बत हो जाती है, उसमें बचपन के फितूर का मजा होता है, लेकिन खाने-पीने के मामले में मेरा यह खयाल है कि पहला ही लुकमा या घूंट निर्णयकारी होता है। बदजायका खाने की आदत को व्यसन बनाने के लिए बड़ा मन मारना पड़ता है। और मैं इस सिलसिले में बरसों दिल मसोसकर कड़वे घूंट पीते रहने का समर्थक नहीं, बशर्ते कि उसमें गृहस्थी मजबूरियां शामिल न हों।

काफी अमरीका का कौमी नशा है। मैं इस बेमानी बहस में नहीं उलझना चाहता कि अमरीकी कल्चर काफी के जोर से फैली या काफी को अमरीकी कल्चर के जोर से फैलाव मिला। एक साहब ने मुझे लाजवाब करने की खातिर यह दलील पेश की कि अमरीका में तो काफी इस कदर आम है कि जेल में भी पिलायी जाती है। मैंने कहा कि जब खुद कैदी उसका लुत्फ नहीं उठाते, तो हमें क्या पड़ी कि वकालत करें। पाकिस्तानी जेलों में भी कैदियों के साथ यह सुलूक रखा जाये, तो जुल्मों की रोकथाम में बड़ी मदद मिलेगी।

मेरी मंशा अमरीकी आदत पर नुक्ताचीनी नहीं, हर आजाद कौम का यह बुनियादी हक है कि वह अपने मुंह और मेदे के साथ जैसा सुलूक करना चाहे, बेरोकटोक करे। इसके अलावा, जब दूसरी कौमें हमारे फालूदे का मजाक नहीं उड़ातीं, तो हम उनकी खाने-पीने की चीजों का मजाक करनेवाले कौन? बात दरअसल यह है कि पश्चिम के सभ्य देशों में प्यास बुझाने के लि पानी के अलावा दूसरी चीजें इस्तेमाल होती हैं। सुना है जर्मनी में, जहां बीयर राष्ट्रीय पेय है, डाक्टर मजबूरी में बहुत ही तंदुरुस्त आदमी को खालिस पानी पीने की इजाजत देते हैं; लेकिन जिनको पानी का चस्का लग जाता है, वे रात को छिपछिप कर पानी पीते हैं। एक जमाना था कि पेरिस के कैफों में रंगीन मिजाज फनकार बुर्जुआ वर्ग को चिढ़ाने की गर्ज से खुल्लमखुल्ला पानी पिया करते थे।

आपके दिमाग में खुदानख्वास्ता यह शक पैदा न हो गया हो कि मैं काफी के मुकाबले में चाय का तरफदार हूं, तो मजमून खत्म करने से पहले इस गलतफहमी को दूर करना जरूरी समझता हूं। मैं काफी से इसलिए बेजार नहीं हूं कि मुझे चाय अजीज है, बल्कि हकीकत यह है कि काफी का जला चाय फूंक-फूंककर पीता है:

एक हम हैं कि हुए ऐसे पशेमां कि बस।
एक वे हैं कि जिन्हें चाय के अरमां होंगे॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जादू की सूई

शरद राकेश

धांय! धांय...! ..... लद्दाख में चीनियों की गोली से भारतीय सेना का एक जवान दोहरा होकर गिर पड़ा। गोली पेट में लगी थी। सेना का डाक्टर जान हथेली पर रखकर दौड़ता हुआ उसके पास गया। जवान जिंदा था; पर दर्द से छटपटा रहा था। डाक्टर ने घाव की प्राथमिक चिकित्सा की और तुरंत दर्द कम करने के लिए उसकी बांह में एक इंजेक्शन दे दिया। दर्द कम हुआ और जवान की बेचैनी कम हुई।

जवान को स्ट्रेचर पर लादकर निकट के मेडिकल कैंप में पहुंचाया गया। यहां उसे पुनः एक इंजेक्शन दिया गया—रक्त के प्लाज्मा का। सूई के द्वारा उसके शरीर में खून पहुंचाया गया। इसके बाद आपरेशन-कक्ष। यहां भी उसे एक इंजेक्शन दिया गया बेहोश करने की दवा का। जवान सो गया।

डाक्टर ने आपरेशन करके गोली निकाल ली। इसके बाद भी इंजेक्शनों का तांता जारी रहा। कभी दर्द से आराम पहुंचाने के लिए सूई दी जा रही है, तो कभी उसे इन्फेक्शन से बचाने के लिए पेनिसिलीन का इंजेक्शन; और कभी सूई द्वारा ही रक्त शरीर में पहुंचाया जा रहा है। जब तक जवान पूर्णतः स्वस्थ नहीं हो गया, उस समय तक इंजेक्शन चलते रहे; वे घाव को भरते रहे, उसे इन्फेक्शन से बचाते रहे, शक्ति प्रदान करते रहे, दर्द कम करते रहे। सच तो यह है कि इंजेक्शनों ने ही उसे नवजीवन प्रदान किया।

सिर्फ युद्धक्षेत्र में ही नहीं, संसार के हर कोने में रोज लाखों-करोड़ों लोगों की जान बचाने का काम इंजेक्शन कर रहे हैं। चाहे मामला मोटर-दुर्घटना का हो, या आग से जलने का हो, ऊंचाई पर से गिर पड़ने का, सर्पदंश या 'हार्ट फेल' का हो – इंजेक्शन सबकी जान बचाता है। इधर सूई चमड़े के अंदर प्रविष्ट होकर दवा छोड़ती है, और उधर असर होता है जादू-सा।

इंजेक्शन देनेवाली सिरिंज के मुख्यतः दो हिस्से होते हैं। एक है कांच की बनी 'पिस्टन' जैसी चीज, और दूसरा है कांच का ही बना बाहरी आवरण, जिसके निचले सिरे पर एक खोखली सूई लगी होती है। यह साधारण-सा उपकरण शरीर के अंदर दवा को किसी भी अन्य तरीके की तुलना में शीघ्रतर पहुंचा सकता है।

कभी-कभी तो ऐसा होता है कि दवा किसी और ढंग से दी ही नहीं जा सकती। उदाहरण के लिए, मधुमेह के मरीजों को दिए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जानेवाले औषध इन्सुलिन को ही लीजिये। इसे अगर रोगी को खिलाया जाये, तो पेट के अंदर पैदा होनेवाले पाचक-रस इसे नष्ट कर डालेंगे। बेहोश रोगी के शरीर में दवा पहुंचाने का एकमात्र अचूक उपाय इंजेक्शन है। खिलायी या पिलायी हुई दवा कई बार उल्टी के जरिये बाहर निकल जाती है। ऐसी स्थिति में भी केवल इंजेक्शन कारगर हो सकता है।

कुछ दवाएं ऐसी भी होती हैं, जो इंजेक्शन द्वारा न दी जायें, तो उनका कम प्रभाव पड़ता है। उदाहरण के लिए पेनिसिलीन को लीजिये। इंजेक्शन द्वारा शरीर में पहुंचाये जाने पर इसकी कार्यक्षमता पांच गुना अधिक होती है। कभी-कभी रोगी जिंदगी और मौत के बीच झूल रहा होता है, या उसे असहनीय पीड़ा हो रही होती है। ऐसे समय में डाक्टर का हाथ सीधे इंजेक्शन की सिरिंज की ओर जाता है, जो कि चिकित्साशास्त्र के सबसे बड़े आविष्कारों में से एक है।

लेकिन इस महान लघु आविष्कार का श्रेय किसी एक व्यक्ति या युग को नहीं दिया जा सकता। इसका विकास धीरे-धीरे अनेक सदियों के परीक्षण और प्रयोगों से हुआ। कहा जाता है कि पाश्चात्य चिकित्साशास्त्र के जनक हिप्पोक्रेटस मृत जानवर के मूत्राशय में पानी भर लेते थे और उसके एक सिरे पर एक नुकीला नरकुल बांधकर उसे सी देते थे। शरीर के जिस खोखले अवयव को धोना हो, उसमें नरकुल की नोक प्रविष्ट कराकर मूत्राशय को दबाते थे। सिरिंज या पिचकारी का यह रूप प्राय: दो हजार वर्षों तक चलता रहा।

संभवत: सिरिंज का आधुनिक सिद्धांत—पिस्टन और सिलिंडर—ईसा के जन्म से पूर्व यूनानियों को ज्ञात था और रोम में उसका उपयोग पानी के पंप में किया जाता था। इस सिद्धांत का एनीमा के लिए प्रयोग करने का श्रेय १५ वीं शताब्दी के इटालियन चिकित्सक मार्क्स गाटिनारिया को है। लेकिन द्रव औषधों को शरीर में प्रविष्ट कराने के साधन के रूप में इस सिद्धांत का उपयोग होने में अभी कई सौ साल की देर थी।

तब अभी खोखली सूई का आविष्कार नहीं हुआ था; इसलिए इंजेक्शन के प्रयोगों में दवा को पिचकारी द्वारा त्वचा के नीचे पहुंचाने के बजाय, सीधे शिरा (वेन) में छोड़ा जाता था। सन १६५६ के आस-पास विख्यात अंग्रेज वास्तुशिल्पी एवं वैज्ञानिक सर क्रिस्टोफर रेन ने कुत्ते की शिरा में इंजेक्शन द्वारा कई द्रव सीधे पहुंचाये। रेन ने कुत्ते की जांघ में चीरा लगाकर बड़ी रक्तवाहिनी को बांधकर रक्त का बहना रोक दिया। इसके बाद एक शिरा को काटकर उसमें सिरिंज प्रविष्ट करा दी और उसके द्वारा शराब, अफीम और इसी तरह की अन्य चीजें कुत्ते के शरीर में पहुंचायीं। वे कुत्ते पर इन द्रवों का प्रभाव देखना चाहते थे।

मनुष्य को अंत:शिरा (इंट्रावेनस) इंजेक्शन द्वारा दवा देने का प्रयोग शायद पहले पहल १६६२ में प्रशिया के जान डेनि-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यल मेजर ने किया। बाद में बहुतों ने उसका अनुकरण किया। लेकिन इसकी उपयोगिता नहीं के बराबर थी। क्योंकि इससे हमेशा शिरा में घाव हो जाता था। प्रायः इससे रक्त में थक्का जमने और किसी द्रव्य या वायु के बुलबुले द्वारा शिरा या धमनी के अवरुद्ध हो जाने जैसी समस्याएं भी पैदा हो जाती थीं।

अठारहवीं शताब्दी के आरंभ में डोमिनिक एनेल ने सुधरे हुए सिरिंज का आविष्कार किया। इसमें विभिन्न प्रकार के चंचु (नोजल) लगाकर उनके द्वारा घावों से रक्त और मवाद वगैरह बाहर खींचे जा सकते थे। ऐसा माना जाता है कि त्वचा के नीचे इंजेक्शन द्वारा मार्फीन पहुंचाने का पहला प्रयोग न्यूयार्क के आइजेक ई० टेलर और जेम्स वाशिंग्टन नामक दो डाक्टरों ने सन १८३९ में एनेल की सिरिंज द्वारा किया। उन्होंने पहले नश्तर से त्वचा में चीरा लगाया, फिर उसमें सिरिंज डाला।

मगर इंजेक्शन में सिरिंज का जितना महत्व है, खोखली सुई का उससे कम महत्व नहीं है। इसका उल्लेख मिलता है कि सन १८५३ में एडिनबरो के डाक्टर एलेक्जेंडर वुड ने एक खोखली सुई का इस्तेमाल किया था, जो सिरिंज के साथ एक तरह से जुड़ी हुई थी।

इंजेक्शन-विधि में महत्वपूर्ण सुधार करनेवालों में फ्रांस के डा० चार्ल्स गेब्रियेल प्रावाज भी उल्लेखनीय हैं। रक्त भर जाने से धमनियों की भित्तियों के फूल जाने की बीमारी 'एन्युरिज्म' का वे बिजली से उपचार करने का उपाय खोज रहे थे। वे धमनी में पतले तार प्रविष्ट कराकर उसमें बिजली की धारा छोड़ते थे। उन्हें आशा थी कि इससे रक्त गाढ़ा होगा और धमनी ठीक स्थिति में आ जायेगी। जब उनके ये प्रयोग सफल नहीं हुए, तो उन्होंने आयरन परक्लोराइड नामक रसायन का उपयोग करके देखने की ठानी। यह रसायन रक्त को गाढ़ा बनाने में समर्थ है। इसे रक्तवाहिनी में पहुंचाया जाये, तो वह और भी अधिक असर करता है।

लेकिन समस्या यह थी कि आयरन परक्लोराइड को सीधे रक्तवाहिनी में कैसे पहुंचाया जाये? बीस साल के परिश्रम और प्रयोग से डा० प्रावाज ने रक्तवाहिनी को भेदनेवाली सूई और सिरिंज का निर्माण किया। इस सिरिंज में पिस्टन दबाकर दवा को सुई में नहीं भेजा जाता था; बल्कि खोल के अंदर बेलन को पेच की तरह क्रमशः कसा जाता था।

डा० प्रावाज ने १८५३ में इस सिरिंज और सूई द्वारा एक घोड़े की शिरा में इंजेक्शन दिया। उस समय वे ६२ वर्ष के थे। उसी साल उनकी मृत्यु हो गयी और वे मनुष्य पर प्रयोग करने के अवसर से वंचित रह गये। लेकिन कुशल डाक्टरों ने प्रावाज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की सिरिंज का सफल प्रयोग किया। इस आविष्कार के कारण ही, उनकी मृत्यु के ठीक सौ साल बाद १९५३ में फ्रांस सरकार ने उनके जन्मस्थान में एक स्मारक स्थापित करके उन्हें सम्मानित किया है। आज भी इंजेक्शन की सिरिंज को फ्रांस में 'प्रावाज सिरिंज' कहा जाता है।

सन १८९५ के आस-पास कार्ल इनीडर ने पूर्णतया कांच की बनी सिरिंज का आविष्कार किया, जिसे गर्म पानी में उबालकर निर्जर्म अर्थात् कीटाणु-रहित किया जा सकता था। लेकिन जंग न लगनेवाली तथा न टूटने-वाली खोखली फौलादी सूई का कारखानों में बड़ी तादाद में निर्माण प्रथम विश्वयुद्ध के पहले तक शुरू नहीं हुआ था।

उसके बाद इस जादू की सूई ने काफी तेजी से प्रगति की, हालांकि इसमें भी कई समस्याएं पेश आयीं।

आज भी इंजेक्शन पूर्णतया समस्याओं से मुक्त नहीं है। अगर सूई को सर्वथा निर्ज-मित न किया गया हो, तो हिपेटाइटिस और अन्य संक्रामक बीमारियां उसके द्वारा शरीर में प्रवेश पा सकती हैं। करीब १५ मिनिट तक सूई को उबालने से स्ट्रेप्टोकोकस जैसे कई कीटाणु अवश्य नष्ट हो जाते हैं; लेकिन हिपेटाइटिस के वाइरस को नष्ट करने के लिए और भी अधिक देर तक उबोलने की आवश्यकता होती है।

अब तो पहले से ही निर्जर्मित की हुई सूई और सिरिंज भी कम खर्च में ही प्राप्त होने लगी हैं, जिन्हें उपयोग करके फेंका जा सकता है।

इंजेक्शन के क्षेत्र में नयी प्रगति है 'जेट इंजेक्टर' अथवा 'एयर गन' का आविष्कार। सफाई की दृष्टि से सुगम होने के साथ-साथ 'जेट इंजेक्टर' कम खर्चीला और कम तक-लीफदेह होता है और इस तेजी से काम करता है कि बच्चा रोना शुरू करे, इसके पहले ही इंजेक्शन की सारी क्रिया पूरी हो जाती है।

एयर-गन दवा को ७०० मील प्रतिघंटे की रफ्तार से रोगी के शरीर में प्रविष्ट कराती है और इस वेग के कारण दवा मांसपेशी में एक इंच तक गहरी पैठ जाती है। दवा के दूषित होने की संभावना तनिक भी नहीं रहती; क्योंकि दवा का न हवा से संपर्क होता है, न डाक्टर या नर्स का हाथ उसे लगता है। न सूई, न चुभन, न दर्द।

जब पचास या ज्यादा रोगियों को इंजे-क्शन देना हो, तब 'जेट इंजेक्टर' बहुत उप-योगी होता है। परंतु डाक्टर के दवाखाने में यह अधिक उपयोगी नहीं है। 'जेट-इंजेक्टर' में डाली हुई वैक्सीन व दवाओं का तुरंत उपयोग हो जाये तो ठीक, अन्यथा उन्हें फेंक देना पड़ता है। इसलिए इसमें दवा के अप-व्यय की संभावना बहुत रहती है और खर्च भी बढ़ जाता है।

आज संसार में रोज करोड़ों लोगों को, विभिन्न परिस्थितियों में, विभिन्न ढंग से सूई दी जाती है और उनकी जान बचायी जाती है। कितनी छोटी-सी चीज और कितना बड़ा काम!

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

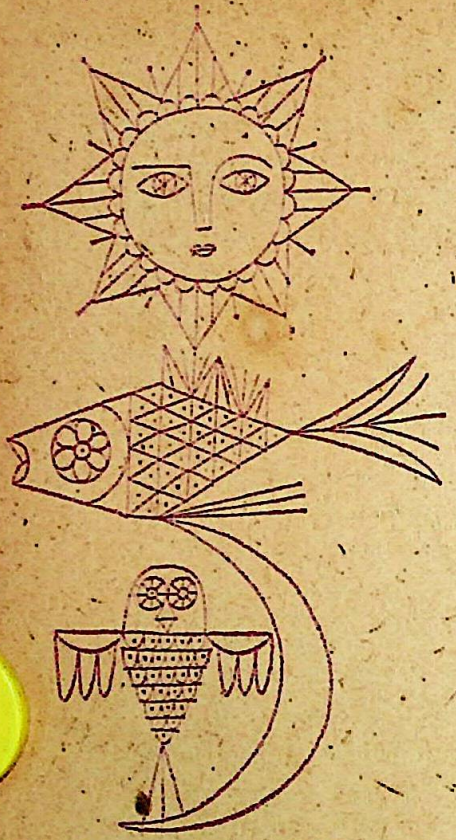

निवारण

जिंदगी
बहुत धीरे-धीरे चलती है
काश मौत की चाल
और तेज होती !
फिर
जीवन
जल्दी-जल्दी भागता
और
बहुत-सी महारत शीघ्र हासिल होती
बहुत-से महाभारत शीघ्र समाप्त होते
बहुत-सी ऊब से हम बच जाते ।

—यज्ञ शर्मा

रात

आज और कल
दोनों के बीच खड़ी
काले पत्थर की
एक अंधियारी दीवार
जिस पर
अक्सर आकर बैठता है
हंस-सा सलोना चंदा
अपने चांदनी-से पंख पसार ।।

—कन्हैयालाल सराफ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पानी शुद्ध रहे

दूषित जल-परिशोधन के वैज्ञानिक उपाय

जल एक ढंग से अविनाशी है। उसे कागज अथवा काठ की तरह जलाकर दूसरे रूपायन में परिवर्तित नहीं किया जा सकता। न वह घिसता या टूटता है। यह बात सत्य है कि थोड़े समय के लिए उसे बर्फ अथवा भाप में बदला जा सकता है; किंतु अनुकूल परिस्थिति मिलते ही बर्फ और भाप फिर पानी में बदल जाते हैं। यों वैज्ञानिक दृष्टि से पानी का आक्सीजन और हाइड्रोजन गैसों में विभक्त हो जाना नष्ट होना माना जा सकता है। पर दरअसल न तो पानी की नयी सृष्टि हो रही है, न विनाश। वैज्ञानिकों के मतानुसार पृथ्वी पर आज भी उतना ही पानी मौजूद है, जितना कि मनुष्य के प्रादुर्भाव के समय था।

लेकिन आज दुनिया में उस समय की अपेक्षा बहुत अधिक मनुष्य हैं। समाज भी आज ज्यादा जटिल है। औद्योगिक विकास तेजी से हो रहा है। विभिन्न कामों के लिए पानी की मांग पहले से कई गुना अधिक बढ़ गयी है। पानी की निरंतर प्राप्ति जीवन-धारण के लिए और औद्योगिक व्यवस्था को चालू रखने के लिए आवश्यक है।

मनुष्य ने पानी का उपयोग करना सीखा, तो साथ ही उसे बरबाद करना और दूषित करना भी सीखा। जल-दूषण की समस्या तब और भी जटिल और असाध्य-सी हो उठी, जब फैलती हुई यांत्रिक सभ्यता और औद्योगिक क्रांतियों के कारण समाज कृषि-प्रधान रूप छोड़कर उद्योग-प्रधान बन गया और गांवों से खिंचकर आबादी बड़े-बड़े शहरों में जमा होने लगी। मिलों-फैक्टरियों से निकले हुए कचरे और नगरों में बढ़ती हुई आबादी की भीड़ ने पानी के स्रोतों को बिगाड़ना शुरू किया।

नदी-नाले कई तरह के कामों के लिए बढ़िया माध्यम समझे जाते हैं— माल की ढुलाई, बिजली-उत्पादन, सिंचाई और साथ-साथ कूड़े-कचरे की निकासी के भी। नगरों और गांवों में से होकर बहनेवाले नदीनालों में शहर और मिल-फैक्टरियों का कूड़ा-कचरा डाला जाने लगा। जब तक कूड़े-कचरे की मात्रा कम थी, पानी के दूषित होने का खतरा नहीं था; क्योंकि जल अपने आपमें उत्तम परिशोधक है। किंतु अब तो नदियों में कूड़ा-कचरा इतनी अधिक मात्रा में प्रवाहित किया जा रहा है कि पानी के लिए उसे हजम करना असंभव-सा हो उठा है।

उद्योग इस खतरे के प्रति सबसे पहले चौकन्ना हुआ; क्योंकि पानी की शुद्धता और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

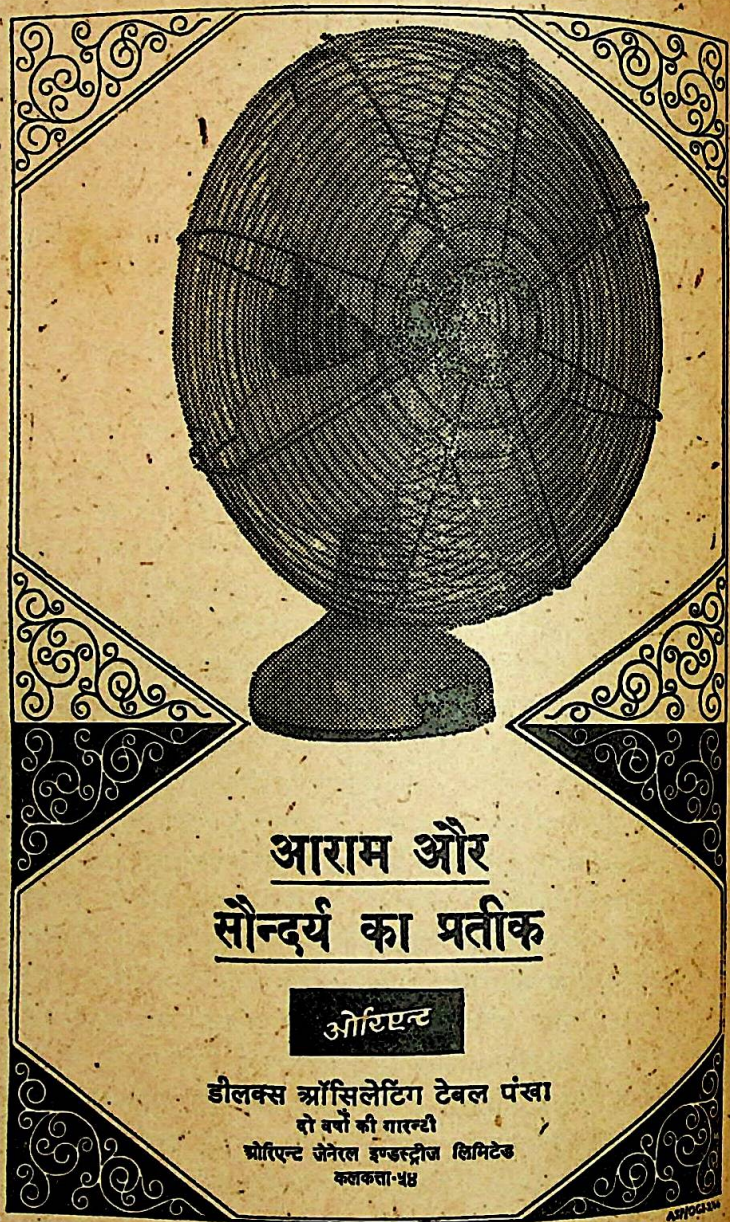

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

औद्योगिक विकास में गहरा संबंध है। पानी आर्थिक विकास की जान है और निरंतर शुद्ध पानी न मिलता रहे, तो बहुत-से उद्योग नष्ट हो जायें। इसलिए दुनिया के तमाम उद्योग यह मानते हैं कि दूषित जल की शुद्धि पर होनेवाला खर्च व्यावसायिक खर्चे का ही अंग है।

शोधन-प्रक्रिया का यांत्रिक ढंग अलग-अलग प्लांटों में अलग-अलग है। जो पानी दूषित होता है, उसे शुद्ध करके पुनः उत्पादन-प्रक्रियाओं में प्रयुक्त किया जाता है। और बाद में उसे नदी-नालों में वापस छोड़ते समय भी उसकी गंदगी काफी हद तक दूर कर दी जाती है, ताकि नदी के किनारे आ जो उद्योग हैं, वे उसका उपयोग कर सकें। लेकिन यह शोधन एक आंशिक उपचार है। उसमें गंदगी इस हद तक कम कर दी जाती है, जिससे आगे जल स्वयं ही अपना परिशोधन कर सकता है।

सायनामिड और दूसरी रासायनिक कंपनियां जल-दूषण की समस्या से निरंतर जूझ रही हैं। सायनामिड अपने ३१ करोड़ रुपये के शोध-कार्यक्रम में काफी पैसा जल-शोधक रसायनों के विकास पर खर्च कर रहा है। न्यू जर्सी के वाउंडब्रुक नामक स्थान पर सायनामिड का एक कारखाना है। उसमें २,८०० कर्मचारी १५० भवनों में ८०० से भी अधिक प्रकार के उत्पादन तैयार करते हैं। रेरिहन नदी के किनारे निर्मित इस प्लांट में औद्योगिक कचरे के शोधन की जबर्दस्त व्यवस्था है।

बर्बरता

मैला कपड़ा
साबुन से घिसा गया,
पत्थर पर पीटा गया,
लोहे से दबाया गया,
ताकि वह
ढांप सके
मनुष्य की बर्बरता!

—रमेशचंद्र कुंडलिया

इस एक कारखाने में सायनामिड ने प्रतिदिन २० मिलियन गैलन दूषित जल को शुद्ध करने के लिए 'प्लांट स्टडी' पर १० साल में ७५ लाख रुपये खर्च किये और इसके परिणामस्वरूप लगभग ३॥ करोड़ रुपये की लागत का शोधन-यंत्र बना, जो सायनामिड के औद्योगिक कचरे के अलावा कारखाने के आस-पास की तीन बस्तियों से निकलनेवाले गंदे पानी का भी शोधन करता है। फिर सायनामिड की स्टैम्फोर्ड (कनेक्टिकट) स्थित ट्रेल रिसर्च लेबोरेटरी जलोपचार के लिए एक तीव्र रासायनिक अनुसंधान कार्यक्रम में लग गयी। और इस लेबोरेटरी द्वारा विकसित जल-शोधक उपकरणों और विधियों का सारे विश्व को लाभ मिल रहा है।

सायनामिड कंपनी ने हालैंड के बोटलेक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नामक स्थान पर एक्रिलामाइड के निर्माण के लिए एक नये प्लांट की स्थापना की है। यहां उत्पादित एक्रिलेमाइड पालिमर रसायन उद्योग-केंद्रों और शहरों के दूषित जल-प्रवाह को शुद्ध करने में प्रभावशाली सिद्ध हुए हैं।

पहले जलशोधन की यांत्रिक प्रणाली वैसी ही थी, जैसी प्रकृति में होती है। शहरों और मिल-फैक्टरियों के दूषित जल को बड़े-बड़े चहबच्चों में भर दिया जाता था, जहां कचरा या तो तल में बैठ जाता था अथवा ऊपर-ऊपर से काढ़ लिया जाता था। लेकिन इसके लिए बहुत लंबा-चौड़ा स्थान चाहिये; दूसरे, इसमें समय बहुत लगता है।

सायनामिड के अनुसंधान-केंद्र ने एक अत्यंत नवीन और शत-प्रतिशत कार्यकारी रासायनिक तत्व विकसित किया है—सुपर फ्लाक। इसके प्रभाव से द्रव में स्थित गंदगी छोटे-छोटे समूहों में जुटकर तले में बैठने लगती है।

शुरू में ठोस कचरे को हटाने के लिए चलनी का अथवा ऐसे ही किसी सामान्य उपकरण का उपयोग किया जाता है। यह कचरा कुछ भी हो सकता है—काठ के टुकड़े, रेशे, भूसी, अन्न अथवा कोयले का चूरा। यह कचरा कभी-कभी विषैला भी होता है। इस छने हुए द्रव को टंकी या चहबच्चे में भरा जाता है, जहां उसमें सुपरफ्लाक मिलाया जाता है। अब गंदगी के कण इकट्ठे होकर तल में बैठ जाते हैं और खुरचकर निकाल दिये जाते हैं।

आगे की शोधन-क्रिया वायु में स्थित आक्सिजन कर देती है; क्योंकि हवा लगने से पानी में जीवाणुओं की उत्पत्ति होती है, जो गंदगी के बचे-खुचे ठोस कड़ों को तोड़ देते हैं। सुपरफ्लाक का एक बार फिर उपयोग टंकियों में से निकाले गये कीचड़ को सुखाने के लिए किया जाता है। इस कीचड़ को सुखाना सहज नहीं है; क्योंकि कुछ प्रकार के कीचड़ में पानी का अंश ९५ प्रतिशत तक रहता है। सुपरफ्लाक ऐसी स्थिति में अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य करता है। अपनी रासायनिक प्रक्रिया के द्वारा जलभाग को १० प्रतिशत तक घटा देता है। इसे खाद के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है, अथवा जलाया जा सकता है।

इस प्रकार के रसायन, जो द्रव में तैर रहे अपद्रव्यों को एकत्र कर देते हैं, फ्लाक्युलेंट कहलाते हैं। सायनामिड तथा अन्य कंपनियों ने इस प्रकार के अनेक फ्लाक्युलेंट रसायन तैयार किये हैं, जो विविध प्रकार की शोधन-प्रक्रियाओं में उपयोगी हैं।

★

कन्नड के विख्यात भाषाशास्त्री और साहित्य-मनीषी स्वर्गीय ती० नं० श्रीकंठय्या अपने घर किसी अतिथि के साथ बातचीत कर रहे थे। इतने में बाहर से बड़ा कोलाहल सुनाई दिया। अतिथि कुछ व्यग्र हो उठे, तो उन्होंने मुस्कराते हुए कहा—"कोई विशेष बात नहीं। नल-स्वयंवर हो रहा है। एक नल के लिए अनेक दमयंतियां जुट गयी हैं।"

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शिकार-प्रसंग बाल-पाठकों के लिए :

भेड़ियों की तलाश में

यदुनाथ मिश्र

भेड़ियों के उत्पात ने गांववालों को परेशान कर रखा था। कभी किसी छोटे बच्चे को उठा ले जाते, कभी ढोरों पर हमला करते। और अगर कोई अकेला चरवाहा या लकड़हारा मिल जाता, तो भेड़ियों का झुंड उसे भी अपना शिकार बनाने से न चूकता। गांव में यों तो शिकारी कई थे; पर सुरेश चौधरी की निशानेबाजी मशहूर थी। साहसी वह इतना अधिक था कि कई बार निहत्थे ही खूंख्वार जानवरों से भिड़ बैठा था। वह और उसका छोटा भाई आनंद अब तक बहुत सारे भेड़ियों का सफाया कर चुके थे। फिर भी जो बचे थे, वे जहां-तहां उत्पात मचा रहे थे।

भेड़िये हमेशा झुंड में ही चलते और उनकी टोली बहुत दूर तक मार करती। एक ही जगह पर वे कभी दो शिकार नहीं करते थे। एक रात को भेड़ियों ने इकट्ठे बंधे गाय-गोरुओं पर हमला कर दिया। हमले का वह दृश्य बड़ा अजीब था। गायों ने गले की रस्सियां तुड़ा लीं। बछड़ों को बचाने के लि उन्होंने भेड़ियों से जो लड़ाई की वह अभूतपूर्व थी। बछड़े मारे भय के रंभाने लगे थे।

सुरेश बंदूक लेकर बाहर निकला। उसने देखा कि गायों ने भेड़ियों को एक कोने में घेर रखा है। सब बछड़ों को अपने बीच में करके वे अपने तेज सींग भेड़ियों की ओर ताने हुए खड़ी हैं। एक बछड़े की गर्दन भेड़ियों ने काट ली थी। वह बेचारा दम तोड़ रहा था। दो और बछड़ों की पूंछ जड़ से चबा डाली थी। सुरेश ने उस जत्थे में से छः को मार गिराया। बंदूक की आवाज से गायें भी भड़क उठीं। भेड़ियों को भागने का मौका मिला और वे सरपट भागे। सुरेश की बंदूक पीछे से आग बरसाती रही; मगर भेड़िये तब तक दूर घने जंगल की ओर भागकर गायब हो चुके थे।

सुरेश ने इन बचे-खुचे भेड़ियों को भी मारने की योजना बनायी। इस शिकार-यात्रा से दो बातें पूरी होनी थीं। एक तो यह कि बचे-खुचे सारे भेड़िये मारे जायेंगे और दूसरी यह कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुछ नया शिकार भी आसानी से मिल जायेगा। यों तो इस शिकार के लिए सुरेश अकेला ही काफी था; मगर उसने अपने छोटे भाई आनंद को भी साथ में लेना तय किया। आनंद ने अपने प्यारे शिकारी कुत्ते चीकू को भी संग ले चलने की इजाजत अपने भाई से ले ली। तय हुआ कि दूसरे दिन सुबह ही निकल पड़ेंगे। रात को ही शिकार के सारे सामान तैयार कर लिये गये। दूसरे दिन भोर में ही दोनों भाई घोड़ों पर सवार हो निकल पड़े। चीकू भी पीछे-पीछे जमीन सूंघता हुआ आगे बढ़ता चला।

आसमान में अभी रात का अंधेरा छाया था। पर दिन निकलने ही वाला था। घोड़े के खुरों से रास्ते की मिट्टी उड़ रही थी। रास्ता जितना ही आगे लंबा दीखता था, उतना ही पीछे भी छूटता जा रहा था। आनंद को अजीब-सा लगा कि जंगल में दिन के बजाय रात अधिक चुप लगती है, जबकि बहुत सारे जंगली जानवर रात को जागते हैं और दिन में सोते हैं।

दूर कहीं से उल्लू के चीखने की डरावनी आवाज आयी। हवा ठंडी थी, और जैसे हड्डियों में समा-सी रही थी। सुरेश ने सोच रखा था कि भेड़ियों की टोली को बहुत दूर से घेरकर मारा जायेगा। सो भी ऐसे कि भेड़ियों को गंध तक न मिले और उन पर अचानक ही हमला कर दिया जाये। दूर से ही निशाना लगाना अधिक अच्छा रहेगा।

सुरेश और आनंद घोड़ों पर मुस्तैदी से बैठे आगे बढ़ते रहे। जंगल में सलेटी रंग की रोशनी फैलने लगी थी। अभी सूर्य निकला नहीं था। आनंद ने महसूस किया कि वह जैसे रात और दिन के बीच एक सपनों की दुनिया में घूम रहा हो। सूर्य उगते ही जैसे वह जाग पड़ेगा। सुबह जरूर धुंधली होगी। क्योंकि धुंधलका भी फैल रहा था।

चलते-चलते वे घने जंगल से बाहर सनावरों से घिरे हुए एक खुले मैदान में आये। जिसके बीचों-बीच एक बहुत अच्छी तलैया थी। यहां पर अच्छा शिकार मिल सकता था। तलैया साफ़ और गहरी थी। उसका पानी जानवरों के लिए निश्चय ही स्वादिष्ट रहा होगा। तलैया के दो ओर दलदल था और दूसरी दो तरफ जंगल। दलदल की ओर से आनेवाले जानवरों को अगर जंगल की तरफ घेर लिया जाये, तो उनके लिए भागने का कोई दूसरा रास्ता नहीं मिलेगा। सुरेश ने घोड़े की लगाम कसकर खींची। घोड़ा रुक गया। आनंद ने भी घोड़े को रोका। दोनों उतर पड़े। भेड़ियों को जाल में लाने की सबसे उपयुक्त जगह यही थी।

पूरब में सुनहरी-सी रोशनी फीते के रूप में फैलनी शुरू हो गयी थी। चारों तरफ पतझड़ का धुंधलका छाया हुआ था। जमीन से कुछ ऊपर तक की शक्ल ही दिखाई दे रही थी। पहले-पहल तो यह लगा कि जैसे इस बड़े तालाब के इर्द-गिर्द कोई जानवर है ही नहीं; किंतु धीरे-धीरे इधर-उधर कुछ शक्लें दीखने लगीं। बहुत दूर पर एक बारहसिंगे का सींग दिखाई पड़ा। आनंद ने अपनी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धुंध उठायी, तो सुरेश ने उसे रोक दिया—"पहले भेड़ियों को मारना जरूरी है।" धुंधलके में दूर कुछ ठूंस-सी चीजें दिखाई पड़ रही थीं। मगर ताज्जुब है, ये ठूंठ तो हिल रहे थे। धुंधलका जब कुछ छंटा, तो मालूम हुआ कि वे ठूंठ नहीं, भालू हैं। छोटे-छोटे भालुओं का झुंड। कम-से-कम एक दर्जन होंगे। दो बड़े भालू भी थे, जो पीछे-पीछे चल रहे थे।

थोड़ी देर बाद धुंध और छंट गयी थी। पूरब की ओर रोशनी और तेज हो गयी। सुरेश ने इशारा किया, उत्तर और पश्चिम में कुछ हलचल हुई। भेड़ियों की शक्लें बहुत थोड़ी-सी दीख पड़ रही थीं। वे एक-एक करके कतार में चल रहे थे। चीकू की तेज नाक ने उन्हें सूंघ लिया और वह नथुने ऊपर उठाकर भौंकने लगा। सुरेश ने उसे थपथपाकर चुप कराया और वह जमीन पर बैठकर अपने मालिक के हुक्म का इंतजार करने लगा।

सुरेश ने फुसफुसाते हुए कहा—"ऐसा सुनहरा मौका फिर नहीं मिलेगा।" और उसने आनंद को भेड़ियों को घेरने की योजना बतायी—"सुनो, हममें से एक पूरब से होता हुआ दक्षिण की ओर उस दलदल के पार तक चला जाये। वहां से भेड़िये लौटने न पायें। फिर भेड़िये दलदल की तरफ भागेंगे नहीं। वे सीधे जंगल के रास्ते भागेंगे, जिधर मैं भरी हुई बंदूक लेकर तैयार रहूंगा। और भेड़ियों पर गोलियों की बौछार दोनों तरफ से हो। तुम जाओ। दक्षिण की ओर जंगलों के बीच में सामने तक चले जाओ। जब तुम सामने के उन ऊंचे चीड़ों तक पहुंच जाओ, वहां से दायीं ओर दलदल की ओर बढ़ना। ज्यों ही मुड़ो, एक हवाई निशाना भेड़ियों के जत्थे की ओर दाग देना। याद रखो, इन्हें मारने की कोशिश पहले नहीं करना। बस, अब चलो और तेजी से बढ़ो।"

आनंद ने घोड़े को एड़ लगायी और निकल पड़ा। उसे लगा, जैसे उसका दिल अपनी जगह से उछलकर कहीं और धड़कने लगा है। शायद यह धड़कन उसके गले तक बढ़ गयी थी। घोड़े पर बैठे-बैठे उसने अपनी कमर सीधी की और एक हाथ बंदूक की नली पर फेरा। अचानक उसने एक सख्ती अपने अंदर महसूस की। चीड़ों के पास पहुंचकर घोड़े को एकदम दायीं ओर मोड़कर उसे एड़ लगायी और फिर घोड़े को थपथपाकर ऊपर की ओर एक गोली दाग दी। दलदल का पानी चीड़ों के पास से बह रहा था। उसने देखा कि छोटे-छोटे भालू भी तितर-बितर हो गये हैं। उसके सामने सरकता हुआ भेड़ियों

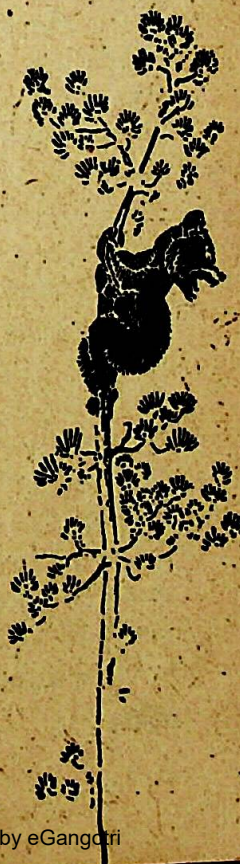

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का जत्था जैसे कुछ हिचकिचाया और जिस रास्ते आया था, उसी रास्ते पर लौटने के लिए तैयार हुआ कि आनंद ने फिर बंदूक उठाकर उस जत्थे की ओर एक गोली दाग दी। अब वे सारे-के-सारे एक साथ ही उछले और सरपट जंगल के उस हिस्से की ओर भागे, जिधर सुरेश बंदूक भरे बड़ी मुस्तैदी से निशाना साधे तैयार था।

तभी जैसे सारे जंगल में गोलियों की गड़गड़ाहट गूंज उठी। सुरेश और आनंद की भरी हुई बंदूकें गरजती रहीं और खाली होती गयीं, और सामने के रास्ते पर एक दर्जन से ज्यादा सलेटी रंग के भेड़िये मरे पड़े थे। दो-चार भेड़िये किसी तरह बच निकले। चीकू उनके पीछे बड़ी तेजी से भौंकता हुआ दौड़ा, तो सुरेश ने उसे वापस बुला लिया; क्योंकि सुरेश जानता था कि बिजली के समान तेज दौड़नेवाले ये भेड़िये अब कहीं रुकेंगे नहीं, भागते ही जायेंगे। वे अब कभी इधर लौटेंगे नहीं, बल्कि जंगल के किसी और प्रदेश में जा निकलेंगे, जहां बहुत संभव है किसी बड़े जानवर के तेज पंजों के शिकार बन जायें। जिधर भेड़िये भागे थे, उधर दूर बाघ और चीतों का निवास था।

आनंद ने इस बीच जैसे उत्तेजित होकर कहा—"भैया देखो, उन छोटे-छोटे भालुओं ने क्या किया है? वे पेड़ पर चढ़ गये हैं। क्या हम उन्हें जिंदा नहीं पकड़ सकते? हम उन्हें शहरों में बेचेंगे, तो खासी अच्छी रकम मिलेगी। भालू के दो-तीन बच्चे पेड़ पर नहीं चढ़े थे। शायद उनकी मां नहीं थी। इसीलिए शायद उन्हें जंगल का नियम-कानून मालूम नहीं था। वे तीनों अपनी कमर के बल बैठे हुए थे और चिल्ला रहे थे। उन तीनों ने भागने की कोशिश भी नहीं की। सुरेश ने उन तीनों को बांध दिया और रस्सी को एक ऊंचे चीड़ के पेड़ से बांध दिया। कुछ बच्चे छोटी शाखाओं पर चढ़े बैठे थे। शाखाओं को हिलाकर उन्हें गिराया जा सकता था। उनमें से केवल दो ही एक बड़े पेड़ पर बहुत ऊंचे चढ़ गये थे। सुरेश और आनंद ने सबको पकड़ने की कोशिश की। दो बड़े भालू-बच्चों ने जीवित पकड़े जाने से पहले बहुत लड़ाई की। वे चुस्त और काफी वजनी थे। पता नहीं, क्या समझकर सुरेश ने उन दोनों को गोली से उड़ा दिया।

जीवित कुल दस बच्चे पकड़े गये। आनंद पास जाकर उन बच्चों से बात करने लगा। उन्होंने अपने नुकीले नथुने ऊपर उठाये और उसे सूंघने लगे। वे पिछले पांवों पर खड़े हो गये। आनंद और करीब गया और एक को छूने के लिए अपना हाथ बढ़ाया। उस भालू के बच्चे ने अपने तेज जे उसकी आस्तीन पर बढ़ा दि। आनंद पीछे उछला। सुरेश ने उसे डांटा और फिर बोला—"आनंद, अब आगे चलना है। कुछ और शिकार कर लें, फिर घर वापस लौटा जाये। तब तक तुम उबले हुए आलू खाकर थोड़ा सुस्ता लो। जब आगे सोता मिलेगा, तो भरपेट पानी भी पी लेना।"

आनंद ने उबले हुए आलुओं को छील-छीलकर खाना शुरू किया। और कुछ देर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न भी खाये। थर्मस में बचे हुए पानी से प्यास बुझायी। थकान चुकने के बाद वे घोड़ों पर चढ़े और आहिस्ता-आहिस्ता चल पड़े। हाथ में वह रस्सी कसकर पकड़े रहा, जिससे भालू के बच्चे बंधे थे। बच्चे पहले तो आना-कानी करने लगे, मगर बाद में चीकू की एक तीखी और जोरदार भौंक ने उन्हें ठीक कर दिया और वे सब पालतू बिल्लियों की तरह पीछे-पीछे चलने लगे।

उसने नन्हे भालुओं को रस्सी से बांध दिया।

सुबह का धुंधलका समाप्त हो चुका था। धूप जैसे उनके कंधों पर एक लंबी गर्म बांह के रूप में लेट गयी। सूर्य की तेज किरणें जंगल से ऐसे छनकर निकल रही थीं, जैसे बड़े काले पेड़ों में आग लग गयी हो। सनातर भी चमकने लगे थे। आस-पास के फूलों की सुगंध चारों ओर भर गयी। जंगली पक्षी उड़ने लगे थे। आनंद को लगा, इन पक्षियों के डैने तो नीलकंठ की अपेक्षा अधिक सुंदर थे। अब वे दोनों जिस पगडंडी पर बढ़ रहे थे, वह जल-स्रोत को जाती थी। स्रोत के पास पहुंचकर सुरेश ने घोड़े की लगाम खींच ली। स्रोत से बहुत साफ और नीला पानी निकल रहा था। तूफान से उखड़ा हुआ एक पेड़ स्रोत के आर-पार पड़ा था और सामने के तट पर एक मगरमच्छ के ताजे निशान पड़े हुए थे। नीचे का कीचड़ घना हो गया था। यहां जाकर वह मगरमच्छ लोट-पोट हुआ था।

सुरेश अपनी एड़ियों पर बैठ गया और एक झाड़ी के पीछे छिप गया। आनंद भी उसके पीछे बैठ गया। घोड़े, भालू के बच्चे और कुत्ता उत्सुकता में भरकर चुपचाप खड़े रहे। सुरेश ने अपनी बंदूक भर ली थी।

तभी में पानी में फिर से कुछ हलचल हुई। सामने एक लट्ठा-सा दीख रहा था। वह कुछ ऊपर उठा। इसके एक किनारे पर दो मोटी गांठें-सी थीं। वह ८ फुट लंबा मगरमच्छ था, और गांठें उसकी भारी पलकोंवाली आंखें थीं। वह पहले तो छिप गया, फिर अपने चौथाई शरीर के साथ उठकर किनारे तक आ गया। यहां से वह उसी पुरानी राह पर धीरे-धीरे बढ़ा; अपने छोटे-छोटे पांवों पर शरीर को आगे-पीछे करता हुआ बढ़ने लगा और फिर अपनी पूंछ को झटकारते हुए शांत होकर पड़ गया।

सुरेश ने बहुत सावधान होकर निशाना साधा। आनंद ने सुरेश को रीछ या हिरन के लिए भी कभी इतना सावधान होते नहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

केवल 8 शब्द किन्तु कितने महत्वपूर्ण

ग्वालियर सूटिंग

"अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त सूटिंग"

NPB/GR - 838

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देखा था। उसने गोली दाग दी। उसकी लंबी पूंछ बहुत जी से उठी और गिरी, फिर थोड़ी देर बाद एकदम ही उसका शरीर कीचड़ में धंस गया। सुरेश ऊपर की ओर दौड़ता हुआ भागा। शिकार के चौड़े जबड़े खुद बंद हो रहे थे और खुल रहे थे। सुरेश ने उन जबड़ों को बंद किया और उनके दो सामने के पांवों को पकड़ लिया। कुत्ता बहुत उत्तेजित होकर भौंक रहा था। आनंद ने भी पकड़ा और दोनों ने मिलकर उसे घसीटा और किनारे पर खींच लाये।

फिर वे उसकी पूंछ का मांस काटने में जुट गये। वह हिस्सा कुत्तों को बड़ा स्वादिष्ट लगता है। सुरेश ने फिर खाल पटकी और उसकी चर्बी उतारने लगा। खाल उतार चुकने के बाद वे दोनों अपनी पीठों के बल आराम से लेट गये। मैग्नोलिया का पेड़ हिल रहा था। उसके पत्तों का निचला हिस्सा तांबे जैसा लाल था। अचानक चीकू भौंक उठा। पता नहीं उसने क्या सूंघ लिया था। वह बेतरह भौंके जा रहा था और फिर अचानक जमीन सूंघता हुआ एक ओर बढ़ चला।

सुरेश ने झुककर देखा और कहा—"यह बहुत ही ताजा निशान किसी बारहसिंगे का है। चीकू को बुलाओ मत। उसे पीछा करने दो।" चीकू की पूंछ बराबर हिल रही थी। उसकी नाक जमीन पर लगी रही और वह तेजी से आगे बढ़ता रहा। फिर नाक उठाकर तेजी से भागा, जैसे उसे हवा से ही गंध मिल गयी थी। चीकू अचानक एक जगह रुका, मुड़कर चीखने लगा। सुरेश ने कहा—"बस, पास ही है। जरूर वह सामने के इस घने झुरमुट में ही लेटा हुआ है।"

सुरेश उस झुरमुट तक चीकू के पीछे-पीछे गया। वह भौंकता रहा। एक विशालकाय बारहसिंगा अपने घुटनों पर खड़ा होकर जोर से लपका। उसके सींग पक चुके थे। डरकर भागने के बजाय, वह सींगों को सामने निशाने-सा साधे कुत्ते की ओर लपका। उसके पीछे एक बिना सींगोंवाली हिरनी थी। बाढ़ आ जाने के कारण हिरनों के जोड़ों को मिलने का मौका नहीं मिला था। यह बारहसिंगा जोड़ी बांध रहा था। इसीलिए वह भागा नहीं, और लड़ने के लिए तैयार हो गया। बारहसिंगा बिफरे बैल की तरह जमीन खोदने लगा और अपने सींग हिलाने लगा।

चीकू ने चालाकी से काम लिया और तेजी से उसकी गर्दन पर जा टूटा। बारहसिंगे ने भी उसे अपने सींगों पर उठा लिया और पास की झाड़ियों में बड़े जोर से पटक दिया। अगर चीकू फुर्ती से उठ नहीं जाता, तो बारहसिंगे के नुकीले सींग उसकी अंतड़ियों को चीथड़ा बना देते। हिरनी झाड़ियों में गुम हो गयी थी। चीकू तेजी से हमला कर रहा था, मगर बारहसिंगा बड़ा मुस्तैद था। उसने फिर अपने नुकीले सींगों से हमला किया और तब जैसे कुछ खोजता हुआ सींग नीचे करके एक कोने में खड़ा हो गया। हिरनी कहीं दिखाई नहीं पड़ी। बारहसिंगा जैसे पागल हो रहा था और इसके पहले कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चौकड़ियां भरता हुआ वह झाड़ियों में गुम होता, सुरेश ने गोली दाग दी– "बूढ़े दोस्त, मुझे तुम्हें मारते हुए दुःख होता है।"

बारहसिंगा गिर पड़ा था। एक क्षण के लिए उसने पांव चलाये और फिर शांत हो गया। चीकू जीत की खुशी में बहुत लंबी और तेज आवाज में चीखा। सुरेश ने कहा– "आज से एक महीना बाद, यह सुंदर और कद्दावर बारहसिंगा बिलकुल दुबला-पतला हो जाता और इसका मांस दुर्गंधित हो जाता। क्योंकि पूरे महीने यह जंगल में जोड़ी बांधता फिरता।"

सुरेश और आनंद बारहसिंगे को उठाकर घोड़े पर लाद लिया और घर की ओर चल पड़े। साथ में था भालू के बच्चों का जुलूस। पीछे से चीकू अपना गर्वीला सिर उठाये चल रहा था। सुरेश और आनंद के चेहरे पर तृप्ति और खुशी झलक रही थी। गांव में उन लोगों का स्वागत होगा। भोज होगा और फिर खुशियां मनाई जायेंगी।

★

सुशासन की बुनियाद

"आचार्य, सुशासन का लक्षण क्या है?" एक चीनी ज्ञानी से त्सु निङ ने पूछा।

"वत्स! जिस देश का शासक शक्ति-संपन्न हो, वहीं सुशासन संभव है।"

"हां, लेकिन शासन शक्ति-संपन्न कैसे होगा?"

"उसके लिए तीन बातें मुख्य हैं। एक, प्रजा को खाद्यान्न का अभाव महसूस न हो। दो, जरूरी शस्त्रास्त्रों की कमी न खटके। तीन, प्रजा शासन और शासक पर अटूट विश्वास रखे। वह शासन हिलाये नहीं हिलेगा, डुलाये नहीं डुलेगा।"

"अच्छा, इन तीनों में से किसी एक को छोड़ना ही पड़े तो किसे छोड़ा जाये?"

"शस्त्रास्त्रों को त्यागा जा सकता है।"

"शेष दो में से भी किसी को छोड़ना पड़े?"

"अन्न को तजा जा सकता है!

"क्यों?"

"क्योंकि आदिकाल से मनुष्य की मृत्यु सर्वथा निश्चित है। उससे आदमी पार नहीं पा सकता। खाद्यान्न के अभाव से कुछ लोग मर जायें, तो उससे कुछ बनने या बिगड़नेवाला नहीं है। पर प्रजा का भरोसा टूट जावे, तो शासन स्थिर नहीं रह सकता! डांवांडोल होकर विनाश के गर्त में गिर जायेगा।"

"तो शासन का लक्ष्य क्या हो?"

"शासन का लक्ष्य प्रजा के हित को छोड़ और कुछ हो ही नहीं सकता। प्रजा को सुखी देखना ही शासन का लक्ष्य होना चाहिये। शासक को यह याद रहना चाहिये कि शासन जनहित के लिए है, न कि शासन करने के लिए!"

—रा० बीलिनाथन्

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कितनी है अक्ल घोड़े में

वान्स पैकार्ड

यह एक आम धारणा है कि घोड़ा अन्य जानवरों के मुकाबले में बहुत बुद्धिमान जानवर है। उसकी बुद्धि असाधारण समझी जाती है। यह भी कहा जाता है कि घोड़ा बहुत ही व्यावहारिक ज्ञान और विवेक से संपन्न प्राणी है। इसीलिए अंग्रेजी में व्यावहारिक विवेक-बुद्धि को 'हार्स सेंस' कहा जाता है।

क्या यह धारणा सच है? पिछले पचास-साठ साल से वैज्ञानिक इस धारणा के संबंध में खोजबीन कर रहे हैं, और उन्होंने ऐसी अनेक बातों का पता लगाया है, जो हैरान करनेवाली हैं।

क्लेवर हान्स नाम के एक घोड़े के बारे में मशहूर था कि वह आदमी की बातें समझ सकता था। उससे ज्यादा बुद्धिमान घोड़ा शायद ही और कोई रहा हो। उसके मालिक का कहना था कि वह सिर्फ जोड़ और बाकी ही नहीं, बल्कि और भी कई तरह के हिसाब कर सकता था। वह उसे बोलनेवाला घोड़ा कहता था —इस अर्थ में कि वह आदमी की बातें समझकर उनका अपने ढंग से जवाब दे सकता था। जर्मन भाषा में बोलकर या लिखकर पूछे गये गणित के प्रश्नों को क्लेवर हान्स पूरी तरह समझ लेता था, जैसा कि उसके उत्तरों से पता चलता था।

और जवाब देने का उसका तरीका यह था कि वह धरती पर अपने अगले पैरों के खुरों से टाप देता। किसी राशि की इकाई बतानी हो, तो वह अपने दायें खुर से उतनी ही टाप देता, और दहाई का अंक बताने के लिए बायें खुर से। जैसे किसी सवाल का जवाब ४३ हो, तो क्लेवर हान्स बायें खुर से चार बार और दायें खुर से तीन बार टाप देता।

अगर हान्स को कोई वाक्य बोलना होता, तो वह उसके हिज्जे के अनुसार प्रत्येक अक्षर के लि. निर्धारित संख्या में खुरों की टाप

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देता। उसे पता था कि किस अक्षर के लिए कितनी बार टाप देनी चाहिये। यह ढंग लगभग वैसा था, जैसा कि डाकखाने में तार देने में प्रयुक्त होता है।

पूरे जर्मनी में हान्स की चर्चा होने लगी थी। आखिर कुछ वैज्ञानिकों को उसका अध्ययन करने के लिए कहा गया। उसका मालिक जहां भी उसके करतब दिखाता, वैज्ञानिक उसे बड़ी सूक्ष्मता से देखते और यह पता लगाने की कोशिश करते कि आखिर यह घोड़ा किस प्रकार आदमियों की तरह सोच और समझ सकता है।

एक वैज्ञानिक को सूझा कि हान्स से सवाल पूछने के तरीके में थोड़ा परिवर्तन करके देखा जाये। उसने कहा कि जो सवाल पूछना हो, वह एक कागज पर लिखकर हान्स को दिखाया जाये; परंतु उसके मालिक को यह न पता चले कि कागज पर क्या लिखा हुआ है। क्या तब भी हान्स उसे पढ़कर सही जवाब दे पायेगा ?

जब ऐसा किया गया, तो हान्स की सारी बुद्धिशक्ति जैसे काफूर हो गयी। वह किसी सवाल का जवाब न दे पाया। यहां तक कि दो और दो का जोड़ करने में भी वह असफल रहा।

लेकिन जब मालिक ने कागज पर लिखे हुए वही सवाल खुद पढ़कर उसे कागज दिखाते हुए, उससे पूछे तो हान्स ने सही जवाब दे दिया।

अब वैज्ञानिकों को असलियत का पता लगने से न रहा।

यद्यपि हान्स का मालिक जान-बूझकर उसे कोई संकेत नहीं देता था; पर कुछ संकेत हान्स को मालिक से मिलते जरूर थे, जिनकी बदौलत वह सही जवाब दे पाता था। कुछ पूछे जाने पर जब हान्स टाप देने लगता, तो उसके मालिक का शरीर तन जाता और वह टापों को गिनता हुआ निश्चल खड़ा रहता, और जब घोड़ा सही जवाब के लिए आवश्यक संख्या में टाप दे चुकता, तो एकाएक मालिक के शरीर का तनाव दूर हो जाता और घोड़ा टाप देना बंद कर देता। तो उसके टापों का संबंध मालिक के शरीर की तनाव मुक्त और शिथिल अवस्था से था।

बाद में अध्ययन करने पर पता लगा कि घोड़े को उन बातों का कुछ भी ज्ञान नहीं था, जो उससे पूछी जाती थीं। यह धारणा गलत निकली कि क्लेवर हान्स विलक्षण और असाधारण बुद्धि का घोड़ा है।

इसी प्रकार का एक और घोड़ा भी मशहूर था, जो बड़ी तेजी से कुछ ही दिनों में गणित के कठिन-से-कठिन सवाल हल करने लगा था। पर उसका भी अध्ययन करने पर पता लगा कि वह उन्हीं सवालों के जवाब दे सकता था, जिनका उसके मालिक को ज्ञान होता था। जब भी उसे कागज पर कुछ लिखकर दिखाया जाता, वह टाप देने लगता। वैज्ञानिकों की तीखी नजरों ने यह भी देखा कि कई बार वह कागज की ओर देखे बिना ही टाप देने लगता था। और फिर, वह जितनी जल्दी एक और एक का जोड़ बता सकता था, उतनी ही जल्दी २१६

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का धनमूल भी बता सकता था।

अमरीका में भी इस किस्म के विलक्षण बुद्धिवाले घोड़े पाये गये हैं, जो घड़ी देखकर समय बता सकते हैं, कई भाषाएं पढ़ सकते हैं, यहां तक कि किसी व्यक्ति के मन की बात भी बता सकते हैं। उन सबका अध्ययन करने पर भी यह बात सामने आयी कि वे किसी भी बात का सही जवाब तब तक नहीं दे पाते थे, जब तक कि उनके मालिक उस जवाब से परिचित न हों।

उड़न-घोड़ा—असीरियाई शिल्प

इस प्रकार के घोड़ों के विषय में विशेष अध्ययन करनेवाले सिद्ध मनोवैज्ञानिक थार्नडाइक का कहना है कि ऐसे घोड़े तभी खुर उठाकर टाप देते हैं, जब उन्हें किसी प्रकार की उत्तेजना दी जाये। अधिकांश घोड़ों के मालिकों ने उन्हें प्रयत्नपूर्वक इस प्रकार का अभ्यास कराया होता है कि वे मालिक से विशेष संकेत पाकर ही टाप देना शुरू करते हैं और एक खास स्थान पर आकर टाप देना रोक देते हैं।

वैज्ञानिकों ने घोड़ों का अध्ययन करने के बाद जो परिणाम निकाले हैं, वे आम प्रचलित धारणा के बिलकुल विपरीत हैं। वस्तुतः घोड़ा विशेष बुद्धिमान प्राणी नहीं है; और उसमें किसी प्रकार की असाधारण बुद्धि तो पायी ही नहीं जाती। जानवरों की बुद्धि को परखने के लिए किये गये विविध प्रयोग बताते हैं कि घोड़ा अन्य जानवरों के मुकाबले में बहुत ही कम बुद्धि रखता है।

परीक्षणों से यह भी प्रमाणित होता है कि गधा, जिसे हम आम तौर पर मूर्खता का प्रतीक समझते हैं, घोड़े के मुकाबले में अधिक बुद्धिमान जानवर है। होशियार-से-होशियार घोड़ा भी साधारण गधे के मुकाबले में मूर्ख पाया गया है।

विभिन्न जानवरों की बुद्धि परखने के लिए वैज्ञानिकों ने एक प्रयोग किया। एक गोल चहारदीवारी में चार दरवाजे लगाये गये। दीवार के दूसरी ओर उन जानवरों की पसंद का भोजन रखा गया। चार दरवाजों में से एक दरवाज़े की कुंडी नहीं लगायी गयी, ताकि जानवर उसमें से होकर खाने तक पहुंच सके। अब देखना यह था कि क्या जानवर सौ बार के प्रयत्न के बाद पता लगा सकता है कि उन चारों दरवाजों में से कौन-सा खुल सकता है, जिसमें से होकर वह भीतर रखे भोजन तक पहुंच सकेगा।

इस प्रयोग में बंदरों ने सबसे ज्यादा बुद्धिमान होने का सबूत दिया। उसके बाद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुत्ते और फिर बिल्लियां बुद्धिमान साबित हुईं। घोड़ों का नंबर सबसे बाद रहा। घोड़ा ही एकमात्र ऐसा जानवर था, जो बार-बार एक ही दरवाजे को धक्का देता था।

कुछ वैज्ञानिकों ने घोड़ों और गायों की बुद्धि परखने के लिए प्रयोग किये थे। इनमें घोड़े गायों से कम बुद्धिमान साबित हुए।

घोड़े की इस मंद बुद्धि के पीछे कई कारण हैं। प्रकृति ने कुत्ते और बिल्ली को शिकारी जानवर बनाया है, जबकि घोड़ा स्वयं ही शिकार होनेवाला जानवर है। इसी अंतर के कारण घोड़े का स्वभाव कुत्ते-बिल्लियों के स्वभाव से भिन्न है। यही कारण है कि उसकी आंखों की स्थिति कुत्ते-बिल्लियों की आंखों से भिन्न है। कुत्तों व बिल्लियों की दृष्टि द्विनेत्रीय (बाइनाक्युलर) है, जैसी कि मनुष्यों की है। उनकी आंखें सिर के आगे के भाग में होती हैं, जिससे दोनों आंखों की नजर एक साथ किसी चीज पर पड़ती है। इसलिए उनकी दृष्टि अधिक सूक्ष्म होती है।

पर घोड़ों की आंखें सिर के दो पार्श्वों में होती हैं। यही बात हिरन आदि शिकार किये जानेवाले अन्य जानवरों पर भी लागू होती है। इसकी बदौलत वे दुश्मनों से बचने के लिए ज्यादा विस्तृत क्षेत्र में देख सकते हैं। परंतु उनकी दृष्टि उतनी सूक्ष्म नहीं होती। क्योंकि एक वस्तु को वे एक समय में एक ही आंख से देख सकते हैं, एक साथ दोनों आंखों से नहीं।

जब घोड़ा जंगली जीव था, तब शिकारी के हमले के डर के कारण भागने के लिए तैयार रहता था। हिरन या बारहसिंगे की तरह अपने बचाव के लिए उसके पास सींग तक नहीं थे। सो हर समय भाग खड़े होने की आवश्यकता और कम सूक्ष्म दृष्टि के कारण घोड़ा चंचल और भड़कीले स्वभाव का प्राणी बन गया।

घोड़ा देखने में बहुत सुशील लगता है। उसकी सवारी भी बहुत आरामदेह होती है। वह बड़ा आज्ञाकारी होता है। पर स्वभाव से बहुत बेचैन जानवर है, जो जरा-जरा-सी बात पर चौंककर घबरा उठता है।

यदि किसी अस्तबल में आग लग जाये, तो घोड़े को वहां से बाहर ले जाने के लिए उनकी आंखों पर कपड़ा बांध देना पड़ता है। इसके विपरीत गाय बिना विशेष घबराहट के जलती गोशाला में से निकलकर बाहर चली जायेगी। एक बार तीस घोड़ों को जलते अस्तबल में से बड़ी सावधानी और कठिनाई से निकालकर बाहर अहाते में लाया गया। पर गलती से उन्हें वहां खुले छोड़ दिया गया। फिर क्या था उनमें से कई फिर धूं-धूं करके जलते अस्तबल की ओर दौड़ पड़े।

घोड़े के मुकाबले में खच्चर ज्यादा अक्लमंद साबित हुआ है। खासकर खाने-पीने के मामले में। खच्चर वही कुछ खायेगा, जिसकी उसे जरूरत है। पर अधिकांश घोड़े जरूरत से ज्यादा चारा खा लेते हैं, या प्यास से ज्यादा पानी पी लेते हैं।

बेशक घोड़ा सुशील, सुंदर और उपयोगी जानवर है; पर इसका यह मतलब नहीं है कि वह बुद्धिमान जानवर भी है।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बंगला कहानी :

स्वर्णहार

नारायण गंगोपाध्याय

गली से ही हिमांशु घोषाल की आवाज सुनाई पड़ रही थी। रसोईघर में बैठी गौरी सब स्पष्ट सुन रही थी। गली में लैंप-पोस्ट के नीचे खड़ा-खड़ा हिमांशु किसी से कह रहा था—"मेरे हक का रुपया मार लेगा! छाती पर चढ़कर अगर सब रुपया वसूल नहीं कर लिया, तो मेरा नाम हिमांशु घोषाल नहीं!"

गौरी रसोईघर में तिलचट्टों पर गर्म मांड डालकर उन्हें भगा रही थी, मगर कान हिमांशु की तरफ लगे थे।

"हजार रुपये पानेवाले और ऐसे मोटर-वाले मैंने बहुत देखे हैं; कलकत्ते में आज बारह वर्षों से लोगों को चराकर खा रहा हूं, कोई खेल नहीं। छाती पर चढ़कर अगर रुपया वसूल नहीं किया तो....."

मगर गौरी जानती है, हिमांशु की दौड़ कहां तक है। अधिक-से-अधिक दरवाजे पर बैठकर जोर-जोर से अश्लीलतम भाषा में गाली-गलौज करेगा और फिर एक दिन सब भूल जायेगा। बगल में छाता दबाकर निकलते समय गौरी को आश्वासन देता हुआ कहेगा—"अरे, घबराने की क्या बात है? अढ़ाई सौ रुपये का फ्लैट है, कमीशन में पूरे एक महीने का भाड़ा मिलेगा, अगर किसी तरह असामी फंसा सका, तो एक महीना आराम से चल जायेगा। क्या कहती हो, ऐं?"

भात की हंडी उतारकर गौरी ने चूल्हे पर कड़ाही चढ़ा दी। हिमांशु की आवाज अब सुनाई नहीं पड़ रही थी। हो सकता है, मन-ही-मन रुपया वसूल करने की योजना बना रहा हो या बात करते-करते बड़े रास्ते की तरफ निकल गया हो। इसी बीच में कड़ाही से छिटककर दो बूंद गर्म तेल हाथ पर पड़ा। गौरी ने मुंह विकृत कर अपने हाथ की ओर देखा। मगर रसोईघर के धुएं से मैले हो गये बल्ब की मैली रोशनी में अपना हाथ देखकर जलन की यंत्रणा भूल गयी—देर तक मुग्ध दृष्टि से उस देखती रह गयी।

बराबर साबुन नहीं लगाती, अच्छी तरह नियमित स्नान भी नहीं कर पाती, तब भी उसके पुष्ट गोरे हाथों पर मलिनता की छाया तक नहीं है। एकदम साधारण कांच की चूड़ियां और एक जोड़ी शंख-चूड़ी में ही उसके हाथ किसी महारानी के हाथों की तरह दीख रहे थे। गौरी सिर्फ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपनी ही आंखों में महारानी नहीं है, हिमांशु भी कई बार कह चुका है—"अच्छा ही हुआ कि तुम्हारी शादी मुझसे बहुत छोटेपन में ही हो गयी, नहीं तो इतनी रूप-माधुरी लेकर तुम क्या मेरी ओर ताकती भी ? मेरी किस्मत पर लात मारकर किसी महाराजा-धिराज का घर बसाती ।"

कलकत्ते में हिमांशु का व्यवसाय दलाली का था । मकान और जमीन की दलाली । निस्संदेह बहुत परिश्रम करता था हिमांशु । सुबह ही बगल में छाता लेकर निकलता था और उसके बाद मटिया बुरुज से बड़ानगर, बाली से बैरकपुर तक सारा कलकत्ता शहर छान मारता था । कहां मकान बिक रहा है, सस्ते में दक्षिण की तरफ तीन कड़ा जमीन कहां बिकने के लिए खाली है, कहां नये फ्लैट बन रहे हैं, हिमांशु को सब खबर पड़ती है । मकान और जमीन-बिक्री के मामले में हिमांशु जैसे 'एन्साइक्लोपीडिया' है ।

"क्या कहा, सर ? हावड़ा रोडवाली जमीन ? वही जो बैरिस्टर घोष के लाल-ग के मकान से लगी है ? कभी भूलकर भी नहीं लीजियेगा । बहुत झमेलेवाली जमीन है । खरीदेंगे तो खून-पसीने की कमाई तो जायेगी ही, तिस पर भी झमेला । भयंकर 'लिटिगेशन' में पड़ेंगे, कहे देता हूं । व्यर्थ में वकील-एटर्नी को भी रुपये देने पड़ेंगे, इससे अच्छा जेठामल-भोजमल का मकान ....."

अथवा.....

"जानता हूं, जानता हूं सर ! छातू चक्रवर्ती लेनवाले दोनों फ्लैटों की बात ही कह रहे हैं, न ? उसका मालिक है हरे राम । कैनिंग में मछलियों की आढ़त है । मकान का चार्ज उसके मैनेजर कृष्णपद साहू के हाथ में है । मगर वह मैनेजर बड़ा..... बड़ा हरामी है, सर ! उसे आप नहीं पटा सकते । वह तो, हो सकता है, आपसे मिले ही नहीं । मगर सर, यह भार आप मुझ पर छोड़ दीजिये, देखियेगा, मैं सब मैनेज कर लूंगा । एक सिगरेट सुलगाकर लूंगा और बोलूंगा—केस्टोदा, वह मकान मुझे चाहिये ही । बस ! और अधिक बोलने की जरूरत नहीं। आप लोगों के आशीर्वाद से यह हिमांशु घोषाल ....."

सब लोगों से यह आशीर्वाद पाना सहज काम नहीं है । वकील और एटर्नी के आफिस में दौड़-धूप । जिस मुवक्किल के मन में दुविधा या आशंका हो, उसे घंटों लेक्चर पिलाकर दुरुस्त करना, 'ट्रांजेक्शन' के समय दोनों पार्टियों को कोर्ट में हाजिर करना, यहां तक कि कागज पर किसी ने कहीं गलत स्थान पर तो हस्ताक्षर नहीं किये हैं यह भी खयाल रखना, यानी हिमांशु को सब कुछ करना पड़ता और फिर सबके अंत में उसका ही अपना काम बाकी रह जाता—कमीशन का रुपया वसूल करना।

कोई तुरंत कमीशन की पूरी रकम दे देता, कोई छः-छः महीने दौड़ाता। और कोई-कोई जब एकदम फांसी देने की सोचता तो बीच रास्ते पर खड़ा होकर अश्लीलतम भाषा में हिमांशु गाली-गलौज करता-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"देख लूंगा, देख लूंगा ! छाती पर चढ़कर अगर रुपया वसूल नहीं किया तो फिर मेरा नाम!....."

लेकिन रुपये बहुतों से वसूल नहीं हुए और हिमांशु ने उनके लिए अपना नाम भी नहीं बदला। कुछ दिनों तक गाली-गलौज करता, बैठा-बैठा कई बीड़ियां फूंक जाता और जब अपनी ही विष-यंत्रणा में जलता हुआ अकारण गौरी को मारने दौड़ता, तो उसका आश्चर्यजनक सौंदर्य उसे सम्मोहित कर लेता और वह मंत्रशांत सांप की तरह ठिठक जाता—स्तब्ध, निर्विकार। फिर दूसरे ही क्षण बगल में छाता दबाकर निकल जाता—"बेले घाटा में एक मकान बिकने-वाला है, देर होने से कहीं वह हाथ से निकल न जाये।"

सुबह आठ बजे का निकला हिमांशु बारह-बारह बजे रात को लौटता। कभी-कभी दिन को १२ बजे या १ बजे घर आकर एक-आध कौर भात खा लेता। उसके लिए छुट्टी नाम की चीज नहीं थी। और जब तक वह एक-आध दिन बीमार-वीमार न पड़ जाता, इस नियम में कोई व्यतिक्रम नहीं होता। धूप में कुम्हलाकर, वर्षा में भीगकर और जाड़े में ठिठुरकर हिमांशु का कुत्सित चेहरा और अधिक कुत्सित हो गया था। इतनी मेहनत-मशक्कत के बाद भी उसकी छोटी-सी गृहस्थी की गाड़ी नहीं चलती। बीच-बीच में हिमांशु शराब पीकर घर लौटता। उसे रेस खेलने का भी नशा हो चला था। जिस दिन अधिक हारता, उसके

चित्र : ओके

मुंह से निकलती हुई दुर्गंध गौरी को बता देती। और बहुत रात तक हिमांशु फफक-फफककर रोता रहता।

गौरी उसके सामने से हट जाती। काकी सीढ़ियां चढ़कर जीर्ण एकतल्ले से मकान की छत पर आ जाती। पास ही सटा हुआ एक तीनतल्ला मकान था। यह मकान मल्लिकों का था। दोतल्ले की खिड़की में से बत्ती जलने की आवाज आती। और खिड़की में जो आकर खड़ा होता, उसे गौरी बहुत स्पष्ट देखती। उसका सोने का चश्मा कैसा झलकता रहता! रह-रहकर सिगरेट की आग जल उठती।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खड़ी-खड़ी गौरी हिमांशु की बातें सोचती। दिन-ब-दिन हिमांशु और स्थूल और कर्कश होता जा रहा है। बीच-बीच में जब वह उससे प्यार-दुलार करने की चेष्टा करता, उस समय उसका स्पर्श गौरी के मन में बड़ी तपिश पैदा करता। हिमांशु की उंगलियों को देखकर लगता जैसे किसी बड़े मकड़े के पैर हैं। अंधकार में भी गौरी अपने सुडौल गोरे हाथों को देखती। इन्हीं हाथों से अपना गला दबोच लेने की इच्छा होती।

खिड़की में कुछ देर तक आग का स्फुलिंग जलता रहता। वह आदमी, लगता है, एक सिगरेट और सुलगा रहा है। हठात् गौरी को अनुभव होता—जलती हुई रोशनी की बूंदें और यह घुएं-सा घुटन पैदा करनेवाला अंधकार जैसे एक विराट जाल की तरह उसे घेर रहे हैं। असह्य गर्मी, घुटन से गौरी की सांस अटकने लगी। अस्थिर-सी वह नीचे उतर आयी।

कमरे में घुड़-मुड़कर कुत्ते की तरह हिमांशु पड़ा था। गौरी बार-बार अपनी हथेली आंखों के सामने लाकर जैसे भाग्य-परीक्षा करती, रेखाएं पढ़ती, और फिर अपने हाथों की तरफ मुग्ध दृष्टि से ताकती रह जाती।

× × ×

गौरी चौंक उठी। भीतर तरकारी जलने की गंध और बाहर दरवाजे पर जोर का धक्का। गौरी ने उठकर दरवाजा खोला। भीतर पैर रखते ही हिमांशु झल्ला उठा—"सो रही थी क्या? मैं कब से चिल्ला रहा हूं।"

"सो क्यों जाऊंगी? तुम्हारा चीत्कार तो दूर रास्ते से ही सुनाई पड़ रहा था।"

बगल का छाता भीतर फेंककर हिमांशु दरवाजे पर ही बैठ गया और बड़बड़ाने लगा—"ओह, बड़ा आदमी! ऐसे ढेर-सारे बड़े आदमियों को देखा है हिमांशु घोषाल ने। पहले अपने मुंह से ही बोला—टू पर सेंट, और अब काम खत्म होने पर कहता है—एक सौ रुपया बख्शिश दे रहा हूं, मिठाई खाना। बख्शिश! मैं नौकर हूं या दरबान, जो बख्शिश लूंगा? बड़ा आदमी! साला! सूअर का....." बीड़ी फूंकते-फूंकते दो-चार गालियां और सुना डालीं।

गौरी रसोईघर की तरफ जा रही थी, पता नहीं क्या सोचकर फिर लौट आयी।

"मैं एक बात कहूं?"

स्वगतोक्ति में बाधा पड़ने से हिमांशु झल्लाया और भौंहों पर बल देकर बोला—"तुम्हें क्या हुआ?"

"दूसरे लोगों के लिए तो जमीन-मकान ढूंढ़ते-फिरते हो, अपने लिए कुछ नहीं कर सकते क्या?"

हिमांशु ने हाथ की बीड़ी जो फेंकी, तो सामने चहबच्चे में जाकर गिरी। कर्कश स्वर में बोला—"अरे, चेष्टा क्या कम करता हूं, तुम समझती हो। मौका पाकर जब ठीक जगह पर हाथ मारूंगा, तब देखना। न्यू अलीपुर अथवा पार्क सर्कस....."

गौरी के ओंठों पर छुरी की तीक्ष्ण धार की तरह एक बंकिम हंसी खेल गयी—"राजप्रासाद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की बात अभी छोड़ो कम-से-कम एक अच्छे घर की भी व्यवस्था नहीं कर सकते ?"

"क्यों ? यह घर ही क्या खराब है ? तुम्हें शायद दोतल्ला मकान के बिना नींद नहीं आती । यह ठीक है कि यह मकान एकतल्ला है, पुराना है; मगर सुविधाएं भी तो देखो। नल-पाखाना सब, बिलकुल अलग। कोई झगड़ा-झंझट नहीं, कोई झमेला नहीं। फिर जरा रसिकता करते ए बोला—"हो तो आखिर, औरत ! स्वभाव कहां जायेगा? ढोल की तरह चिल्ला-चिल्लाकर झगड़ा किये बिना खाना कैसे हजम होगा ?"

"नहीं, नहीं, तुम समझते नहीं," गौरी धीरे-धीरे बोली—"आस-पास के मकानों की छतें यहां इतनी सटी-सटी हैं कि चाहे किसी भी समय कोई चोर आ सकता है ।"

"चोर!" हिमांशु ने और मजाक किया—"ऐसा बेवकूफ चोर कलकत्ते में एक भी नहीं है। तुम्हारे हाथ की चूड़ियों की ज्यादा-से-ज्यादा चार सै कीमत होगी; लेकिन हां, तुम्हें अगर कोई चोर चुराने आये, तो बात दूसरी है, लाख रुप भी तुम्हारे लिए कम हैं।" हिमांशु ठठाकर हंस पड़ा, फिर कुछ लुब्ध दृष्टि से गौरी की ओर देखता हुआ बोला—"इस दलाली के काम के सिलसिले में बहुत बड़े-बड़े लोगों के घर गया हूं, लेकिन तुम्हारी-जैसी रूपवती कहीं दिखाई नहीं पड़ी ।"

गौरी का चेहरा लज्जा से लाल हो उठा। तप्त बाष्प की तरह जैसे कोई चीज उसके मस्तिष्क में उठने लगी । हृत्पिंडों में जैसे किसी झंझावात की ध्वनि सुन रही थी। मुंह फेरकर रसोईघर की तरफ जाने लगी कि हिमांशु ने पुकारा—"सुनो !"

गौरी खड़ी हो गयी । इस अंधेरी गली में भी एक टुकड़ा आकाश का है, जहां कोई चांद उगता है। चांदनी में खड़ी गौरी चांदी की सुडौल-सुघड़ प्रतिमा-सी लग रही थी। हिमांशु मुग्ध होकर बोला—"गहनों से तुम्हारी सुंदरता और कितनी बढ़ जायेगी, यही सोच रहा हूं। तुम तो गौरी, गहने पहनने के लिए ही जन्मी थी ।" फिर कुछ देर खामोश रहा और फिर जैसे गौरी को सुनाकर अपने आपसे बोला—"इस बार, अगर 'ट्रान्जैक्शन' के रुपये मिले, तो कुछ गहने जरूर बनवाऊंगा ।"

हिमांशु की बात शेष होते-न-होते गौरी रसोईघर की तरफ चली गयी । उस दिन बहुत रात गये, जब सारे दिन की परेशानियों से क्लांत हिमांशु मुर्दे की तरह सो गया, गौरी ऊपर छत पर आयी । चांद अभी आश्चर्यजनक रूप से सुंदर लग रहा था और उधर दोतल्ले मकान की खिड़की में सिगरेट रह-रहकर जल उठती । रह-रहकर वह आग चांदनी में बड़ी अस्वाभाविक-सी लहक उठती, तेज, और तेज !

× × ×

हिमांशु आजकल अक्सर घर बहुत रात बीते लौटता । आज । शनिवार का दिन । चालीस रुपये के करीब पास में थे । सब रेस में खो आया । लड़खड़ाते हुए जब वह घर लौटा, रात का एक बज रहा था ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गौरी जाग रही थी। बाहर कुंडी खटक ही दरवाजा खोल दिया। हिमांशु छाता भीतर फेंक दिया और बाहर ही बै गया।

"साला, दिन ही खराब है, क्या जाने रास्ते में आज किसका मुंह देखा था पहले पहल।"

"चलो, हाथ-मुंह धोकर पहले खा लो।"

"आज खाने की इच्छा नहीं है ..... क्या टिप्स दिये कि साले सब रुपये ही खा ग ! ..... सभी चोर हैं, समझी गौरी, सभी चोर हैं। इस दुनिया में भले लोगों के लिए कोई जगह नहीं है।"

हिमांशु ने नशे से लाल आंखें समर्थन की आशा में गौरी की तरफ उठायीं और बस देखता ही रह गया। शुक्ल पक्ष की दूधिया चांदनी में गौरी के गले में जैसे कोई चीज झलमल कर रही थी।

"गले में यह क्या पहना है गौरी ? हार कहां से मिला तुम्हें ?" क्षण-भर के लिए गौरी चुप रही। उस क्षण-भर के लिए गौरी के वदन में जैसे काटो तो खून नहीं। फिर धीमे-से बोली –"फेरीवाले से खरीदा है, सवा रुपये में।"

"ओ.....S.....S.....। गिल्लट का हार, नकली सोने का हार ? देखूं, देखूं ?"

गौरी स्तब्ध हो उठी। हिमांशु की कुत्सित टेढ़ी उंगलियां उसके गले पर चल रही थीं। थोड़ी देर के लिए गौरी को ऐसा लगा कि ये उंगलियां उसके नरम मांस में अभी लोहे की संडासी की तरह धंस जायेंगी। उसने आंखें बंद कर लीं।

"हार खूब जंच रहा है, तुम्हारे गले में। दूर से तो पता ही नहीं चलता। छूकर देखने पर पता लग जाता है। असली सोना इतना लाल नहीं होता।" गौरी दबे गले से बोली–"हाथ से छूते ही तुम्हें असली सो का पता लग जाता है ?"

"अरे, तो तुम समझती क्या हो ?" हिमांशु जो ों से हंसा और उसके मुंह से निकली बदबू जैसे गौरी के ध्रों में समा गयी। उसे उबकाई-सी आयी। हिमांशु हंसते-हंसते बोला–"हिमांशु घोषाल इतनी आसानी से नहीं भूलता। कलकत्ते में आज बारह वर्षों से तरह-तरह के लोगों को चराकर तो ही खा रहा है।"

"अच्छा, छोड़ो यह सब बातें, चलो पहले खाने बै ो।"

खा-पी चुकने के बाद जब घोषाल सोने आया, उसे नींद नहीं आयी। पड़ा-पड़ा सोचता रहा–"बेचारी गौरी! इस नकली हार में सिर्फ गौरी की आत्म-प्रवंचना ही नहीं, उसकी व्यर्थ आकांक्षा की पीड़ा ही नहीं, मेरी भी चरम लज्जा है, मेरे असफल पौरुष की घोरतर अवमानना है।" हठात् हिमांशु का ध्यान अपनी अवस्था पर गया– "मैं अब ईमानदारी का रास्ता छोड़ दूंगा। मेरी दलाली के रुपये भी लोग मार लेते हैं और उलटे मुझे बदनाम भी करते हैं, मैं भी अब टेढ़े रास्ते चलूंगा।"

× × ×

हिमांशु को जब कहीं से एक सौ रुपये मिले, तो उसने सोचा, एक सौ रुपये में तो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हार नहीं आयेगा। और उसे तभी याद आया, आज शनिवार है। एक सौ को तीन सौ में बदलने की अदम्य इच्छा से अनुप्रेरित होकर वह मैदान की तरफ भागा। लेकिन उसका दुर्भाग्य देखिये कि एक सौ, तीन सौ में परिणत नहीं हुए। जेब में कुल सात आने पैसे लेकर वह बारह बजे रात को घर लौटा कि अचानक गली के नुक्कड़ पर दो-तीन आदमियों ने दबोच लिया।

"और कोई जगह नहीं मिली 'फोर बेंटी' करने की, साले! रुपये निकाल। .....निकाल रुपये! ....."

हिमांशु गों-गों करता हुआ छटपटा रहा था। वैसी अवस्था में ही लोग उसे घूंसों-थप्पड़ों से पीटने ल।

"नकली मालिक और नकली फ्लैट दिखाकर एडवांस रुपये हजम करना आसान नहीं, निकाल रुपये। नहीं तो आज मारते-मारते ....."

"निकाल रुपये, नहीं तो खून कर दूंगा।" कहते हुए एक आदमी ने उसे खूब जो से झकझोरा और दूसरे ने उसकी जेब में हाथ डालकर सब, कुछ निकाला – कुछ खुदरे पैसे, मैला रूमाल, पुरानी नोटबुक, क्लिप लगी पेंसिल। सब बाहर फेंक दिया और हिमांशु की पीठ पर कई धौल जमाते हुए बोला–"साला, सब पी गया।"

"साले का गला दबाकर वसूल करूंगा .....!" एक ने कहा। हिमांशु की आंखें निकली आ रही थीं कि गौरी झपटकर पास आयी। दरवाजे पर खड़ी-खड़ी वह सब माजरा देख रही थी।

"मेरे पति ने आप लोगों का कितना रुपया लिया है?"

वे लोग चौंक उठे। एक साथ सबकी आंखें उठीं। आधी रात को इस निर्जन गली में एक सुंदरी का आविर्भाव! जैसे लोग कोई सपना देख रहे हों। जिसने हिमांशु की गर्दन दबा रखी थी, उसकी उंगलियां ढीली पड़ गयीं, हाथ शिथिल हो गये। हिमांशु को जैसे मुक्ति मिली। हड़बड़ाकर उ बैठा। लैंप पोस्ट की मैली रोशनी में सभी गौरी की तरफ मंत्रमुग्ध ष्टि से देखते रह गये।

"बोलिये, कितने रुपये लिये हैं, इन्होंने?"

हिमांशु के गाल पर जिसने तमाचा मारा था, उसने हकलाते हुए कहा–"एक .....सौ..... एक सौ रुपये।"

गौरी ने गले का हार निकाल लिया और बढ़ाते हुए कहा–"यह हार लेकर इन्हें आप लोग छोड़ दीजिये, इसका दाम एक सौ से अधिक ही होगा।"

गौरी की तरफ ताकते हु ही उसने हार ले लिया और सभी जैसे मोहाच्छन्न-से गली पार कर बड़े रास्ते की तरफ निकल गये। किसी ने फिर एक शब्द भी नहीं कहा। शायद तब भी उन लोगों को इस अपू घटना पर विश्वास नहीं हो रहा था।

गौरी ने हिमांशु को खींचकर उठाया; और एक तरह से जैसे उसे ढोये-ढोये ही घर तक लायी। हिमांशु की भयग्रस्त आंखों से धारा बह रही थी। गौरी ने उसे बिस्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर लिटा दिया और उसका माथा अपनी गोद में रखकर सहलाने लगी। "अब चुप भी रहो, वे लोग तो चले गये, डरने की कोई बात नहीं।" गौरी आश्वासन देती हुई बोली।

अवरुद्ध गले से हिमांशु ने कहा—"मेरे लिए तो तुम्हारा सब कुछ गया ही, वह हार भी गया; लेकिन गौरी तुम क्या समझती हो, वे लोग इतने कच्चे हैं? थोड़ी देर बाद जब उन्हें पता चलेगा कि हार नकली है, तो फिर दौड़े आयेंगे।"

बड़ी कठिनता से गौरी ने कहा—"दौड़े आयेंगे, तो देखा जायेगा ..... । तुम डरो नहीं ..... मैं निपट ..... लूंगी।"

हिमांशु बच्चे की तरह फफक-फफककर रोने लगा—"तुम मुझे कितना मानती हो, कितना प्यार करती हो, गौरी! और मैं? तुम्हें सिवा अपमान-लांछना के और कुछ नहीं दे सका, कुछ नहीं।"

गौरी ने अपने फड़कते ओंठ दांतों से दबा लिये। हार नकली सोने का नहीं है, किंतु जिस प्रेम के आगे हिमांशु असहाय शिशु की तरह रो रहा है, उस प्रेम की नकली निष्ठुरता की बात सोचकर गौरी की आंखों में जैसे एक धुंधली छाया-सी उतर आयी।

उसने हिमांशु को कसकर कलेजे से लगा लिया। —अनुवाद : परमेश श्रीवास्तव

★

'टाम काका की कुटिया' की सुविख्यात लेखिका हैरिएट एलिजाबेथ स्टोव, घर का सारा काम स्वयं करती थीं। गृह-कार्य में निपुण होने के साथ ये लेखिका भाषण की कला में भी निपुण थीं। उनके पति उनके इन्हीं गुणों पर मुग्ध थे। उन्होंने एक बार अपनी पत्नी से कहा—"तुम्हारे जैसी अन्य स्त्री इस संसार में न होगी! इतनी मेहनती और कर्मठ और कौन होगी? तुम-सी अन्य स्त्री कहां मिलेगी, जिसमें ऐसी वक्तृत्वकला हो, पर जो कभी फटकारती न हो और जिसमें मधुरता के साथ इतनी दृढ़ता भी हो!"

स्टोव ने विनम्रता के साथ कितना विवेकपूर्ण उत्तर दिया—"तुम पहले से ही मेरे पति न होते और मैं तुमसे परिचय-संपर्क में आयी होती, तो निश्चय ही तुम्हारे इन गुणों पर रीझकर मैं तुम्हारे प्यार में फंस जाती।"

* * *

ईरान के शाह खुसरो के एक चिकित्सक और मंत्री ने भारत में प्राप्त संजीवनी के बारे में कहीं पढ़ा और उसकी खोज में भारत आया। संजीवनी उसे कहीं न मिली तो उसे बड़ी निराशा हुई। तभी एक विद्वान से उसकी मुलाकात हुई। विद्वान ने कहा—तुमने सच ही पढ़ा था। यहां विद्वत्ता रूपी पर्वत पर ज्ञान रूपी संजीवनी मिलती है। ऐसी संजीवनी पंचतंत्र नामक ग्रंथ में है। चिकित्सक पंचतंत्र की एक प्रति ईरान ले गया और पहलवी भाषा में उसका अनुवाद किया। —'मिलन' टंक

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गुजराती कहानी :

चंद्रकांत बक्षी

तालियों की गड़गड़ाहट धीरे-धीरे कम होती गयी और ऐसा अहसास हुआ, जैसे उसे किसी ऊंचाई से आहिस्ता-आहिस्ता संभालकर नीचे रखा जा रहा हो। इसी गड़गड़ाहट के बीच एक फ्लैश-बल्ब फूटने की आवाज सुनाई दी, क्षणिक चमक हुई और माइक के निकट की कुर्सियों पर के चेहरे धुंधले दिखाई पड़ने लगे, फिर स्पष्ट हुए। उसने मेडल को देखे बिना ही उस पर उंगलियां फेरीं, प्रेसिडेंट को नमस्कार किया, चाबीवाले खिलौने की मुद्रा में अर्ध-अंधकार में सजे हुए चेहरों को नमस्कार किया, फिर वह लौट पड़ा।

इसके पहले कि उसे पता चले, वह मेक-अप-रूम में आ चुका था। इर्द-गिर्द मंडराते अभिनेता, अभिनेत्रियां तथा मेकअप-मैन रज्जाक सभी उसे पहचानते थे। "देखूं तो तुम्हारा मेडल।" सुरंगी ने कहा और उसके देने के पहले ही प्यार से छीन लिया। सभी उसे भूलकर मेडल को देखने लगे। "आज का 'पर्फार्मेंस' वाकई 'सुपर्ब' था।" .....एक नटखट कह रहा था—"तेरे फोटो-वोटो साफ आयेंगे तो?" फोटोग्राफर ने कहा—"हां, सेठ ने नया रोल मंगवा दिया था। प्रेसिडेंट बनाये गये हैं, तो तस्वीर उनके अलबम में आनी ही चाहिये।" दोनों हंस पड़े, उसने मुंह घुमाकर फोटोग्राफर को देखने की कोशिश की; लेकिन वह आस-पास घिरे हुए स्त्री-पुरुषों के पीछे से जाकर सीढ़ी उतर रहा था।

"मेडल बहुत सुंदर है। ..... कन्ग्रैच्युलेशन्स!" वह "थैंक्स...थैंक्स" करने लगा, आभारवश। डाइरेक्टर ने शाबाशी देते हुए कहा—"आज तूने कमाल किया, यार! टाप्स, मैन, टाप्स!....." वह आवेश में ज्यादा बोल न सका। मेडल मुलायम उंगलियों में फिरता हुआ वापस आ गया। सभी लड़कियां उसे घूर रही थीं। उसे ताकती काली-काली आंखों को देखकर उसका अभिनेता आत्मा भी बेचैन हो रहा था। मेडल था, इसीलिए बेचैनी थी और चैनी में एक महत्ता थी। बाहर स्टेज पर तालियों की गड़गड़ाहट हास्य के फुहार में घुल गयी और मिश्रित आवाजें आने लगीं। उन आवाजों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की वह पहचानता था। तीन घं के समारंभ की समाप्ति की उनमें सूचना थी। स्टेज की बत्तियां बुझीं। आडिटोरियम में प्रकाश फैल गया। सभी मेकअप-रूम से बाहर निकल आये। वह चुपचाप लोगों की पीठों की ओर ताकता रहा।

"क्या प्रोग्राम है, अब ?" किसी ने सेक्रेटरी से पूछा। "डि ..... स्पर्स !" उसने मजाकिया मिलिटरी लहजे में कहा, जिसमें न मजाक था, न मिलिटरी लहजा। वह डेढ़ साल एन० सी० सी० में रह चुका था और उसे बार-बार सभी को स्लो-मार्च कराने का शौक था। "नाश्ते का क्या इंतजाम है?" ....."जिसे आना हो, चलो मेरे साथ" ....."दो-दो रुपये दे दो।" ..... "ना ....." इतने प्रेसिडेंट पधारे। पीछे कुर्सियां खाली करके चले आये लोगों की फौज थी। "मैं आपको बधाई देने आया हूं", प्रेसिडेंट ने कहा –"आप लोग नौजवान हैं, उत्साही हैं .....मुझे तो स्टेज पर बोलना ही नहीं आता।" प्रेसिडेंट हंस पड़े। फौज का एक आदमी हंसा, फिर सभी हंसे, फिर अभिनेता-अभिनेत्रियों में हंसने की हिम्मत आयी, आखिर वह भी खिलखिलाकर हंस दिया। एक चेन-रीएक्शन की तरह। हंसने की कोई खास बात नहीं थी, लेकिन सिडेंट खुश हुए।

"किस तरफ जाना है?" प्रेसिडेंट ने उससे पूछा। "हम लोग तो जा रहे हैं नाश्ता करने।" सेक्रेटरी ने सुरंगी की ओर देखा–उसकी इच्छा सुरंगी की ओर देखने की नहीं थी। सभी सुरंगी की ओर देखा–सभी की इच्छा सुरंगी की ओर देखने की नहीं थी। इसने कहा–"मैं तो.....नाश्ते पर नहीं आ सकूंगा, मुझे अभी बहुत दूर जाना है। आप लोग जाइये।" ..... "उसका पेट मेडल से ही भर गया है!" फिर हंसी। मेडल की वजह से कुछ भूख जरूर कम हो गयी थी। तालियों की गड़गड़ाहट से भी कुछ भूख कम हो चुकी थी। लेकिन दूर जाना था। सिडेंट पूछा–"कहां जाओगे तुम ?"

"हावड़ा।" ....."चलो मेरी गाड़ी में ही चलो, तुम्हें हावड़ा छोड़ देंगे ....." "आपको घूमकर जाना पड़ेगा।"....."अरे भई, गाड़ी है, चलो, चलो" .....प्रेसिडेंट हाथ पकड़कर उसे खींचकर ले गये!

मेकअप-मैन रज्जाक ने उसके कपड़ों का बंडल उसके हाथ में थमा दिया। स्टेज पर परदे लपे जा रहे थे। 'अशर' लोग लाइन में कुर्सियां सीधी कर रहे थे। वह खुश था।

गाड़ी बड़ी थी। भीतर सीटें दूध-जैसी तो नहीं, मगर काफी सफेद थीं। जब ये सीटें मैली होंगी, तब 'बैटलशिप ' रंग की कही जायेंगी और मेरे जैसे अर्धज्ञानी एक नये रंग का नाम सुनकर खुश हो जायेंगे–उसे सहसा खयाल आया। समझ में नहीं आया कि ऐसा विचार स वक्त क्यों आ गया। उसने प्रेसिडेंट को ओर देखा। प्रेसिडेंट धोती, लांग कोट और ोपी में सज्जित थे। "हावड़ा में रहते हो ?" सिडेंट ने पूछा। "जा .....रहता हूं, हावड़ा से कुछ दूर बेलपुर में," उसने उत्तर दिया। प्रेसिडेंट मुस्करा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

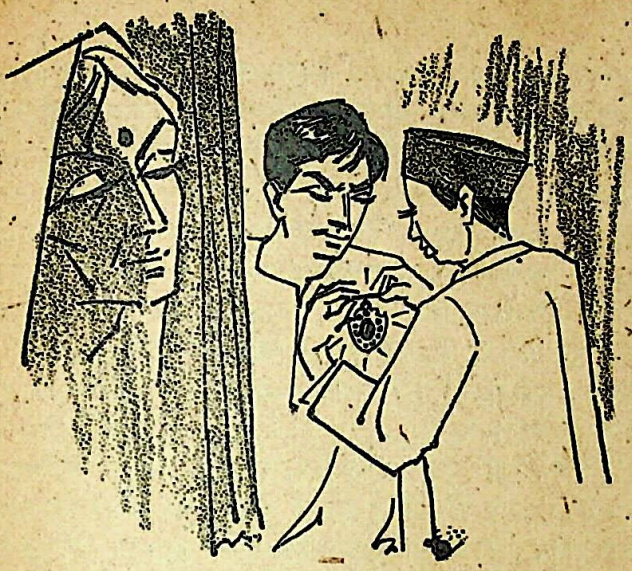

दिये—"पर इतने दूर क्यों?"

"फैक्टरी करीब पड़ती है!"

प्रेसिडेंट ने आगे कुछ नहीं पूछा। उसे आश्चर्य हुआ। प्रेसिडेंट ने क्यों नहीं पूछा कि क्या करते हो? किस चीज की फैक्टरी है? मालिक कौन है? काम मनपसंद है कि नहीं?..... उस ने बाहर की ओर दृष्टि की। क्रोमियम इस कदर चमक रहा था कि लगा, उंगली छुआने से उस पर शरीर की गर्मी का दाग पड़ जायेगा। बचपन में चमकती सतहों पर उंगली दबाकर उठाने के बाद हवा में झिलमिलाकर छोटे होकर गायब होते हुए दागों को देखते रहने में उसे बड़ा आनंद आता था।

"शादीशुदा हो?" ..... "जी ..... हां!" कुछ भूल हो गयी हो ऐसे वह 'जी' चुप गया। पर जेब में मेडल था; इसलिए फकीरी, क्रोमियम, फैक्टरी की नौकरी, 'जी' पर अनायास डाला गया वजन—किसी बात का रंज नहीं था। "बाल बच्चे?" प्रेसिडेंट ने आगे पूछा। "नहीं हैं।" उसने सोचा, पत्नी का चौथा महीना तो चल ही रहा था, मगर बताने की जरूरत? सही तो था, बाल-बच्चे नहीं हैं।

गाड़ी पुल पर आयी। किनारे की जेटियों की गरम हवा महसूस हुई, पुल के बीच में नदी की ठंडी हवा के झोंके आये और गाड़ी पुल पार कर गयी। स्टेशन आने पर वह उतर पड़ा। दरवाजा खोलना न आया, प्रेसिडेंट ने खोल दिया। उसने आभार माना, सलाम किया। प्रेसिडेंट ने सिर झुकाया। दरवाजा बंद हुआ, गाड़ी चल दी। बाहर से ही जेब दबाकर मेडल के अस्तित्व का अनुभव करते हुए उसने इलेक्ट्रिक घड़ी की तरफ देखा। बेगमपुर पहुंचते-पहुंचते ग्यारह बज जायेंगे। सीमा से कहकर ही आया था कि देर हो जायेगी, चिंता मत करना। आज उसने खाना भी नहीं पकाया था, उस पर अभी तक फ्लू का असर था।

हावड़ा स्टेशन की देर रात की उदासी को भुलानेवाला मेडल था जेब में। बेकद्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुनिया अब सीख रही थी कद्र करना। इस वर्ष का 'बेस्ट एक्टर' वह होनेवाला था—एमेच्योर ग्रुपों में। पूरे शरीर में से कुछ उफन रहा था, और लग रहा था कि रोमकूपों से कुछ बाहर झर रहा है; और उसका उद्गम वह मेडल ही था। थर्ड क्लास का टिकिट लेकर वह डिब्बे में बैठ गया। यों उसे अब पास की भी जरूरत थी; क्योंकि कलकत्ता आते रहना एक तरह से नियमित हो चुका था।

डिब्बे के कोने में एक साफ सीट पर वह जा बैठा। भीड़ थी, लेकिन हावड़ा स्टेशन पर ट्रेनों में अगर बैठने की जगह मिल जाये तो भीड़ किस तरह कही जाये? आहिस्ता-आहिस्ता डिब्बा भरने लगा। सभी कुछ धीरे-धीरे हो रहा था। सीमा के पास भी वह बहुत धीरे-धीरे जा रहा था। मेडल सीमा को दिखाना था। अगर सीमा उपस्थित होती, तो खुश हो जाती। एकाएक उसे आनंद अनुभव होने लगा, डिब्बे की जनता को मालूम भी नहीं था कि उसकी जेब में सर्वश्रेष्ठ अभिनय का मेडल था। कैसे मूर्ख विचार.....

दो सिक्ख चढ़ आये, पंजाबी में बातें करते हुए। सामने की सीट पर एक बिहारी परिवार बैठा हुआ था। बाप, मां, एक छोटा लड़का, एक लड़की अंदाजन बारह वर्ष की। उसके नंगे पैर और पूरे शरीर पर गहने लदे हुए थे। वह चौंक पड़ा। लड़की की मांग में सिंदूर था और उसके दोनों हाथों में सुहाग की चूड़ियां थीं। एक लगभग नग्न बच्चा था। रस्सियों से बंधी हुई दरियां, छाते, रंगे हुए टीन की छोटी-छोटी संदूकें लिये, घुटनों तक लिपटी हुई मैली-धोतियां पहने देहाती हिन्दुस्तान थर्ड क्लास के डिब्बे में घंस रहा था। पूरा डिब्बा खचाखच भर गया। बंद में कुछ संथाल औरतें कर्कश आवाजों में झगड़ती हुई घुस आयीं और गठरियां रखकर नीचे ही बैठ गयीं। डिब्बे में वत्ती एकाएक तेज हुई, गर्मी महसूस हुई, ट्रेन चली।

सुरंगी नाश्ता करती होगी। सेक्रेटरी ..... सेक्रेटरी क्या करता होगा? सभी घर जाकर लेट चुके होंगे। सामने की सीट-वाले नंगे बच्चे ने पेशाब कर दिया, संथाल औरतों ने कुछ अस्पष्ट चीत्कार किया, बारह वर्षीय दुल्हन हंस पड़ी। वह सिक्खों की बातें समझने की कोशिश करने लगा। छोटा सिक्ख कह रहा था—"सात समंदर हिल जायेंगे, बादशाह! अभी तक तो सरकार को पता नहीं है ....." हिन्दुस्तान, पूरा हिन्दुस्तान उसे घेर रहा था।

फैक्टरी में उसने लोगों को देखा था। यह थर्ड क्लास का पुराना, धुएं के रंगवाला डिब्बा था, जो सरकार की इतनी सारी योजनाओं के बावजूद अभी पूर्ववत् था। ट्रेन चलने पर भी हवा खास नहीं आ रही थी; क्योंकि ट्रेन की गति मंद थी और लोग खचाखच बैठे हुए थे, या खड़े थे। लोगों का-गंदे लोगों का—पसीना, गरीबी का बोझ, खड़खड़ाहट, अलग-अलग भाषाओं की आवाजें, सभी जैसे उसको ही लक्ष्य बनाकर आ रहे थे। क्षणार्ध उसे लगा, सिर जरा चकरा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेखक

रहा है और वातावरण की घुटन से उसे घबली-सी अनुभव हो रही थी। वह बाहर डिब्बे में घूमने लगा। चक्कर कम हो गये, घुटन भी हट गयी। मेडल! उसने आयी हुई हंसी को दबा दिया। आंखों के सामने झिल-मिलाते 'बैटलशिप ग्रे' रंग पिघल गये।

फिर उसकी दृष्टि बारह वर्ष की दुल्हन पर पड़ी। हिन्दुस्तान के हर चार मर्दों में से तीन अनपढ़ हैं। यह भी किसी अनपढ़ पहलवान के पास जा रही है। शायद हर दस स्त्रियों में से नौ निरक्षर हैं..... बिलकुल अनपढ़, और ये सभी अनपढ़ औरतें मिल-कर हर वर्ष देश को पचास लाख बच्चे पैदा करके देती हैं। ये पचास लाख प्रश्न उसके हल नहीं हैं। वह भी इस गरीबी, बेरोज-गारी, लाचारी का एक धड़कता हुआ अंश था। वह तली में पड़ा हुआ नहीं धड़क रहा था, जरा ऊंचे आ चुका था। उसके अपने भी चिंता करने लायक काफ़ी प्रश्न थे। प्रयत्नपूर्वक उसने सोचना बंद किया।

विचारों से उसे दुःख हो रहा था। लेकिन दुल्हन सामने ही बैठी हुई थी। उसे किस तरह दृष्टि से हटाया जाये? उसने आंखें बंद कीं और दुल्हन को पलटना शुरू किया। गहने फेंककर चेहरे को साफ किया, सिंदूर पोंछ डाला, नयी सफेद फ्राक पहना दी। लाल 'सैश', सफेद मोजे, मखमल के जूते, बाबकट बाल ..... किंडरगार्टन .....ना, किंडरगार्टन से उसकी उम्र कुछ बड़ी थी। आंखें खुल गयीं। दुल्हन धीरे-धीरे टांगें हिला रही थी।

लीलुआ। कुछ उतरे, कुछ चढ़े। एक संथाल स्त्री ने भीड़ में सीट के नीचे सिर घुसाकर पान की पीक थूक डाली। एक मजदूर सकोरे में चाय लेकर पीने लगा। सात समंदर हिलानेवाले सिक्ख शांति से उतर गये। दो साधु चढ़ आये और सिक्खों की सीट पर जमकर बैठ गये। उनमें से ठंडी खाक की, तंबाकू की, गंदी जटाओं की, स्त्रियों के लिए भड़कती हुई भूखी वासना की बू आ रही थी। गाड़ी चल दी।

बेलूड़, बेलानगर, डानकुनि, आगडाना। बाद में बेगमपुर आनेवाला था। रात की ट्रेन में इतनी सारी निराशा थी कि मेडल की चमक पर धुंध जम जाये। एक जम्हाई आयी, मुंह खोले बगैर ही उसने उसे दबा दिया। आंखें झलझला गयीं। चश्मा निकाल-कर रूमाल से उसने आंखें पोंछी, रहा-सहा मेकअप भी रूमाल पर आ गया। फिर से उसने चश्मा पहन लिया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

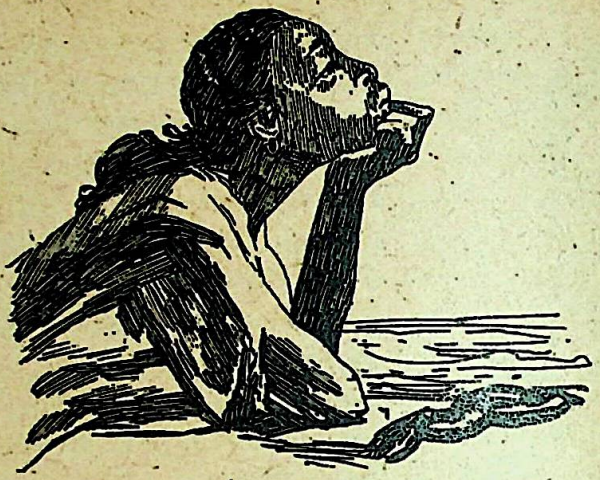

प्रत्याशा.....मायाकोव्स्की की एक कविता पर से बोरिस प्रोरोकोव द्वारा अंकित

ट्रेन चल रही थी, समय के परिमाण को भूलकर। डिब्बे में किलकिलाहट थी।

बेलूड़ आया। बेलानगर गया। डानकुनि पर स्यालदह से आयी हुई गाड़ी के साथ एक छोटी-सी दुर्घटना हो गयी थी। ट्रेन खड़ी हो गयी। कोई चोरी की और कोई चेन खींची जाने की बात कर रहा था। कुछ देर के बाद, ट्रेन फिर से चली—लंबा सफर तय करके थक गयी हो ऐसे। स्टेशन की हवा में धुएं के मचलते गुब्बारे, बोरडम, अंधकार सब कुछ था। महसूस हुआ जैसे खुद उसके पेट में कुछ गड़बड़ी हो रही थी। भूख थी या दुबारा मतली हो रही थी?

सीमा अभी बहुत दूर थी, बेगमपुर में बीमार। पेट में चार महीने का वजन लि वह फ्लू में कराह रही होगी। ट्रेन एक खड़-खड़ाहट के साथ खड़ी हो गयी, फिर से चली। क्यों? कब पूछने की या बाहर झांककर देखने की उसकी इच्छा तक नहीं थी। सिगनल डाउन नहीं होगा, या किसी ने चेन खींच ली होगी, या कोई गिर पड़ा होगा, या मर गया होगा, या ..... उसकी जिज्ञासा-वृत्ति तब मर चुकी थी। भूख, नींद, बोरडम, परिश्रम। अब तो मेडल भी वजन-सा लग रहा था। अगर पूरी-की-पूरी ट्रेन भी ध्वंस हो जाये, वह चिंता नहीं करनेवाला था।

ये ट्रेनें, ये आदमी..... चार स्टेशन आते-आते पूरे डिब्बे को नरक बना डाला। पेशाब, तंबाकू, थूक। एक आदमी चिल्लाया- "जहां-तहां थूकता फिरता है। जानता नहीं ....." दूसरे ने तपाक से जवाब दिया- "इतनी सफाई चाहिये तो फर्स्ट में चला जा....." पहले ने आंखें फाड़कर कहा- "मैं तो जाऊंगा फर्स्ट क्लास में; लेकिन तू मालगाड़ी के लायक भी नहीं है।"— हा ..... हा .....पूरा डिब्बा हास्य से छलक गया। वह चुप हो गया। सभी मालगाड़ी के लायक थे— सभी, वह भी। यह, हां..... वह खुद भी ..... पूरा हिंदुस्तान मालगाड़ी के लायक था। मालगाड़ी है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जगदा और किसी ट्रेन की दरकार नहीं थी इस देश को। ..... वह सीधा बैठ गया। जगदीना का छोटा स्टेशन आ गया, जंगल के किनारे। साधुओं ने जम्हाइयां लीं और अपने सिंदूर से रंगे हुए धार्मिक हथियार लेकर वे उतर पड़े।

आज वह बिलकुल थक चुका था। जेब में पड़े मेडल की वजह से या फिर प्रेसिडेंट की सफेद गाड़ी...लेकिन थकान कुछ ज्यादा महसूस हो रही थी। परिश्रम कम और मानसिक थकान ज़्यादा। डिब्बे में नये आये एक सज्जन ने पैर कुचल दिया। उसकी तो अब झगड़ने की इच्छा भी नहीं बच गयी थी। सीमा के पास पहुंचना था, खाना अभी बाकी था, सीमा से लिपट जाने की इच्छा थी। सीमा का सिर छाती पर लिये उसके बाल पर हाथ फेरते-फेरते सो जाने की उसकी इच्छा थी। कल फैक्टरी की शिफ्ट सवेरे की थी। उसका ध्यान एक सज्जन के बड़बड़ाने की तरफ गया—"जरा ठीक से बैठा करो।" वे सज्जन कुछ आगे भी बोल गये, वह सुन न पाया। खैर, आज की चिंताएं काफी थीं। फैक्टरी की कल की चिंताएं कल करेंगे। सज्जन उसे घूर रहे थे। पर वह कुछ न बोल पाया।

बेगमपुर के स्टेशन पर वह उतर पड़ा और टिकिट देकर बाहर निकल आया। चाय की दुकानें, कुत्ते, करीब के गांवों से आ रही खड़खड़ाती आखिरी बसें, दोनों तरफ से खुली गटरों में से सतत आती हुई परिचित दुर्गंध। साइकल-रिक्शों पर बीड़ी के कश खींचते हुए, सुस्ताते छोकरे। वह तेजी से आगे हो लिया। घर के पास पानवाले की दुकान पर खड़े शिबू ने पूछा—"क्यों साहब, आज कुछ ज्यादा देर हो गयी?" ..... "हां भई, कुछ देर हो गयी आज।" ..... "लीजिये, पान-वान खाते जाइये।"

पानवाले की दुकान पर ही वह खड़ा हो गया। शिबू ने पूछा तक नहीं कि कहां गये थे। शिबू को पता था कि वह अभिनय भी करता है। कौन-सा नाटक था, कैसा रहा, क्या पार्ट लिया था?—उसने कुछ पूछा नहीं। पानवाले ने पान का बीड़ा हाथ में थमा दिया। उसने कहा—"अभी खाना नहीं खाया। खाना खाने के बाद खा लूंगा।"

शिबू ने कहा—"आज तो आप कुछ ज्यादा थके ए नजर आ रहे हैं!" उसकी नजर एकाएक पानवाले के पुराने आईने पर पड़ी और वह रुक गया। यह चेहरा! पूरा चेहरा पोंछे गये मेकअप पर चिपकी हुई धूल और थकान और निराशा से दा हो गया था। उसने मुंह फेर लिया—"आज बहुत देर हो गयी है, कल मिलेंगे।"

इतनी गंदगी और निराशा लिये वह सीमा के पास जा रहा था—गर्भवती, बीमार, घंटों तक अकेली तड़पती सीमा के पास! सीढ़ी के अंधेरे में क्षणार्ध रुककर उसने विचार किया—मैं अभिनेता हूं, उसके एकाकीपन और उसकी बीमारी में मुझे उसे खुश रखना चाहिये। और मैं ऐसा चेहरा लेकर उसके पास जा रहा हूं! यह चेहरा गंदा,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पसीने से तर, थका हुआ ! उसने पान मुंह में रखा, रूमाल से पसीना पोंछ डाला, केश संवारे, हंसने का, खुश होने का, एक नया खुश चेहरा पहन लेने का सख्त प्रयत्न किया। अभिनेता था वह, नये-नये चेहरे पहनना उसका पेशा था।

दौड़ता हुआ वह सीढ़ियां चढ़ गया, दरवाजा खटखटाकर खड़ा हो गया। "कौन है ?" ..... "मैं हूं, खोल ..... खोल ....." सीमा आहिस्ते-से दरवाजा खोला। वह धंस पड़ा, सीमा का निस्तेज चेहरा मुस्कराया। दरवाजा बंद करके वह लगभग लिपट गया। दोनों बिछौने पर आ बैठे। "बहुत देर कर डाली, आज ?" प्रीमा ने पूछा। "हां ....." सीमा हंस पड़ी - "आज बहुत खुश नजर आ रहे हो ? मेडल तुम्हें ही मिला न ?" "....हां," वह हंस दिया।

"पता है मुझे," सीमा कहा- "तुम्हें इतने खुश देखकर ही मुझे पता चल गया। बहुत बड़े अभिनेता हो सकते हो तुम। लेकिन बीवी के सामने अपनी खुशी नहीं छिपा सके। आज तुम दुःख की एक्टिंग नहीं कर सकते, सच है न ? बोलो..."

वह प्यार से सीमा का एक चुंबन लेकर, अपने जूते के फीते खोलने लगा।

(लेखक द्वारा स्वयं अनूदित)

★

मुझे याद आता है, एक अभिनेता नाटक शुरू होने के पूर्व ही स्टेज पर आकर दर्शकों का अभिनंदन किया करता था। उसे इस बात का डर रहता था, नाटक के समाप्त होने तक दर्शक वहां रहेंगे या नहीं।

०००

क्या कमाल का अभिनय है ! नायिका के प्रति वह कैसा उत्कट प्रेम प्रदर्शित कर रहा है !

हां, अभिनय अच्छा है ! जानते हो, पिछले अठारह साल से वे दोनों पति-पत्नी हैं। तब तो सचमुच ही वह बड़ा जबर्दस्त अभिनेता है।

०००

उसने ऐसा अभिनय किया कि श्रोता विचलित हो उठे—मेरा मतलब है, अपनी सीटों से दरवाजे की ओर विचलित हो उठे।

०००

मेरी दीदी पिछले छः महीने से अभिनय-विद्यालय में फिल्म अभिनेत्री बनने का शिक्षण ले रही है।

अब तक उसने क्या-क्या सीखा है ?

सवेरे ग्यारह बजे तक बिस्तर न छोड़ना।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

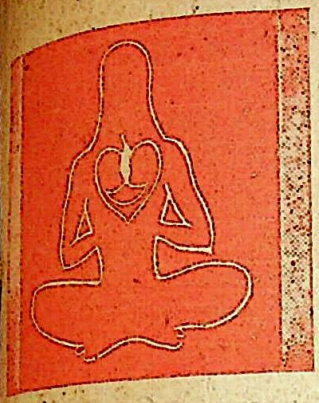

यंत्र-प्रतीकों द्वारा उपासना

सामान्य जनों को 'जंतर-मंतर' प्रतीत होनेवाली तांत्रिक यंत्रोपासना का साधकों के लिए गूढ़ अर्थ है।

ताराप्रणव ब्रह्मचारी

भारतवर्ष में लोग 'जंतर-मंतर' (यंत्र-मंत्र) की महिमा प्राचीन काल से मानते चले आ रहे हैं। जीवन में किसी भी प्रकार का रोग-शोक होने पर मंत्र-सिद्ध 'जंतरों' का उपयोग किया जाता है, जैसे तावीज। ये तावीज सोने-चांदी अथवा तांबे के बनते हैं और उनका आकार ज्यामितिक होता है—त्रिकोण, चतुष्कोण अथवा चंद्राकार। मंत्र का तात्पर्य है, मनुष्य के कल्याणार्थ देवी-देवताओं का आवाहन और तंत्र का आशय है, देवी-देवताओं के पूर्ण स्वरूपाकार का प्रतीक।

प्रस्तुत लेख में यंत्र-प्रतीकों द्वारा प्रचलित देवी-देवताओं की स्वरूप-प्रतिष्ठा की चर्चा करते हुए 'यंत्र' शब्द का इसी अर्थ में प्रयोग किया गया है। यम्+त्+र=यंत्र। जो तेजःशक्ति प्राणों में अवरुद्ध (यम) है, उसे त्राण करना, मुक्त करना यंत्र-प्रतीकों के माध्यम से सहज हो उठता है। यंत्र की प्रत्येक रेखा सजीव हो उठती है। अलग-अलग कोणों के ज्यामितिक यंत्र अलग-अलग पूज्य पात्रों के प्रतीक होते हैं। किसी धातु द्वारा इन ज्यामितिक कोणों को, अगर मूर्ति का रूप न दिया जा सके, तो उसे किसी धातु अथवा वस्तु पर चिह्नित-कर देने से ही देवी-देवता का स्वरूप पूर्ण मान लिया जाता है। निम्नमुखी त्रिकोण यंत्र में देवी-पूजा का विधान है और ऊर्ध्वमुखी त्रिकोण यंत्र में देव-पूजा का विधान है। प्रतिमा-पूजा-विधान में घट आदि आवश्यक हैं, किंतु यंत्र-पूजा में घट आदि वस्तुओं के आडंबर की कोई आवश्यकता नहीं पड़ती; बल्कि प्रतिमा-पूजा-विधान में घट आदि मांगलिक वस्तुओं पर देवी-यंत्र अंकित करना आवश्यक समझा जाता है।

इस यंत्र-पूजा का प्रारंभ कब और कैसे हुआ, यह ठीक-ठीक बताना मुश्किल है। हमारे मनीषियों की खोज-बीन के अनुसार इस यंत्र-पूजा का विवरण प्रागैतिहासिक काल, वैदिक काल, तांत्रिक काल, बौद्ध काल अर्थात् हर काल में पाया जाता है। मुअनजोदड़ो की खुदाई में भी ऐसे देवी-यंत्रों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के चिह्न पाये गये हैं। हर युग में इस यंत्र को दैवी शक्ति और परमात्म-शक्ति का तिभू रूप माना जाता है।

इच्छा क्रिया तथा ज्ञानम्.....। सृष्टि-स्थिति-लय की शक्ति; अर्थात् क्रमशः ब्रह्मा-विष्णु-महेश की शक्ति। वदिक युग में भी वरुण (जल), मित्र (सूर्य), पृथिवी आदि देवताओं के समन्वय-साधन से इस त्रिधा-शक्ति का परिचय मिलता है। यह त्रिधा-शक्ति त्रिकोणात्मक है। यज्ञ-साधनों में यह त्रिकोण ही यज्ञाग्नि का अधिदेव माना गया है। यज्ञ के अनुष्ठान में तीन महिमा-कलशों की स्थापना के माध्यम से त्रिदेव वरुण, मित्र और पृथिवी के आविर्भाव की धारणा की जाती है। इस त्रिकोणत्व की परिकल्पना के आधार, यज्ञानुष्ठान के तीन महिमा-कलश भी हो सकते हैं। सूर्य की तेजः-शक्ति का प्रतीक रूप यज्ञवेदी की अग्नि भी आकाश, जल और पृथिवी, इन तीन तत्वों में प्रकाशित मानी जाती है।

प्राचीन काल में पृथिवी पर अनेक देशों में मातृ-उपासक त्रिकोण के माध्यम से त्रितत्त्व की पूजा करते थे। ईसा मसीह से तीन हजार वर्ष पूर्व चीन के प्रथम सम्राट फूहूसि के शासन-काल में तेजःशक्ति के प्रतीक-स्वरूप त्रिकोण 'इनकूया' की पूजा की जाती थी। त्रिकोण यंत्र सब यंत्रों में मुख्य है।

चतुष्कोण यंत्र

वैदिक युग में चतुष्कोण, दक्षतना वेदी के रूप में अदिति देवी (दुर्गा) का प्रतीक माना जाता था। दक्षतना वेदी-यंत्र की देवी चार शक्तियों से संपन्न मानी जाती थी—सूर्य, अग्नि, जल और पृथिवी। समचतुष्कोण यंत्र केवल पृथिवी के प्रतीक के रूप में ही माना गया है। असीरिया देश के 'मारडक' देवता का प्रतीक एक चतुष्कोण वेदी है।

षट्कोण यंत्र

षट्कोण यंत्र छः शक्तियों के समन्वय का प्रतीक है—ब्रह्मा, विष्णु, महेश, सूर्य, गणेश और दुर्गा। निम्नमुखी स्त्री त्रिकोण और ऊर्ध्वमुखी पुरुष त्रिकोण के समन्वय से षट्-कोण यंत्र की रचना होती है। षट्कोण यंत्र में वस्तुतः अर्द्धनारीश्वर की कल्पना है, जो देवी भी है और देवता भी; जो माता भी है और पिता भी—जगज्जनन्यै जगदेकपित्रे।

दुर्गा-यंत्र

तीन त्रिकोणों को समन्वित करके जो यंत्र तैयार होता है, उसके नौ कोण होते हैं और हर कोण देवी दुर्गा के एक शक्ति-रूप का प्रतीक है—जगद्धात्री, माहेश्वरी, वैष्णवी, कौमारी, वाराही, नारसिंही, ब्राह्मी, चामुंडा, दशभुजा और महिषमर्दिनी। तीन त्रिकोण

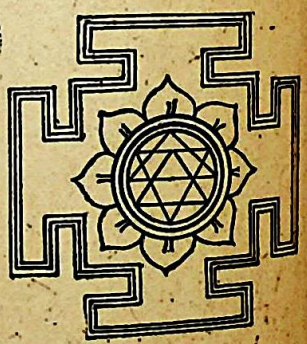

दुर्गा-यंत्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

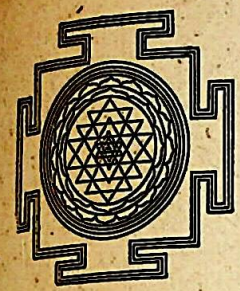

श्रीयंत्र

इन चारों ओर तीन वृत्त हैं, जो ज्ञान, विज्ञान और आनंद के प्रतीक हैं। इन तीन वृत्तों के चारों ओर कमल की आठ पंखुड़ियां हैं—ये पंखुड़ियां अष्टशक्ति—जया, विजया, कीर्ति, द्युति, प्रभा, श्रद्धा, श्रुति और मेधा की प्रतीक हैं। और इन पंखुड़ियों के चारों ओर तीन रेखाओं से बना एक चतुष्कोण है। ये तीन रेखाएं अतीत, वर्तमान और भविष्य की प्रतीक हैं।

देवता के यंत्र-प्रतीक और देवी के यंत्र-प्रतीक में रेखांगत अथवा आकृति-गत कोई विशेष भेद नहीं है। और रेखांकन की यह विभिन्नता यह सिद्ध करती है कि देवी में उसकी अपनी शक्तियों के साथ देवता की भी सर्वशक्ति समाहित रहती है—सर्वशक्ति-स्वरूपात्वङ्गः स देवमयी तनुः।

एक समय था, जब एक ही तरह के सामाजिक परिवेश में पृथिवी के विभिन्न देश शक्तिवाद से प्रभावित थे। मातृदेवी की उपासना के लिए प्रायः एक ही तरह के यंत्र-प्रतीक का व्यवहार किया जाना इस तथ्य को पुष्ट करता है। देवी-यंत्रों के रूप में प्रचलित पद्मयंत्र (दुर्गा-यंत्र), त्रिकोण, चतुष्कोण इत्यादि बैबिलोन के प्राचीन शिलालेखों में खुदे हुए पाये गये हैं। ये शिलालेख एशिया माइनर में भी कई स्थानों पर मिले हैं।

देवी-पूजा के लिए यंत्रासन अनिवार्य है। सोना, चांदी, तांबा अथवा त्रिलौह धातु (सोना, चांदी और तांबा मिश्रित) के पात्र में, मिट्टी के पात्र में और पत्थर पर लाल चंदन के द्वारा, देवी-यंत्रों को अंकित किये जाने का नियम है। सभी पूजाओं में मुख्य अनुष्ठान, यज्ञ-क्रिया के कुंडों में देवी-प्रतीक यं अंकित किये जाने का नियम है। शक्ति-उपासना में अपने आपको शक्तिमय करने की स्मृति में उपासक लाल चंदन का त्रिकोण तिलक करते हैं और पूजा के अंत में उक्त देवी-यंत्र को अथवा प्रतिमा-घट को केंद्र मानकर त्रिकोण, चतुष्कोण, षट्कोण अथवा वृत्ताकार प्रदक्षिणा करने को यंत्र-प्रदक्षिणा कहते हैं। यह यंत्र-प्रदक्षिणा पुजारी अपने आपको यंत्रमय, देवीमय करने के लिए करता है।

योगी मनीषियों का कहना है कि यह देवी-यं मनुष्य के शरीर के प्रत्येक शक्ति-केंद्र में भी सूक्ष्म रूप में अवस्थित है। स्नायु-तंत्रों में और हृदय-पीठिका में ये यंत्र-प्रतीक वर्तमान हैं और इन यंत्रों की यौगिक ध्यान-धारणा करने से अंतर की वह सुषुप्त तेजः-शक्ति जाग उठती है।

जागर्ति यदि सा देवी बहुभिः पुण्यसंचयैः।
तदा प्रसादमायाति मंत्रयंत्रार्चनादिकम्॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

घर परिवार

बीते ज़माने को हम सब बड़ी हसरत के साथ याद किया करते हैं। कुछ बातों में बीता जमाना सचमुच निश्चितता का था। आज से पचास क्यों, पच्चीस साल पहले भी माता-पिता और अध्यापक काफी निश्चित जीव थे। शिक्षाशास्त्र की खोजें और मनोविज्ञान की मान्यताएं उन्हें आज की तरह आतंकित नहीं किया करती थीं। हर चीज उन दिनों या तो स्याह थी या सफेद—स्याह-सफेद के मिलने से 'ग्रे' की जो असंख्य झाइयां बनती हैं, उनके अस्तित्व का उन्हें ज्ञान नहीं था। तब हर पिता यही समझता था कि वह बच्चों के पालन-पोषण में निष्णात है, हर अध्यापक यही मानता था कि शिक्षाशास्त्र का मर्म उसे विदित है।

परंतु आज के माता-पिता और अध्यापकों को कदम-कदम पर रुककर यह पूछना पड़ता है कि इस विषय में नवीनतम शैक्षणिक और मनोवैज्ञानिक धारणा क्या है? ऐसा ही एक व्यापक सवाल जो आज घरों में माता-पिता को और स्कूलों में अध्यापकों को परेशान कर रहा है, सेक्स-शिक्षा का है।

सेक्स यानी कामवृत्ति, और उसके साथ जुड़ी हुई प्रेमवृत्ति के संबंध में लड़के-लड़कियों को कब, कैसे और कितनी बातें सिखायी जायें?—यह आज का प्रमुख शैक्षणिक प्रश्न बन गया है। शिक्षाशास्त्रियों का एक बड़ा वर्ग सेक्स-शिक्षण को स्कूल-कालेज की शिक्षा का अंग बनाने का समर्थक है।

इस संबंध में पश्चिम की पत्र-पत्रिकाओं में आये दिन लेख छपते रहते हैं और उन्हें हम लोग भी पढ़ते हैं तथा उनमें प्रतिपादित विचारों को घड़ल्ले से बातचीत और भाषणों में उद्धृत करते हैं। सेक्स-शिक्षण को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने के क्या क्या परिणाम हो सकते हैं, इस पर देश के वयोवृद्ध राजनीतिज्ञ और विचारक स्वर्गवर्ती राजगोपालाचारी ने 'स्वराज्य' में बड़े सुंदर और विनोदपूर्ण ढंग से विचार प्रकट किये हैं, जिसके कुछ अंश यहां उद्धृत किये जा रहे हैं :

"जहां तक सेक्स के विशुद्ध और शास्त्रीय पक्ष का संबंध है, वह तो विद्यार्थियों को शरीरक्रियाशास्त्र (फिजियो-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लाती) और जीवशास्त्र सिखाते समय उसके अविभाज्य अंग के रूप में पढ़ाया ही जायेगा; इसलिए उसके संबंध में कुछ कहना अनावश्यक है।

"लेकिन पेशेवर शिक्षाशास्त्री आज जिस सेक्स-शिक्षा की चिंता कर रहे हैं, वह इससे कुछ ज्यादा और आगे की चीज है। उनमें से अनेक यह अनुभव करते हैं कि लड़के-लड़कियों को कामवृत्ति के संबंध में ज्ञान और मार्गदर्शन कराया जाना चाहिये।

"इनमें से कुछ का मत है कि कामवृत्ति के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए प्रेमभाव की व्याख्या और तत्संबंधी मार्गदर्शन भी लड़के-लड़कियों की शिक्षा का अंग होना चाहिये।

"प्रश्न उठता है कि क्या ये सुझाव अच्छे हैं?

"मेरी राय तो यह है कि हमें लड़के-लड़कियों को कामवृत्ति के संबंध में स्वयं ही जानने और पता लगाने के लिए छोड़ देना चाहिये; और मेरी यह भी राय है कि इन सुझावों से लाभ के बजाय हानि अधिक हो सकती है। बेशक लड़के-लड़कियों को हानिकर आदतों के प्रति चेतावनी दे देनी चाहिये।

"इसके आगे, कामवृत्ति और प्रेम संबंधी शेष शिक्षा हमें लड़के-लड़कियों को स्कूली सहायता के बिना स्वयं ही प्राप्त करने के लिए छोड़ देना चाहिये—ऐसा मेरा विचार है। इसमें एक रोमांस है, जिसे कक्षा में या अन्यत्र शुष्क स्पष्टीकरण देकर खत्म नहीं किया जाना चाहिये।

"वस्तुतः ऐसे रिहर्सलों से संभव है कि लड़के-लड़कियां प्रयोग करने लग पड़ें, जो कि सेक्स-शिक्षा के हिमायती शिक्षा-शास्त्रियों का उद्देश्य नहीं है, और न ही किसी भी दृष्टि से अभीष्ट है।

"और जहां तक प्रेम के उच्चतर स्तर की बात है, उसे पुराण, उत्तम कथा-साहित्य और कविता ने भरपूर तथा बहुत ही स्वस्थ, उत्थानकारी और शिक्षणात्मक ढंग से निरूपित किया है। कक्षा की पढ़ाई उससे बढ़कर

१९६८

विवाह—धार्मिक और सिविल

व्यंग्यचित्र : पापास

'मैन्चेस्टर गार्डियन' से हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खांसी पर पूर्ण नियंत्रण के लिए

ग्लायकोडिन

टर्प वसाका

ग्लायकोडिन का औषधि विज्ञान द्वारा स्वीकृत फार्मूला सभी पीड़ित भागों से खांसी को दूर भगाता है! यह है ग्लायकोडिन की विविध और असरकारक कार्यशक्ति ● दिमाग में–ग्लायकोडिन खांसी के प्रकोप पर ठीक समय पर बिना हानि और प्रभावकारी तरीके से नियंत्रण रखता है। ● गले में–ग्लायकोडिन जकड़न को दूर करता है, खराश और दर्द से आराम पहुंचाता है और गले के नाजुक भागों को कीटाणुओं से रक्षा करता है। ● छाती में–ग्लायकोडिन बन्द श्वास नली को खोलता है, छाती की जकड़न को दूर करता है और आप आसानी से श्वास लेने लगते हैं। ● फेफड़ों में– ग्लायकोडिन जकड़े हुए कफ और खराब द्रव को निकालता है, भीतर जमे बलगम को साफ करता है और जकड़न को दूर करता है। ग्लायकोडिन हमेशा अपने पास रखिये

ग्लायकोडिन– ३० साल से अधिक समय से खांसी की सबसे अधिक बिकने वाली घरेलू औषधि

४ साइज़ों में मिलता है * अलेम्बिक का उत्पादन Alembic

everest/363k/ACW hn

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पाकशास्त्र-गृहशास्त्र

आधुनिक साधन-सुविधाओं की बदौलत इतना समय बचने लगा है, फिर भी आधुनिक महिलाएं खाना पकाने के लिए समय नहीं निकाल पातीं, यह कितनी बुरी बात है। निश्चय ही इससे गृहस्थी को नुक्सान पहुंचता है। गृहिणी को सप्ताह में कम-से-कम एक दिन खाना स्वयं पकाना चाहिये।

गृहिणियों को पत्र-पत्रिकाओं व पुस्तकों में से देखकर नये-नये व्यंजन सीखते रहने चाहियें। पति चाहते हैं, जब-तब कोई नयी चीज खाने को मिलती रहे।

तब रसोईयों को हर तरह के व्यंजन पकाना सीखना चाहिये। सीखना कभी बंद न करें। जब आप समझने लगें कि जो कुछ सीखना था, सब सीख लिया, तो समझिये आप रसोइया रहने लायक नहीं रह गये। मुझे तो जब भी फुर्सत मिलती है, मैं पुस्तकें या पत्र-पत्रिकाएं उठाकर नये व्यंजनों के बारे में पढ़ने लग जाता हूं। —जान सांति (प्रधानपाचक, वाल्डार्फएस्टोरिया, न्यूयार्क)

तो हो ही नहीं पायेगी।

"मेरी राय में हमें लड़के-लड़कियों को प्रेम और स्नेह में स्वयं 'एड्वेंचर' करने और अनुभव पाने के लिए छोड़ देना चाहिये, बजाय इसके कि हम उन्हें बाकायदा सिखायें-पढ़ायें और रोमांस-विहीन बना दें। सेक्स का प्री-यूनिवर्सिटी पाठ्यक्रम प्रेमानुभूति की जीवंत वास्तविकता की हत्या कर डालेगा। ठोस उदाहरण लें तो, आलिंगन और चुंबन का विश्लेषण नहीं किया जाना चाहिये—वे स्वयं हो जायें, तो उन्हें होने देना चाहिये।

"प्रेम की बात छोड़कर शुद्ध सेक्स की दृष्टि से सोचें, तो क्या हम पशु-पक्षियों से नसीहत नहीं ले सकते? क्या उन्हें कोई कामवृत्ति और जीवशास्त्र की शिक्षा देता है? क्या उस शिक्षा के अभाव से उन्हें कोई हानि होती है?

"प्रकृति बड़ी नाजुक है, उससे छेड़छाड़ न कीजिये—बजाय इसके कि छेड़छाड़ करके बाद में सिर धुनते रहें।

"ज्यों ही सेक्स-शिक्षा का कार्यक्रम अधिकृत और सार्वजनिक रूप से अपना लिया जायेगा, त्यों ही उस अधिकृत कार्यक्रम के सहायक अध्ययन के नाम पर सचित्र कामोत्तेजक साहित्य की बाढ़ आ जायेगी, जिसे हम हर्गिज रोक नहीं पायेंगे।

"थ्योरियां चाहे कुछ भी हों, मुझे पूरा विश्वास है कि इस विषय में शैक्षणिक परीक्षण शुरू करना अत्यंत विनाशकारी होगा। दूसरे देशों के प्रमुख शिक्षाशास्त्री अपने यहां जिसे अच्छा समझते हों, वह हमारे देश के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लिए भी अच्छा ही हो, यह आवश्यक नहीं। हमारी वैवाहिक और पारिवारिक प्रथाएं भिन्न हैं; इसलिए दूसरे देशों की अपेक्षा हमारे यहां के लड़के-लड़कियों पर इसके दुष्प्रभाव भी अधिक व्यापक हो सकते हैं।"

सहधर्मचरी

आज से साढ़े चार वर्ष पूर्व अमरीका में एक विश्वविख्यात पुरुष की घोर हत्या हुई और सारे विश्व की सहानुभूति उस मारे गये महापुरुष की पत्नी के लिए उमड़ पड़ी थी। तीन मास पूर्व लगभग वैसी ही एक और घटना अमरीका में घटी। एक विश्वविख्यात अमरीकी नागरिक हत्यारे की गोली का शिकार हुआ और सारे संसार से उसकी पत्नी के पास सच्ची समवेदना के लाखों पत्र आये। शहीद मार्टिन लूथर किंग अपनी पत्नी कारेटा स्काट किंग का अपने जीवन पर बड़ा गहरा और शाश्वत प्रभाव मानते थे।

सन १९५६ में अर्थात् जिस वर्ष किंग की प्रथम संतान येलोंदा का जन्म हुआ, उनके घर पर बम फेंका गया। कारेटा को प्रतीत होने लगा कि उसके पति का जीवन अब सुरक्षित नहीं रहा। कुछ दिन बाद न्यूयार्क में किंग को छुरा भोंका गया, शिकागो में उन पर पत्थर फेंके गये, सेल्मा में उन्हें अपमानित किया गया। पर कारेटा ने तय किया कि उन्हें अपने पति के महान कार्य में बाधक नहीं, सहायक ही बनना है।

कारेटा के इस मानस की झांकी किंग की मृत्यु से कुछ दिन पूर्व पत्रकार जिक मेरेडिथ और कारेटा के बीच हुई बात-चीत से मिलती है। मेरेडिथ ने पूछा—"क्या आप समझती हैं कि आपके पति की हत्या होगी? क्या आप इसके लिए तैयार हैं?" कारेटा ने उत्तर दिया—"आनेवाली परि-स्थितियों के लिए अपने को तैयार कर रही हूं। लगता है कि मानव-जीवन को समृद्ध बनाने के लिए आत्मोत्सर्ग करना ही होगा।"

मेरेडिथ ने पूछा—"आप दोनों के न रहने पर बच्चों का क्या होगा?" कारेटा ने उत्तर दिया—"हम इतने स्वार्थी नहीं हैं कि केवल अपने बच्चों का खयाल करके मानव-जाति के हित को भुला दें। मेरे पति प्रायः कहा करते हैं कि हम कितने समय इस संसार में रहते हैं, यह महत्त्वपूर्ण नहीं है; महत्वपूर्ण तो यह है कि हम संसार में कैसे रहे हैं।"

कारेटा ने अपने बच्चों को भी खतरों के लिए तैयार कर लिया था। एक बार टेलि-विजन देखते हुए कारेटा ने समाचार सुना कि शिकागो में किंग के सिर पर प्रहार किया गया है। कारेटा ने बच्चों से कहा—"तुम्हारे डैडी को चोट आ गयी है।" बच्चे शांत रहे। कारेटा ने न केवल अपने पति को साहस और धैर्य प्रदान किया, अपितु स्वयं भी आंदोलनों में सक्रिय भाग लिया।

किंग-दंपति का धर्म एक ही था—मानव-सेवा। मार्टिन उस धर्म के लिए शहीद हो ग। परंतु कारेटा उनके मिशन को लेकर पूर्ववत् सामाजिक और राजनीतिक कार्यों में भाग लेती रहेंगी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिगरेट के धुएं का बढ़ता हुआ मोह

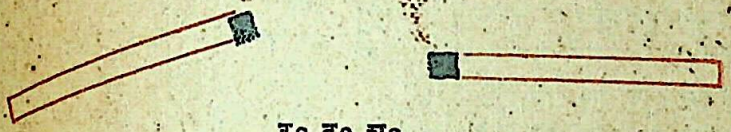

र० द० श०

"प्रतिदिन लगभग चार हजार किशोर पहली बार धूम्रपान सीखने की कोशिश करते हैं और १८ वर्ष की आयु तक पहुंचते-पहुंचते सारे देश के आधे तरुण पक्के धूम्र-सेवी हो जाते हैं।" संयुक्त राज्य अमरीका की स्वास्थ्य-सेवा के सर्जन-जनरल डा० विलियम एच० स्टीवार्ट ने एक रिपोर्ट में यह कटु सत्य उद्घाटित किया है। इसी रिपोर्ट में बताया गया है कि बच्चे जितनी जल्दी धूम्रपान सीखते हैं, आगे चलकर उनकी अकाल मृत्यु की संभावना उतनी ही अधिक बढ़ जाती है।

गत वर्ष से अमरीका में सातवीं-आठवीं के विद्यार्थियों में धूम्रपान के विरुद्ध प्रचार करने का एक देशव्यापी कार्यक्रम शुरू किया गया है, जो शुरू-शुरू में १८ राज्यों में चलेगा और १९६९ तक समस्त राज्यों में फैल जायेगा।

दूसरी ओर अमरीका की ही नेशनल कैन्सर इंस्टिट्यूट नामक संस्था ने अपनी एक पुस्तिका में किशोरियों में धूम्रपान के हानिकर प्रभावों को लेकर की गयी अनेक महत्वपूर्ण खोजों के विवरण दिये हैं। इसके लेखक अमरीकी कैन्सर सोसायटी के ई० क्यूलर हैमोंड हैं। इस सोसायटी ने लगभग चार वर्ष तक दस लाख से अधिक स्त्री-पुरुषों का अध्ययन करने के पश्चात् यह रिपोर्ट तैयार की है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि स्त्री-पुरुषों पर धूम्रपान का प्रभाव लगभग समान होता है; पर ऐसा लगता है कि स्त्रियों के साथ तंबाकू भी कुछ नर्मी का व्यवहार करती है। धूम्रपान करनेवाली आधुनिकाओं में ३४ वर्ष से ८४ वर्ष की आयु तक हर उम्र में मृत्यु-दर अधिक पायी गयी।

इस प्रकार प्रतिदिन सिगरेटों की संख्या के साथ ही मृत्यु-संख्या बढ़ती जाती है, जितनी देर तक कश भरें, उतनी ही जल्दी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देश खतरे में न पड़े

एक कैन्सर-पीड़ित अमरीकी महिला से उसकी सहेली ने पूछा –"अब तुम सिगरेट पीना क्यों नहीं छोड़ देतीं ?"

उसने उत्तर दिया–"अरी बहन, मैं भी बहुत चाहती हूं कि सिगरेट छोड़ दूं। मगर ऐसा करते हुए बहुत डर लगता है। पिछली बार जिस दिन मैंने सिगरेट छोड़ी, उसी दिन पर्ल हार्बर पर हमला हो गया।"

मरें; और जितने अधिक वर्ष का धूम्रानुभव होगा, उतनी ही जल्दी इस असार संसार से मुक्ति मिलेगी। यह बात नर-नारी दोनों पर लागू होती है। हालांकि मृत्यु-दर यहां भी स्त्रियों में कम पायी गयी। लेकिन इसका एक कारण यह भी है कि स्त्रियां धूम्रपान में अभी पुरुषों से पीछे ही हैं, वे लगातार अधिक सिगरेट नहीं पीतीं, अतः ठीक-ठीक तुलना करना संभव नहीं था।

नर-नारी दोनों में, धूम्रपान करनेवाले धुएं के परदे में निम्नलिखित रोगों को बुलावा देते हैं–एम्फाइसीमा अर्थात् फेफड़े, मुख, अग्रश्वसन-मंडल, निगलक और अग्न्याशय का कैन्सर; महाधमनी-एन्यूरिज्म और यकृत-काठिन्य और इन रोगों से शहीद होनेवालों की संख्या धूम्रसेवियों में अपेक्षाकृत अधिक थी।

परिहृत्-धमनी (कारोनरी हार्ट) रोग तथा हृदयाघात में धूम्रपान का प्रभाव ४५ से ५४ वर्ष की आयुवाले स्त्री-पुरुषों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इस आयु-वर्ग के पुरुषों में परिहृत्-धमनी रोग की मृत्यु-दर २.८१ और स्त्रियों में २.०० थी। हृदयाघात में दर का अनुपात उलटा हो गया– स्त्रियों में २.११ और पुरुषों में १.५०।

इन नये परीक्षणों से पहले का यह निष्कर्ष पुष्ट हो गया है कि स्त्री-पुरुषों के फुफ्फुस-कैन्सर और धूम्रपान में घनिष्ठ संबंध है। इस रोग से मरनेवाले धूम्रसेवी पुरुषों के ३५-८४ आयु-वर्ग में मृत्यु-दर ९.२० थी। (कभी धूम्रपान न करनेवाले १,००,००० व्यक्तियों में से कुल १२ इस रोग के शिकार बने, जबकि धूम्रसेवियों में यह संख्या १११ थी।) सिगरेट पीनेवाली स्त्रियों के ४०-७४ आयु-वर्ग में फेफड़ों के कैन्सर से मृत्यु-दर २.२० थी। यहां भी पक्षपात!

धूम्रपान की मात्रा और किस्म के हिसाब से नर और नारी दोनों में यह अनुपात बदलता रहता है। उदाहरण के लिए, जो स्त्रियां दिन-भर में १९ या इससे कम सिगरेट पीती थीं, उनमें मृत्यु-दर १.०६ थी; जो धुएं का घूंट भरती ही नहीं थीं या कम भरती थीं, उनमें मृत्यु-दर १.७८ थी; और गहरा कश भरनेवालियों में ३.७०।

हमारे यहां अभी किसी को इधर ध्यान देने की फुर्सत नहीं है कि विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता फैलाने में सिगरेट का कितना हाथ है। आम तौर पर धूम्रपान पुरुषों के बीच 'पौरुष' और स्त्रियों के बीच 'आधुनिकता' का प्रतीक समझा जाता है।

यह अध्ययन काफी रोचक होगा कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हिन्दी के कथा-साहित्य में कितने नायक नायिकाओं के चेहरों पर धुएं का गुबार छोड़, या लगातार सिगरेट-पर-सिगरेट फूंकते हुए 'अकेलेपन' को भोग करते हुए दिखाये गये हैं। कोई आश्चर्य नहीं, यदि अनेक धूम्रसेवी कथाकारों ने अपनी नायिका से यह कहलाया हो—"जब उसके ओंठों में सिगरेट लगी होती है, तो वह बड़ा मर्द लगता है और सिगरेट हटाते ही यों लगता है, जैसे वह नपुंसक हो गया हो।" धूम्रपान से काले पड़े अधरों की खूबसूरती का बखान भी बोधने पर मिल जायेगा।

भारतीय नारियों में अभी सिगरेट एक वर्ग-विशेष तक ही सीमित है। आप किसी भारतीय स्त्री के अधरों में जलती हुई सिगरेट दबे होने की कल्पना कीजिये कि शेष चित्र स्वतः ही उभरने लगता है ..... उसके अधरों पर गहरी-लिपस्टिक है, आंखों के नीचे गहरी झाइयां हैं, बाल कटे हैं, अंग कुछ खुले-कुछ ढंके से हैं, वह मॉडर्निज्म मनको की तरह हंसने की कोशिश करती है, और बात करने में कंधे उचकाती है। .....और फिर बहुत-सी बातें सोची जा सकती हैं, जो निन्यानबे प्रतिशत सही होंगी।

उस दिन एक पुस्तकालय में बैठा था। वहां एक ऐसा चरित्र देखा, जिसमें सिगरेट-प्रेमी नायिका के इस चित्र में से दो ही बातें मिलती थीं ..... वह सिगरेट पी रही थी, उसके बाल कटे थे। अन्यथा साड़ी से उसके सब अंग ढंके थे, चेहरे से शालीनता टपकती थी। पर कुछ किताबों से नोट्स लेने के साथ-साथ वह लगातार सिगरेट पिये जा रही थी। मुझे दुःख हुआ।

तभी एक सज्जन वहां आये। सिगरेट पीती लड़की को देखकर उनकी आंखों में जो चमक आयी, उससे उनकी सज्जनता पर संदेह होने लगा। झट-से उसके पास ही बैठ गये और अंग्रेजी में बात शुरू कर दी—"क्या, रिसर्च कर रही हैं?" पर लड़की ने बड़ा संक्षिप्त उत्तर दे दिया—"नहीं, कान्वेंट स्कूल

सिगरेट और कैन्सर—एक रूसी पोस्टर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में अंग्रेजी पढ़ाती हूं।" और फिर किताबों में खो गयी। लेकिन क्या यह सच नहीं है कि वह सिगरेट न पी रही होती, तो उन महाशय की गृध्र-दृष्टि उसकी ओर ताकने की हिम्मत नहीं करती ?

पिछले दिनों बंबई में हृदय-विशेषज्ञों की एक बैठक में सर्वसम्मति से यह निश्चय किया गया कि बढ़ते हुए हृदय-रोग का बढ़ते हुए धूम्रपान से घनिष्ठ संबंध है और धूम्रपान के विरुद्ध आंदोलन शुरू करने में अब देर नहीं होनी चाहिये। पता नहीं यह निर्णय भी हमारे देश में किये जानेवाले और बहुतसे फैसलों, दावों और वादों की तरह बैठक की विवरण-पत्रिका में छपकर ही रह गया हो और अगले साल की बैठक में फिर इसी बात को लेकर मेजें पीटी जायें !

विशेष अतिथि

पेन्सिल्वेनिया (अमरीका) के जान्स्टाउन की १८८९ की बाढ़ बहुत प्रसिद्ध है। एक व्यक्ति, जो कि किसी प्रकार इस बाढ़ की चपेट से बच निकला था, जब तक जीता रहा बार-बार इस भयंकर बाढ़ का जिक्र किया करता था। जहां-कहीं दो आदमी मिल जाते, वह अपना बाढ़-पुराण लेकर बैठ जाता। अंत में, जब वह मरकर स्वर्ग पहुंचा, तो वहां संत पीटर ने उसका स्वागत करते ए कहा—"किसी चीज की आवश्यकता हो, तो कहिये गा। तुरंत पूरी कर दी जायेगी।" इस पर जान्स्टाउनवासी बोला—"श्रीमन्, तो एक मीटिंग बुला दीजिये, ताकि मैं लोगों को जान्स्टाउन की १८८९ की बाढ़ के अपने भयंकर अनुभव सुना सकूं।" संत पीटर मुस्कराये – "वाह ! जरूर यहां ऐसे कई लोग होंगे, जो आपका भाषण सुनकर प्रसन्न होंगे। निश्चित रहें, आपकी इच्छानुसार सारी व्यवस्था हो जायेगी।"

दूसरी शाम सभागृह में बड़ी भीड़ जमा हो गयी। ज्यों ही वह व्यक्ति भाषण देने मंच की ओर बढ़ा, पीछे से संत पीटर ने उसके कंधे पर हाथ रखा और बहुत धीमे-से उसके कान में कहा—"आपकी सूचना के लिए निवेदन कर दूं, श्रोताओं में हजरत नूह साहब भी बैठे हैं।"

* * *

यदि आप पश्चिम के किसी व्यक्ति के बारे में यह जानना चाहते हैं कि वह किस देश का रहनेवाला है, तो उसे किसी लड़की से मिला दीजिये। और देखिये, क्या होता है ! अगर वह अंग्रेज होगा, तो लड़की से हाथ मिलायेगा। फ्रांसीसी होगा, तो उसके हाथ का चुंबन लेगा। अमरीकी होगा, तो मिलन का समय (डेट) मांगेगा। और रूसी होगा, तो तार भेजकर, मास्को से पूछेगा –"इस परिस्थिति में क्या आदेश है ?" –अनुराग शर्मा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भारत का पूर्वांचल

असम के पुनर्घटन के प्रसंग में देश के पूर्वी प्रदेश पर एक विहंगम दृष्टिपात

देवेश ठाकुर

अक्टूबर १९६२ में हुए चीनी आक्रमण के बाद भारत के सीमांचल विशेष चर्चा और महत्व के विषय बन गये हैं। लंबे समय से उपेक्षित ये सीमांचल अब सरकारी विकास-योजनाओं के माध्यम से तेजी से विकसित हो रहे हैं।

प्रतिरक्षा की दृष्टि से वैसे तो सभी सीमा-प्रदेशों का अपना महत्व है; किंतु पूर्वी सीमांचल की स्थिति अन्य प्रदेशों की अपेक्षा कई दृष्टियों से अधिक गंभीर और महत्वपूर्ण है। विशेषत: असम और उपूसी प्रदेश आज हमारी उत्सुकता, चिंता, व्यग्रता और राजनीतिक हलचलों का कारण बने हुए हैं। इसलिए इन प्रदेशों के सामान्य भौगोलिक, ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक परिवेश को जान लेना उपयोगी है।

आज देश के सम्मुख बहुत-सी समस्याएं हैं। उनमें अपने आपको बाहरी आक्रमणों से बचाना तथा देश की भावात्मक एकता के लिए भूमि तैयार करना विशेष हैं। इसलिए ऐसे प्रदेशों की ओर ध्यान देना आवश्यक हो जाता है, जो किन्हीं कारणों से शेष देश की जीवन-धारा के साथ-साथ नहीं चल पा रहे हैं।

सामरिक और सीमा-सुरक्षा की दृष्टि से असम प्रदेश का भारत के मानचित्र में महत्वपूर्ण स्थान है। यह उत्तर-पूर्वी प्रदेश का एक विशिष्ट भाग है। इससे मिले हुए उपूसी, नागालैंड, मणिपुर और त्रिपुरा के प्रदेश हैं। असम जंगलों का प्रदेश कहा जा सकता है। ये जंगल दुर्भेद्य हैं। इसी कारण जागृति और विकास का आलोक यहां देर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से पहुंचा। यहां छोटी-बड़ी अगणित नदियां बहती हैं; लेकिन विख्यात ब्रह्मपुत्र का स्थान सर्वोपरि है। एक ओर जहां इस नदी से असम भूमि को प्राणदान मिलता है, वहीं दूसरी ओर इसकी बाढ़ से प्रतिवर्ष जन-धन की भारी क्षति होती है।

ब्रह्मपुत्र घाटी ५०० मील लंबी और ५० मील चौड़ी है। इसके उत्तर में हिमालय की लंबी शृंखला है तथा उत्तर-पूर्व में यह चीन के सीमाप्रांत का स्पर्श करती है। दक्षिण की ओर गारो, खासी और जयंतिया की पहाड़ियां हैं। इन पहाड़ियों का आंचल अत्यधिक वर्षावाला प्रदेश है। ये पहाड़ियां असम को वर्मा से अलग करती हैं। पाकिस्तान बन जाने के बाद से लगभग ३५ मील लंबी एक संकरी पट्टी इसे पश्चिम बंगाल से मिलाती है।

असम का महत्व चाय के बगीचों के कारण विशेष है, जिनमें लगभग ६ लाख मजदूर काम करते हैं। चाय के अतिरिक्त रेशम, कपास, काफी, शक्कर, कोयला तथा तेल भी यहां होता है।

असम राज्य की जनसंख्या लगभग १ करोड़ २५ लाख है। शिलांग इस प्रदेश की राजधानी है, जो खासी और जयंतिया पहाड़ियों पर लगभग ४ हज़ार फुट की ऊंचाई पर बसा हुआ है। गौहाटी, डिब्रूगढ़, सिलचर और तेजपुर यहां के महत्वपूर्ण नगर हैं। चीनी आक्रमण के बाद से तेजपुर का राजनीतिक महत्व बढ़ गया है। उपूसी के लिए तेजपुर से ही जाना पड़ता है।

मुगल बादशाह औरंगजेब ने १६६२ में असम को जीतने का प्रयास किया था। उस समय यहां पर अहोम वंशीय राजा जयध्वज (१६४८–१६६२) राज्य करता था। आक्रमण की सूचना पाकर जयध्वज नाग पहाड़ियों में जा छिपा। लेकिन वर्षाकाल आते ही उसने मुगल सेना पर धावा बोल दिया। विवश होकर मुगल सेनापति मीर जुमला शहाबुद्दीन को, जो बंगाल का सूबेदार भी था, संधि करनी पड़ी। कुछ समय के पश्चात् औरंगजेब ने राजा मानसिंह के बेटे रामसिंह को असम को जीतने के लिए भेजा; लेकिन रामसिंह भी वहां के मौसम से घबराकर जल्दी ही वापस आ गया। असम पर अहोम राजाओं का प्रभुत्व १८३ तक बना रहा। यहां इससे पूर्व कितनी ही जातियों ने अपने पैर जमाने चाहे; लेकि इस प्रदेश की वीर और लड़ाकू जातियों के सामने कोई नहीं हर सका।

जादू-टोने के प्रदेश कामरूप के नाम से विख्यात इस प्रदेश में अब आधुनिकता का संचार बड़ी तेजी से हो रहा है। यहां के लोगों में सामाजिक चेतना के साथ-साथ राजनीतिक जागरूकता भी बढ़ती जा रही है। आज असम में अनेक पहाड़ी जातियां की अलग पहाड़ी राज्य की मांग जोर पकड़ रही है। साथ ही इस समस्या के समाधान के रूप में केंद्रीय सरकार ने संघीय व्यवस्था की बात कही है।

पूर्ण स्वतंत्रता की मांग करनेवालों में मिजो का स्वर सबसे ऊंचा है। खासी और जयंतिया केवल स्वायत्त शासन चाहते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नियों पहाड़ों की आबादी १९६१ की जन-गणना के अनुसार २ लाख ६६ हजार है, जिसमें से २ लाख ३० हजार ईसाई हैं। लेकिन खासी और जयंतिया की ४ लाख ६२ हजार की आबादी में से केवल १ लाख ८२ हजार लोग ही ईसाई हैं, बाकी हिन्दू और अन्य धर्मावलंबी हैं। इन क्षेत्रों में ईसाइ-मत का प्रचार निपट गरीबी के कारण हुआ है। इन ईसाई लोगों द्वारा पृथक्ता की भावना और स्वतंत्र पहाड़ी राज्य की मांग को प्रबल समर्थन मिल रहा है।

पूर्वी सीमांचल का दूसरा महत्वपूर्ण प्रदेश उपूसी (नेफा) है। ३०,५०० वर्गमील तक फैले हुए इस विशाल प्रदेश की संस्कृति, राजनीति, सामाजिक स्थिति तथा विभिन्न बातियों के विषय में सामान्यतः लोगों को विशेष जानकारी नहीं है। किंतु चीनी आक्रमण के बाद इस क्षेत्र का महत्व बढ़ा है और जब से विद्रोही नागाओं ने अपने स्वतंत्र राष्ट्र की मांग ऊंची की है, तब से पत्र-पत्रिकाओं में नागालैंड का नाम महत्वपूर्ण स्थान पाने लगा है। बहुत-से लोग नागा-हिल्स को ही उपूसी मान लेने की गलती करते हैं। किंतु नागा प्रदेश उपूसी के तिराव प्रदेश का एक भाग है और संपूर्ण उपूसी का केवल पांचवां हिस्सा है। आजकल उक्त नागा प्रदेश की शासन-व्यवस्था तिराव प्रदेश से स्वतंत्र है और नागा प्रदेश में स्वायत्त शासन लागू है।

उपूसी के पश्चिमी भाग में भूटान, उत्तर-पूर्व में तिब्बत तथा सिक्यांग और दक्षिण-पूर्व में बर्मा की सीमाएं पड़ती हैं। ये सीमाएं दुर्गम पहाड़ियों से घिरी हुई हैं। ऊबड़-खाबड़ मार्गोंवाले तथा यातायात के साधनों से प्रायः विहीन इस प्रदेश में आज राजनीतिक तथा राष्ट्रीय सुरक्षा के कारणों से विकास की गतिविधियां तीव्र हो गयी हैं।

कामेंग, सुबानसिरि, सियांग, लोहित, तिराव तथा त्वनसांग-नागा प्रदेश नामक छः भागों में उपूसी विभक्त है। ये भाग असम को तीन ओर से घेरे हुए हैं। कामेंग असम के पश्चिमी भाग में, सुबानसिरि उत्तर-पश्चिम में, सियांग उत्तर में, लोहित उत्तर-पूर्व में तथा तिराव और त्वनसांग पूर्व में स्थित हैं। इन प्रदेशों में विभिन्न प्रकार की उप-जातियां निवास करती हैं, जिनकी अपनी भिन्न-भिन्न सामाजिक मर्यादाएं, रीति-रिवाज, भाषा-बोलियां, पोशाक तथा नैतिक मान्यताएं हैं।

कामेंग सीमा-प्रदेश उपूसी के अन्य सीमा-प्रदेशों से अपेक्षाकृत विकसित और संपन्न है। कामेंग नदी के तट पर बसा हुआ यह सीमा-प्रदेश भूटान और तिब्बत के बीच में स्थित है। तिब्बत जाने के लिए यहां से तीन मार्ग हैं। इसीलिए पिछले चीनी आक्रमण के दौरान इस प्रदेश के बोमडिला नामक पहाड़ी स्थान पर शत्रु चढ़ आये थे और यहां पर स्थित भारतीय राजनीतिक अफसर के हेडक्वार्टर को उन्होंने एक महीने तक अपने कब्जे में रखा। यह प्रदेश प्रकृति का सुंदर पलना है। बोमडिला से ७५ मील दूर स्थित सी-ला इस प्रदेश का दूसरा मुख्य स्थान है। यहां बड़ी-बड़ी झीलें हैं और वर्ष-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सरदर्द ?

एक ही सेरिडॉन से

'रोश'

ग़ायब...

...और आपमें एक नयी फुर्ती!

यही तो है *सेरिडॉन* की खूबी!

जब कभी दर्द हो तो सेरिडॉन लीजिए। हो सकता है कि दूसरे तरीक़ों से भी इतनी ही तेज़ी से दर्द दूर हो जाय लेकिन सिर्फ़ सेरिडॉन ही ऐसे नये-घुले फ़ार्मूले के अनुसार बनायी जाती है जिसके कारण दर्द के साथ-साथ उससे पैदा होनेवाला तनाव भी दूर हो जाता है और आपमें एक नयी फुर्ती भी आ जाती है। इसी में तो है सारा फ़र्क़। इसे लेते ही आपके विचार सुलझने लगते हैं और आपको काम-काज व हँसी-मज़ाक़ में फिर से मज़ा आने लगता है। सेरिडॉन तेज़ी से दर्द दूर करती है और पूरा-पूरा आराम पहुँचाती है। सेरिडॉन हमेशा अपने पास रखिए!

दाँत के दर्द, बदन के दर्द तथा तबीयत की आम बेचैनी और पीड़ा में भी

सेरिडॉन लीजिए!

सेरिडॉन दर्द दूर करती है, आराम पहुँचाती है और ताज़गी भी देती है! बच्चों के लिए ½ से ¾ टिकिया तक ही काफ़ी है।

'रोश' उत्पादन

सोल डिस्ट्रिब्यूटर्स: ग्लेक्सो लिमिटेड

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भर वर्षा होती रहती है। तोवांग का विश्व प्रसिद्ध बौद्ध मठ भी इसी प्रदेश में स्थित है। तोवांग का अर्थ है 'टट्टुओं का धनी'। टट्टू इस प्रदेश की एकमात्र सवारी है। तोवांग बोमडिला की ही भांति बहुत रम्य और प्राकृतिक आकर्षणों से पूर्ण है। तोवांग मठ भारत का सबसे बड़ा बौद्ध मठ है, जिसमें एक साथ ६०० लामा रह सकते हैं।

इस सीमा-प्रदेश में मोनपा, बुगुन, ह्रूसो, मिजि तथा डाफला जातियां रहती हैं। मोनपा जाति कलाप्रिय और सुसंस्कृत है तथा कृषि के लिए सुप्रसिद्ध है। ये लोग तिब्बती पोशाक पहनते हैं और लकड़ी के फर्शवाले, पत्थरों से निर्मित घरों में रहते हैं। डाफला इस प्रदेश की अन्य प्रमुख जाति है, जो वीरता के लिए प्रसिद्ध है। डाफला लोग बड़े साहसी और स्वतंत्रताप्रिय होते हैं। औरंगजेब के समय में इन्होंने बहुत उपद्रव किये और मुगल शासन के लिए इन्हें वश में करना हमेशा कठिन बना रहा। कामेंग प्रदेश के अधिकांश लोग बौद्ध धर्म के अनुयायी हैं।

सुबानसिरि नदी के किनारे बसा हुआ सुबानसिरि प्रदेश नेफा का अन्य महत्वपूर्ण प्रदेश है। इस प्रदेश में भी निरंतर वर्षा होती रहती है, जिसके कारण यहां की मिट्टी बहुत नरम है। यह नेफा का काफी पिछड़ा हुआ प्रदेश रहा है। सन १९४० तक यहां यातायात के साधन नहीं थे। आजादी के बाद १९५८ में लगभग ६-७ साल के अनवरत परिश्रम के फलस्वरूप भारतीय इंजीनियरों ने जीरो से लेकर किमिन तक पहली सड़क तैयार की।

इस प्रदेश की मुख्य जातियों में अपातानी, तग्नी, गैंलग और हिलमिरि के नाम उल्लेखनीय हैं। अपातानी लोग हिमालय के पूर्वी कोने में ५,००० फुट की ऊंचाई पर २० वर्गमील में फैले हुए सात गांवों में रहते हैं। इनकी संख्या लगभग २० हजार है। सुबानसिरि की अन्य जातियों से इनकी बोली भिन्न है। इनका प्रदेश सुरम्य है तथा यहां के लोग खूब मजबूत और परिश्रमी होते हैं। ये लोग बहुत ही पुराने किस्म के औजारों से खेती करते हैं। यहां तक कि ये हल का उपयोग भी नहीं करते। खेतों की गोड़ाई छोटी-छोटी कुदालियों से की जाती है। ये वर्ष में दो फसलें उगाते हैं। साथ ही वाड़ियों में तंबाकू, साग-सब्जी और फल उगाये जाते हैं। अनाजों में धान, बाजरा और मक्का उगायी जाती है। अपातानी लोग बहुत अच्छे बुनकर होते हैं तथा साथ ही बेंत का काम भी बड़ी कुशलता के साथ करते हैं।

इनके गांवों में पंचायतें होती हैं। मुखिया का निर्णय सर्वोपरि होता है। विवाह आदि के संबंध में ये उदार होते हैं। लड़के-लड़की दोनों को अपना संगी चुनने की स्वतंत्रता होती है। विवाह से पहले ही ये एक दूसरे के घर में रहने लगते हैं। किंतु विवाह से पूर्व गर्भाधान को अच्छा नहीं समझा जाता। अपातानी लोगों का जीवन सादा तथा सरल होता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आयुर्वेद सेवाश्रम की

महान भेंट

जीतिए!

सेवाश्रम उत्पादन उदयपुर

१,००,००० रुपये

(एक लाख रुपये) १,१०० से भी ज्यादा इनाम

इनमें से कोई भी एक शानदार इनाम जीतिए।

पहला इनाम: एम्बैसेडर कार

यह बिल्कुल आसान है!

आपको बस यही करना है कि आप सेवाश्रम के निकटतम विक्रेता के पास जाइए और उन से महान् भेंट-योजना का मुफ्त प्रवेश-प्रपत्र माँगिए, जिसमें प्रतियोगिता का पूरा ब्यौरा दिया हुआ है। प्रवेश प्रपत्र में १० वक्तव्य दिए गए हैं। आप उन्हें ध्यान से पढ़कर यह तैयार कीजिए कि आपके विचार में उन में से कौन-सा वक्तव्य सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है। उसके सामने १ नम्बर लिखिए। उसके बाद यह तैयार कीजिए कि १ नम्बर के बाद कौन-सा वक्तव्य सबसे महत्वपूर्ण है, और उसके सामने २ नम्बर लिखिए। इसी प्रकार प्रपत्र के सम्पूर्ण दस के दस वक्तव्यों के सामने नम्बर लिखिए। दस वक्तव्यों के सामने नम्बर लिखने के अलावा आपको आयुर्वेद सेवाश्रम के उत्पादनों को अधिक लोकप्रिय बनाने के लिए एक वाक्य या छोटा-सा नोट लिखिए।

अन्य प्रतियोगियों की तरह इस प्रतियोगिता में कोई पूर्वनिश्चित मुकाबला इस नहीं है बल्कि स्वयं प्रतियोगियों के बहुमतानुसार, इलैक्ट्रॉनिक मशीनों द्वारा सर्वश्रेष्ठ हल का वर्गीकरण किया जाएगा।

महान् भेंट-योजना से सम्बन्धित सेवाश्रम का कोई भी उत्पादन खरीदने वक्त प्रवेश-टोकन लेना न भूलिए।

आयुर्वेद सेवाश्रम प्रायवेट लिमिटेड

उदयपुर • वाराणसी • हैदराबाद

बजाज समूह का प्रतिष्ठान

अन्तिम तारीख : ३१ जुलाई १९६८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मगर तग्नी लोगों को जीवन-निर्वाह के लिए कड़ा परिश्रम करना पड़ता है। भूख और बीमारी से ये निरंतर लड़ते रहते हैं। वैसे अब तग्नी और हिलमिरि जातियों के जीवन में काफी परिवर्तन आ गया है। पूरे प्रदेश में पक्की सड़कें बन गयी हैं, आवागमन और यातायात आसान हो गया है। फिर भी विकास के क्षेत्र में ये लोग अभी काफी पिछड़े हुए हैं। भारत सरकार ने इस प्रदेश के विकास पर काफी बल दिया है। विशेष रूप से शिक्षा और स्वास्थ्य की दिशा में नेफा सरकार काफी जागरूक है।

सियांग नदी के किनारे बसे हुए भू-भाग को सियांगप्रदेश कहते हैं। यह नेफा का तीसरा विशिष्ट प्रदेश है। वस्तुतः सियांग ब्रह्मपुत्र नदी का ही नाम है। तिब्बत की सीमा को छोड़कर जब वह भारत में प्रवेश करती है, तो सियांग कहलाने लगती है। तिब्बत में इसका नाम सांगपो है। सुबानसिरि की भांति इस प्रदेश में भी साल भर वर्षा होती रहती है। पहाड़ियों की मिट्टी कोमल है; अतः सड़क-निर्माण का कार्य यहां बड़ा दुष्कर है।

पासीघाट यहां का सब-डिविजनल हेड-क्वार्टर है। इस प्रदेश की उन्नति और विकास का विशेष कारण है यहां पर ईसाई मिशनरियों द्वारा किया गया प्रचार-कार्य। ईसाई-प्रचारकों ने यहां की जातीय भाषा को रोमन लिपि में लिखकर उसमें बाइबिल का अनुवाद प्रकाशित किया। १९५० से पहले यह प्रदेश काफी समृद्ध हो चुका था। किंतु १९५० में भूकंप से यहां भयंकर तबाही हुई और अभी तक उसकी पूर्ति नहीं की जा सकी है। एलोंग यहां का अन्य महत्वपूर्ण स्थान है, जो अपनी स्वास्थ्यप्रद जलवायु के लिए विख्यात है।

यहां के लोग बड़े कलाप्रेमी होते हैं और इनकी वेश-भूषा रंग-बिरंगी होती है। विख्यात आबर जाति यहीं निवास करती है। (आबर जाति पर 'नवनीत' के जनवरी ६८ के अंक में विस्तृत लेख छप चुका है।)

सियांग प्रदेश में बहुत-सी जातियां रहती हैं। नमें मिनयोंग, पदम, शियोंग तथा पासी जातियां प्रमुख हैं। मियोंग लोग बुद्धिमान और परिश्रमी होते हैं। पुरुषों की वेश-भूषा पश्चिमी वेश से प्रभावित है और महिलाएं बर्मी महिलाओं की भांति वस्त्र पहनती हैं। इस प्रदेश में मिनयोंगों की संख्या लगभग १८ हजार है। ये लोग मुख्यतः चावल की खेती करते हैं। गांवों में पंचायती राज्य की व्यवस्था है। मिनयोंग समाज में स्त्रियों का स्थान महत्वपूर्ण है। विवाह माता-पिता की इच्छा से होता है। यहां भी अब नयी चेतना के चिह्न स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं।

उपरी का लोहित सीमा-प्रदेश अन्य प्रदेशों की भांति कम विकसित और अत्यधिक दुर्गम है। यह लोहित नदी के किनारे पर बसा हुआ है। विदेशी लोगों ने समय-समय पर इस प्रदेश का भ्रमण किया है; लेकिन बहुत कम लोग इस प्रदेश के विषय में अच्छी राय बना सके हैं। केवल डाक्टर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सदा से पूर्वी भारत नृत्य की एक मोहक और सप्राण परंपरा का संरक्षक रहा है।

वेरियर एल्विन ने यहां की जातियों को विनम्र, उत्साही तथा आतिथ्य-प्रिय बत-लाया है।

इस प्रदेश के तीन-चौथाई भाग में दुर्गम पहाड़ियां फैली हुई हैं। ब्रह्मपुत्र नदी इसके मध्य में से होकर बहती है। आबादी बहुत कम है। लोग एक दूसरे से काफी दूरी पर रहते हैं। यहां भूमि हमेशा कंपित होती रहती है, जिससे लोगों को हमेशा प्राणों का भय बना रहता है। १९५० के भूकंप से लोहितवासियों को अपार क्षति हुई। यह प्रदेश लोहित घाटी और डिबोंग घाटी नामक दो भागों में बंटा हुआ है। पूरे प्रदेश में तिब्बत, चीन और बर्मा के लोग आकर बस गये हैं।

लोहित सीमा-प्रदेश में मिश्मी, खंप्टी और सिंगफो जातियां निवास करती हैं। इसमें मिश्मी जाति के लोग विशिष्ट हैं। ये स्नेहशील, उदार, विनम्र और परिश्रमी होते हैं। मिश्मी पुल बनाने तथा बेंत का काम करने में पटु होते हैं। इनके गांवों में बस्ती बहुत कम होती है। किसी-किसी गांव में तो केवल दो मकान होते हैं। हां, घर बड़े होते हैं और एक घर में १० से लेकर ६० मनुष्य तक रह सकते हैं। मिश्मी तंबाकू और अफीम के शौकीन होते हैं। वे अच्छे बुनकर भी होते हैं।

खंप्टी लोहित प्रदेश के चौखम क्षेत्र में रहनेवाली जाति है। ये मूलतः बर्मी हैं और शरीर से स्वस्थ और ऊंचे होते हैं। ये ताई परिवार की भारत-चीनी भाषा बोलते हैं। इनकी अपनी लिखित भाषा है। ये बौद्ध धर्म की हीनयान शाखा के अनुयायी हैं।

खंप्टियों की भांति सिंगफो भी बौद्ध धर्म के अनुयायी हैं। इनका मुख्य उद्योग खेती है। पिछली सदियों में यह लड़ाकू जाति मानी जाती थी। ये लोग देवी-देवताओं में बहुत विश्वास करते हैं तथा बीमारी आदि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के उपशम के लिए पशुओं की बलि चढ़ाते हैं। इस जाति के लोगों की अवश्य ही कोई लिपि रही होगी, जो अब नष्ट हो गयी है।

तिराप नदी के किनारे बसा हुआ तिराप सीमा-प्रदेश उपूसी का एक अन्य महत्वपूर्ण भाग है। तिराप के उत्तर में लोहित सीमा-प्रदेश, पूर्व में बर्मा, दक्षिण में नागा हिल्स व तेनसांग प्रदेश तथा पश्चिम में असम हैं। उपूसी के अन्य प्रदेशों की अपेक्षा यहां आवागमन के साधन अधिक सुलभ हैं। खोनसा यहां का डिविजनल हेडक्वार्टर है। संपूर्ण तिराप सुरम्य तथा हरा-भरा है। यहां के जंगलों में हाथियों की बहुतायत है।

तिराप के उत्तर में पांगसू दर्रा स्थित है। सदियों से इस दर्रे का सांस्कृतिक और सामरिक महत्व रहा है। पुराने समय में इसी दर्रे से अहोम, खंप्टी तथा सिंगपो लोगों ने भारत में प्रवेश करके असम की संस्कृति को प्रभावित किया। यहीं से आकर बर्मी सेना ने असम पर आक्रमण किया था। दूसरे विश्वयुद्ध में भी भारतीय सेनाओं ने जापानी सेना को घेरने के लिए यहीं से कूच किया था।

तिराप प्रदेश के दक्षिण में नागालैंड स्थित है। नागा हिल्स के मार्ग बहुत ढलुवा और इसलिए दुर्गम हैं। यहां जमीन पर कीचड़-ही-कीचड़ दिखाई देती है। आज भी यह सांप-बिच्छुओं और अन्य विषैले जंतुओं का प्रदेश कहा जाता है। पहले यहां पर अहोम जाति के लोगों का शासन था। नागाओं ने १२२६ में सबसे पहले अहोमों के विरुद्ध विद्रोह किया था। अहोम जाति स्वयं बहुत क्रूर थी। नागाओं ने अहोम शासकों से ही क्रूरता का पाठ पढ़ा है।

स्वतंत्रता के बाद से नागा जाति में बड़ा परिष्कार हुआ है। इनमें परस्पर सहयोग और सहकार की भावना बल पकड़ रही है। नागा खेती करते हैं और बड़े अच्छे शिकारी समझे जाते हैं। हाथी का शिकार इन्हें बहुत प्रिय है। इनमें विवाह से पहले लड़के-लड़कियां साथ-साथ रहते हैं और यदि लड़की गर्भवती हो जावे, तो दोनों का विवाह हो जाता है।

नागा जाति नौवटे तथा बांचू नामक दो भागों में बंटी है। नौवटे अपने को हिन्दू मानते हैं तथा वैष्णव धर्म का पालन करते हैं। बांचू प्रकृति-पूजक होते हैं। उनमें बहुत से अंधविश्वास तथा प्राचीन मान्यताएं अभी तक प्रचलित हैं।

देश की आजादी के बाद नागालैंड ने समूचे राष्ट्र का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। भारत की आजादी के साथ नागा जाति ने अपनी स्वतंत्रता की मांग पेश की। इन नागाओं के दो गुट हैं। एक गुट स्वायत्त शासन चाहता था और जब से नागालैंड में स्वायत्त शासन आरंभ हुआ है, तब से शांत है और भारत सरकार के साथ पूरा सहयोग कर रहा है। दूसरा गुट उन भूमिगत विद्रोही नागाओं का है, जो नागालैंड को एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में देखना चाहते हैं। नकी अपनी सैनिक तथा शासन-व्यवस्था है और ये अपने लक्ष्य की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कोलगेट से दिनभर दुर्गंधमय श्वास से मुक्त रहिए और दन्त-क्षय को रोकिए!

क्योंकि: एक ही बार ब्रश करने से कोलगेट डेन्टल क्रीम ८५ प्रतिशत दुर्गन्ध प्रेरक और दंत क्षयकारी जीवाणुओं को दूर कर देता है।

वैज्ञानिक परीक्षणों से सिद्ध हो गया है कि कोलगेट १० में से ७ मामलों में दुर्गन्धमय सांस को तत्काल दूर कर देता है और खाना खाने के तुरन्त बाद कोलगेट विधि से ब्रश करने पर दन्त-चिकित्सा के समस्त इतिहास में पहले के किसी भी समय की तुलना में अधिक व्यक्तियों का अधिक दन्त-क्षय दूर होता है। केवल कोलगेट के पास ही यह प्रमाण है।

बच्चे कोलगेट से अपने दांतों को नियमित रूप से ब्रश करने की आदत आसानी से पकड़ लेते हैं क्योंकि इसकी देर तक रहने वाली पिपरमेंट जैसी खुशबू उन्हें प्यारी होती है।

यदि आपको पाउडर पसंद हो तो कोलगेट टूथ पाउडर ले भी ले सकती हैं... एक डिब्बा महीनों तक चलता है।

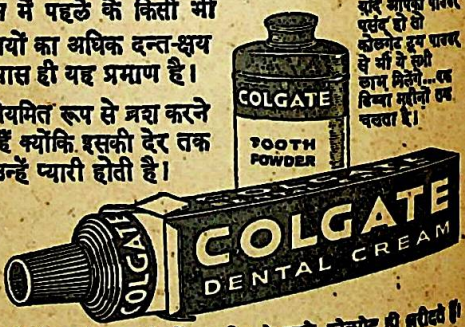

नियमित रूप से कोलगेट द्वारा ब्रश कीजिये ताकि इससे आपकी सांस अधिक साफ़ और ताजा तथा दांत अधिक सफ़ेद हों।

...सारी दुनिया में अधिक से अधिक लोग किसी दूसरी तरह के डेंटल क्रीम के बदले कोलगेट ही खरीदते हैं।

DCG. 35 H.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पूर्ति के लिए हर तरह से कोशिश कर रहे हैं। इनका तर्क यह है कि आजादी से पूर्व ब्रिटिश शासन के बावजूद उनकी स्वाधीनता बनी रही थी और अब भी वे स्वाधीन राष्ट्र के रूप में बने रहना चाहते हैं।

विद्रोही नागाओं की गतिविधियां देश के लिए गंभीर खतरा उत्पन्न कर सकती हैं। पिछले महीनों (नवंबर-दिसंबर १९६७) में भूमिगत नागाओं ने तोड़-फोड़ की कार्रवाइयां बढ़ा दी हैं और इससे उनका आंदोलन तेज होने की संभावनाएं बढ़ गयी हैं। एक ओर वे भारत-सरकार से शांति-वार्ता करने की बात कहते हैं और दूसरी ओर चीन तथा पूर्वी पाकिस्तान से हथियार और प्रशिक्षण पाने के लिए उनकी साठ-गांठ चलती है। देश के सीमा क्षेत्र में इस प्रकार की कार्रवाइयां वस्तुतः राष्ट्रीय सुरक्षा की दृष्टि से कभी भी अत्यधिक संकटपूर्ण सिद्ध हो सकती हैं।

आशा की एकमात्र किरण यह है कि अब भूमिगत नागा नेताओं में भी परस्पर फूट पड़ गयी है। अभी पिछले दिनों दो भूमिगत नेताओं कुघातो सुखई तथा लोथा ने भूमिगत नेताओं की सलाहकार समिति से संबंध-विच्छेद कर लिया, जिससे विद्रोही नागाओं में परस्पर मतभेद और अधिक बढ़ जाने की संभावना हो गयी है।

वस्तुतः इस प्रकार के विद्रोहों और विरोधों का मूल स्रोत इस प्रदेश की आर्थिक अवस्था है। यह कहना अनुचित नहीं होगा, कि उपर्युक्त प्रदेश में प्रगति और विकास की रफ्तार बहुत धीमी रही है। जब तक यहां के खेतों में पर्याप्त अनाज नहीं उगाया जाता, बच्चों को शिक्षा और ज्ञान के समुचित अवसर नहीं दिये जाते, जनता की राजनीतिक चेतना का उचित विकास नहीं किया जाता, आधुनिक वैज्ञानिक उपलब्धियां उन्हें उपलब्ध नहीं करायी जातीं, तब तक उनकी दृष्टि और सोचने के ढंग में परिवर्तन आना कठिन है। संतुलित दृष्टि और विकास के अभाव में अस्वस्थ प्रवृत्तियां बढ़ती रहेंगी और एक के बाद दूसरी समस्याओं का तांता लगा रहेगा, जिससे राष्ट्रीय शक्ति नष्ट होती रहेगी।

एक बात और। इस प्रदेश में ईसाई मिशनरियों ने काफी काम किया है। मिशनरियों से प्रभावित क्षेत्रों में ही यह अलगाव की प्रवृत्ति विशेष रूप से बढ़ रही है। मिशनरियों से प्रभावित जातियां उन्हीं को अपना एकमात्र हितैषी मानकर शेष देश से अपने को अलग समझती हैं।

यह आवश्यक है कि राष्ट्र की एकता की खातिर यहां की जन-जातियों की परंपरा और संस्कृति के अनुकूल उनके विकास की सुदृढ़ योजना बनाकर उसे कार्यान्वित किया जाये। उनमें विश्वास उत्पन्न किया जाये और उन्हें यह अनुभव कराने का प्रयत्न किया जाये कि शेष राष्ट्र उनके प्रत्येक कठिनाई और समस्या में उनके साथ है।

ऐसा कुछ ठोस कार्य करने से ही हम इन अत्यधिक महत्वपूर्ण सीमा-प्रदेशों को सुदृढ़ और सुरक्षित बनाने में सफल हो सकते हैं और इसी में देश का हित निहित है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तंदुरुस्ती हजार नियामत :

गठिया

गंगाप्रसाद गौड़ 'नाहर'

गठिया, ग्रंथिवात या अंग्रेजी 'गाउट' एक ही रोग के अलग-अलग नाम हैं। गठिया रोग पैरों से, विशेषतः पैर के अंगूठे से आरंभ होता है और धीरे-धीरे बढ़कर शरीर के अन्य छोटे-छोटे जोड़ों या गांठों में फैल जाता है।

क्यों होता है ?

स्वस्थ व्यक्ति का रक्त क्षार-प्रधान होता है। परंतु रक्त की यह क्षार-प्रधानता तभी कायम रह सकती है, जब हमारा भोजन क्षार-प्रधान हो। किंतु बहुधा लोग असंतुलित भोजन करते हैं और उनके भोजन में अम्लकारक खाद्यों—जैसे, पालिश किया हुआ चावल, चोकर निकाला हुआ आटा, सफेद चीनी, दालें, तली-भुनी चीजें, चाट-चटनी, अचार-खटाई, मिर्च-मसाले तथा मांस-अंडा आदि—की अधिकता रहती है, और क्षार पैदा करनेवाले खाद्य—फल और तरकारी आदि—की मात्रा आधे से भी कम हो जाती है।

ऐसी अवस्था में अम्लता शरीर की अस्थियों की ओर, विशेषतया जोड़ों की ओर आकर्षित होती है; क्योंकि अस्थियां मुख्यतः चूने (कैल्शियम) की बनी होती हैं जो क्षार है। पर अस्थियों से क्षार अलग तो हो नहीं पाता, अतः यह अम्लता अस्थियों पर चिपक जाती है। इससे जोड़ों के हिस्से में दर्द एवं कठिनाई होती है और इस तकलीफ को ही गठिया कहा जाता है।

रूप और कार

गठिया कई प्रकार का होता है। किसी में शरीर के कुछ जोड़ों में कभी-कभी ही दर्द होता है; किसी में कुछ खास-खास जोड़ों में दर्द होता है; किसी में कुछ खास जोड़ों में बराबर दर्द बना रहता है। किसी गठिया में दर्द एक जोड़ से दूसरे और दूसरे से तीसरे में दौड़ता हुआ प्रतीत होता है। और कोई गठिया तो ऐसा दुःखदायी होता है कि रोगी चारपाई से उठ नहीं सकता। ऐसे गठिया को अंग्रेजी में 'रह्यूमेटाइड आर्थराइटिस' कहते हैं।

गठिया आक्रांत स्थान पर सूजन और दर्द होता है तथा कभी-कभी वह स्थान लाल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और लाल भी हो जाता है और उसे छूने या हिलाने-डुलाने से तकलीफ बढ़ जाती है। गठिया में रात्रि के पिछले भाग में, यानी सूर्योदय से थोड़ा पहले रोगी अधिक तकलीफ महसूस करता है। उस वक्त सोते हुए रोगी की नींद गठिया की तकलीफ से प्रायः टूट जाती है। गठिया के साथ अक्सर ज्वर भी होता है, जो प्रायः १०२ डिग्री से आगे नहीं बढ़ता। रोग की बढ़ी हुई दशा में रोगी को कब्ज, सिरदर्द, स्नायविक उत्तेजना, चिड़चिड़ापन, अस्थिरता, अधीरता, तृषा तथा मूत्र-दोष आदि उपसर्ग रोग अधिक सताते हैं।

सात्विक, सप्राण भोजन

ऊपर कह आये हैं कि जब शरीर में अम्लता बढ़ जाती है और क्षारता कम हो जाती है, तो गठिया रोग के होने की संभावना दृढ़ हो जाती है। उत्तम स्वास्थ्य के लिए शरीर में ८० प्रतिशत क्षार और २० प्रतिशत अम्ल होने चाहिये। अतः गठिया से बचने का प्रथम उपाय है कि खान-पान ऐसे रखा जाये, जिससे शरीर में अम्लता की वृद्धि न हो। इसके लिए भोजन में फलों और सब्जियों की मात्रा अधिक और अन्न की मात्रा कम होनी चाहिये। साथ ही सात्विक और सप्राण भोजन करना चाहिये।

चोकर मिले आटे की रोटी, छिलकों-वाली दाल, कना सहित चावल, छिलकों सहित साग-भाजी, कच्ची सब्जियों का सलाद, कच्चा और धारोष्ण दूध, फल, मेवे, मट्ठा, दही, शहद आदि सात्विक और सप्राण भोजन कहलाते हैं।

भोजन अधिक नहीं करना चाहिये; प्रत्येक ग्रास को भली भांति चबाकर निगलना चाहिये; भोजन के बीच में ज्यादा पानी नहीं पीना चाहिये; २४ घंटे में केवल दो बार और अधिक-से-अधिक तीन बार भोजन करना चाहिये। यदि भोजन संबंधी इन सामान्य नियमों का कड़ाई के साथ पालन किया जाये, तो गठिया होने की आशंका नहीं रह जाती।

प्राकृतिक उपचार

रोगी को अपने शारीरिक बल के अनुसार कुछ दिनों तक दोनों वक्त एनिमा लेकर उपवास करना चाहिये; फिर कुछ दिनों तक केवल फलों के रस पर रहना चाहिये और एनिमा जारी रखना चाहिये। तत्पश्चात् कुछ दिनों तक केवल फल खाकर रहने के बाद धीरे-धीरे सादे और साधारण भोजन पर आना चाहिये। साथ ही उसे निम्नलिखित उपचार करना चाहिये :

१. आधे घंटे तक सिर, चेहरे और रोगवाले स्थान को केले की हरी पत्तियों से ढककर नंगे बदन धूप में बैठना चाहिये। उसके बाद ठंडे पानी से भीगे और निचोड़े तौलिये से समूचे शरीर को पोंछ डालना चाहिये, या ठंडे पानी से नहा लेना चाहिये। सप्ताह में तीन बार ऐसा करना चाहिये।

२. गठियावाले अंश को दिन में तीन बार आधे घंटे तक गर्म जल में डुबाकर रखने या उस पर भाप देने के बाद, उस पर ठंडे जल में भीगे और निचोड़े हुए कपड़े

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पनामा सिगरेटें

एक पनामा सिगरेट सुलगाइये पहले ही कश में उत्तम वर्जीनिया तम्बाकुओं के बढ़िया स्वाद से आपकी तबीयत खुश हो जायगी। वही मज़ा हर कश में है...आखिरी कश में भी!

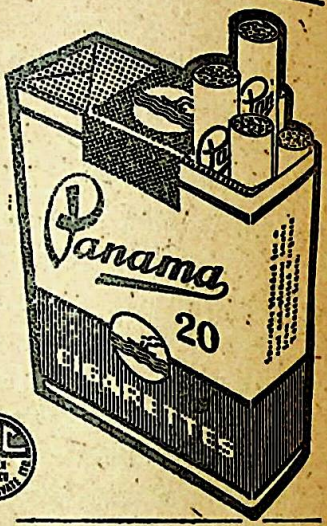

आखिरी कश तक मज़ेदार

गोल्डन टोबॅको कंपनी प्राइवेट लिमिटेड, बम्बई-५६

भारत में इस प्रकार का सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्योग

GT (P) 674 HIN Greens' Advts.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की पट्टी रखनी चाहिये। पट्टी के गर्म हो जाने पर उसे थोड़ी-थोड़ी देर में बदलते रहना चाहिये।

३. गठिया के रोगी को जल प्रचुर मात्रा में पीना चाहिये। सुबह-शाम गर्म पानी में कागजी नींबू का रस निचोड़कर जरूर पीना चाहिये। गठिया के रोगी को दूध के साथ किशमिश का प्रयोग करने से बड़ा लाभ होता है।

४. पुराने गठिया में १४ दिनों तक फलों के रस पर रहने और रोज एनिमा लेने के बाद सुबह १० मिनिट का उदर-स्नान और शाम को ७ मिनिट मेहन-स्नान कर लेना चाहिये तथा कब्ज दूर होने तक रोज गर्म जल का एनिमा लेना चाहिये। (उदर-स्नान, मेहन-स्नान और एनिमा की विधियां आगे समझायी गयी हैं।) साथ ही हर तीसरे दिन एप्सम साल्ट-बाथ लेना चाहिये। दोपहर को ठंडा स्पंज-बाथ तथा घर्षण-स्नान करना चाहिये।

एनिमा लेना : किसी तख्ते या कड़ी खाट पर उसके पैताने को सिरहाने से ४ इंच ऊंचा रखकर और पैरों को उकड़ू खींचे हुए चित लेटकर एनिमा लेना चाहिये। एनिमा के बर्तन को लेटने की जगह से ४ फुट की ऊंचाई पर दीवार में एक कील गाड़कर टांगना चाहिये और उसमें (बालिगों के लिए) लगभग ढाई सेर गुनगुना पानी भरना चाहिये। टोंटी को खोलकर थोड़ा पानी निकाल देना चाहिये। फिर गुदा में डालनेवाली नली पर चिकनाई चुपड़ देनी चाहिये। तब उसे गुदा-मार्ग में धीरे से एक इंच तक प्रवेश कराकर भीतर पानी जाने देना चाहिये।

भीतर पानी जाते समय पेडू को धीरे-धीरे बायें से दायें को मलना चाहिये और जब सब पानी अंदर जा चुके, तो नली को निकालकर और थोड़ी देर रुककर उसी प्रकार पेडू को दायें से बायें मलना चाहिये, फिर शौच जाना चाहिये।

उदर-स्नान : टिन के बने एक कुर्सी-नुमा खास टब में ठंडा पानी इतना भरें कि उसमें बैठने पर पानी नाभि तक आ जाये। पैर टब के बाहर रहेंगे; उन्हें आराम से किसी चौकी पर रखा जा सकता है। रोगी की पीठ टब के पिछले भाग से लगी रहेगी। टब में बैठने के बाद दायें हाथ में एक खुरदरा तौलिया लेकर उससे पानी में डूबे हुए पेडू को दायें से बायें और बायें से दायें धीरे-धीरे मलना चाहिये।

स्नान के बाद शरीर के भीगे भाग को पोंछकर और कपड़ा पहनकर टहलने निकल जाना चाहिये या कोई हल्की कसरत करनी चाहिये, या कंबल ओढ़कर लेट रहना चाहिये, ताकि बदन गर्म हो जाये।

मेहन-स्नान : इस स्नान के लिए उदर-स्नान वाले टब में १ फुट लंबी, ६ इंच ऊंची और ६ इंच चौड़ी का की चौकी या ईंट रखें। टब में इतना पानी भरें कि पानी चौकी के चारों तरफ तक आ जाये। पानी ठंडा होना चाहिये।

अब चौकी पर नंगे बदन बैठें। जननेंद्रिय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के घूंघट को बायें हाथ की उंगलियों के बीच पकड़कर खाल के अग्र भाग को किसी मुलायम कपड़े को टब के पानी में भिगो-भिगोकर उससे धीरे-धीरे छूएं या रगड़ें। स्त्रियां इस स्नान को करते वक्त अपनी योनि के दोनों तरफ के बड़े ओंठों को धीरे-धीरे धोयें।

इस स्नान के बाद उदर-स्नान की भांति ही शरीर को गर्म करने के लिए टहलना, कसरत करना या कंबल ओढ़कर एक घंटा लेट रहना जरूरी है।

एप्सम साल्ट बाथ : नहाने के आदमकद टब में हल्का गर्म पानी भरें। उसके बाद उसमें सेर-भर नमक पीसकर मिला दें। तत्पश्चात् उसमें नंगे लेटकर २० मिनिट तक पड़े रहें। सिर पानी के बाहर रहेगा। बाद में शरीर पोंछकर गर्म कपड़े पहन लें।

घर्षण-स्नान : शरीर की साधारण सूखी मालिश को घर्षण-स्नान कहते हैं। सिर से आरंभ करके पैर के तलुओं तक सारे शरीर को हथेली या खुरदरे तौलिये से रगड़कर लाल कर दीजिये, तत्पश्चात् तुरंत ठंडे पानी से मल-मलकर स्नान कर डालिये और मुख वदन को पुनः उसी प्रकार रगड़कर सुखा दीजिये।

ठंडा स्पंज-बाथ : रोगी को लिटाकर उसे एक कंबल या चादर ओढ़ा दें और शरीर को ठंडे पानी से भीगे और निचोड़े तौलिये से पोंछें। पहले एक पैर चार मिनिट तक गीले तौलिये से रगड़ें, फिर सूखे तौलिये से पैर को सुखाकर एक मिनिट तक हाथ से रगड़ें; ताकि त्वचा में गर्मी आ जाये। फिर दूसरा पैर लें। फिर एक-एक हाथ। फिर पीठ, पेट और छाती। अंत में सिर और मुंह को ठंडे पानी से धोकर सूखे तौलिये से सुखा दें। सारी प्रक्रिया आधे घंटे में समाप्त कर दें।

अवकाश-प्राप्त गायिका लोट्टी लेहमान अपना उनहत्तरवां जन्म-दिवस मना रही थीं। उसके एक नादान नौजवान प्रशंसक ने पूछा—"आपके समान महान गायिका के लिए सचमुच यह अनुभूति बड़ी खेदजनक होगी कि आपने अपना सुरीला स्वर खो दिया है।" इस पर अपने समय की उस महान गायिका ने उत्तर दिया—"नहीं मित्र, खेदजनक बात तो तब होती, जब मैं यह अनुभव न करती कि मेरा स्वर पहले जैसा नहीं रहा।"

०००

पिकासो दक्षिण फ्रांस में घर पर, मित्रों से घिरे बैठे थे। इधर-उधर नजर दौड़ाते हुए एक मित्र ने पूछा—"क्या बात है पाब्लो, तुम्हारी बैठक की दीवारों पर तुम्हारा बनाया कोई भी चित्र नजर नहीं आता? ऐसा क्यों? क्या तुम्हें अपने चित्र पसंद नहीं आते हैं?"

"ऐसी बात नहीं।" पिकासो ने उत्तर दिया—"मुझे अपने चित्र पसंद तो बहुत हैं, लेकिन वे महंगे इतने होते हैं कि मैं उन्हें 'एफोर्ड' नहीं कर सकता।"

—अ० ब०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

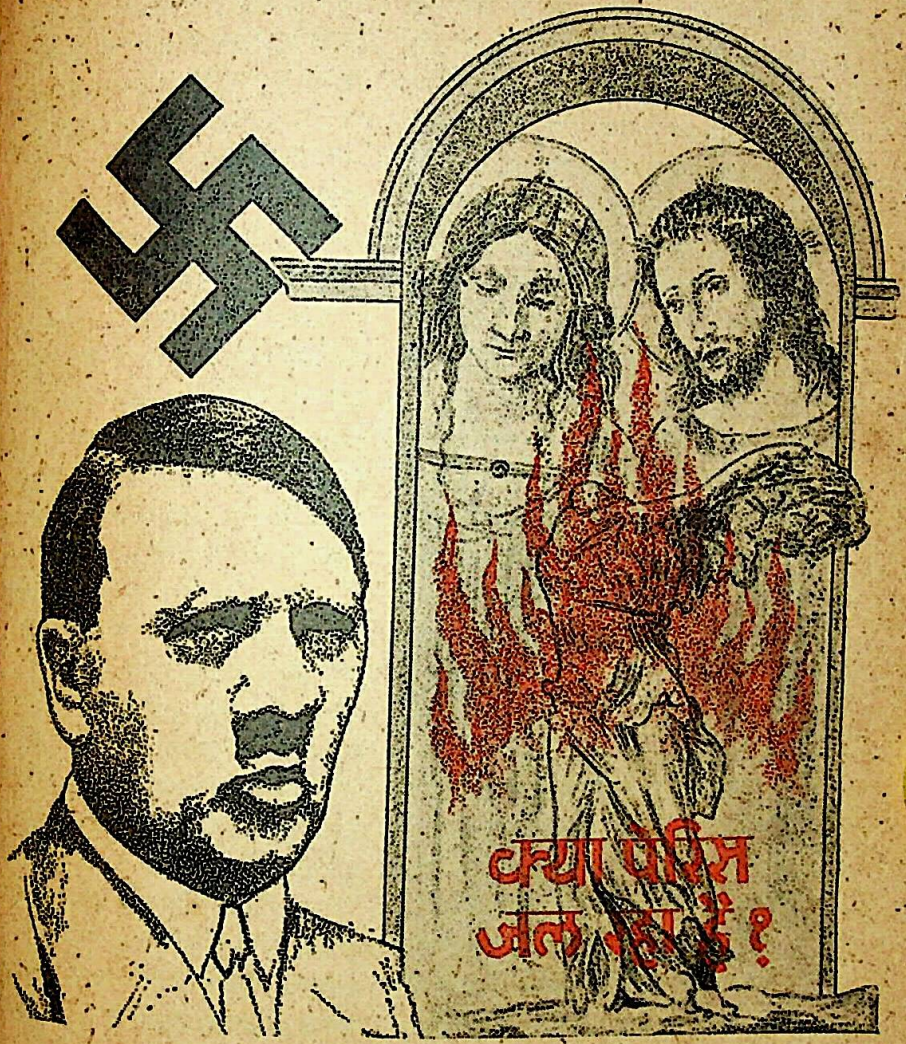

लैरी कोलिन्स और दोमिनीक लेपियर की विख्यात
पुस्तक 'इज़ पेरिस बर्निंग' का संक्षिप्त हिन्दी रूपांतर
वीरेंद्र सिंह द्वारा प्रस्तुत—दूसरी किस्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पेरिस को बचाने के लिए द' गाल पंथियों के पास एक यही सहारा था कि युद्ध-बंदी जारी रहे और इसके लिए वे जी-तोड़ कोशिश कर रहे थे। कम्युनिस्टों की निगाह में युद्धबंदी करना खुला देशद्रोह था और वे उसे तोड़ने का प्रयास कर रहे थे।

कम्युनिस्ट नेता कर्नल रोल ने अपना फरमान जारी किया—"हमारा आज का आदेश है, विद्रोह। जब तक एक भी जर्मन सैनिक पेरिस में बचेगा, हम लड़ते रहेंगे।" शाम तक पेरिस की दीवारें कम्युनिस्ट पोस्टरों से रंग गयीं।

द' गाल पंथियों और कम्युनिस्टों में संघर्ष हो रहा था। पुलिस मुख्यालय में उनमें जोरदार विवाद छिड़ा हुआ था। द' गाल पंथियों ने चेतावनी दी—"विद्रोह का अर्थ होगा पेरिस का सर्वनाश और कम-से-कम दो लाख व्यक्तियों की आहुति।" एक कम्युनिस्ट नेता ने जवाब दिया—"पेरिस के लिए दो लाख व्यक्तियों का बलिदान भी ज्यादा नहीं है।"

दिन चढ़ते ही मुक्ति मोर्चे के छापामारों ने जर्मन सैनिक दस्तों पर आक्रमण शुरू कर दिया। और जवाब में जर्मनों ने भी दुगुने जोर-शोर से गोलियां चलानी शुरू कर दीं।

रविवार के दिन भ्रमण करनेवाले सैलानी अचानक दुतरफा गोलियों की मार में फंस गये। जिन घरों पर लोगों ने उत्साहपूर्वक तिरंगा लगा रखा था, उन पर जर्मन गश्ती दलों की गोलियां बरसने लगीं।

तब तक पूरा शहर मुठभेड़ के लिए तैयार हो गया था। गुप्त छापेखानों से पर्चे निकलने लगे, जिनमें जनता को हथगोले बनाने की विधियां बतायी गयी थीं। गुप्त अस्पतालों पर प्रतिरोध आंदोलन का कब्जा हो गया था। नौजवान छात्र-छात्राओं के दल डाक्टरी सहायता में जुट गये। लड़ाकों के लिए जगह-जगह रसोईघरों का इंतजाम हो गया और बाजारों से सारी खाद्य सामग्री उठवा ली गयी।

उस शाम को जनरल द' गाल के प्रतिनिधि जनरल कोइनिग ने ब्रिटिश रेडियो (बी० बी० सी०) को संदेश दिया—"पेरिस नगर को सबसे बड़ा खतरा जनता के विद्रोह करने से है। इसलिए पेरिसवाले किसी तरह का संघर्ष न छेड़ें।" लेकिन अब बहुत देर हो चुकी थी।

कर्नल रोल ने अपने सहयोगी रोजर कोक्तू उर्फ गैलाई को अमरीकी सेनाधिकारियों के पास गुप्त रूप से भेजा और मांग की कि पेरिस की मदद के लिए पैराशूट से बड़ी मात्रा में शस्त्रास्त्र गिराये जायें। उन्हें उम्मीद थी कि इस तरह जर्मनों को भगाने के साथ ही कम्युनिस्टों की स्थिति भी मजबूत हो जायेगी।

जब गैलाई और उसके साथ प्रोफेसर मोनो अमरीकी शिविर तक पहुंचे, तो उनका मन बदल चुका था और उन्होंने बजाय शस्त्रास्त्र मांगने के प्रार्थना की कि अगर पेरिस को कम्युनिस्टों के हाथ से बचाना है, तो मित्रसेनाएं और जनरल द' गाल जल्दी-से-जल्दी पेरिस पहुंच जायें।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

[१८]

कर्नल रोल अपने गुप्त सदर मुकाम के कमरे में बैठा हुआ मुक्त पेरिस के नये अखबार देख रहा था। उन सभी के मुखपृष्ठों पर बड़े-बड़े शीर्षकों में एक ही नारा दिया गया था—"बाड़ें बनाओ।"

पेरिस के कोने-कोने में यह युद्धघोष गूंज उठा और सीन के तटों से लेकर औद्योगिक क्षेत्र की मजदूर बस्तियों तक, मोंतमार्त से लेकर मोंतपार्नास तक जनता को जो कुछ भी मिला, उसी से उसने बाड़ें बनाना शुरू कर दिया। बाड़ें बनाने के लिए हिटलर और गोरिंग के बड़े-बड़े चित्रों से लेकर बालू की बोरियां, पेड़, जली हुई जर्मन लारियां, फर्नीचर आदि सभी का उपयोग किया गया।

फ्रांसीसी राष्ट्रीय रंगशाला से बाहर अभिनेता-अभिनेत्रियों ने अपनी अद्भुत सूझ-बूझ का परिचय दिया। उन्होंने बाड़ के बाहर एक तार में छोटे-छोटे डिब्बे लटका दिये, जिन पर जर्मन भाषा में लिखा हुआ था—"सावधान! विस्फोटक सुरंगें हैं।" इसका असर यह हुआ कि एक सप्ताह तक एक भी जर्मनी टैंक उनकी मोर्चाबंदी के पास फटकने की हिम्मत न कर सका।

कर्नल रोल के लिए यह सबसे ज्यादा संतोष की बात थी। अब उसे सिर्फ यही चिंता थी कि जिन दो लाख व्यक्तियों को वह पेरिस की मुक्ति के लिए बलिदान करने को तैयार था, उनमें ज्यादा-से-ज्यादा जर्मन होने चाहिये। रोल ने द' गाल के प्रतिनिधि शावां देल्मा को भी एक संदेश भेजा कि लंदन से शस्त्रास्त्र भेजने का अनुरोध करे। रोल जानता था कि देल्मा यह संदेश शायद ही भेजेगा।

लेकिन दिन चढ़ने के साथ ही यह बात अधिकाधिक स्पष्ट होने लगी कि प्रतिरोध आंदोलन के लड़ाकों के पास शस्त्रास्त्रों और गोला-बारूद की बुरी तरह कमी थी। क्योंकि कुछ ही देर में "बाड़ें बनाओ" के नारों की जगह "टैंक आ रहे हैं!" के चीत्कार सुनाई पड़ने लगे।

पांचवें वार्ड की पुलिस चौकी का मोर्चा एक छात्र रेमान सारां ने संभाल रखा था। उसे फोन पर जर्मन अफसर ने टैंकों की सूचना दी—"मुक्ति आंदोलन के माननीय बहादुरो, बाड़ें हटा दो।" सारां का जवाब था—"जनरल, अब आपका हुक्म पेरिस में नहीं चलता।" दस मिनिट में जर्मन टैंक आ गये। उनकी तोपों पर एक-एक फ्रांसीसी नागरिक बंधा हुआ था। प्रतिरोध आंदोलनकारियों के हथगोलों की मार से बचने के लिए यह मानवी ढाल जर्मनों ने बनायी थी। चंद मिनिटों में ही सारां की मोर्चेबंदी ढेर हो गयी।

गणतंत्र चौराहे पर एक टैंक के गोले ने वाल्तेयर बुलेवार को छील दिया। दो औरतें अपनी टोकरियों में हथगोले भरे सुरक्षा के लिए भागीं। वे दोनों एक कम्युनिस्ट नेता की पत्नी क्लारा बोन्त और पुत्री मार्गरीत थीं। क्लारा का पुत्र बेचैनी से अपने मकान की खिड़की से अपनी मां और बहन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का रास्ता देख रहा था कि वे हथगोले लेकर आयें और वह टैंकों पर प्रहार करे। लेकिन उधर टैंकों की गोलियां मां-बेटी पर बरसती जा रही थीं।

पेरिस के दूसरे कोने पर बातिनोले स्टेशन पर आंदोलनकारियों ने एक टूटी-फूटी बख्तरबंद गाड़ी निकट के एक कारखाने से ढूंढ़ निकाली थी। उसे तिरंगे से सजाकर एक गिरोह हर्षध्वनि कर रहा था। लेकिन तोप के लिए उनके पास गोले नहीं थे

[१९]

गेस्टापो के कारागार के सामनेवाले भवन में प्रतिरोध आंदोलन के नेताओं का इतना बड़ा जमघट कभी नहीं हुआ था, जितना उस शाम को पार्क मोंतसरी एवेन्यू के उस मकान की दूसरी मंजिल पर था। वे युद्धबंदी टूटने और उसके परिणामों पर चर्चा करने के लिए एकत्र हु थे।

अलेक्जांद्र परोदी को अब भी विश्वास था कि युद्धबंदी जारी रह सकती है। उसकी बगल में बैठा हुआ जैक शाबां देल्मा युद्ध-बंदी का उसी तरह बचाव कर रहा था, जैसे वह वर्दुम की लड़ाई का कोई मोर्चा हो। अंत में उसने कहा—"युद्धबंदी नहीं टूटनी चाहिये थी। आखिरकार हमने वान शोलित्स के साथ शरीफों की तरह समझौता किया था।"

"हत्यारों के साथ शरीफों का समझौता लागू नहीं होता।" कमरा गूंज उठा।

देल्मा ने जवाब दिया—"और तुम क्या हो? तुम मुफ्त में डेढ़-दो लाख आदमियों की जान खतरे में डाल रहे हो।"

कमरे के दूसरे कोने से वरिष्ठ कम्युनिस्ट नेता पियरे जिसबर्गर उर्फ विलोन, देल्मा पर चिल्लाया—"मैंने अपनी जिंदगी में ऐसा लीचड़ फ्रेंच जनरल कभी नहीं देखा।"

कमरे में कुहराम मच गया। द' गाल पंथी लेखक जैक देबू ब्रिदेल ने कांच का गिलास तोड़कर लोगों के होश ठिकाने किये। विलोन ने देल्मा से माफी मांगी। तभी काउंट ज्यां द'वोग शाबां देल्मा की दलीलों को झूठा साबित करने के लिए उठा। उसने कहा—"हजारों-लाखों पेरिसवासियों के दिलों की आज बस एक ही आवाज है, एक ही इच्छा है कि जर्मनों से दो-दो हाथ कर लें। पेरिस की गलियों में हम १९४० के आत्मसमर्पण की लज्जा धोकर ही रहेंगे।"

विलोन ने अपना तुरुप का पत्ता निकाला। उसने दावा किया कि अगर युद्धबंदी जारी रही, तो कम्युनिस्ट पार्टी पेरिस की दीवारों को इस आशय के पोस्टरों से रंग देगी कि द' गाल पंथियों ने जनता की पीठ में छुरा भोंका है। "और सज्जनो", उसने जोड़ा—"ये पोस्टर पहले ही छपने जा चुके हैं।"

परोदी कुर्सी पर लुढ़क गया। इस चाल के आगे कोई रास्ता नहीं था। प्रतिरोध आंदोलन की एकता सर्वोपरि थी। उसे युद्ध-बंदी समाप्त करने की बात माननी पड़ी। बस एक ही रिआयत उसे मिल सकी कि २४ घंटे से पहले युद्धबंदी खत्म करने की अधिकृत घोषणा नहीं की जायेगी।

परोदी रो पड़ा—"हे भगवान, वे अपने देखते-देखते पेरिस को ध्वस्त करके रख

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हो। हमारा प्यारा सुंदर नोत्रदाम बमों की मार से मलबे का ढेर बनकर रह जायेगा" उसके साथी द' गाल पंथी देबू ब्रिदेल ने उसे फटकारा –"क्या हुआ अगर पेरिस ध्वस्त हो गया? हम भी उसी के साथ मरेंगे। १९४० के शर्मनाक समर्पण को दोहराने से अच्छा है, पेरिस भी वारसा की तरह ध्वस्त हो जाये।"

[२०]

वान शोलित्स अपने कमरे में बेसब्री से चहलकदमी कर रहा था। उसका सारा जीवन अनुशासन में बीता था, और आज उसके चारों ओर का अनुशासित विश्व टूटता नजर आ रहा था। युद्धबंदी का दांव भी बेकार हो गया था और उसे आशंका थी कि उसने प्रतिरोध आंदोलन से जो संधि की थी, उसकी बात हिटलर तक पहुंच चुकी है। हिटलर के आदेश के बावजूद उसने अभी तक पेरिस की एक भी इमारत को ध्वस्त नहीं किया था। अब जनरल जोड्ल का नया फरमान आ पहुंचा कि पेरिस में सीन नदी के सारे पुल उड़ाने का हर कीमत पर बंदोबस्त किया जाये।

उसी शाम हवाई सेना के एक मेजर ने उसे तीसरी वायुसेना के सेनापति का संदेश दिया। अगर जरूरत हो, तो पेरिस का पूरा उत्तर-पूर्वी इलाका रात-भर की बमबारी से साफ किया जा सकता है। शोलित्स ने जवाब दिया कि आप लोग तैयारी करें।

मेजर चला गया। अपनी खिड़की पर जाकर उसने पेरिस की आकाश-रेखा को देखा और उसके दिमाग में फिर वही सवाल गूंजा–अभी तक जिस व्यक्ति को मैं अवतार मानकर अंधमति से उसकी आज्ञाओं का पालन करता रहा, कहीं वह पागल तो नहीं है?

पेरिस को दुश्मनों के हाथ से बचाने के लिए विध्वंस होने देना सैनिक दृष्टि से तो उचित था। लेकिन सिर्फ बदले की भावना से यूरोप के सबसे सुंदर, कलात्मक और सांस्कृतिक नगर को संसार के नक्शे से मिटा देने के लिए विध्वंस करना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं था। और ऐसा लगता था कि हिटलर ने इसी खास काम के लिए उसे भेजा था।

वान शोलित्स के पास एक ही रास्ता था कि किसी तरह मित्रसेना पेरिस में घुस आये और वह इतिहास के इस भारी कलंक से बच सके। और बिस्तर पर लेटे-लेटे छत की कड़ियां गिनते हुए उसने निश्चय किया कि वह वायुसेना के उस मेजर को बुलाने से पहले २४ घंटे प्रतीक्षा करेगा। शायद मित्रसेनाएं आ जायें।

[२१]

२२ अगस्त को द' गाल ने निश्चय कर लिया कि मित्रराष्ट्र चाहें या न चाहें, वह उनकी कृपा और सहायता के बिना ही पेरिस जायेगा। वह यह अहसान सिर पर नहीं लेना चाहता था कि आइजनहावर या और कोई उसे पेरिस में घुसने की अनुमति देकर कृतार्थ करे। कुछ ही घंटों में द्वितीय फ्रेंच बख्तरबंद डिविजन पेरिस पहुंचनेवाली थी,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और कोई माने या न माने, वह उसके साथ एक फ्रेंच गाड़ी में, फ्रेंच सेना के साथ वहां प्रवेश करनेवाला था और उसके साथ ही होनेवाली थी मुक्त फ्रांस सरकार की स्थापना! कम्युनिस्टों की चाल विफल करने का यही एक तरीका शेष था।

उसने अपने सहायकों को आदेश दे दिया कि उसके बारे में मित्रसेना के कमान को कोई जानकारी हर्गिज न दी जाये कि वह कहां पर है और कहां जा रहा है।

[२२]

कर्नल रोल को आशंका हुई कि गैलाई की बात मित्रराष्ट्र सुनेंगे भी या नहीं। उसने स्वयं रेडियो पर जनरल कोइनिग को संदेश दिया कि फौरन शस्त्रास्त्र गिराये जायें। जनरल कोइनिग भी जानता था कि हथियार गिराने पर बड़ी बर्बादी होगी और वे ज्यादातर कम्युनिस्टों के हाथ में पड़ेंगे। लेकिन वह यह भी नहीं देख सकता था कि उसके देशवासी जर्मन टैंकों की मार से शहीद हो जायें। पहले उसने तत्काल शस्त्रास्त्र गिराने का निश्चय किया; लेकिन फिर कुछ सोचकर २४ घंटे तक और इंतजार करने का निर्णय ले लिया। अगर इस बीच विद्रोह नहीं रुकता है, तो फिर चाहे जो हो, पेरिस पर राइफलों की वर्षा करनी ही पड़ेगी।

लेकिन पेरिस में कोई रुकने और प्रतीक्षा करने को तैयार न था। वह २२ अगस्त की सुबह थी और तभी से घमासान लड़ाई छिड़ गयी। चाहे वह पांचवें वार्ड का पुलिस थाना हो, या सत्रहवें वार्ड का मोर्चा। जर्मन सैनिक पिटते हुए भी पेरिसवासियों पर कहर ढा रहे थे। हां, सीन नदी के वाम किनारे पर प्रतिरोध आंदोलन के लड़ाकों का पूरा कब्जा था और वहां से निकलने का साहस किसी जर्मन में नहीं था। संकरी गलियां होने के कारण वहां टैंकों की दाल नहीं गल सकती थी।

जनरल ब्रैडले के कार्यालय के सामने टहलते हुए जनरल लेक्लेयर को एक-एक पल भारी हो रहा था। तभी जनरल आइजनहावर के पास गया हुआ विमान वापस आ गया और उसमें से निकलकर जनरल सिवर्ट ने सूचना दी—"मित्रराष्ट्रों ने पेरिस पर कूच करने का निश्चय कर लिया है और तुम्हें सीधे पेरिस जाना है। ..... लेकिन याद रहे, हम पेरिस के भीतर कोई लड़ाई नहीं चाहते। बस, तुम्हारे लिए हमारा यही आदेश है।"

उधर वान शोलित्स के कमरे में स्वीडिश राजदूत राऊल नोर्दलिंग बैठा हुआ था। वान शोलित्स ने शिकायत की—"राजदूत महोदय! आपकी युद्धबंदी कारगर नहीं हो रही है।"

"फ्रांसीसी मुक्तिसेना सिवा एक व्यक्ति के और किसी के रोके नहीं रुकेगी," नोर्दलिंग बोला—"और वह है जनरल द' गाल!"

वान शोलित्स ने आगे जो कहा, उस पर नोर्दलिंग के कान खड़े हो गये। उसे सहसा विश्वास न हुआ। वह कह रहा था—"तो कोई जाकर द' गाल को बुला क्यों नहीं लाता?"

और इसके बाद उसके विस्मय-विमुग्ध

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चेहरे की ओर देखकर वान शोलित्स ने अपनी वर्दी के नीचे से कुछ नीले खाके निकाले और बताया कि ये पेरिस को विनष्ट करने के आदेश हैं। हिटलर का क्रोध बढ़ रहा है और अगर उसने इन आदेशों का पालन न किया, तो वह पदच्युत कर दिया जायेगा।

इसके बाद वान शोलित्स गंभीरता से फुसफुसाते हुए बोला —"अब पेरिस को विनाश से केवल एक ही चीज बचा सकती है। वह है मि सेनाओं का प्रवेश। मैं जो कुछ कर रहा हूं, वह देशद्रोह से कम नहीं। लेकिन मैं इतिहास का यह कलंक (पेरिस के विनाश का) सिर पर लेकर नहीं मरना चाहता। अगर मेरे लिए भेजी गयी कुमुक मित्रसेनाओं के आगमन से पहले पहुंच गयी, तो फिर मेरे पास एक सैनिक की तरह पेरिस की ईंट-से-ईंट बजा देने के सिवा और कोई चारा न रह जायेगा। मैं आपके जरिये मित्रराष्ट्रों को चेतावनी दे रहा हूं। अगर उन्होंने समय रहते कोई कार्रवाई न की, तो फिर जो भी होगा, उसकी जिम्मेवारी उन्हीं पर होगी। मैं आपको लिखकर कुछ नहीं दे सकता; लेकिन मेरा एक अफसर आपको जर्मन सेना द्वारा अधिकृत क्षेत्र से निकालकर पहुंचा सकता है।"

नोर्देलिंग दूतावास लौटा, और चलने की तैयारी में व्यस्त हो गया। तभी उसके सीने में भयानक पीड़ा कौंधी और वह अपने कमरे के फर्श पर गिर पड़ा। उसे दिल का दौरा पड़ गया था।

लेकिन नोर्देलिंग की कार वरसेल की तरफ दौड़ी जा रही थी और उसमें उसका भाई रोल्फ, वान शोलित्स का संदेश लिये मित्रसेना के पास जा रहा था।

[२३]

२३ अगस्त। लेकिन पेरिस को २४ घंटे का जीवन मिलना भी दुश्वार दिखाई दे रहा था। सवेरे-सवेरे वान शोलित्स को जो आदेश प्राप्त हुआ, उससे उसकी परेशानी की सीमा न रही। वह आदेश था —"पेरिस को मलबे का ढेर बना दिया जाये।"

राजधानी में सभी स्थानों पर, चाहे वह मेट्रो रेल्वे स्टेशन हो या बिजलीघर, सीन के ४५ पुल हों या संचार-केंद्र, चाहे युद्ध संग्रहालय हो या कला-वीथिका, सभी पर जर्मन विस्फोटक विशेषज्ञों के दल अपना काम पूरा करने में जुटे हुए थे। नेपोलियन की समाधि से लेकर राष्ट्रीय आपेरा तक सभी प्रसिद्ध सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, कलात्मक, औद्योगिक तथा प्रशासनिक इमारतों में विस्फोटक बम तथा पलीते लगाये जा रहे थे। यही नहीं, जिन स्थानों में तैयारी पूरी हो गयी थी, वहां विध्वंस शुरू भी हो चुका था।

थोड़ी ही देर में दिल हिला देनेवाले विस्फोटों की आवाजें आकाश भेदने लगीं। धुएं और आग की लपटों के साथ लोगों के आर्तनाद सुनाई पड़ने लगे। वर्नेर एबरनाश ने वान शोलित्स से ठीक ही कहा था —"जब पेरिस में विस्फोट होगा, तो बर्लिन तक आवाज सुनाई पड़ेगी।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कांच की गुंबदाकार छत से मढ़े हुए ग्रांद पैलेस प्रदर्शन-गृह पर दो मोर्चे लगे। पहला प्रतिरोध आंदोलन के हाथ रहा। लेकिन दूसरे में रेडियो-चालित जर्मन टैंकों के आक्रमण ने उस विशाल भवन के टुकड़े-टुकड़े कर दिये और प्रदर्शन-गृह में हरे हुए सरकस के सारे जानवर भाग निकले। जो मर गये, उन पर भूखे पेरिसवासी अपने-अपने चाकू लेकर कुत्तों की तरह टूट पड़े।

ग्रांद पैलेस की लपटों ने पूरे दिन पेरिस के आकाश को काला बनाये रखा। घंटे-पर-घंटे बीतते जा रहे थे। ला विले में देशभक्तों के एक गिरोह ने ५० जर्मनों के एक आक्रमणकारी दस्ते को बार-बार मार भगाया। मोंतमार्त के छोर पर जसां मार्ग पर रेल-कर्मचारियों ने एक जर्मन टैंक और ६० सैनिकों को धूल चटा दी थी।

भयानक प्रतिहिंसा और पाशविकता की भावना से बंधे होकर जर्मन और फ्रांसीसी एक दूसरे पर टूट रहे थे। आपेरा गृह के पास अखबार पढ़ते हुए एक वृद्ध फ्रांसीसी को एक जर्मन सैनिक ने गोली मार दी। ला हार्प मार्ग पर श्रीमती आंदे कोच के कमरे में एक घायल जर्मन लाया गया। परंतु वहां जगह नहीं थी। बाहर जाते ही उसे गोली मार दी गयी।

लेकिन इंसानियत हर हालत में जिंदा रहती है। यहां भी वह मरी नहीं थी। होटल दियू में बने अस्पताल में पड़े हुए एक जर्मन अफसर ने जब अपने ऊपर एक रक्तरंजित फ्रांसीसी को जेब में हाथ डालते हुए देखा, तो उसने सोचा कि बस अभी उसने पिस्तौल निकाली और मेरा काम तमाम हुआ। लेकिन उस व्यक्ति ने जेब से पिस्तौल के बजाय सिगरेट का पैकेट निकाला और उसे देते हुए बोला—"दोस्त, तुम भाग्यवान रहे। अब तुम्हारे लिए लड़ाई खत्म हो चुकी है।"

[२४]

साढ़े चार दिन तक लड़ने के बाद अब मुक्तिसेना और प्रतिरोध आंदोलन के वीरों को अपना साहस छूटता हुआ दिखाई दिया। जर्मन सैनिक अधिकाधिक निर्ममता से प्रहार कर रहे थे। रात तक लगभग ५०० व्यक्तियों के मरने और २ हजार के घायल होने का अनुमान था और फिलहाल कहीं से कोई सहायता पहुंचने की उम्मीद नहीं दिखाई दे रही थी। सबसे ज्यादा कमी गोला-बारूद और हथियारों की थी, जो बढ़ती ही जा रही थी।

अपने तहखाने में बैठा हुआ कम्युनिस्ट सेनापति कर्नल रोल द' गाल और मित्रराष्ट्रों को कोस रहा था। उसे विश्वास था कि लंदन स्थित द' गाल पंथी शस्त्रास्त्र भेजने की उसकी प्रार्थना स्वीकार नहीं करेंगे।

लेकिन वह गलत सोच रहा था। बड़ी मात्रा में गोला-बारूद और शस्त्रास्त्र गिराने की योजना पिछली सुबह ही बन चुकी थी। लेकिन बाद में रद्द कर दी गयी थी। मित्र-राष्ट्रों ने शस्त्रास्त्रों के बजाय सेना ही भेजने का निर्णय ले लिया था।

[२५]

नारमंडी के हरे-भरे खेतों के बीच से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

द्वितीय फ्रेंच बख्तरबंद डिविजन तेजी से बढ़ती चली जा रही थी। उसके दोनों दस्ते तेरह-तेरह मील लंबे थे, और उनकी ४ हजार गाड़ियां और १६ हजार सैनिक फ्रांस की राजधानी को जर्मन हमलावरों से मुक्त कराने के लिए बढ़ते चले जा रहे थे। सुबह से ही पानी बरस रहा था; लेकिन उसके सैनिकों का उत्साह हर पल दूना होता जा रहा था। गांव के लोग टैंकों और गाड़ियों पर लगे तिरंगे झंडे को देखकर सड़क के दोनों किनारे खड़े भीगते हुए तुमुल हर्ष-ध्वनि से उनका स्वागत कर रहे थे।

शाम होते-होते यह काफिला राम्बूले तक पहुंच गया, जो पेरिस से कुल ३० मील दूर था। अग्रिम दस्ते का प्रेस-अधिकारी सैम ब्राइटमैन गांव बेनुए होटल में बैठा हुआ सोच रहा था—बस एक ही कमी है, द' गाल की; और फिर जर्मनों के परखचे न उड़ा दिये, तो क्या बात है! तभी खाना लाने-वाली सेविका आते हुए ठिठक गयी और उसके हाथों से प्लेटें गिरकर टूट गयीं। खिड़की से बाहर आंखों में आंसू लिये वह खुशी के भावावेग से सिसकने लगी—"द' गाल! द' गाल!"

सचमुच, द' गाल राम्बूले में आ पहुंचा था और जैसी कि कम्युनिस्टों को आशंका थी, वह मुक्तिसेना का नेता बनकर पेरिस पहुंचनेवाला था। उस गांव में उसके नाम की जयजयकार हो रही थी और लोग बिना पहचाने ही उसके नाम को जप रहे थे। जैसे वह कोई मसीहा हो। द' गाल का ध्यान इस जयजयकार की ओर नहीं था। वह जनरल लेक्लेयर के साथ पेरिस में घुसने की योजना पर मंत्रणा कर रहा था। हाल ही में खबर मिली थी कि राम्बूले से वर्सेल तक का सारा रास्ता जर्मनों ने विस्फोटक सुरंगों और टैंकों से पाट दिया है। अब यह रास्ता छोड़कर दक्षिण की ओर से ओर्लियान होते हुए जाने का निश्चय किया गया। २४ घंटे पहले जो अभियान खाली चहलकदमी मालूम दे रहा था, वह कांटे की लड़ाई बन गया था।

लेक्लेयर ने सुबह से पहले ही हमले का विचार किया। जर्मनों को इस हमले की आशंका भी न थी। फिर भी फील्ड मार्शल मोडेल ने जो पश्चिमी मोर्चे का सेनापति था, उसी बुधवार की शाम को जो भी सेना उपलब्ध थी, उसे पेरिस की ओर भेज दिया, ताकि वह २६ अगस्त को छब्बीसवें और सत्ताईसवें पेंजर डिविजनों के आगमन तक पेरिस में मोर्चा संभाल सके।

लेकिन मित्रराष्ट्रों की भी कुमुक पहुंच रही थी। जनरल ब्रैडले को वान शोलिट्स का निमंत्रण मिल चुका था और वह जल्दी-से-जल्दी पेरिस को छाप लेने के चक्कर में था। उसने अमरीकी सेना की चौथी डिवि-जन को भी पेरिस की ओर रवाना होने का आदेश दिया।

[२६]

२४ अगस्त को सुबह होते-होते जनरल लेक्लेयर की सेना दक्षिण की ओर से पेरिस की बाहरी सीमा तक जा पहुंची। उसने १७ मील लंबा मोर्चा बनाया और उसके तीन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भाग किये। सबसे कमजोर दस्ते को वर्सेल की ओर से खाली हुल्लड़ मचाने के लिए भेजा गया। दूसरा शेवरूज की घाटी से होते हुए पोन्त द' सेव्रे की ओर से गया और तीसरे को उसने मुख्य आक्रमणकारी दस्ते के रूप में सीधे द' ओलियान की ओर से धंसने के लिए भेजा।

शुरू में जर्मनों की ओर से बहुत थोड़ा विरोध देखने में आया। दोनों ओर से हजारों ग्रामवासी स्वागत में पागल होकर चिल्ला रहे थे और अपनी मुक्तिसेना के जवानों की बलायें ले रहे थे। उन पर फूलों, सुगंधित व्यंजनों और शराब की भरपूर वर्षा हो रही थी।

लेकिन यह विजय-यात्रा थोड़ी देर तक ही आनंददायी रही। शीघ्र ही तीन अग्रिम दलों ने अपने सामने जर्मन रक्षापंक्ति को देखा। उसके पीछे छिपी हुई ८८ मिलीमीटर की तोपों की बाड़ थी। जब जर्मन तोपों के गोले आकर गिरने शुरू हुए, तो आस-पास की पहाड़ियां चीत्कार कर उठीं और उनकी मार से लेक्लेयर के टैंक एक-एक करके ध्वस्त होने लगे।

जैसे-जैसे द्वितीय वस्त्रबंद डिविजन के तीनों दस्ते आगे बढ़ते गये, जर्मनों का विरोध शक्तिशाली होता गया। बस्तियों में जगह-जगह जर्मन तोपें छिपी हुई थीं। पेरिस में घुसने के अंधाधुंध जोश में लेक्लेयर के सैनिक उनसे सीधे जाकर भिड़ने जा रहे थे। काफी नुक्सान उठाने के बावजूद जल्दी-से-जल्दी पेरिस पहुंचने का यही एकमात्र उपाय था। वक्त बहुत कम था और एक ही नारा था—जल्दी! और जल्दी।

शाम होते-होते द्वितीय वस्त्रबंद डिविजन का मुख्य दस्ता पेरिस के द्वार फ्रेसने तक पहुंच गया। पर यहां जर्मनों ने एक त्रिकोण के रूप में भयानक मोर्चेबंदी कर रखी थी। उसका मुख्य आधार फ्रेसने कारागार था, जिसके बायीं ओर अन्तोनी औद्योगिक केंद्र था, और कारागार का छोर एक मील दूर पेरिस में ४ मील पर क्रुक्स द' वनों के चौराहे पर खत्म होता था।

फ्रेसने कारागार के अंदर ३५० जर्मन सैनिक मौजूद थे और उनकी मदद के लिए १३२ वीं पैदल रेजिमेंट की बटालियन थी। कारागार पर हमला करने के लिए कैप्टन दुपां ने अपनी वस्त्रबंद गाड़ियों को तीन हिस्सों में बांटा। इनमें से तीन टैंकों के एक दल को उसने आदेश दिया कि बगल की सड़कों से निकलकर रिपब्लिक एवेन्यू पर पहुंचें और सीधे फाटक पर हमला करें। बाकी दो दलों से कहा गया कि वे फाटक के अगल-बगल की दीवारों पर हमला करें।

पहला टैंक जैसे ही आगे बढ़ा कि एक ८८ नंबर का गोला आकर गिरा और वह खिलौने की तरह हवा में उछल गया। गिरते ही आग की लपटों ने उसे घेर लिया। उसके ढक्कन को खोलकर एक आदमी निकला, जिसके पैर उड़ गये थे। वह बाहर निकलकर लुढ़क गया। दूसरा जिसके तन-बदन से आग की लपटें निकल रही थीं, बेतहाशा चिल्लाता हुआ प्राण बचाने के लिए दौड़ा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब सारे फ्रांसीसी टैंकों ने कारागार के फाटक पर गोले बरसाने शुरू कर दिये और जर्मनों ने भी उन्हें वैसा ही करारा जवाब दिया। कैप्टन दुपां और उसका सहायक लेफ्टिनेंट मार्सेल क्रिस्टन फाटक से लगभग ५० गज दूरी पर खड़े हुए लड़ाई का निर्देशन कर रहे थे कि उसी समय एक चिथड़ा हुई वर्दी में सिर से पैर तक झुलसा हुआ जर्मन सैनिक फाटक के धुएं में से उठा और उस पर अपनी मशीनगन से गोलियां बरसाने लगा। क्रिस्टन ने 'हाय' की एक आवाज सुनी और दूसरे ही क्षण उसने कैप्टन दुपां को लुढ़कते हुए देखा। उसकी खोपड़ी के टुकड़े-टुकड़े हो गये थे।

इस घटना के साथ ही क्रिस्टन ने देखा कि उसका एक टैंक गोलों की मार खाते हुए आगे बढ़ा और उसने दायीं ओर से जाकर सींखचे फाटक में टक्कर दी। उसके पीछे-पीछे गोले बरसाते हुए बाकी टैंकों ने भी उसका अनुकरण किया और जर्मनों पर धावा बोल दिया। बस, फर्नेस की लड़ाई खत्म हो चुकी थी।

लेकिन आधा मील आगे क्रुक्स द' बर्नी के चौराहे पर कुछ और ही हालत थी। वहां केवल एक ८८ नंबर की जर्मन तोप ने फ्रांसीसी जर्मन टैंकों की पूरी कंपनी को आगे बढ़ने से रोक रखा था। लेफ्टिनेंट ज्यां लाकूस्त पैदल ही इस तोप को ठंडा करने चल पड़ा। धीरे-धीरे दीवार के सहारे बढ़ता हुआ वह उसके छोर तक पहुंच गया और घूमकर देखा, तो वहां वह तोप रखी हुई थी।

वापस लौटकर उसने अपना टैंक लिया और सड़क पर उतरकर तोप के गोलों की आवाज के साथ उछल-उछलकर चलने लगा। गोलों के छूटने के धमाके में टैंक चलने की गड़गड़ाहट छिप जाती थी। चौराहे से कुछ ही गज दूर ठहरकर वह तोप का गोला छूटने के लिए रुका। जैसे ही गोला छूटा, लाकूस्त का टैंक एक उछाल में तोप के ऊपर जा पहुंचा और उस पर अंधाधुंध गोले बरसाने लगा। ८८ नंबर की जर्मन तोप इस्पात और मानव-शरीरों के उड़ते हुए टुकड़ों और धुएं के बादलों में खो गयी।

अपने रेडियो से लाकूस्त ने कंपनी को संकेत भाषा में सूचना दी—"सारे आस्कर सुनें। मैं आस्कर प्रथम से बोल रहा हूं। हमने उस आंधे चूल्हे को बुझा दिया है। आगे रास्ता खुला है।"

[२७]

दक्षिण-पूर्व से निरंतर बढ़ती जाती गोलों के धमाकों की आवाज ने पेरिस में बचे-खुचे जर्मनों के भी होश उड़ा दिये और उनमें भगदड़ मच गयी। एक जर्मन क़ाफिले ने फ्रेंच नागरिकों को ढाल की तरह आगे करके बाड़ों को फांदते हुए अपनी राह ली। प्रतिरोध आंदोलन के बहादुर लड़ाके आग्नेय नेत्रों से इन आततायियों को साफ बचकर निकल जाते देखते रहे।

पास आते-जाते गर्जन से उत्साहित हो-होकर पेरिस के घर-घर से भागते हुए जर्मनों पर गोलियां चलने लगीं। इससे जर्मन इतने बौखला गये कि उन्होंने अमानवीय अत्या-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चारों का कहर ढा दिया। रास्पाइल बुलेवार पर एक बेकरी के आगे लाइन में खड़ी हुई महिलाओं के समूह पर गश्ती जर्मन टैंक ने अंधाधुंध गोले बरसा कर उनकी बोटियों का ढेर लगा दिया। बुलेवार संत जर्मेन के २८४ घर के फ्लैटों से सारे किरायेदारों को बाहर निकालकर जर्मन सैनिक पुलिस ने पंद्रह मिनिट तक हाथ ऊंचे कर दीवार के सहारे खड़ा रखा, और उसके बाद अपना काम करके वे फुर्ती से लापता हो गये।

पास आनेवाली फ्रांसीसी सेना के गोलों के धमाकों से प्रतिरोध आंदोलन के लड़ाके झूम उठे और उन्होंने शहर के चप्पे-चप्पे में विद्रोह की आग लगा दी। सबसे भयानक संघर्ष प्लेस द' ला रिपब्लिक (गणतंत्र भवन) के सामने हुआ, जहां २५ वर्षीय डाक्टरी के छात्र देने-दारकूर्त और ४२ वर्षीय बढ़ई देने शैवूते के नेतृत्व में जर्मनों पर घेरा कसा जा रहा था। खोजकर गिरते हुए १,२०० जर्मन सैनिक प्रिंस यूजिन बैरकों से निकलकर उन पर टूट पड़े। उन्होंने मेट्रो (भूगर्भ रेलवे) की सुरंगों से होकर प्रतिरोध आंदोलन के घेरे पर पीछे से हमला करने की कोशिश की। लेकिन फ्रांसीसी मुक्ति-सेना के लड़ाके वहां भी मौजूद थे और मेट्रो की उन अंधेरी सुरंगों में सीटियों और नारों से अपने साथियों को पहचानते हुए वे बंदूकों की उगलती हुई आग और हथगोलों के धड़ाकों में खो गये।

बैरकों के अंदर एक मेजर अपने बचे-खुचे लोगों से कह रहा था—"सहायता आने ही वाली है, और तब तक हमें लड़ते ही रहना है। आखिरी गोली और आखिरी सैनिक तक।"

सारे शहर में बचे हुए जर्मन सैनिक मित्र-सेना के आगमन की प्रतीक्षा करते हुए अपनी तैयारियां कर रहे थे। उस शाम को वह (आगमन) शुरू भी हो गया।

जनरल लेक्लेयर यह समझ चुका था कि वह अगले दिन से पहले पेरिस के अंदर नहीं पहुंच सकेगा। इसीलिए उसने कैप्टन रेमंड डोन को बुलाया और आज्ञा दी—"जो कुछ भी तुम्हारे पास हो, उसे लेकर पेरिस पहुंच जाओ। जर्मनों से लड़ने की बात भूल जाओ। बस, किसी तरह वहां पहुंच जाओ और लड़ाकों से कहो—डटे रहें। हम कल पहुंच रहे हैं।"

डोन केवल ३ शर्मन टैंक और १६ टूटी-फूटी गाड़ियां लेकर रवाना हो गया।

शाम के धुंधलके में उसे कुछ अक्षर दिखाई पड़े—पेरिस पोर्त द' इतालो। यह वही मार्ग था, जिससे होकर १२९ वर्ष पूर्व पोलियन एल्बा से पेरिस वापस लौटा था। अपने थोड़े से सैनिकों के साथ वह पेरिस की सीमा में प्रविष्ट हो गया। उसके साथी जोर और खुशी से बेतहाशा चिल्लाने लगे।

जब वह पेरिस के उस छोर की छोटी-सी बस्ती से गुजरा, तो आनंदोन्मत्त पेरिस-वासियों ने उसे तथा उसके साथियों को हाथों-हाथ ले लिया। दर्जनों सुंदरियां अपने मुक्ति-दाता इन जांबाज सैनिकों को चूमने के लिए दौड़ पड़ीं और उनको आलिंगन में लेकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बजने लगीं। नागरिक गाड़ियों की छतों पर और सैनिकों की बांहों में लद गये थे।

डोन और उसके साथी इस समय जर्मनों से भिड़ने के लिए तैयार नहीं थे। इसलिए उन्होंने मुख्य सड़क को छोड़कर बगल की गलियों का रास्ता पकड़ा। पेरिस के म्युनिसिपल मुख्यालय होटल द' विले पहुंचने तक केवल एक बार गोलियां चलीं और उन्होंने मुख्यालय को घेर लिया।

कुछ ही सेकेंड पहले इमारत के अंदर जार्ज विदोल (जो बाद में द' गाल का विदेश-मंत्री बना) एक टेबुल पर चढ़कर अपने साथी लड़ाकों को सांत्वना दे रहा था — "फ्रांसीसी सेना का टैंक सीन को पार कर चुका है।" उसने कहा, और बाकी शब्द उसके मुंह में ही रह गये। डोन के टैंकों की गड़गड़ाहट ने उसे चुप कर दिया। क्षण-भर के बाद ही समवेत कंठों से ला मार्सेल का गान फूट पड़ा और उसके समाप्त होते-होते वे डोन का स्वागत करने के लिए दौड़ पड़े। दोनों तरफ के लोगों की आंखों से खुशी के आंसू झर रहे थे और पेरिस के उस मुक्त भूखंड पर खड़े वे परस्पर आलिंगन कर रहे थे। कितना सुखद आह्लादकारी मिलन था यह।

बिजली-घर के कर्मचारियों ने सारे स्विच खोल दिये, ताकि सारे शहर में रेडियो सुनाई पड़ जाये। उद्घोषक पियरे शेफर की भाव-विह्वल आवाज ने घोषणा की—"लेक्लेयर की सेना पेरिस आ पहुंची है।" अनगिनत घरों से पूरे जोर से रेडियो पर मार्सेल के स्वर गूंजने लगे। कोटि-कोटि खिड़कियों के खुले हुए पटों से हर्षविह्वल पेरिसवासियों के कंठ चीत्कार कर उठे।

शेफर ने फिर घोषणा की—"सारे पुरोहितों से कहो कि गिरजों में मंगलध्वनि करें, घंटे बजायें।" इसके साथ ही नोत्रदाम का १४ टन भारी भीमकाय मंगल घंटा बज लगा, और साथ ही शहर भर में मंगल घंटा-ध्वनि गूंजने लगी। पेरिस अब पराधीन नहीं था। आनंदातिरेक से बोझिल पेरिसवासी अंधेरे में चीख-चीखकर रो रहे थे।

[२८]

होटल म्यूरिस में वान शोलित्स पदमुक्त होने की तैयारी कर रहा था। उसके साथियों और सहायकों ने उसके लिए विदाई-भोज आयोजित किया था।

वान शोलित्स के भ्रमों का जाल टूट चुका था। मित्रसेना पेरिस में प्रवेश ही नहीं कर चुकी थी, बल्कि अमरीकी सैनिक भी सीन पार कर चुके थे और बेरोकटोक जर्मन अधिकृत भू-भाग से विजेता-गर्व लिये चले जा रहे थे। उन्हें रोकने के लिए जिन २६ और २७ वीं पैंजर डिविजनों को भेजने की ताकीद की गयी थी, उन्हें दूसरी तरफ बुला लिया गया था। वान शोलित्स के लिए कोई मदद कहीं से आनेवाली नहीं थी।

जैसे-जैसे वह सोच रहा था, पेरिस के जर्मन अधिपति का गुस्सा और क्षोभ बढ़ता जा रहा था। उसे हिटलर पर क्रोध आ रहा था और वह कटुता से भरता जा रहा था। उसे शहर की रक्षा के लिए सैनिक सहायता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कितनी लाजवाब धुलाई ! जगमगाती सफ़ेद ! बेदाग़ साफ़ ! अत्यंत आसान धुलाई ! इस लिए कि सर्फ़ में धुलाई की अधिक शक्ति है और ढेरों झाग ! अपनी सारी धुलाई, बच्चों के वस्त्र, कमीजें, साड़ियाँ, सभी कपड़े सर्फ़ से धोइए। जी हाँ, घर में धोइए, सर्फ़ से धोइए।

सर्फ़ से कपड़े सब से सफ़ेद धुलते हैं

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

SU. 45-77 HI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के बजाय केवल उसके विध्वंस का सामान भेजा गया। और अब वह महानायक उस विध्वंस और विनाश को पूरा होता देखना चाहता था।

भोज के समय वान शोलित्स ने यथा-संभव खुशमिजाज दिखने की कोशिश की। वह अपने अतीत के किस्से सुनाने लगा। तभी असंख्य घंटा-निनाद के ऊंचे स्वर उस कमरे में गूंज उठे।

उसकी सेक्रेटरी सीटा क्रेवेन ने पूछा—"जनरल महोदय, ये घंटे क्यों बज रहे हैं?"

"क्यों बज रहे हैं?" जनरल तीखी आवाज में बोला—"वे इसलिए बज रहे हैं कि मित्रसेनाएं पेरिस में आ रही हैं। वे और किसके लिए बजेंगे?"

अपने स्तंभित अफसरों की ओर देखता हुआ वह गुस्से से बोला—"और तुम लोगों को क्या उम्मीद थी? यहां तुम लोग अपने नन्हें से स्वप्न-जगत् में खोये हुए बैठे हो। मालूम भी है कि जर्मनी में, रूस में, नार-मंडी में क्या हो रहा है? मैं आपको वह बात बताने जा रहा हूं, जो पेरिस की इस रंगीन जिंदगी में आपकी नजर से नहीं गुजर पायी। और वह बात यह है कि जर्मनी युद्ध में पिट चुका है।"

रात को अपने सदर मुकाम के छज्जे पर खड़ा हुआ वान शोलित्स पेरिस की काली आकाश-रेखा को देख रहा था। अब घंटों की जगह गोलों के धमाके सुनाई पड़ रहे थे। जर्मन सैनिक बेतहाशा गोलाबारी कर रहे थे। यह भी मालूम हो गया था कि कैप्टन डोन के तीन टैंक प्रतीकात्मक ही थे और मित्रसेना अभी दूर थी। पेरिस की मुक्ति का क्षण अभी दूर था। वान शोलित्स इन धमाकों को सुनकर बड़बड़ाने लगा—"मैं क्या करूं? मुझे क्या करना चाहिये?"

सामने बिखरे हुए शहर पर आखिरी निगाह डालकर वह अपने कमरे में लौटा। रास्ते में कैप्टन एबरनाश से वह टकराया, जो अपने विस्फोट-विशेषज्ञों को लेकर लौट जाने की अनुमति चाहता था। उसने बताया कि वह कुछ आदमी छोड़ जायेगा, जो सुरंगों और विस्फोटकों में पलीता लगा देंगे।

"एबरनाश!" वान शोलित्स गुस्से से गरज उठा—"अपने सारे आदमी लेकर अभी निकल जाओ और हमें अपने हाल पर छोड़ दो।" इसके बाद वह पीठे फेरकर अपने कमरे में चला आया।

[२९]

२५अगस्त। जिस समय दूसरी फ्रेंच बख्तर-बंद डिविज़न और चौथी अमरीकी डिवि-जन पेरिस पहुंचीं, आकाश नीला, साफ और निष्पंद था। राजधानी में ३५ लाख पेरिस-वासियों ने वर्षों से छिपाई हुई अपनी निधियों को निकालकर इन मुक्तिदाता सैनिकों पर लुटा दिया, जो इसी दिन के लिए बचाकर रखी गयी थीं। वे निधियां थीं धूलि-धूसरित शैम्पेन (उत्कृष्ट फ्रेंच शराब की बोतलें), घर में सिला हुआ तिरंगा, मित्रराष्ट्रों के उलटे-सीधे झंडे। बाड़ पर खड़े हुए फ्रेंच मुक्तिसेना के लड़ाके विजय के गर्व से भरे आखिरी मुठभेड़ के लिए उतावले

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हो रहे थे।

इन सैनिकों का विरोध नहीं के बराबर था। सड़कें जर्मन सैनिकों से खाली थीं, जिन पर उनके पहुंचते ही सहसा हंसते-कूदते, नाचते-गाते बच्चों, युवतियों, महिलाओं, वृद्धों और हंसमुख पेरिसवासियों का झरना फूट पड़ा। इस विशाल जनसमुद्र ने अमरीकी और फ्रांसीसी सैनिकों को उपहारों, फूलमालाओं, आलिंगनों और तप्त चुंबनों से भर दिया। इस पागल भीड़ से छुटकारा पाने के लिए लेफ्टिनेंट जैक टूनी को अपने टैंक की मशीनगनों से हवाई गोलियां चलानी पड़ीं, जो सड़कों को रोके हुए उल्लास-नृत्य में लगी हुई थी।

फ्रांसीसी सैनिकों के हर्षोल्लास का पारावार न था। जाने कितने वर्ष बाद अपने बिछुड़े हुए भाई-बहनों, माता-पिता, पुत्र-पुत्रियों, संबंधी जनों और प्रेमिकाओं से मिलकर एक हो रहे थे।

जैसे-जैसे मित्र सैनिक आगे बढ़ते गये, दृश्य बदलता गया। नागरिकों के उल्लास-पूर्ण कोलाहल के बजाय गोलियों की आवाज उनके कानों में आने लगी, जिसने इस वास्तविकता की ओर उनका ध्यान आकर्षित किया कि इस समय पेरिस में २० हजार जर्मन सैनिक मौजूद हैं और 'करो या मरो' का नारा लगाकर आखिरी मुठभेड़ की प्रतीक्षा कर रहे हैं। लेफ्टिनेंट पियरे द' ला फूशार्दियेर ने बुलेवार मोंतपार्नास और बुलेवार संत माइकेल के जनशून्य चौराहे की ओर देखा और उसे अभी जनसमूह से भरी हुई उन सड़कों की अपेक्षा यहां रहस्यमय विरोधाभास दिखाई दिया। वह अपने टैंक से उतर पड़ा और एक घर के दरवाजे में घुसते हुए वहां दिखनेवाले एकमात्र व्यक्ति से बोला—"सुनिये महाशय! जरा यह तो बताइये जर्मन लोग कहां हैं?"

[३०]

जर्मन सैनिक वास्तव में वहीं पास में लक्समबर्ग प्रासाद के अष्टमुखी गुंबद के नीचे मोर्चा लगाये हुए थे, जो ६४ एकड़ भूमि में फैला हुआ था। प्रासाद के दोनों ओर फैले हुए उसके सुंदर उद्यान थे। इन्हीं उद्यानों के दक्षिण-पूर्वी किनारे पर एक अन्य भव्य इमारत खड़ी थी, जिसमें खनिज विद्यालय था।

इस इमारत के सामने बने हुए जर्मन पिलबाक्सों से केवल ६० गज दूर एक नौजवान कर्नल फेबियन हमले की तैयारी कर रहा था। उसकी उम्र केवल २५ साल की थी; लेकिन इतने थोड़े ही समय में वह तीन बार युद्ध में घायल हो चुका था और गेस्टापो के कब्जे से भाग निकला था। २६ घंटे से फेबियन और उसके जांबाज साथी जर्मनों को छका रहे थे और उन्हें खदेड़कर प्रासाद के अंदर धकेल दिया था। अब दूसरी बख्तरबंद डिविजन आने की खबर सुनकर उसने अपनी चिर-संचित अभिलाषा पूरी करने का निश्चय कर लिया और अपने साथियों को लक्समबर्ग प्रासाद पर हमला करने का आदेश दिया।

पास के होटल में छिपे हुए प्रतिरोध

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आंदोलन के कुछ लड़ाकों पर गोलाबारी करने के लिए दो जर्मन बख्तरबंद गाड़ियां प्रासाद से बाहर निकलीं और एक के बाद एक धमाके होने लगे। अंदर से आंदोलनकारियों ने हथगोले फेंके; लेकिन मोटर पर कोई असर न हुआ और उसके इस्पाती जिस्म पर से उछलकर वे दूर जा गिरे। लेकिन तभी अन्नानक लड़ाकों ने उन मोटरों को वापस महल में भागते हुए देखा। उसके बाद टैंकों के पट्टों की गड़गड़ाहट सुनाई दी। वे लेफ्टिनेंट फूशार्दियेर के शर्मन टैंक थे। उसने अपने दस्ते से आगे चुपचाप पैदल आकर सारी स्थिति का अध्ययन कर लिया था।

एक जर्मन सैनिक पिलबाक्स के अंदर से अब भी उस पर निशाना साध रहा था। अचानक फूशार्दियेर की पिलबाक्स पर नजर पड़ी और वह अपने टैंक-चालक से चीखा—"दायें!" जैसे ही टैंक दाहिने कूदा, एक गोला उसके पीछे आकर गिरा। टैंक वेधक अपने पीछे एक दरवाजे को तोड़ता हुआ पीछे हट गया।

ला फूशार्दियेर खनिज विद्यालय के सामने बनी हुई एक इमारत में अपने तीन साथियों सहित घुस गया और दौड़ते हुए चौथी मंजिल के एक मकान पर पहुंचकर घंटी बजायी। दरवाजा खोलने आनेवाली स्त्री से उसने कहा—"मैं जनरल लेक्लेयर की डिविजन का लेफ्टिनेंट द' ला फूशार्दियेर हूं," और आदरपूर्वक उसके हाथ का चुंबन करता हुआ वह अंदर घुस गया और पिछली खिड़की से लक्समबर्ग प्रसाद के आंगन में झांकने लगा, जहां जर्मन सैनिक इकट्ठा थे।

ला फूशार्दियेर ने ४० महीने तक लड़ाई में रहने के बावजूद अपने शत्रुओं को इतने निकट से कभी नहीं देखा था। अब उसने किसी मारधाड़ की फिल्म के नायक की तरह पिस्तौल निकालकर नीचे जर्मनों पर दनादन गोलियां चलानी शुरू कर दीं। कमरे के एक कोने में बैठा हुआ गृहस्वामी आनंद और आतंक से चकित होकर अपने सुंदर, सुसज्जित कमरे को रणक्षेत्र बनते हुए देखता रहा। सारी गोलियां चुक जाने पर फूशार्दियेर ने पिस्तौल एक नक्काशीदार डेस्क पर रख दी और अट्टहास करता हुआ एक सोफे पर लुढ़क गया।

लेकिन जर्मन लोगों का इरादा प्रासाद छोड़ने का नहीं मालूम होता था। पिलबाक्स में खड़े उस जर्मन ने फिर एक शर्मन टैंक पर निशाना लगाया। इस बार उसका निशाना तो नहीं चूका, लेकिन टैंक के सामने उस गोले के गिरते ही एक फ्रांसीसी सैनिक लुई देस्प्रेत्स की ३५ मिलीमीटर की तोप के गोले ने पूरे पिलबाक्स का ही सफाया कर दिया।

ला फूशार्दियेर की रेजिमेंट के टैंक प्रासाद के चारों तरफ घेरा डालने लगे थे। जनरल लेक्लेयर के दूसरे दस्ते ने भी घेरा लगा दिया था और उसके सेनापति कैप्टन आलें द' बोस्यू ने तय कर लिया था कि हर हालत में जर्मनों को प्रासाद से बाहर खदेड़कर ही रहेगा। इसीलिए उसने यह जानते हुए भी प्रासाद फ्रांसीसी राष्ट्रीय संसद का स्थान है, अपने टैंकों से उस पर गोलाबारी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पापलीन
शूटिंग : धारीदार, डॉबी, चारखाना, पायजामा
धोतियां : प्लेटिनम्, मयूर
मर्सराइज्ड लॉन ५५३१
सूटिंग : गबर्डिन
प्रिण्ट : प्रिण्टेड लॉन, वायल, पापलीन
बुने हुए रंगीन बूटे :
२×२ फैन्सी फल वायल जालीदार व बुटेदार

सूती वस्त्रों
में
अद्भुत

अरविंद मिल्स लिमिटेड
अहमदाबाद

हमारी खुदरा दुकानें: प्रिमियर फीनिशिंग, डेकोरेटिंग प्रा०लि०,७ बेबोर्न स्टेडियम, वीर नरीमान रोड, बम्बई १. थोक विक्रेता एजेंट : मेसर्स चिनूभाई एंड-ब्रदर्स, ३६ चंपागली, बम्बई
थोक निर्यात एजेंट : मेसर्स लालभाई एक्स्पोर्ट्स लि० कंट्राक्टर बिल्डिंग, निकोल रोड, वेलार्ड स्टेट, बम्बई -१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करने की आज्ञा दी। गिरते हुए गोलों को देखते हुए उसने सोचा कि जर्मन टैंकों को नाकाम बनाना सबसे पहले ज़रूरी है। जेनरल लेक्लेयर का सदर मुकाम गार मोंतपार्नास में था और अगर जर्मन लोग प्रासाद से भागना चाहते, तो उन्हें स्टेशन तक पहुंचने से कोई रोक वाला नहीं था। वोस्यें अपने रेडियो पर चिल्लाया —"पैंजरों (जर्मन टैंक) को ले लो। ईश्वर के लिए पहले पैंजरों से निपटो!"

लेफ्टिनेंट फिलिप दूप्ले ने यह आदेश सुनते ही इधर-उधर देखा। एक अमरीकी सैनिक धूल और पसीने से लथपथ एक गाड़ी से उतरा। दूप्ले उसकी तरफ भागा और टूटी-फूटी अंग्रेजी में बोला—"माफ कीजिये, क्या आपके पास बजूका (गोले दागनेवाली बंदूक) होगी?" कुछ मिनिटों बाद दोनों नौजवान सैनिक गोलियों की बौछार में बजूका लिये जर्मन पैंजरों सें हिसाब चुकता करने चले जा रहे थे।

[३१]

उसी दिन (२५ अगस्त) १ बजे म्यूरिस होटल के भोजन-कक्ष में जनरल वान शोलित्स ने प्रवेश किया। उसके सहायक ने अनुरोध किया कि वह हमेशा की तरह खिड़की से लगी मेज पर न बैठे, क्योंकि वहां बाहर चलती हुई गोलियां आ लगने का डर है।

"नहीं," वान शोलित्स ने नम्रता से कहा—"आज तो और भी मैं अपनी पुरानी जगह नहीं छोड़ूंगा।"

वान शोलित्स को गिरफ्तार करने का काम कैप्टन जैक्स ब्राने को सौंपा गया था। उसके पास २०० सिपाही और ५ टैंक थे, जो एक मील दूर पर खड़े थे। ठीक एक बजे उसके सैनिकों और प्रतिरोध आंदोलन के लड़ाकों का एक गिरोह लेफ्टिनेंट हेनरी कार्चर के नेतृत्व में रिवोली मार्ग से सावधानी से कदम रखते हुए आगे बढ़ा। उसके पीछे-पीछे टैंक थे। पहले तो कहीं से कोई विरोध नहीं हुआ, फिर अचानक एक पैंजर टैंक दिखाई पड़ा, जो भिड़ने की तैयारी में था। ब्राने के अग्रिम टैंक ने एक ही गोले से उसे ध्वस्त कर दिया और उसके साथ ही पूरी सड़क गोले-गोलियों के घनघोर धमाकों से गूंज उठी।

टैंक बढ़ते जा रहे थे। ब्राने ने दूसरे पैंजर को देखा। फिर गोला चला; लेकिन पैंजर के कवच पर कोई असर नहीं हुआ, बल्कि उसकी तोप ने उलटे उन्हीं लोगों की तरफ निशाना साधा। "कवच-भेदी गोला!" सार्जेंट बिजियें चिल्लाया, लेकिन पैंजर के सामने जो गोला गिरा, वह धुआं करनेवाला गोला था। अंधेरे में उसका तोपची गलत गोला लगा बैठा था।

अब पैंजर केवल १५ गज दूर रह गया था। बिजियें के टैंक के गोला दागने से पहले ही पैंजर की ८८ मिलीमीटर की तोप उसकी धज्जियां उड़ा देती। "लड़ जाओ।" बिजियें चिल्लाया और उसके टैंक चालक ने एक उछाल भरकर अपने टैंक को दे मारा। एक जोर की चिंघाड़ के साथ चिनगारियां

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निकलीं और दोनों टैंकों की तोपों की नालें एक दूसरे में फंस गयीं। चौराहा कुछ देर तक शांत रहा।

लेकिन तभी सामनेवाली इमारत से दनादन गोलाबारी होने लगी और जल्दी ही ब्राने के पांच टैंकों में से तीन नष्ट हो गये। अपने साथियों के मारे जाने से पागल होकर बाकी टैंकों ने अंधाधुंध गोलाबारी शुरू कर दी। क्रोधित होकर ब्राने चीखा—"बंद करो। तुम लोग संसार के सबसे सुंदर चौराहे को ध्वस्त किये दे रहे हो।" तभी सूचना मिली कि एक और टैंक नष्ट हो गया है।

इसके बावजूद पैदल सैनिकों ने बढ़ना जारी रखा और ठीक ३ बजकर ५ मिनिट पर हेनरी कार्चर और उसके तीन साथी कूदकर म्यूरिस होटल में जा घुसे। सबसे पहले उसने हाल में लटके हुए हिटलर के विशाल चित्र की तरफ अपनी मशीनगन का रुख किया। तभी सीढ़ियों के पीछे बालू की बोरियों से एक जर्मन ने गोली चलायी। कार्चर भागकर एक मेज के पीछे जा घुसा और एक फासफोरस हथगोला निकालकर फेंका। उसके पीछे से वाल्टर हरमैन ने लिफ्ट की ओर अपने आग्नेयास्त्र (फ्लेमथ्रोअर) का मुंह किया।

हाल में भरे हुए धुएं के बादल के पीछे से एक जर्मन अफसर अपने हाथ ऊपर किये हुए निकला। कार्चर ने अपनी बंदूक की नली उसके बोल्ट में अड़ाकर आदेश दिया—"एक-एक करके सभी अपने हथियार फेंक दो और हाथ ऊपर किये हुए बाहर निकल आओ।" जर्मन अफसर ने चिल्लाकर दोहराया और गोली चलनी बंद हो गयी। जर्मन सैनिकों ने आत्मसमर्पण कर दिया। कार्चर ने एक अफसर के लाल फीते को देखकर उसे झपट लिया और पूछा—"कहां है तुम्हारा सेनापति?"

वान शोलित्स ऊपर की मंजिल पर एक लंबी मेज के सामने खड़ा था। वह शांत और तटस्थ भाव से अपने दंड की प्रतीक्षा कर रहा था। कुछ ही घंटे पहले उसने निश्चय किया था कि फिजूल में लड़कर अपने आदमियों को मारने से कोई फायदा नहीं। उसने आज्ञा दे दी थी कि अगर प्रतिरोध आंदोलन के लड़ाके होटल पर कब्जा करने की कोशिश करें, तो लड़ा जाये; लेकिन अगर सेना हो, तो थोड़ी-बहुत गोली चलाने के बाद समर्पण कर दिया जाये।

वान शोलित्स अपने ऊपर लज्जित नहीं था। उसके सैनिक-सम्मान की इसमें कोई अप्रतिष्ठा नहीं थी। स्वयं बंदी हो जाने के बाद वह सम्मानपूर्वक अपने सैनिकों को आत्मसमर्पण करने का आदेश दे सकता था। इसके साथ ही, वह बिना किसी शर्म या संकोच के इतिहास के निर्णय का सामना करने को तैयार था। उसे संतोष था कि उसने प्रतिशोध और प्रतिहिंसा से अंधे हिटलर के हाथों अपने आपको पैरिस का हत्यारा न बनने दिया था।

तभी उसके कमरे का द्वार खुला और एक फ्रांसीसी अफसर ने सलामी देते हुए उससे कहा—"मैं जनरल द' गाल की सेना का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेफ्टिनेंट कार्चर हूं।"

"मुझे पेरिस क्षेत्र का सैनिक अधिपति जनरल वान शोलित्स कहते हैं।" उसने उत्तर दिया।

"आप अब मेरे बंदी हैं।" कार्चर बोला।

"जानता हूं।" वान शोलित्स का उत्तर सहज था।

[३२]

पुलिस मुख्यालय के विशाल भोजन-कक्ष में जनरल लेक्लेयर अभी दोपहर का भोजन करने बैठा ही था कि एक सहायक ने वान शोलित्स के पहुंचने की सूचना दी। बगल के कमरे में जाकर जनरल लेक्लेयर ने वान शोलित्स से राजधानी का औपचारिक समर्पण ग्रहण किया और दोनों सेनापति समर्पण के दस्तावेज की शर्तों पर बातचीत करने लगे।

बगल के कमरे में कुहराम मचा हुआ था। कम्युनिस्ट नेता कर्नल रोल इस बात पर आगबबूला हो रहा था कि इतनी महत्वपूर्ण वार्ता में उसे क्यों नहीं शामिल किया गया। जनरल लेक्लेयर को झुंझलाहट हुई। प्रतिरोध आंदोलन की राजनीतिक अखाड़ेबाजी से उसे सदा से नफरत थी और इस नवयुवक कर्नल रोल का तो वह नाम तक नहीं जानता था, जिसके शुरू किये विद्रोह के कारण ही उसे जल्दी-से-जल्दी पेरिस की ओर भागना पड़ा था। इसके बावजूद उसे समर्पण के दस्तावेज पर कर्नल रोल का नाम भी देने को राजी होना पड़ा।

समर्पण की शर्तों के अनुसार वान शोलित्स ने शहर-भर में अपने सैनिकों को युद्धबंदी का आदेश दिया। उसे लागू कराने के लिए हर मोर्चे और ठिकाने पर एक जर्मन और एक फ्रेंच अफसर वान शोलित्स का समर्पण आदेश लेकर गये। शाम होते-होते एक-एक करके सभी स्थानों पर युद्धबंदी लागू हो गयी। कुछ जर्मन सेनाधिकारी लड़ाई जारी रखना चाहते थे; लेकिन जल्दी ही उन्हें भी इस संघर्ष की व्यर्थता का आभास हो गया।

[३३]

२६ अगस्त। आज का दिन और पेरिस द' गाल का था। हजारों पोस्टर लगाये जा रहे थे—"द' गाल जिंदाबाद!" आज उसका चार साल पुराना अभियान सफल हुआ था और इतिहास ने उसे विजयमाला पहनायी थी। और यही वह समय था, जब वह अपने राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों का पूरी तरह शमन कर सकता था।

द' गाल २५ की शाम को ही पेरिस पहुंच गया था। उस समय धुआंधार लड़ाई चल रही थी। वह सीधा दूसरी बख्तरबंद डिविजन के सदर मुकाम मोंतपार्नास पहुंचा। वहां जनरल लेक्लेयर ने उसे समर्पण-पत्र दिखाया, जिस पर वान शोलित्स के हस्ताक्षर थे। द' गाल कर्नल रोल का नाम देखते ही भड़क उठा। उसे लगा कि प्रतिरोध आंदोलन के नेता इस तरह पेरिस की मुक्ति का श्रेय खुद ही ले लेना चाहते हैं।

गुस्से से भरा हुआ ही वह युद्ध मंत्रालय गया और वहां अपने स्थायी कार्यालय की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'आखिर यह
इतनी अधिक
सफ़ेदी आती
कहाँ से है?'

सर्वोत्तम सफ़ेदी के लिए— टिनोपाल

सफ़ेद कपड़ों की धुलाई के बाद आखिरी बार खँगालते समय पानी में थोड़ा-सा टिनोपाल मिला लीजिए। फिर देखिए, आपके शर्ट, साड़ियों, चादरों व तौलियों की सफ़ेदी का निखार! टिनोपाल इस्तेमाल करने का खर्च? प्रति कपड़ा एक पैसे से भी कम! वैज्ञानिक पद्धति से बनाया गया व्हाइट्नर टिनोपाल कपड़ों के लिए बिल्कुल हानिरहित है!

टिनोपाल की अन्य पैकिंग:

'एक बाल्टी के लिए एक पैकेट'

नया 'इकॉनमी पैक'

® टिनोपाल जे. आर. गायगी, एस्. ए. बाल, स्विट्ज़रलैंड का रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क है। सुहृद गायगी लि., पो. ऑ. बॉक्स ९१, बम्बई-१ बी आर

Shilpi S.G. IA 68 ...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्थापना की। बड़ी मुश्किल से और काफी समझाने-बुझाने से वह तिरोध आंदोलन के नेताओं से मिलने होटल द' विले जाने को तैयार हुआ, जहां वे उसका इंतजार कर रहे थे। जब वह वहां पहुंचा, तो बाहर हर्षोन्मत्त जन-समूह घंटों से उसके दर्शन की आशा में आंखें बिछाये खड़ा हुआ था। अपनी सादी वर्दी में घड़घड़ाता हुआ वह प्रतिरोध के नेताओं की उपेक्षा कर जार्ज बिदोल से मिलने आगे बढ़ गया। उसने उनसे (प्रतिरोध आंदोलन के नेताओं से) परिचय करने का सामान्य सौजन्य भी प्रदर्शित नहीं किया। बिदोल ने एक कागज निकाला और द' गाल से कहा—"जनरल, क्या तुम नीचे खड़ी जनता के सामने फ्रांस में पुनः गणराज्य की स्थापना की घोषणा न करोगे?"

"नहीं।" उत्तेजित द' गाल बोला—"फ्रांसीसी गणराज्य कभी खत्म ही नहीं हुआ था।"

इसके बाद वह छज्जे पर आया। हर्षध्वनि और जयजयकार की अपरिमित लहरें उस जनसमुद्र में हिलोरें ले रही थीं। लोग "द' गाल, द' गाल" का जाप कर रहे थे। उसने उनके सामने संक्षिप्त भाषण दिया और चला आया। अपने भाषण में उस प्रतिरोध आंदोलन अथवा उसके सबसे महत्वपूर्ण अंग 'राष्ट्रीय मुक्ति परिषद' का कोई जिक्र नहीं किया। जहां तक उसका सवाल था, परिषद और उसके नेताओं को वह सम्मानपूर्वक विस्मृति के पर्दे में पहुंचा चुका था। और सचमुच पेरिस की मुक्ति के सप्ताह भर बाद ही द' गाल ने एक-एक कर अपने समस्त तिद्वंद्वियों को, चाहे वे कम्युनिस्ट हों या कोई और — निश्शक्त कर दिया।

बाद में द' गाल ने अपनी आत्मकथा में लिखा—"लोहा उस वक्त गर्म था। मैंने उस पर चोट मार दी।"

[३४]

हिटलर ने अभी पेरिस को नहीं छोड़ा था। जब उसने मित्रसेना के प्रवेश की खबर पहले-पहल सुनी, तो उसके क्रोध का ठिकाना न रहा। "जोड्ल", वह अपने सेनाधिकारी पर गरजा—"ब्रेंत पारी? पेरिस जल रहा है कि नहीं?"

कमरे में खामोशी छा गयी।

वह फिर दहाड़ा—"जोड्ल! मैं पूछता हूं, पेरिस जल रहा है कि नहीं? अब भी पेरिस में आग लगी या नहीं? जोड्ल, तुरंत जवाब दो!"

यह पता चलने पर कि नहीं लगी, हिटलर पागल हो उठा और उसने एक घातक आदेश दे डाला—"फ्रेंच राजधानी पर वी-राकेट बमों से भयंकर बमबारी की जाये।" पेरिस को मलबे का ढेर बनाने के आदेश के न माने जाने से वह पहले ही गुस्से से जल रहा था। जोड्ल की हिम्मत न पड़ी कि उसके इस विनाशकारी आदेश का विरोध करे। न चाहते हुए भी उसे पश्चिमी मोर्चे के मुख्य सेनापति फील्ड मार्शल मोडेल को फोन करना पड़ा। मोडेल हिटलर के अंधानुयायियों में सर्वोपरि था।

सौभाग्य से मोडेल निरीक्षण के लिए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सदर मुकाम से बाहर गया हुआ था। यह नृशंस आदेश जनरल स्पाइदेल को मिला। जोड्ल ने उसे सुनाया– "महानायक (फ्यूहरर) की आज्ञा है कि उत्तरी फ्रांस के समस्त सौ वी-१ हवाई अड्डों से पेरिस पर राकेटों की मूसलाधार वर्षा की जाये।"

स्पाइदेल ने निराश होकर फोन रख दिया। उसे क्या करना चाहिये? वह सोचने लगा। वान शौलित्स की तरह वह भी पेरिस को नष्ट नहीं करना चाहता था। लेकिन आदेश का पालन न करने का अर्थ होता– राष्ट्रद्रोह का अपराध। स्पाइदेल इस पहेली से जूझता रहा। अंत में उसने यह आदेश मोडेल तक न पहुंचाने का निश्चय कर लिया।

परंतु पेरिस अब भी सुरक्षित नहीं था। हिटलर ने लुफ्टवाफ (वायुसेना) को भी शहर पर आक्रमण करने का आदेश दे दिया था। उसकी आज्ञा थी– "वायुसेना अपनी पूरी शक्ति से राजधानी पर प्रहार करे।"

धीरे-धीरे विमानों की गड़गड़ाहट पेरिस के आकाश पर छाने लगी। शहर की सड़कों पर नाच-गाने और उन्मत्त अट्टहास को भेदते हुए हवाई हमले के भोंपू गरज उठे। पहली गूंज खत्म भी न हुई थी कि भयंकर संहारक बम ओलों की तरह गिरने शुरू हो गये।

३० मिनिट तक जर्मन बमवर्षक पेरिस के आकाश पर छाये रहे। उस समय मित्र-सेना के पास एक भी विमानभेदी तोप चालू नहीं थी। आधा दर्जन स्थानों पर दावानल के समान प्रचंड आग फैल गयी। आग की लपटों ने पूरे शहर को लपेट लिया। पूरे महायुद्ध में इतनी भीषण बमबारी पेरिस पर कभी नहीं हुई थी। जर्मन बमवर्षकों के प्रहार से २१३ व्यक्ति मरे और ९१४ घायल हो चुके थे। ६०० से ज्यादा इमारतें ध्वस्त अथवा क्षतिग्रस्त हो चुकी थीं।

ला इवान्दे में खड़े हुए जनरल लेक्लेयर और जनरल कोइनिंग इस महाविनाश को अपनी जलती हुई आंखों से चुपचाप देख रहे थे। इसी विनाश को बचाने के लिए लेक्लेयर समय से बाजी लगाकर पेरिस पहुंचा था, और आज? वह दांत पीसता हुआ बड़बड़ाया–"हरामजादे! हरामजादे!"

प्रतिरक्षा मंत्रालय की खिड़की में खड़ा हुआ द' गाल का सहकारी क्लाद गाई भी यह संहार देख रहा था। बमों के धड़ाकों के साथ ही उसे आस-पास के मकानों से ठहाकों के गगनभेदी स्वर सुनाई दे रहे थे। पेरिस-वासियों का एक समूह हवाई हमलों का अपनी अट्टहास-भरी हंसी से चुनौती देता हुआ विजय-पर्व मना रहा था।

उसी अंधेरे में चलती हुई एक आह गाई के बगल में आकर खड़ी हो गयी। वह द' गाल था। मौन और सोच में डूबा जनरल द' गाल इस भयंकर दृश्य को देखता हुआ हंसी के शोर को सुन रहा था।

"आह!" उसने उच्छ्वास लिया। "कितने नादान हैं ये लोग। सोचते हैं कि के आजाद होते ही युद्ध समाप्त हो गया। अफसोस कि युद्ध जारी है। अभी इसे ज्यादा मुसीबतों के दिन झेलने हैं। हमारा काम तो अभी शुरू हुआ है।"

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सार-सरोवर

सुखाड़िया, उखाड़िया, अखाड़िया

दिसंबर ६५ में कलकत्ते में आयोजित कथा-समारोह में बड़ी उठापटक रही। हिन्दी कथाकारों की तीन पीढ़ियां एक ही मंच पर उपस्थित थीं। श्रद्धेय वृंदावनलाल वर्मा के पधारने से हिन्दी कहानीकारों की पहली पीढ़ी का भी प्रतिनिधित्व हो गया था। इस साहित्यिक दंगल में भाग लेनेवाले कथाकारों को मोटे तौर पर इन तीन वर्गों में बांटा जा सकता था—सुखाड़िया, उखाड़िया और अखाड़िया। सुखाड़िया अर्थात् सुखपूर्वक अड़े रहने और अड़ा रहना चाहनेवाले, जिनके सबल अगुआ थे जैनेंद्रजी। उखाड़िया वर्ग का नेतृत्व कर रहे थे कमलेश्वर, श्रीकांत वर्मा व हरिशंकर परसाई आदि। और अपनी स्वतंत्र सत्ता प्रमाणित करनेवाले साठोत्तरी अखाड़िया वर्ग में प्रमुख थे गंगाप्रसाद विमल, दूधनाथ सिंह आदि।

—विष्णुकांत शास्त्री (ज्ञानोदय)

०००

रसगुल्ले की जन्मशती

प्रसिद्ध भारतीय मिठाई रसगुल्ला अब सौ वर्ष का हो गया है। वर्षों के प्रयास के बाद कलकत्ते के हलवाई नवीनचंद्र दास ने १८६८ में पनीर के इन स्वादिष्ट गोलों का आविष्कार किया। कुछ ही समय में रसगुल्ला केवल बंगाल में ही नहीं, बल्कि देशभर में लोकप्रिय हो गया। जैसे-जैसे बंगवासी अपने प्रदेश से बाहर निकलकर अन्य स्थानों में बसते गये, वैसे-वैसे रसगुल्ले की लोकप्रियता भी बढ़ती गयी। अब तो संदेश और रसगुल्ला—दोनों मिठाइयों को बंगाल की संस्कृति से जोड़ा जाता है। नवीनचंद्र ने रसगुल्ला बनाने की कला का राज बखुशी औरों को बताया और इससे रसगुल्ले की लोकप्रियता और बढ़ी।

इस स्वादिष्ट मिठाई की जन्मशती मनाने और उसके आविष्कारक को श्रद्धाएं अर्पित करने के लिए कलकत्ता के प्रसिद्ध मिठाई विक्रेता के० सी० दास ने उसी घर में एक उत्सव का आयोजन किया, जहां सौ वर्ष पहले नवीनचंद्र पहला रसगुल्ला बनाने में सफल हुए थे। इस उत्सव के एक आयोजक ने संवाददाताओं को बताया कि भारत सरकार से उन्होंने अनुरोध किया था कि इस अवसर की स्मृति में विशेष डाक-टिकिट जारी किये जायें, पर भारत सरकार ने इस अनुरोध को टाल दिया। आगे सूचना दी गयी कि १९६५ में ब्रसेल्स के व्यापार-मेले

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के लिए उनसे ४६,००० रुपये के रसगुल्ले भेजने को कहा गया था; पर विदेश-यात्रा से लौटने पर उन्हें पता चला कि सरकार ने पनीर की मिठाइयों पर प्रतिबंध लगा दिया है। वैसे अमरीका और ब्रिटेन ने इस मिठाई के आयात के बारे में पूछताछ की है; पर अभी इस बारे में कोई विशेष प्रगति नहीं की गयी है। यों रसगुल्ले की लोकप्रियता देखते हुए लगता है कि यदि इस मिठाई को सील-बंद डिब्बों में भरकर निर्यात करने की छूट दी जाये, तो विदेशी मुद्रा कमाने में सहायता मिल सकती है। —'दिनमान'

०००

युद्ध पर १; शांति पर १०००

पिछले दिनों मैंने अमरीकी सरकार की परस्पर-विरोधी नीतियों का जिक्र करते हुए इस बात का उल्लेख किया था कि एक ओर, सरकार अमरीकी जनता के विदेश-भ्रमण के अधिकार को सीमित करना चाहती है और दूसरी ओर विदेश-भ्रमण के उपयुक्त सुपरसानिक वायुयान बनाने की व्यापार-योजना पर अरबों डालर खर्च करना चाहती है। अमरीका की लड़खड़ाती हुई डालर-स्थिति को संभालने-सुधारने में जो सरकारी योजनाएं सामने हैं, उनमें विरोधाभास स्पष्ट है।

दूसरे देशों को अधिकाधिक युद्ध-सामग्रियां बेचने की सरकारी नीति इस विरोधाभास का सबसे बड़ा उदाहरण है। यद्यपि जान्सन ने इस नीति से होनेवाले खतरे की ओर स्पष्ट इंगित किया है कि विश्वशांति तभी संभव है, जब विश्व-स्तर पर शस्त्रास्त्रों पर नियंत्रण किया जाये। मगर अमरीकी सरकार क्या इस नीति पर अमल करती है?

एक अमरीकी साप्ताहिक पत्र 'बिजनेस वीक' ने जो आंकड़े प्रकाशित किये हैं, उससे बिलकुल स्पष्ट हो जाता है कि अमरीकी सरकार अपनी लड़खड़ाती हुई डालर स्थिति को बचाने के लिए दूसरे देशों को अंधाधुंध युद्ध की सामग्रियां बेच रही है। और इस तरह विश्व का कोई भी देश इससे युद्ध-सामग्री खरीद सकता है। शर्त एक ही है—भुगतान डालर के अंतर्राष्ट्रीय मूल्य-स्तर पर होता रहे। बड़े पैमाने पर युद्ध की सामग्रियां जिन्हें बेची जा रही हैं, उनमें से मुख्य हैं पश्चिम जर्मनी, इटली और जापान। पश्चिम जर्मनी को तो २०० एम० डी० एफ०—४ लड़ाकू वायुयान, जिनकी लागत लगभग १ अरब डालर होगी, देने की बातचीत चल रही है। साथ ही १५० मिल्ट्री-ट्रान्सपोर्ट हेलिकोप्टर भी बेचे जायेंगे, जिनकी लागत ५० करोड़ डालर होगी।

यद्यपि जापान के नये संविधान में युद्ध की और युद्ध के साधनों की भर्त्सना की गयी है; तो भी जापान ने हाल ही में अमरीका से एंटी एयरक्राफ्ट मिसाइल खरीदने का अनुबंध किया है। इटली में तो अमरीकी लाइसेंस के अंतर्गत युद्ध-सामग्रियों का उत्पादन ही हो रहा है। अमरीकी युद्ध-सामग्रियों का दूसरा बड़ा खरीदार है, मध्यपूर्व। इजरायल और अरब के बीच हुए युद्ध के दौरान अमरीका ने कुछ समय के लिए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शस्त्रास्त्र बेचना स्थगित कर रखा था। अब वह फिर से लीबिया, मोरक्को, सऊदी अरब, लेबनान और ट्यूनीसिया आदि देशों को युद्ध-सामग्री बेच रहा है और मजे की बात तो यह है कि अपनी निष्पक्षता का इजहार करने के लिए उसने इजरायल को भी बमबाज वायुयान बेचे हैं। दरअसल, आज विश्व-शांति की आवाज अमरीका की 'डालर-बचाओ' नारेबाजी में कमजोर पड़ रही है।

क्या अमरीकी सरकार समझती है कि युद्ध-सामग्री खरीदनेवाले देश उनका इस्तेमाल नहीं करेंगे? फिर इससे संभावित परिणामों की कल्पना क्या अमरीका नहीं करता? शांति के बजाय चारों तरफ एक असुरक्षा का वातावरण फैल रहा है। अमरीकी कांग्रेस ने दूसरे देशों को युद्ध-सामग्री नहीं बेचे जाने के समर्थन में विधान बनाये हैं, जिनके पीछे नैतिक प्रतिबद्धताएं थीं; मगर आज जो हो रहा है, वहां नीति, रीति, सब कचरा है।

जहां तक अमरीकी जनता का प्रश्न है, वह यह बर्दाश्त नहीं कर सकती कि हमारा देश अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए दूसरे देशों को युद्ध-सामग्री बेचे और प्रकारांतर से उन्हें एक-दूसरे के साथ लड़ाई करने के लिए आमादा करे।

अगर हम युद्ध नहीं, शांति चाहते हैं, तो राष्ट्रसंघ के पाये को मजबूत करें। युद्ध और शांति के खाते में अमरीकी बजट क्रमशः १,००० डालर और १ डालर का अनुपात बरतता है। मैं कहता हूं कि यह अनुपात तोड़ना होगा, उसे उलटा करना होगा। अब युद्ध पर १ डालर और शांति पर १,००० डालर खर्च करने की आवश्यकता है। तभी सारे विश्व में सुरक्षा, सद्भावना और मैत्री का संबंध स्थायी हो सकेगा। राष्ट्रसंघ जैसी एक विश्व-संस्था की छत्रछाया में हर देश को खींच लाना ही अधिक काम्य है।

—नार्मन कजिन्स (सैटर्डे रेव्यू)

०००

हिन्दी नाट्य-मंच की शतवार्षिकी

हिन्दी नाट्य-मंच की शतवार्षिकी आज कई बड़े नगरों में मनायी जा रही है। आज से १०० वर्ष पूर्व सन १८६८ में बनारस में हिन्दी नाट्य-मंच का उद्बोधन हुआ था। और ऐसा माना जाता है कि उसी समय से हिन्दी नाट्य-रचना की ओर लेखक प्रवृत्त हुए। बनारस के हिन्दी नाट्य-मंच पर अभिनीत प्रथम नाटक था 'जानकी-मंगल', जिसके लेखक का नाम अभी स्पष्ट नहीं है। इस दिशा में दिल्ली के डा० सुरेश अवस्थी पूरे विस्तार के साथ खोजबीन कर रहे हैं। यह बड़े संतोष का विषय है कि भारतेंदु हरिश्चंद्र के बाद नाटक-लेखन और नाट्य-मंच की इतिश्री नहीं हुई, बल्कि अधिकाधिक विकास हो रहा है। कलकत्ता, दिल्ली और बंबई में फिल्म के बढ़ते हुए प्रभाव के बावजूद, एक-से-एक बढ़कर आधुनिक नाट्य-गृहों का निर्माण हो रहा है। नयी शिल्प-शैली में नाटक लिखे जा रहे हैं, और बड़ी सफलता के साथ मंचस्थ भी किये जा रहे हैं। इस सिलसिले में एक बात और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बड़ा होकर मैं जहाजी बेड़े का कप्तान बनूँगा और सारे संसार की सैर करूँगा तथा दिनभर बहुत सी मॉर्टन की मिठाइयाँ खाऊँगा।

MORTON

विशुद्ध पदार्थों से बनी, मॉर्टन की मिठाइयाँ, क्रीम-टॉफी व छक्टोबॅनबॅन बहुत ही स्वादिष्ट हैं। आज ही खरीदिये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहना चाहूंगा। बंबई के हिन्दी-फिल्म-क्षेत्र में जो हठधर्मिता चल रही है, उससे ऊबकर कुछ सृजनशील अभिनेताओं न नाट्य-मंच की शरण लेने की सोची है। और इससे यह बात साफ है कि अच्छे नाटकों और अच्छे नाट्य-लेखकों की मांग बढ़ेगी। और हिन्दी अपने सारे विरोधी परिवेशों के बीच नये-नये माध्यमों के जरिये फूलेगी-फलेगी।

—विकास ('देश' बंगला साप्ताहिक)

०००

नीग्रो नर्तकों की सफलता

पिछले दिनों न्यूयार्क और मैनहटन में दो नृत्य-नाट्य प्रस्तुत किये गये। प्रस्तुत कर्ता थे दो प्रसिद्ध नीग्रो नर्तक—एल्विन ऐली और डोनाल्ड मैक्कायल। यद्यपि दोनों नृत्य-कला में पारंगत हैं, फिर भी दोनों की अपनी अपनी विशेषताएं हैं। मैक्कायल की लंबी शारीरिक रचना जहां एक छंद-बद्ध भंगिमा की सृष्टि करती थी, वहां ऐली का शारीरिक गठन जैसे अपूर्व शक्तिमत्ता का प्रतीक था। उनके नृत्य-नाट्यों में आंतर्जातिकता तथा विश्व बंधुत्व की गाथा ही प्रधान होती है। दोनों नर्तकों ने अमरीका की आधुनिक नृत्य-शिक्षा भी ग्रहण की है। इन दोनों की नाच-संस्थाओं में यद्यपि नीग्रो कलाकारों की बहुतायत है, मगर ऐसी कोई भी बंदिश नहीं है कि इसमें दूसरी जाति के लोग न आने पायें। ये मानते हैं, कला किसी जाति, धर्म या समाज का बंधन नहीं मानती। अमरीका में इनके नृत्य-नाट्यों के बड़े सफल प्रदर्शन हो चुके हैं। इनके ट्रूप में

नीग्रो नर्तक
एल्विन ऐली

माय गुएल गाडरिउ और जूडिथ जैमिसन जैसे क्षमता-संपन्न प्रतिभाशाली कलाकार भी शामिल होने में अपना गौरव समझते हैं।

—वाल्टर हैरी (सैटर्डे रेव्यू)

०००

विश्वकला प्रदर्शनी—त्रिनाली

पिछले दिनों त्रिनाली के नाम से विश्व-कला प्रदर्शनी का आयोजन ललित-कला अकादमी के अंतर्गत रवींद्र भवन तथा जय-पुर हाउस में हुआ। आज की समकालीन चित्रकला की नयी पद्धति तो कलाकारों ने सीख ली है, पर उसको किस रूप में विक-सित किया जाये, यह अभी तय नहीं हो सका है। यही कारण है, प्रदर्शनी में पूरे विश्व के चित्र एक ही कलाकार के बनाये हुए लगते हैं। यह तो बहुत अच्छी बात है कि हमने विश्व-मंच पर एक ऐसी भाषा दे दी है, जिससे सभी की कला एक हो गयी है। लेकिन केवल भाषा जान लेना ही कला नहीं है; उस भाषा के द्वारा हमें अपनी बात करने की भी जरूरत है।

प्रदर्शनी में लगभग सभी देशों के चित्र लगे थे, मगर सबसे अधिक चित्र भारत के कलाकारों के ही थे। और भारतीय चित्रों में यूरोपीय चित्रों की शैली ही नहीं, संभ-वतः कथ्य भी विदेशी था; और इसीलिए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ज़ेनिथ इस्पाती पाइप अनेक देशों में भेजे जाते हैं!

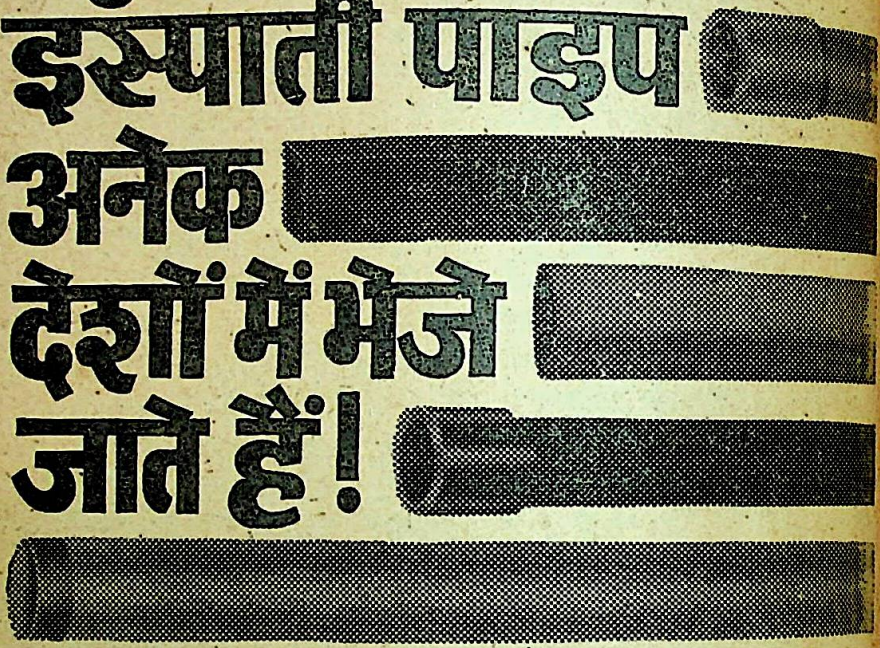

ज़ेनिथ इस्पाती पाइप जहाँ भी भेजे जाते हैं, वहीं उनकी मांग पैदा हो जाती है। इसका कारण यह है कि वे आधुनिकतम प्रविधियों के अनुसार बनाए जाते हैं। और उनकी उच्च गुणावस्था का कड़ा परीक्षण किया जाता है। ज़ेनिथ स्टील पाइप्स लिमिटेड आई.एस: १२३९ के अनुसार इलैक्ट्रिकली रीज़िस्टेन्स वेल्डिड (इ. आर. डब्ल्यु.) इस्पाती पाइपों के निर्माता और सब से बड़े निर्यातक हैं। ज़ेनिथ स्टील पाइप्स लिमिटेड आयताकार खोखले सेक्शन, विशेष ट्यूबिंग और चिप्पर नाइज़ का भी निर्माण करते हैं।

भारत में निर्माता : **ज़ेनिथ स्टील पाइप्स लिमिटेड**
मोती महल, १९५, चर्चगेट रैक्लेमेशन, बम्बई १

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रसिद्ध अमरीकी कला-समालोचक अल्फ्रेड एच० बार० जूनियर ने कहा है—"यह भारत पर एक प्रकार का वैचारिक आक्रमण है।" यह कहां तक सच हैं, सोचने की बात है। केवल दस या बीस कलाकार भारत के संपूर्ण कला-जगत् का प्रतिनिधित्व तो नहीं करते, और न ही इन चित्रों को देखकर भारत की सांस्कृतिक स्थिति का सम्यक् परिचय मिल सकता है।

हमारे देश में ऐसे हजारों कलाकार हैं, जिन्हें भारतीय सभ्यता और संस्कृति पर गर्व है, और जो इस आधुनिक पश्चिमी कला के विनिमय में अपनी आत्मा नहीं बेचते। यह ठीक है, कि विश्व-कला-मंच पर उनकी कोई भूमिका नहीं है; मगर यह निश्चित है कि उनके अभाव में भारतीय चित्रकला का प्रतिनिधित्व बेहद एकांगी होगा। विख्यात सूक्ष्मवादी आधुनिक कलाकार जान मीरों ने इस प्रदर्शनी से आशा व्यक्त की थी कि संसार के उत्तर-दक्षिण, पूरब-पश्चिम, सभी देशों के कलाकार यहां इकट्ठे होकर भारत की प्राचीन संस्कृति तथा सभ्यता से प्रभाव ग्रहण करेंगे। उनकी आस्था थी कि इसका संदेश साधारण कलाकृति के दायरे से ऊपर उठकर नवीन तथा मानवीय जनतंत्र का केंद्रबिंदु बनेगा। इंग्लैंड के प्रसिद्ध मूर्तिकार हेनरी मूर ने इस प्रदर्शनी को इसलिए महत्वपूर्ण माना था कि इससे पूर्व तथा पश्चिम में सृजनात्मक अभिव्यंजना का आदान-प्रदान होगा और आधुनिक संसार के सृजनशील व्यक्ति एकजुट हो जायेंगे। किंतु मैं समझता हूं, इस प्रदर्शनी ने इन सुधी स्रष्टाओं की आशा पर तुषारपात किया होगा।

सांची और भरहुत के महान स्तूपों, अजंता के भित्तिचित्रों और वेरुल के एकाश्मक कैलाश मंदिर की भांति कला लोक के शिक्षण, आनंद और शिव-सत्य और सौंदर्य की साधना के उद्देश्य से आगे बढ़ती है। लेकिन विश्व-कला प्रदर्शनी में भारत के चित्रों को देखकर रंचमात्र भी भारतीयता का आभास नहीं होता। प्राचीन भारत की कला का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत था; बंगाल की अल्पना, राजस्थान की मेंहदी मांडने, बिहार के ऐपन, उत्तर प्रदेश के चौक, गुजरात-महाराष्ट्र की रंगोली, और दक्षिण भारत के कोलम। इनके बल्लरी- धान और आकृति-प्रधान अलंकरणों में कला की एक अति प्राचीन लोकव्यापी परंपरा आज भी सैकड़ों भारतीय कलाकारों की सृष्टि-पद्धति में विद्यमान है। आवश्यकता इस बात की है कला-प्रदर्शनियों के आयोजक संकीर्ण मनोवृत्ति का त्याग करें और उन कलाशिल्पियों का भी आह्वान करें, जो विज्ञापित-प्रचारित नहीं हैं, और जिन्हें 'पॉप आर्ट' की तमीज नहीं है।

—हृदयनारायण ('आज' दैनिक)

०००

जितेंद्र महाराज

जितेंद्र महाराज ने कत्थक शास्त्रीय नृत्य के क्षेत्र में बहुत मूल्यवान और ठोस कार्य किया है। नृत्य-प्रदर्शन के अपने एक अत्यंत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मोहक रंगरूप का सृजन किया है और सर्वथा एक नयी शैली को जन्म दिया है। नृत्य-नाट्य, साज-सज्जा तथा वेश-भूषा में बहुमूल्य परिवर्तन किये हैं।

मुसलमानी काल से उत्तर भारत की एक मात्र शास्त्रीय नृत्य-विद्या कत्थक पेशेवर दरबारी नर्तकों, बाजारू नर्तकियों, उनके उस्तादों और सिर्फ कत्थक वंशजों तक सीमित रही है। लेकिन पिछले २०-३० वर्ष से समाज के शिक्षित और संभ्रांत वर्ग का ध्यान इस ओर गया है और सम्मानित कुल की सुसंस्कृत बालाओं ने रंगमंच पर आने का साहस किया है।

जितेंद्र महाराज कदाचित प्रथम शिक्षित व्यक्ति हैं, जिन्होंने दफ्तर की सरकारी नौकरी के लालच और सुगम जीवन-क्रम को छोड़कर कष्टपूर्ण और जोखिम भरा कला-साधना का मार्ग अपनाया। इनके नृत्याभिनय से आत्माभिव्यक्ति, सौंदर्य और आनंद की साकार सृष्टि होती है।

जितेंद्र महाराज ही कदाचित पहले नृत्यकार हैं, जिन्होंने कत्थक की ताल-तोड़ों में निबद्ध, शुद्ध नृत्य के तबले और पखावज के बोलों में, अलग-अलग रचनाएं की हैं।

नृत्य-नाट्य की दिशा में उन्होंने एक नया प्रयोग किया है। उनकी नृत्य-नाटिकाओं में आत्मा और मन का द्वंद्व बहुत सजीव और मार्मिक शैली में प्रस्तुत हुआ है। दर्शन और मनोविज्ञान की गुत्थियां उनकी छंद भंगिमा में अनायास खुलने लगती हैं। उनकी प्रसिद्ध नृत्य-नाटिकाओं में 'कला और वासना' तथा 'काल और मनुष्य' उल्लेखनीय हैं।

—अ० स्व० भटनागर (सा० हिन्दुस्तान)

०००

फूलों की कला : फूलों से बाहर

फूलों की सजावट आज दुनिया में चित्रकला, मूर्तिकला आदि के समानांतर ही विकसित हो चुकी है। फूलों से मोह और रहन-सहन में सुरुचि लाने के लिए फूलों की सजावट की इस कला में संयोग से सबसे आगे है जापान, फूलों की सजावट को जीवन की सूक्ष्म संवेदनाओं का प्रतीक बनाने की परंपरा जापान में बहुत पुरानी है।

दिल्ली में अक्सर जापान की इस कला के संस्थान की ओर से फूलों की सजावट की प्रदर्शनियां और प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं। ऐसी ही हाल की एक प्रदर्शनी में रखी गयी कृतियों या रचनाओं का विषय था 'वात्सल्य'। किसी को भी इस बात पर हैरत हो सकती है कि फूलों की इस सजावट में फूलों के परिवेश पर ज्यादा जोर दिया जाने लगा है और अक्सर कृतियों में फूलों से भिन्न कुछ लकड़ियों, जड़ों, पत्थरों आदि के उपयोग द्वारा इस विद्या को मूर्तिकला के समकक्ष ले आया गया है। इस कला की एक विशेषज्ञ ने भेंट में बताया है कि इस कला को अब केवल सज्जा के स्तर से उठाकर मानव-जीवन की गहन और जटिल अभिव्यक्तियों तक पहुंचा दिया गया है।

—मुद्राराक्षस (साप्ताहिक हिन्दुस्तान)

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अद्भुत व्यक्ति :

बिना बिंब के प्रतिबिंब

सुरेश सिन्हा

आंखें मन का दर्पण कहलाती हैं। मन की कल्पना आंखों में तस्वीर बनकर उभर आती है। लेकिन मन की कल्पना कैमरे की फिल्म पर तस्वीर बनकर उभर आये, इसका प्रमाण आपने आज तक नहीं पाया होगा। परंतु इस तरह की विशेषता है अमरीका-निवासी टेड सेरियस में।

आज से करीब चार साल पहले शिकागो के एक डाक्टर स्टैनली मिशल के दफ्तर में टेड ने इसका प्रथम बार प्रदर्शन किया था। साक्षी थे स्वयं डाक्टर मिशल और अमरीका की विश्वविख्यात पत्रिका 'लाइफ' के पाल वेल्च और उनके एक साथी। चूंकि डाक्टर मिशल सम्मोहन-विद्या के विशेषज्ञ (हिप्नोटिस्ट) थे; अतः सम्मोहन से प्रभावित होने के आरोप से बचने के लिए पाल वेल्च अपने एक साथी को गवाह के रूप में ले गया था।

टेड सेरियस एक विलक्षण शक्ति का मालिक है। वह कैमरे से अपने मस्तिष्क की कल्पना की तस्वीर उतारता है। टेड की इस विलक्षण शक्ति को परखने के लिए पाल वेल्च अपना कैमरा ले गया था, जिसमें उसने फिल्म भी खुद ही भरी थी।

टेड एक कुर्सी पर पांव-पर-पांव चढ़ाकर बैठा था और पाल वेल्च और उसका साथी उसे एकटक निहार रहे थे। टेड ने कैमरा अपनी गोद में इस तरह रखा था कि उसका चेहरा कैमरे के प्रभाव-क्षेत्र में था और वह एकटक कैमरे के लेन्स में देख रहा था। एक पल के लिए ऐसा लगा कि उसकी आंखों में अतीत की परछाइयां झांक रही हैं; और उसके साथ ही कैमरे का बटन दबा। इसी तरह उस दिन लगभग दस-बारह बार प्रयास करके टेड सेरियस एक स्पष्ट चित्र उतारने में सफल हो पाया और वह चित्र था यूनान की एक प्राचीन मूर्ति का।

पाल वेल्च और उसका साथी अत्यंत प्रभावित हुए। लेकिन मन में एक चीज खटकती रही—हिप्नोटिस्ट की उपस्थिति। इसके कुछ ही दिनों बाद टेड सेरियस 'लाइफ' के दफ्तर में आया। इस बार भी कैमरा और फिल्म 'लाइफ' की ही थी। टेड नहीं चाहता था कि लोग यह सोचें कि वह पहले से तैयारी करके कुछ खास चीजों की तस्वीर उतारता है। इसलिए इस बार उसने यह 'लाइफ' के लोगों पर छोड़ दिया कि वे किस चीज की तस्वीर चाहते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुहासों को दूर करने के लिये लिचेन्सा !

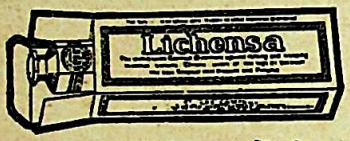

- १०८ देशों के डाक्टरों की एक ही सलाह !
- सभी मुख्य केमिस्टों के पास मिलता है।

DZ-1676 A-HIN

आँखों की सुरक्षा तथा सुंदरता के लिये।

दरबार काजल

आपके सुंदर बालों की देखभाल एवं पोषण चाहिये।

बंगाल केमिकल्स का

कैंथराइडीन

हेयर आइल

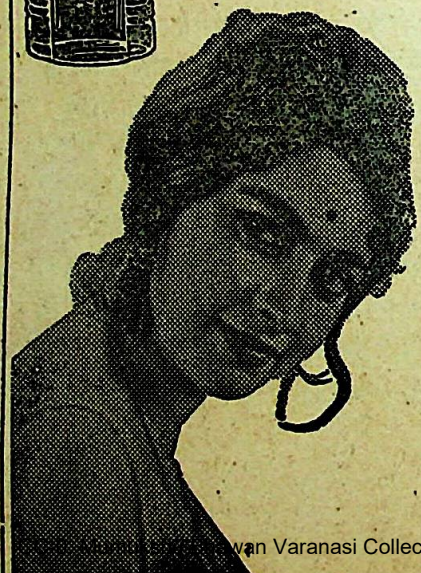

लंबी, चमकदार, रेशम-सी नरम लटों को बढ़ाने में मदद करता है, बालों को चिपचिपाहट से मुक्त रखता है और उनका झड़ना रोकता है।

बंगाल केमिकल

कलकत्ता, बंबई,
कानपुर, दिल्ली

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पाल वेल्च ने कहा कि किसी शहर की सड़क का ऐसा दृश्य खींचो, जिसमें एक मकान की १७ वीं मंजिल की खिड़कियां स्पष्ट नजर आ रही हों। टेड सेरियस ने यह फोटो भी वहीं बैठे-बैठे खींचकर दिखा दी। यह स्पष्ट नहीं पता चल सकता कि तस्वीर किस शहर की थी; पर पाल वेल्च की मांग पूरी हो गयी।

इस वैज्ञानिक युग में ऐसी बातों को लोग स्वभावतया हाथ की सफाई (ट्रिक) समझ लेते हैं। कई लोगों ने टेड के मामले में भी इस तरह की शंका उठायी। इसी दृष्टि से 'लाइफ' ने भी काफी जांच-परख की। पर किसी भी तरह, कहीं भी किसी 'ट्रिक' का आभास नहीं मिला। और तो और, इसका भी पता नहीं चल सका कि यह सब होता कैसे है।

टेड का कहना है कि अगर यह हाथ की सफाई ही होती, तो वह अपने प्रयास में हर बार सफल रहता और इस विचित्र शक्ति के प्रदर्शन से अच्छी-खासी रकम कमा सकता था। वह यह महसूस करता है कि उसके भीतर कोई दैवी शक्ति है, जो कभी-कभी ही काम करती है। वह अपनी इस दैवी शक्ति पर पूरी तरह नियंत्रण करना चाहता है।

टेड सेरियस का पारिवारिक जीवन बहुत अभावग्रस्त है। अपनी परेशानियों को भूलने के लिए वह लगातार शराब पीता है, हफ्तों गायब रहता है। लेकिन जहां उसकी इस दैवी शक्ति की परीक्षा की बात आती है, वह अपनी सारी क्षमता लगातार उसमें सहयोग देता है।

एक बार की बात है, टेड कुछ पत्रकारों के पल्ले पड़ गया। पत्रकार उसे एक होटल में ले गये और वहां उसकी सिर से पांव तक खूब बारीकी से जांच की। इसके बाद टेड ने उनके लिए एक के-बाद-एक सात तस्वीरें खींचीं। टेड का मत था कि यह एक महान और अद्‌भुत कार्य था; लेकिन उसे यह भी आशंका थी कि वे पत्रकार उसके महत्व को नहीं समझ पायेंगे। और सचमुच पत्रकारों ने अखबारों में कहीं इसकी चर्चा तक नहीं की।

टेड सेरियस का नियम है कि वह उसी जमाने की वस्तुओं की तस्वीरें उतारता है, जब 'कैमरा' नाम की कोई चीज नहीं थी। एक बार कुछ लोगों ने टेड से फरमाइश की कि वह प्रथम विश्वयुद्ध की तस्वीर उतारे; लेकिन टेड ने अपने नियम के अनुसार यह कहकर इन्कार कर दिया कि उस समय तक कैमरा का आविष्कार हो चुका था। पर उसने अमरीका के स्वतंत्रता-संग्राम के समय की एक तस्वीर को देखकर उस समय के दो क्रांतिकारी सिपाहियों की फोटो अपने मस्तिष्क से उतारी है।

ऐसे लोगों और कंपनियों की कमी नहीं, जो आये दिन टेड की परीक्षा करना चाहते हैं। टेड का कहना है—"एक न एक दिन वह समय अवश्य आयेगा, जब लोग मुझ पर विश्वास करेंगे और मेरी परीक्षा लेने की बात भी नहीं सोचेंगे।"

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"भाषा" त्रैमासिक का महत्वपूर्ण प्रकाशन

समान लिपि विशेषांक

देश में एक लिपि की अनिवार्यता का सीधा संबंध राष्ट्रीय एकता तथा विभिन्न भारतीय भाषाओं के समन्वय से है। भारतीय भाषाओं के मूर्धन्य विद्वानों तथा लेखकों ने इस बात की पुष्टि की है। भाषा अवरोध को दूर करने में भी समान लिपि का प्रयोग सहायक सिद्ध होगा। विभिन्न शिक्षाशास्त्रियों, भाषाविदों तथा साहित्यकारों के विचारों को एक मंच पर प्रस्तुत कर इस ज्वलंत प्रश्न की एक सैद्धांतिक, दार्शनिक तथा व्यावहारिक पीठिका प्रस्तुत करना हमारा अभीष्ट है। इसकी सफलता के लिए विद्वद्जनों से रचनाएं आमंत्रित हैं।

हमारे विशेषांक के संभावित रचनाकार हैं: सर्वश्री सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, हुमायून कबिर, डा० बाबूराम सक्सेना, डा० वी० के० आर० वी० राव, डा० एस० एम० कत्रे, वी० के० गोकक, कृपानाथ मिश्र, सी० एन० वकील, एन० वी० कृष्ण वारियर, सी० शिवराम मूर्ति, डा० महेश्वर नाग, टी० पी० मीनाक्षी सुंदरम्, डा० के० वी० राव, एम० मुजीब, डा० पांडुरंग राव, हरिबाबू कंसल, के० डी० मानकतला, एन० बालसुब्रमणियन, बदलूराम गुप्त, जी० सी० गोस्वामी, डा० भगीरथ मिश्र, डा० ब्रजमोहन, श्री० दा० सातवलेकर तथा अन्य।

प्रकाशनार्थ रचनाएं संपादक 'भाषा', केंद्रीय हिन्दी निदेशालय, वेस्ट ब्लाक–७, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली–२२ के पते पर भेजी जायें।

डीएवीपी ६८।७७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हर्क्युलिस

सिर्फ साइकिल ही नहीं-यह तो जीवन भर का साथी है

मजबूत तो है ही सवारी करना भी कितना आसान है—हर्क्युलिस इस तरह बना है कि जिन्दगी भर साथ दे। उत्कृष्टता के सर्वोत्तम मान के अनुसार बना होने पर भी दाम मुनासिब से अधिक नहीं—हर्क्युलिस का सौदा सचमुच लाभजनक है।

© दि हर्क्युलिस साइकिल एण्ड मोटर कं० लि०, यू०के० का रेजिस्टर्ड ट्रेड मार्क ● भारत में निर्माता : टी० आई० साइकिल्स ऑफ इण्डिया, अम्बात्तूर, मद्रास-५३ ● प्रोप्राइटर्स : ट्यूब इन्वेस्टमेंट्स ऑफ इण्डिया लिमिटेड, मद्रास-१ रजिस्टर्ड व्यवहारकारी।

TIC/H-1397A

वार्षिक मूल्य रु. १२] मूल्य रु. १.२५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नये महक के साथ !

सुरुचि की पहिचान यही तो है...

...कि अपनी त्वचा को रेशम-सी कोमल तथा आरोग्यपूर्ण, आभापूर्ण तथा तेजस्वी बनाये रखने के लिए आप रेमी स्नो का प्रयोग करती हैं। दिन भर ताजगी व भीनी भीनी सुगंध का आनन्द उठाने के लिए रेमी टाल्क इस्तेमाल करती हैं।

रेमी सौन्दर्य प्रसाधनों को नियमित रूप से इस्तेमाल कीजिए – फ़िर देखिए आपका स्वभाविक सौन्दर्य एक नयी चमक के साथ निखर उठेगा।

रेमी

स्नो, टॉयलेट लाउडर, टाल्कम पाउडर, हेअर ऑइल्स ब्रिलिएण्टाइन्स तथा पोमेड

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवनीत

[हिन्दी डाइजेस्ट]

जुलाई

१९६२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऐसी शक्ति जिसका जबाब नहीं

गैंडा न तो बाघ के पंजों से डरता है, न सिंह के दाँतों से। उसका कवच या दृढ़ चमड़ा तेज से तेज़ वर्छे से भी उसे बचाता है।

हम कदापि यह बतलाना नहीं चाहते कि कागज और बोर्ड गैंडे के चमड़े के समान मजबूत हो सकते हैं। मगर यह जरूर कहते हैं कि ओरियन्ट पेपर मिल्स द्वारा निर्मित कागज शक्ति और क्वालिटी की अपनी अपूर्व परम्परा को अक्षुण रखती आई हैं।

भारत में क्राफ्ट पेपर के निर्माण के क्षेत्र में अग्रगामी ओरियन्ट को इस दिशा में उच्च कोटि के अनुभवों की सुविधा प्राप्त है। इसलिये, जब आप ओरियन्ट उत्पादन खरीदते हैं तो उनकी शक्ति और क्वालिटी पर भरोसा कर सकते हैं।

ओरियन्ट पेपर मिल्स लिमिटेड

ब्रजराजनगर, उड़ीसा

उत्पादनकर्ता :

- लिखने और छापने के कागज
- पोस्टर और मैनीला पेपर
- क्रेप और पोलिथिन कोटेड कागजों के साथ पैकिंग और रैपिंग पेपर
- डुपलेक्स, ट्रिपलेक्स और ग्रे बोर्ड

ASP/OPM-HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आवरण पृष्ठ नवनीत प्रकाशन लिमिटेड मुद्रण विभाग द्वारा मुद्रित

आपके पश्चात् पढ़ने वाले मित्र के उपयोग के लिये कृपया इस कार्ड को अंक में लगा छोड़ दें।

नवनीत [हिन्दी डाइजेस्ट] के पाठक नम्बर

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय,
अस्सी, वाराणसी।

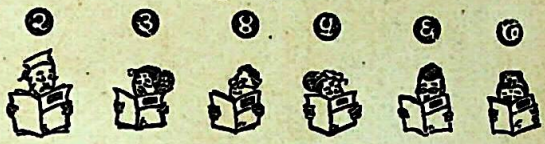

को विशेष निमंत्रण

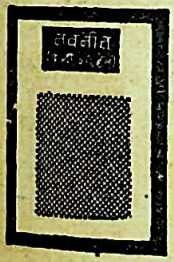

कृपया नवनीत के लिए मेरा चन्दा निम्नप्रकार से जमा करें।

* एक साल के लिए १० रुपया ▭ फुटकर मूल्य से २ रुपये की बचत
* दो साल के लिऐ १८ रुपया ▭ फुटकर मूल्य से ६ रुपये की बचत
* तीन साल के लिये २५ रुपया ▭ फुटकर मूल्य से ११ रुपये की बचत

मैं उपयुक्त रकम मनिआर्डर द्वारा / चेक द्वारा भेज रहा हूँ।

पता

_____

_____

_____

हस्ताक्षर

* अपनी इच्छानुसार V का चिन्ह लगाकर भेजिए।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निरीक्षण से पता लगता है कि 'नवनीत' की एक प्रति कई पाठकों के हाथ जाती है। एक पाठक खरीदता है, दूसरे माँग कर पढ़ते हैं।

क्यों न अपनी निजी प्रति खरीदकर पाठक नम्बर १ हो जाइए।

और अब दो व तीन वर्ष के रियायती चन्दे से आप 'नवनीत' के ग्राहक बन सकते हैं। नीचे वाले कार्ड को भरकर पोस्ट कर दें व चन्दे की रकम मनीआर्डर से भेज दें।

Postage will be paid by addressee

BUSINESS REPLY CARD

No Postage stamp necessary if posted in India

BOMBAY, GRANT ROAD
P. O. PERMIT No. 2067

NAVANEET
341, Tardeo,
BOMBAY-7.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अतुल

• रंग

• रसायन

• और औषधि

अतुल प्रॉडक्ट्स लि.

अतुल, (वाया वलसार)

पश्चिम रेलवे.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

INDU FABRICS
BOMBAY

सर्व प्रकार के उत्तम,
सुंदर कपड़े साथ-ही-साथ

हैंडलूम व पावरलूम में
लगनेवाले बारीक
सूत उचित भाव
में मिलेंगे

दि
इंडिया
युनाईटेड
मिल्स
लिमिटेड.

टेलेफोन नंबर २६६३३१

THE INDIA UNITED MILLS Ltd BOMBAY.
INDU FABRICS BOMBAY
"THE BIG SIX"

"इंदु हाऊस", डुगल रोड, बॅलार्ड इस्टेट, मुंबई नं. १

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वादिष्ट,
पौष्टिक और
विटामिनों से
भरपूर !

पार्ले के

ग्लुको

बिस्कुट

भारत में अपनी किस्म के किसी
भी ब्राण्ड के बिस्कुटों के मुकाबले में ये सब
से ज्यादा बिकते हैं।

पार्ले प्रोडक्ट्स मेन्युफेक्चरिंग कंपनी प्राइवेट लि., बम्बई–५७

PP. 500 HIN.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रसोईघर में वनसदा का
मतलब घर में स्वास्थ्य

अपने घर के लोगोंका स्वास्थ्य घर में बनाये जानेवाले खानेपर अवलंबित रहता है यह हरएक अकलमंद माता जानती है। वह यह भी जानती है कि पकाने के काम मे सबसे अच्छा है वनसदा – अ और ड जीवनसत्त्वों से युक्त, लोकप्रिय वनसदा।

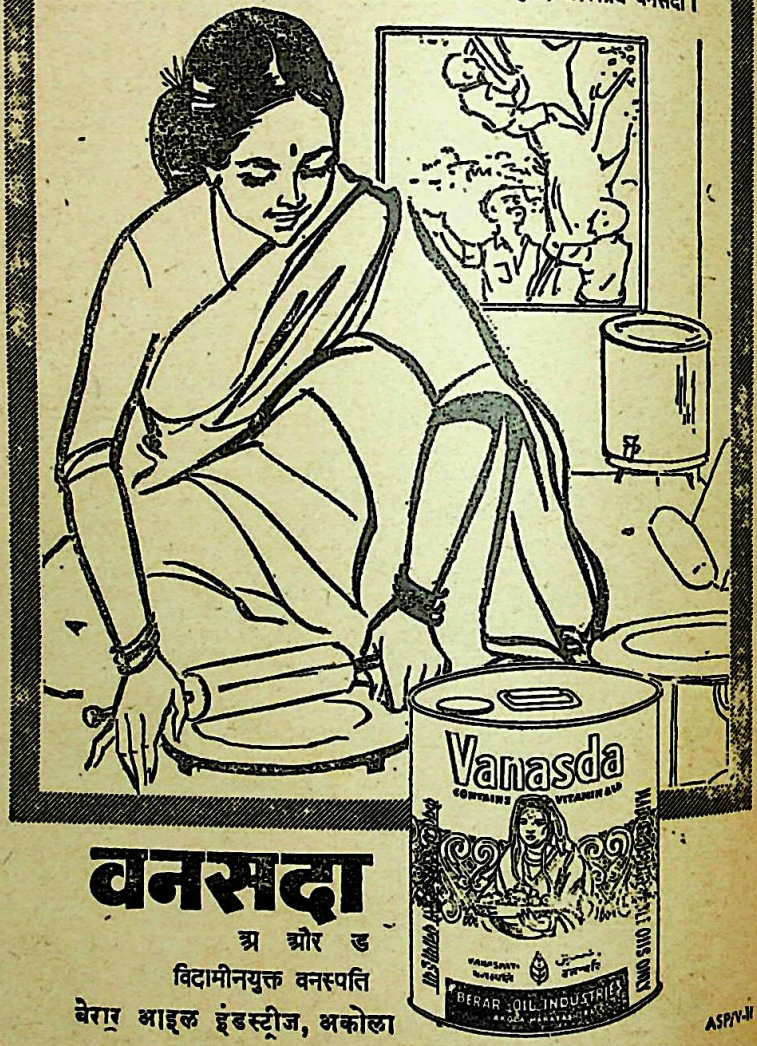

वनसदा

अ और ड
विटामीनयुक्त वनस्पति
बेरार आइल इंडस्ट्रीज, अकोला

ASPIV-H

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

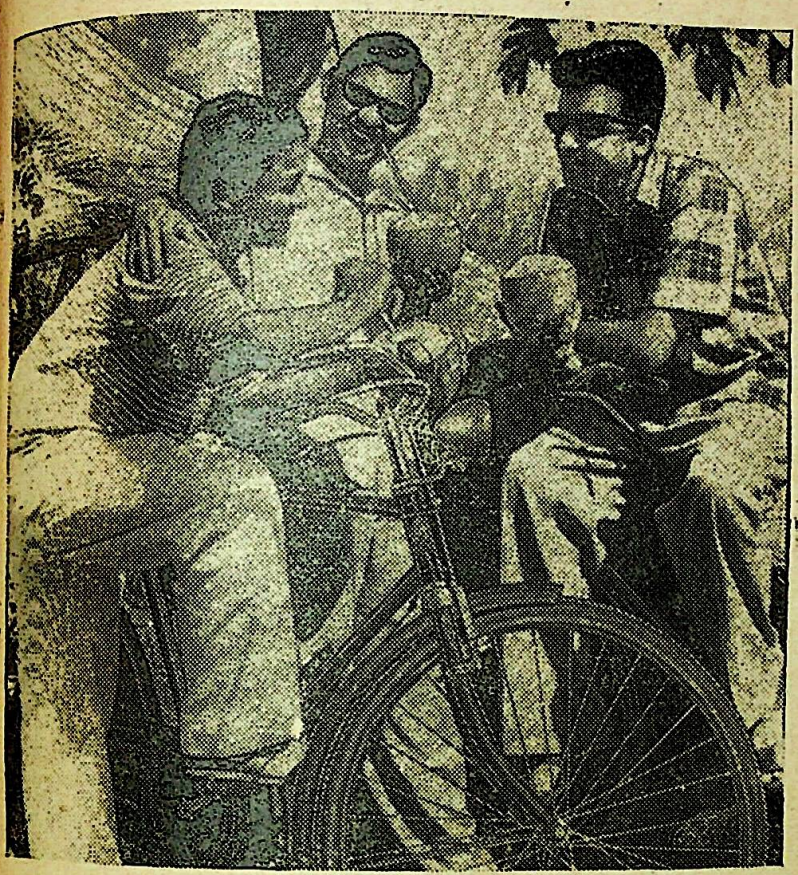

PHILLIPS

फिलिप्स साइकिल
आपके लिये बनती है

सुन्दर, शानदार फिलिप्स साइकिल आप जैसे आज के कामकाजी युवकों की जरूरतों को पूरा करने के लिये बनाई जाती है। यह साइकिल ऐसी मजबूत और लचकदार है कि बुरी से बुरी हालत में भी ठीक चलती है।

करीब ७० वर्षों से सारी दुनिया में मशहूर फिलिप्स साइकिल अब टी० आई० साइकिल्स के आधुनिक कारखाने में सूक्ष्म रीति से बनती है।

टी० आई० साइकिल्स आफ इण्डिया, अम्बातूर, मद्रास के पास

JWT/TC/PH-1605A

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

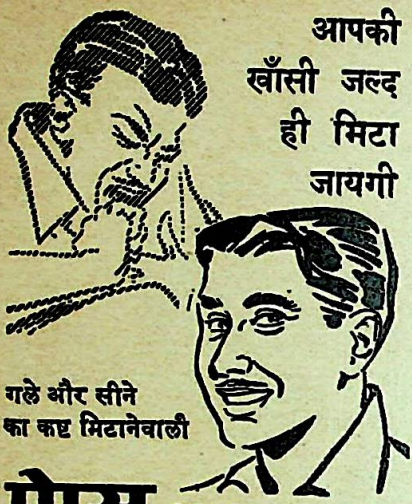

आपकी
खाँसी जल्द
ही मिटा
जायगी

गले और सीने
का कष्ट मिटानेवाली

पेप्स टिकियाँ लीजिए

पेप्स टिकियां चूसिए और फिर अनुभव कीजिये कि इनकी गुणकारी भाप दर्द मिटाने में किस क़दर से कारगर है और गले का दर्द, ब्रोंकाइटिस, खाँसी या सर्दी–ज़ुकाम पैदा करनेवाले रोगाणुओंका कितनी जल्दी नाश करती है। पेप्स फौरन आराम देकर इन शिकायतों को शीघ्र दूर करती हैं।

FPY 54 HIN

पेप्स में
कोई नुकसानदेह
दवा नहीं
ये बच्चों को बेखटके दी
जा सकती हैं
ब्रांकाइटिस,
गले का दर्द,
नज़ले, जकड़न,
सर्दी और खाँसी
में शीघ्र आराम
पहुँचाती हैं
सभी औषधि-विक्रेताओं
के यहाँ प्राप्य

सी. ई. फुलफ़ोर्ड (इण्डिया) प्राइवेट लि.

बम्बई के सोल एजेन्ट
केम्प एण्ड कं० लि.; पो. बा. ९३७

यह शानदार है
यह सुंदर है
यह आश्चर्यजनक है
क्यों कि यह है...शिमाडा

SHIMADA

अन्तरराष्ट्रीय ख्याति
का वैकुअम
फ्लास्क

शिमाडा
ग्लास एंड
फ्लास्क
फैक्टरी
प्राइवेट
लिमिटेड
मद्रास-२३

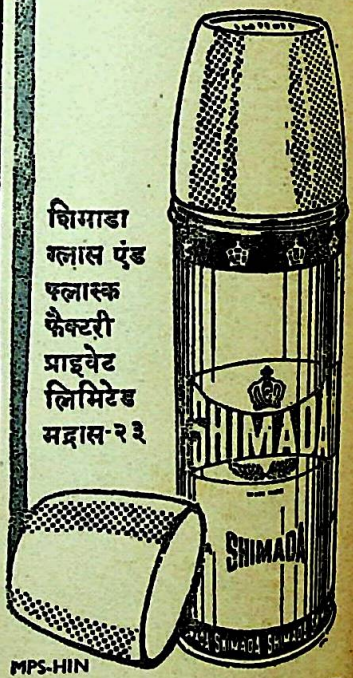

MPS-HIN

सब एजेन्ट्स : महाराष्ट्र स्टेट – कानजी शावजी पारेख, ५१, मंगलदास रोड, बम्बई २; नार्दन इंडिया एंड गुजरात स्टेट–बम्बई लिं एंड जिप मैन्यूफैक्चरिंग कम्पनी (प्रा.लि.) ५१, मंगलदास रोड, बम्बई २

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राष्ट्र में

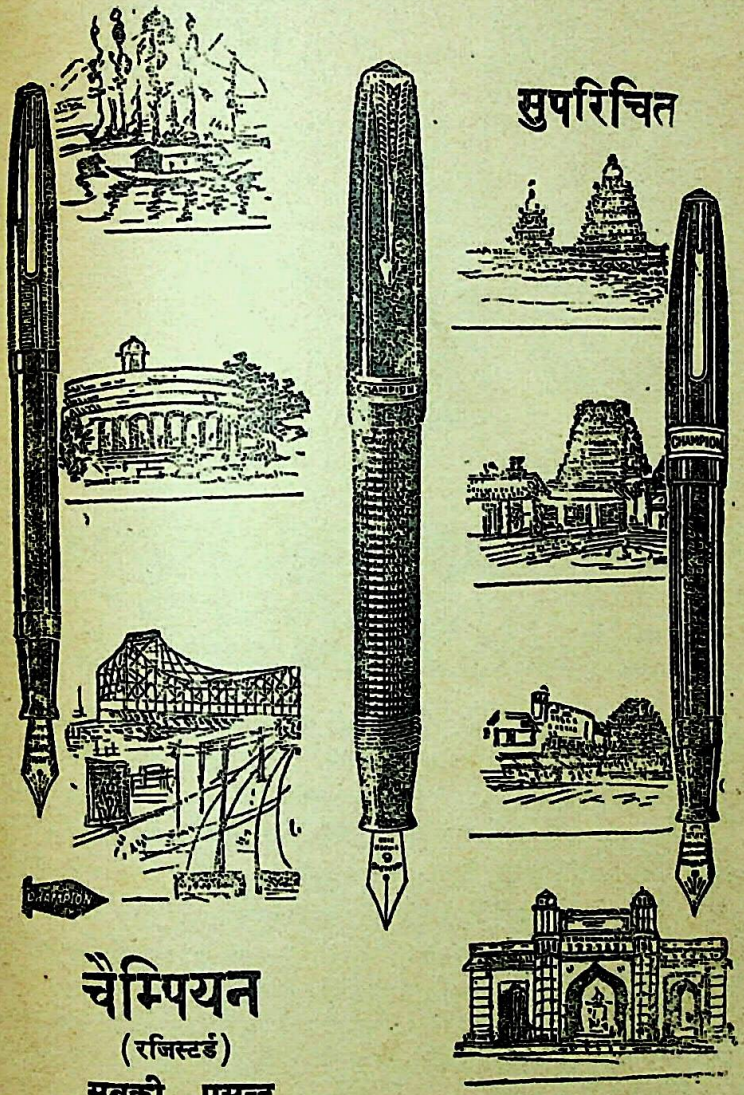

सुपरिचित

चैम्पियन

(रजिस्टर्ड)

सबकी पसन्द

निर्माता : गुजरात इंडस्ट्रीज प्राइवट लिमिटेड, बम्बई –२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

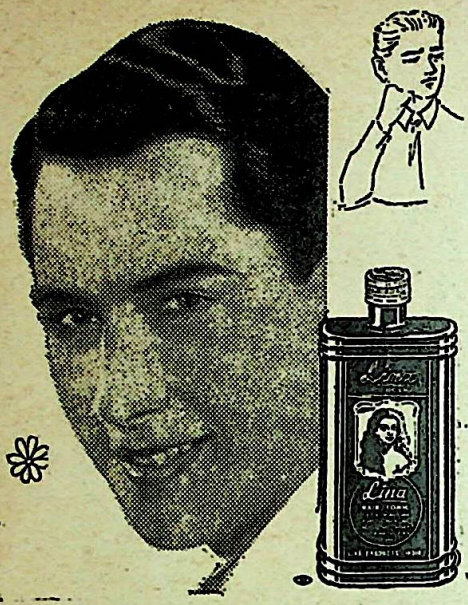

खिज़ाब मत कहिये-

लिना

मांगिये। यह अद्भुत केश-प्रसाधन सफेद बालों को न तु केवल श्याम बना देता है बल्कि बालों को सफेद बनने से रोकता भी है।

लिना सफेद बालों को श्याम बना देता है

मौराष्ट्र सुगन्धी स्टोर्स
अहमदाबाद-१

एजेन्टस : एम० डी० पटेल एन्ड कं०, ७९, प्रिन्सेस स्ट्रीट, बम्बई. २

गैस-वायु पेट दर्द के लिये

गैसहर पिल्स गैस-वायु, गोला, बादी, कब्ज, पेट का दर्द, शूल, डकारें, पेट का भारीपन और गैस-वायु विकृति के कारण पैदा होनेवाली शिकायतों के लिए उपयोगी खूराक हजम करके, दस्त साफ लाकर भूख बढ़ाती है। १९ वर्षों से गैस-वायु पेट दर्द के लिए उपयोग होनेवाली आयुर्वेदिक औषधि; वैद्य, डाक्टर तथा अस्पताल में इस्तेमाल की जाती है। ५० गोलियों की शीशी १.५० रु. और १५० गोलियों की बड़ी शीशी ४)

दुग्धानुपान बलवर्धक, रक्तवर्धक, स्फूर्तिवर्धक
गोलियाँ पाचन-क्रिया सुधारकर दस्त साफ लाती हैं, रस रक्त-रुधिर इत्यादि सप्त धातुओं को पोषण देकर दिमागी ताकत, जीवन-शक्ति, यौवनशक्ति और वजन बढ़ानेवाली ३२ वर्ष की प्रसिद्ध शक्ति-वर्धक आयुर्वेदिक औषधि, ३२ गोलियों की शीशी रु. १.५० और ९६ गोलियाँ बड़ी शीशी रु. ४ वी० पी० खर्च अलग।

बनानेवाले—दुग्धानुपान फार्मेसी, गांधी चौक, जामनगर (सौराष्ट्र)
होलसेल स्टाकिस्ट—वींछी ब्रदर्स कं., ७९ प्रिन्सेस स्ट्रीट, बम्बई.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भाषा

हिन्दी त्रैमासिक

(मार्च, जून, सितम्बर और दिसम्बर में प्रकाशित)

सम्पादिका : तारा तिक्कू

सम्पादन परामर्श-मण्डल :

डा० दौलतसिंह कोठारी
श्री रामधारी सिंह दिनकर
श्री रमाप्रसन्न नायक
डा० नगेन्द्र
श्री रणछोड़ प्रसाद
डा० विश्वनाथ प्रसाद
श्री जीवन नायक
श्रीमती तारा तिक्कू–(सचिव)

स्थायी स्तम्भ :

हिन्दी भाषा की समस्याएँ
भाषा और व्याकरण
भारतीय भाषाविद्
शब्दश्री
द्वाभा
स्रोतस्विनी
भारतीय साहित्य
सरकारी काम-काज में हिन्दी
निकष
हिन्दी डायरी
हिन्दी पाठ

वार्षिक मूल्य : ३.५० रुपये
एक प्रति : १.०० रुपया

मिलने का पता :

प्रबन्धक, प्रकाशन शाखा,
भारत सरकार, सिविल लाइन्स,
दिल्ली–६

केन्द्रीय हिन्दी निर्देशालय
शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

DA-62/168

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

★

यह सब विपरीत विशेषताएँ

पेन पर कभी नहीं सूखती
कागज पर तत्काल सूख जाती है

रंग में अत्यधिक गहरी
चलने में उतही ही हल्की

कागज पर से कभी नहीं छूटती
पेन पर से शीघ्र धोयी जा सकती है

मिलकर निर्माण करतीं हैं

Sulekha
FOUNTAIN PEN INK

यदि और अधिक कारणों से नहीं तो इन्हीं गुणों के कारण सुलेखा की बिक्री सर्वाधिक है ।

SULEKHA WORKS LTD.
CALCUTTA • DELHI • BOMBAY • MADRAS

★

खास जनता
किरासन कुकर

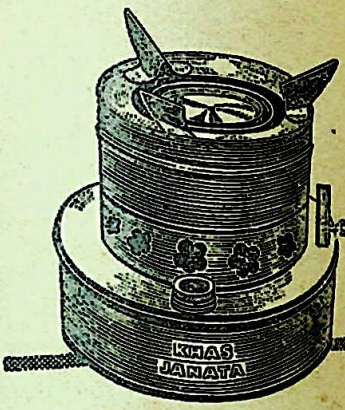

- न गंदगी, न धूल, न धुआँ या झंझट ।
- कम खर्च और कोई खतरा नहीं
- अलग पुर्जे मिलते हैं

दि ओरियेन्टल मेटल इण्डस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड
७७, बहूबाज़ार स्ट्रीट, कलकत्ता-१२

KALPANA.QM.5510

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रेक्षकों से खचाखच भरे हुए

लिबर्टी ❋ गणेश

कोहिनूर

तथा बम्बई के अन्य छबिगृहों में
दिखाया जा रहा है

ए.वी.एम चित्र

मैं चुप रहूँगी

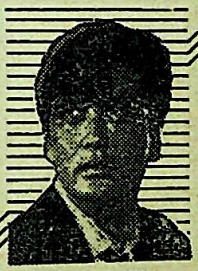

निर्देशक
ए.भीमसिंह
संवाद-गीत
राजेन्द्र कृष्ण
संगीत
चित्रगुप्त

AVM PRODUCTIONS

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

m-12 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हमारी दृष्टि में

जून के 'नवनीत' में छपे लेख 'सिगरेट' में होमियोपैथी का उपहास करते हुए कहा गया है—"होमियोपैथी का बुनियादी उसूल यह है कि छोटा मर्ज दूर करने के लिए कोई बड़ा मर्ज पैदा कर दो।... मरीज नजले की शिकायत करे, तो दवा से निमोनिया के अस्बाब पैदा कर दो।" होमियोपैथी में भी रोग-लक्षण देखकर ही दवा दी जाती है। लेखक से हमारी ओर से निवेदन कीजिये कि जिस चीज का ज्ञान नहीं है, उसे समझने की कोशिश करें।

—एस० जी० नारायण, दिल्ली—५

—०—

श्री ए० एस० रामन् कला-विवेचक के रूप में आज सर्वत्र प्रशंसा पा रहे हैं। उनका लेख 'अहिल्या और गौतम' बड़े चाव से पढ़ा। शैली बड़ी आकर्षक है, अनुवाद सुपाठ्य। लेकिन मुझे ऐसा नहीं लगा कि लेखक की "प्रतिभा ने इस पौराणिक गाथा में मानवीय भावनाओं का नया रंग भर दिया है।" लेखक ने रामभक्तों की परम्परा का अनुकरण मात्र किया है। मुझे तो वाल्मीकि-रामायण का अहल्या-वृत्तांत अधिक भव्य और मानवीय प्रतीत होता है। उसम सती अहल्या देवताओं की सारी माया को जानकर भी "देवराजकुतूहलात्" इंद्र को देह अर्पित कर देती है; फिर शिला होकर उग्र तप करती है; राम का सात्विक आतिथ्य करके शापमुक्त होती है। वहाँ राम उसे पैर से नहीं छूते; बल्कि विश्वामित्र अहल्या को "महाभागा" कहकर राम-लक्ष्मण से उसकी पद-वंदना कराते हैं। मानवीय कमजोरियों के प्रति यह कितनी उदार दृष्टि है! उद्धार का यह मार्ग कितना विशाल और उदात्त है! प्रसंगवश, सही शब्द 'अहल्या' है, 'अहिल्या' नहीं।

— सत्यानंद शास्त्री, कैथल

—०—

माना 'नवनीत' दैनिक अखबार नहीं, मासिक पत्र है; परंतु मासिक पत्रिका में समसामयिक घटनाओं और प्रवृत्तियों का जिक्र तक न हो, ऐसा तो कोई नियम नहीं। अधिकांश विख्यात मासिक पत्रिकाएँ सामयिक विषयों पर बड़ी जानकारीपूर्ण सामग्री प्रकाशित करती हैं। 'नवनीत' इस विषय में उनका अनुकरण करे, तो पाठकों को ज्यादा लाभ होगा। —गोपालराव, बेलगाँव

अगस्त अंक आपकी इस उचित शिकायत को दूर कर देगा। उसमें भारत - चीन के सीमा-विवाद पर लेख है। भविष्य में 'नवनीत' हर मास किसी सामयिक प्रश्न पर एक लेख दिया करेगा। — सम्पादक

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आप अपनी
त्वचा को चमकाइये ।

रेमी

सौन्दर्य सहायक :

कोल्ड क्रीम, स्नो,
पावडर, हेयर आइल,
साबून और ब्रीलियेन्टिन
एवं पोमेड इत्यादि ।

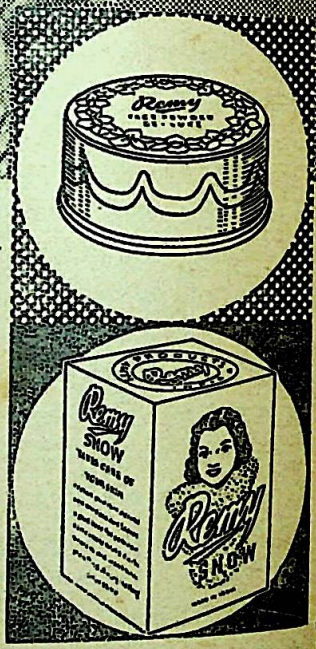

सोल डिस्ट्रिब्यूटर्स :

ए. व्हो. आर. ए. एंड कं०., बम्बई २ - कलकत्ता १ - मदास १

R-49

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जुलाई नवनीत [हिन्दी डाइजेस्ट] १९६२

संचालक
श्रीगोपाल नेवटिया

सम्पादक
सत्यकाम विद्यालंकार
सहकारी
नारायण दत्त
सत्यनारायण मिश्र
श्यामराय भटनागर

शिल्पी
गोपालकृष्ण भोबे

प्रबंध-संचालक
हरिप्रसाद नेवटिया

विज्ञापन-व्यवस्थापक
महेंद्र मेहता

अफ्रीकी तरुणी
श्री सातवलेकर की कृति

विषय-सूची

सच्ची ज्योति	... ...	१७
महर्षि रमण से भेंट	रघुवीर	१८
धर्म-चिकित्सा	कार्ल युंग	२०
चिंता को किनारे रखिये	डा० धीरेंद्र द० मेहता	२१
शिल्प - संजीवक कामत	गोपालकृष्ण भोबे	२४
सौ वर्ष पहले	... ...	२७
अंगूरों के देश में	प्रेया स्टार्क	२८
अंगूर वनो	मार्कस ओरेलियस	३१
आँख पर कितना भरोसा करें	देवेंद्र वर्मा	३३
'एक भारतीय आत्मा'	... ...	३६
सौंदर्य आवरण	माखनलाल चतुर्वेदी	३८
शतायु होने के वैज्ञानिक रहस्य	उमा शंकर	३९
बहन, तुम्हें बदलना होगा	... ...	४५
बिना गुठली के फल	नरेंद्र नायक	४९
ये अमर जंतु	... ...	५२
संजीवनी या कालकूट	सम्पत ठाकुर	५४
कर्म-भूमि	रमा सिंह	५६
मेरे फलदाता	डा० गुलाबराय	५८
उजली रेखाएँ	... ...	६१
फिर वहीं के वहीं	गुलाम अब्बास	६२
जैसे को तैसा	... ...	६७
रहस्यमय पेड़-पौधे	कमलाकांत	६८
गुप्त-दान की पेटी	जयंतकुमार पाठक	७३
हृदय की नोट-बुक	जहूरबख्श	७७
चमकीली आँखें	... ...	८०
पौधों की आहार-प्रक्रिया	देशबंधु शर्मा	८१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ठाकुर का बेटा	शिवानी	
दो मुक्तक	नीरज	८६
न्याय की गति	मन्मथनाथ गुप्त	८९
उत्तरी ध्रुव के शिकारी	जान जीवर	९३
नरमुंडों की खोज में	कैरोलिन माइटिंगर	१०१
मकदूम वख्श	डा० गोविंददास	१०९
संदेश	ति० जानकीरामन्	१३५
विशिष्ट वाङ्मय	... ...	१४१
		१५१

चित्रसज्जा : कामत, माइटिंगर, ओके; अगले पृष्ठ पर : भगवान् सूर्य, कोणार्क।

आगामी अंक में

भारत और चीन की सीमारेखा : संसार के सामने इस समय उपस्थित अंतर्राष्ट्रीय प्रश्नों में भारत-चीन का सीमा-सम्बंधी विवाद किसी प्रश्न से कम महत्व का नहीं है। पाकिस्तान और चीन के सम्मिलित षड्यंत्र ने भारत की स्थिति को संकट में डाल दिया है। सत्यकाम विद्यालंकार ने इस लेख में सीमांत-क्षेत्रों की भौगोलिक परिस्थिति का विवेचन एवं दोनों देशों के दावों का तटस्थ विश्लेषण किया है।

यौवन का धर्म : बंगाल के विख्यात कथा-लेखक रमापद चौधरी की एक सामाजिक कहानी का रूपांतर। कहानी बिलकुल नयी शैली की है और नारी के चरित्र के एक अकल्पनीय पहलू को दरसाती है।

अणु-युग में क्या खायें? : अणु-युग में नीरोग रहना है, तो हमें अपने भोजन में क्या परिवर्तन करना होगा, इसके विषय में क्रियात्मक निर्देश।

श्री हरिप्रसाद नेवटिया द्वारा नवनीत प्रकाशन लि०, ३४१ तारदेव, बम्बई-३४ के लिए प्रकाशित तथा श्री वेंकटेश्वर-प्रेस ३६/४८ खेतवाड़ी बैक रोड, बम्बई ४ में मुद्रित।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आत्मज्ञान के लिए कर्म-संन्यास लेना सहायक है?" उत्तर था—"यदि हमारे भाग्य में कोई कार्य न करना होगा, तो कितनी भी दौड़-धूप करें, वह नहीं हो पायेगा। और यदि भाग्य में वह कार्य करना बदा ही है, तो उससे किसी प्रकार छुटकारा नहीं मिल सकेगा। हमें उसमें लगना ही पड़ेगा। इसलिए करूँ या न करूँ, इस प्रश्न को परमेश्वर पर छोड़कर चलना होगा। हम अपनी इच्छानुसार किसी कर्म को स्वीकार या उसका परित्याग नहीं कर सकते।"

एक भक्त को यही बात उदाहरण-सहित समझाते हुए महर्षि ने कहा था—"जब तुम रेल द्वारा यात्रा करते हो, तब अपना सामान अपने सिर पर लेकर नहीं बैठते। तब फिर अपने प्रतिदिन के कार्यों और उसकी चिंता का बोझ क्यों अपने सिर पर लेकर चलते हो? क्यों नहीं उसे उस परम शक्ति को सौंपकर स्वयं निश्चिंत हो जाते?"

महर्षि

महर्षि लिख या बोलकर साधकों के प्रश्नों का उत्तर कभी-कभी ही देते थे। प्रायः वे मौन रहते थे। प्रसिद्ध लेखक सामरसेट माम से उन्होंने कहा था—"मौन वार्तालाप की श्रेष्ठ विधि है।" और उनका मौन-भाषण भी सच्चे साधकों को अपने निजी अनुभव का संशोधन और सूक्ष्म निरीक्षण करने तथा अपने स्वरूप का शोध करने का बोध देता था।

उनसे भेंट करनेवाले सर्वप्रथम अंग्रेज साधक का अनुभव उसी के शब्दों में इस प्रकार है:

"उनके पास पहुँचने के बाद हम काफी देर तक उनके चरणों में बैठे रहे। हम लोग शांत थे। मुझे लग रहा था कि मैं जैसे वर्तमान शरीर से बाहर हूँ। आधे घंटे तक हम महर्षि की आँखों को देखते रहे और उन आँखों की गहरी ध्वनि की अभिव्यक्ति में कोई परिवर्तन नहीं दिखाई दिया। मुझे एक अंग्रेजी कहावत 'शरीर आत्मा का पवित्र निवास-स्थान है' साकार होती दिखाई दी। मुझे लगा कि इस व्यक्ति का शरीर व्यक्ति नहीं है; यह शरीर तो ईश्वर को व्यक्त करनेवाला एक साधनमात्र है, एक निर्जीव चोला है, जिसको चीरकर प्रभु तीव्र रूप से प्रकाशमान हो रहे हैं। उस समय सचमुच मेरे भाव क्या थे, उन्हें लिखना मेरे लिए बहुत कठिन है।"

महर्षि का मौन निरुद्देश्य मौन नहीं था, एक प्रत्यक्ष आध्यात्मिक प्रभाव था, जिसे प्रत्येक व्यक्ति की बुद्धि अपनी सीमाओं के अंदर ग्रहण और स्वीकार कर लेती थी।

बौद्धिकों के अशांत मस्तिष्कों के अलावा सीधे-सादे व्यक्तियों पर भी उनके मौन का यही प्रभाव पड़ता था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महर्षि के आश्रम में रहते हुए मैंने जो ज्ञान प्राप्त किया, उसके कुछ अंशों का निम्न प्रकार उल्लेख किया जा सकता है :

मौन निरंतर वाणी है

" वाणी और विचार—इन दोनों से परे की जो स्थिति है, वह मौन है । यह एक प्रकार का मानसिक क्रियाहीन ध्यान है । मन को वश में रखना ही ध्यान है । बोलने से ध्यान का प्रवाह रुक जाता है ।

"संसार केवल तुम्हारे मन में स्थित है । जगत् सदैव यह नहीं कहता रहता है कि 'लो, मैं यह रहा ।' यदि ऐसा होता, तो वह सदा के लिए बना रहता । सत्यरहित होने से आत्मा ही उसको आसानी से जीत सकती है । आत्मा ही नित्य है ।"

चरम शांति ही आत्मानुभूति

" आत्मानुभूति कोई बाह्य उपलब्धि नहीं कि उसकी पुनः प्राप्ति हो सके । वह तो पहले से ही विद्यमान है । 'मैंने अभी आत्मानुभूति नहीं की' इस आशयवाले भाव को मन से निकाल देना चाहिये । निश्चलता या चरम शांति ही आत्मानुभूति है । जब अनात्म का नाश हो जाता है, तब विशुद्ध आत्मा बच रहती है । स्थान देने के लिए वहाँ की भीड़ को हटाना आवश्यक है, और जगह तो कहीं बाहर से लानी नहीं है ।"

ज्ञानी सदा जागृत रहता है

" ज्ञानी सदा जागृत दशा में रहता है, क्योंकि वह अविनाशी आत्मरूप के विषय में सतत और सदैव जागृत रहता है । उसकी नित्य स्वप्नावस्था होती है, क्योंकि उसे जगत् एक बार स्वप्न में दीखता है । उसकी सदा सुषुप्ति-अवस्था होती है, क्योंकि वह अहर्निश देहादि के भान से रहित होता है ।"

महर्षि के आश्रम में देश-विदेश के विशिष्ट सम्पन्न व्यक्ति आते थे; किंतु महर्षि किसी से भी विशेष रूप से नहीं मिलते थे ।

उनसे भेंट करने के बाद मेरे पिताजी का जीवन ही बदल गया । सांसारिक कर्तव्यों को निभाते हुए भी सदा मुक्त और द्वंद्वातीत अवस्था में रहने लगे । उनके जीवन पर महर्षि की अमिट छाप पड़ गयी । *

धर्म-चिकित्सा

मेरे जीवन के उत्तरार्द्ध में मेरे पास जितने भी रोगी आये, उनमें से शायद ही कोई ऐसा हो, जिसके उपचार के लिए उसमें धार्मिक दृष्टिकोण के विकास की आवश्यकता नहीं हुई हो । मैं अच्छी तरह कह सकता हूँ कि मेरे उन रोगियों में से प्रत्येक सिर्फ इसीलिए मानसिक रोगों से ग्रस्त हुआ था कि उसे वह मानसिक खुराक न मिली, जो धार्मिक दृष्टिकोणवाले व्यक्तियों को धर्म के द्वारा अपने-आप मिलती रही है । उनमें से वही अच्छे हुए, जो अपना दृष्टिकोण धार्मिक बना सके; और वे अच्छे नहीं हुए, जिनकी धर्म के प्रति कोई आस्था नहीं रही थी ।

—कार्ल युंग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चिंता को किनारे रखिये

चिंता और व्यग्रता समस्याओं की उग्रता को बढ़ाती हैं और उनसे जूझने की हमारी शक्ति को मंद कर देती हैं।

डा० धीरेंद्र द० मेहता

आधुनिक अशांति और भुलावे के जमाने में कल क्या होगा, इसकी चिंता करना व्यर्थ है। हमें एक समय एक दिन का ही जीवन बिताना चाहिये। हम लोगों को आशा रखनी चाहिये कि हम सब जीवित, तंदरुस्त और समृद्ध बन सकेंगे। इसलिए उचित सावधानी और योग्य उपाय करने के बाद हमें अपने आपको वर्तमान में ही सुखी समझना चाहिये।

चिंताओं को अपने साथ बिस्तर में ले जाना ठीक नहीं है। आप वहाँ चिंताओं के साथ क्या कर सकते हैं? चिंता करने का उचित समय तो वही है, जब आप वास्तव में उनका मुकाबला करते हैं और उनका निवारण करने की कोशिश करते हैं।

रात का समय आराम के लिए होता है। इसके लिए अभ्यास और स्वानुशासन की जरूरत होती है। चिंताओं का खयाल न करके किसी और बात का विचार करने की आदत डालनी चाहिये। सोते समय विचारपूर्वक, प्रयत्न के साथ, अपनी पहचान के अच्छे-से-अच्छे और सुंदर-से-सुंदर व्यक्ति का खयाल कीजिये। अपनी आनंदपूर्ण छुट्टियों के दिनों का विचार कीजिये, या अपने अतीत जीवन के सुखी दिनों की याद कीजिये। यदि आपको अपना जीवन इतना अंधकारमय प्रतीत होता है कि आप सुखी दिनों का विचार नहीं कर सकते, तो शांत महासागर की सतह पर तैरते सुंदर जहाज के दृश्य की, या किसी सुंदर फूल की, या सुख की नींद लेती हुई बिल्ली की कल्पना कीजिये।

आनेवाला कल दूसरा दिन है। जब आपको चिंताएँ घेर लें, तो खराब-से-खराब परिस्थिति का खयाल कीजिये। आपको डर किसका है? बीमारी का? घर टूटने का? दिवाला निकल जाने का? या कि अपनी मौत का?

कुछ भी हो और कितनी ही खराब परिस्थिति क्यों न हो, उसे अपने मन के पीछे धकेलकर भुला देने की और दूर भागने की की कोशिश मत कीजिये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुसीबत यह है कि जब हम अकेले, या थके हुए, या उदासीन होते हैं और आधी रात को जागकर फिर नींद नहीं ले सकते, तब इन भयों का खयाल आये बिना नहीं रहता। हमारे भय, जब हम एकदम हिम्मत हार जाते हैं, उसी समय हमें अधिक डराते हैं, परेशान करते हैं।

इसलिए सीधी तरह से सचेत मन के उज्ज्वल प्रकाश में इन भयों का दृढ़ता से मुकाबला कीजिये और इन्हें दूर करने के लिए जो भी कुछ कर सकते हैं, वह सब कीजिये। अपने डाक्टर की सलाह लीजिये और उससे कहिये कि आपको डर लगता है। आपको जो तरीका उचित प्रतीत हो और जिन साधनों से आप अपनी चिंताओं का निवारण कर सकते हो, उनका अनुसरण और उपयोग कीजिये और फिर देखिये कि आप अपनी कितनी मेहनत बचा सकते हैं और किस तरह इंतजाम कर सकते हैं! अपनी गलतफहमी दूर करने के लिए आधे रास्ते से अधिक नजदीक आ जाइये या सोचिये कि शायद सम्बंध तोड़ देने में ही लाभ है, भलाई है।

और मौत के बारे में। मौत की आशंका वास्तविक मौत से अधिक खराब होती है। आपसे पहले असंख्य लोग इस मार्ग से जा चुके हैं। जहाँ गये, वहाँ आप भी जा सकते हैं। इस बात में आपको आपकी धार्मिक भावनाएँ जरूर मदद कर सकती हैं।

यदि आप डरते हैं या किसी मुसीबत में हैं, तो आप किसी धार्मिक पुस्तक का पाठ कीजिये। गीता पढ़िये, कुरान पढ़िये या बाइबिल पढ़िये और भगवान् को याद कीजिये।

हमेशा चिंता को समझने की कोशिश कीजिये। हम प्रायः चिंताओं को अपनी कल्पनाओं से रंग लेते हैं। उन्हें बहुत बड़ा देते हैं और निश्चित विचार कर लेते हैं। अपनी तमाम चिंताओं का अपने किसी ऐसे दोस्त से जिक्र कीजिये, जो उन्हें अच्छी तरह समझ सकता हो और निरपेक्ष दृष्टि से देख सकता हो।

दूसरों की मदद लेने में संकोच न कीजिये। सच तो यह है कि हम जितना कर सकते हैं, उससे अधिक करने की कोशिश

जो समय चिंता में गया, समझो कूड़े-दान में गया। जो समय चिंतन में गया, मानो वह तिजोरी में जमा हो गया।

— चिंग चाओ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करते हैं और जो जवाबदारी हमारी नहीं होती, उसे भी अपनी ही समझते हैं और दूसरों को सुपुर्दगी देने से इन्कार करते हैं, क्योंकि हम यह समझते हैं कि हमारे जैसा काम वे कर ही नहीं सकते ।

हमें इस तरह हताश होने की क्या जरूरत है ? यदि जरूरत हो, तो दूसरों से मदद लेने में संकोच न कीजिये और उनका धन्यवाद करना कभी न भूलिये । यदि आपका काम आपकी इच्छानुसार होने में कुछ कमी रह जाये, तो भी मदद की सराहना कीजिये ।

चिंता में हिस्सा बटाने से चिंता आधी हो जाती है । अपनी चिंता को इस डर से कि दूसरों को आपकी चिंता जानकर दुःख होगा, कभी दिल में दबाकर न रखिये । क्योंकि वे लोग जल्दी ही ताड़ जायेंगे कि आपको कुछ कष्ट है और यदि आप उनसे अपना कष्ट नहीं कहेंगे, तो उन्हें बुरा लगेगा। उनसे अपनी चिंताओं का जिक्र कीजिये, चर्चा कीजिये । उनकी हमदर्दी, सहयोग और प्रोत्साहन से आपकी हिम्मत बढ़ेगी । नये मन और नये मित्र आपके सवालों का कोई सुगम मार्ग सुझा सकते हैं । याद रखिये कि चिंता और चिंता में सिर्फ इतना फर्क है कि चिंता मुर्दों को जलाती है और चिंता जिंदों को जलाकर खाक कर देती है, अपने को खाक न होने दीजिये ।

★

आस्था का युग सदैव हमारे साथ रहा है । हम आस्था से कभी दूर नहीं रहे । केवल हमारी आस्था की लक्ष्य-वस्तु बदलती रही है । एक आस्था का परित्याग हम तभी करते हैं, जब दूसरी आस्था को अपना लेते हैं । —डा० राधाकृष्णन्

★

पूर्णत्व प्राप्त करने की विकलता एक सार्वभौम तत्व है । यह अखंड भावना प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में वर्तमान है ।

★

जब कलियाँ फल की शक्ल में बदलती हैं, तब उनका बहुत कुछ गिर जाता है ।

★

मेथोडिस्ट सम्प्रदाय के पादरी ओलीवर बेकरलेग का वेतन जब १० पौंड प्रति सप्ताह से ४० पौंड प्रति सप्ताह किया गया, तो आपने यह कहकर इसे स्वीकार नहीं किया कि "मुझे जो मिलता है, वह मेरे लिए पर्याप्त है । मैं उसी से सुखी हूँ ।"

★

पिछले साल लायड बैंक के चेयरमैन सर ओलिवर फ्रांक को जब वर्सेस्ट कालेज का 'प्रोवोस्ट' बनाया गया, तो आपने वेतन लेने से इन्कार करते हुए कहा कि मुझे अपनी रुचि के काम में जो आनंद मिलता है, वही धन मेरा पुरस्कार है ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

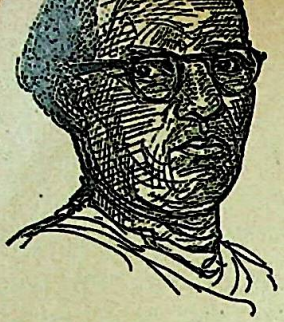

शिल्प-संजीवक कामत

वस्तुओं के अंतःसौंदर्य को देखना ही कला है।

गोपालकृष्ण भोबे

एक अति सामान्य गोमंतक परिवार के छोटे-से बच्चे से पूछा गया कि तू बड़ा होकर क्या बनेगा। चट से उत्तर मिला—कलाकार। उत्तर सुनकर माता-पिता उदास हो गये। उनकी मान्यता थी कि कलाकार का पेशा भिक्षावृत्ति का ही रूपांतर है।

ऐसे कला-विमुख संस्कारों की बलि होकर भी दृढ़ आत्मविश्वास एवं साधना द्वारा कलाक्षेत्र में अपना कीर्ति-स्तम्भ स्थापित करनेवाले एक वरेण्य कलाकार हैं रामचंद्र पांडुरंग कामत।

तेरह वर्ष की उम्र में वे घर से भागकर बम्बई आ गये। बड़ी कठिनाई से जे० जे० स्कूल आफ आर्ट्स में प्रवेश पाया। परंतु स्वतंत्र दृष्टि से सोचने और दूसरों से भिन्न कुछ नयी चीज करने की प्रवृत्ति के कारण शीघ्र ही वे प्रिंसिपल ग्लैडस्टन सालोमन के प्रेमपात्र बन गये।

उन्हीं दिनों एक घटना हुई। बाम्बे आर्ट सोसायटी की वार्षिक कला-प्रदर्शिनी में कामत ने 'कोली का लड़का' नामक अपनी कृति भेजी। जिसने भी उसे देखा, यही कहा कि इस वर्ष का स्वर्ण-पदक इसी कृति को मिलेगा। फिर भी न जाने क्यों, कामत को रौप्य-पदक ही मिला। सबको इस पर बड़ा रंज हुआ। स्वयं सालोमन साहब ने निर्णायकों के निर्णय के विरुद्ध अखबारों में लिखा। कामत बहुत दुःखी हो गये; उन्हें अपमान अनुभव हुआ। परंतु एक तरह से, जो हुआ अच्छा ही हुआ। आगे चलकर उन्हें जो मान अर्जित करना था, मानो उसकी नींव पड़ गयी।

बम्बई में शिक्षण समाप्त होने पर सालोमन साहब के प्रोत्साहन से कामत इंग्लैंड गये। वहाँ की सुप्रसिद्ध रायल अकादमी आव आर्ट्स में उन्होंने अपना नाम लिखाया। नया स्थान, नयी परिस्थिति। कभी-कभी उन्हें अपनी सफलता पर संदेह होने लगता। अपने 'नेटिव' होने का एहसास कभी-कभी उन्हें हीन-भावना का शिकार बना देता।

रायल अकादमी कला की उच्च शिक्षा ही नहीं देती, वह प्रति वर्ष संसार की उत्तमोत्तम कलाकृतियों की प्रदर्शिनी आयोजित करके कला के विषय में जन-जागृति पैदा करने का ठोस कार्य भी करती है। प्रदर्शिनी में आयी सर्वोत्तम रचना पर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वर्ण-पदक दिया जाता है। यह पदक पानेवाला कलाकार तुरंत प्रसिद्धि के शिखर पर पहुँच जाता है।

संस्था का वार्षिक समारोह कुछ ही दिनों बाद होनेवाला था। तैयारियाँ हो रही थीं। परंतु कामत को उससे कुछ लेना-देना न था। वे तो हाल में भारत से आये थे और अभी उनका अभ्यास-क्रम आरम्भ ही हुआ था। उनका एकमात्र ध्येय था पढ़ाई में चित्त लगाना।

एक दिन वे क्लास में दत्तचित्त होकर अभ्यास कर रहे थे कि कुछ हलचल-सी हुई। पीछे मुड़कर देखा, तो अकादमी के डाइरेक्टर सर विलियम मैकमिलन पधारे थे। एक-एक विद्यार्थी की कलाकृति का निरीक्षण करते हुए सर विलियम कामत के पास आये और सामने के आलेखन को बड़े ध्यान से देखने लगे। फिर एकाएक हाथ पकड़कर कामत को दफ्तर की ओर खींच ले गये। दफ्तर के बाहर दरवाजे के पास दीवार पर संगमरमर की तख्ती लगी थी, जिस पर बहुत-से नाम लिखे थे। उस नामावली की ओर अँगुली दिखाते हुए बोले—"यह है अकादमी का स्वर्ण-पदक पानेवालों की सूची। तुम्हारा नाम भी इसमें जोड़ा जा सके, ऐसी कोई कृति इस वर्ष के प्रदर्शन के लिए तैयार करो। मुझसे जो सहयोग चाहिये, लो; देने को तैयार हूँ। अच्छा अब जाओ।"

विस्मय और आशंका से भरकर कामत दफ्तर की ओर गये थे; गम्भीर उत्तरदायित्व का बोझ सिर पर लेकर क्लास में वापस आये। सर विलियम का आना, क्लास के तमाम विद्यार्थियों में से कामत का ही हाथ पकड़कर ले जाना और संगमरमर की तख्ती की ओर संकेत कर यह कहना कि तुम्हारा नाम भी यहाँ लिखा जायेगा—यह सब सभी को विचित्र-सा लगा था। स्वयं कामत भी चकित थे। लेकिन जब दो दिन बाद सर विलियम ने पत्र लिखकर फिर प्रोत्साहित किया और सहयोग का आश्वासन दिया, तब इस उत्तरदायित्व से मुकरना कामत के लिए असम्भव हो गया।

नागकन्या

बहुत सोचकर कामत ने विषय चुना। औरों से भिन्न कुछ करने की उनकी प्रवृत्ति फिर जाग उठी और उन्होंने अपनी कल्पना को मूर्त रूप दिया।

प्रदर्शिनी के उद्घाटन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का दिन आ पहुँचा। विख्यात कलाकारों, रसिकों और विमर्शकों की भीड़ में कामत कहीं चुपचाप बैठे थे। अध्यक्ष के भाषण के बाद उस वर्ष के स्वर्ण-पदक-विजेता का नाम घोषित किया गया—"मिस्टर रामचंद्र पांडुरंग कामत"। स्वर्ण-पदक के अतिरिक्त विजेता को जो अन्य पुरस्कार प्रदान किये जाते हैं, वे भी कामत को मिले। अकादमी के दफ्तर के बाहर संगमरमर की तख्ती पर उनका नाम अंकित कर दिया गया।

हमाल

बम्बई के अखबारों ने इस विजय पर सम्पादकीय टिप्पणियाँ लिखीं। जब कामत स्वदेश लौटे, पणजी (पंजिम) में उनका भव्य सत्कार किया गया। गोमंतक को अभिमान था कि उसका जो बेटा एक दिन घर से चुपचाप चला गया था, वही आज विदेशों में अपार यश अर्जित कर वापस आया है।

बम्बई में सर दिनशा वाछा की मूर्ति (चर्चगेट) और लक्ष्मी इंश्योरेन्स बिल्डिंग (फिरोजशाह मेहता रोड) की भव्य लक्ष्मी की प्रतिमा, प्रतापगढ़ के किले में शिवाजी महाराज का अश्वारोही पुतला और झांसी में घोड़े पर सवार महारानी लक्ष्मीबाई की सोलह फुट ऊँची मूर्ति आदि कामत की कला की भव्यता के परिचायक हैं।

नूतन के प्रति प्रबल आकर्षण होते हुए भी कामत नवीन को ही कला का चरम निकष मानने को तैयार नहीं हैं। आजकल जिसे 'कला' कहकर सराहा जाता है, उसे वे कला का भ्रष्ट रूप मानते हैं, आडम्बर की भूल-भुलैया समझते हैं।

उनकी मान्यता है—"सामाजिक मर्यादाओं के साँचे में ढलकर ही नव्य कला प्रौढ़ स्वरूप प्राप्त कर सकेगी। कलाकार को स्वतंत्रता अवश्य होनी चाहिये, ताकि वह समाज को उन्मुक्त हृदय से दे सके। परंतु इस स्वतंत्रता का दुरुपयोग कलाकार को नहीं करना चाहिये; उसे दम्भी नहीं बनना चाहिये।"

वे कहा करते हैं—"कला का स्वरूप बहुत विशाल है। वह किसी एक रूप में बँधकर नहीं रह सकती। कला चाहे यथार्थवादी हो या अतियथार्थवादी—यह तो कला का कलेवर है। कला का सच्चा स्वरूप और आत्मा हम अब तक नहीं खोज सके। मैंने बहुत-सी शिल्प-रचनाएँ की हैं; परंतु कला की आत्मा अभी मुझे नहीं मिली है।"

जिसका जीवन ही एक दीर्घ कला-यात्रा हो, ऐसे व्यक्ति के मुँह से निकले ये शब्द कितने सरल और गहरे हैं! इस कलाधर की इच्छा है—"भारत-भर में घूम-घूमकर जहाँ भी तराशने लायक पत्थर मिलें, उन्हें कलाकृति का रूप देकर सौंदर्य-मंडित कर दूँ।" किसी कलाकार के लिए इससे सात्विक, महत्वाकांक्षा क्या होगी! *

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सौ वर्ष पहले

इस स्तम्भ में हम १०० वर्ष पूर्व घटित घटनाओं की चर्चा नियमित रूप से करते रहेंगे। इन घटनाओं में से कुछ का प्रभाव आज भी हमारे नागरिक जीवन पर है। आज की परिस्थिति में इनका तुलनात्मक अध्ययन बहुत रोचक होगा।

१८६० : भारत सरकार चिंतित है कि बम्बई की नगरपालिका का खर्च बढ़कर १४ लाख हो गया है, जो आमदनी से लगभग ३ लाख अधिक है। बम्बई की नगरपालिका को दिवालिया होने से बचाने के लिए बम्बई सरकार १५ लाख कर्ज दिया है। म्युनिसिपल कमिश्नर क्राफर्ड को इस बारे में सावधान किया गया है कि वे अधिक किफायत से काम लें।

१८६१ : बम्बई के स्कूलों से मैट्रिक की परीक्षा में ३९ विद्यार्थी और विश्वविद्यालय से बी० ए० की परीक्षा में ४ विद्यार्थी उत्तीर्ण हुए। बम्बई विश्वविद्यालय का प्रारम्भ १८५७ में किया गया था।

१८६१ : तेईस वर्ष पूर्व जो अखबार सप्ताह में दो बार 'बाम्बे टाम्स' नाम से प्रारम्भ हुआ था, वह 'टाइम्स आफ इंडिया' नाम से प्रकाशित हो रहा है। दस वर्ष पूर्व इसे दैनिक रूप दे दिया गया था।

१८६२ : लेडी फ्रेयर विक्टोरिया गार्डन की डूबी हुई योजना का पुनरुद्धार कर रही हैं। १८३७ में २३ एकड़ जमीन पर यह बाग लगाया गया था। ट्रस्टियों ने विशेष उत्साह से काम नहीं किया। किंतु अब लेडी फ्रेयर ने से पुनर्जीवित किया है। सरकार ने इसके लिए १५ एकड़ भूमि और दे दी है।

१८६२ : अठारह सौ सत्तावन की राज्य-क्रांति का दमन करने के लिए अंग्रेजी फौजों ने जो भी खर्च किया था, उससे भारत पर ४० करोड़ का ऋण हो गया था। उसकी पूर्ति के लिए १८६० में आयकर लगाने का कानून बनाया गया। २०० .पया वार्षिक आमदनी पर भी कर देना पड़ेगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक यात्रा-प्रसंग :

अंगूरों के देश में

प्रेया स्टार्क

कुर्दिस्तान-यात्रा के दौरान में जब मैं बोतशबाव पहुँची, तो मुझे ऐसा लगा, मानो मैं किसी अत्यंत ही मनोहारी स्थान में पहुँच गयी हूँ। चारों ओर पहाड़ियों की चोटियों से घिरी यह बस्ती दो घाटियों के बीच में बसी हुई है। उत्तर-दक्षिण और पूर्व-पश्चिम, दो राजमार्गों पर बसी यह बस्ती सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्व-पूर्ण है और स्थायी सैनिक अड्डा भी है। पहाड़ी ढलान पर बसे बोतशबाव की जलवायु अन्य स्थानों से गर्म है और घाटी मक्का, अखरोट, अंगूर, फली और पीले कुसुमों से लदी रहने से आँखों को अत्यंत लुभावनी लगती है। कस्बे की जन-संख्या बहुत थोड़ी है। अधिक संख्या में सैनिक बैरक और सैनिक अधिकारियों के लिए बनी चूने से पुती सफेद कुटियाँ नजर आती हैं। बस्ती अलग-थलग-सी बसी हुई है और सर्दी के दिनों में तो दुनिया से इसका टेलिफोन सम्बंध भी टूट जाता है।

मेरा सामान बर्गीचे से घिरी हुई एक साफ-सुथरी छोटी-सी कुटिया में ले जाया गया। कुटिया में दो कमरे थे और दोनों हवादार। मकान दूर-दूर से लाये हुए सामान—पलंग और सिलाई की मशीन से सजा हुआ था। कुटीर में पहुँचकर लगा, जैसे मैं किसी परीलोक में पहुँच गयी हूँ। घाटी की ओर झुकी एक पहाड़ी चट्टान के पास खड़ी यह कुटी गाथिक-कालीन मालूम पड़ रही थी, बगीचा भाँति-भाँति के फल और सब्जियों के पेड़-पौधों से लदा पड़ा था। लगता था, मकान में सभी औरतें रहती हैं। मेरा वास्ता एक शाही मिजाज की वयोवृद्ध दादी माँ और उसकी पाँच लड़कियों और एक अनाथ नातिन से पड़ा। नातिन की उम्र चूँकि पढ़ने-लिखने की थी, अतः उनमें वह अकेली तुर्की भाषा जानती थी। घर में दादी माँ का एकछत्र राज था। दादी माँ ने शाही ढंग से मेरी पीठ थपथपायी और मेरे नहाने के लिए पानी और तौलिया तथा आराम के लिए बिस्तर का प्रबंध किया।

बातचीत के दौरान में दादी माँ ने मुझे बताया कि उनका परिवार कुर्द था, जो इराक के अमादिया से आया था। अंग्रेजों ने उनके पति को मार डाला, फल-स्वरूप उन्हें और उनके परिवार को भाग-कर पहाड़ों को लाँघ, इस स्थान में शरण लेनी पड़ी। दादी माँ ने अपने पति के मारे जाने की बात इस तरह सुनायी, जैसे वह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कोई मामूली घटना हो। उन्होंने बताया कि अंग्रेजों का व्यवहार उनके साथ अच्छा रहा और अमादिया से उनकी राजस्व की रकम बराबर भेजी जाती रही है।

पाँचों लड़कियाँ आश्चर्यजनक रूप से सुंदर थीं। पहाड़ी आवहवा में पली इन लड़कियों की कजरीली नर्गिसी आँखें इस कदर चमकती थीं कि पहले-पहल चेहरे के अन्य किसी भाग पर नजर ही नहीं पड़ती। सुंदर नाक-नक्श, उन्नत भाल, पतली और सीधी नासिका, नुकीली ठुड्डी, लम्बा कद और लम्बे बाजू तथा गर्व और आत्मसम्मान से ऊँचा माथा। कुल मिलाकर ऐसा भान होता था, जैसे साजेंट या लावेटी की तस्वीरें जीवित होकर चली आयी हैं, या घर-भर में कोमल कुसुम महक रहे हैं।

मुझे दूसरे ही दिन खुश्की यात्रा पर निकलना था। मैं चाहती थी कि धूप चढ़ने से पहले ही जितना हो सके रास्ता तय कर लूँ। इसलिए मैंने अपने मार्गदर्शक अब्दुल्ला को सूर्य निकलने से पूर्व बड़ी भोर ४ बजे बुलाया था। लेकिन जैसा दादी माँ का अनुमान था, वह मेरी घोड़ी के साथ ५ बजे पहुँचा। हम उस गाँव में पहुँचे, जहाँ से एक अध्यापक हमारे साथ चलनेवाला था। इसकी ड्यूटी मेरे अंग-रक्षक के बतौर थी, जो सीमा की पहली चौकी तक मुझे पहुँचानेवाला था। रास्ता दो दिन का था। हम पथरीली भूमि के मध्य बने कच्चे मार्ग से घाटी में उतरे और लकड़ी की एक पुलिया पर से सेनगिरी नाला पार किया। पुलिया के नीचे नदी का स्वच्छ नीला जल अपनी मधुर कलकल के साथ तेज रफ्तार से बह रहा था; लेकिन बहाव खतरनाक नहीं था। नदी के कूल सुंदर फूलों और फलों के पेड़-पौधे से भरपूर थे। अंगूर की लताएँ छायी हुई थीं। इस क्षेत्र में अंगूर ईरान से आया है। अब तो यह स्थिति है कि सभी नदी-नालों के कूलों पर अंगूर की बेलें इस तरह छितरायी हुई हैं कि जैसे किसी ने चादर बिछा दी हो। घाटी की चौड़ाई मामूली थी।

चारों ओर दैत्याकार पहाड़ी चट्टानें और कंगूरे घाटों पर अपना सिर झुकाये हुए थे। घाटी से ऊपर चीड़, देवदार आदि पेड़ चप्पा-चप्पा ढाँपे हुए थे। दृश्य अत्यंत लुभावना था। यदा-कदा बीच में बाधा आने से हमें पहाड़ की चोटियों से गुजरकर रास्ता पकड़ना पड़ता, अथवा नौकाओं की सहायता से पहाड़ी नालों को पार कर आगे बढ़ना पड़ता। रास्ता सुनसान था, कहीं भी बटोही दिखाई नहीं पड़े। लेकिन कहीं-कहीं धुँआ नजर आ जाता था, जो इस बात की गवाही देता था कि इधर कोई लकड़हारा जरूर आया था।

दो घंटे की घुड़सवारी के बाद हमारे रास्ते ने मोड़ लिया। अब हमने मुख्य घाटी को छोड़ दिया और उससे जुड़ी हुई दूसरी घाटी में चले गये। घने देवदार से भर-पूर वह घाटी बड़ी सुंदर लग रही थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिस नाले के सहारे-सहारे हमारा मार्ग था, उसके कूल फूलों के भार से ओझल थे। पानी शुभ्र-श्वेत कोमल कुसुमों से ढका था। जल देवदार के वृक्षों की जड़ों को छूता हुआ बह रहा था। ऊपर पत्तों की सघन छाया थी। फलस्वरूप पानी की केवल मधुर कलकल ही सुनाई पड़ती थी।

नाले के सहारे-सहारे हम एस्क पहुँचे। यह बोतशबाब की पुरानी बस्ती थी, जो उजाड़ है। थोड़ी-सी झोपड़ियों के अलावा यहाँ और कुछ नहीं था। हम एक खँडहर मीनार के निकट से गुजरे। मीनार का आधार ठोस चट्टानों का था। इससे पता चला कि हम मुख्य पहाड़ी मार्ग से गुजर रहे हैं। घाटी के मोड़ पर हमारी नजर एक श्मशान पर पड़ी। मकबरों पर काई छायी हुई थीं, ऊपर देवदार के वृक्षों की सघन छाया थी। फलस्वरूप वे मकबरे कितने पुराने थे, यह कहना कठिन ही नहीं, असम्भव था। उनका नक्शा भी बता पाना दुरूह था। सामान्यतः इस क्षेत्र में ऐसा मानकर चलना पड़ता है कि बस्तियों के प्राप्त खँडहर एसीरियाई लोगों के हैं। एसीरियाई एशिया के सबसे पुराने ईसाई धर्मावलम्बियों में गिने जाते हैं। इन घाटियों में रहते हुए ये लोग लगभग १५०० वर्षों से ईसाई धर्म पालन करते रहे। विश्व-युद्ध के पहले चरण में ये लोग किसी भी पक्ष का साथ देने में हिचकिचाते रहे। बाद में इनकी स्थिति असुरक्षित हो गयी, तो इन्होंने मित्र-राष्ट्रों का साथ दिया। ये लोग जोर-शोर से युद्ध में कूद पड़े। लेकिन इसी बीच कुर्दों ने इनकी जेब की घाटी, दिग और जीलू के पहाड़ी कस्बों व अन्य बस्तियों को लूट लिया। एसीरियनों ने इन नष्ट बस्तियों को छोड़ दिया और नयी भूमि की खोज में निकल पड़े। एक दुर्गम पहाड़ी मार्ग से होकर हक्यारी और कुदशानी पहाड़ों को पारकर वे उरसिया पहुँचे। लेकिन रूस का पतन होने पर ये लोग पुनः कठिनाई में पड़ गये। तब तक इनकी जनसंख्या लगभग आधी रह गयी थी। बचे-खुचे एसीरियाई पुनः इराक लौट आये। इतिहास की यह घटना अत्यंत दुःखद है और अब भी ये पहाड़ी घाटियाँ अधिकांशतः निर्जन हैं।

इस समय जेब के उत्तर की घाटी कुर्दों के कब्जे में है, लेकिन बस्ती मामूली-सी है। लोग छितराये हुए बसे हैं। एसीरियन लोगों के पलायन के उपरांत कुर्द और उनके लड़ाई-झगड़े समाप्त हो गये।

एस्की बोतशबाब की मुट्ठी-भर झोपड़ियाँ भी खाली पड़ी थीं; सभी लोग अपने-अपने चरागाहों पर चले गये थे और सितम्बर से पहले वे लौटनेवाले नहीं थे। बस्ती में एक-दो गड़रियों के छोकरे मिले। उनसे हमें थोड़ा-सा सत्तू खाने को मिला। कुछ देर आराम करने के बाद हम चल पड़े और आधे घंटे चलने के बाद हम घाटी के पार हो गये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

घाटी के मुहाने पर पहाड़ी और पथरीला मैदान है। मैदान में चारों ओर ऊँची घास खड़ी थी। ऊपर देरीदाग नामक पहाड़ी चोटी थी, जिस पर हमें जाना था। चोटी किसी रेड इंडियन सरदार के सिर में खोंसी पाँखों की तरह सपाट खड़ी थी। प्रभात के गहरे नीले आकाश के नीचे यह पहाड़ी चोटी चमक रही थी।

हम ऊबड़-खाबड़ घास-भरे पहाड़ी रास्ते पर चल पड़े और कोई एक घंटे तक चक्करदार रास्ते पर चलते रहे। हमारे घोड़े और खच्चर थककर चूर हो गये। पहाड़ी पर चढ़कर हमने चारों ओर नजर डाली। पीछे की ओर हमें वे पर्वत-मालाएँ नजर आयीं, जिन्हें हम छोड़ आये थे और सामने था उस पर्वतमाला का विस्तार। पहाड़ों की तराई में, घाटियों के संगम में हमें नीड़ की तरह बातेशबाब की बस्ती नजर आयी। बातेशबाब के निकट ही हमाम की घाटी है, जो अपने गरम पानी के सोतों के लिए प्रसिद्ध है। दूर तक फैला बस्तियों का उठाव और गिराव नजर आया और एक छोर पर इराक को जानेवाला मार्ग भी नजर आ रहा था।

पहाड़ी रास्ते के पहले उतार के बाद, घास के मैदान के दूसरी ओर देरीदाग की चोटी हमारे सर पिर थी। लेकिन दृश्य बदल गया था। चारों ओर खूबसूरत ग्लेशियर-निर्मित घाटियाँ नजर आयीं। पहाड़ी चोटियों से उतरती हुई ये घाटियाँ एक-दूसरे से मिलकर कई मैदान बना रही थीं। मुख्य संगम एक लम्बी घाटी में बदल गया था। ऐसा लगता था, जैसे हम ईरान के किसी भूभाग में पहुँच गये हों। खूबसूरत पेड़ों से भरपूर इस मटमैली घाटी में छोटे-छोटे कच्चे मकानों की बस्ती थी। इन मकानों की छतों पर हरी-पीली मिर्चें सूखती नजर आ रही थीं। ज्यों-ज्यों हम आगे बढ़ते गये, हमारा रास्ता भी दुर्गम बनता गया। रास्ता कड़ा, पथरीला, ढालू और सपाट था, मोड़ खतरनाक थे।

जब हम नीचे उतरे, तो पेड़ों के बीच में थे। पास ही एक नाला बह रहा था। बस्ती में जाने के पूर्व मैंने आराम करना उचित समझा। अब्दुल्ला के कथनानुसार वैसे भी बस्ती वीरान थी और लोग

अंगूर बनो

कुछ लोग जब कोई उपकार करते हैं, तो तुरंत कृतज्ञता के रूप में उसकी कीमत माँगने लगते हैं। कुछ लोग जरा संकोची होते हैं; पर वे अपना उपकार याद रखते हैं और आपको अपना ऋणी समझते हैं। पर तीसरे प्रकार के लोगों को यह भान तक नहीं होता कि उन्होंने उपकार किया है। वे अंगूर की बेल की तरह हैं, जो फल पैदा करने में ही संतुष्ट है और धन्यवाद की आशा किये बिना ही रसीले फलों के गुच्छे प्रस्तुत करती है।

— मार्कस ओरेलियस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'बेहूदे' थे। हमारे साथ के अध्यापक को अपने किसी हमपेशा को खोजने की धुन सवार हो गयी। उसे विश्वास था कि यहाँ कोई-न-कोई स्कूल जरूर होगा। पर यह निराधार निकला। उसने मुझे अपने घर-बार, पढ़ाई-लिखाई और भविष्य की आशाओं के बारे में बताया। उसका इरादा एकाध वर्ष में शादी करने का था, लेकिन उसे चिंता सता रही थी कि स उजाड़ में बीवी को लाकर कैसे रखेगा।

हम नीचे उतरे और बस्ती में पहुँचे। मकई के खेतों से घिरे हुए थोड़े-से मकान नजर आये। हमारा नाला यहाँ काफी गहरा और तेज हो चला था। उसने पहाड़ों को काटकर स्वतः अपना रास्ता पहाड़ों के नीचे से बना लिया था। हमारा रास्ता ऊपर होकर जाता था, अतः पानी को यदा-कदा ही छूता था। नदी का दर्शन हमें फिर उस समय हुआ, जब हमने घाटी को छोड़ एक दूसरी सहायक घाटी को पकड़ लिया। यह नाला उस नदी में जाकर मिलता था, जो हमें सुबह मिली थी।

हम तीन घंटे तक चलते रहे। पश्चिमी घाटी धीरे-धीरे प्रकाश से भरने लगी। ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी रास्ता रोशन हुआ। इस रास्ते को मेरी घोड़ी बड़ी चतुराई और सावधानी से तय कर रही थी। उस घाटी का दृश्य ऐसा लगा, मानो हम अरबस्तान के किसी पहाड़ी मुल्क से गुजर रहे हैं। हम जिस मार्ग से चल रहे थे, उससे थोड़ी ही दूर घाटी के दूसरी ओर इराक की समानांतर सीमा थी।

अब हम उस गाँव के नजदीक पहुँच गये, जहाँ हमें रात्रि-विश्राम लेना था। घरों को लौटते पशु रास्ते में मिलने लगे। वे अपने सिर झुकाये बड़े आराम से चल रहे थे। ये पालतू पशु पास ही किसी बस्ती की सूचना दे रहे थे।

शीघ्र ही रास्ता मुड़ा और हम मकई के खेतों में जा पहुँचे। खेत बालियों से लहलहा रहे थे। पहाड़ी ढलान पर झरनों की कलकल सुनाई पड़ रही थी और पेड़ों के झुरमुट में छिपे मकान नजर आने लगे थे। यह था दिराहिनी। जिस समय हम मुख्तार का मकान पूछ रहे थे, उस समय समीप ही बहती दिराहिनी नदी में सूर्य की आखिरी किरणें अठखेलियाँ कर रही थीं।

★

शाम का सूरज पहाड़ियों पर झुक आया था और उसकी किरणें नगर के गुम्बदों तथा मीनारों पर पड़ रही थीं, जिसका अक्स हमारे पैरों के पास फैले हुए जल में साफ उतर आया था.....तब सूरज भी डूब गया और वह दिव्य दृश्य आँखों से ओझल हो गया। सुंदर दृश्यावलियों को गहन अंधकार ने निगल लिया। मित्र ने हँसकर कहा—"सूरज डूब गया, मगर फिर उगेगा ही। आओ, घर चलें।"

— जे० एच० शार्टहाउस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आँख पर कितना भरोसा करें

दृष्टि प्रकृति या भगवान् की अमूल्य देन है, जीवन की एक बड़ी नियामत। उसकी सुरक्षा का उपाय है -- विकारहीन मन और स्वस्थ तन।

देवेंद्र वर्मा

मनुष्य ने एक अडिग धारणा यह बना ली है कि आँखों देखा असत्य नहीं होता। साथ ही यह कहावत भी गढ़ रखी है कि सच और झूठ में चार अंगुल का अंतर है। बात जब तक केवल कानों में रहे, देख न ली जाये, तब तक उसकी यथार्थता संदिग्ध ही बनी रहती है।

हमारे देश के वेदांती दार्शनिकों ने 'सर्प-रज्जु', 'मृग-मरीचिका' आदि उदाहरण देकर यह सिद्ध करना चाहा था कि जो कुछ हम देखते हैं, मिथ्या है—एक माया है; असलियत को देखने में यह दैहिक आँख समर्थ नहीं है।

और आज का वैज्ञानिक भी कुछ ऐसी ही बात कहता है। हमारे दार्शनिकों और आधुनिक वैज्ञानिक के उद्देश्यों में थोड़ा अंतर है। फिर भी वे इस मामले में एक बात पर सहमत हैं कि आँख पर बेहद विश्वास न करने में ही भला है।

वास्तव में एक ही दृश्य को हर मनुष्य एक-सा नहीं देखता। दृष्टि भी इतनी ही व्यक्तिगत है, जितने कि प्रेम, घृणा, वीतरागता आदि भाव। इसलिए कि आँख के गोलक वास्तव में केवल उपकरण मात्र हैं। देखने की असली वस्तु तो मस्तिष्क है, जिसमें स्थित दृष्टि-केंद्र को चोट लग जाये, तो इन्सान के दृष्टिहीन होने में कोई संदेह नहीं। इसी प्रकार मस्तिष्क के कोष और संदेश-केंद्र यदि विक्षत हो जायें, तो वह इन्सान जो कुछ देखेगा, वह स्वस्थ-दृष्टि से बिलकुल भिन्न होगा और यह दृष्टिदोष उसे पागल तक बना देगा।

आँखें वस्तुतः मस्तिष्क का ही बाहरी द्वार हैं, जिनके द्वारा प्रकाश से प्रभावित होकर सारे दृश्य हम ग्रहण करते हैं और देह-यंत्र की विभिन्न शिराओं, कोषों, नाड़ियों आदि के द्वारा विभिन्न प्रतिक्रियाओं और कृत्यों का वे सृजन करती हैं।

देखने का रहस्य 'रेटिना' में छिपा है। यह अत्यंत संवेदनशील पदार्थ प्रकाश की किरणों को विद्युत्-तरंगों में परिवर्तित कर देता है। पतली-से-पतली झिल्ली—कागज से भी पतली और अंगूर के छिलके से भी अधिक सुकुमार—यह रेटिना, चक्षु-गोलक के पिछले हिस्से में रहता है। इसमें कोई १३ करोड़ स्पंदन-कोष होते हैं और प्रकाश-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तरंगों को विद्युत् में परिवर्तित करके मस्तिष्क के 'सेरेब्रम' तक पहुँचाया करते हैं। हर आँख की प्रेषण-क्षमता का स्थूल अंदाजा है कोई १ अरब आकृतियाँ प्रति सेकेंड । प्रेषक शिराओं के बीच के छोटे-छोटे अवकाश मस्तिष्क में केवल वांछनीय और सशक्त आकृतियाँ पहुँचाने में सहायक होते हैं ।

चक्षु-गोलकों के ऊपरी भाग में लैन्स हैं, जो दृश्य को स्पष्ट रूप में मस्तिष्क तक पहुँचाने के लिए जवाबदार हैं । दृश्य में गहराई की प्रतीति का कारण है, आँखों का दो होना । यदि आप एक आँख बंद कर लें, तो दृष्टि का क्षेत्र कोई १५ प्रतिशत घट जाता है; किंतु अनुभव के कारण आप दूरी का उचित अनुमान लगा लेते हैं । बच्चा जब रोटी और गेंद के बाद चंद्रमा देखता है, तो वह उसे भी उतना समीप ही मानता है, जितना कि रोटी या गेंद को । यह भ्रम आकार की समानता के कारण पैदा होता है। बड़े होने पर दैनिक जीवन के अनुभव के आधार पर, उसे पता चलता है कि दूर की वस्तु छोटी दिखाई देती है और पास की वस्तु बड़ी ।

वस्तुओं को देखने में अन्य तत्वों के अलावा आपका व्यक्तिगत ज्ञान, अनुभव और व्यक्तित्व बहुत महत्वपूर्ण है । गाँव में रहनेवाला छोटे शहर की तिमंजिली इमारत को ही गगनचुम्बी देखता है, जबकि न्यूयार्क जैसे शहर में रहनेवाला बम्बई की आठ मंजिली इमारतों की ऊँचाई को कुछ गिनता ही नहीं । इस सम्बंध में मनोवैज्ञानिकों के कुछ प्रयोग बड़े मनोरंजक और ज्ञानवर्धक सिद्ध हुए हैं ।

भिन्न-भिन्न वर्गों के दस समान उम्र-वाले बच्चों के सम्मुख आठ आनेवाले सिक्के और उसी आकार और नाप के कार्डबोर्ड के कुछ टुकड़े रखे गये । उनसे यह प्रश्न पूछा गया कि सिक्के बड़े हैं या गत्ते के गोल टुकड़े । गरीब बच्चों ने सिक्कों को कोई ७५ प्रतिशत, मध्यम वर्गवालों ने ५० प्रतिशत और सम्पन्न वर्ग के बच्चों ने २५ प्रतिशत बड़ा बताया ।

दिमागी विक्षोभ उत्पन्न होने पर या कोई ऐसा दृश्य देखने पर, जिससे मृत्यु का भय उत्पन्न हो जाये, चक्षु-गोलक और रेटिना बिलकुल दुरुस्त रहते हुए भी, आदमी कुछ नहीं देख सकता । जिस तरह भयभीत होने पर बच्चे आँख मूँद लेते हैं, उसी प्रकार मानव-प्रणाली की यह बचाव-यांत्रिकता उसे अनपेक्षित दृश्य न देखने देने के लिए कृत्रिम रूप से अंधा कर देती है । मनोज्ञानिक उपचार से इस प्रकार का अंधापन दूर किया जा सकता है ।

इसी तरह हमारे मस्तिष्क में पैदा हुए अन्य विकारों के कारण अन्य दृष्टिदोष भी उत्पन्न हो सकते हैं । सिजोफ्रेनिया में व्यक्ति को कमरे की दीवारें एकदम पास आती दीख पड़ती हैं और उसे अनुभव होता है कि चारों दीवारों के बीच पड़कर उसका कचूमर बन जायेगा । विभ्रम के रोगी को वस्तुएँ अपने आकार से लाखों गुना बड़ी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दीख पड़ती हैं। आप यदि गहरी चिंताओं में डूबे हों या समस्याओं का कोई भी हल ढूंढने में असफल हो रहे हों, तो आस-पास की वस्तुएँ या तो दिखाई ही नहीं देंगी या बहुत ही धुँधली दीखेंगी। बुखार, तीव्र औषधियाँ, थकान और भूख-प्यास भी आपकी दृष्टि पर बुरा असर डाल सकते हैं।

मस्तिष्क यद्यपि हमारी दृष्टि के लिए मूल तत्व है, किंतु अधिकांश दृष्टिदोष आँखों की खराबी के कारण उत्पन्न होते हैं, मानसिक बहुत कम। कम दीखना या दूर की चीज नजर न आना, धुँध, जाला, मोतियाबिंद, एक साथ दो आकृतियाँ दिखाई देना आदि आम नेत्र, रोग हैं। ये प्रायः सभी चिकित्सा-साध्य हो गये हैं।

हम विभिन्न रंग किस प्रणाली से 'देखते' हैं, यह अभी रहस्य ही बना हुआ है। इसलिए सामान्य रंग-अंधता के लिए भी अब तक कोई इलाज नहीं मिल पाया है। वैज्ञानिकों का कथन है कि रंग-अंधता बच्चे को अपने पुरखों से विरासत में मिलती है और यह उसके व्यक्तित्व का जन्मजात दोष बनकर रहती है।

रंगों के बारे में अत्यंत अहम व मनोरंजक खोजें हुई हैं। हाल ही में एक जापानी अन्वेषक ने यह शोध किया है कि कोई वस्तु यदि नारंगी, पीले या सफेद रंग में चित्रित की जाये, तो वह नीले या काले रंग से चित्रित छवि से बहुत बड़ी प्रतीत होती है, यद्यपि उनके आकार माप में एक से ही होते हैं। फैशन के व्यापारी प्रायः इस तथ्य का उपयोग विज्ञापनबाजी में करते हैं! "महिलाओं के लिए शुभ-संदेश! हमारे गाढ़े रंगवाले वस्त्र पहनिये, आपकी स्थूलता छिप जायेगी।"

रंग-अंधता लाइलाज है, किंतु दो आकृति देखना, जाला, मोतियाबिंद आदि रोगों का शल्य-चिकित्सा द्वारा इलाज किया जा सकता है। अनेक दृष्टिदोष तो काँच के कृत्रिम लैन्स से ही ठीक हो जाते हैं। चक्षु-लैन्स ठीक करने का कोई इलाज अब तक नहीं मिल पाया है। अतः चश्मों या कांटेक्ट लैन्सों (जो आँख की पुतली में फिट हो जाते हैं) से काम चलाया जा रहा है। पचास वर्ष की आयु तक पहुँचते-पहुँचते आम तौर पर लैन्सों की ताकत कोई ९० प्रतिशत कम हो जाती है। इसीलिए इस उम्र की औरतों की दृष्टि की पहचान सुई में धागा डालने की क्षमता से की जाती है, जिसमें शायद ही कोई २ प्रतिशत स्त्रियाँ सफल होती हों।

आँख आपकी देह-प्रणाली से, विशेषतः मस्तिष्क से अत्यंत संवेदनशील सम्बंध रखती है। इसीलिए आँख में सारे मनोविकार क्रोध, प्रेम, वासना, भय, घृणा-द्वेष आदि मूर्तिमान् हो जाते हैं। दृष्टि प्रकृति या भगवान् की अमूल्य देन है। इसीलिए हमारे दार्शनिकों ने उस परम सत्ता ब्रह्म को भी 'द्रष्टा' की उपाधि दी है। यथार्थ ज्ञान के परम साधन चक्षु की सुरक्षा का केवल एक ही उपाय है—विकारहीन मन और व्याधिरहित तन। *

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'एक भारतीय आत्मा'

प्राण, रस और मनीषा के मूर्तिमान् त्रिवेणी-संगम का पुण्य दर्शन

वयोवृद्ध माखनलालजी चतुर्वेदी हिन्दी के राष्ट्रीय साहित्य की विभूति हैं। स्वाधीनता-संग्राम-काल में 'एक भारतीय आत्मा' उपनाम से लिखी गयी आपकी कविताओं ने युवकों-वृद्धों में देशभक्ति की आग जलायी थी। उस काल के अन्य सब कवि आज चुप हैं, केवल माखनलालजी की प्रतिभा आज भी नवीन सृष्टि कर रही है। उनका कवि-हृदय आज भी जागृत है। वे मरुभूमि से भी रससृष्टि कर लेते हैं। उनके वृद्ध शरीर का मन आज भी जवान है। विनोदी इतने हैं कि कभी चिंतामग्न नहीं होते।

विद्वत्ता में भी किसी आप अन्वेषक से पीछे नहीं। १९५६ में आपको 'हिम-किरीटनी' पर साहित्य अकादमी का पाँच हजार रुपये का पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। पत्रकार के रूप में आज भी आप अपने पत्र 'कर्मवीर' (खंडवा) के सम्पादक हैं। आपके नाटक भी प्रशस्त हुए हैं। आपका 'कृष्णार्जुन-युद्ध' नाटक रंगमंच पर अनेक बार सफलता से खेला जा चुका है।

हिन्दी को राष्ट्रीय गौरव प्रदान करने में आपका बड़ा हाथ रहा है। आज से लगभग २० वर्ष पूर्व हिन्दी साहित्य-सम्मेलन का जो ऐतिहासिक अधिवेशन हरिद्वार में हुआ था, उसके आप ही सभापति थे।

आप सात्विक वृत्ति के स्वाभिमानी साधक हैं और त्याग एवं तपस्या के मूर्तिमान् अवतार हैं। धन, यश या पद के लोभ ने कभी आपको स्पर्श भी नहीं किया। साहित्यकार की स्वतंत्र सत्ता को आपने कभी किसी भी मूल्य पर नहीं बेचा।

हिन्दी साहित्य में छायावादी और राष्ट्रीय काव्य के चतुर्वेदीजी वर्तक माने जाते हैं। द्विवेदी-युग के इतिवृत्तात्मक काव्य को चतुर्वेदीजी ने ही सर्वप्रथम व्यक्तिवादी स्पर्श प्रदान करते हुए एक अभिनव शैली का सूत्रपात किया। यही शैली विकसित होकर बाद में छायावादी काव्य का स्वरूप बन गयी।

चतुर्वेदीजी का राष्ट्रीय काव्य संकुचित राष्ट्र-भावना पर अवलम्बित नहीं है। वह वस्तून्मुखी न होकर भावनाप्रधान है। बलिदानवाद ही उनके राष्ट्रीय काव्य की दार्शनिक पृष्ठभूमि है। उनकी राष्ट्रीय चेतना एक प्रकार से विश्व-चेतना ही है। यद्यपि भारतवर्ष की स्वतंत्रता को लक्ष्य कर ही उनकी अधिकांश कविताएँ लिखी गयी हैं, किंतु फिर भी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

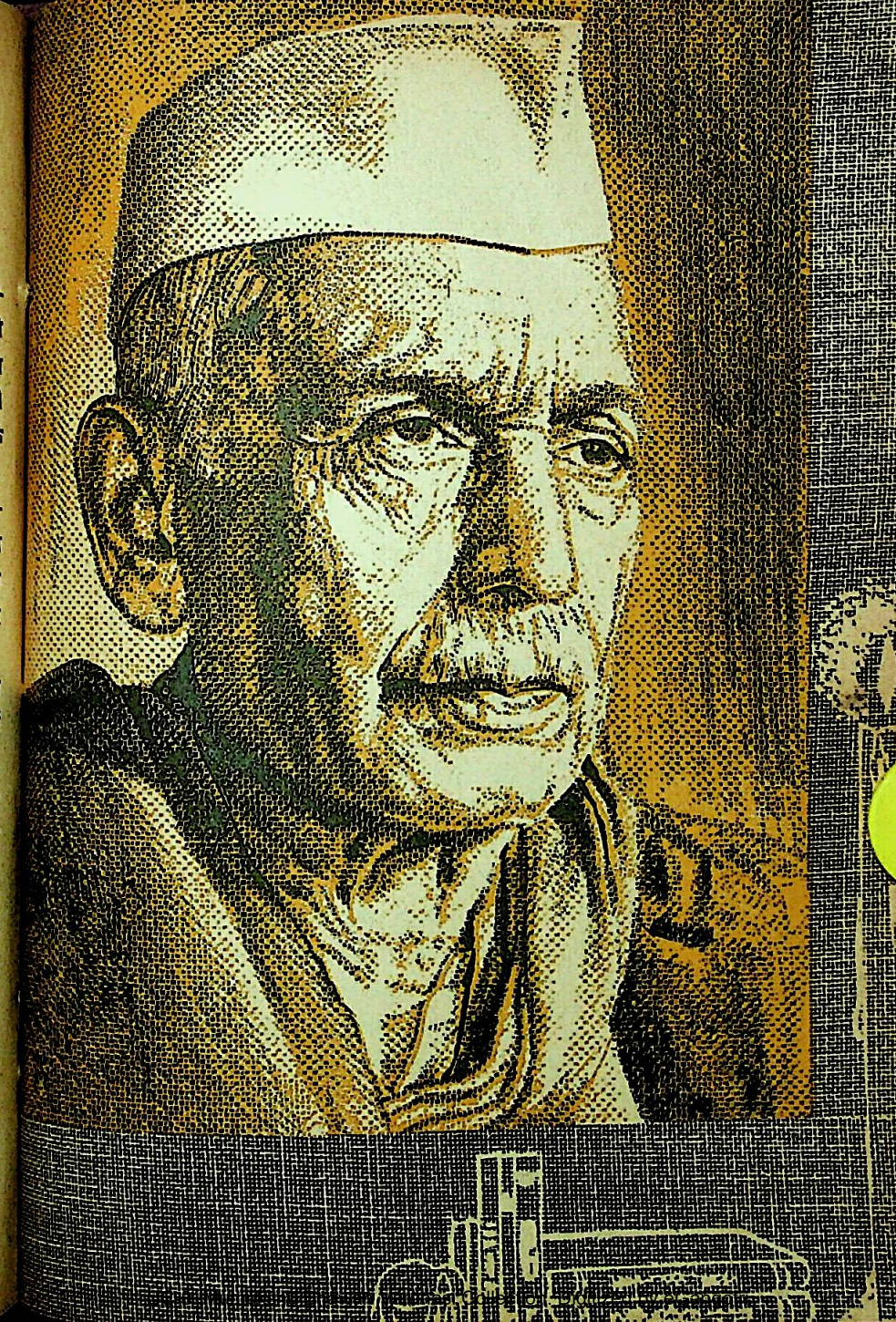

उनकी कविताओं की आत्मा सार्वदेशिक एवं सार्वकालिक है। राष्ट्रीय काव्य अधिकतर वस्तुवादी काव्य ही होता है, जबकि चतुर्वेदीजी ने अपने राष्ट्रीय काव्य को भक्ति की उदात्त पृष्ठभूमि पर प्रतिष्ठित कर उसे सूक्ष्मता, प्रभावोत्पादकता और अभिनव प्रेषणीयता से सम्पन्न कर दिया है। इसमें अतिशयोक्ति नहीं कि चतुर्वेदीजी का राष्ट्रीय काव्य विश्व के राष्ट्रीय काव्य के क्षेत्र में एक नवीन धरातल की प्रतिष्ठा करता है।

सौंदर्य आवरण

सौंदर्य आवरण है मन का
संबल है सारे जीवन का।
कपड़ों के तह-से गंधों के तह हैं
जिस ओर नजर डालूँ वे वह हैं, यह हैं!
धीरे-से यार सुगंधें जरा उठाओ
यदि तुम भी मिट्टी में थोड़े मिल पाओ।
जूड़े-सा बाँधो फूल मधुर वेणी में
तुम खड़े रहो शशि-की जागृत श्रेणी में।
जो तुम्हें देखने आयें, मत शरमाओ
आवरण तुम्हारा पर न जरा सरकाओ।

सौंदर्य, लोक से छन-छनकर आने दो
अर्पण की निधियाँ बन-बनकर आने दो
वृंदावन हो या और कहीं हो जैसे
वह बनक त्रिभंगी बनी रहे प्रिय वैसे!
मुरली का स्वर कैसे जाता है आगे
ऊषा के पंछी वे देखो, वे जागे!

वह हास्य उतरकर आँखों भर-भर आया
अंतर के वासी ने थोड़ा-सा गाया
सिर दूँ कैसे बस एकमात्र यह सिर है
लघु समय तुम्हारा चरण बड़ा अस्थिर है
आँखों में बढ़कर लगा स्वप्न का मेला
यह कौन झूलता झूले रणनद खेला!
मैं उसके चरण पखार रहा हूँ जैसे
उसको आँखों में धार रहा हूँ जैसे। — माखनलाल चतुर्वेदी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शतायु होने के वैज्ञानिक रहस्य

बुढ़ापे और उसके निवारणोपायों का शास्त्रीय विवेचन

उमा शंकर

कीटाणुजन्य रोगों पर विजय-प्राप्ति के परिणामस्वरूप मनुष्य अधिक संख्या में दीर्घजीवी होते जा रहे हैं। परंतु अब उनके सामने वृद्धावस्था, उससे सम्बंधित रोग और शारीरिक अक्षमताएँ अपना भयंकर मुँह बाये खड़ी हैं। वृद्ध मनुष्यों के सक्रिय और स्वस्थ जीवन को दीर्घता प्रदान करने की आवश्यकता जितनी आजकल अनुभव की जाने लगी है, उतनी पहले कभी नहीं की गयी थी। इसलिए वैज्ञानिकों ने अब बुढ़ापे पर काबू पाने की ठान ली है।

× × ×

बुढ़ापा क्या है ?

वे कौन-सी बातें हैं, जिनके कारण मनुष्य बूढ़ा हो जाता है ?

वे कौन-से जुज हैं, जो कोष्ठों (सेल्स) की (जो शरीर की इकाई हैं) जीर्णता से सम्बंधित हैं ?

बुढ़ापे से कोष्ठों की बनावट में जो रद्दोबदल हो जाती है, उसका ठीक-ठीक स्वरूप क्या है ?

वे कौन-से कारण हैं, जिनसे बड़ी आयु में, मांस-तंतुओं, नसों, नाड़ियों और पेशियों की लचक कम होती जाती है और वे क्रमशः सख्त होती जाती हैं ?

शरीर में वे कौन-से रासायनिक और 'फिजियालाजिकल' यानी शरीर की भीतरी क्रियाओं सम्बंधी परिवर्तन आ जाते हैं, जिनके फलस्वरूप मनुष्य को बुढ़ापे का शिकार होना पड़ता है ?

कोष्ठों, अंगों या समूचे शरीर में आ जानेवाले इन परिवर्तनों को कैसे रोका जा सकता है, ताकि मनुष्य को बूढ़ा होने से बचाया जा सके ?

क्यों कुछ मनुष्य जल्दी बूढ़े हो जाते हैं, जबकि दूसरे देर तक जवान बने रहते हैं ?

वृद्ध मनुष्यों में पुनः शक्ति और स्फूर्ति उत्पन्न करने के लिए विज्ञान क्या कुछ कर सकता है ?

विश्व की विभिन्न प्रयोगशालाओं में जराशास्त्री इन प्रश्नों के उत्तर पाने के लिए खोज में लगे हुए हैं।

आक्टोपस से लेकर चूहे, बिल्ली, खरगोश, सूअर और मनुष्य तक इस खोज के परीक्षण-पात्र हैं। और मनुष्यों में एक साल के बच्चे से लेकर शतायु पुरुषों तक पर विभिन्न प्रयोगों का गहन अध्ययन किया जा रहा है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नसों-नाड़ियों की सख्ती के कारणों का पता लगाने के लिए सूअरों को अत्यधिक चिकनाईवाला आहार खिलाया गया है। आठ टाँगोंवाले जानवर 'आक्टोपस' की रक्त-संचार-सम्बंधी क्रियाओं-प्रक्रियाओं का अध्ययन भी बुढ़ापे के प्रसंग में किया जा रहा है। क्योंकि दाढ़ी वृद्धावस्था का प्रतीक है, इसलिए जराशास्त्री १ साल के बच्चे से लेकर ९० साल की उम्र तक के मनुष्यों में दाढ़ी उगने और बढ़ने का अध्ययन कर रहे हैं। शारीरिक श्रम करनेवाले कामगारों और मानसिक श्रम करनेवाले बाबुओं पर अलग-अलग प्रयोग किये जा रहे हैं, ताकि यह निश्चित किया जा सके कि दीर्घायुष्य पर शारीरिक गतिविधियों का क्या प्रभाव पड़ता है। इसी सिलसिले में विरासत, जलवायु की विभिन्नता और यहाँ तक कि सामाजिक रस्मो-रिवाज के प्रभावों का भी अध्ययन किया जा रहा है।

× × ×

कुछ वैज्ञानिक मानते हैं कि शरीर-संवर्धन-क्रिया (मेटाबोलिज्म) के दौरान, शरीर में जो 'फ्री रैडिकल' पैदा होते हैं, अर्थात् जो 'मूलक' छूटकर अलग हो जाते हैं, उनके हानिकर प्रभाव वृद्धावस्था का एक कारण है। इस सिद्धांत से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यदि शरीर में ऐसे रासायनिक द्रव्यों की मात्रा बढ़ा दी जाये, जो 'फ्री रैडिकलों' के साथ क्रिया करके उन्हें 'खा' जायें, तो बूढ़े होने की प्रक्रिया मंद पड़ जायेगी। कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय की डानर प्रयोगशाला में उक्त अनुमान को परीक्षणों की कसौटी पर परखा गया और देखा गया कि ऐसे पदार्थों के प्रयोग से चूहों की जीवनावधि में २० प्रतिशत की वृद्धि हो गयी।

× × ×

जंतुओं में वृद्धावस्था के अध्ययन के लिए उस प्रक्रिया का प्रयोग होने लगा है, जो जुगनू तथा सागर की अंधेरी गहराइयों में पायी जानेवाली कई मछलियों को अंधेरे में चमक प्रदान करती है। यह प्रक्रिया 'बायोल्युमिनिसेन्स' कहलाती है। इसमें 'ल्युसिफेरिन' नामक पदार्थ धीरे-धीरे आक्सीजन से मिलकर चमकता है। परंतु आक्सीजन से मिलकर चमकने के लिए इन जंतुओं के शरीर में खास तरह के जीव-रस (एन्जाइम) की आवश्यकता होती है, जिसे 'ल्युसिफिरेज' कहते हैं। ज्यों-ज्यों ये जंतु (जुगनू इत्यादि) बूढ़े होते जाते हैं, त्यों-त्यों उनमें 'ल्युसिफिरेज' की मात्रा कम होती जाती है तथा उनका चमकना भी मंद पड़ता जाता है।

ताप, शक्तिव्यय, परमाणविक विकिरण, रोग इत्यादि किस गति से बुढ़ापे में वृद्धि करते हैं तथा उनके द्वारा पैदा होनेवाले प्रभाव स्थायी होते हैं या अस्थायी, ये बातें जानने के लिए इन जंतुओं पर प्रयोग किये जाने लगे हैं। बुढ़ापा लानेवाले उपर्युक्त कारण (ताप, शक्तिव्यय आदि) जंतुओं की चमक को कम कर देते हैं और चमक में आनेवाली घट-बढ़ को आसानी से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नापा जा सकता है। इस टेक्नीक का प्रयोग अभी शुरू ही हुआ है और आशा की जाती है कि दो-चार वर्ष में ही इन परीक्षणों से वृद्धावस्था के बारे में बहुमूल्य ज्ञान प्राप्त होगा।

सब घरों में आम तौर पर पाये जाने-वाले 'काक्रोचों' (तिलचट्टा या झुरळ) के बारे में वैज्ञानिकों को यह तो मालूम ही था कि यदि किसी जवान 'काक्रोच' की एक टाँग काट दी जाये, तो थोड़े ही समय में उसके बदले नयी टाँग पैदा हो जाती है, परंतु बूढ़े 'काक्रोच' में नयी टाँग पैदा करने की क्षमता नहीं होती। जवान और बूढ़े 'काक्रोचों' में पाया जाने-वाला यह भेद बुढ़ापे को रोकने की कुंजी सिद्ध हो रहा है।

वाल्टिमोर के एक वृद्धावस्था-अनुसंधान-केंद्र में डाक्टर डीट्रिच बोडेन्स्टाइन ने एक मनोरंजक और महत्वपूर्ण प्रयोग किया। उन्होंने आधुनिक शल्य-क्रिया के द्वारा एक बूढ़े और एक जवान 'काक्रोच' को आपस में जोड़ दिया। दोनों में खून और रसों का सम्बंध हो गया। अब उन्होंने बूढ़े 'काक्रोच' की एक टाँग काट दी। यह देखकर उन्हें बहुत खुशी हुई कि बूढ़े 'काक्रोच' ने भी नयी टाँग पैदा कर ली थी। इस परीक्षण से यह निष्कर्ष निकला कि जवान 'काक्रोचों' में कोई ऐसा 'रस' या पदार्थ होता है, जो उसे टाँग दुबारा पैदा करने की क्षमता देता है। और सम्भवतः यही रस उसकी जवानी का रहस्य होता है। ज्यों-ज्यों 'काक्रोच' में इस 'रस' की कमी होती जाती है, त्यों-त्यों वह बूढ़ा होता जाता है और उसमें बुढ़ापे के अन्य लक्षणों के आने के साथ-साथ टाँग पैदा करने की शक्ति क्षीण होती जाती है।

आपका यह सोचना स्वाभाविक ही है कि यदि 'काक्रोच' में कोई 'यौवन-रस' है, तो ऐसा ही 'रस' दूसरे जानवरों में और शायद मनुष्यों में भी होना चाहिये और ऐसे 'रस' के इंजेक्शन से वृद्धावस्था को रोका जा सकेगा।

कारनेल विश्वविद्यालय में डा० क्लाइव मैके ने इसी प्रकार एक बूढ़े और जवान चूहे को आपस में जोड़ दिया। बूढ़ा चूहा शीघ्र ही जवान दीखने लगा और उसकी आयु चूहों की सामान्य आयु से ४०० दिन अधिक हो गयी, अर्थात् उसकी आयु औसत की अपेक्षा डयोढ़ी हो गयी।

हारवर्ड विश्वविद्यालय के प्रोफेसर कैरोल विलियम्स ने नये पैदा हुए चूहों के तंतुओं (टिश्यू) में से एक ऐसा पदार्थ निकालने में सफलता प्राप्त की है, जो कीड़ों-मकोड़ों में बुढ़ापे को क़ाफी समय के लिए रोक देता है। कुछ समय पहले यही पदार्थ गाय के बछड़ों की हड्डियों, जिगर, मांस-पेशियों और 'एड्रिनल' ग्रंथि के रेशों में पाया गया है। और अभी कुछ दिन पहले यह पदार्थ मनुष्य के नवजात शिशु की नाल (प्लेसेंटा) में तथा अंततः मनुष्य के 'थाइमस' ग्लैंड में भी पाया गया है। सम्भवतः यही पदार्थ मनुष्य के यौवन के रहस्यों में से एक है। परीक्षणों से पता चलता है कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह पदार्थ जख्मों को अच्छा करने में और मृत कोष्ठों (सेलों) के बदलने में महत्वपूर्ण पार्ट अदा करता है।

ऊपर हमने डा० क्लाइव मैके का जिक्र किया है, जिन्होंने दो चूहों को जोड़ा था। इन्हीं डा० मैके ने एक और बहुत ही महत्वपूर्ण प्रयोग किया है। उन्होंने सफेद रंग की एक जाति के वे चूहे लिये, जिन्होंने माँ का दूध पीना छोड़कर बाहरी आहार लेना शुरू किया था। उन्होंने इन चूहों को दो ग्रुपों में विभक्त कर दिया। एक ग्रुप के चूहों को तो ऐसा अतिपौष्टिक खाना, जिसमें स्टैंडर्ड राशन के अलावा शक्कर और चर्बी काफी मात्रा में होती थी, भरपेट दिया जाता था। ये चूहे अपनी सामान्य आयु (दो से अढ़ाई वर्ष) तक जीवित रहकर मर गये। इनमें सबसे बूढ़ा चूहा ९६५ दिन जीवित रहा।

दूसरे ग्रुप के चूहों को जो खाना दिया गया, वह सिर्फ स्टैंडर्ड राशन मात्र था और वह भी भरपेट नहीं दिया जाता था। सिर्फ इतना ही खाना दिया जाता था, जिससे उनकी 'कैलोरी-आवश्यकता' पूरी हो जाये। इन चूहों का संवर्धन धीरे-धीरे हुआ, परंतु उनमें किसी तरह का शारीरिक दोष पैदा नहीं हुआ। ३००, ६०० और कुछ मामलों में ९०० दिन के बाद उन्हें भरपेट स्टैंडर्ड राशन दिया जाने लगा। ये चूहे १००० दिन के बाद भी जवान नजर आते थे; जबकि शुरू से ही भरपेट खानेवाले उनके सभी साथी (अर्थात् ग्रुप १ के सभी चूहे) मर चुके थे। इस दूसरे ग्रुप का सर्वाधिक-जीवी चूहा १४०० दिन तक जीवित रहा।

अन्य वैज्ञानिकों ने भी डा० मैके की इन खोजों को स्वयं आजमाया है और ठीक पाया है। इतना ही नहीं, उन्होंने यह भी देखा है कि भरपेट खानेवाले लगभग सभी चूहों में टचूमर, हृदय-रोग तथा गुर्दे के रोग ८०० दिन की आयु के बाद पैदा हो जाते थे, जबकि कम खाना खानेवाले चूहों में उसी आयु में इस प्रकार के रोगियों की संख्या बहुत कम थी। इस प्रकार अब यह सिद्ध हो चुका है कि आहार में थोड़ी-सी कमी रोग में बहुत अधिक कमी पैदा कर देती है और जीवन को लम्बा तथा स्वस्थ बनाती है। आवश्यकता से अधिक आहार न केवल वृद्धावस्था को निकट लाता है, बल्कि अनेक रोगों का कारण भी बनता है।

दुर्भाग्य से मनुष्यों पर किये जानेवाले प्रयोग बहुत जल्दी कोई ठोस परिणाम नहीं दे सकते; क्योंकि मनुष्य की आयु चूहे, आक्टोपस, जुगनू इत्यादि की तुलना में बहुत लम्बी होती है। मनुष्य पर जवानी से लेकर बुढ़ापे तक अर्थात् लगभग ६०-७० या ८० साल तक परीक्षण किये जायें, तभी कुछ ठोस और उपयोगी परिणाम सामने आ सकते हैं। परंतु वृद्धावस्था-शास्त्र की दृष्टि से मनुष्यों पर प्रयोग शुरू किये हुए अभी लगभग ५-७ ही साल गुजरे हैं।

तथापि वृद्धावस्था के अध्ययन के लिए एक 'शार्ट कट' भी है। और वह यह है कि सैकड़ों मनुष्य २० वर्ष के, सैकड़ों २५ वर्ष

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के, सैकड़ों ३० वर्ष के, सैकड़ों ७०-८० या ९० वर्ष के लिए जायें; फिर पाँच या दस साल तक इन आयुवर्गों में वृद्धावस्था की प्रगति का अध्ययन किया जाये। इस तरीके से 'अंतरिम काल' के लिए वृद्धावस्था के आगमन की औसत तस्वीर सामने आ जायेगी।

और सच बात तो यह है कि इस तरह के परीक्षण विशाल पैमाने पर किये जा रहे हैं और ४-५ वर्षों में ही उनसे अनेक महत्वपूर्ण बातों का पता चला है।

उदाहरण के लिए इन परीक्षणों से यह पता चला है कि २०-२५ वर्ष की आयु में ही वृद्धावस्था के अनेक लक्षण और रोग शुरू हो जाते हैं, हालाँकि मनुष्यों को ४०, ४५ या ५० वर्ष की आयु तक भी उन लक्षणों या रोगों का पता नहीं चलता। जवानी में ही कई लोगों का ब्लड-प्रेशर नामालूम तरीके से आहिस्ता-आहिस्ता बढ़ना शुरू हो जाता है। कइयों में हृदय द्वारा पम्प की जानेवाली रक्त की मात्रा कम होनी शुरू हो जाती है। कइयों में गुर्दों द्वारा-रक्त शोधन की क्षमता कम होने लगती है। और कइयों में रक्त-नाड़ियाँ सख्त होने लग जाती हैं।

वैज्ञानिकों ने शरीर की लगभग २४ अंतःक्रियाओं को नापने के तरीकों का विकास किया है। और उनका विश्वास है कि यदि यौवन अवस्था से ही कोई व्यक्ति नियमित रूप से इन सब अंतःक्रियाओं की जाँच कराता रहे, तो ज्यों ही उसमें वृद्धावस्था के किसी लक्षण या रोग की शुरुआत होगी, त्यों ही पता चल जायेगा। इस प्रकार इन विकारों को शुरू से ही नियंत्रित किया जा सकेगा। उदाहरण के लिए ज्यों ही किसी व्यक्ति में 'कोलेस्टरोल' (हृदय-रोग पैदा करनेवाले पदार्थ) की मात्रा सामान्य की अपेक्षा अधिक हो जाये, त्यों ही उसके आहार को नियंत्रित करके और दवाइयों के द्वारा इस पदार्थ की मात्रा को बढ़ने से रोका जा सकता है और तब बुढ़ापे में उसे हृदय-रोग होने की सम्भावना बहुत कम हो जायेगी।

अभी कुछ समय पहले तक यह समझा जाता था कि वृद्धावस्था के कारण रक्त-नाड़ियाँ सख्त हो जाती हैं; और रक्त-नाड़ियों का सख्त हो जाना, मृत्यु का सबसे बड़ा कारण है। परंतु विशाल पैमाने पर किये जा रहे सर्वेक्षणों से पता चला है कि कई मनुष्यों की नाड़ियाँ २४-२५ साल की आयु में ही सख्त होनी शुरू हो जाती हैं। इससे यह सिद्ध हुआ कि वृद्धावस्था के कारण नाड़ियाँ सख्त नहीं होतीं, बल्कि नाड़ियाँ सख्त होने के कारण मनुष्य जल्दी बूढ़ा हो जाता है। फिर नाड़ियों के सख्त हो जाने का कारण क्या है? इसी प्रश्न का उत्तर खोजते-खोजते वैज्ञानिकों को कोलेस्टरोल-वृद्धि और उसके हानिकर प्रभावों का ज्ञान हुआ।

मनुष्य को स्वस्थ शतायु-जीवन प्रदान करने के लिए वैज्ञानिकों को अभी कई वर्ष लगेंगे। उन्हें हजारों तरह के परीक्षण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करने पड़ेंगे और कई छोटी और बड़ी विजयें प्राप्त करनी होंगी। अब तक जो परीक्षण किये गये हैं, उनके आधार पर बुढ़ापे को दूर धकेलने के लिए और बुढ़ापे में भी स्वस्थ रहने के लिए निम्नलिखित नियमों का पालन आवश्यक है :

(१) मिताहार:—अनावश्यक रूप से अधिक मात्रा में आहार मत लीजिये। आपका खाना पौष्टिक तो हो, परंतु उसकी मात्रा कम हो—केवल इतनी हो कि आपका वजन, आपकी आयु और ऊँचाई के लिए निर्धारित स्टैंडर्ड वजन के आस-पास कायम रहे, वजन बढ़ने न पाये। मनुष्यों के स्टैंडर्ड वजन के चार्ट कई पुस्तकों में तथा बीमा-डाक्टरों के पास देखे जा सकते हैं।

(२) व्यायाम :— अपने शरीर को—शरीर के प्रत्येक अंग को—सदा सक्रिय रखिये। इसके लिए नियमित व्यायाम जरूरी है। कई लोगों को यह भ्रम है कि अधिक व्यायाम करने से दिल कमजोर हो जाता है। परंतु आस्ट्रिया तथा अमरीका में किये गये अध्ययन से यह विचार गलत सिद्ध हो चुका है और अब हृदय-रोग के विशेषज्ञ सभी व्यक्तियों के लिए—चाहे वे जवान हों या बूढ़े, चाहे वे स्वस्थ हों या कमजोर—नियमित व्यायाम करने का परामर्श देते हैं। नियमित रूप से सर्वांगीण व्यायाम करनेवाले व्यक्तियों, खिलाड़ियों, पर्वतारोहियों और तैराकों का हृदय ५० वर्ष की आयु में भी उतना ही शक्तिशाली पाया गया है, जितना कि किसी २५-३० साल के युवक का। दूसरी तरफ २०-२५ वर्ष की अवस्था में ही कई क्लर्कों, बिजनेसमैनों और विद्यार्थियों के हृदय—यदि वे व्यायाम नहीं करते—क्षीण पाये जाते हैं; हालाँकि उन्हें इस क्षीणता का पता भी नहीं होता। सिर्फ तीन सप्ताह तक सख्त व्यायाम करने के बाद प्रायः सभी व्यक्तियों का हृदय बहुत अच्छी तरह काम करना शुरू कर देता है। यदि व्यायाम के साथ प्राणायाम जोड़ दिया जाये, तो सोने में सुहागा हो जाता है।

(३) मानसिक सक्रियता :— अपने दिमाग को सक्रिय रखिये। शायद आपको यह पता न हो कि वे लोग जल्दी बूढ़े हो जाते हैं, जो अपने दिमाग से कम काम लेते हैं। वृद्धावस्था के लक्षणों में एक लक्षण यह भी है कि दिमाग का वजन कम हो जाता है और एक दूसरा लक्षण यह है कि दिमाग में पहुँचनेवाले खून की मात्रा कम हो जाती है। स्मृति और चेतना-शक्ति की कमी भी वृद्धावस्था के लक्षण हैं। इन सभी लक्षणों को दूर रखने के लिए यह आवश्यक है कि दिमाग को सदा सक्रिय रखा जाये। यह तो आपको पता ही है कि दिमाग का यदि उपयोग न किया जाये, तो वह शीघ्र ही कुंद हो जाता है। दूसरी तरफ जो व्यक्ति दिमाग से काम लेते रहते हैं, उनमें बहुत बड़ी अवस्था तक नया ज्ञान ग्रहण करने की क्षमता कायम रहती है और वे न केवल मानसिक, बल्कि शारीरिक रूप से भी चिरकाल तक वृद्ध नहीं होते। *

जुलाई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आज, तुम्हें बदलना होगा

विवाह की परम्परा पुरानी है; किंतु उसे आज के पति-पत्नी नये युग की चेतना के अनुरूप बदलते हुए ही सफल बना सकते हैं। विवाहित जीवन को सफल बनाने के कुछ क्रियात्मक निर्देश।

प्रिय इला,

तुमने अपने पत्र में लिखा है—"मैं विचित्र परेशानी में हूँ। मेरे पति बिलकुल बदले से नजर आते हैं। पहले जो मैं कहती थी, मान जाते थे। अब नहीं मानते। मैं जो भी कहती हूँ, उनके भले के लिए कहती हूँ। उनकी भलाई के लिए मैंने अगणित कष्ट सहे हैं, बहुत कुर्बानियाँ की हैं। मगर उनकी कुछ कद्र नहीं करते। एक और मुसीबत आ खड़ी हुई है। कुछ दिनों से वे दूसरी स्त्रियों से भी बहुत हँसकर बातें करने लगे हैं। यदि वे ऐसे ही रहे, तो मैं जहर खा लूँगी; या जिससे वे बात करेंगे, उसे जहर दे दूँगी। मुझे कोई मार्ग दिखलाओ। मेरा जीवन नरक हो गया है।"

गृहस्थ को स्वर्ग या नरक बनाना तुम्हारे अपने हाथ में है। मुझे मालूम है, तुम बहुत नेक और कुशल गृहिणी हो। पति-सेवा में अनेक कष्ट झेले हैं और बच्चों की माँ बनकर बहुत कुर्बानियाँ की हैं। और अब तुम समझती हो कि कुर्बानियों का पूरा आदर नहीं किया जा रहा है। इससे तुम विक्षुब्ध हो। यह विक्षोभ तुम्हारे मन में कई प्रकार की विकृतियाँ पैदा कर रहा है। उनमें से यह भी है कि अब तुम्हारे मन में पत्नी के अधिकार पाने की उत्कंठा जाग उठी है। वे ही नहीं बदले, तुम भी बदली हो। पहले तुम भी सब कुछ उनकी सलाह से करती थीं।

मगर अब तुम घर की व्यवस्था में पति की रुचि का ध्यान नहीं रखतीं। अब तुम अपनी बात मनाने के लिए कहने लगी हो—यह महकमा मेरा है, आपका नहीं। यदि तुम ध्यान से अपने व्यवहार की परीक्षा करो, तो तुम्हें अनुभव होगा कि अब तुम अधिकार की चर्चा ज्यादा करती हो और पति को अनुशासित रखना चाहती हो। याद रखो, शासन के अंकुश से पति को सीधे रास्ते पर लाने के प्रयत्न निरर्थक होते हैं। अंकुश का प्रयोग पशु के लिए होता है। मनुष्य का वशीकरण अंकुश से नहीं, प्रेम से होता है। रास्ता दिखाने के लिए प्रेम का दीपक जलाया जाता है। अंकुश के बल पर चलाओगी, तो वह एक ठोकर से बचकर किसी दूसरी ठोकर का शिकार हो जायेगा।

पति पर शासन करने की इच्छा होते ही स्त्री अपनी मृदुलता का आकर्षण खो देती है। स्त्री की मृदुलता स्वयं ही पति पर शासन कर सकती है। यह सच है कि पुरुष

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वभाव से अहम्भावी है; किंतु यह भी सच है कि स्त्री के प्रेम के आगे वह अपने 'अहं' को भूल जाता है।

मैं तो यही परामर्श दूँगी कि अपनी इच्छाओं को घर का कानून बनाने की कोशिश मत करो।

पति की आदतों को बदलने का यत्न भी गृह-जीवन में कटुता पैदा करता है। समझ लो, तुम्हें सूर्योदय से पहले ही उठने की आदत है। इसके बहुत गुण हैं। किंतु पति को देर तक सोने की आदत है। तुमने घर की सफाई शुरू कर दी। दरवाजे खट-खट बजने लगे। कपड़े फटकारने की आवाज ऊँची होती गयी। पतिदेव को बुरा लगा; मगर बोले नहीं। करवट बदलकर फिर सो गये या चादर का पल्ला मुँह पर डाल लिया। कुछ क्षण बाद तुमने उनकी चादर खींच ली और हाथ पकड़कर उठा दिया।

तो पति पर अंकुश रखने की यह आदत तुम्हें बदलनी होगी।

तुम्हारी दूसरी शिकायत भी केवल कल्पनात्मक है। तुमने लिखा है कि तुम्हारे पति कभी दूसरी स्त्रियों के सौंदर्य की सराहना कर देते हैं। सुंदरता को सराहना पाप नहीं। तुम्हारे पति ने जब पहले-पहल तुम्हें देखा था, तो तुम्हारे विशुद्ध सौंदर्य की ही सराहना की होगी उन्होंने। उन नजरों में वासना तो नहीं थी। इसी वासना-रहित दृष्टि से भी स्त्री को देखा जा सकता है — यदि तुम यह मानती हो, तो चिंतित क्यों होती हो? पति के चरित्र पर इतना संदेह क्यों करती हो कि वे हर स्त्री के सौंदर्य का भोग करना चाहेंगे!

हम लोग अब उस युग में नहीं हैं, जब स्त्रियाँ अंतःपुरों में कैद रहती थीं। अब तो वह युग है कि स्त्रियाँ पुरुषों के कंधे-से-कंधा मिलाकर चलती हैं। खेल के मैदान में पुरुषों के समान दौड़ती-भागती हैं। आफिसों में काम करती हैं। फौज में भर्ती होती हैं। स्वतंत्र रूप से सब कामों में भाग लेती हैं।

मैं ऐसी कई पत्नियों को जानती हूँ, जो सार्वजनिक मनोरंजन के स्थानों पर जाकर खेल-तमाशा नहीं देखतीं, बल्कि पति की चौकीदारी ही करती हैं। पतिदेव की आँखें खेल की ओर रहती हैं और पत्नीजी की आँखें पति की आँख पर। वह यही ताड़ती रहती है कि कहीं उनकी निगाह पास में बैठी सुंदर लड़की पर तो नहीं गड़ी।

प्रायः ऐसा होता है कि पति यदि दफ्तर से लौटने में देर कर दे, तो पत्नी की दुश्चिंताओं का भार बढ़ जाता है। वह कल्पना करने लगती है कि आज वह किसी मित्र की पत्नी से बात करने ठहर गये होंगे। बारी-बारी से उसे अपनी पहचान की सब लड़कियों पर शक होने लगता है। सब स्त्रियाँ उसके पति के रास्ते में जाल बिछा-कर उसे फँसाने की साजिशें कर रही हैं। इन कल्पनाओं से उसका मन काँपने लगता है।

कुछ पत्नियाँ तो इस डर से इतनी व्यग्र हो जाती हैं कि एक दिन के लिए भी पति को अकेला छोड़कर नहीं जातीं। उन्हें भय हो जाता है कि वे यदि पति को अकेला

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छोड़ेंगी, तो उनका भोला पति अवश्य किसी-न-किसी जाल में फँस जायेगा। छाया की तरह वह सदा पति के संग-संग रहती है। इतना अतिशय साहचर्य दोनों दिलों में अप्रीति के बीज बो देता है। वे भूल जाती हैं कि कुछ काल का वियोग प्रेमियों के मिलन को प्रियतर बनाता है। संशयातुर पत्नियाँ इसका अवसर न देकर बहुत भूल करती हैं।

यह संदेह कुछ मूर्ख पत्नियों को अतिशय शृंगार-प्रिय भी बना देता है। उनके दिल में यह बात जम जाती है कि पतिदेव बनी-ठनी औरतों के अनुरागी हैं। उनके अनुराग पर एकाधिकार पाने के लिए क्यों न वे भी बन-ठनकर रहने लगें। बस इतने में शृंगार की नयी चीजों पर पैसे का अपव्यय शुरू हो जाता है।

यदि डाक्टर साहब ने आपको वजन कम करने की सलाह दी है, तो यह आवश्यक नहीं कि पतिदेव को भी आप सुबह की सैर के लिए मजबूर करें।

इन मूर्ख पत्नियों को कौन समझाये कि बाहरी चमक-दमक के बल पर पति के हृदय को जीतना उसकी तृष्णा को और भी प्रबल बनाने का अवसर देना है। यदि सचमुच उसमें यह तृष्णा जग गयी है, तो नये प्रलोभनों से और भी जागेगी, शांत नहीं होगी। तुम भी उसे और भोगासक्त बनाने का यत्न करोगी, तो वह तुम्हें भी केवल विलास की सामग्री मान लेगा और घर की सब पवित्रता जलकर राख हो जायेगी। तुम्हारा जीवन हाहाकारमय हो जायेगा।

ऐसे उद्दाम वासनामय प्रेम की उत्कट आकांक्षा भी कई बार पत्नियों को बेचैन बना देती है। उसे पाने के लिए वे निहायत ओछे उपायों का जिस प्रकार सहारा लेती हैं, उससे उनका दर्जा पति की दृष्टि में बढ़ता नहीं, कम ही होता है। साधारणतया पुरुष स्वाभिमानी होता है। समाज में वह अपनी प्रतिष्ठा बनाकर रखना चाहता है। भूलचूक होने पर भी वह उसकी आँच अपने घर तक नहीं आने देना चाहता। जिस स्त्री से उसे अपनी वासना की तृप्ति मिलती है, उसे भी वह नीचे दर्जे की ही समझता है। क्षणिक तृप्ति में वह घर के सुखों और पत्नी के मृदुल प्रेम को भूल नहीं जाता। वास्तव में बाहर के भोग-विलासों से थका-हारा जब वह घर की प्रेम-गंगा में स्नान करता है, तो उसका मन घर की ओर फिर आकृष्ट हो जाता है। घर उसके लिए सदा तीर्थ-स्थान बना रहता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किंतु इस बीच पति पर संशय करके या पति की एकाध भूल को पहाड़ बनाकर, जो पत्नियाँ साक्षात् भगवती चंडिका बन जाती हैं, सदा के लिए घर की सुख-शांति का द्वार बंद कर देती हैं। घर का द्वार पति के लिए या पत्नी के लिए कभी बंद नहीं होना चाहिये। भूल पत्नी की हो या पति की, घर के दरवाजे उसके लिए खुले हैं। घर का मतलब ही यह है कि उस स्थान पर भले-बुरे की जाँच नहीं की जाती। माता की वात्सल्यमय गोदी की तरह घर का आँगन सबकी राह देखता है।

पत्नी को चाहिये कि वह बहुत शीघ्र अपने मन का संशय मिटा ले और इससे भी अच्छा है कि संदेह को स्थान ही न दे। इस संशयशीलता में हमारे संकीर्ण विचारों का आधार है कि पुरुष और नारी का कोई भी सम्बंध वासनारहित नहीं हो सकता। इन विचारों में पति-पत्नियाँ बहुत जल्दी अपना धीरज खो बैठते हैं।

अब समय आ गया है कि इस विष-भरे विचार को तिलांजलि दे दी जाये। सतीत्व की रक्षा के लिए उसे इस रेखा के—जिसे लक्ष्मणरेखा भी कह सकते हैं—भीतर ही रहना पड़ता है। हम इसे सतीत्व की रेखा कह सकते हैं। उसके अंदर केवल पति का ही प्रवेश है। पति जब चाहे उस रेखा को लाँघकर बाहर जा सकता है। यह रेखा स्त्री की आत्मा पर चाबुक के निशान की तरह गड़ जाती है। यह संताप ही अनेक बार पति के लिए संदेह बनकर उसके हृदय से निकलता है। जब तक इस रेखा के निशान नहीं मिटेंगे, संदेह दूर नहीं होगा।

स लोहे के पिंजड़े से बाहर आकर ही वह देख सकेगा कि पुरुष और नारी एक ही स्वच्छ प्रकाश में निर्मल भावनाओं के साथ एक साथ उड़ सकते हैं।

['जीवन साथी' के कुछ पृष्ठों में से]

★

प्रतिदिन आप यह निश्चय करके चलिये कि हम अपने काम पर डटे रहेंगे। हम किसी कठिनाई से चिढ़ेंगे नहीं। हमारी कोई महत्वाकांक्षा नहीं होगी। हमें कोई लाभ नहीं चाहिये। हमें किसी सुख की इच्छा नहीं है। हमें किसी बात की चिंता नहीं होगी। हम न अधीर होंगे, न पश्चात्ताप करेंगे।

—रस्किन

★

खराब-से-खराब स्थिति का सामना करने के लिए और ज्यादा-से-ज्यादा खो देने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिये।

—कार्लाइल

★

जिसके पास कुछ है और देना नहीं जानता, वह मर चुका है; और जो बिना किसी चिंता के देना जानता है, उसको भगवान् छप्पर फाड़कर देता है।

—जेम्स स्टीफन्स

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बिना गुठली के फल

'नवनीत' के गत अप्रैल-अंक में 'पौधों का कायाकल्प' शीर्षक लेख छापा गया था। उसमें आजकल वृक्षों और पौधों की वृद्धि के बारे में जो खोज की जा रही हैं, उसका संक्षिप्त विवरण था। इस सम्बंध में हमारे प्राचीन ग्रंथों में भी अनेक प्रयोग दिये गये हैं। 'शार्ङ्गधर पद्धति' के कुछ उद्धरण पाठकों की सेवा में प्रस्तुत हैं।

नरेंद्र नायक

'शार्ङ्गधर पद्धति' पुस्तक में एक प्रकरण 'वृक्षायुर्वेद' का है, जिसमें वृक्षों के रोग और उनका इलाज बताया गया है। अंत में 'विचित्रकरणम्' नामक प्रकरण है, उसके कुछ अंश नीचे दिये गये हैं :

वस्त्रिफला शफरी घृतलिप्तो धूपित आद्यफलत्रय धूपै :।
आम फलैरिह दाडिम शाखी, तालफलानि विडम्बयतीव ।। १ ।।

–त्रिफला और मछली की चर्बी से लिप्त और त्रिफला के ही धूप से धूप दिया गया अनार का पेड़ अपने कच्चे फलों से ही ताड़ के फलों को मात कर देता है।

सर्पिर्गुड क्षीर मधूपचारं दत्वा निषिक्तौ च कपित्थबिल्वौ।
पीयूष कल्पान्यतिमांसलानि फलान्यनस्थीनि सदा दधाते ।। २ ।।

–घी, दूध, गुड़ और शहद का उपचार करके सींचे गये कैथ और बिल्व के वृक्ष अमृत सरीखे गूदे से भरे हुए एवं बीजरहित फल धारण करते हैं।

तिलयष्टि मधूक मधुर्भिमिश्रित जलसेक तर्पिता बदरी।
कुणपैरुपचितमूला फलति फलं शर्करामधुरम् ।। ३ ।।

–तिल, जेठी मध (मुलहटी) और शहद से मिश्रित जल से सींची गयी और कुणप जल से वर्धित बेरी के शक्कर सरीखे मधुर फल लगते हैं।

अजैडकासूकर विड्विडंग किण्वोपचारेण च बीजपूरः।
भूयोऽश्वमूत्राविलवारिसिक्तः फलानि धत्ते सुबहूनि शश्वत् ।। ४ ।।

–बकरी, भेड़, सूअर की विष्ठा, विडंग और किण्व का उपचार किया हुआ एवं घोड़े के मूत्रवाले पानी से सींचा गया बिजौरे का वृक्ष हमेशा अनेक फल धारण करता है।

यस्य कस्यापि वृक्षस्य सौरभेणाधिवासितान्।
मृत्तिका शकलान् मूले वृक्षाणां बहलान् क्षिपेत् ।। ५ ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुष्ठपत्र सुरामुस्ता तगरोशीर चूर्णकैः ।
मिश्रितेनाम्भसा सेकान्मासं सौरभसम्भव : ।। ६ ।।

–किसी भी फूल की सुगंध से सुवासित मिट्टी के टुकड़ों को पेड़ की जड़ में डालें। फिर कुष्ठ के पत्ते; सुरा, मुस्ता, तगर और खसखस के चूर्ण से मिश्रित पानी के सिंचन से एक महीने में सुगंध आ जाती है।

कुल्माषदन्तिदन्तानां चूर्णयुक् पंकसंभवा ।
प्रत्यहं पुष्पिताम्भोजमण्डिता पद्मिनी भवेत् ।। ७ ।।

–कुल्माष और हाथी दाँत के चूरे के मिश्रण से युक्त कमलिनी रोज फूल देती है।

धूपो घृतस्य समृदो यववारिसेको नित्यं च दुग्धसलिलैः कुणपाम्बुभिर्वा ।
लेपो विडंगतिलकल्क कृतः शिशूनां वृद्धिं करोति परमां खलुभूरुहाणाम् ।। ८ ।।

–घी का धूप, मिट्टी के साथ जौ के पानी का सिंचन, हमेशा दूध के पानी अथवा कुणप जल का सिंचन, विडंग और तिल का चूरा छोटे पौधों की अत्यधिक वृद्धि करता है।

सुरभिसुमनोलब्धामोदां निधाय च मृत्तिकां
धवखदिरयोः क्वाथाम्भोभिः सुगन्धिभिरुक्षणात् ।
मलयजरजो लेपाद् धूपाद् घृतस्य च भूरुहां
व्रजति कुसुमं निर्गन्धानामतीव सुगन्धताम् ।। ९ ।।

–सुगंधित फूलों की सुगंध से सुवासित मिट्टी लेकर धव और खैर के क्वाथ के सुगंधित पानी के सिंचन से चंदन के चूरे के लेप से और घृत के धूप से निर्गंध पेड़ों के भी फूल सुगंधित हो जाते हैं।

यवतिलनिशापलाशैरुपचितमूला तदम्बुसिक्ता च ।
ज्वलदनलोपममसकृत् कार्पासी तूलकं धत्ते ।। १० ।।

–जौ, तिल, हल्दी और ढाक द्वारा वर्धित और उन्हीं के पानी से सींचा गया कपास का पौधा जलते अंगारे के समान लाल कपास बार-बार धारण करता है।

शाल्मली त्वग्निशा नीली त्रिफलाकुष्ठसीधुभिः ।
सकृल्लेपोपचारेण शुकपक्षनिभं भवेत् ।। ११ ।।

–सेमर की छाल, हल्दी, नील, त्रिफला, कुष्ठ और सीधु द्वारा एक बार ही उपचार करने से कपास तोते के पंख जैसा हरा हो जाता है।

मंजिष्ठा तिलयव पीतसारसारैः जीवन्ती दलसहितैः मनः शिलाजैः ।
गोजाविप्रचुरपयः भृतैर्विलिप्ता कार्पासी प्रसवति तूलकं खनीलम् ।। १२ ।।

–मजीठ, तिल, जव और पीतसार (एंटिमनी) के चूर्ण, जीवंती के पत्तों के साथ मनसिल,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गाय, बकरी और भेड़ के पुष्कल दूध से सींचा गया कपास का पौधा आकाश के समान नीला कपास धारण करता है ।

संपक्वेक्षुरस विदारिकन्द विलिप्त मूल भागस्य ।
तिक्तस्येक्षुरसेन च तरोरकाले भवेत् कुसुमम् ।। १३ ।।

–पके गन्ने के रस और विदारी कंद से लीपे गये मूलवाले एवं ईख के रस से सींचे गये पेड़ पर अकाल में ही फूल खिलते हैं ।

तिलखलिविडंग गोमयविलोडितेक्षुरससेचितस्य तरोः ।
फल कुसुममकाल भवं मनोहरं फलति लोकस्य ।। १४ ।।

–तिल की खली, विडंग और गोबर को ईख के रस में मिलाकर सींचे गये पेड़ के फूल और फल अकाल में पैदा हो जाते हैं ।

मधु यष्टि सिताकुष्ठ मधु पुष्प विनिर्मितैः ।
मोदकैश्छादिते मूले तिरस्थि स्यात् फलं तरोः ।। १५ ।।

–मुलहटी, मिसरी, कुष्ठ और मधुपुष्प के बनाये गये लड्डुओं से पेड़ की जड़ को ढक देने से पेड़ का फल बीजरहित हो जाता है ।

मधुककुसुम गुंजा शर्करोदुम्बराज्यं समधुनिहितमन्तः काण्डमुत्कीर्य बद्धवा ।
उपरि च परिलिप्तं वत्सविड्भिस्तरूणां जनयति फलमेतत् स्वादु सेकादनस्थि ।। १६ ।।

–महुए के फूल, रत्ती, शक्कर, गूलर, घी और शहद पेड़ के तने को चीरकर उसके अंदर डालकर ऊपर से बछड़े के गोबर से बाँध देने पर फल मधुर होता है और इसी के सिंचन से बीज रहित हो जाता है ।

खरतुरगविण्निवेशित तापितया शलाकया मूले ।
तिर्यग्विद्धा कदली फलति फलं करिकराकारम् ।। १७ ।।

–गधे और घोड़े की लीद में डालकर गरम की गयी सलाख द्वारा तिरछे बींधे गये केले के पेड़ में हाथी की सूंड के समान लम्बे फल लगते हैं ।

★

एक बार राजेंद्र बाबू ने देखा कि उनकी पुस्तक के पन्ने फटे हुए हैं । समझ गये बच्चों का काम था । मगर अपराधी बनाकर उनसे सच्ची बात कहलवाना कठिन था । फिर भी सच्चाई जानकर बच्चों को सबक देना चाहते थे । वही उपाय सोचते रहे । आखिर सूझ गया । हँसते हुए बच्चों से बोले–"जिसने इस पुस्तक के जितने पन्ने फाड़े हैं, उतने पैसे उसे दिये जायेंगे ।" सबने खुशी-खुशी बढ़-चढ़कर बताया । सचाई सामने आ गयी । पैसे दे दिये गये, मगर सबक भी दे दिया कि यह काम ठीक नहीं ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ये अमर जंतु

पाषाण-तल पर अंकित कुछ कला-कृतियों का परिचय

लंदन के ब्रिटिश म्यूजियम में प्रति वर्ष कला-प्रदर्शनी होती है। १९६० की प्रदर्शनी में 'एलजिन मार्बल्स' की बड़ी चर्चा रही। किंतु इसके साथ-साथ पाषाण-तल पर अंकित असीरिया के सम्राट असुर वाणीपाल (७ वीं शती) के वीरता सम्बंधी चित्र भी कम महत्वपूर्ण सिद्ध नहीं हुए। ये चित्र अनायास ही उस साम्राज्य की स्मृति पुनर्जीवित कर देते हैं, जो एक समय दक्षिण में मिस्र तक तथा उत्तर में एशिया द्वीप तक विस्तृत था।

असुर वाणीपाल के साम्राज्य में कुछ अनाम कलाकारों का कार्य उनकी वीरता, ओज एवं साहस का चित्रांकन करना था। इन अनाम कलाकारों के अनुसार वह बहुत भयानक और निडर था। उसकी प्रतिहिंसा बहुत बढ़ी-चढ़ी थी। वह तड़पते हुए घायल शत्रुओं के प्राणांत तक उपस्थित रहता था। किंतु उसके वैभव का यह उत्कर्ष शीघ्र ही समाप्त हो गया। अपने जीवन के अंतिम दिनों में उसे भयानक बीमारी का सामना करना पड़ा, जिसने उसकी स्थिति को काफी दयनीय बना दिया।

पाषाण-तल पर अंकित प्रस्तुत चित्र उसकी समृद्धि-काल के चित्र हैं। असीरियन लोगों के लिए आखेट भी एक कला है। क्रीड़ा-प्रांगण में राजा के लोग किसी पूर्व-बद्ध शेर को मुक्त करते थे और राजा उसे तीरों की बौछारों से बेध देता था। यह बड़ी पाशविक क्रीड़ा होती थी और जब पीड़ा से आहत शेर आखिरी बार चिंघाड़ मारता, तो राजा उसके शरीर में अपना अस्त्र भोंक देता था।

पाषाण-तल पर अंकित यह कला ग्रीक-कला की भाँति उत्कृष्ट एवं मुग्धकारी नहीं कही जा सकती। इसके विपरीत यह

पीड़ा से आहत शेर ने जब चिंघाड़ मारी, तो राजा ने उसके शरीर में अपनी तलवार भोंक दी।

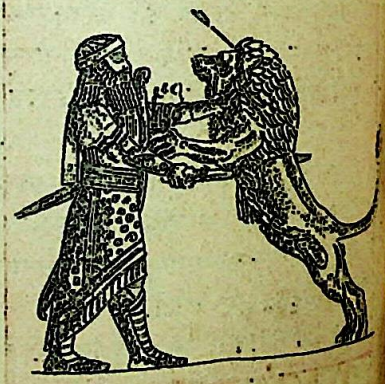

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने रेगिस्तानी एवं अंधकारपूर्ण जीवन की भाँति दुरूह और भीषण भी है। किंतु वे सिंह, जिन्हें इन कलाकारों ने अंकित किया है, बहुधा राजा की अपेक्षा अधिक सजीव प्रतीत होते हैं। वे चिंघाड़ मारते हैं, आगे की ओर कुदान लेते हैं और

पाषाण-तल पर अंकित एक अन्य शिकार-प्रसंग

कभी-कभी उनकी भाव-चेष्टा ओं में उनके अहेरी राजा की अपेक्षा अधिक मानवता प्रतिलक्षित होती है। यह सत्य है कि हमेशा सिंह की ही मृत्यु होती है; किंतु इसी में उसकी विजय का भाव भी निहित हुआ प्रतीत होता है।

★

देहरादून की बात है। मैं एक मुसलमान हलवाई की दूकान पर गया और दो आने की मिठाई माँगी। हलवाई पाँच मिनिट मुझे सिर से पाँव तक देखता रहा, फिर बोला—"मैं मुसलमान हूँ।" मैंने कहा—"आप मुसलमान हैं तो क्या हुआ, आप साँप तो नहीं हैं?" वह बोला—"नहीं, साँप तो नहीं।" मैंने कहा—"तो फिर मिठाई दीजिये।" वह बोला—"यह है।" मैंने कहा—"हाँ यही बात है।" इस पर उसने अपने नौकर को वापस बुला लिया और कहा कि तू बैठ जा, मैं आप ही देता हूँ। तब वह उठा और कोई सेर-भर मिठाई लाकर मुझे देने लगा। मैंने कहा—"इतनी नहीं चाहिये, केवल दो आने की दीजिये।" वह बोला—"अजी पैसे की बात रहने दीजिये, आप मिठाई खाइये।" मैंने उसकी कृपा के लिए उसका धन्यवाद किया। वह बोला—"इस विचार के क्या आप ही अकेले हिन्दु हैं या और भी कोई हैं?" मैंने कहा—"और भी सैकड़ों हैं," तब वह बोला कि यदि सब हिन्दू आपकी बात मान लें, तो फिर हिन्दू-मुसलमान का सारा झगड़ा ही समाप्त हो जाये। —संतराम बी० ए०

★

"पत्नी से झगड़ा हो जाने से उसने तीन दिन तक न बोलने की कसम खा ली थी।"

"तो इसमें चिंतित होने की क्या बात है?"

"आज ही तीसरा दिन है, भाई साहब!"

★

"वह कितने विश्वास और प्रवाह से बोलता है?"

"किसी को अपने विषय के बारे में कुछ मालूम न हो, तो वह विश्वास और प्रवाह से बोलेगा ही।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संजीवनी या कालकूट

रामबाण दवाओं' का बढ़ता हुआ प्रचार लोगों के लिए कितना घातक है, यह किसी से छिपा नहीं है।

सम्पत ठाकुर

कोई भी अखबार उठा लीजिये—दैनिक हो, साप्ताहिक हो या मासिक। एक चौथाई अखबार विज्ञापनों से भरा होगा; और विज्ञापनों में भी अधिकांश आपके जीवन को दीर्घ, यौवन से भरपूर, सांघातिक बीमारियों से चंद बूंदों से ही मुक्त कर देनेवाली औषधियों का गुणगान करते हुए मिलेंगे।

तब, चाहे आप वजन बढ़ाने के इच्छुक हों या घटाने के; स्नायुविक दुर्बलताओं से मुक्ति पाना चाहते हों या मस्तिष्क की कमजोरियों के शिकार हों; साधारण जुकाम से परेशान हों या अस्थमा से पीड़ित हों, 'अचूक रामबाण' जैसे विशेषणों से विज्ञापित दवाओं से सावधान हो जाइये। ये दवाबाज आपकी एक दुर्बलता का लाभ उठाना चाहते हैं—बीमारी से तुरंत मुक्ति! चाहे हम कितनी ही इच्छा और चेष्टा क्यों न करें, हमारी बीमारी देह-प्रणाली को फिर से स्वस्थ होने के लिए विशेष-विशेष औषधियों, मात्रा और समय की आवश्यकता होगी ही। यदि इन पर कोई ध्यान न देकर, कोई दवाबाज आप से प्रतिज्ञाएँ करता है, तो निश्चय ही उसका मूल उद्देश्य आपकी जेब खाली करना ही है।

आश्चर्य है कि अच्छे खासे पढ़े-लिखे इन्सान भी इन नकली धन्वंतरियों के चक्कर में कैसे फँस जाते हैं! वस्तुतः हुआ यह है कि ऐलोपैथिक चिकित्सा-प्रणाली की आश्चर्यजनक सफलता के कारण इन औषधियों की माँग सीमातीत रूप से बढ़ गयी है। न जाने कितनी फार्म-स्यूटिकल कम्पनियाँ खुल गयी हैं और शुद्ध व असरकारक दवायें बनाकर उन्होंने लोगों का विश्वास प्राप्त कर लिया है। नतीजा यह हुआ है कि जब भी हम डाक्टर की सलाह के अनुसार या तो कोई पेटेंट या फिर 'प्रिसक्रिप्शन' के अनुसार बनायी हुई दवा खरीदते हैं, एक क्षण भी यह संदेह नहीं कर पाते कि यह दवा मात्र अत्यंत सस्ते रसायनों का घोल या चूर्ण है और यदि दवा में एस्प्रीन की तरह क्षणिक उत्तेजक पदार्थ हुए, तो जो क्षणस्थायी असर पड़ जाता है, उसके कारण लोगों के भ्रम में चौगुनी वृद्धि हो जाती है।

सबसे बड़े दुर्भाग्य की बात तो यह है कि असली और नकली दवाओं की पहचान का कोई आसान तरीका है भी नहीं!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आप यह नहीं जान सकते कि जो लेबिल आपकी दवा की शीशी पर लगा है, वह असली भी है या नहीं। आये दिन समाचार मिलते रहते हैं कि लाखों की कीमत के टनों लेबिल, शीशियाँ और नकली माल पुलिस ने पकड़ा। किंतु वर्षों तक जनता को ठग लेने के बाद यदि एक दल पकड़ भी लिया गया, तो क्या हुआ ? तब तक दस-बीस दूसरे दल मैदान में आ जायेंगे और विज्ञापनों की आकर्षक नागफाँस में जनता को बाँधने लगेंगे।

इस धोखेबाजी से आपकी रक्षा अगर कोई कर सकता है, तो सिर्फ आपकी सजगता और सावधानी। एक सामान्य नियम तो यह बना लेना आवश्यक है कि विज्ञापन के आधार पर ही आप कोई दवा न खरीद लें। सबसे अधिक आवश्यक है खरीदने का निश्चय करने के पहले दवा के सम्बंध में किसी विश्वस्त और अधिकृत चिकित्सक की राय।

विज्ञापनों का मायाजाल बहुत लुभावना होता है। बीमारी कोई भी हो, विज्ञापनबाज अपनी दवा से तुरंत लाभ की गारंटी देता है। दो-एक उदाहरण देखिये, जो मनोरंजक तो हैं ही, साथ ही बड़े ज्ञानवर्धक भी हैं।

आजकल "ट्रैंक्विलाइजर" का बाजार बहुत गर्म है। करीब पिछले पाँच वर्षों से मानसिक दुर्बलताओं की चिकित्सा के लिए मनोवैज्ञानिक साधनों के सहायतार्थ विभिन्न प्रकार के ट्रैंक्विलाइजरों का उपयोग हो रहा है। इनमें से क्लोरप्रोमेजीन, रेसरपाइन और मेप्रोबामेट तो विश्वप्रसिद्ध ट्रैंक्विलाइजर्स हैं। इनकी लोकप्रियता का अंदाजा आप सिर्फ इस तथ्य से लगा सकते हैं कि दवाओं के देश अमरीका में अब साल-भर में जितने नुस्खे लिखे जाते हैं, उनमें से कोई ४० प्रतिशत सिर्फ ट्रैंक्विलाजर्स के होते हैं और कोई १५,००० लाख रुपयों की ट्रैंक्विलाइजर्स बाजार में हर साल बिक जाती हैं।

आम तौर पर ट्रैंक्विलाइजर के निर्माताओं को औषध में जिन-जिन पदार्थों का मेल किया गया है, ठीक-ठीक अनुपात के साथ, शीशी और कागज के डिब्बे के ऊपर उनका हवाला देना पड़ता है। लोगों को यह तथ्य ज्ञात नहीं है, अतः नकली निर्माता, उनके अज्ञान का पूरा लाभ उठाकर कुछ ऐसा विज्ञापन प्रकाशित करवाते हैं :

"औषधि जगत् में बिलकुल नया आविष्कार ! डाक्टर की सलाह के बिना आप निस्संकोच इस आश्चर्यजनक औषधि को खरीदकर, दिमाग के तमाम रोगों से मुक्त हो सकते हैं। इसमें जिन औषधियों का मिश्रण किया गया है, दुनिया के सभी आधुनिक चिकित्साशास्त्री उनका समर्थन करते हैं.....मात्रा से अधिक इसका सेवन न करें। दवा शक्तिशाली है, अतः किडनी के रोगियों, बच्चों और मधुमेह के रोगियों के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लिए वर्जित है....."

लीजिये, अब कौन भला आदमी विज्ञापन पर संदेह कर सकता है ! इसमें तो वर्जित व्यक्तियों को सावधान करने तक की ईमानदारी बरती गयी है । जी हाँ, चंद लोगों के लिए वर्जित करने का ढोंग करके शेष जनता को लूटने का यह बड़ा बढ़िया तरीका है । इसके अलावा ऐसे वर्जन के आधार पर कानून को भी तो धोखा दिया जा सकता है । तब, यदि आप या आपके कोई कुटुम्बी मस्तिष्कीय दुर्बलता, उन्माद, मूर्च्छा आदि के शिकार हैं, तो सीधे विश्वस्त और उचित चिकित्साशास्त्री की राय लीजिये, ठगे जाने की सम्भावना कम-से-कम अस्सी प्रतिशत तो कम हो ही जायेगी ।

ट्रैंक्विलाइजरों की अपेक्षा भी कहीं भारी तादाद है टॉनिकों की । हर टॉनिक के विज्ञापन में अनुभव प्राप्त व्यक्तियों की सिफारिशें, मय उनके नाम और पते लिखी रहती हैं; और ये सिफारिशें हमेशा झूठी भी नहीं होतीं, किंतु इस बात को कोई दावे से नहीं कह सकता कि सिफारिश करनेवाले को नयी शक्ति उसके प्रिय टॉनिक के सेवन से मिली है या यह केवल उसका खयाल मात्र है । होता दरअसल यह है कि टॉनिकों का सेवन करनेवाले अधिकांश लोग काल्पनिक रोगी होते हैं। औद्योगिक और कृत्रिम जीवन, संतुलित भोजन की आम कमी, अनियमितता, और सबसे अधिक-आयु की वृद्धि-आदि के कारण शक्ति में कमी अनुभव होती है । किंतु जीवन सदा असामान्य भी तो नहीं रहता, अतः सामान्य परिस्थितियाँ उत्पन्न होते ही अपने आप अपेक्षाकृत अधिक शक्ति उत्पन्न होने लगती है । इसी बीच यदि किसी विज्ञापित टॉनिक का सेवन कर लिया गया, तो फिर सारा श्रेय उसे ही दे दिया जाता है। अब थोड़े दिनों बाद फिर कमजोरी महसूस हुई, तो पहले तो उसी प्रिय टॉनिक का अधिक मात्रा में सेवन किया जाता है; और कोई लाभ न होने पर फिर नये टॉनिक की खोज का सिलसिला आरम्भ हो जाता है ।

कर्म-भूमि

लहरें बड़ी जल्दी में हैं
उन्हें तटों का विस्तार नापना है,
हवा बड़ी जल्दी में है
उसे अवकाश की गहराई थाहना है ।

किरनें बड़ी जल्दी में हैं
उन्हें अग-जग का अंधकार धोना है,
बुद्बुद् बड़ी जल्दी में हैं
उन्हें जीवन के सत्य को पिरोना है ।

यह कर्मभूमि है
सभी लक्ष्य-बेध करने को उद्यत हैं,
यह एक अभियान है
गंतव्य के लिए सभी प्रस्तुत हैं ।

— रमा सिंह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कमजोरी दूर करने का सीधा-सच्चा उपाय यही है कि आप जीवन में अपेक्षाकृत नियमितता लायें और भोजन में सुपाच्य, पौष्टिक खाद्यों का समावेश कर दें। हाँ, यदि कमजोरी का कारण कोई अन्य बीमारी हो, तो उसका किसी योग्य विशेषज्ञ द्वारा इलाज करायें। स्मरण रखने की बात यह है कि कमजोरी अपने आप में कोई रोग नहीं है, वह लक्षण मात्र है।

इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि आप सतर्क और सावधान हो जायें, ताकि इन कालकूटों के शिकार न स्वयं हों और न अपने पड़ोसियों को होने दें। तभी, और केवल तभी इन नक्काल दवाबाजों की सरगर्मियाँ समाप्त होंगी।

★

पत्नी द्वारा खरीदी गयी सामग्रियों के बोझ से लदा हुआ पति स्टेशन पर खड़ा बड़ी निराश दृष्टि से पाँच सेकेंड पहले छूट गयी ट्रेन को जाती हुई देख रहा था। फिर पत्नी की ओर घूमते हुए बोला—"अगर तुम रास्ते में इतनी देर नहीं लगा दे ..., तो हमें ट्रेन निश्चय ही मिल जाती।"

और पत्नी ने तपाक से उत्तर दिया—"और, अगर तुम मुझे जल्दी-जल्दी चलने के लिए तंग न किये होते, तो हमें दूसरी ट्रेन के लिए घंटे-भर बैठना नहीं पड़ता।"

★

"वेटर, यह किस चीज का सूप है?"

"चखने पर भी आपको पता नहीं लगा?"

"नहीं।"

"तब, पूछना ही क्यों? किसी का भी हो।"

★

प्रसिद्ध साहित्यकार जार्ज बर्नार्ड शा को बिल काफ़ी आते थे। उन्हें बार-बार चेक पर हस्ताक्षर करना पड़ता।

एक बार उनकी पर्सनल असिस्टेंट ब्लैन्च पैच ने सुझाव दिया—"सर, चेक-बुक के सभी सादे चेकों पर एक ही बार हस्ताक्षर क्यों नहीं कर देते? बार-बार आपको तकलीफ होती है। जब जितने के बिल का पेमेंट करना होगा, मैं रकम भरकर काट दूँगी।

शा ने हँसते हुए कहा—"दिवालिया बनाने का इरादा है क्या? अगर कहीं हम और आप साथ ही चल बसे, तो जिसके हाथ हस्ताक्षर किये सादे चेक पड़ जायेंगे, वह बैंक से सारी रकम न उड़ा ले जायेगा। बार-बार की तकलीफ ही ठीक है।" —माधुरी, पटना।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरे फलदाता

वयोवृद्ध लेखक के जीवन से सम्बंधित एक सरस व्यक्ति का रेखाचित्र

डा० गुलाबराय

उर्दू की एक कहावत के अनुसार कि 'गिरते हैं शहसवार ही मैदाने जंग में; वह तिफ्ल क्या गिरेंगे जो घुटनों के बल चलें' मैं डबल शहसवारों में से हूँ। यों भी मैं घोड़े पर से दो बार गिर चुका हूँ और अलंकारिक रूप से भी जीवन की घुड़दौड़ में एक-दो बार नहीं, कई बार गिर चुका हूँ। मैं फेल होकर ही पास हुआ हूँ। लेकिन मेरे जीवन में वास्तविक सफलताएँ भी हैं और उनका अधिकांश श्रेय श्री राघेलालजी कुम्भकार को है। उन्होंने ही श्रीमद्भगवद्गीता की 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' की निष्काममयी अमर एवं दिव्य शिक्षा का अतिक्रमण करने में सफल बनाया है। श्री राघेलालजी मेरे अन्नदाता तो नहीं हैं; क्योंकि अन्नदाता तो अलंकारिक रूप से मेरे प्रकाशक ही हैं। हाँ ये राघेलालजी मेरे फलदाता हैं, वे कर्मों के फल से अधिक मधुर और वांछनीय फल देते हैं।

कुम्भकार सृजन का प्रतीक है। उसका चक्र भी काल-चक्र की भाँति चलता ही रहता है और पात्रों की सृष्टि करता रहता है। उसके पात्रों को स्वर्ण और सती-साध्वी सीता की भाँति अग्नि-परीक्षा में उत्तीर्ण होना पड़ता है। कुम्भकार को प्रजापति भी कहते हैं। किंतु त्रिदेवों में गिनती होते हुए भी वे उपेक्षित हैं। ब्रह्मा का कोई मंदिर नहीं, शायद एकमात्र मंदिर अजमेर शरीफ में है। लेकिन वे लेखकों की उपास्या माँ शारदा के भी उपास्य हैं। इसीलिए लेखक के नाते मैंने अपने जीवन को सफल बनाने के लिए एक कुम्भकार को अपनाया है और अपनाकर छोड़ा नहीं है, 'अंगीकृतं सुकृतिनः परिपालयंति'। शिवजी ने तो विष को भी नहीं त्यागा था, तब मैं अमृतोपम फल देनेवाले राघेलालजी को किस प्रकार त्याग सकता हूँ।

श्री राघेलालजी लम्बे-तड़ंगे फौजी नौजवान हैं। उनके परिधान में कोई विशेषता नहीं है, सिवाय इसके कि साहित्यिकों की भाँति उनके गले में बटन होते हुए भी वे 'अजागल स्तनवत्' निरर्थक रहते हैं और चर्म-रहित शुद्ध अहिंसात्मक जूते धारण करते हैं। उनके कानों के कुंडल, नहीं तो 'मुरकी' उनको संस्कार-प्रिय आर्यसमाजियों की प्रशंसा के पात्र बनाते हुए हैं। वे स्वयं भी उसे अपने माता-पिता की रुचिविशेष और घर की सम्पन्नता की द्योतक बताते हैं। उनको फौजी परेड की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शब्दावली अभ्यस्त है और ऊँची आवाज में अपना विज्ञापन करते हैं। प्रथम महा-युद्ध में कम्युनिस्टों के तीर्थ-स्थान रूस में फौजी सिपाहों के रूप में हो आये हैं। वहाँ के फलबगानों का उल्लेख करते हुए आज भी उनके मुँह में पानी आ जाता है। फौज से उनको १० रुपये मासिक पेन्शन मिलती है; किंतु जीवन-यापन के लिए यह पर्याप्त नहीं, इसलिए उन्हें दूसरे मार्ग भी खोजने पड़ते हैं।

उनकी मूल वृत्ति तो कुम्भकार-वृत्ति ही है, जिसको वे घर बैठकर करते हैं। और फल-विक्रेता की वृत्ति चल-फिर कर करते हैं। दिन के पूर्वार्द्ध में फल-वृत्ति करते हैं और उसमें उनका स्वार्थ और परमार्थ दोनों सध जाता है। फल बेचने में स्वार्थ-सिद्धि का ध्येय तो मुख्य है ही; और उसको स्वीकार करने में वे लज्जित भी नहीं होते; किंतु फल वे इसलिए बेचते हैं कि लोगों के लिए फल खाना हितकर है। लाम पर से लौटने के पश्चात् वे तेल के सेव बेचा करते थे। एक दिन उनको एक अवकाश-प्राप्त न्यायाधीश मिल गये। उन्होंने कहा—"यह क्या बीमारी की जड़ बेचते हो।" राघेजी ने पूछा कि "फिर क्या बेचा करें?" उत्तर मिला—"फल बेचा करो, जिसे खाकर लोग हृष्ट-पुष्ट हों।" और तभी से राघेजी ने फल बेचने की दीक्षा ग्रहण कर ली।

इस समय वे मेरी तरह और मुझसे आगे ही सत्तर और पचहत्तर के बीच की अवस्था में हैं। उनका पुरुषार्थ स्पृहणीय है। वे कम-से-कम बीस सेर बोझ अपनी टोकरी में लाते हैं और उसे लादे हुए छ : या सात मील का चक्कर लगा लेते हैं। वे निरीह (सच्चे अर्थ में) और निर्द्वंद्व हैं। उनकी कोई समस्या नहीं। फल बेचने में वे राष्ट्र-निर्माण का काम करते हैं। थोड़ा बहुत "अधिक फल खाओ" का प्रचार भी कर देते हैं।

फलों की मिठास और उनकी सरसता के बारे में वे कुछ आप्त प्रमाण भी उपस्थित करते हैं। यदि उससे भी आपका संतोष न हो, तो वे प्रत्यक्ष प्रमाण की शरण लेते हैं। "प्रत्यक्षं किं प्रमाणम्' की उक्ति देने का पांडित्य तो उनमें नहीं है; किंतु उसका भाषापर्याय "हाथ कंगन को आरसी क्या" उनके अधर-पुटों पर ईषत हास्य के साथ आ ही जाता है। फिर वे नीति और न्याय की दुहाई देने लगते हैं—"सरकार, आपका पैसा जाता है; कुछ मुफ्त में थोड़े ही लेते हैं। अच्छी तरह देख लें, एक-दो फाक में मेरा कुछ नहीं बिगड़ता। मुझे बेइमानी का पैसा नहीं चाहिये। उमर-भर सरकार की रोटी खायी है।" मैं यह कहना चाहता हूँ कि रोज की खाई हुई चीज क्या खाऊँ—उनका स्वाद उनकी शक्ल में ही है। किंतु उनके जोरदार भाषण के आगे मेरे सारे तर्क कुंठित हो जाते। एक बिना सरकारी अफसरी के सरकार और हुजूर की पदवी से विभूषित हो जाता हूँ और कुछ जिह्वा का प्रलोभन! अतः सहज में ही फल की फाक लेने को हाथ उठ जाता है और वह जब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तक बिलकुल ही खट्टा या नीरस नहीं होता, तब तक लेना ही पड़ता है। ऐसा कोई दिन होगा, जब वे असफल लौटते हैं; किंतु विजयोल्लास उनकी मुख-मुद्रा पर नहीं आने पाता—वे धीर-गम्भीर बने रहते हैं।

वे अपनी चीज की प्रशंसा करना जानते हैं, केलों के मोटे होने के सम्बंध में वे कहेंगे—"सोट-की-सोट, बल्ली-की-बल्ली।" संतरों और मुसम्मियों की सिफारिस में वे कहते कि पतले छिलके के हैं, रस चूता है, लो काट-कर दिखा दूं। यदि उनके पास मुसम्मियाँ हुईं, तो मुसम्मियों के गुणगान करेंगे और संतरे हुए, तो उसकी पुष्टिकारिता की प्रशंसा करेंगे। 'गंगा गये गंगादास, जमुना गये, जमुनादास'। यदि संतरे छोटे और हरे हुए, तो कह दिया कि "अजी बड़े संतरे तो देखने के ही अच्छे होते हैं, उनके भीतर फाँकें सूखी होती हैं। वे पोले होते हैं—उनमें छिलके के सिवा कुछ नहीं होता।" और यदि संतरे लाल और बड़े हुए, तो कह देंगे छोटे जरा तुरस थे, ये मीठे तो हैं। वदतो व्याघात और असंगति उनके लिए दोष की कोटि में नहीं आते। अमरूद उनके सब इलाहाबादी होते हैं और प्रायः सभी तोते की चोंच का प्रमाण-पत्र पाये होते हैं। कुछ पिचके-पिचकाये होते हैं। उनके लिए रेल की दुर्व्यवस्था दोषी ठहरायी जाती है। भाव के सम्बंध में वे आवाज कुछ धीमी करके कहते हैं—"किसी से कहियेगा नहीं, अमुक बाबूजी को तो चौदह आने सेर दे आया हूँ—आपको बारह आने सेर दूंगा।" हर साल वे मुझे कमती मूल्य पर देते हैं; किंतु बात यह है कि उन फलों का वास्तविक मूल्य वही होता है, जिस पर वे मुझे देते हैं। रोज यही व्यापार चलता है; किंतु हर रोज कुछ नवीनता रहती है। उनका माल खूब बिकता है— कुछ बातों के बल; और कुछ सस्तेपन के कारण।

डा० गुलाबराय

वे झूठ अवश्य बोलते हैं; किंतु इतना ही जितना लेखक लोग। मैं रोज थोड़ा बेवकूफ बन जाता हूँ; लेकिन मैं 'बतरस लालच लाल' के कारण बेवकूफ बनना पसंद करता हूँ। फल मेरे जीवन की आवश्यकताओं में से हैं। फिर राधेलालजी की बातें मेरे विनोद का कारण भी बनती हैं। आवश्यकता की पूर्ति के साथ यदि विनोद भी हो जाये, तो क्या महँगा है?

★

हम अपनी पूरी जिंदगी अपनी ही गलतियों से सीखते रहते हैं। —शेली

मूर्ख वहाँ धक्कमधक्की करते हैं, जहाँ फरिश्ते पर भी नहीं मारते। —पोप

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उजली रेखाएँ

हमारे आस-पास केवल असत् संस्कारों का अंधेरा-ही-अंधेरा छाया हुआ हो, सो बात नहीं। ढूँढने का प्रयत्न करें, तो उस तमस में भी हमें प्रकाश की 'उजली रेखाएँ' मिल सकती हैं। 'नवनीत' इस नये स्तम्भ के लिए अपने प्रेमी पाठकों से ऐसे सरल-संक्षिप्त प्रसंग आमंत्रित करता है, जो जीवन के उज्वल पक्ष के परिचायक हों।

मेरे एक मुसलमान दोस्त के बहनोई एक पुरानी मस्जिद की मरम्मत करवा रहे थे। सुबह का समय था। मजदूर काम पर आये नहीं थे। ईंटों का एक ट्रक खाली करवाना जरूरी था, क्योंकि ट्रकवाला जल्दी मचा रहा था। एक समस्या खड़ी हो गयी। आस-पास के लोगों को सहायता के लिए बुलाया गया। कुछ लोग आये भी। काम समाप्त हुआ, तब सोचा गया कि प्रत्येक से अलग-अलग पूछ लिया जाये कि उनको कितनी मजदूरी चाहिये। सबसे पहले एक कमजोर व्यक्ति से पूछा गया—"क्यों साहब, आपकी खिदमत में क्या पेश किया जाये?" पहले तो वह आदमी कुछ झिझका, फिर बड़ी बेपरवाही से बोला—"साहब, लेना-देना क्या है, यह तो मस्जिद का काम है इसमें मजदूरी कैसी?" जब बहुत अनुरोध किया गया, तो उसने जवाब दिया—"देखिये साहब, सामने वह मंदिर दिखाई पड़ रहा है न! जब यह बना था, तो भी मैंने अपनी ताकत के मुताबिक काम किया था; और यह मस्जिद है। कहते हैं कि दोनों भगवान के घर हैं।" और यह कहकर वह चल दिया। देखने और सुननेवालों के सिर एकबारगी श्रद्धा से झुक गये उस नवजवान में सम्मान में! —जगदीशचंद्र बत्रा

जून की १० तारीख थी। करीब ९ बजे थे, जब मेरे पास मेरे आचार्य आकर स्नेह से बोले—"अब तुम विदेश जा रहे हो, मेरी समस्त शुभकामनाएँ तुम्हारे साथ हैं। और ये हैं तुम्हारे पैसे, जो हिसाब से मुझ पर निकलते हैं।" मैं शेतकी विभाग में प्रशिक्षण पाता था और उत्तरप्रदेश सरकार प्रति मास मेरी छात्रवृत्ति का धन एक क्रास चेक द्वारा भेजती थी। डा० प्रकाशचंद्र रहेजा भारतीय कृषि अनुसंधानशाला के एक उच्च अधिकारी एवं प्राध्यापक थे। वे प्रति मास वह चेक अपने एकाउंट में जमा कर लेते थे और मुझे मेरी आवश्यकता अनुसार जितने पैसे माँगता था, दे देते थे। वहाँ मैं चार वर्ष तक रहा। और आज वे मेरे हिसाब के बाकी दस आने मुझे देने आये थे। इतने निःस्वार्थ सहायक आज हमारे देश में शायद अँगुली पर गिनने योग्य ही हों।

—डा० दयाकृष्ण मिश्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उर्दू-हास्य:

फिर वही कै वही

गुलाम अब्बास

छज्जू:

बाप का नाम काफी छानबीन के बावजूद मालूम न हो सका। गाँव में कबाबी की दूकान करते थे।

शेख मसीता:

छज्जू के बेटे। शहर में पहले सिगरेट की दूकान थी, फिर अत्तारी करने लगे।

हकीम उमरदराज:

शेख मसीता के बेटे अनपढ़ थे; मगर सारी उम्र हिकमत करते रहे। बला के जीरक (बुद्धिमान) शख्स थे। अगर पढ़े-लिखे होते, तो न जाने क्या-क्या कमालात दिखाते। कहते हैं उन्हें कीमिया बनाने का शौक था, जो जुनून की हद तक पहुँचा हुआ था। जो कुछ कमाते, उसी की नजर हो जाता। मगर आखिरी उम्र में उन्होंने कीमियागरी से तौबा कर ली।

चौधरी शम्सुद्दीन:

हकीम उमरदराज के बेटे। प्राइमरी की तीसरी तक तालीम पायी। उनका शुमार शहर के बड़े-बड़े ठेकेदारों में होता था। खासी दौलत कमायी और साहबे जायदाद भी हुए।

हाजी शफात अहमद:

चौधरी शम्सुद्दीन के बेटे। इंट्रेन्स तक तालीम पायी। मुद्दतों एक सरकारी दफ्तर में क्लर्की करते रहे। बाद में सुपरिंटेंडेंट हो गये। पेन्शन मिली। हज को गये।

[नोट: उनके वक्त से इस खानदान के हाथ से कारोबार निकल गया और उसके लोग मुलाजमत के रिश्ते में नत्थी हो गये।]

कारी गौस महम्मद:

हाजी शफात अहमद के बेटे। अभी कालिज में पढ़ ही रहे थे कि हाजी साहब ने अपने रसूख से काम लेकर उन्हें रेलवे में नौकरी दिलवा दी। कालिज के जमाने में किराअत भी सीखी थी, जिसकी वजह से कारी कहलाये। नमाज भी कजा न होने दी। इसकी वजह कुछ लोग यह बयान करते थे कि रेल की नौकरी ने उन्हें वक्त का बहुत पाबंद बना दिया था। वल्लाह आलम बिस्सवाब।

खान साहब गजनफर अली शाह, सब इन्स्पेक्टर, पुलिस:

कारी गौस महम्मद के बेटे। बी० ए० तक तालीम पायी। बाद में फुलौर जाकर पुलिस की ट्रेनिंग हासिल की। बहुत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दारोब और वजीह (लम्बे-तगड़े) आदमी थे। मिजाज बला का गुसैला था। बात-बात पर मातहतों पर लाल-पीले होते थे। बड़े दिलावर और मनचले थे। बड़े-बड़े नामी डाकुओं को कमाले शुजाअत से गिरफ्तार किया था। शहर के बदमाश और उठाई-गीरे उनका नाम सुनकर काँपने लगते थे। उनकी बहादुरी के किस्से अक्सर थानों में मशहूर थे। मगर उनकी बदमिजाजी और कसरते शराबनोशी की वजह से उनके अफसर उनसे नाखुश रहते थे। चुनाँचे उम्र-भर सब इन्सपेक्टरी से आगे न बढ़ सके।

शेख तुराब अली चिश्ती साबिरी बी० ए०, एल० एल० बी० एडवोकेट खान साहब :

गजनफर अली शाह के बेटे। शहर के काबिल तरीन वकीलों में गिने जाते थे। बड़े हँसोड़ और मसखरे थे। जरीफाना (हँसानेवाले) शेर भी कहते थे। काबलियत से ज्यादा बुजलासंजी उनकी शोहरत का बाइस (कारण) हुई। उन्होंने अपने पेशे की मस्लेहतों को पेशे नजर रखते हुए अपने नाम के साथ शेख लिखना ज्यादा पसंद किया। एक अहले कमाल की नजरे करम ने चिश्ती साबिरी भी बना दिया।

डाक्टर तहसीन अली एम० बी० बी० एस० सर्जन एंड फिजीशियन :

शेख तुराब अली के बेटे। बचपन ही से बड़े नेक और इन्सानों के हमदर्द थे। उन्हें गवारा न था कि कोई शख्स भी दुःख-दर्द में मुब्तिला हो। उनके पूर्वज हकीम उमर दराज हिकमत में नाम पा चुके थे। चुनाँचे बाप की मुखालेफत के बावजूद डाक्टरी की तालीम पायी और खल्के-खुदा की खिदमत में उमर बसर कर दी।

मिस्टर एलियास हारून, बैरिस्टर एट ला :

डाक्टर तहसीन अली के बेटे। उन्हें स्कूल के जमाने ही से यूरोप जाने का बेहद शौक था। चुनाँचे विलायत जाकर बैरिस्ट्री पास की। खानदान को शोहरत देने का कारण बने। दौलत भी खूब कमायी।

खान बहादुर मियाँ रुक्नुद्दीन, मेम्बर लेजिस्लेटिव असेम्बली :

मिस्टर इलियास हारून के बेटे। उनकी उमर का बड़ा हिस्सा जिद्दोजहद (संघर्ष) में गुजरा। आराम बहुत कम नसीब हुआ। गो ज्यादा तालीम हासिल न कर सके; मगर अपनी कुदरती जकावत व जहानत की वजह से खानदान का नाम खूब रौशन किया। अभी तो बच्चे ही थे कि रजाकार (स्वयं-सेवक) की हैसियत से एक इस्लाही (सुधारक) जमात में शामिल हो गये। और यही वजह ज्यादा तालीम हासिल न कर सकने की थी। तकरीर अच्छी करनी जानते थे। रफ्ता-रफ्ता लीडर बन गये। इत्तिफाक से उस जमाने में मुल्क में किसी किस्म की शोरिश न थी। लीडरी का बाजार ठंडा पड़ गया, तो अदबी रिसाला लिया। मगर चूँकि वे मुकर्रिर थे, अदीब न थे, लोगों ने ध्यान न दिया। माली परेशानियों से तंग आकर वह बंद कर देना पड़ा। म्युनिसिपल कमिश्नरी के लिए उठे। पहली बार कामयाबी न हुई। दूसरी बार कोशिश की,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फिर कामयाबी न हुई। मगर वोट काफ़ी हासिल कर लिये थे, इसलिए कुछ इत्मिनान था। तीसरी बार फिर अपना नाम पेश किया। इस मर्तबा एहतियातन तीन महीने पहले एक हफ्तेवार अखबार निकलवा लिया था। अल्लाह ने कामयाब कर दिया। होते-होते लेजिस्लेटिव असेम्बली के मेम्बर भी बन गये। सरकार ने 'खान बहादुर' का खिताब दिया। कई मुरब्बे भी मिले।

[नोट : उनके वक्त से इस खानदान के लोग सरकारी खितावात से सरफराज होने शुरू हो गये।]

आनरेबल सर दारा शिकोह चीफ जस्टिस, हाई कोर्ट :

खानबहादुर मियाँ रुक्नुद्दीन के बेटे। इनका जमाना बहुत पुरअम्न रहा और उन्हें ज्यादा जिद्दोजहद नहीं करनी पड़ी। क्योंकि खानदान के नाम और बाप की खिदमात की वजह से उन्हें हर जगह हर दिल अजीजी (लोकप्रियता) हासिल हुई। और सरकार ने भी उनकी कद्र की। उनके जमाने में खानदान की दौलत व सरवत में काबिले कद्र इजाफा हुआ।

राइट आनरेबल सर जमशेद जाह बहादुर, पी० सी० के० सी० एस० आई०, के० सी० आई० ई० :

वजीर-ए-आजम रियासत आनरेबल सर दारा शिकोह के फरजन्द अर्जुमन्द। उन्होंने खानदान के नाम को शोहरत व इज्जत के ओजे-कमाल पर पहुँचा दिया।

खान बहादुर सूफी बेदारबख्त बी० ए०, जागीरदार :

राइट आनरेबल सर जमशेद जाह बहादुर के बेटे। बी० ए० तक तालीम पायी। वालिद आला तालीम के लिए यूरोप भेजना चाहते थे कि उनका इंतकाल हो गया। ये बचपन ही से सुलह कुल और मुंकसिरुल मिजाज (नम्र स्वभाव) थे। मजहब की तरफ ज्यादा रुझान था। खुदा का दिया सब कुछ था। न आला तालीम के लिए यूरोप जाने की जरूरत थी, न नौकरी की हाजत। गोशा नशीन (एकांतप्रिय) होकर यादे-इलाही में मसरूफ रहे। उनकी उम्मीद और मरजी के खिलाफ सरकार ने उन्हें 'खान बहादुर' का खिताब दिया। इसे भी खुदा की रजा समझकर खामोश हो रहे।

साहब जादा नसीम उर्फ छोटे मिर्जा, रईस-ए-आजम :

खान बहादुर सूफी बेदारबख्त के बेटे। इंट्रेन्स तक तालीम पायी। फिर अपनी जागीर का इंतजाम करने लगे। बाप की तरह उन्होंने भी मुलाजमत को अपने लिए हराम जाना। और आखिर जरूरत भी क्या थी? खूब रईसाना ठाठ से रहे। बहुत खुशवजा और साहबे-जमाल थे। कहते हैं कि जैसा खाना उन्होंने खाया और जैसा कपड़ा उन्होंने पहना, किसी रईस को बहुत कम ही नसीब हुआ हो। खानदान में मिर्जा का लकब पहले-पहल उन्होंने ही इख्तियार किया।

अबुल खयाल मिर्जा 'बेकल' :

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साहबजादा नसीम उर्फ छोटे मिर्जा रईसे-आजम के बेटे। इंट्रेन्स में फेल होने के बाद दिल तालीम से उचाट हो गया। फिर स्कूल का रुख नहीं किया। शाइरी से बचपन से लगाव था। अपने मकान पर बड़े-बड़े तारीखी मुशायरे—मुंअकिद किये। खुद शेर कहते थे। मशहूर था कि फैजान-एशेर की हालत में चादर ओढ़कर चारपाई पर लेट जाते और घंटों बिस्तर पर लोटते-पोटते रहते और जब तक गजल पूरी न हो जाती, न उठते। बहुत-सा रुपया खर्च करके एक दीवान—"नवाये बेकल" के नाम से आला आर्ट पेपर पर सुनहरी रौशनाई से छपवाया, जिसमें अरबी, फारसी और उर्दू, तीनों जबानों का कलाम था।

नन्हे मिर्जा :

अबुल खयाल मिर्जा 'बेकल' के साहबजादे। वाजबी तालीम पायी। अंग्रेजी से बिलकुल कोरे रहे। वालिद की ख्वाहिश थी कि उन्हें शेरो सुखन से लगाव पैदा हो और बाप का नाम रौशन करें; मगर उन्हें इससे मस न था। उनका रुजहान बचपन से मौसिकी (संगीत) की तरफ था। बाप की मुखालिफत के बावजूद बड़े-बड़े नामी-गरामी गवैयों को बुलाकर उनसे फन-ए-मौसिकी सीखते रहे। सात बार ग्वालियर का सफर इख्तियार करके तानसेन की कब्र पर गये और हर बार उस इमली के दरख्त का पत्ता तोड़कर खाया, जो उसकी कब्र पर साया किये हुए है। पहले कई बरस तक गाना सीखते रहे; मगर चूँकि आवाज बहुत अच्छी न थी, इसलिए उस्तादों के मशविरे से गाना तर्क करके सितार का शौक करते रहे। लय और ताल की बेहद समझ रखते थे। कहते हैं कि सोते में उनके दाहिने पाँव का अँगूठा ताल देता रहता था। बुढ़ापे में मौसिकी के मुताल्लिक एक किताब भी "सदाये दिल नशीं" के नाम से लिखी, जिसका मस्विदा शायद उनका कोई दोस्त चुराकर ले गया। बुढ़ापे में इस सदमे ने मिर्जा की कमर तोड़ डाली और ये चंद ही रोज बाद इंतकाल कर गये।

मिर्जा अच्छे :

नन्हे मिर्जा के बेटे। बहुत मामूली तालीम हासिल की। बाप-दादा की तरह ये भी हर किस्म के कारोबार और मुलाजमत से दस्तकश रहे। थियेटर के बहुत शौकीन थे। उनकी दिली तमन्ना थी कि उनका कोई अपना थियेटर हो। मगर वालिद के जीते-जी इस इरादे को अमली जामा न पहना सके। वालिद के मरने पर एक दफा उन्होंने थियेटर के मालिक से मामला करना चाहा; मगर किसी वजह से बात तै न हो सकी। नाचार इरादा तर्क कर दिया।

लाडले मिर्जा :

मिर्जा अच्छे के फरजन्द दिलबन्द। सिर्फ कायदा पढ़ा। बहुत लाउबाली तबीयत के आदमी थे। वालिद मरहूम की तरह थियेटर के शौकीन। वालिद उन्हें अपने साथ थियेटर ले जाया करते थे। सच पूछिये तो इसका चस्का उन्हें बाप

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ही ने लगाया था। उनके मरने पर कुल ज़ायदाद के वारिस बने। एक दफा एक हिन्दुस्तानी बोलती फिल्म देखने गये। उसमें कलकत्ते की एक एक्ट्रेस लैलानामी थी, जो बहुत हसीन और तरहदार थी। गला भी नूर का था, उनका दिल उस पर आ गया। मुद्दतों इश्किया खत लिखते रहे। आखिर कलकत्ता पहुँचे। बहुत-सी दौलत खर्च करके उस तक रसाई हासिल की और शादी का पैगाम दिया। लैला ने ऐसी खूबी से टाला कि उनका दिल न टूटा। तीन साल तक उससे मेल-जोल रखा। बड़े-बड़े कीमती तोहफे उसे पेश करते रहे, यहाँ तक कि उसके नाम से एक फिल्म कम्पनी भी बना डाली। आखिर लैला शादी पर रजामंद हो गयी। शादी के दूसरे ही बरस फिल्म कम्पनी फेल हो गयी और लैला भी किसी एक्टर के साथ भाग गयी। लैला के बतन से एक लड़का पैदा हुआ था, उसे लेकर वतन आये और उसकी तरबियत के लिए एक नर्स मुकर्रर की। यहाँ आकर मालूम हुआ कि सारी जायदाद इश्क की नजर हो गयी। अब ले-दे के एक मकान और चंद दूकानें रह गयी हैं। उनके किराये पर गुजर करने लगे।

महम्मद शफी :

लाडले मिर्जा के बेटे। स्टेशन के करीब छोटा-सा होटल करते हैं। मुश्किल से गुजारा होता है। सुना है कि अब उन्होंने चोरी-छुपे शराब भी बेचनी शुरू कर दी है।

आत्म-कथा

बीते दिनों पर लज्जित होने की जरूरत नहीं; आत्मकथा पुस्तक लिख दीजिये और यशस्वी बनिये।

धमकी

एक आशिक मिजाज नौजवान ने शपथ लेकर अपनी प्रेयसी से शादी का प्रस्ताव करते हुए धमकी दी—"यदि तुम मुझसे शादी न करोगी, तो मैं मर जाऊँगा।" प्रेयसी ने फिर भी शादी करने का प्रस्ताव न माना और ४० वर्ष बाद सचमुच वह नौजवान मर गया।

निर्देशन

पत्नी सीने की मशीन से कपड़ा सी रही थी। पति उसके पास जाकर खड़ा हो गया और बोला—"इतना तेज न चलाओ प्रिये! कहीं उल्टी-सीधी सिलाई न हो जाये।" पत्नी ने आश्चर्य से ऊपर देखते हुए कहा—"मैं पिछले दस बरस से मशीन चला रही हूँ।" मैं भी तो पिछले दस बरस से मोटर चला रहा हूँ, फिर भी रोज तुम्हारी सलाह सुननी पड़ती है।" दूसरे दिन से पति को मोटर चलाते समय पत्नी के निर्देशन से छुटकारा मिल गया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाँच का नाच

एक रोचक प्रसंग

पिछली सदी में विल्हेल्मीने श्योडर (१८०४-१८६०) जर्मनी की प्रसिद्ध गायिका और श्रेष्ठ अभिनेत्री हो गयी है। लेकिन अखबारों में हमेशा ही उसकी प्रशंसा नहीं होती थी। 'ड्रेस्डन संध्याकाल' पत्र का लेखक डा० श्मीडर उसका खास विरोधी था। एक बार उसे रेलगाड़ी में अच्छा विनोदपूर्ण अनुभव हुआ, जो उसके ही शब्दों में इस प्रकार है :

एक बार मैं लाइप्त्सिग जाना चाहती थी। एक खाली डिब्बा देख मैं उसमें जा बैठी। गाड़ी छूटने के कुछ ही मिनिट पहले दो व्यक्ति—एक स्त्री, जिसे मैं पहचानती नथी और एक पुरुष डा० श्मीडर, जिसे मैं अच्छी तरह जानती थी, चढ़ आये। मैं उसके साथ बातचीत नहीं करना चाहती थी, इसलिए अपनी किताब पढ़ने लगी। अचानक उस अपरिचित स्त्री के मुँह से अपना नाम सुनकर मेरा ध्यान उधर गया। वह कह रही थी—"मैंने विल्हेल्मीने को रंगभूमि पर कभी नहीं देखा।" परंतु वह मुझे अपने कला-प्रेम के कारण नहीं; बल्कि अखबारों में मेरे बारे में छपी भयंकर खबरों के कारण मुझे एक दफा देखना चाहती थी। वह जितना कम मुझे जानती थी, उतना ही कम डा० श्मीडर को जानती थी। वह उसकी तरफ मुड़कर बोली—"क्यों साहब, क्या आप मुझे बता सकते हैं कि अखबारों में उसके बारे में जो कुछ छपता है, वह सब क्या सच है?" डा० श्मोडर ने काफी देर तक कुटिल हँसी हँसते हुए कहा—"देवीजी, आप उनसे स्वयं पूछ लीजिये। ये रहीं विल्हेल्मीने श्योडर।" महिला एकदम घबरा गयी; पर झट अपने आपको सम्भाल कर बोली—"आदरणीय देवीजी, मुझे क्षमा कीजिये। आपके चेहरे और आँखों को देखते ही मैं समझ गयी हूँ कि ये सब झूठी बातें हैं। आपके बारे में जो कुछ लिखा जाता है, वह सब झूठ है। मैं एक छोटे-से शहर में रहती हूँ और मैं अपनी राय केवल अखबार पढ़कर ही बना सकती हूँ। डा० श्मीडर नाम का एक लेखक बुरी तरह आपके पीछे पड़ा है। वह जरूर कोई भयंकर जहरीला आदमी होना चाहिये और जरूर उसको आप से व्यक्तिगत शत्रुता है।" मैंने भी डा० श्मीडर की तरफ कुटिल आनंद से देखते हुए उसको बोलने दिया और अपनी लम्बी क्षमा-याचना के अंत में जब उसने पूछा—"आदरणीय देवीजी, वह दुष्ट आदमी ऐसा क्यों करता है?" मैंने जवाब दिया—"डा० श्मीडर आपके सामने ही बैठे हैं, उन्हीं से पूछ लीजिये।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

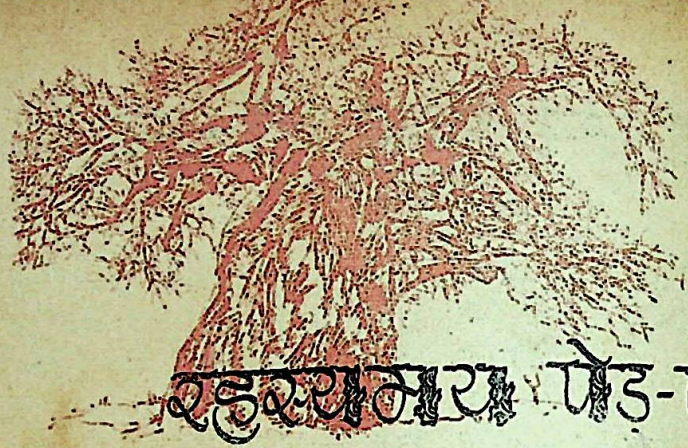

रहस्यमय पेड़-पौधे

कमलाकांत

प्राणि-जगत् में सृष्टि की रहस्यमयता तो मिलती ही है; लेकिन वनस्पति-जगत् में भी यह कम रहस्यमय नहीं है। संसार के विभिन्न महाद्वीपों के जंगलों की खाक छाननेवाले कुछ सैलानियों को कुछ अजीबो-गरीब शक्ल-सूरतवाले वृक्ष मिले हैं। कुछ ऐसे वृक्ष मिले हैं, जो अपने निकट आनेवाले व्यक्ति या प्राणी को मार डालते हैं। कुछ ऐसे भी वृक्ष हैं, जो अपने पास आनेवाले प्राणी को बेहोश कर देते हैं।

आस्ट्रेलिया के जंगलों में घूमनेवाला एक व्यक्ति एक विचित्र शक्लवाले वृक्ष को देखकर उसकी ओर आकर्षित हुआ और उसे निकट से देखने के लिए उस वृक्ष के पास चला गया। वह वृक्ष के तने के पास ज्यों-ही पहुँचा कि वृक्ष की डालियाँ उस पर ऐसी टूट पड़ीं; जैसे शेर किसी शिकार पर टूट पड़ता है। उस बेचारे को जान बचानी मुश्किल हो गयी। कपड़े तो फटे ही, उसके बदन में बड़े-बड़े काँटे चुभ गये। अपने प्राणों की रक्षा के लिए उसे भयंकर संघर्ष करना पड़ा; तब कहीं जाकर उसकी जान बच पायी। उसने अपनी इस रोमांचक कहानी को सुनाते हुए बताया कि उस वृक्ष की डालों में इतने बड़े-बड़े काँटे होते हैं, जैसे शेर का पंजा। उनसे छुटकारा पाना बहुत ही कठिन होता है। अगर कोई सवार घोड़े पर चढ़ा इस वृक्ष के नीचे से निकलना चाहे, तो घोड़े पर से उस व्यक्ति को इस वृक्ष की डालें इस प्रकार उठा लेती हैं, जैसे बाज किसी छोटी चिड़िया को अपने चंगुल में उठा लेता है।

पश्चिमी टसमानिया में भी इसी जाति का एक वृक्ष मिला है, जो और भी शैतानी करता है। अच्छा हट्टा-कट्टा जंगली आदमी भी उसकी जकड़ से आसानी से मुक्ति नहीं पा सकता।

मलेसिया के क्वींस लैंड नामक प्रांत में अमर बेल जैसी एक ऐसी प्राणघातक लता का पता चला है कि वह जिस वृक्ष पर चढ़ी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यहाँ कि छः महीने में ही उस पर जाल के समान छा जाती है और उस वृक्ष का शीघ्र ही अंत हो जाता है। उस वृक्ष के सूख जाने पर उसकी लताएँ दूसरे वृक्ष की तलाश में आसपास फैलनी आरम्भ हो जाती हैं।

आप जानते हैं कि किसी-किसी वृक्ष के साथ कुछ रहस्यमय अद्भुत कहानियाँ जुड़ जाया करती हैं। भारत में भी गूलर के वृक्ष के नीचे माताएँ बच्चों को नहीं जाने देतीं। कहानी मशहूर है कि इस वृक्ष में भूत-प्रेत एवं चुड़ैलों या परियों का निवास रहता है। इसी प्रकार अर्जेंटाइना के आदिवासी रेड इंडियनों में यह विश्वास है कि अमुक वृक्ष के नीचे जाने से व्यक्ति को वह वृक्ष पहले तो बेहोश करके सुला देता है, फिर पिशाच की भाँति उसका रक्त चूस लेता है। इस वृक्ष को लोग 'क्लोरोफार्म-वृक्ष' कहते हैं।

ब्राजील के घने जंगलों में 'मंचीनील' नामक एक ऐसा वृक्ष पाया गया है, जिस पर वसंत ऋतु में बड़े ही सुंदर लाल रंग के फूल आते हैं। उन फूलों से काफी मात्रा में निरंतर पराग झरता रहता है। कोई भूला-भटका मुसाफिर अगर इस अवसर पर इसके नीचे आश्रय लेता है, तो उसे कुछ ही दिनों में कोढ़ की बीमारी हो जाती है।

जल-वृक्ष

आप मानें या न मानें; लेकिन ये घटनाएँ सत्य हैं—कपोल-कल्पित नहीं। ऐसा ही एक 'उपस' नामक वृक्ष जावा, सलीबीज और मलाया के सघन जंगलों में पाया जाता है। इसमें से कपूर की भाँति ऐसा जहरीला लासा निकलता है, जिसे वहाँ के निवासी अपने भाले, बर्छे और तीर के फलों पर लगाते हैं। इसका जहर इतना तेज होता है कि बस जरा-सा छू-भर जाये कि काम तमाम। इसे पोटैसियम साइनाइड का भाई ही समझिये। इस वृक्ष के विषय में ऐसी भी आख्यायिका प्रचलित है कि इस वृक्ष के १५ मील के क्षेत्र में कोई भी जानवर, पक्षी या व्यक्ति जीवित नहीं रह सकता; क्योंकि इसमें से एक ऐसी जहरीली गैस निकलती रहती है, जिसका प्रभाव इसके चारों ओर १५ मील तक होता है।

लेकिन ऐसे वृक्ष विरले ही मिलते हैं। जावा में सौ मील के भीतर एक जंगल में एक शानदार 'उपस' का पता चला है। जिन शिकारियों को इसके जहरीले लासे की आवश्यकता होती है, वे इसे ढूँढ़ निकालते हैं। कितने ही वर्षों तक वे इसकी खोज में जंगलों-जंगलों भटकते ही रहते हैं। और यह भी सुना गया है कि इसकी खोज में जानेवाला व्यक्ति शायद ही कभी वापस आता है। क्योंकि वृक्ष की घातक गैस उसे वहीं समाप्त कर देती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और भाग्य के बंदे जो व्यक्ति किसी प्रकार वापस लौट भी आते हैं, तो उनकी कहानियाँ सुनकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। वे कहते हैं कि इस वृक्ष के विषाक्त प्रभाव से उसके आसपास जानवरों, पक्षियों के शवों और हड्डियों के पहाड़ से लगे हुए हैं। आस-पास की नदियों, झीलों और सरोवरों में मरी मछलियाँ अटी पड़ी हैं।

सबसे पहले इस वृक्ष का पता फोर्श नामक एक डच डाक्टर को लगा था। उसने इसकी कहानी सन् १७८३ में 'लंदन-मेगजीन' में प्रकाशित की थी। बाद में इसका उल्लेख इरासमस डार्विन ने अपनी अद्भुत कविता 'लव्स आफ प्लांट्स' में किया। बाद में सन् १८२० ई० में सुप्रसिद्ध चित्रकार फ्रांसिस डान्वी ने अपने प्रसिद्ध चित्र 'उपस-वृक्ष' में इसे चित्रित किया।

डान्वी का यह चित्र बड़ा ही मौलिक एवं स्वतंत्र कला-कृति माना जाता है। इसमें यह दिखाया गया है कि एक नितांत एकांत पहाड़ी स्थान है, जिसमें केवल 'उपस' का अकेला वृक्ष खड़ा है। इस चित्र के पार्श्व में चंद्रमा अपनी अजीब डरावनी चाँदनी से इस वृक्ष को स्नान करा रहा है और इस वृक्ष के आस-पास हड्डियों और दासों के ध्वंसावशेष, पापियों का समूह और शिकारियों की असंख्य लाशें पड़ी हुई हैं।

कितनी अद्भुत कहानी है यह! आज भी संसार के 'बोटानिकल गार्डेन' में कहीं-कहीं ये वृक्ष पाये जाते हैं। परंतु उनमें ये गुण नहीं मिलते। यदि किसी बहमी व्यक्ति को कहीं ऐसा वृक्ष दिखाई पड़ जाये, तो वह अवश्य उससे बचने का प्रयत्न करेगा।

इस कुख्यात और रहस्यमय वृक्ष के जहरीले होने का एक समाधान यह अवश्य मिलता है कि ज्वालामुखी पर्वतीय क्षेत्रों में पाये जानेवाले 'उपस' में वह जहरीली गैस और कुछ नहीं; बल्कि गंधकीय गैस है।

इसी तरह से क्वींस लैंड और न्यू साउथ वेल्स में एक ऐसा 'निर्दोष' वृक्ष पाया जाता है, जो ८० से १०० फुट तक ऊँचा होता है और देखने में बड़ा ही भोला-भाला दीखता है। लेकिन समझदार आदमी, जानवर और पक्षी इस भोलेभाले दीखनेवाले वृक्ष को दूर से ही प्रणाम करके अपना रास्ता पकड़ते हैं। क्योंकि जो इसके निकट पहुँचा नहीं, कि यह उसके डंक मारने में देर नहीं लगाता। इसलिए इसको 'टच-मी-नाट' या 'डंक मारनेवाला वृक्ष' कहा जाता है।

कारण कि इन वृक्षों पर इनके आकार-प्रकार के अनुसार बड़े नुकीले और तेज धारवाले काँटे होते हैं। इसके अलावा इस वृक्ष की चौड़ी, १२ इंच लम्बी खूब घनी और पान के आकार की पत्तियाँ होती हैं और उन पत्तियों पर लम्बे बाल के समान रोएँ होते हैं, जो बड़े ही जहरीले होते हैं। अगर कोई व्यक्ति इस वृक्ष के पास पहुँच जाये, तो ये पत्तियाँ उस व्यक्ति से चिपक जाती हैं और डंक मारने लगती हैं। इसके डंक मारने से बड़ी ही मर्मांतक पीड़ा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होती है। यदि तुरंत कोई दवा न दी जाये, तो यह पीड़ा लगातार चार दिन तक चलती रहती है। चार दिन के बाद, तब कहीं जाकर धीरे-धीरे कम होने लगती है।

ऐसे ही अर्जेंटाइना में पाया जानेवाला 'यूचान' नामक एक वृक्ष है, जिसका तना पीपे के आकार का होता है और पाँच-पाँच इंच लम्बे नुकीले काँटों से इसका तना भरा होता है। देखने में यह बड़ा विचित्र और सुंदर दीख पड़ता है। परंतु इस पर कोई चढ़ नहीं सकता।

कुछ वृक्ष बड़े ही भयावने और विचित्र होते हुए भी किसी प्रकार हानिप्रद नहीं होते। आस्ट्रेलिया में पाया जानेवाला खजूर के आकार का वृक्ष होता है। उसके सिरे पर घास उगती है। जिसके कारण उसे 'ग्रास-ट्री' या 'घास वाला वृक्ष' कहते हैं। यदि इसे आप संध्या के झुटपुटे में देखें, तो ऐसा लगेगा, जैसे कोई आदिवासी हाथ में भाला लिये, अभी-अभी फेंकने को तैयार खड़ा है।

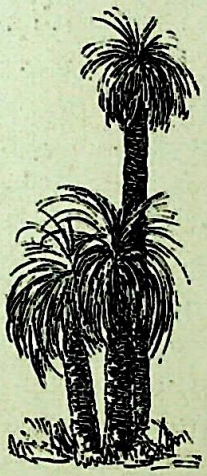

'ब्लैक बॉय' के नाम से प्रसिद्ध एक वृक्ष

इसी तरह सूडान और वेस्ट इंडीज में एक ऐसा वृक्ष पाया जाता है, जिसमें से बड़ी अद्भुत प्रकार की राग-रागिनियाँ निकलती रहती हैं। और रात में इन्हीं वृक्षों से ऐसा रोना-धोना आरम्भ होता है कि कभी-कभी यात्री यह समझ बैठता है कि निकट ही कहीं कोई ऐसा परिवार है, जिसमें कोई मर गया है और सब बैठे रो रहे हैं, सिसक रहे हैं।

मडागास्कर में एक वृक्ष नारियल के पत्तों के आकार का पाया जाता है, जिसे 'जल-वृक्ष' कहते हैं। जो यात्री इसे जानते या पहचानते हैं, वे इसके पास जाकर अपनी प्यास बुझाते हैं। यह केला-जाति का वृक्ष होता है, जो अधिक-से-अधिक ३० फुट ऊँचा होता है। इसकी पत्तियाँ खूब चौड़ी और पंखे के आकार की होती हैं। प्रत्येक पत्ती के डंठल के आखिर में एक कप बना होता है, जिसमें पानी या ओस भरी रहती है। प्यासे यात्री को उस डंठल में एक छेद बनाने की आवश्यकता होती है, कि पानी निकलना आरम्भ हो जाता है। प्रत्येक कप से लगभग आध पाव पानी निकलता है।

इसी प्रकार मडागास्कर के रेतीले-प्रांत में एक प्रकार का और झाड़ीदार वृक्ष पाया जाता है, जिसकी जड़ों में पानी भरा रहता है। मरुस्थल के प्यासे यात्री, जो इस वृक्ष को जानते हैं, इसकी जड़ें खोदकर अपनी प्यास बुझा लेते हैं; और जो नहीं जानते, वे इसकी छाया में बैठे-बैठे प्यास के मारे अपनी जान भी गँवा देते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बोतल–वृक्ष

इसका पानी बड़ा ही स्वच्छ, शीतल एवं स्वास्थ्य-वर्धक होता है :

वनस्पति-शास्त्र के विशेषज्ञ डा० फिलिप आर० ह्वाइट ने उत्तरी अमरीका, ब्रिटिश कोलम्बिया तथा अलास्का के समुद्री तटों के जंगलों में एक ऐसा वृक्ष खोज निकाला है, जिसके सारे शरीर में कद्दू के समान गाँठें पायी गयी हैं। ये गाँठें छोटी-बड़ी सभी आकार की पायी गयी हैं। कभी-कभी तो किसी वृक्ष पर एक ही गाँठ होती है और कभी-कभी ये गाँठें किसी वृक्ष की जड़ से लेकर उसकी शाखाओं व टहनियों तक हजारों की संख्या में पायी जाती हैं। ये विचित्र स्वभाववाले वृक्ष समुद्र तट से १०० गज के भीतर ही पाये गये हैं, इससे आगे नहीं। पता नहीं इसका क्या रहस्य है। डा० ह्वाइट इसके विषय में काफी छान-बीन कर रहे हैं; परंतु अभी तक वे किसी निश्चित परिणाम पर नहीं पहुँच पाये हैं।

एरिजोना विश्वविद्यालय के प्रसिद्ध वैज्ञानिक डा० एडमंड शूमाँ ने अभी कुछ वर्ष पूर्व कैलिफोर्निया के इन्यो नेशनल जंगल में एक ऐसा चीड़ का अति प्राचीन वृक्ष खोज निकाला है, जो संसार का सबसे पुराना वृक्ष माना गया है, जिसकी आयु का अनुमान लगभग ४६०० वर्ष लगाया गया है।

मध्य और दक्षिण अफ्रीका में एक विचित्र प्रकार का वृक्ष और पाया गया है, जिसको देखने से ऐसा लगता है कि किसी शैतान ने इस वृक्ष को उलट दिया है। अर्थात् ऊपर का भाग नीचे और नीचे के भाग को ऊपर कर दिया है। उसके साथ-ही-साथ विशालकाय बोतल के आकार का एक और वृक्ष पाया गया है, जिसकी ऊँचाई प्रायः ६० फुट से अधिक नहीं होती; लेकिन इसके बोतल-जैसे आकारवाले तने की मोटाई कम-से-कम ६० फुट और अधिक से अधिक ११२ फुट तक पायी गयी है। ये साल के अधिकांश दिनों में पत्र-हीन रहते हैं। इसका फल भी बड़े आकार का होता है। ये वृक्ष घातक श्रेणी में नहीं आते। इसमें यह विशेषता भी पायी गयी है कि यह किसी प्रकार भी नष्ट नहीं होता—न बाढ़ से, न जंगली आग से, न काटने से, न खोखला कर देने से। भले ही कुछ दिनों के लिए ठूँठ हो जाये; लेकिन कुछ ही दिनों बाद इसमें फिर नयी शाखें फूट पड़ती हैं। वास्तव में यह संसार का अद्भुत एवं रहस्यमय वृक्ष है। *

मनुष्य की आत्मा के अतिरिक्त उसका और कोई भाग्य नहीं है।

—स्टिनबर्ग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गुप्त-दान की पेटी

जापान में प्रचलित एक अद्भुत आंदोलन का रोचक परिचय

जयंतकुमार पाठक

जापान की राजधानी टोकियो के उपनगर में भीड़भाड़वाले एक सार्वजनिक मार्ग पर एक खम्भे के साथ एक बड़ी सुंदर छोटी पेटी टँगी हुई है। किसी सुंदर पक्षी-घर की तरह दीखनेवाली यह पेटी ढलुवाँ ढक्कन के नीचे इधर-उधर खिसकायी जा सके, इस तरह एक टेढ़े तख्ते के सहारे टिकी हुई है। पेटी की दाहिनी ओर नीचे सिरे पर एक छोटा-सा दरवाजा है। दिन हो या रात, लोग इस छोटे दरवाजे को खोलकर उससे फुटकर पैसे निकालकर बिना इधर-उधर देखे, निस्संकोच चले जाते हैं।

दूसरी ओर सुंदर पोशाक में सज्जित एक जापानी गृहस्थ पेटी के ढक्कन के नीचे कुछ पैसे और चालू नोट दिन-भर में कम-से कम एक बार अवश्य ही रख जाता है और वह भी बिना आगे-पीछे देखे चुपचाप चला जाता है।

'विनिमय' की इस योजना की ओर जापान की सारी प्रजा का ध्यान गया है। इस आंदोलन को 'साल्ट ऑफ द अर्थ' कहते हैं। गुप्तदान की यह एक अद्वितीय परम्परा है।

१० सितम्बर १९५६ को टोकियो के उपनगर शिवासिटी में हागोरामो पुल के पास एक खम्भे पर ४६ वर्षीय कवि शिनीची ईगुची ने सर्वप्रथम पेटी लगायी थी। तभी से इस आंदोलन का प्रारम्भ होता है।

इस मौजी कवि ने बड़े विश्वास के साथ अपनी इन पंक्तियों को सर्वोत्तम काव्य-पंक्तियाँ समझकर पहली पेटी पर लिखा है—"जिसे सचमुच आवश्यकता है, वह निःसंकोच इस पेटी से पैसे ले जा सकता है।"

और इस सबका सारा श्रेय है उस एक निर्धन आदमी को जिसने गरीबी से तंग आकर आत्म-हत्या करने की ठान ली थी। उसकी दयनीय स्थिति ने ही कवि को इस ओर प्रेरित किया। उस निर्धन ने कवि को अपनी करुण कथा सुनाते हुए कहा—"मेरे सामने मेरी पाँच संतानों और खुद के जीवन का अंत लाने के सिवा और कोई चारा ही नहीं रहा।"

सुनकर कवि का हृदय द्रवित हो उठा। उसने उसकी नौकरी लगवा दी और उसके परिवार को अपने घर में आश्रय दिया। परंतु वह आदमी दिन-भर में जो कमाता, उससे उसके परिवार का भरण-पोषण न हो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पाता। फलस्वरूप उसकी १५ वर्षीया पुत्री को वेश्यालय का सहारा लेना पड़ा।

जब यह बात कवि को मालूम पड़ी, तो उसका हृदय और व्याकुल हो उठा। १५ वर्ष की बालिका को भी पेट की क्षुधा शांत करने के लिए इस तरह के जघन्य-अनैतिक मार्ग का आश्रय लेना पड़े! इस सबके लिए कवि ने स्वयं को अपराधी माना। उसने सोचा कि सद्मार्ग पर चलने के लिए मैंने क्यों न इस परिवार की पूरी-पूरी सहायता की। कवि ने अपनी मनोव्यथा व्यक्त करते हुए कहा—"गरीबी हरएक के लिए पाप है और हरएक आदमी इसके लिए उत्तरदायी है।"

बस, उसी दिन ईगुची ने भगवान को साक्षी करके प्रतिज्ञा की कि अपने जीवन-पर्यंत वह प्रतिदिन १००० येन (लगभग १२ रुपये) दान किया करेगा।

एक दिन ईगुची को उस पेटी में एक बेकार श्रमिक का पत्र मिला। उसने लिखा था—"कष्टों से ऊबकर मैं आत्महत्या करने जा रहा था; पर आपकी पेटी ने मुझे नया साहस दिया और मेरा इरादा बदल गया।"

इसके बाद इसी तरह के और भी कई पत्र पेटी में मिलते रहते। एक बार एक गरीब औरत ने लिखा—"पेटी से कुछ पैसे लेकर मैंने भूख से तड़पते अपने बच्चों के प्राण बचा लिये।" एक चोर ने लिखा—"मैं एक घर में सेंध मारने जा रहा था, मार्ग में जब मैंने पैसे निकालने के लिए पेटी में हाथ डाला, तो तुरंत मेरी अंतरात्मा पुकार उठी और मैंने खाली हाथ पेटी से खींच लिया। तभी से मैंने समाज में प्रतिष्ठा का जीवन बिताने का निश्चय किया। एक मित्र ने मुझे नौकरी दिला दी, तब मैंने सर्वप्रथम उस पेटी का ही आभार माना।"

एक दिन एक धनी व्यापारी ने कवि ईगुची की पेटी देखी और उसने भी वैसी ही पेटी लगवाने का निश्चय किया। पेटी लगवाने के नियमों—पेटी कैसी लगानी चाहिये? कहाँ लगानी चाहिये? कितने पैसे डालने चाहिये?—के बारे में पूछ-परख की तो व्यापारी को पता चला कि इसके लिए कोई नियम नहीं है। मात्र इतना ही आवश्यक है कि पेटी लगानेवाले अथवा उसके हिस्सेदार को नियमित रूप से बराबर पैसे प्रतिदिन पेटी में डालने चाहिये। व्यापारी ने तत्काल इस नियम का पालन करना स्वीकार कर लिया और एक पेटी लगवा दी।

गत वर्ष जब टोकियो में भयंकर तूफान आया, तब शायद ही किसी ने घर से बाहर निकलने की हिम्मत की हो; उस समय उपर्युक्त प्रतिज्ञाबद्ध व्यापारी अपने प्राणों को खतरे में डालकर भी नियम निभाने के लिए पेटी में पैसे डालने गया। एक पुलिस के सिपाही ने उसे घर से बाहर निकलने के अपराध में पकड़ लिया। लेकिन जब उस सिपाही को व्यापारी की प्रतिज्ञाबद्धता का पता चला, तो वह सहानुभूति से भर उठा और उसने भी शहर के एक दूसरे हिस्से में एक पेटी लगवाने का तत्काल निर्णय कर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किया।

इसके बाद ईगुची ने एक पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया। उसमें लेख, कविताएँ नीति-वचन और प्रेरक साहित्य छपता है। और उसकी प्रतियाँ हर एक पेटी के नीचे रखी जाती है। फिलहाल कवि ईगुची अपने निजी खर्च से प्रति माह इस पत्रिका की १४ हजार प्रतियाँ प्रकाशित करके बाँटते हैं और ६ हजार प्रतियाँ पेटियों के नीचे रखवाते हैं।

पत्रिका के नियमित प्रकाशन तथा पेटियों की परम्परा को निभाये रहने में कवि ईगुची को अपनी आय का इतना अधिक हिस्सा व्यय कर देना पड़ता है कि कभी-कभी उन्हें गृहस्थी का सामान भी रेहन रखकर प्रतिज्ञा का पालन करना पड़ता है। उनके इस पुण्य-कार्य में ईगुची की पत्नी और उनके १३ तथा १९ वर्ष के दोनों लड़के भी पूर्ण साथ देते हैं।

आज जापान-भर में इस प्रकार की ४०० पेटियाँ हैं। जबकि अमरीका में इनी-गिनी पेटियाँ ही रखी गयी हैं।

कवि ईगुची का कथन है—"जब आप इस गुप्त-दान के आंदोलन में भाग लेंगे, तो एक अदृश्य भ्रातृ-भावना के साथ बँध जायेंगे। जो आदमी इस प्रकार पेटी रखकर उसका नियमित निर्वाह करता है, उसमें बिलकुल परिवर्तन हो जाता है। भूतकाल में जिस आदमी का आदमी पर से विश्वास उठ गया हो, वह पुनः जागृत हो उठता है। और यदि उसमें एकाधिकार एवं अहं की भावना रही होगी, तो उसके स्थान पर विवेक और विनम्रता का स्रोत उमड़ उठेगा। इस पेटी का सर्वाधिक लाभ यह मिलता है कि दान लेने और दान देनेवाले दोनों को जीवन की एक नयी दिशा मिलती है।"

इस आंदोलन में हृदय-परिवर्तन करने की अद्‌भुत क्षमता है। एक जापानी नागरिक ने स्वीकार किया कि पहले वह उन पेटियों के सामने से गुजरता, तो उन पर थूकता; पर ऐसी पेटियाँ रखनेवाले एक आदमी को निष्ठापूर्वक अपनी प्रतिज्ञा का पालन करते हुए जब उसने देखा, तब उसका एकदम हृदय-परिवर्तन हो गया और उसने भी एक पेटी रखवाकर उसको निभाने की प्रतिज्ञा की।

कवि ईगुची का यह कथन है कि मनुष्य से जितना भी बन पड़े, परोपकार करना चाहिये और करके उसे भुला देना चाहिये।

"एक शराबी पेटी से पैसे लेकर शराब पीकर पैसे बर्बाद करे, तो भी उस बात को ध्यान में नहीं लाना चाहिये। आखिरी परिणाम क्या निकलेगा, यह कौन कह सकता है?"

पत्रिका के नवीन अंक में ईगुची ने लिखा है कि एक शराबी शराब पीने के लिए पेटी से रोज पैसे ले जाता। एक दिन सुबह उसकी आत्मा इतनी क्षुब्ध हो उठी कि उसने अपने पास के सारे पैसे भी पेटी में जाकर डाल दिये। इस तरह पश्चात्ताप की भावना से प्रेरित होकर उसने शराब की लत हमेशा के लिए छोड़ दी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'जापान एडवेन्सर प्रोजेक्ट' द्वारा युवा स्त्री-पुरुष इस आंदोलन के सम्पर्क में आते हैं। 'साल्ट ऑफ द अर्थ एलायंस' संस्था ने एक विद्यार्थी-कार्यक्रम का आयोजन किया है। यह 'एलायन्स' सम्पन्न लोगों की एक संस्था है और उसके सभी सदस्य पेटियाँ रखवाते हैं। संसार के महात्माओं से मिलने के लिए यह संस्था अपने खर्च से विद्यार्थियों को विदेश भेजती है। इसी कार्यक्रम के अनुसार एक छोटी बालिका अफ्रीका में रहनेवाले महान् चिंतक डा० अल्बर्ट स्वाईट्जर से मिली।

ईगुची की मान्यता है कि यदि यह आंदोलन नियम-उपनियमों से जकड़ दिया जायेगा, तो उसके मूल में छिपी हुई परोपकार की भावना मर जायेगी। अब तक इस संस्था का न कोई अध्यक्ष है, न मंत्री और न कोई प्रचारक। ईगुची का कथन है—"हमारे देश के हर गाँव और शहर में ऐसी पेटियाँ लगायी जायें, यही हमारा प्रयत्न है। और जब यह कार्य पूरा हो जायेगा, तब हम संसार के अन्य देशों से भी इस आंदोलन को अपनाने की प्रार्थना करेंगे। जब प्रत्येक देश में निःस्वार्थ प्रेम और सेवा-भावना का प्रसार होगा, तभी मेरे इस आंदोलन का वास्तविक उद्देश्य पूरा होगा। यह भिक्षा दान देकर छुटकारा पाने की बात नहीं, बल्कि जीवन जीने का एक महासूत्र है।

☆

बीकानेर में १५ वीं शताब्दी का कर्णी नामक एक मंदिर है। इस मंदिर में हजारों की संख्या में चूहे निवास करते हैं और उनकी सुरक्षा तथा भोजन-व्यवस्था के लिए पर्याप्त सतर्कता बरती जाती है। इस मंदिर के वार्षिक लेखे में हजारों रुपयों का व्यय दिखाया जाता है, चूहों के दूध एवं स्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था के लिये।

इस समस्त व्यवस्थाओं के फलस्वरूप वहाँ चूहों की संख्या १५,००० के लगभग है और समयानुकूल बढ़ती रहती है।

☆

पुलिस अफसर—"तुमने इतनी चोरियाँ कीं; लेकिन सब अकेले ही।"

चोर—"आप तो जानते ही हैं, आजकल ईमानदार आदमी मिलते ही कहाँ हैं?"

☆

एक लुटेरे ने सुनसान सड़क पर एक आदमी को लूटना चाहा, उस आदमी ने भी डटकर सामना किया। काफी देर लड़ाई होने के बाद लुटेरे ने उस आदमी को गिरा दिया। तलाशी लेने पर केवल दस आने निकले। लुटेरे ने खीझकर कहा—"दस आने के लिए तुम्हें इतनी लड़ाई करने की क्या आवश्यकता थी?"

"मुझे डर था कि कहीं तुम वह सौ रुपये का नोट भी न ढूँढ़ लो, जो मैंने जूते में छिपा रखा है।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हृदय की नोट-बुक

जीवन को सफल बनानेवाले एक मूलमंत्र का रहस्य

जहूरबख़्श

मैं सन् १९१२ में जबलपुर के नार्मल स्कूल में प्रविष्ट हो चुका था। पूज्यवर पंडित मधुमंगलजी मिश्र उसके सुपिंटेंडेंट थे। यद्यपि वे पद के अनुकूल कितने ही महत्वपूर्ण कार्यों में व्यस्त रहते थे, तथापि यदा-कदा कक्षाओं में पदार्पण करते और विद्यार्थियों को कुछ-न-कुछ शिक्षा अवश्य देते थे। एक दिन मेरी नोट-बुक देखते-देखते मुस्कराये और कहने लगे—"काम कागज की नोट-बुक से नहीं, हृदय की नोट-बुक से सधेगा। जो कुछ पढ़ो या सुनो, उसे ध्यान-पूर्वक गुनो और हृदय की नोट-बुक पर लिख रखो। बस, योग्यता सफलतापूर्वक तुम्हारी मुट्ठी में रहेगी।"

उस समय उक्त नार्मल स्कूल में एक सौ दस विद्यार्थी थे। उनमें मैं शरीर की दृष्टि से ही नहीं, आयु की दृष्टि से भी सबसे छोटा था। इसलिए स्वभावतः पढ़ने-लिखने के बदले खेलने-कूदने, लड़ने-भिड़ने और शरारतें करने में ही विशेष रस लेता था। इतने पर भी जब उस दिन मिश्रजी ने ऐसे प्यारे विचार प्रकट किये, तो मैं खिल उठा और उनके शब्द गाँठ में बाँधते-बाँधते मन-ही-मन संकल्प कर बैठा कि बस, आज से कभी नोट-बुक उपयोग में लाने की मूर्खता नहीं करूँगा।

मैंने यह नोट-बुक सत्यानाश न करने का संकल्प क्या किया, अपने शिक्षकों के सहज कोप को निमंत्रण दे डाला। उन्होंने पहले तो मुझे समझाया-बुझाया, फिर डराया-धमकाया और जब इस प्रकार कार्य निकलते न देखा, तो कई-कई बार अर्थ-दंड का कठोर आदेश भी सुनाया। परंतु सब व्यर्थ।

होते-हवाते मेरे इस आचरण का सम्वाद मिश्रजी तक जा पहुँचा। उन्होंने भी अन्य शिक्षकों के समान मुझे कई बार समझाया-बुझाया, डराया-धमकाया और अर्थ-दंड का आदेश भी सुनाया। परंतु मुझ पर इन कार्यवाहियों का प्रभाव न पड़ता था और न पड़ा। अब तो जैसे मिश्रजी की समझ में कोई उपाय शेष न रहा। एक दिन उन्होंने मुझे अपने आफिस में बुलाया और अतिशय क्रोध के आवेश में मेरी हथेलियों पर कस-कसकर चार बेंत जमा दिये।

इस अपमानपूर्ण दंड-यातना से मैं बड़ी देर तक सिसकता रहा। परंतु मन में अपने संकल्प से टलने की बात भी न सोच सका; उलटे इस निर्णय और निश्चय पर पहुँचा कि जीवन में कभी नोट-बुक लिखने जैसा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गंदा कार्य नहीं करूँगा—नहीं करूँगा। अंत में मिश्रजी खिन्न होकर बोले—"जहूर, तुम्हारे मस्तिष्क में गोबर भरा है गोबर, तभी तो तुम नित्य-प्रति सुपथ से दूर-दूर भाग रहे हो। परंतु हम तुम्हें स्कूल से निकालने और तुम्हारा जीवन धूल में मिलाने का पाप नहीं कमायेंगे। तुम भले ही अपने हाथों अपना जीवन नष्ट-भ्रष्ट किये जाओ।"

उस दिन से मुझे किसी ने कभी नोट-बुक लिखने के लिए नहीं टोका और मुझे अपने चारों ओर निश्चितता के सागर में सुख-संतोष का जीवन तैरता जान पड़ने लगा। हाँ, कभी-कभी कोई-न-कोई सह-पाठी यह उपालम्भ अवश्य दे बैठता था—"क्यों अपना जीवन मिट्टी में मिलाने पर तुले हुए हो। इस खेल-कूद में क्या ले खाओगे?"

परंतु मैं ऐसे उपालम्भ एक कान से सुनता और दूसरे कान से निकाल देता। धीरे-धीरे वार्षिक परीक्षा का समय आ गया। मैं परीक्षा-भवन में पहुँचा और ढाई घंटे का प्रश्न-पत्र केवल पचीस-तीस मिनिट में ही निबटा कर खड़ा हो गया। हितकारिणी के सम्पादक आचार्यप्रवर पंडित रघुवर-प्रसादजी द्विवेदी सामने ही विद्यमान थे; कड़ककर बोले—"इतनी जल्दी! बैठ जाओ। अभी बहुत समय शेष है। उत्तर-पत्र पुनः भलीभाँति देख डालो।"

मैं मन मारकर बैठ गया और पाँच-सात मिनिट तक यों ही उत्तर-पत्र उलटता-पुलटता रहा। फिर उकताकर खड़ा हो गया। इतने में इन्सपेक्टर ऑफ स्कूल्स मिस्टर एफ० क्रेडक सामने आ पहुँचे और मैं उत्तर-पत्र उनको सौंपकर परीक्षा-भवन से बाहर भाग आया। बरामदे में मिश्रजी टहल रहे थे; मुझे देखते ही भड़क उठे और दाँत पीस-कर बोले—"निकल आया—इतनी जल्दी! हम तो पहले से ही जानते थे कि कुछ नहीं करेगा। बस, अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों की सूची में अपना नाम लिखायेगा। हट सामने से—जा काला मुँह कर।"

इस प्रकार मैं प्रत्येक प्रश्न-पत्र ढाई-ढाई घंटे के बदले पचीस-पचीस तीस-तीस मिनिट में निबटाकर मानो वैतरणी पार हो गया। परंतु सहपाठी मेरा उपहास करते थे और गुरुजन मुझे टेढ़ी आँखें दिखाते थे। मिश्रजी तो मुझसे इतने असंतुष्ट हो उठे कि बस कुछ मत पूछिये। जब मैं नार्मल स्कूल छोड़ने और घर चलने के लिए उद्यत हुआ तथा उनके चरण-स्पर्श करने के लिए झुका, तो उन्होंने तिरस्कार-पूर्वक, बड़ी निर्ममता के साथ मुझे हौले से एक ठोकर मार दी।

मैं उस ठोकर को पवित्र गुरु-प्रसाद के समान ग्रहण कर सानंद घर चला आया। लगभग ढाई मास पश्चात्, जुलाई सन् १९१३ में मेरे पास मिश्रजी का एक पत्र आया। वह मुझे शब्दशः तो स्मरण नहीं रहा; परंतु उसका भाव कुछ-कुछ इस प्रकार था :

"प्रिय जहूर, प्रसन्नता की बात है कि तुम उच्चकोटि के अंक प्राप्त कर परीक्षा में उत्तीर्ण हो गये हो। हमारे अनेक-अनेक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शुभाशीर्वाद ग्रहण करो। शुभाकांक्षी मधुमंगल मिश्र।"

मिश्रजी सन् १९१५ में—दीपावली की छुट्टियों में भ्रमण करने के विचार से सागर पधारे। मैं नार्मल स्कूल से निकलने के उपरांत ही लेख लिखने की चेष्टा करने लगा था और अब तक मेरे कई छोटे-छोटे लेख 'गृह-लक्ष्मी', 'हितकारिणी' आदि मासिक पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके थे। जब इस बार मैं मिश्रजी के सामने पहुँचा, तो वे मुस्करा उठे और जब मैं उनके चरण-स्पर्श करने के लिए झुका, तो उनका वात्सल्य-भाव उमड़ पड़ा।

उसी दिन हम लोग संध्या-समय नौका-रोहण द्वारा सागर के विशाल सरोवर का भ्रमण करने के लिए निकले। बीच सरोवर में पहुँचते-पहुँचते मिश्रजी ने मुझ से प्रश्न किया—"एक बात बताओ जहूर! तुम पढ़ते-लिखते नहीं थे, सदा खेल-कूद या दौड़-धूप करने में लगे रहते थे। फिर परीक्षा में कैसे उत्तीर्ण हो गये, सो भी उच्चकोटि के अंक प्राप्त कर?"

मैंने बताया—"आपके ही दिये हुए मंत्र से!" मिश्रजी ने विस्मित होकर प्रश्न किया—"हमारे ही दिये हुए मंत्र से भला कौन-से मंत्र से?"

मैंने उत्तर दिया—"एक दिन आपने ही तो उपदेश किया था कि काम कागज की नोट-बुक से नहीं, हृदय की नोट-बुक से सधेगा। जो कुछ पढ़ो या सुनो, उसे ध्यान-पूर्वक गुनो और हृदय की नोट-बुक पर लिख रखो। बस, योग्यता सफलता-पूर्वक तुम्हारी मुट्ठी में रहेगी।" मैंने आपका यह उपदेश मंत्र के समान ग्रहण किया था, अपनी गाँठ में बाँध लिया था और तत्काल इस पर चलना आरम्भ कर दिया था। परिणाम यह निकला कि जब सब सहपाठी नोट-बुकें लिखते-लिखते अपनी आँखें फोड़ते थे, तब मैं आनंद से खेलता-कूदता फिरता था और जब सब सहपाठी सबक याद करने के लिए रात-रात भर जागते थे, तब मैं सुख से पैर पसार कर सोता था। वास्तव में इस मंत्र ने मुझे जो शक्ति प्रदान की थी, वह परीक्षा में चुटकी बजाते सफलता प्राप्त करानेवाली थी।"

मिश्रजी ने अविश्वस्त स्वर में प्रश्न किया—"अच्छा, तो तुम जो पढ़ते या सुनते थे, वह तुम्हें भलीभाँति याद हो जाता था?"

मैंने विश्वस्त स्वर में उत्तर दिया—"जी हाँ अक्षरशः! उस समय भी याद हो जाता था, इस समय भी याद हो जाता है। सच पूछिये, तो आपका यह मंत्र मेरे जीवन का एक अभिन्न अंश बन चुका है।"

मिश्रजी के स्वर में पश्चात्ताप उभर उठा—"तब तो नार्मल स्कूल में तुम्हें व्यर्थ ही मानसिक और शारीरिक दंड दिया गया। तुमने भी तो उस समय यह रहस्य प्रकट नहीं किया। भला क्यों?"

मैंने मुस्कराकर उत्तर में कहा—"यदि मंत्र का रहस्य प्रकट कर दिया जाता है, तो उसका प्रभाव क्षीण हो जाता है।" *

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नेकी का फल

शेखसादी के कथा-कोष का एक रत्न

सुलतान महमूद सुबुक्तगीन की मृत्यु के ठीक एक सौ बरस बाद खुरासान के बादशाह ने एक रात ख्वाब में देखा कि सुलतान के जिस्म के तमाम हिस्से बिखर गये हैं—मिट्टी में मिल गये हैं; मगर उसकी चमकीली आँखें अपने-अपने गोलक में बड़ी बेचैनी से चारों तरफ़ घूम रही हैं, जैसे कुछ खोज रही हैं।

यह ख्वाब देखकर बादशाह कुछ ऐसा बेजार, उदास और फिक्रमंद हुआ कि फिर सो नहीं सका। सवेरा होते ही उसने बड़े-बड़े अक्लमंद आलिम और नजूमी (विद्वान और ज्योतिषी) बुला भेजे और उनसे इस ख्वाब का फल पूछा।

लेकिन ख्वाब तो ख्वाब ही था, कोई कैसे उसका समाधान करनेवाला फल बता सकता था? आखिर एक फकीर खड़ा हुआ और बादशाह को सलाम करते-करते बोला- "जहाँपनाह, जरा-सी तो बात है। आज सुलतान की हुकूमत दूसरे लोग भोग रहे हैं, इसलिए उसकी आँखें चारों तरफ घूम-घूमकर देख रही हैं कि कहीं उसका भी नाम-निशान है? आज जमीन के अंदर बड़े कहलानेवाले बेशुमार लोग सोये पड़े हैं, जिनका अब इस दुनिया में कहीं नाम-निशान भी नहीं है। लेकिन नौशेरवाँ[1] को देखिये, उसे मरे एक लम्बा जमाना हो गया और कब्र में कहीं उसकी एक हड्डी का भी पता नहीं चलता, फिर भी उसका नेक नाम दुनिया पर छाया हुआ है—सिर्फ नेकी की वजह से। इसलिए इन्सान जब तक जिंदा रहे, तब तक नेकी करे और अपनी जिंदगी से फायदा उठाये। जो उम्र बाकी है, उसे गनीमत समझे और फलाँ शख्स दुनिया से चल बसा-यह आवाज उठने से पहले जितनी नेकी बने, कर जाये।"

फकीर का जवाब समाधान करनेवाला भी था और संतोष देनेवाला भी। इसलिए बादशाह की सारी बेजारी, सारी उदासी और सारी फिक्र जाती रही। *

१. नौशेरवाँ ईरान का बड़ा ही न्यायी और प्रजापालक राजा था। सादी के समय से उसे परलोक सिधारे सौ से भी अधिक वर्ष हो गये थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पौधों की आहार प्रक्रिया पर नई खोज

पेड़-पौधों की आहार-प्रक्रिया मानव देह की प्रक्रिया से कम जटिल नहीं है। यद्यपि इस फोटो-सिंथेसिस प्रक्रिया पर वैज्ञानिक व्यापक प्रकाश डालने में समर्थ हुए हैं; परंतु अभी भी यह प्रक्रिया अधिकांशतः रहस्य ही बनी हुई है।

देशबंधु शर्मा

हम लोग सांस द्वारा आक्सीजन ग्रहण करते हैं और कार्बन डाइआक्साइड को छोड़ते हैं। आक्सीजन से हमें अपने आहार को शरीर के उपयोगी तत्वों में परिणत करने में महत्वपूर्ण सहायता मिलती है। परंतु पेड़-पौधों की प्रक्रिया दूसरे ही ढंग की है। वे वायुमंडल में से कार्बन डाइआक्साइड ग्रहण करते हैं और आक्सीजन छोड़ते हैं। इस प्रक्रिया को फोटो-सिंथेसिस कहा जाता है। कुछ वर्षों पूर्व यह प्रक्रिया वैज्ञानिकों के लिए रहस्यपूर्ण थी; परंतु आज इस प्रक्रिया के कतिपय गहन रहस्यों की गुत्थियाँ वैज्ञानिक सुलझा चुके हैं।

फोटो-सिंथेसिस वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा पौधों की आहार-प्रक्रिया (उनके अपने लिए व अन्य प्राणियों के लिए भी) होती है। सभी प्राणी जीवित रहने के लिए पौधों द्वारा तैयार किये गये भोजन पर ही निर्भर करते हैं। यहाँ तक कि मांसाहारी प्राणियों का आहार भी अंततोगत्वा ऐसे ही प्राणियों से आता है, जो वनस्पतियों पर पलते हैं।

पौधे जिस प्रक्रिया से खाद्य-पदार्थ—कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन इत्यादि तैयार करते हैं, उसे फोटो-सिंथेसिस कहते हैं। इसे समझने के प्रयत्न लगभग पिछले २०० वर्षों से विफल होते रहे हैं, डा० मेल्विन-काल्विन पहले व्यक्ति हैं, जिन्होंने फोटो सिंथेसिस के अनेक रहस्यों का पता चलाया है और वे तरीके सुझाये हैं, जिनके द्वारा सम्बंधित रहस्य एक-एक करके प्रकाशित हो रहे हैं। १९६१ के रसायन-शास्त्र (केमिस्ट्री) के नोबल पुरस्कार द्वारा फोटो-सिंथेसिस की उनकी खोजों पर उन्हें सम्मानित किया गया है।

फोटो-सिंथेसिस प्रक्रिया की कहानी उतनी ही पुरानी है, जितना पुराना पौधों का विकास है। यह प्रक्रिया करोड़ों-अरबों वर्ष पुरानी है; परंतु वैज्ञानिक दृष्टि से इस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रक्रिया का पता सबसे पहले जोसेफ प्रीस्टले ने लगाया था। आज से १९० वर्ष पहले सन् १७७२ में उन्होंने यह खोज की कि पौधों के साँस लेने का ढंग मनुष्य व पशुओं से बिलकुल उल्टा है। जब मनुष्य या पशु सांस लेते हैं, वे आक्सीजन को शरीर के भीतर खींचते हैं, जब वे सांस छोड़ते हैं, तो कार्बन डाइआक्साइड को शरीर के बाहर फेंकते हैं। प्रीस्टले ने पता लगाया कि इसके विपरीत पौधे अपने हरे पत्ते व हरी टहनियों के माध्यम से पानी व कार्बन डाइआक्साइड को भीतर लेते हैं व आक्सीजन को बाहर छोड़ते हैं।

प्रीस्टले की इस खोज के ७ साल बाद १७७९ में डच वैज्ञानिक थान इन गेन-हाउस ने एक और महत्वपूर्ण खोज की। उन्होंने यह पता लगाया कि हरे पौधे केवल सूर्य की रोशनी में ही कार्बन डाइ-आक्साइड व पानी खींचकर आक्सीजन छोड़ सकते हैं।

इसके बाद के २० वर्षों में ही फोटो-सिंथेसिस के बारे में अन्य अनेक बातों का पता लगा लिया गया, जिनमें सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि इस तरह ग्रहण की गयी कार्बन डाइआक्साइड से ही पौधे कार्बोहाइड्रेट व अन्य खाद्य-पदार्थों को अपने में तैयार करते हैं।

परंतु यह प्रक्रिया कैसे होती है, इस बारे में अगले डेढ़ सौ वर्षों में भी निश्चित् रूप से कुछ न जाना जा सका। हाँ, इस अर्से में वैज्ञानिकों ने एक धारणा यह अवश्य बना ली कि पौधे जो कार्बन डाइआक्सा-इड खींचते हैं, उसे कार्बन तथा आक्सीजन में विघटित कर देते हैं। आक्सीजन को तो वे वायुमंडल में छोड़ देते हैं और कार्बन से अपने भीतर कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन व अन्य पदार्थ पैदा करते हैं।

फोटो-सिंथेसिस की यह थ्योरी गलत सिद्ध हुई – १९३०-४० में स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय के प्रोफेसर सी० बी० वान नील के परीक्षणों से। उन्होंने यह खोज की कि पौधे फोटो-सिंथेसिस के समय कार्बन डाइआक्साइड को नहीं, बल्कि पानी को विघटित करते हैं। पानी को वे हाइड्रोजन व आक्सीजन में फाड़ देते हैं। आक्सीजन को वे हवा में छोड़ देते हैं और हाइड्रोजन को अपने भीतर खींचकर उन रासायनिक प्रक्रियाओं में लगा देते हैं, जिनसे कार्बो-हाइड्रेट का निर्माण होता है। पानी को हाइड्रोजन और आक्सीजन में विघटित करना आसान काम नहीं है। यह प्रक्रिया जटिल है। यह तो स्पष्ट है कि फोटो-सिंथे-सिस में यह शक्ति सूर्य की रोशनी के रूप में आती है। परंतु प्रयोगशाला में तो सूर्य की रोशनी से पानी का विघटन नहीं होता। फिर पौधों में कैसे हो जाता है?

यह हम ऊपर ही लिख चुके हैं कि फोटो-सिंथेसिस-प्रक्रिया पौधों के हरे भाग में होती है। इन हरे पत्तों के कोष्ठों (सेलों) में जो हरा पदार्थ होता है, वह 'क्लोरो-फिल' है। क्लोरोफिल जिन कणों में केंद्रित होता है, उन्हें 'क्लोरोप्लास्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहते हैं। १९३७ में केम्ब्रिज विश्वविद्यालय के प्रोफेसर आर० हिल ने क्लोरोप्लास्टों को पत्तों से अलग किया व पानी में डाला। उन्होंने देखा कि सूर्य की रोशनी पड़ने पर क्लोरोप्लास्टों में से आक्सीजन गैस निकलती है। इस तरह उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि पत्तों में क्लोरोफिल ही वह पदार्थ है, जो प्रकाश की शक्ति को रासायनिक शक्ति में बदल देता है।

परंतु इन प्रारम्भिक खोजों से इस बात पर प्रकाश नहीं पड़ा कि आखिर पौधे अपने इन खाद्य-पदार्थों का निर्माण किस प्रकार करते हैं।

डाक्टर काल्विन से पहले भी अनेक वैज्ञानिकों ने फोटो-सिंथेसिस की प्रक्रिया को समझने के लिए कई परीक्षण किये; परंतु उन्हें असफलता ही हाथ लगी। इसका कारण यह था कि यह प्रक्रिया अत्यंत तेजी से होती है। कार्बन डाइ-आक्साइड व पानी को कार्बोहाइड्रेट व प्रोटीन में बदलने के लिए पौधों को मात्र एक-दो मिनिट ही लगते हैं। इन एक-दो मिनिटों के भीतर ही बीसियों रासायनिक पदार्थ बनते हैं व दूसरे पदार्थों में बदल जाते हैं। इसके अलावा पौधों में अपने ही अनेक रासायनिक पदार्थ होते हैं और फोटो-सिंथेसिस के अलावा दूसरी भी अनेक प्रक्रियाएँ होती रहती हैं। ऐसी हालत में यह भी एक समस्या थी कि फोटो-सिंथेसिस की प्रक्रिया में बननेवाले पदार्थों को अलग-अलग कैसे पहचाना जाये ?

डा० काल्विन ने इस प्रश्न का उत्तर पाने के लिए एक नयी टेकनीक का सहारा लिया—रेडियो ऐक्टिव आइसोटोप के प्रयोग का। सन् १९४६-४७ में जब उन्होंने अपने प्रयोग शुरू किये, तो रेडियो-एक्टिव-आइसोटोप एक नयी चीज थी। उन्होंने पौधों के कोष्ठों को सामान्य कार्बन डाइआक्साइड के बदले रेडियो एक्टिव कार्बन डाइआक्साइड दी। रेडियो एक्टिव कार्बन डाइआक्साइड को बनाने में कार्बन के रेडियो एक्टिव आइसोटोप (कार्बन १४) का प्रयोग किया जाता है। इस कार्बन डाइआक्साइड का प्रयोग करने पर फोटो-सिंथेसिस की प्रक्रिया में जो-जो रासायनिक पदार्थ बनते थे, वे सभी रेडियो एक्टिव होते थे और उन्हें कोष्ठों में उपस्थित अन्य पदार्थों से अलग पहचाना जा सकता था। डा० काल्विन पौधों के जीवित कोष्ठों को केवल कुछ सेकेंड तक ही रेडियो एक्टिव कार्बन-डाइआक्साइड देते थे। फिर इन कोष्ठों को नष्ट कर देते थे तथा उनमें से वे पदार्थ अलग करते, जिनमें रेडियो एक्टिविटी होती।

केवल ९० सेकेंड तक प्रक्रिया करने के बाद कोष्ठों को नष्ट करने पर १५ अलग-अलग पदार्थों में रेडियो एक्टिविटी पहचानी गयी। ये पदार्थ थे ग्लुकोज, फ्रक्टोज, पायरूविक एसिड, मेलिक एसिड, ग्लाइसीन, सक्सिनिक एसिड, ग्लाइकालिकएसिड, सिरीन, अलानीन, ऐस्पेरेटिक एसिड, ग्लुरैमिक एसिड, ग्लाइ आग्ज़ैलिक एसिड

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

व ट्रायोज फास्फेट । इस प्रकार ९० सेकेंड में ही फोटो-सिंथेसिस के परिणाम-स्वरूप इतने सारे पदार्थों का निर्माण होना इस बात का सबूत है कि फोटो-सिंथेसिस कितनी जटिल प्रक्रिया है और उसे समझना कितना मुश्किल है । जब इस प्रयोग का समय घटाते-घटाते डा० काल्विन ने ५ सेकेंड कर दिया, तो केवल ४-५ पदार्थों में ही रेडियो एक्टिविटी पायी गयी । इनमें से प्रमुख पदार्थ फास्फो ग्लिसरिक था ।

दस वर्षों तक लगातार अनेक परीक्षण करने के बाद डा० काल्विन ने उन रासायनिक प्रक्रियाओं का पूरा चार्ट तैयार कर लिया, जिनसे कार्बन डाइआक्साइड व पानी मिलकर कार्बोहाइड्रेट तैयार करते हैं । जिसे फोटो-सिंथेटिक कार्बन सायकल कहते हैं ।

डाक्टर काल्विन ने फोटो-सिंथेसिस को समझने के लिए जिस टेकनीक का विकास किया, वह अब विज्ञान की एक नयी शाखा बन गयी है । इसे बायो डायनेमिक्स कहते हैं । डा० काल्विन ने स्वयं लिखा है कि ऐसे रसायनशास्त्री जो केवल रसायन-शास्त्र में ही दिलचस्पी रखते हों, फोटो-सिंथेसिस के रहस्यों को शायद कभी नहीं सुलझा सकते; क्योंकि प्रकृति ने भौतिक-शास्त्र, रसायनशास्त्र व प्राणिशास्त्र के भेद नहीं बनाये हैं, बल्कि ये भेद तो मनुष्य के बनाये हुए हैं । केमिकल बायोडायनेमिक्स के जन्मदाता के रूप में डाक्टर काल्विन आज विश्व के एक प्रमुख वैज्ञानिक माने जाते हैं ।

डाक्टर काल्विन द्वारा किये गये इन परीक्षणों से फोटो-सिंथेसिस की प्रक्रिया को समझने में वैज्ञानिकों को काफी सहायता मिली है । जिस टेकनीक का प्रयोग उन्होंने किया, उसे अपनाकर वैज्ञानिकों ने और भी कई भेदों का पता चलाया और अब फोटो-सिंथेसिस के बारे में बहुत कम रहस्य बाकी रह गये हैं । फोटो-सिंथेसिस की प्रमुख प्रक्रियाएँ दो हैं । एक तो वह जो प्रकाश में क्लोरोफिल की सहायता से होती है । इस प्रक्रिया को फोटोफास्फोरिलेशन कहते हैं । इनमें पानी का विघटन होकर हाइड्रोजन व आक्सीजन पैदा होते हैं । आक्सीजन पुनः वायु-मंडल में मिल जाती है तथा हाइड्रोजन को क्लोरोफिल प्रकाश की शक्ति से घटित पिरीडीन न्युक्लिओटाइड (टी-पी-एन-एच-२) नामक पदार्थ में बदल देता है । इसके अलावा प्रकाश की शक्ति से ही क्लोरोफिल एक और भी पदार्थ का निर्माण करता है, जिसका नाम है एडिनोसिन ट्राइफास्फेट (ए-टी-पी) । ये दो पदार्थ पौधों के कोष्ठों में शक्ति के भंडार माने जाते हैं । इन्हीं पदार्थों की शक्ति से फोटो-सिंथेसिस की दूसरी प्रक्रिया होती है ।

फोटो-सिंथेसिस की दूसरी प्रक्रिया जो अधिक महत्वपूर्ण है, प्रकाश की अवस्था क्लोरोफिल की आवश्यकता नहीं है । यह वह प्रक्रिया है, जिसमें कार्बन डाइआक्साइड से कार्बोहाइड्रेट तैयार होते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैं। इस प्रक्रिया में होनेवाली अनेक रासायनिक क्रियाओं के लिए जो शक्ति चाहिये, वह उपर्युक्त पहली प्रक्रिया से तैयार होनेवाले दोनों पदार्थों 'घटित पिरीडीन न्युक्लिओटाइड' व 'एडिनोसिन ट्राइफास्फेट' से प्राप्त होती है।

केवल पौधों के कोष्ठों में ही नहीं, बल्कि अन्य सभी प्रकार के जीवित कोष्ठों में उदाहरणस्वरूप मानव यकृत के कोष्ठों में भी यह दूसरी प्रक्रिया अर्थात् कार्बोहाइड्रेट बनाने की क्षमता पायी गयी है—बशर्ते कि उनको बाहर से उपर्युक्त दोनों पदार्थ 'टी-पी-एच-एच-२' तथा 'ए-टी-पी' जिन्हें हम शक्ति का भंडार कह चुके हैं, दिये जायें।

अभी यह पता चलाना बाकी है कि कार्बोहाइड्रेट से प्रोटीन व अन्य खाद्य पदार्थ कैसे तैयार होते हैं। जब फोटोसिंथेसिस के रहस्य पूरी तरह समझ में आ जायेंगे, तब पौधों के लिए नयी रासायनिक खादें तैयार की जा सकेंगी। ये खादें फोटो-सिंथेसिस में होनेवाली रासायनिक क्रियाओं को ध्यान में रखकर बनायी जायेंगी तथा उनसे पौधों द्वारा तैयार होनेवाले खाद्य-पदार्थों की मात्रा कई गुनी बढ़ सकेगी। इससे भी बढ़कर वैज्ञानिकों का एक सपना यह रहा है कि वे ऐसे कारखाने स्थापित कर सकें, जिनमें पौधों की ही तरह कार्बन डाइआक्साइड व पानी से अनेक खाद्य-पदार्थ तैयार किये जा सकें। तब हमारी खाद्य-समस्या का स्थायी हल मिल जायेगा।

★

एक छोटी-से-छोटी खुशी आदमी के बड़े-से-बड़े दुःख को ढक लेती है और इसीलिए हँसना आदमी के लिए बहुत जरूरी है। —रैबेलाइस

★

क्या ही अच्छा हो कि बहुत यशस्वी होकर भी आपके गुण, आपके बने रहें। —किपलिंग

★

समय हमें कभी एक-दूसरे से अलग नहीं कर सकता, क्योंकि हम जिसे भी याद करते हैं, वह हमारे पास ही होता है। —डेम मैड्गे केण्डल

★

जो परमात्मा को इसलिए धन्यवाद देते हैं कि उसने उन्हें दूसरों से भिन्न बनाया है, वही दुःख पाते हैं। —ई० डब्ल्यू० सावी

★

माना कि हम नश्वर हैं धूलि की तरह, किंतु हमारी अमर आत्मा वैसे ही उभर कर आती है जैसे संगीत में एकलयता। —वर्ड्सवर्थ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ठाकुर का बेटा

शिवानी

विशाल दीवानखाने में मसनद लगाकर बैठे ठाकुर हयातसिंह ने सुवासित तम्बाकू की कश खींचकर, त्रिपुंडधारी पंडितजी से बड़े मीठे स्वर में कहा—"डरो नहीं पांडेज्यू, जो लिखा है कुंडली में बतला दो एकदम।"

"महाराज, कैसे कहूँ, विचित्र जोग बना है कुंडली में।" पंडितजी ने अनेक त्रिकोण-षटकोणों के जाल में उलझकर कहा—"पुत्र-योग प्रबल है; किंतु....." कहकर बेचारे ने विवश दृष्टि से चारों ओर देखा, जैसे उसे किसी की उपस्थिति का-सा भय हो रहा था।

"कहो कहो; पुरोहितजी, निश्चिंत रहो। सिवाय दीवारों के यहाँ कोई नहीं है।" हयातसिंह गुड़गुड़ी छोड़कर बैठ गये।

"महाराज पुत्र होगा, किंतु आपकी इन दोनों पत्नियों से नहीं, एक और विवाह करना होगा आपको, सुलक्षणी कन्या की गृहस्थिति विशेष रूप से देखनी होगी—एक बात और भी बड़ी विचित्र है....." कहकर पंडितजी गहरे ध्यान में डूब से गये।

"क्या ?" कहकर ठाकुर ने उचककर पंडितजी के दोनों पैर पकड़ लिये। पुत्र-प्राप्ति की भविष्यवाणी से उनकी लटकी मूंछें तक सतर हो गयीं।

"पुत्र आपका वन-विहारी ही रहेगा महाराज, आपके राजमहल का सुख आप ही भोगेंगे, हरि इच्छा, हरि इच्छा।" कहकर पंडितजी ने पोथी-पतड़े एक ओर खिसका दिये।

थोड़ी देर को हयातसिंह कुछ सोच में डूब से गये। सहसा जोर से हँसकर उन्होंने पंडितजी की पीठ में कसकर थप्पड़ मारा—"वन-विहारी नहीं बनेगा, तो काम कैसे चलेगा ? हयातसिंह के कत्थे का ठेका, चौड़ का ठेका, फिर कुमाऊँ के ओर-छोर तक फैले चाय के बगीचों की माया को क्या राजमहल में बैठकर सम्हालेगा। क्या बात कह गये हो लाख की गुरू ! देखो पंडित, तुम्हारी गणना सच निकली, तो तुम्हारी बामणी को सिर से पैर तक सोने से मढ़ दूँगा—समझे !" अपनी नीलम की अंगूठी उन्होंने पंडितजी की अंगुली में पहना दी—"लो गुरू, यह रहा तुम्हारा बयाना।"

आशीर्वाद देकर पंडितजी चले गये, तो हयातसिंह का समस्त उत्साह ठंडा पड़ गया। चौथेपन में तीसरी शादी ! दुनिया क्या कहेगी, बेटियों के बेटे हो गये थे, दामादों से मुँह छिपाकर सेहरा कैसे बाँधेगा ? फिर उसकी पतिव्रता पत्नियों का राधा-रुक्मन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का जोड़ा। जिन्होंने कभी सौतों का रिश्ता नहीं माना, सगी बहनों में भी ऐसा प्रेम नहीं होता। कौन कहता है एक मियान में दो तलवारें नहीं रह सकतीं! छोटी ठकुरानी चंद्रा कहती—"खूब रह सकती हैं, बशर्ते मियान भी मखमली हो।" सचमुच ही हयातसिंह के दिल की मियान मखमली ही थी, एक को वह पंद्रह तोले का चंद्रहार बनवा देते, तो दूसरी के लिए भी पंद्रह ही तोले का हार बनता। राई-रत्ती कम नहीं। उनके हाथीदंती छपरखट के अगल-बगल, सोलह शृंगार किये दोनों ठकुरानियाँ, ईर्ष्या-द्वेष के सारे हथियार डालकर, लेट रहतीं। हयातसिंह को किसी से न तो अधिक दुराव था, न अधिक प्रेम! नाप-तोलकर दोनों को प्रेम की मदिरा ऐसी नियत मात्रा में देते थे कि दोनों छककर पड़ी रहतीं। 'हयात कोट' की छटा भी किसी राजप्रासाद से कम नहीं थी। कहते थे कि ठाकुर ने सीमेंट और गारे के स्थान पर उड़द की दाल पिसवाकर बिछवा दी थी, जयपुर के कारीगरों का बनाया वह अभेद्य दुर्ग, कुमाऊँ की वनस्थली का एक अनोखा शृंगार-मुकुट था। डूबते सूर्य की रक्तिम आभा में चारों ओर से गिरि-शिखरों से घिरी हयातसिंह की उस माया-पुरी की शोभा वास्तव में दर्शनीय हो उठती। एक-से-एक आधुनिक कलाकृतियों के अतिरिक्त, उनके प्रवेश-द्वार पर एक विनस की मूर्त्ति बना हाथीदांत का फौवारा था, जिसके कस्तूरीमिश्रित सुवासित जल का ही खर्चा चार सौ रुपये माह था, किंतु ठाकुर हयातसिंह किस्मत के ही नहीं दिल के भी बादशाह थे, रुपया उनके हाथ का मैल था, दौलत उनकी हाथ बाँधे खड़ी बाँदी थी। दोनों पत्नियों से उनकी चार लड़कियाँ हुईं, चारों को उन्होंने एक-से-एक अच्छे खाते-पीते घरों में ब्याह दिया था। आज तक वे चैन की नींद ही सोते थे, किंतु पंडितजी की गणना ने उन्हें अशांत कर दिया। दोनों ठकुरानियों ने पति की अशांति भाप ली—"सुनती हो लक्षण ठीक नहीं हैं" छोटी ने कहा।

"क्यों नहीं बहन, सब समझती हूँ, आया था न दाढ़ीजार पंडित, सिखा गया होगा कुछ।" उधर बेचारे हयातसिंह के जीवन के पैंतालीस वर्षों में ऐसी विकट रातें कभी नहीं बीती थीं, इधर करवट लेते तो दिखती बड़ी पत्नी सावित्री, जिसके गोल गाल चंद्रमा के थाल-से मुँह पर निष्कपट प्रेम की आभा थी, छाती पर सौत बिठाने पर भी जिसने कभी पति का तिरस्कार नहीं किया था। उधर करवट बदलते तो दिखती पुष्ट यौवन से गदराई चंद्रिका, जिसकी तिब्बती माँ के सौंदर्य ने उसे मछली-सी आँखें उपहार में दी थीं, उन तिरछे कटाक्षों में वारांगना का विलास था, उसके सलीके से पहने गये मखमली घाघरे के आठ-आठ पाटों की मनमोहक घुरनियों ने हयातसिंह को बाँध लिया था। दोनों पत्नियों के प्रेम के अमृत कलशों को क्या वह लात मारकर गिरा दे? किंतु पितरों के प्रति भी उनका कर्तव्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है—कुमाऊँ के राजपूत के लिए पुत्र के बिना निरबंसिया जीने से मौत भली है, मन पक्का कर उन्हें विवाह करना ही होगा।

पंडितजी ने गणना ही नहीं की, कन्या भी ढूँढ़ दी। मुक्तेश्वर की घाटी में एक आलू का ठेकेदार था रामसिंह। उसकी पहली पत्नी से एक पुत्री थी हंसा, विमाता उसे बैल की तरह काम में जोते रहती, किंतु दिन-रात परिश्रम की अग्नि में झोंकने पर भी छोकरी का रूप फटा पड़ता था। रामसिंह भी पंडितजी का ही जजमान था और एक दिन बिना किसी आडम्बर के ही ठाकुर उसे ब्याह लाये। साबी और चंद्रा ने डोली देखी और दोनों पिछवाड़े भागकर एक-दूसरे से लिपटकर घंटों रोती रहीं, जैसे उनका सुहाग उजड़ गया हो।

आलू के ठेकेदार की कन्या का सौंदर्य देशी उस्तरे की धार की ही भाँति तीखा था। आते ही उसने अपना कमरा अलग कर लिया, हयातसिंह दिन-रात चाय के बगीचों में भटकते। अब वह भी साथ जाती। गहनों की तिजोरी की चाबी उसने अपनी पतली-सी कमर में लटका ली। दो नशीली आँखोंवाली नैपाली दासियाँ थीं—शिवकली और रामकली। दोनों ही ठाकुर साहब के बहुत मुँहलगी थीं, अकारण ही उनके कमरे के चक्कर लगातीं—कभी पान लेकर, कभी सिगरेट जलाने के बहाने उन पर गिरी पड़तीं। हंसा ने चौथे ही महीने दोनों को छुट्टी दे दी और अपने मायके से दो बूढ़ी बदसूरत ठकुरानियाँ ले आयी। एक विधवा ताल्लुकेदारनी और उनकी सुंदरी पति-परित्यक्ता पुत्री नीलम, ठाकुर साहब के क्लब की सहचरी थीं। उनकी जमी जड़ों को साबी और चंद्रा के सतीत्व का तेज भी नहीं उखाड़ सका था। हंसा ने अपनी एक ही आग्नेय दृष्टि से उन्हें भस्म कर दिया।

एक दिन दोनों आयीं, तो हंसा ने पुत्री के कटे बालों को खींचकर, उसके लिपस्टिक-रंजित चेहरे पर कसकर तमाचा खींच दिया—"खबरदार जो आज से यहाँ देखा, कोठे में क्यों नहीं बैठ जाती?" इस प्रकार हवा और तूफान से लड़ती हंसा पति के हृदय-प्रासाद के प्रत्येक कपाट पर सावधानी से अर्गला लगाकर स्वयं एकछत्र साम्राज्ञी बनकर बैठ गयी। ठाकुर नयी ठकुरानी के चरणों के दास बन गये थे, फिर ईश्वर ने उनकी आशा की बेल हरी कर दी थी। हंसा के रसीले ओंठों पर पपड़ियाँ जम गयीं थीं, जिसकी एक-एक बोटी फड़कती थी, वह अब अलग होकर घंटों सोती रहती, खाने से उसे अरुचि हो गयी थी, कभी वह हिरन के भुने गोश्त खाने को मचलती, कभी कच्ची मूलियाँ ही चबा डालती।

विवाह को साल-भर हो गया था। इस एक वर्ष में साबी और चंद्रा भी मुलायम पड़ गयीं थीं। सौत ही क्यों न हो, थी तो छोरी अपनी ही बिटियाओं के उम्र की। एक कहती—'ऐसे मत उछल, नवाँ महीना लग गया है' दूसरी कहती—'हाय-हाय, ऐसे में शहद कौन चाटता है?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सौतों के स्नेहपूर्ण प्रतिबंधों में बँधकर हंसा निहाल हो गयी। विमाता की ताड़न ने उसके सुनहरे बचपन में विष घोल दिया था, दोनों सौतों के अप्रत्याशित स्नेह से सब विष घुलकर बह गया। उन्हीं के प्रेम के विमल नीर में वह डुबकियाँ लगा रही थी कि पाँसा पलट गया। हयातसिंह के तराई के खेतों में जंगली हाथियों के एक दल ने महा उत्पात मचा दिया था। हंसा पूरे महीनों से थी, किंतु उन्हें छोड़कर जाना ही पड़ा। साँझ हो गयी थी, तीनों फौव्वारे की छटा निहार रही थीं। "दिज्यू, तबियत घबड़ा रही है भीतर चलिये" हंसा ने बड़ी सौत के गले में हाथ डालकर प्यार से कहा।

"चल मरी, तेरी तो एक दिन ही में तबियत घबड़ा गयी, हमसे तो सालों बिछुड़े रहे, फिर भी हमने एक लम्बी साँस भी नहीं खींची—क्यों री चंद्रा...?" सावित्री ने हँसकर कहा "और क्या!" चंद्रा फौव्वारे की धारा में हाथ डुबाकर खेल रही थी "पर ये ठहरीं पटरानी दिज्यू—है ना हंसी!" "नहीं दीदी, सच हल्का-हल्का दर्द उठ रहा है, आप दाई को बुलवा लीजिये" हंसा का स्वर सचमुच रुँआसा हो गया—"हाय-हाय, वे भी नहीं हैं" सावी ने घबराकर कहा, दूसरे ही क्षण उसने देखा चंद्रा का चेहरा जर्द पड़ गया था और वह उसे इशारे से कुछ दिखा रही थी। सावी भय से स्तब्ध रह गयी। न जाने कहाँ से घने अंधकार को चीर एक महादानव की आकृति उनके बीच खड़ी थी। पूरे शरीर पर बड़े-बड़े काले बाल और छाती पर सफेद बालों का चौकोर धब्बा—भयानक भालू खड़ा था। सहसा बचपन में सुनी एक-एक कहानियाँ हंसा को याद हो आयीं। कुमाऊँ का जंगली भालू, नासिका-लोलुप ही नहीं, नारी लोलुप भी होता है। अपनी अंगारे-सी आँखों को घुमा-घुमाकर उसने तीनों के रूप-यौवन को परखा और फिर चीखती हंसा को बाहों में भरकर कद्दावर डगें भरता अंधकार में खो गया। अर्धमूर्छित-सी चंद्रा और सावी भय से विक्षिप्त-सी हो गयी थीं। उन्हें चीखने का भी अवकाश नहीं हो पाया था। 'हयातकोट' के सुरक्षित दुर्ग में जहाँ प्रवेश-द्वार पर सदैव एक गुरखा

दो मुक्तक

कफन बढ़ा तो किस लिए,
नजर तू डबडबा गयी,
सिंगार क्यों सहम गया,
बहार क्यों लजा गयी,
न जन्म कुछ, न मृत्यु कुछ
बस इतनी सिर्फ बात है
किसी की आँख खुल गयी,
किसी को नींद आ गयी।

★

जीवन ने कहा बहता हुआ जल हूँ मैं,
तब आके मरण बोला मरुस्थल हूँ मैं
पर आँख से जब प्यार के आँसू दो गिरे,
कण-कण यह पुकार उठा कि बादल हूँ मैं।

—नीरज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चौकीदार दुनाली लिए खड़ा रहता था, न जाने वह भालू किस दीवार को फाँदकर आ गया था !

रात ही को हयातसिंह अपनी जीप भगाकर आ गये, कुमाऊँ के इतिहास में ऐसी अनहोनी घटना कभी नहीं घटी थी। ठाकुर हयातसिंह ने कुमाऊँ के जंगल छनवा दिये, किंतु गहन वनों की अभेद्य दुर्गमता को चीरना आसान नहीं था। हंसा कहीं नहीं मिली। कुछ माह पहले यह घटना घटी होती, तो उसकी दोनों सौतें, शायद घी के दिये जलातीं, किंतु आज उसी सुंदरी सौत का विछोह उन्हें असह्य हो उठा। धीरे-धीरे दस वर्ष एक व्यर्थ प्रतीक्षा में बीत गये। हयातसिंह ने सब शौक त्याग दिये। क्लब की माया छूट गयी, कभी इक्के-दुक्के एक-आध पेग चढ़ा लेते। पहले बोटी के बिना गस्सा नहीं तोड़ते थे, अब उसी चौके में प्याज भी नहीं कटता। दस वर्षों में भी वे अपनी सुंदरी पत्नी की स्मृति को भुला नहीं पाये थे।

एक दिन वे बहुत दिनों से जंग लगी अपनी दुनाली को साफ कर रहे थे, रात बहुत हो गयी थी। उनकी दोनों पत्नियाँ जब सो गयीं, तो वे चुपचाप बंदूक लेकर गोल कमरे में आ गये थे। द्वार खटका, उन्होंने खोला तो देखा, गुमान खड़ा था। गुमानसिंह, हयातसिंह से वयस में बहुत छोटा होने पर भी उनका अंतरंग मित्र था। ठाकुर हयातसिंह के विवाह होने के पूर्व हंसा से उसके विवाह का प्रसंग भी चला था और उस प्रस्तावित रिश्ते को लेकर कभी-कभी दोनों मित्रों में रसिक छींटाकशी भी चलती थी; किंतु हयातसिंह से हंसा का विवाह हो जाने पर भी दोनों की मैत्री सुदृढ़ थी। हयात की दोनों पत्नियों को वह भौजी कहकर पुकारता, पर हंसा से कहता हन्सी। 'कुछ भी कहो हयात, आलू के ढेर में पड़े इस हीरे को पहले मैंने ही देखा, पर झपट्टा मारकर तुम ले गये।' हंसा लाल पड़ जाती। उसके गाँव में वह शिकार खेलने अक्सर आता था और कभी उस छैल-छबीले जवान ने उसकी भूख-प्यास हीं हर ली थीं। रिश्ते में वह उसकी विमाता का चचेरा भाई था। वह प्रायः शिकार खेलने आता और उन्हीं के घर टिकता। हंसा कभी उससे खाली कारतूस माँगती, तो वह हँसकर कहत— "मामा क्यों नहीं कहती मुझे ? मामा कहेगी, तब दूँगा।" "क्यों कहूँ—तुम मामा होते, तो कहती भी "" वह शैतानी से मुस्कराकर कहती।

"तो क्या हूँ री मैं तेरा ?" कहकर उसने एक दिन उसकी चोटी इतनी जोर से खींच दी कि वह खिंचती स्वयं उसकी छाती पर ही आ गिरी थी—"मैं तुझे अपनी भंगेजे (सगाई) के लिए माँग लूँगा हंसा, विद्या कसम, इसी इतवार को आऊँगा" वह कह गया था। पर इतवार के पहले आता था शनि और शनीचर के दिन ही पांडेज्यू उसे ठाकुर हयातसिंह के लिए माँग ले गये। हयातसिंह था लाखों का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मालिक, गुमानसिंह था एक सामान्य-सा ठेकेदार। विवाह होने के पश्चात उसने गुमानसिंह को अपने यहाँ हयातसिंह से हंसते-बोलते देखा, तो भय हुआ कि कहीं ईर्ष्यावश वह उसकी कारतूस-याचना का भेद न खोल दे, पर उसकी अलमस्त हँसी सुनती, तो उसका भय बह जाता। अपने वैभव में भी वह उसके उदास चेहरे को भूल नहीं पाती। हंसा के खो जाने के बाद भी वह प्रायः तराई से चला आता था। पर इतनी रात को उसे देखकर ठाकुर अवाक् रह गये– "गुमान इतनी रात को कैसे चले आये?" उन्होंने अपनी बंदूक नीचे रख दी।

"मैंने आज एक अजब नजारा देखा है हयात–सोचा, तुम से नहीं कहूँगा, तो पागल हो जाऊँगा" उसके रूखे बाल बिखरे थे और चेहरा जरा-सा निकल आया था।

"क्या बात है गुमान, बैठो, लो थोड़ी-सी ब्रैंडी लो" कहकर ठाकुर ने अपने सेल्फ से बोतल निकाली–एक साँस में ब्रैंडी घुटककर गुमान ने हयात के कंधे पर हाथ रक्खा। 'हयात' बहुत धीमी आवाज में वह बोला–"मैंने आज तुम्हारे बेटे को देखा।"

"पागल हो गये हो क्या या निरी जिन चढ़ाकर आये हो?" हयातसिंह ने आश्चर्य से अपने मित्र की ओर देखा–"नहीं हयात, गंगा की सौं, सिर से पैर तक तुम्हारा बेटा, पक्के ठाकुर का बेटा! आज देवलधार के जंगल से होकर आ रहा था। देखता क्या हूँ कि एक भयानक भालू चला आ रहा है। पीछे-पीछे चार हाथ-पैर टेकता राजकुमार-सा एक नौ-दस साल का बच्चा। हंसा को उसने मारकर फेंक दिया, पर इस चाँद के टुकड़े को नहीं मार सका..."

"कैसे कह रहे हो कि हंसा को मार दिया?" क्रोध और अविश्वास से ठाकुर का स्वर झुंझला उठा–जैसे अभी भी वह अपनी प्रेयसी की मृत्यु को अफवाह रूप में ही सुनना चाहते थे।

"तो सुनो हयात, आज नहीं, उसने हंसा को उसी दिन मार दिया था। कह नहीं सकता कि अभागिनी की मृत्यु उस दानव भालू के हाथों हुई या गहन अंधकार से घिरे जंगल में प्रसव-वेदना ने उसके प्राण लिये। जब तुम कुमाऊँ के जंगल छनवा रहे थे, मैं भी स्वयं रात-रात मशाल ले कर ओना-कोना छान रहा था। तीसरे ही दिन देवलधार के जंगल में खून से लथपथ उसकी लाश मुझे मिली थी। जंगल की लकड़ियाँ जुटाकर मैंने उस चंदन-सी काया का दाह किया। तुम से नहीं कहा हयात, इसलिए कि तुम से पहले मैंने ही उसे प्यार किया था। जिसकी जीवित काया को पाने के लिए मैं तरसता रहा; उसकी निष्प्राण देह पर भी मेरा उतना ही मोह था, उसे छाती से लगाकर मैं रात-भर बैठा रहा। प्रातः होने से पूर्व ही एक तीव्र दुर्गंध से मैं तटस्थ हुआ। सूरज उगने से पहले ही मैंने उसकी चिता रचा दी। जिस अग्नि में मैं झुलसता आया था, उसी में तुम्हें भी झुलसाने का मेरा न जाने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कैसा बचपना था। सुनो हयात, मन का पाप कह देने पर पाप नहीं रहता—मैंने उसे बहुत प्यार किया था और तुम हमारे बीच न आते, तो शायद वह भी मुझे बहुत प्यार करती। अब वह नहीं रही हयात, पर उसके बेटे को—तुम्हारे बेटे को छुड़ाकर लाना ही होगा।

हयातसिंह फटी-फटी आँखों से उसे देख रहे थे, जैसे अनहोनी घटना को वे किसी प्रकार भी स्वीकार नहीं कर पा रहे थे।

"चलो हयात, सोच क्या रहे हो, बड़ी चतुरता से ही गोली चलानी होगी। बच्चा उसके पीछे सटकर रहता है। उस दिन तेंदुए पर तुम्हारा निशाना काँप गया। तुम बच्चे को पकड़ना, मैं ही गोली चलाऊँगा"—वह पागलों की तरह बकता जा रहा था—"निशाना चूका, तो कहीं के नहीं रहेंगे हयात, बंदूक छीन लेता है भालू, चलो-चलो देर मत करो....."

चुपचाप दोनों बंदूकें लेकर पिछवाड़े से दीवार फाँदकर चोरों की भाँति निकल गये। साबी-चंद्रा जग जातीं, तो तूफान मचा देतीं। इतनी रात को शिकार, वह भी भालू का....."

ग्राम का थोकदार धरमदेव लुटिया लेकर दिशा-जंगल जा रहा था, सहसा वह धमककर खड़ा रह गया। देवलधार की जानलेवा चूने की चट्टान से दो टूटी चट्टानें-सी लुढ़कती चली आ रहीं थी। पीछे-पीछे दो काली लकड़ियाँ। निकट आने पर उसने देखा, वे चट्टानें नहीं गुमान और हयातसिंह की क्षत-विक्षत देह थीं और काली लकड़ियाँ थीं, निर्ममता से तार की भाँति मोड़ी-मरोड़ी दो बंदूकें। गुमानसिंह का चेहरा नुचे मांस से वीभत्स बन गया था और उसमें प्राण के कोई चिह्न नहीं थे, किंतु ठाकुर हयात सिंह की साँस थोड़ी-थोड़ी चल रही थी। धरमदेव भागकर सबको बुला लाया, लादकर उन्हें हयातकोट ले गये। मुख में गंगाजल की बूँदें डालकर साबी और चंद्रा ने उनके ओंठों के पास कान सटा लिये। रक्त से सने, सूजे ओंठ बुदबुदाये—"ठीक कह रहा था गुमान—ठाकुर का बेटा है, ठाकुर का।" और लहूलुहान शरीर निष्प्राण पड़ गया।

★

मेरे साथ-साथ महसूस करो कि बुढ़ापा आ ही गया ? और जो सर्वोत्तम है, वह सामने आने ही वाला है। जीवन का वही अंतिम सत्य, जिसके लिए वह पहला सत्य बना था।

—बिशप आफ ब्रांडफोर्ड

★

क्या ही अच्छा होता कि हमने किसी को प्यार न किया होता, और यह अवश्य ही अच्छा होता कि हम प्यार में अंधे न रहे होते, सबसे अच्छा तो यह होता कि न किसी से मिलते, न बिछुड़ते और इस तरह कभी भी हमारा हृदय चूर-चूर न होता। —राबर्ट बर्न्स

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जय की बानि

मन्मथनाथ गुप्त

जब दुखहरण हवालात में बंद कर दिया गया, तभी उसे होश आया कि उसने क्या किया है। तब तक तो वह जैसे नशे में था। सब कुछ आवेश में करता गया था। वह दोपहर के समय एकाएक किसी काम से घर पर आया, तो उसने देखा कि उसके खपरैल-घर का दरवाजा भीतर से बंद है। समझा कि उसकी स्त्री सुमित्रा भीतर सो रही होगी। उसने बाहर से दरवाजे पर धक्का दिया, पर वह नहीं खुला। फिर समझा कि अधिक सो गयी होगी, तो उसने बाकायदा दरवाजे को भड़भड़ाया। जब फिर भी दरवाजा नहीं खुला, तब उसे शक हुआ कि कहीं सुमित्रा ने आत्महत्या तो नहीं कर ली। शहर से यह बीमारी भी गाँवों में काफी फैल चुकी थी, पर सुमित्रा को आत्महत्या करने का कोई कारण तो था नहीं। इस प्रकार से वह सोचता गया और दरवाजा पीटता गया। अंत में जब उसने देखा कि नहीं, ऐसे नहीं चलेगा, तब उसने दरवाजे पर बहुत जोर का धक्का मारा और दरवाजा झनझनाकर गिर पड़ा।

उसने अपने सामने जो दृश्य देखा, एक बार तो उसे अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हुआ। सुमित्रा एक कोने में खड़ी थरथर काँप रही थी। उसके कपड़े-लत्ते अस्तव्यस्त थे, आँखें लाल हो रही थीं, चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही थीं। दुखहरण कुछ समझ नहीं पाया था कि मामला क्या है। इतने में उसी कमरे के दूसरे कोने से उसका पड़ोसी रामचरन तीर की तरह निकला और बिना कुछ कहे-सुने खुले दरवाजे से निकल गया। एक सेकेंड के सौवें हिस्से में यह कांड हो गया। पर इससे भी फुर्ती से जो कांड हुआ, वह यह था कि दुखहरण ने दीवार पर टँगे हुए फर्से को उठा लिया और लपककर रामचरन के पीछे दौड़ा।

फिर उसके बाद क्या हुआ, यह याद करने पर ही उसे याद आया। एक वार में ही उसने पीछे से रामचरन को गिरा दिया और दूसरे वार में तो वह खतम हो ही गया। अब वह अपनी स्त्री को मारने के लिए चला, पर तब तक गाँववाले इकट्ठे हो गये थे। फिर वह जहाँ सुमित्रा को छोड़ गया था, वह वहाँ मिली भी नहीं। लोगों ने उसे पकड़ लिया, उसका फर्सा छीन लिया गया, और थोड़ी देर में वह थाने में बंद कर दिया गया। वहीं पर उसे सारी बातें एक-एक करके पहले बिना तरतीब के और बाद में तरतीब से याद आयीं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अरे, हल और बैल तो खेत में ही छूट गये थे। वह तो घर में एक रस्सी लेने आया था। हल एक जगह से कमजोर हो गया था, उसे वहाँ से बाँधना था। और यह सारा कांड हो गया। उसके मन में हल और बैल के लिए चिंता होने लगी, पर... अब कोई चिंता नहीं रही थी। जब कुछ भी नहीं रहा, तो अब वह हल-बैल की चिंता क्या करता! एक बार उसने सोचा कि सुमित्रा कहाँ गयी। पर फिर सोचा कि जब सुमित्रा ने उसे इस प्रकार से धोखा दिया, तो अब उसे किसी से मतलब नहीं।

पुलिस तथा अदालत के सामने दुखहरण ने सारी बात स्वीकार कर ली। छोटी अदालत ने उसे सेशन सुपुर्द कर दिया। जब मुकदमा सेशन में गया, तो वह मिस्टर सेठ नामक एक अधेड़ उम्र के जज के सामने गया। न मालूम क्या बात है शुरू से ही, जज साहब ने अभियुक्त के प्रति बहुत विरोधी रुख लिया। दुखहरण को सरकार की तरफ से एक वकील साहब मिले थे, जो अपना काम बहुत सच्चाई के साथ कर रहे थे। बार-बार जज साहब के सामने इसी बात को रखते थे कि अभियुक्त ने जो कुछ किया, वह बहुत भारी उत्तेजना के वशवर्त्ती होकर किया। वकील का यह कहना केवल भावुकता के प्रति एक निवेदन मात्र नहीं था, कानून की दृष्टि से भी यह एक उचित कारण था, पर जज साहब मिस्टर सेठ इस बात को जब भी सुनते तो झुंझला जाते।

मुकदमे के आरम्भ में ही मिस्टर सेठ ने एक दिन सफाई के वकील को डाँट दिया, बोले—"यह क्या आप बार-बार उत्तेजनावश, उत्तेजनावश कहा करते हैं?"

सफाई के वकील ने कहा—"हुजूर सुमित्रा उसकी व्याहीं हुई स्त्री थी, जब उसने उसे रामचरन के साथ ऐसी आपत्तिजनक अवस्था में देख लिया, तो....."

बीच में ही बात काटकर मिस्टर सेठ बोले—"तो क्या? तो उसे यह हक थोड़े ही हो गया कि वह उसे मार डाले। गुफा में रहनेवाले अपने पूर्व-पुरुषों से मनुष्य आगे बढ़ चुका है।....." कहकर हँस पड़े। उनके मन में इस समय अपने वर्तमान जीवन की कुछ बातें घूम आयीं। बहुत दिनों से वे अपने एक मित्र श्री लाल की स्त्री से फँसे हुए थे। यह नहीं कि वह अपनी स्त्री से प्यार नहीं करते थे, पर वह पाँच बच्चों की माँ थी। घर के काम-काज, रिश्तेदारी आदि से उन्हें फुर्सत नहीं मिलती थी, जिस पर लड़कों और लड़कियों के लिए वर और वधू खोजने का काम भी था। इसी कारण सेठ साहब क्लब में जाया करते थे और वहीं पर उन्होंने इस अनमोल रत्न श्रीमती लाल को ढूँढ़ निकाला था और श्रीमती लाल के साथ उन्होंने अपने को भी ढूँढ़ निकाला था।

अदालत में जब भी रामचरन की बात सामने आती थी, तभी वे अपनी बात बिना सोचे नहीं रह पाते थे। वे दुखहरण ऐसे व्यक्ति से सचमुच घृणा करते थे। एक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तब उन्होंने अभियुक्त से कह भी दिया—देखो जी, अगर तुमने यह देखा कि तुम्हारी बीवी ने तुम्हारे साथ धोखा किया, तो तुम उससे अलग हो जाते। दूसरी शादी कर लेते, पर यह क्या अहमकपन है कि फर्सा लेकर उसके पीछे पड़ गये।....." कहकर उसे देखकर उन्होंने आँखें बना लीं। सचमुच सभ्यता के इस युग में ऐसे लोग बड़े मिसफिट थे।

जज साहब यों तो अदालत के अभियुक्त से बोल रहे थे, पर यह उपदेश वे अपनी सहेली के पति श्री लाल को दे रहे थे, जिससे उन्हें कुछ-न-कुछ डर तो बना ही रहता था। अवश्य जज साहब इतने मूर्ख नहीं थे कि वे श्री लाल के घर पर जायें, जैसे रामचरन गया था। वे तो अपनी प्रेयसी को कहीं पिकनिक या अन्य ऐसे स्थान पर बुलाते थे कि कोई इस प्रकार का खतरा पेश न आ पाये। अभी-अभी यह महिला स्वास्थ्य के बहाने नैनीताल पहुँची थी, उसके पति उसके साथ न जा सके थे। पर जज साहब छुट्टी लेकर पास ही के बँगले में टिके हुए थे। वे भी स्वास्थ्य सुधारने के बहाने आये हुए थे; अवश्य घर के लोग यही जानते थे कि वे किसी सरकारी काम से बाहर कमीशन पर गये हैं। अगर मान लीजिये उनकी प्रेयसी का पति नैनीताल पहुँच जाता, तो कितनी असुविधा होती? फिर केवल यही नहीं, पहुँचता और फर्सा लेकर पहुँचता। यह तो अकल्पनीय है।

इसी कारण जब सुमित्रा गवाही देने आयी, तो जज साहब ने भरसक यही प्रयत्न किया कि वह यही कहे कि कोई उत्तेजना उत्पन्न करनेवाली परिस्थिति नहीं थी। उनका इशारा पाकर इस्तगासा का वकील भी यही प्रमाणित करने की चेष्टा कर रहा था, मानों सुमित्रा और रामचरन बाहर खड़े बात कर रहे थे, और दुखहरण ने उन पर ख्वामख्वाह हमला कर दिया। सुमित्रा के लिए भी इस प्रकार की गवाही देना आसान था। सफाई पक्ष के वकील ने फिर भी कुछ विंदु बना ही लिये। पर जज साहब अंत तक इसका विरोध करते रहे। दुखहरण तो सारी कार्रवाई के प्रति उदासीन-सा हो रहा था, पर जब सुमित्रा ने भरी अदालत में यह कहा कि वह खड़ी होकर रामचरन से बात कर रही थी, इस पर दुखहरण ने आकर रामचरन पर पीछे से फर्से से हमला कर दिया, तो उससे रहा नहीं गया। वह एकाएक चिल्लाकर बोल पड़ा ...—" धरम से बोल कि जो कुछ तू कह रही है, वह सच है?"

उसकी डाँट सुनकर सुमित्रा कुछ तिलमिला-सी गयी, पर फौरन सरकारी वकील ने उसे सम्भालते हुए कहा—"तुम इसकी मत सुनो, मेरे सवालों का जवाब दो।"

फिर उसने अदालत से कहा कि गवाह को अभियुक्त की धमकियों से बचाया जाये। इस पर जज साहब ने अभियुक्त के कठघरे की तरफ के संतरियों को इशारा किया, और उन लोगों ने दुखहरण को जबर्दस्ती

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पकड़कर बेंच पर बैठा दिया। जज साहब ने रुखाई के साथ कहा—"दुखहरण, तुम अगर गवाह को छेड़ोगे, तो तुम्हें हथकड़ी डाल दी जायेंगी। तुम्हारी तरफ से वकील मौजूद है, जो कुछ कहना है उन्हीं से कहो।"

इस प्रकार गवाही तो बच गयी, पर न्याय का गला घोंट दिया गया। इसी प्रकार दो महीनों तक मुकदमा चलता रहा। जज साहब इस तरह के समाजविरोधी व्यक्ति को फाँसी देना चाहते थे, पर वे जानते थे कि ऊँची अदालत में फाँसी की सजा नहीं रह सकती, इसी कारण उन्होंने दुखहरण को कालेपानी की सजा दी।

इसके बाद दुखहरण एक सेंट्रल जेल में भेजा गया, क्योंकि बड़ी मियाद के कैदियों को जिला-जेलों में रखने का नियम नहीं है। वहाँ पर उसने एक दूसरी ही दुनिया पायी। जेलर एक ऐंग्लो इंडियन था। वह इतना दुष्ट था कि उसके नाम से सारे कैदी थर-थर काँपते थे। न मालूम कितने कैदियों को उसने मारते-मारते मार डाला था। मार कर फिर डाक्टर से मिलकर यह लिखवा दिया करता था कि कैदी न्युमोनिया से मर गया।

कोई पैसेवाला आदमी यदि जेल में फँसकर आ जाता था, तो वह छल-बल-कौशल से उसकी सारी जायदाद दूह लेता था। जेल में उसके कुछ एजेंट लगे हुए थे, वे ही उसे खबर देते रहते थे कि किसके साथ क्या करने से पैसे वसूल होंगे। इन बातों के अलावा वह बड़ा दुश्चरित्र भी था। सेंट्रल जेल से लगी हुई स्त्रियों की जेल भी थी। वहाँ तो उसकी दाल नहीं गल सकती थी, पर वहाँ काम करनेवाली स्त्री-वार्डरों तथा अन्य स्त्रियों पर वह हमेशा जबर्दस्ती चलाता रहता था। अपने यहाँ के दो-एक भारतीय वार्डरों की स्त्रियों से भी उसकी साँठ-गाँठ थी। उसके लिए इन स्त्रियों से दोस्ती करना बहुत आसान इस कारण था कि वही वार्डरों की ड्यूटी लिखा करता था। ऐसे वार्डरों की ड्यूटी हमेशा रात को डाला करता था, जिससे कि उसकी दुष्टता में कोई बाधा न पहुँच सके।

तो इसी जेलर के सामने दुखहरण पेश किया गया। जेलर का नाम मिस्टर मूडी था। मूडी ने दुखहरण की तरफ देखा भी नहीं, पर जब उसने उसका वारंट पढ़ लिया, तो हँस पड़ा और दुखहरण को इस प्रकार से देखने लगा मानों वह कोई अजीब किस्म का जंतु हो। उसे तो ऐसे व्यक्ति बहुत हास्यजनक मालूम होते थे। वह ठहाका मार कर हँसा—"हा हा हा हा, तुम बड़ा बहादुर है....."

पास खड़े तजुर्बेकार लोग समझ गये कि अब दुखहरण की खैरियत नहीं है। दुखहरण बोला—"हजूर नहीं ....." जिला-जेल में रहते-रहते दुखहरण ने यह सीखा था कि हर एक को हजूर कहना चाहिये।"

मिस्टर मूडी फिर हँसे, बोले—"तुमारी बीवी बहुत खूबसूरट है?"

दुखहरण कुछ नहीं बोला। वह सिर नीचा किये हुए जमीन की तरफ देख रहा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

था। इतने में मूडी ने पता नहीं कुछ इशारा किया, या क्या हुआ, आठ-दस आदमी डंडा लेकर उस पर पिल पड़े। वह गिर गया और थोड़ी ही देर में बेहोश हो गया, तब उसे उठाकर अस्पताल भेज दिया गया। मूडी ने अपनी हिन्दी में अपने मुसाहबों से जो कुछ कहा उसका सारांश यह है– "यही लोग दुनिया को तबाह किये हुए हैं। जब तुम्हारी बीवी तुम से राजी नहीं है, तो उसको जाने दो, उसके पीछे किसी की जान क्यों लेते हो।....." फिर बिगड़कर अंग्रेजी में बोला–"ये जज भी साले एक नम्बर के गदहे होते हैं। ऐसे असभ्य आदमी को फाँसी देकर छुट्टी करते–यह नहीं इसको बीस साल की सजा करके यहाँ भेज दिया। इसीलिए तो हमें अपने हाथों से सजा देनी पड़ती है।"

कहकर वह मूँछों पर ताव देता हुआ वहाँ से चला गया। खैर, दुखहरण के भाग्य में जीना बदा था, वह अच्छा हो गया और उसे चक्की दी गयी। इसी प्रकार से बीच-बीच में उस पर मार पड़ती, पर उसने मरने से इन्कार किया। सब दुःखों को सह कर भी वह जीवित रहा।

कायदे के अनुसार हाईकोर्ट में उसके मुकदमे की अपील जेल की तरफ से की गयी। यह अपील मिस्टर डुग्गल नामक जज के सामने गयी। जस्टिस डुग्गल ने अपील को बड़े ध्यान से सुना। बहुत बुद्धिमान जज समझे जाते थे और चीफ जस्टिस के प्रियपात्रों में थे। जब देखो तब चीफ जस्टिस के यहाँ उनकी दावत रहती थी। दुष्ट लोग यह कहते थे कि उनकी स्त्री लेडी डुग्गल चीफ जस्टिस के साथ फँसी हुई थीं, और इसी कारण से चीफ जस्टिस के यहाँ उनकी दावत रहा करती थी। नाचों में अक्सर चीफ जस्टिस और लेडी डुग्गल एक साथ नाचा करते थे। इन दिनों यह अफवाह बहुत बढ़ गयी थी। यहाँ तक कि यह जस्टिस डुग्गल के कानों तक पहुँच चुकी थी और उन्हें भी कुछ बातों से शक हो गया था। इधर उन्होंने चीफ जस्टिस की दो हुई एक दावत में जाने से यह कहकर जी चुराया था कि उनकी तबीयत ठीक नहीं है। वे यह उम्मीद करते थे कि लेडी डुग्गल भी उस दावत में न जायेंगी। पर वह एक सहेली से मिलने का बहाना करके गयीं और जस्टिस डुग्गल उस दिन से और भी परेशानी में रहने लगे। कुछ सोच नहीं पा रहे थे कि क्या करें। कभी-कभी वे आत्महत्या की बात सोचते थे, तो कभी पेन्शन की बात सोचते।

इतने में यह मुकदमा उनके सामने आया। इस्तगासा की दलीलों को सुनने के बाद जस्टिस डुग्गल ने कहा–"मैं अभी कुछ नहीं कहूँगा, पर मुझे ऐसा मालूम होता है कि विद्वान् सेशन जज ने कानून के अर्थ का अनर्थ कर डाला। जब तक परिवार-प्रथा कायम है, तब तक पति को यह आशा करने का पूर्ण अधिकार है कि उसकी स्त्री उसके प्रति सच्ची रहे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दांतों की सड़न और मसूड़ों की तकलीफ से आराम होने के आश्चर्यजनक अनुभव

अनपेक्षित पत्र फोरहन्स टूथपेस्ट की श्रेष्ठता प्रमाणित करते हैं

" मेरी आयु इस समय ५९ वर्ष की है

मेरे सभी दांत ज्यों के त्यों हैं। मगर १९४३ में मेरे बीच के और बगल के-ऊपर तथा नीचे के-दोनों दांत कमजोर होकर हिलने लगे। मैंने वास्तव में सोचा कि अब वे गिर जायेंगे। १९४३ में एक दिन मैंने फोरहन्स का नुस्खा देखा। मैंने उसे इस्तेमाल करना शुरू किया और अब मुझे यह कहते हुए बड़ी खुशी होती है कि फोरहन्स ने मेरे दांतों को बचा लिया और उन्हें मजबूत तथा दृढ़ बना दिया है।"

" मैंने हमेशा फोरहन्स के इस्तेमाल की सलाह दी है

मैंने अपने रोगियों को जब कभी उन्होंने दांतों और मसूड़ों की तकलीफों की शिकायत की हमेशा फोरहन्स के इस्तेमाल की सलाह दी है। और वे रोगी हमेशा हमारे आभारी रहे हैं। यहां तक कि बच्चे रोगियों को भी मैं फोरहन्स का इस्तेमाल करने के लिए प्रोत्साहित करता हूं। हमारे दवाखाने में आने वाले बहुतसे लोग अपने बच्चों के लिए फोरहन्स का इस्तेमाल करते हैं।"

" फोरहन्स के इस्तेमाल से मुझे बहुत लाभ हुआ है

मैंने पहले अपने पिताजी से सुना था कि फोरहन्स मसूड़ों के लिए बहुत लाभदायक होता है। बाद में जब मेरे मसूड़ों में तकलीफ उत्पन्न हुई तब मुझे पिताजी की सलाह याद आ गयी। और मैंने फोरहन्स का इस्तेमाल करने का निर्णय किया और तब से बराबर इस्तेमाल कर रहा हूँ।"

फोरहन्स
दांत के डाक्टर द्वारा तैयार किया गया टूथपेस्ट

GEOFFREY MANNERS & CO. LTD.

E. 20 HIN.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं इसमें दुखहरण की तरफ से जो प्रबल उत्तेजना का बहाना पेश किया गया है, इसे अवज्ञा की दृष्टि से नहीं देख सकता। बहरहाल रामचरन के प्रति तो किसी को कोई सहानुभूति हो ही नहीं सकती।"

तीन दिनों तक मुकदमे की सुनवाई होती रही। अंत तक जस्टिस डुग्गल ने दुखहरण पर से ३०२ याने हत्या का मुकदमा उठाकर उस पर ३०४ याने आकस्मिक नरघात का दफा लगा दिया और उसकी सजा को घटाकर बीस साल से दो साल कर दिया। अपने फैसले में जस्टिस डुग्गल ने सेशन जज को इस कारण बहुत भला-बुरा कहा कि उन्होंने उचित उत्तेजना पर ध्यान ही नहीं दिया, और सारे मुकदमे का केंद्र-बिंदु यही था।

दुखहरण इस समय तक डेढ़ साल कैद काट ही चुका था। सब कैदियों की तरह उसे दो तीन महीनों की छूट मिली और वह जल्दी ही छूट गया। दुखहरण यह समझ ही नहीं पाया कि क्यों उसे पहले बीस साल की सजा हुई, क्यों उसे जेलर बराबर मारता था और क्यों हाईकोर्ट ने उसकी सजा घटा दी। न तो वह इन बातों को समझ पाया और न आगे ही कभी समझ पायेगा।

★

ऋषि देवल की पुत्री सुवर्चला ने अपनी इच्छा के अनुसार पति का वरण किया। वह एक ऐसे पति को चाहती थी, जो कि अंधा भी हो और अंधा न भी हो। कितने ही मुनि कुमार पाणिग्रहण की इच्छा से उनके पास आये, परंतु किसी ने भी उसे संतोषजनक उत्तर न दिया। अंत में उद्दालक के पुत्र श्वेतकेतु भी पाणिग्रहण की इच्छा से देवल के आश्रम में आये। सुवर्चला के प्रश्न करने पर उन्होंने उत्तर दिया—"मेरे विशाल नयन हैं इसलिए मैं 'अंधा नहीं हूँ', परंतु आँख ही क्या, शेष इंद्रियाँ भी जिन विषयों का ग्रहण करती हैं, वे विषय मुझे आसक्त नहीं कर सकते। और मैं अंधा हूँ लोकदृष्टि से तो मैं इन इंद्रियों से सभी काम करता हूँ, परंतु आत्म-दृष्टि से उन सबका अभाव कर देता हूँ।"

सुवर्चला इस उत्तर को सुनकर संतुष्ट हो गयी। श्वेतकेतु सुवर्चला को लेकर अपने घर आ गये और सुवर्चला से कहने लगे :

"व्यक्तित्व के भाव से मैं भी सत्तावाला हूँ और आप भी उसी प्रकार सत्तावाली हैं, अतः मुझे और आपको कर्म अवश्य करने चाहिये; परंतु इन कार्यों को करते हुए 'ममत्व' की भावना नहीं रखनी चाहिये।"

★

फिल्मी कलाकार ने कहा—"डायरेक्टर साहब, मैं चाहता हूँ कि ड्रामे में जरा-सी भी बनावट न आने पाये। दूसरे सीन में शराब की जगह पानी पीने से वह बात नहीं बनती, जो बननी चाहिये। इसलिए आप ह्विस्की की एक बोतल मँगा लीजिये।"

डायरेक्टर—"तब तो आखिरी सीन के लिए भी असली जहर मँगवाना पड़ेगा, वरना बात नहीं बनेगी।"

—अब्बासी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने सारे परिवार के कपड़े घर में सर्फ़ से धोइये...साड़ियाँ, चादरें, कमीज़ें, तौलिये। सर्फ़ में धुलाई की अधिक शक्ति है जिसके कारण आप के कपड़े अत्यंत आसानी से अपूर्व सफ़ेद और साफ़ धुलते हैं। घर में धुलाई का यह सर्वोत्तम साधन है।

सर्फ़ से कपड़े सब से सफ़ेद धुलते हैं!

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

SU. 27-X29 HI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उत्तरी ध्रुव के अद्भुत शिकारी

हिम की तरह कठोर ठंडी मृत्यु से संघर्षरत साहसिक कुत्ते, जो उत्तरी ध्रुव के मनुष्य के लिए वरदान की तरह होते हैं।

जान जीवर

"भगवान् के लिए जरा एक बार उस तरफ मुँह फेर ले मैगी" नट ने भूख से शिथिल आवाज में कहा और साथ ही अपनी दुनाली उठायी। लेकिन मैगी है कि नट के घुटनों पर आराम से अपना रोमिल मुखड़ा रखे टुकुर-टुकुर उसकी ओर निहार रही है। अब कैसे इसे मार दिया जाये? और यदि इसे न मारा जाये, तो सात दिन के भूखे इन पाँच प्राणियों का क्या होगा, कैसे नट और उसके शेष चार कुत्ते तीन मील दूर उस अगली झोंपड़ी तक पहुँच जायेंगे? और पहुँच जाने पर भी उस झोंपड़ी में खाने को कुछ न हुआ तो! ...

और मैगी को मारे भी न, तो फिर किसे मारा जाये? ठीक है कि मैगी सबसे ज्यादा होशियार है, दिमागवाली है, इसके मुकाबिले में और जानवर बिलकुल बुद्धू हैं; लेकिन इस इलाके में दिमाग की जरूरत किसको है? यहाँ तो बस ताकत चाहिये, पाशविक ताकत, जो स्लेज को इन अंतहीन दूरियों में बस खींचती ही रहे। यह जिंदा-दिल मैगी तबियत जरूर खुश रखती है; लेकिन जब जिंदगी ही खतरे में पड़ गयी है, तो.....

और दिल को कड़ा करके नट ने फिर अपनी उस दुबली; लेकिन सबसे लाड़ली कुतिया को मारने के लिए बंदूक सीधी की। लेकिन मैगी ने अपनी सरल, उदास, चमकीली आँखें, नट के मुँह पर से न हटायीं।

"लेट जा मेरी मैगी, सच मरने में कोई तकलीफ नहीं होती।" फिर उसे अपनी इस दुर्बलता पर क्रोध हो आया। इतनी करुणा ध्रुव-प्रदेश के मौत से निरंतर जूझनेवाले इन्सान को शोभा नहीं देती। उसने गुस्से से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह एक आम ख्याल है कि ऊंचे दामों की सिगरेटें उनके दाम के अनुरूप बढ़िया होती हैं। हमेशा या हर हालत में यह बात सही नहीं है, क्योंकि इन सिगरेटों के दामों में अधिकतर भाग हमारे देश द्वारा लगाये गये आयात तथा आबकारी करों का रहता है।

तम्बाकू की कहानी....नं. १०

पनामा

एक अच्छी सिगरेट है —
यह आख़िरी कश तक मज़ा देती है!

GTC
GOLDEN TOBACCO COMPANY PRIVATE LTD.

बम्बई—५७

भारत में
इस प्रकार का सबसे बड़ा
राष्ट्रीय उद्योग

Greens' Advtg.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैगी को हुक्म दिया—"उस तरफ लेट जा।"

मैगी का चेहरा और भी उदास हो गया। उसकी आँखों में दैन्य और ज्यादा फूट आया। वह और पास आ गयी और नट के हाथ चाटने लगी।

नट ने बंदूक फिर रख दी और सोने की कोशिश करने लगा।

आज आठवाँ दिन है, जबकि एक भी दाना टप में नहीं गया है। भयंकर बर्फानी तूफान चल रहा है। कुत्ते भी मौत की घड़ियाँ गिन रहे हैं और उनका मालिक भी। पिछले चार दिनों से नट अधिक-से-अधिक देर तक सोने की कोशिश करता रहा, ताकि भूख को भूल सके; लेकिन अब तो नींद भी नहीं आती।

अपनी शिथिल देह को उठाकर एक बार नट झोंपड़ी के दरवाजे तक ले गया। जरा-सा द्वार खोलकर उसने झाँका ग्रीनलैंड का भयंकर तूफान पूरी ताकत के साथ उस वीराने में गरज रहा था।

कोई चारा नहीं है। मैगी को मरना ही होगा। "दूर हट मैगी, समझती क्यों नहीं कि तू ही मरेगी, क्योंकि दूसरे कुत्ते तुझ से ज्यादा जरूरी हैं।"

लेकिन दूसरे ही क्षण उसकी आँखें गीली हो आयीं। उसने मैगी का मुखड़ा अपने दोनों हाथों में लेकर कहा—"तेरे बिना यह सूनी जिंदगी और भी सूनी हो जायेगी मैगी। पर कोई इलाज नहीं है। सब-के-सब तो मर नहीं सकते।"

उसने देखा कि पास ही मैगी पड़ी सो रही है। एकाएक मन को कड़ा करके उसने बंदूक उठायी। मोमबत्ती के धुँधले प्रकाश में भी उसे उसका सिर दिखायी पड़ रहा था।

धाँय!

उस जोर के धमाके से वह खुद भी चौंक पड़ा था। एक क्षण मैगी की याद उसके मस्तिष्क में फिर उभर आयी, जो अब ढेर हुई वहाँ पड़ी थी। उसने आहिस्ता से उसके बाल पकड़कर खींचा।

पर यह क्या? यह तो मैगी नहीं है। यह तो सबसे ताकतवर; लेकिन सबसे बुद्धू कुत्ता पाल है।

नट ने उस धुँधले प्रकाश में यहाँ-वहाँ नजरें घुमायीं। देखा मैगी एक कोने में दीवार की ओर सिर के पड़ी हुई थी। नट ने हाथ बढ़ाकर उसे खींचा, तो हल्के-हल्के गुर्राकर उसने अपने को छुड़ा लिया और फिर अपनी जगह पहुँचकर उसकी तरफ ताकने लगी।

"अच्छा, तो आप मेरी नींद का फायदा उठा ले गयीं। खैर, अब जो हुआ सो हुआ। पाल तुम बहुत अच्छे जानवर थे; लेकिन इस मैगी की चालाकी के शिकार बन गये।"

पाल के मांस से नट और उसके साथियों में फिर से जीवन का संचार हुआ और वे कुछ इत्मीनान के साथ तूफान थमने की प्रतीक्षा करने लगे।

आखिर उस सर्वग्रासी तूफान का भी अंत आया और नट ने अगले पड़ाव की यात्रा का निश्चय किया। ग्रीनलैंड की दिशाहीन श्वेत वीरानी चारों ओर छायी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वॉटरबरीज़
लाल लेबल
कम्पाउन्ड
सर्दी-ज़ुकाम और खांसी के लिये।

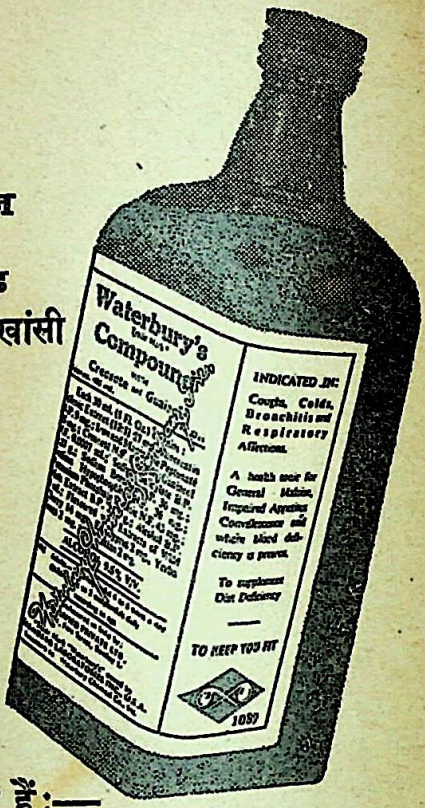

इसमें ये चार गुण हैं:—

१ वॉटरबरीज़ कम्पाउन्ड सर्दी-ज़ुकाम को पूरी तरह सत्य करके जल्दी आराम पहुँचाता है।	२ वॉटरबरीज़ कम्पाउन्ड में क्रिओसॉट और वॉयाकॉल नामक पदार्थ भी मिले होते हैं जो बलगम का नाश करके फेफड़ों को साफ़ रखने में मदद करते हैं।	३ वॉटरबरीज़ कम्पाउन्ड सर्दी-ज़ुकाम और खांसी के अतिरिक्त, तन्दुरुस्ती के लिए भी विश्वसनीय टॉनिक है।	४ वॉटरबरीज़ कम्पाउन्ड के उपयोग से, शरीर के लिए आवश्यक, चाहुओं की कमी पूरी होती है, भूख ज़्यादा लगती है, खून बढ़ता है और हाज़मा ठीक रहता है।

वॉटरबरीज़ कम्पाउन्ड
लाल लेबल

वॉटरबरी-कॉम्पाउंड फ़ॉर्मास्युटिकल कम्पनी (लीमिटेड बाइ गैरेन्टी)
यू. एस. ए. में संस्थापित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हुई थीं। बर्फ पहले तो धीमे-धीमे गिर रही थी, और फिर एकाएक थमा हुआ तूफान न जाने कहाँ से उमड़ आया।

नट और उसकी स्लेज धीरे-धीरे बढ़ रहे थे। तीन मील क्या छः मील चल चुके होंगे; किंतु अगली झोंपड़ी का कहीं कोई निशान ही नहीं। तब क्या नट भटक गया? अब सफेद ठंडी मौत उसे लील जाने के लिए मुँह फाड़े खड़ी थी। पाल के मांस से नट की देह में उतनी शक्ति पैदा न हुई थी, जितनी उसने मान ली थी। पैर जवाब देने लगे। अगले क्षण नट वहीं बर्फ पर ढेर हो गया।

नट के कुत्ते उसकी स्लेज जाने कितनी दूर खींच ले गये। उसकी संज्ञा धीमे-धीमे लोप हो रही थी। बर्फ की तह-पर-तह उसकी संज्ञाहीन देह पर जमती जा रही थी और नट मौत की घड़ियाँ गिन रहा था।

अचानक यह क्या! कौन उसकी देह पर से बर्फ की तहें अलग कर रहा है? कौन यह उसे जबरन खींच रहा है, उसकी चेतना को जगा रहा है? कौन है जो नट को चैन से पड़े रहने न दे रहा है? एक जोरदार झटके के साथ नट की देह बर्फ की चिकनी सतह पर खिंच आयी। नट की संज्ञा लौटी। मैगी उसके पास खड़ी उसे सूँघ रही थी, चाट रही थी और गुर्रा रही थी। एकाएक वह उसके वस्त्र पकड़कर उसे एक ओर को खींचने लगी।

नट भी खड़ा हो गया और मंत्राभिभूत-सा मैगी के पीछे-पीछे चलने लगा। मैगी ने धीरे-धीरे दौड़ना शुरू कर दिया। नट बड़बड़ा उठा—"ले चलो मैगी, जहाँ कहीं चाहो। जान ही देनी है, तो तुम्हारे पीछे चलते रहकर ही क्यों न दी जाये?"

नट लड़खड़ाते कदमों से गिरता-पड़ता मैगी के पीछे चला जा रहा था कि किसी भारी चीज से टकराकर ऐसा गिरा कि उठना मुश्किल हो गया। लेकिन यह क्या? यह तो उसकी स्लेज है और पास ही दिखायी पड़ रही है, वह विश्रामदायिनी, जीवन-दायिनी झोंपड़ी।

मैगी अभी भी उसकी बगल में खड़ी थी। लेकिन नट में खड़े होने की ताकत नहीं थी। वह मैगी के पीछे हाथ-पैरों के बल घिसटकर झोंपड़ी तक पहुँचा।

एक बार फिर जीवन मुस्कुरा उठा। झोंपड़ी में दियासलाई थी, दीपक था, लकड़ियाँ और कोयले थे..... और था भोजन। झोंपड़ी में जीवन की उष्णता फैल गयी। स्वस्थ होकर नट ने सोचा, उस दिन पास से मैगी ने अपनी जगह न बदली होती तो..... और कृतज्ञता से उसका मन भर आया। हाथ बढ़ाकर उसने मैगी को पकड़ना चाहा; मगर वह एक हड्डी पर झुकी हुई थी। असमय छेड़े जाने पर गुर्राकर वह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'एनासिन'

चार दवाइयों के कारण

दर्द से आराम के लिए बेहतर है

१. एनासिन दर्द से शीघ्र आराम देती है : एनासिन में डाक्टर के सुरक्षित नुस्खे जैसा चार दवाइयों का वैज्ञानिक सम्मिश्रण है, इसी कारण वह सिरदर्द, सर्दी-जुकाम, बुखार, दाँतदर्द और रगपुट्ठों के दर्द से शीघ्र पूर्ण आराम देती है।

२. एनासिन स्नायुओंकी घबराहट व बेचैनी को दूर करती है : स्नायुओं के तनाव को अति प्रभावकर रूप से दूर करके एनासिन आपको सुख व चैन प्रदान करती है।

३. एनासिन सुस्ती को भगाती है : दर्द के साथ प्रायः पैदा होनेवाली सुस्ती-उदासी को एनासिन भगाती है।

४. एनासिन बुखार को घटाती है : एनासिन विधि में क्विनीन होने से वह बुखार को काबू में रखने के लिए परिपूर्ण मिश्रण बनती है।

साफ स्वच्छ सीलबंद सेलोफेन के थैलों में मिलती है टिकियों के सिर्फ १३ नये पैसे।

Registered User: GEOFFREY MANNERS & CO. LIMITED.

HIN. Z.44 (N)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने दाँत दिखाने लगी।

"हाँ अब मामला दुरुस्त हुआ। हमारी हालतें अब सामान्य हो गयी हैं, तो चलो कुछ खाने-पीने की फिक्र की जाये।"

× × ×

नलगाक ने जीवन में केवल तीन ही व्यसन पाले थे। रीछ का शिकार, स्लेज को तूफान की तीव्रता से खींचना और इतना खाना कि पेट फटने-फटने को हो जाये। उसका मालिक निल्स सारे ग्रीनलैंड में एक तेज-तर्रार श्वान-संचालक के नाम से प्रसिद्ध था और कुत्तों से उसका नाता सिर्फ स्वामी और सेवक का ही था। अत्यंत क्रूर चालक था। कुत्ते उसकी सूरत से थर-थर काँपते थे। झुकी हुई पूँछें और खून टपकाते हुए कान निल्स के कुत्तों की पहचान थे। लेकिन इस पीड़न और दमन के बावजूद नलगाक ने विद्रोह कर दिया।

एक दिन एक डैनिश वैज्ञानिक ग्रीनलैंड के उस वीरान इलाके में शोध-कार्य के लिए आ पहुँचा। निल्स की स्लेज के साथ दो और भी स्लेजें किराये पर लीं और ग्रीनलैंड के पूर्वी किनारे से उत्तर की ओर चले। तीनों एस्किमो स्लेजें खूब वजन लादे हुए थीं और नरम हिम के अंदर धँसी जाती थीं। यद्यपि पंद्रह कुत्ते उन्हें खींच रहे थे; लेकिन तूफान और नरम बर्फ के कारण एक-एक इंच बढ़ना भी मुश्किल हो रहा था।

दुनिया के और हिस्सों के इन्सानों की तरह ही ग्रीनलैंड के एस्किमो लोगों में भी प्रतिद्वंद्विता की भावना प्रबल है और हर एस्किमो यह दिखाना चाहता है कि वह दूसरे से बढ़-चढ़कर है। अब, जबकि स्लेज का इंच-इंच भी आगे बढ़ना मुश्किल हो रहा था, निल्स और दूसरे चालक जोहान के बीच ठन गयी; कौन ज्यादा तेजी से स्लेज दौड़ा सकता है? कुत्ते बेचारे तड़प रहे थे कोड़ों की चोट से; लेकिन निल्स और जोहान अपनी-अपनी जीत के लिए उन पर तड़ातड़ कोड़े बरसाये जा रहे थे।

एकाएक निल्स की स्लेज रुक गयी। कुत्ते बेदम होकर नीचे पड़ गये थे। स्लेज नर्म बरफ में धँस गयी थी और इस पराजय के कारण निल्स की आँखों से चिनगारियाँ बरस रही थीं। उन बेजुबान निरीह प्राणियों पर कोड़े बरसाकर वह उन्हें लो-लुहान बनाये दे रहा था। एकाएक बिजली की तेजी से नलगाक उछला और निल्स के कोड़ों और दूसरे कुत्तों के बीच खड़ा होकर कोड़ों की बौछार अपने ऊपर लेने लगा। निल्स के क्रोध का ठिकाना न रहा। उसने इतनी ताकत से उसके कान पर कोड़ा मारा कि आधा कान कटकर लटक गया। नलगाक के लिए असह्य हो गया। वह उछला, उस क्रूर इन्सान की टाँग में एक बार अपने दाँत गड़ाये और जब तक वह उसका काम तमाम करने के लिए बंदूक सम्हाले-सम्हाले, तब तक वहाँ से साफ तीर की तरह निकल गया। उस सफेद अंधकार में फिर कौन उसे पा सकता था।

कोई साल-भर नलगाक अपने पूर्वज भेड़ियों की तरह ग्रीनलैंड की वीरानियों में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उन्मुक्त फिरता रहा। लेकिन फिर शायद उसे इन्सान की जरूरत महसूस हुई। आखिर कुत्ता ही तो था और ऐसा कुत्ता जिसे काम का व्यसन था। यों बेकार घूमने में उसका मन न लगा।

संयोगवश एक दिन वह नट की झोंपड़ी में आ पहुँचा। नट के कुत्तों ने, विशेषतः मैगी ने जरा कुछ शोर-शराबा मचाया, तो उनसे नलगाक की ठन गयी। लेकिन नलगाक ने उन लोगों से लड़ने में अपनी ताकत से काम न लेकर दिखावे से काम लिया। अभी यह शोर-शराबा चल ही रहा था कि नट वहाँ आ पहुँचा और एक भारी-भरकम सफेद अल्सीशियन का अपने कुत्तों से यह बनावटी युद्ध देखकर आश्चर्य से मुँह बाये खड़ा रह गया। उसकी अभ्यस्त आँखों ने एकदम ताड़ लिया कि यह कुत्ता नायाब और पानीदार है; और नलगाक नट के कुटुम्ब का एक लाड़ला सदस्य बन गया।

नट का दल एक दिन शिकार की खोज में बढ़ रहा था कि एकाएक उसकी स्लेज के सारे कुत्ते हवा में नाक उठा-उठाकर सूँघने लगे और नलगाक ने – जिसका नाम अब बिजान रख दिया गया था, लेकिन जो इस नाम से बुलाये जाने पर कभी उत्तर न देता था—आगे बढ़ने से साफ इन्कार कर दिया। नट को संदेह हुआ पास में ही कहीं अवश्य विशालकाय श्वेत रीछ के रूप में मौत घूम रही है। मामूली खतरा होने पर बिजान जैसा पानीदार जानवर कभी इस तरह विचलित न होता। अभी इसी सोच-विचार में नट था कि उसने देखा कि उसकी स्लेज में बँधे फंदे में कोई एक वर्ष की आयु का श्वेत रीछ फँस गया है। खुशी-खुशी उसे पकड़ा, त्यों ही एक ओर से गुर्राने की आवाज उसे सुनायी पड़ी। नट का रोम-रोम काँप उठा। उस बच्चे की माँ—एक विशालकाय रीछनी उस पर टूट पड़ी थी। अनजाने उसके मुँह से चीख निकल गयी—"बिजान बचाओ" और 'बिजान' नाम की सदा से अवहेलना करनेवाला नलगाक बिजली की गति से अपने को स्लेज से छुड़ाकर स्वामी और मृत्यु रूपी उस रीछनी के बीच में आ गया। नलगाक ने अपने दाँत रीछनी की गर्दन में जमाने की चेष्टा की, तब तक तो नट अपनी बंदूक सम्हाल चुका था। उसने अपने प्राणरक्षक बिजान को बचाकर गोली चलायी; लेकिन रीछनी ने पैंतरा कुछ ऐसा बदला कि गोली रीछनी की देह को पार करके नलगाक को भी चीरती हुई निकल गयी।

बंदूक फेंककर नट दौड़कर वहाँ पहुँचा, जहाँ एक-दूसरे से गुँथी हुई दो लाशें पड़ी हुई थीं—रीछनी और उस स्वामिभक्त कुत्ते की। और फिर नलगाक की मृत देह छाती से लगाकर नट वहाँ घंटों फूट-फूटकर रोता रहा। लेकिन अब क्या। नलगाक जहाँ चला गया था, वहाँ से आज तक कोई लौटा भी है?

★

यदि जन्म से लेकर मृत्यु तक नहीं झेले, तो क्या झेले? —किपलिंग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नर-मुंडों की खोज में

-कैरोलिन माइटिंगर

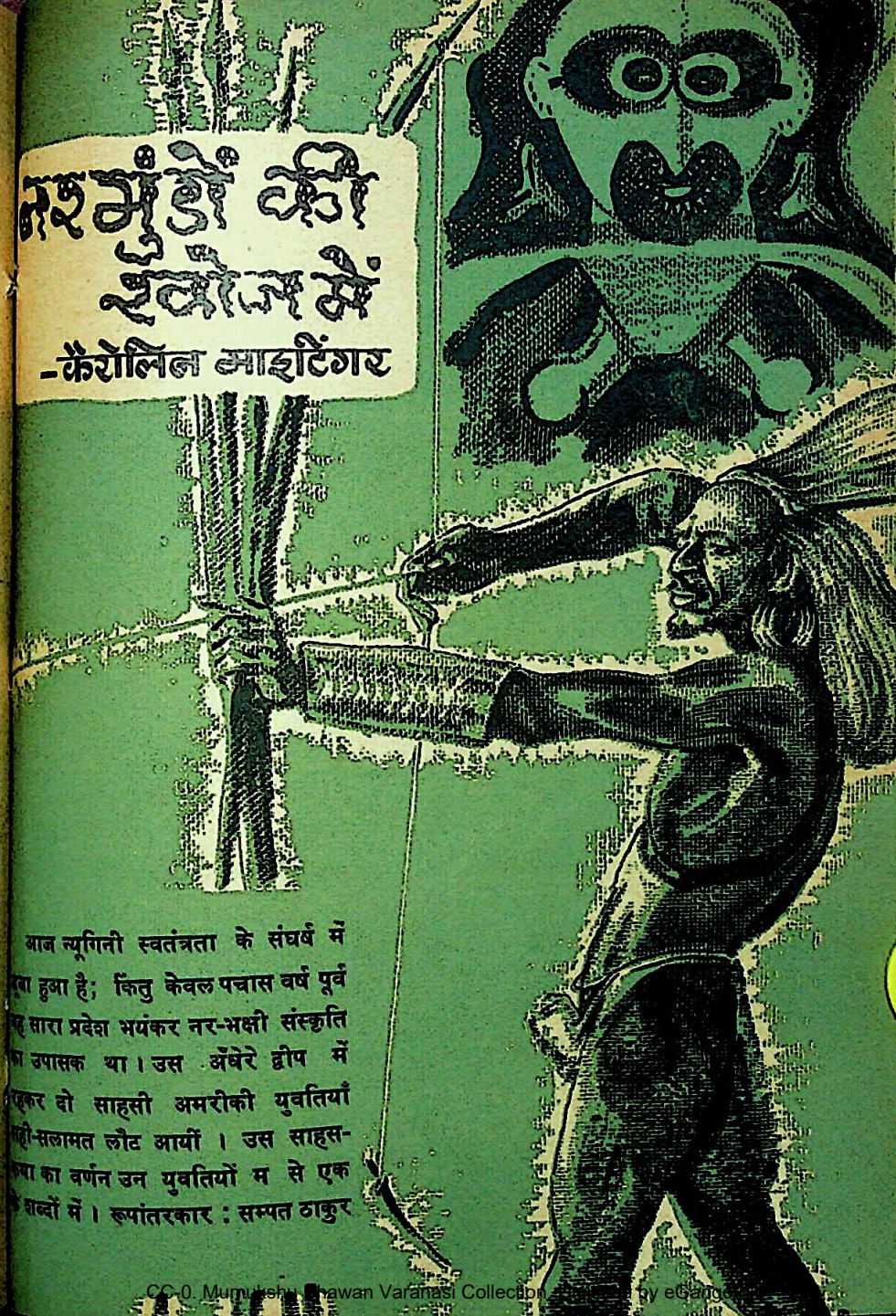

आज न्यूगिनी स्वतंत्रता के संघर्ष में
हुआ है; किंतु केवल पचास वर्ष पूर्व
यह सारा प्रदेश भयंकर नर-भक्षी संस्कृति
का उपासक था। उस अँधेरे द्वीप में
रहकर दो साहसी अमरीकी युवतियाँ
सही-सलामत लौट आयीं। उस साहस-
कथा का वर्णन उन युवतियों म से एक
के शब्दों में। रूपांतरकार : सम्पत ठाकुर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किकोरी के आदमखोर नरभक्षियों का भीषण हमला। पाँच सौ से अधिक आदमी काट डाले गये। भय से आक्रांत यूरोपीय किकोरी छोड़कर भाग रहे हैं .... नरभक्षियों ने कितने इन्सानों का भक्षण कर लिया है, अभी तक पता नहीं लगा है.... ।

दो मेलीनीशियरन चेहरे

आस्ट्रेलिया से आये हुए ताजे अखबार में किकोरी, न्यूगिनी के रेजिडेंट मजिस्ट्रेट ने यह खबर पढ़ी और हमने साफ देखा कि उसके चेहरे पर जैसे रक्त का ज्वार-भाटा होने लगा हो—कभी चिंता से श्वेत, कभी क्रोध से आरक्त।

उस पापुअन वन-प्रदेश में घनघोर वर्षा हो रही थी। सारा इलाका पीले-मटमैले कीचड़ का गाढ़ा समुद्र बन गया था, जो रेजिडेंट मजिस्ट्रेट के दफ्तर के बरामदे से ही लगा हुआ था। हम दोनों लड़कियाँ और हमारी नौका, 'चीफ' का कप्तान, जो हमें रेजिडेंट मजिस्ट्रेट के दफ्तर तक पहुँचाने आया था, किंकर्तव्य-विमूढ़ खड़े थे। जब रेजिडेंट की यह हालत थी, हम क्या मुँह लेकर उनसे बातें करते। किंतु हमारे कप्तान ने चुप्पी भंग की, हँसकर आहिस्ते से पूछा—"किंतु आदमी खाये कितने गये?"

रेजिडेंट को इसकी कोई विशेष खबर न थी। लेकिन इतना निश्चित था कि बीस से ज्यादा आदमी खाये नहीं गये थे और ये सब भी पापुआ के मूल निवासी ही थे। एक भी अंग्रेज के मारे जाने की खबर नहीं थी। भय से हम काँप गयीं। तो सचमुच ही इस इलाके में किकोरी के इतने नजदीक ऐसे भयंकर नरभक्षी रहते हैं।

परंतु नरभक्षियों के बीच हम आधुनिक अमरीकी लड़कियाँ कर क्या रही हैं? वनों से आच्छादित इन भूमध्य-रेखावर्ती दलदलों में हम खोज क्या रही हैं?

पापुआ के विचित्र आदमखोर, मच्छर और जहरीले कीट-पतँगों से भरा हुआ वातावरण देह को चीरकर पार जाती हुई सूरज की जलती किरणें और कभी न रुकनेवाली भीषण वर्षा। न्यूगिनी के इस आलम में भला हम कर क्या सकती हैं?

लेकिन पहले किकोरी की घटना पूरी कर लें।

रेजिडेंट मजिस्ट्रेट को यह चिंता हर्गिज परेशान नहीं कर रही थी कि आदमखोर इस इलाके के कोई बीस आदमी खा गये। उनकी चिंता का कारण तो यह था कि यह घटना सरकारी नियंत्रण में लिये गये इलाके की सीमा में हुई थी। सरकारी नियंत्रण के अंतर्गत आनेवाले आदिवासी इस बात के लिए मजबूर होते हैं कि यदि उनके कबीले पर कोई दूसरा कबीला आक्रमण करे, तो भी कोई प्रतिहिंसात्मक कार्यवाही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न करे, क्योंकि अपराधियों को सजा देने का काम सरकार का है। इस प्रकार आक्रमण करना और आक्रमणकारियों के विरुद्ध सीधी कार्यवाही करना दोनों अपराध हैं।

लेकिन किकोरी में जो वारदात हुई, उसे किसी भी प्रकार आक्रमण या प्रत्याक्रमण नहीं कहा जा सकता था।

वास्तव में हुआ यह कि दो कबीलों में पुश्तैनी दुश्मनी चली आ रही थी। दुश्मनी का कारण था नर मांस खाने का तरीका। एक कबीला मृत व्यक्ति के टुकड़े करके और उन्हें उबालकर खाना ठीक समझता था और दूसरा कबीला मुर्दे को नंगा करके सीधा आग में झोंक देता था। पहले कबीले-वाले इस दूसरी विधि को बड़ी बेहूदी मानते थे और जब उनके कबीले के किसी सदस्य के साथ यह बर्ताव होता था, तो जोर-शोर से विरोध करते थे। इस प्रकार दोनों कबीलों में आक्रमण-प्रत्याक्रमण पीढ़ी-दर-पीढ़ी होते चले आ रहे थे। सरकार ने इस प्रथा को बंद अवश्य कर दिया था; लेकिन उबालकर खानेवाले, भूनकर खानेवालों पर तानाकशी करते ही रहते थे। कोई दो हफ्ते पहले इस पुरानी दुश्मनी को समाप्त करने के लिए किसी सज्जन ने यह सुझाव दिया कि एक कबीलेवाले दूसरे की दावत करें और दोनों आपस में मेल-मुलाकात कायम कर लें। यही किया गया।

न्यूगिनी का कैदी

आमंत्रित कबीलेवालों ने सरकारी सुरक्षा पर विश्वास करके निमंत्रण स्वीकार कर लिया; लेकिन मेजबानों ने उस दिन शूकर मांस के बदले मेहमानों का ही सेवन कर लिया।

सारे अपराधी पोर्ट मोर्सबी ले जाने के लिए किकोरी में इकट्ठे कर लिये गये थे। हम उन्हें देखने के लिए गये, तो पाया कि वे दस-बारह व्यक्ति बिलकुल सामान्य पापुअनों की तरह आपस में हँस-बोल रहे थे। उनमें से एक टूटी-फूटी अंग्रेजी भी बोल लेता था।

उसने हमें बताया – "हम मेहमानों को खाना नहीं चाहते थे। लेकिन पुराने दुश्मनों को देखकर एकाएक यह विचार आया कि सुअर का मांस तो हमारे पास सब लोगों को भरपेट देने लायक है नहीं; पर अगर मेहमान पकाये जायें, तो औरतों और बच्चों तक को पूरे पड़ जायेंगे। और ऐसा करने में हम कोई सरकारी कानून भी नहीं तोड़ रहे थे, क्योंकि न हमने किसी पर हमला किया था, न किसी हमलावर का विरोध ही।"

रेजिडेंट मजिस्ट्रेट हम से और अधिक बात किये बिना घटना-स्थल के लिए रवाना हो गया, ताकि मृतकों की हड्डियाँ गिनकर उनकी ठीक-ठीक संख्या का पता लगा सके।

जब घटना की सरगर्मी जरा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कम हुई और हम आपे में आयीं, तो सोचने लगीं कि क्या न्यूगिनी के पापुआ इलाके में उन स्थानों में भी रहना, जहाँ सरकार का तथाकथित संरक्षण है, हर घड़ी मौत के मुँह में सिर डाले रहना नहीं है ?

लेकिन हम दो अमरीकी लड़कियाँ—मेरी सुंदर और हँसमुख सखी मार्गरेट और मैं कैरोलिन माइटिंगर यहाँ कर क्या रही हैं ?

सुनकर शायद आप हमारी खब्त पर हँसें। लेकिन सच तो यही है कि हम पापुआ के इन मूल निवासियों के सिरों की खोज में घर बार छोड़कर इन भीषण जंगलों की खाक छान रही हैं। हम इनके सिरों की खोज कर रही हैं, ताकि मानव जाति की इस तेजी से समाप्त हो रही नस्ल के नमूने भविष्य के नृतत्वशास्त्रियों के लिए अपने कैन्वस पर अंकित कर लें।

वस्तुतः हम पूरी मेलीनीशियन नस्ल के विभिन्न वर्गों के पोर्ट्रेट बनाने के प्रयत्न में थीं। अभी तक हम सालोमन द्वीप-समूह के मूल निवासियों और मिश्रित जातियों के चित्र बना चुकी थीं। अब यहाँ न्यूगिनी के पापुआ इलाके में 'आदिम जातियों' के नमूने अंकित करना चाहती थीं और यह हमारे कार्यक्रम का अंतिम और सबसे दुस्साहसपूर्ण चरण था। हम उन लोगों के चित्र बनाना चाहती थीं, जिनके मत में नर-भक्षण कोई जघन्य कृत्य नहीं था, बल्कि वह तो उनकी वैयक्तिक-शक्ति का स्रोत था। इन लोगों की धारणा के अनुसार खाये जानेवाले व्यक्ति की आत्म-शक्ति खानेवाले को प्राप्त हो जाती है।

ब्रिटिश न्यूगिनी में हमें इन आदिवासियों के चित्र बनाने थे। यहाँ प्रकृति के सिवाय हमारी दूसरी सबसे बड़ी कठिनाई थी पैसे का अभाव। आप पूछेंगे कि प्रशांत महासागर के इस अनजान छोर में हम बिना पर्याप्त रकम के आयीं ही क्यों; पर धुन का भी कोई इलाज है ? सारे तर्क सिर्फ एक धुन पर कुर्बान हो जाते हैं। मैं तो खैर कलाकार थी, मार्गरेट तक को पापुआ इलाके में दिलचस्पी पैदा हो गयी थी।

हमारे लिए दो ही सहारे थे। एक तो कलाकारों के संरक्षक संत लूका की कृपा-दृष्टि और दूसरे न्यूगिनी के अफसरों, उनकी बीवियों और बच्चों के पोर्ट्रेट बनाने से प्राप्त रकम। संत लूका तो सिर्फ आशीर्वाद दे सकते थे, सो नकद पैसे के लिए हमें अफसरों की कृपा की ही राह देखनी होती थी और वस्तुतः सान-फ्रान्सिस्को से लेकर रावेल आने के पूर्व तक संत लूका की कृपा से

व्यापार के लिए द्वीपांतर गमन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कला-रसिकों की हमारे लिए कमी नहीं पड़ी। लेकिन अब तो लगता था कि संत लूका ने भी हम पर या हमारी ढिठाई पर खीझकर अस्थायी रूप से अपना वरद हस्त हम पर से उठा लिया था। और जिस शान से हम घर से चली थीं, पैसे माँगकर, उस पर कैसे आँच आने दे सकती थीं? तीसरी कठिनाई का शिकार अकेली मैं थी, मार्गरेट नहीं। यह कठिनाई थी मलेरिया। रोज-रोज पाँच ग्रेन कुनैन खाकर बुखार से तो बचा जा सकता है, लेकिन फलस्वरूप उत्पन्न हुई गर्मी से जो सिर घूमता है, उसके कारण तस्वीरें बनाना असम्भव हो जाता है। पर मार्गरेट को कुनैन का दैनिक सेवन मलेरिया से भी दूर रखता था और माडलों के मनोरंजन के लिए गिटार बजाने की स्फूर्ति भी प्रदान करता था।

ऐसी ही परिस्थिति थी जब हम न्यूगिनी के घुर दक्षिणी बंदरगाह समाराई के निकट पहुँच रहे थे। वहाँ कम-से-कम सौ यूरोपीय तो जरूर होंगे। पूरी आशा थी कि इनमें से कुछ तो अवश्य ही पोर्ट्रेट बनवायेंगे और हमें येला पहुँचकर आदिम लोगों के चित्र अंकित करने के साधन जुटा देंगे।

समाराई से येला

माल ढोनेवाला जहाज हमें समाराई में उतारकर चलता बना। समाराई द्वीप की लम्बाई-चौड़ाई के विषय में हम इतना कहेंगे कि वहाँ तक पहुँचते-पहुँचते यदि किसी अमरीकी में दम बाकी रह गया हो, तो उसे समुद्र के किनारे-किनारे सारे द्वीप का चक्कर लगा लेने में कोई १५-२० मिनिट का समय लगे तो लगे। शायद इसीलिए इसे 'डिनर द्वीप' भी कहते हैं, डिनर-प्लेट की तरह ही यह गोल और छोटा है।

अंग्रेजों का प्रभाव इस जगह साफ दिखाई पड़ता है। एक टेनिस कोर्ट और एक क्रिकेट फील्ड दिखाई पड़ रहे हैं। टिन के झोपड़ों-वाली कुछ दुकानें हैं, टिन का ही एक सिनेमा-घर भी। आखिर माल ढोनेवाले नाविकों को कोई मनोरंजन तो चाहिये। द्वीप पर मूल निवासियों की बस्ती नहीं है; लेकिन उनके लिए एक सराय बनी हुई है। न्यूगिनी या आस-पास के वनों से आनेवाले मूल निवासी इसी सराय में ठहरते हैं। चौबीस घंटे से अधिक यहाँ रह नहीं सकते। आखिर कौन जाने कब किसका जी गोरे मांस पर ललक जाये!

उनके रहने के लिए तो खैर सराय है, पर हमारे लिए? ऊपर नीला आसमान, उससे बरसती हुई मृत्यु की किरणें या बारिश की धाराएँ और नीचे कीड़े-मकोड़ों से भरा हुआ दलदल। दो-तीन घंटे दलदल में रहने के बाद मैंने मार्गरेट से कहा—"भई, मेरे पैरों में तो इतनी तकलीफ हो रही है कि अस्पताल जाने को जी चाहता है।"

प्रागैति हासिकदानव

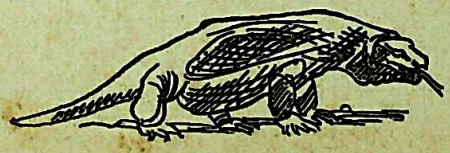

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

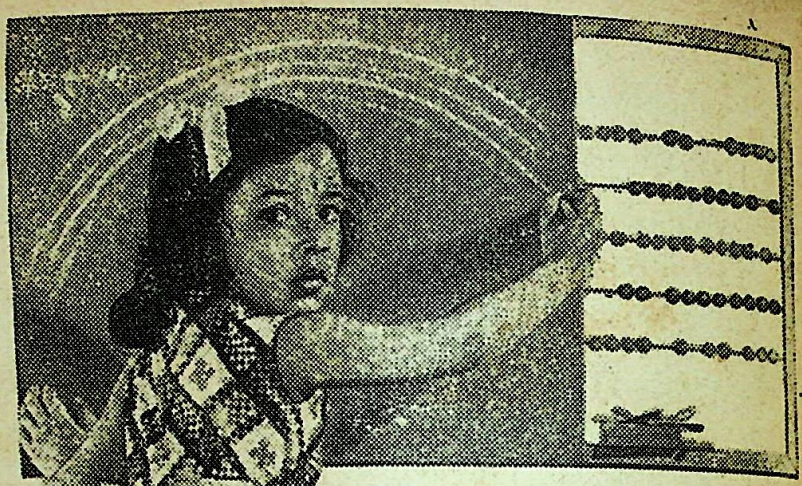

'मफतलालने इंद्रधनुष का रंग उड़ाया?'

मफतलाल ग्रुप रंग भी बनाता है, यह नन्हे मुन्ने बच्चों को बताने का कैसा अनोखा तरीका है! लेकिन क्या आप जानते थे? और आपको क्या यह मालूम था कि मफतलाल ग्रुप जूट, शक्कर तथा रसायन भी बनाते हैं? इसी तरह भारत में बनने-वाले सर्वोत्तम कपड़ों में से कुछ किस्में मफतलाल ग्रुप की विशेषता है, यह भी आप जानते है!

फिर भी, समाज के हर वर्ग के लोग हर रोज़ मफतलाल के उत्पादन इस्तेमाल कर रहे हैं। आज मफतलाल ग्रुप घरेलू और औद्योगिक उपयोग के लिए तरह-तरह की चीजों का निर्माण कर रहा है...और इस प्रकार वह आप के जीवन के कितने ही पहलुओं के प्रति अपनी रुचि दिखा रहा है... और भविष्य में और ज्यादा विस्तार की तैयारियां कर रहा है।

समाज के हर वर्ग के लोगों के लिए जरूरी और उपयोगी **मफतलाल** उत्पादन

न्यू शॉरॉक (शॉरॉक), अहमदाबाद. मफतलाल ग्रुप
न्यू शॉरॉक, नडियाद. स्टैण्डर्ड, बम्बई.
स्टैण्डर्ड (न्यू चाड्डा), बम्बई.
स्टैण्डर्ड, देवास. सैसून, बम्बई.
सैसून (न्यू यूनियन), बम्बई.
सूरत काटन, सूरत.
मफतलाल फाइन, नवसारी.
गगालभाई जूट, कलकत्ता.
इंडियन डाइस्टफ, बम्बई.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मार्गरेट एकाएक खड़ी हो गयी। "अस्पताल ! ... अस्पताल और बिस्तर, और घड़ी-भर विश्राम !"

और हम उस अजाने प्रदेश में आश्रय खोजती द्वीप के अस्पताल में जा पहुँचीं। इन द्वीपों के अस्पतालों में जगह पा जाना कठिन नहीं है। हमने चैन की साँस ली। इस क्षण तो जीवन सुखद है। संत लूका की जय हो।

अस्पताल भट्ठी की तरह गर्म था, लेकिन हमें संतोष था कि सूरज की जलती हुई किरणों का पहला आक्रमण अस्पताल की टीन की छत पर होता था। अभी मैं उस भट्ठी के भीतर बिस्तर पर बेचैनी से करवटें बदल रही थी कि एकाएक अपरिचित स्त्री की आवाज सुन पड़ी। आवाज अंग्रेज स्त्री की थी, सो स्वभावतः मेरे दिल की धड़कन जरा तेज हो गयी। संत लूका ने शायद मेहरबानी करके एक ग्राहक भेजा हो।

महिला स्थानीय मजिस्ट्रेट की पत्नी थीं और उनके साथ ही कोई छः बरस की उनकी बेटी भी थी। शोरगुल सुनकर मैं बाहर आयी और जो कुछ देखा, पहले-पहल तो उस पर विश्वास ही न हुआ।

बरामदे के ऊपर वह हृष्ट-पुष्ट अंग्रेज लड़की धनुष से नुकीले तीर बरसा रही थी और नीचे कोई ५० वर्ष की उम्र का एक आदिवासी खड़ा अपने हाथों से उन्हें पकड़ रहा था। लेकिन न्यूगिनी में जाने और

गोदना

यहाँ का सबसे बड़ा शृंगार

कितने आश्चर्य हमारी राह देख रहे थे।

श्रीमती मजिस्ट्रेट ने दुःख व्यक्त किया कि अपने पापुआ-अभियान के शुरू में ही हमें इस प्रकार अस्पताल की शरण लेनी पड़ी। उन्होंने तत्काल शाम की चाय का निमंत्रण दे दिया। हम इस विडम्बना पर मुस्कुराये बिना न रह सकीं कि घर-घाट का कहीं ठिकाना नहीं और मेहमानदारी के निमंत्रणों का यह हाल।

खैर, उन परिस्थितियों में जितनी भी हो सकती थीं, उतनी तैयार होकर हम हिज एक्सलेंसी से मिलने को चलीं। सर ह्यू वर्ट मरे को हमने अपनी आशा से भी अधिक भला और रहमदिल पाया। लेकिन आश्चर्य इस बात का हुआ कि सभ्य जगत् के दो एकदम नये नुमाइंदों को देखकर भी उनके थके मुँह पर मुस्कान न आयी। आती भी कैसे ? प्राचीन नरमुंडों की खोज के हमारे अभियान को कोई समझदार और पापुआ के खतरों से परिचित व्यक्ति सहर्ष स्वीकृति कैसे दे सकता था ? हिज एक्सलेंसी को हम कैसे दोष दें ? लेकिन संत लूका तो हमारे शीश पर अपना वरद हस्त रखे ही हुए थे, फिर भय किसका ?

तीन दिन इसी उम्मीद में कट गये कि येला जाने के लिए हिज एक्सलेंसी कोई प्रबंध करेंगे। लेकिन वे और सब कुछ करते थे, केवल एक इसी बात पर खामोश

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साधना से सुनिये एक रहस्य

'सुंदर रंगरूप के लिए **लक्स** ज़रूरी है'

चित्रतारिकाओं
का शुद्ध, मुलायम
सौंदर्य साबुन

'मेरा मनचाहा साबुन मेरे मनचाहे रंगों में!' साधना कहती है

LTS. 111-X59 HI

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थे। तीसरे दिन ग्यारह बजे एक अप्रत्याशित सहायता की सूचना मिली। एक प्रसिद्ध प्लांटेशन कम्पनी ने, जो प्रवासियों की उपेक्षा के लिए प्रसिद्ध थी, हमें सूचित किया कि उसकी एक खोपरा ढोनेवाली नाव दक्षिण की ओर जानेवाली है, हम चाहें तो उसमें जा सकती हैं। सचमुच कोई अदृश्य शक्ति मदद कर रही थी। ग्यारह बजकर पाँच मिनिट पर हम बेला-प्रवास की तैयारी में डूब गयी थीं। आखिर अब समय ही कितना रह गया था! अगले दिन किरणें फूटने से पूर्व हमें चल देना था।

समाराई की एक दूकान से हमने दस वर्गफुट का एक कैन्वास का तम्बू, एक कुल्हाड़ी, १२ फुट लम्बी रस्सी, दो पतले-पतले कम्बल, दो सासपैन और दो झाड़ू लिये। रक्षा के साधनों में हमारे पास थी एक बड़ी बिजली की टार्च और दो घड़ियाँ। मार्गरेट ने डिब्बा-बंद भोजन खरीदने से इन्कार कर दिया। "जंगलों में हमें कंद-मूल-फल भरपूर मिलेंगे। आखिर ये हजारों इन्सान लाखों साल से यहाँ जीते आ रहे हैं या नहीं।"

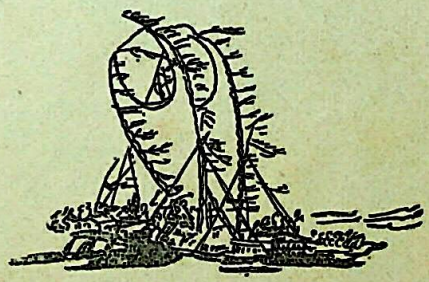

लकाटोई नाव

"हाँ, जीते तो चले आ रहे हैं, लेकिन सिर्फ जड़ी-बूटियों पर नहीं, और न केवल चौपायों पर। कौन कह सकता है कि हम-तुम भी किसी का दो-चार दिन का भोजन न बन जायें।"

मार्गरेट बड़ी मुश्किल से मांस के डिब्बे लेने पर राजी हुई। कंद-मूल के नाम पर याम, टारो की जड़, साबूदाना, केला, नारियल और गन्ना मिल सकता था। लेकिन ये कार्बोहाइड्रेट हमें कितने दिन पैरों पर खड़े रहने लायक रखते?

और अंत में हमने खरीदी तम्बाकू के पत्ते की छड़ियाँ, जो इन टापुओं में सिक्के का काम करती हैं। आदिवासी अपनी सेवा या वस्तुओं के बदले में यही लेना पसंद करते हैं। और हमें तो उनकी सेवा और कार्बोहाइड्रेटों के अलावा उनकी शुभ कामनाएँ और माडल भी चाहिये थे।

अपना यह सामान लिये जब अगली सुबह हमारी नाव 'मैरोमा' के नजदीक पहुँची, तो नाव का कप्तान आँखें फाड़कर हमें देखता ही रह गया। उसने सोचा था कि दोनों महिलाएँ एक-एक हल्का सूटकेस हाथ में लटकाये आयेंगी; और इसी-लिए उसने नौका की डेक पर बनी हुई एक छोटी-सी कैबिन में हमारे लिए प्रबंध किया था। अब हमें जो इस साज-सामान के साथ देखा, तो कुछ ऐसी मुर्दनी उसके चेहरे पर छा गयी, जैसे किसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिर्फ किस्मत से

बाल सुंदर नहीं बनते ...

'बालों को सुंदर रखने में किस्मत नहीं, बल्कि अपनी मेहनत और उनकी हिफाजत काम आती है'—होशियार महिला का उत्तर यही होगा। सुंदर तथा आकर्षक बालों का राज उनकी पूरी-पूरी हिफाजत में है...और आप के लिए 'केशा' यह काम बखूबी करता है। 'केशा' बालों को जवान और पौष्टिक रखनेवाले तत्वों से भरपूर है, जो बालों की जड़ों तक पहुँच कर उन्हें रेशम जैसे मुलायम, चमकीले और सचमुच आकर्षक बनाते हैं। सच तो यह है अनोखी खुशबूवाला 'केशा' आपके बालों के लिए वरदान है।

केशा

सोल एजेंट्स और निर्यातक:
एम. एम. खंभातवाला,
अहमदाबाद-१
एजेंट्स:
सी. नरोत्तम एंड कं.,
बम्बई-२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निकट सम्बंधी की मृत्यु का तार अभी-अभी पढ़ा हो। हमने अपना साज सामान तो कैबिन में रखा और खुद खुले में आ गयीं। कैबिन में अब जगह ही कहाँ रह गयी थी।

हमारा सबसे पहला मुकाम था नारी द्वीप। पहले यह निर्जन टापू था। फिर सरकार ने इसे एक विचित्र तरीके से 'बसाना' शुरू किया। इसमें नरहत्या और नर-भक्षण के 'अपराधी' जन्म-कैद भोगते हैं। कहने को तो वे लोग कैदी हैं, परंतु वास्तव में यह उन्हें 'सभ्य' बनाने का एक व्यावहारिक स्कूल है। उन्हें यहाँ खेती करना सिखाया जाता है, ताकि वर्ष के किसी भी भाग में वे भूखे न रहें। आपको यह सुनकर आश्चर्य होगा कि पापुआ दुनिया के सबसे भूखे भूभागों में से है और इसका कारण है पापुआ आदिवासियों का विचित्र दृष्टिकोण। ये लोग अपने आपको धरती का स्वामी नहीं मानते और न ही यह स्वीकार करते हैं कि वे प्रयत्न करने पर मनचाही फसलें उससे उगा सकते हैं। इसके विपरीत उनका विश्वास तो यह है कि वे धरती के वे हैं और धरती से पैदा होनेवाली प्रत्येक वस्तु एक प्रकार से उनका ही अंग है। इस दर्शन में धरती प्रमुख है, मनुष्य गौण; वैसे ही जैसे लता-पत्र, पेड़-पौधे।

हमारी नाव के समीप नारी द्वीपवासियों की डिंघी आयी। जैसे लोग उसमें बैठे हुए थे, उससे लगा कि यदि सरकार नर-भक्षण से कुछ कम भयानक अपराध करनेवालें कैदियों को भी ऐसे टापुओं में बसाये, तो धीरे-धीरे पापुआ लोग न केवल एक दूसरे का भोजन होने से बच जायेंगे, बल्कि वे न्यूगिनी के अंदरूनी भागों के आदिवासियों के लिए प्रगति के उदाहरण का काम करेंगे। नारी द्वीप पहुँचकर हम अपने गंतव्य के कोई ६० मील और समीप आ पहुँचे थे।

अहुइया

येला की यात्रा में नारी के अलावा एक अन्य टापू को कभी भूल न सकूँगी। वह है पानसीसा। यह कानफिलक्ट द्वीप-समूह का एक छोटा-सा टापू है, जिसके तट पर हमें एक रात बितानी थी। नारियल और ताड़ के असंख्य पेड़ों से भरा हुआ यह टापू बड़ा आकर्षक था। सबसे आश्चर्य की बात तो यह थी कि टापू पर न तो मच्छर थे, न रेत की मक्खियाँ! जैसे सारा टापू किसी प्राकृतिक मच्छरदानी से ढका हुआ हो। एकदम शांत और नीरव द्वीप के आह्वान को अलक्ष्य करना असाध्य हो गया। हमारी नाव का कप्तान नारियल क्रय-विक्रय का प्रबंध देखने पानसीसा के प्लांटेशन में चला गया था और मार्गरेट को शाम के झुटपुटे ने गिटार पर धुन छेड़ने का आमंत्रण दे रखा था। मैं अकेली क्या करती? सो समुद्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ये अनुपम

नेशनल एक्को

रेडियो

आपके घर में संगीत, मनोरंजन और प्रसन्नता का स्वर्ग ला सकते हैं!

आज ही एक नेशनल-एक्को रेडियो खरीदिए... आपके घर में सुमधुर संगीत, प्रफुल्लता देनेवाले मनोरंजन और सच्चे सुख का अमृत बरसने लगेगा! ये शक्तिशाली और विश्वसनीय नेशनल-एक्को रेडियो ऐसे इंजीनियरों ने बनाये हैं जिन्होंने रेडियो-रचना-क्षेत्र में कई खोजें की हैं। इन पर आपको अपने मनचाहे स्टेशनों को झटसे और सही-सही लगाने में बहुत ही आसानी रहती है। आज ही अपने पास के किसी भी नेशनल-एक्को रेडियो डीलर के यहाँ ये सेट मुफ़्त बजवाकर सुनिए!

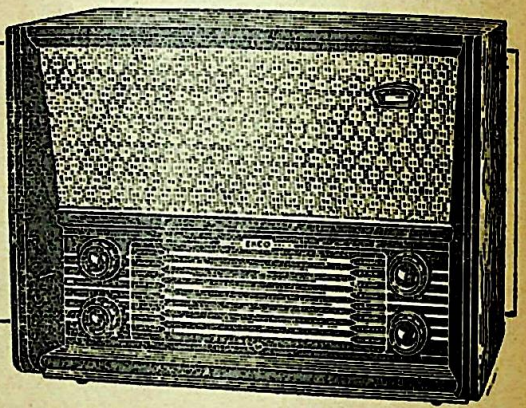

मॉडल यू-७३०:
एसी/डीसी सेट। स्टेशन लगाने में आसानी के लिए नया 'मैग्नी-बैण्ड' ट्यूनिंग; खास तौर से बैण्ड-स्प्रेड किया हुआ ४१ मीटर-बैण्ड। ९ वाल्वों का काम करनेवाले ६ वाल्व, ८ बैण्ड। लकड़ी का सुन्दर कैबिनेट। 'मॉन्सूनाइज्ड'। मॉडल ए-७३०: एसी सेट। रु ५७०

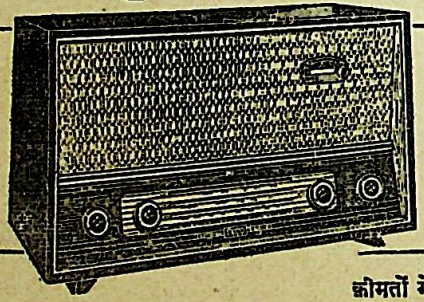

मॉडल यू-७५५: एसी/डीसी सेट। ९ वाल्वों का काम करनेवाले ६ वाल्व, ३ बैण्ड, टोन कण्ट्रोल। लकड़ी का आकर्षक कैबिनेट। 'मॉन्सूनाइज्ड'। मॉडल बी-७५५: बैटरी सेट। ५ वाल्व, ३ बैण्ड। बैटरी बहुत ही कम खर्च होती है। रु. ३५५

क़ीमतों में एक्साइज़ ड्यूटी शामिल है; सेल्स टैक्स अलग।

बिक्री और सर्विसिंग के लिए देशभर में ६०० से भी ज़्यादा अधिकृत डीलर हैं।

जनरल रेडियो एण्ड एप्लाएन्सेज़ लिमिटेड
बम्बई • कलकत्ता • मद्रास • दिल्ली • पटना
बंगलोर • सिकन्दराबाद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के किनारे घूमने निकल गयी । सैंडल्स उतारकर मैं नरम और ठंडी रेत पर चलने का सुख लूटने लगी । थोड़ी देर चलने के बाद उत्साह में भरकर उस एकदम जनहीन तट पर दौड़ने लगी । एक क्षण के बाद एकाएक रुककर सारे कपड़े वहीं उतार दिये और फिर उसी नीली-सफेद रेत पर दौड़ना आरम्भ कर दिया । आप कहेंगे यह भी क्या सनक थी । लेकिन उस उन्मुक्त वातावरण में अकेली होकर भी मैं एक अजीब मस्ती में भर गयी थी ।

प्रेत भगाने-वाला पुतला

रात गाढ़ी हो जाने पर तो वह स्थान बिलकुल परीलोक की तरह प्रतीत होने लगा । ऊपर एकदम नीलाकाश में चमकीले तारे खिले हुए थे और धरती पर तथा समुद्र के भीतर उभरे हुए रेतीले टीलों पर मणियाँ दमक रहीं थीं । इन सबका प्रकाश बहुत मृदु होकर भी इतना पर्याप्त था कि सुई में धागा डालने में कोई कठिनाई न हो । ये मणियाँ और कुछ नहीं, रेत में मिश्रित फास्फोरस थी, जो असंख्य जुगनुओं की तरह जगमगा रही थी । फिर मैं समुद्र में घुस पड़ी और आत्मविभोर हो जाने कब तक उस अपरूप कल्पलोक में अप्रयत्न तैरती रही ।

तैरने के बाद फिर तट पर आकर रेत पर लेट गयी । यह क्या ? यह आवाज कहाँ से आ रही है ठक्-ठक्-ठक् ! कोई वन-पक्षी तो नहीं, जो यह ध्वनि कर रहा है ? छोटे-छोटे ताड़ झाड़ियों की तरह सघन हो गये थे । मैं बिना आगा-पीछा सोचे उनमें घँस पड़ी और आवाज की दिशा में बढ़ चली । थोड़ी ही दूर गयी होऊँगी कि उस जनशून्य एकांत में जो कुछ दीख पड़ा, उसके सामने तो कोई आपाद-मस्तक वस्त्रों से आच्छादित नारी भी विचलित हो जाती । एक सर्वथा निर्वस्त्र काला आदिम युवक बैठा हुआ छोटी-सी नाव बना रहा था । लेकिन मुझे देखकर भी उसके मन में कोई विकार पैदा न हुआ । वह उठा, अँगड़ाई ली, समुद्र में पैठा और पूरे इत्मीनान से मलमलकर स्नान करने लगा ।

मैं वस्त्रों की तलाश में लौटी । तब मुझे क्या मालूम था कि येला निवासियों को कैन्वास पर अंकित कर लेने के बाद एक दिन मैं अपने इस एकांत के साथी का भी पोर्ट्रेट बनाऊँगी ।

आज अनुभव के बल पर समझ में आया है कि सभ्य मानवों का कोई प्रतिनिधि कभी येला जाने की क्यों नहीं सोचता । किंतु उस समय तो केवल यही एक धुन लगी थी कि कब येला के आदिम निवासियों को तूलिका और रंग से अमर करें । 'मैरोमा' के कप्तान ने बहुत ही अनिच्छापूर्वक नाव को येला की तरफ घुमाया था, वह भी हमारे हठ और दुराग्रह के कारण । नहीं तो पानसीसा के बाद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बुखार?

सम्पूर्ण आराम पाइये

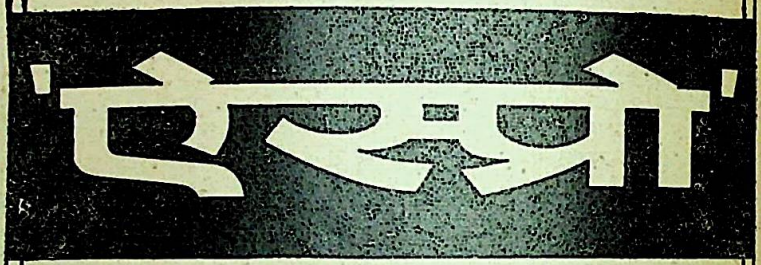

लीजिये

और पीड़ा व दर्द, सिर दर्द, दांत के दर्द, माहवारी के दर्द, सर्दी जुकाम व फ्लू, मन्द ज्वर तथा गले की जलन से बिलकुल आराम पाइये।

फिर से बिलकुल तन्दुरुस्त हो जाइये

निकोलस का N उत्पादन — उत्कृष्टता और शुद्धता का प्रतीक

AG.144.H.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

टापू सूद एस्ट से हमें वापस लौट आना था। लेकिन हमारा ठहरा त्रिया हठ। कप्तान नाव येला के तट पर ले आया।

बिजली टूट रही थी। बादल घहरा-घहराकर मूसलाधार बरस रहे थे। तूफान ६० मील घंटे की रफ्तार से हहरा रहा था। समुद्र-तट का कोई पता ही नहीं चलता था। ताड़ और नारियल के वृक्ष पानी में डूबे दिखाई देते थे। अब हम उतरें कहाँ? आदिम या श्वेत आबादी का कोई चिह्न कहीं दिखाई नहीं देता। कप्तान ने हमें दो नाविक और एक मछली मारनेवाली नौका दी कि खोज सकें, तो किनारा या जमीन खोज लें। ऐसे आँधी-पानी में हमारी धुन का शिकार होने की उसकी कोई इच्छा न थी, सो उसने हमारे साथ आने की बात सोची तक नहीं। हाँ, रवाना होने के पूर्व एक भरी हुई बंदूक जरूर हाथ में पकड़ा दी कि कहीं आदमखोर मिल गये, तो काम आयेगी।

यदि पानसीसा की रात परीलोक की याद दिलाती थी, तो येला की यह रात प्रेतलोक की। 'मैरोमा' से उतरकर गरजती-बरसती, हू-हू करती उस भयावनी रात के गर्भ में हम खो गयीं। येला! इसमें मानव-जाति का सबसे आदिम नमूना रहता है। पर कहाँ रहता है वह नमूना? इस मटमैले कीचड़-भरे सागर में? या इन ताड़ों पर? या न जाने किस जाति के इन काले डरावने पेड़ों की डालियों पर?

हमारी छोटी नाव बढ़ती जा रही थी। पर किस लक्ष्य की ओर? हमारे नाविकों ने बताया कि अब हम समुद्र में नहीं, येला की खाड़ी में से जा रहे हैं। उनके इस ज्ञान का आधार क्या था, कुछ कहा नहीं जा सकता। इतना अवश्य था कि जहाँ से हमारी नाव गुजर रही थी, वहाँ कभी-न-कभी धरती जरूर उभरती होगी। नहीं तो क्या ये पेड़, जिनकी शाखाएँ हमारे सिरों से टकरा रही थीं, यों ही पानी में बढ़ते हैं? लेकिन हम एक क्षण को भूल गये थे कि हम भूमध्यरेखा के वनों में थे, जो वास्तव में दलदलों में धँसे रहते हैं। दलदल! हम काँप उठीं। कहीं यह छोटी-सी नाव दलदल में फँस गयी तो? लौट चलें। तो क्या प्राचीनतम मानव-प्राणी को उसके असली निवास में चित्रित करने का हमारा सपना अधूरा ही रह जायेगा?

जैसे इतना ही दंड पर्याप्त न हो, अब हमें एक और आपत्ति का सामना करना पड़ रहा था। विशालकाय घड़ियाल हमारे चारों ओर उछल रहे थे। हमारी नाव उलट देने के लिए उनकी पूँछ का जरा-सा स्पर्श ही काफी था। मैंने सोच लिया, अब इस मृत्युलोक से वापस 'मैरोमा' पर लौट पाना असम्भव है। संत लूका याद आये .... अमरीका का सुखद जीवन याद आया..... और याद आयी यह पोर्ट्रेट बनाने की खब्त, जो हमें अपना काम पूरा करने के पहले ही येला की खाड़ी में मगरमच्छों की भेंट कर देनेवाली है। किंतु किसमें अब यह खब्त पूरा करने की इच्छा शेष रह गयी थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दश विदेश की सुंदरियों का
परंपरागत सौंदर्य साधन

पियर्स

ऐसा शुद्ध! ऐसा मृदुल!

प्रातःकाल के अपूर्व आनंद के लिए पियर्स ... ऐसा शुद्ध, ऐसा मृदुल ...
कि देश विदेश में यह सुंदरियों का परंपरागत सौंदर्य साधन बन चुका है।
सबसे पहले, स्नान के लिए सौम्य पियर्स साबुन ... ग्लिसरीनयुक्त
पारदर्शक साबुन, किसी शिशु की मुलायम
त्वचा के लिए भी अति कोमल।
और स्नान के बाद ... मख़मल सा
नर्म, सुगंधित पियर्स टेल्कम ...
संध्या तक सुबह सवेरे
जैसी ताज़गी के लिए।

50 HI हिंदुस्तान लीवर लिमिटिड ने ए. ॲण्ड एफ. पियर्स लि. लण्डन के लिए भारत में बनाया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हमें कुछ नहीं चाहिये, येला के नरभक्षियों का मुँह भी हम नहीं देखना चाहतीं। नाव भा की लौटती धार में छोड़ दी गयीं।..... और जब थोड़ी ही देर में हमें अपने 'मैरोमा' की सीटी सुनाई पड़ गयी, उस समय हमें जो खुशी हुई, उसका आप अंदाज भी नहीं लगा सकेंगे।

सीढ़ियों के सहारे जब हम अपनी नाव 'मैरोमा' पर पहुँचे, तो सबसे पहले हमारी दृष्टि छः आदिवासियों पर पड़ी। शीघ्र नष्ट होती हुई इस प्राचीनतम जन-जाति के छः जीते-जागते नमूने हमारे सामने मौजूद थे, वही जिनकी खोज में प्राणों की बाजी लगाकर भी हम निराश ही वापस आये थे। किंतु इन बेचारों को इस बात की जरा भी खबर न थी कि कितना बड़ा मूल्य हम उन्हें सिर्फ एक नजर देख लेने के लिए चुका रहे थे। सो अपनी महत्ता से बेखबर वे निर्विकार, वीतराग भाव से बैठे रहे और मैं उनकी छवि मन में अंकित करती रही। हुआ वास्तव में यह था कि 'मैरोमा' की सीटी सुनकर जाने कहाँ से ये पापुअन आ पहुँचे थे। और जिस समय हम नौका पर पहुँचीं, उनका 'मैरोमा' में कप्तान के साथ तम्बाकू का विनिमय चल रहा था। तम्बाकू पापुआ का सबसे कीमती सिक्का है।

कैसे थे ये आदिवासियों के सरताज, जिनकी नाड़ियों में विशुद्ध पापुअन रक्त बह रहा था? तोते की चोंच-सी मुड़ी हुई नाक, भौंह-हीन आँख, काली देह, छोटा कद, दुबला शरीर, बढ़ा हुआ पेट, पतली टाँगें।

जून-अंक में प्रकाशित विमल मित्र के बंगला उपन्यास 'मिथुन लग्न' का हिन्दी रूपांतर श्री पृथ्वीनाथ शास्त्री ने किया है।

—सम्पादक

उनकी सारी देह गिनी की आम बीमारी 'कुकीकुकी' (एक प्रकार की दाद) से भरी हुई थी और सिर में जूँ के असंख्य अंडे साफ नजर आते थे। ऐसे थे मानवों की प्राचीनतम पीढ़ी के प्रतिनिधि हमने इनके मुखिया का चित्र कैन्वास पर अंकित कर लिया। येला की यात्रा संत लूका की कृपा से सर्वथा असफल नहीं हो पायी।

जब तक मैं चित्र बनाती रही, वह येला-मानव एकटक मुझे देखता रहा। मैं मन-ही-मन खुश थी कि 'मैरोमा' में सुरक्षित रूप से बैठकर मैं यह पोर्ट्रेट बना रही थी। यदि येला का तट ढूँढ़ने में सफलता मिल भी जाती, तो न जाने क्या होता। येला कोई पापुअनों की वीरता के लिए प्रसिद्ध नहीं है। लोग बड़ी तादाद में इकट्ठे होकर अपने निहत्थे शिकार की पसलियाँ चकनाचूर कर देते हैं और फिर उसकी पीठ पर बैठकर दम घोंट देते हैं।

हम एक बार फिर पानसीसा के स्वर्ग में लौट आये। मुझे उस एकांत के साथी की याद आयी और पानसीसा छोड़ने के पहले हमने उसका पोर्ट्रेट बनाया। उसका नाम उसकी चौड़ी और मजबूत छाती पर गोदा हुआ था—'भीइ ओ ही'।

पानसीसा से हम एक बार फिर समाराई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सहृदय और स्वस्थ भोजन का आनन्द हर दिन लीजिये

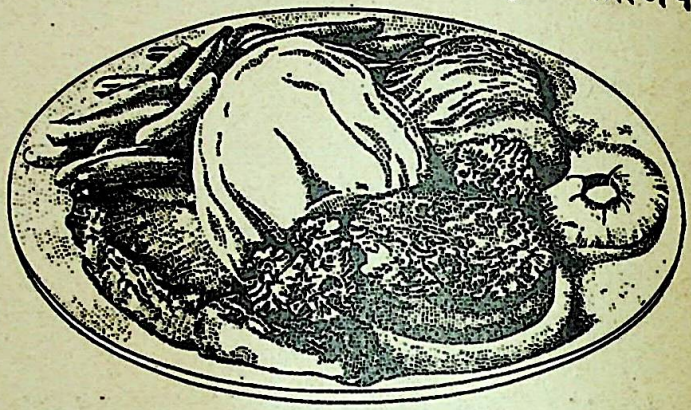

जागतिक वैद्यकीय मत से सर्वोत्कृष्ट रसोई का साधन करडी का तेल ही है जिससे न केवल भोजन में रुचि आती है अपितु स्निग्ध पदार्थों के सेवन से खून में पित्ततत्व (कोलेस्टेरोल) बढकर धमनियों के सख़्त बनने से दिल की बीमारियाँ पैदा होने का जो भय रहता है उस की भी रोकथाम होती है। सफोला नाम से मशहूर हुआ यह सर्वमान्य तेल रसोई के विभिन्न प्रकारों में बड़ी मात्रा में उपयुक्त होता है और रायते आदि में भी इसके उपयोग से स्वादिष्टता आती है। निकट की दूकान से हमेशा सफोला तेल ही खरीदिये और स्वादिष्ट भोजन के साथ ही स्वस्थ जीवन का आनन्द लीजिये।

प्रक्रिया से विशुद्ध बनानेवाले
दि बाम्बे आयल इण्डस्ट्रीज प्राईवेट लिमिटेड
कानमूर हाउस, बम्बई - ९

सफोला

रसोई का
सहृदय
साधन

इस कम्पनी की अन्य निर्मितियाँ :
पेरॅश्यूट विशुद्ध मूँगफली का तेल,
खोपरेका तेल, तिलका तेल
कोकोविट विशुद्ध खोपरेका तेल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की जानी-पहचानी जमीन पर लौट आये और यहाँ न केवल रेसीडेंट की गुस्ताख और तर्रार लड़की 'लिटिल मिल्ड्रेड' की बल्कि उसके 'बाय' ४५ वर्षीय 'सार्ली' और उसकी पत्नी के पोर्ट्रेट बनाकर 'पापुअन चीफ' जहाज के द्वारा पोर्ट मोर्सबी की ओर रवाना हुए।

पोर्ट मोर्सबी में पापुआ की राजधानी है। यहाँ दलदल नहीं है। लेकिन आप कतई यह कल्पना न कीजिये कि यहाँ का जीवन समाराई या येला के दलदलों की अपेक्षा अधिक सुखद है। सुबह आठ बजते-न-बजते आसमान से अंगारे बरसने लगते हैं और सारे इलाके में आग की लपटें लहराने लगती हैं। कहीं भी हरियाली दिखाई नहीं पड़ती। सूखी हुई पीली घास, कहीं-कहीं कँटीली झाड़ियाँ—यह पोर्ट मोर्सबी का वानस्पतिक वैभव है। हवा की लपटों में पीली रेत मिली रहती है, जो आपके अंगों को झुलसाने में धूप की मदद करती है। कोई आश्चर्य नहीं कि इस जलती हुई मरुभूमि में सिर्फ वे लोग रहते हैं, जिन्हें जीवन की विडम्बना मजबूर करती है, या फिर हम जैसे सिर-फिरे, कला और खोज के खब्ती।

पोर्ट मोर्सबी में पर्याप्त श्वेत कुटुम्ब थे। इसलिए हमें पैसे की खास तंगी न रही। हम इत्मीनान से पापुअन जनता के विभिन्न वर्गों को चित्रों द्वारा अमर बना रही थी कि एक दिन हमने पोर्ट मोर्सबी के समुद्र-तटवर्ती नाविकों और माँझियों के गाँव हनुआबाद के समीप एक नाव देखी। इस प्रसिद्ध नौका का नाम है 'लकोटी' और इसके ऊपर दिन दहाड़े जो कुछ होता है, उससे ईसाई मिशनरी बहुत क्रुद्ध हैं। खुले आसमान के तले, वर्ष में एक बार पापुआ की कुमारियाँ 'लकोटी' पर एक समूह-नृत्य आयोजित करती हैं। उनके रामी (ताड़पत्र के घाघरे) सिर्फ कमर ढँकते हैं। अन्य अंग केवल खुले ही नहीं रहते, हिला-हिलाकर जोर-शोर से प्रदर्शित किये जाते हैं। इस नृत्य को 'सिऊ सिऊ' कहते हैं और पादरियों की निगाह में यह शब्द अश्लीलता का प्रतीक है। किंतु हमें यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि हमारी तथाकथित सभ्यता की तुलना में इस समाप्तप्राय संस्कृति में कहीं अधिक उल्लास और स्वाभाविकता है।

जादूगरनी से मुलाकात

एक दिन शाम को हम अपने दुभाषिये अहुइया का पोर्ट्रेट बना रहे थे कि एकाएक मार्गरेट की आवाज सुनाई दी—"हे भगवान्, यह कौन है ?" काम छोड़कर मैंने सड़क की ओर देखा। एक लड़की कमर हिलाती हुई चली जा रही थी। उसके पहनावे से मालूम होता था कि अभी वह कुँवारी है। उसके पीछे एक और मूर्ति थी। वास्तव में इस पीछेवाली मूर्ति को ही देखकर मार्गरेट आश्चर्य से चीख उठी थी। वह स्त्री है या पुरुष, यह जानना मुश्किल था। उसके बालों में लटें पड़ी हुई थीं और वे उसके मुँह के सामने लटकी हुई थीं। दो लम्बे दाँत लटों के बाहर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपके **व्यक्तित्व**
में चार चाँद
बिन्नी का
जगमग सफेद
कंसल

महीन मुलायम साटिन ड्रील कंसल* में सुन्दरता और मजबूती दोनों हैं—लम्बे धागे की रुई की शक्ति और चमक दोनों इसमें हैं क्योंकि उसी से यह बनता है।

कंसल की पतलून के साथ बिन्नी के कंकरर* पापलीन की कमीज पहनिये—वह भी ऐसा ही शानदार कपड़ा है।

'स न फो रा इ ज ड — मेसर्स क्लू यें ट, पीबाडी ऐण्ड कं० इंक, यू०एस०ए० का रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क है जिसके हम रजिस्टर्ड व्यवहारकारी हैं।

अपनी जरूरत के मुताबिक बिन्नी के कपड़े नियंत्रित मूल्य में बिन्नी के अधिकारप्राप्त स्टाकिस्टों से खरीदिये जिनके यहाँ यह साइनबोर्ड लगा है।

दि वर्किंघम ऐण्ड कर्नाटक कं० लि०
बिन्नी ऐण्ड कं० (मद्रास) लि० की सहायताप्राप्त

JWT/BC/C/1748A

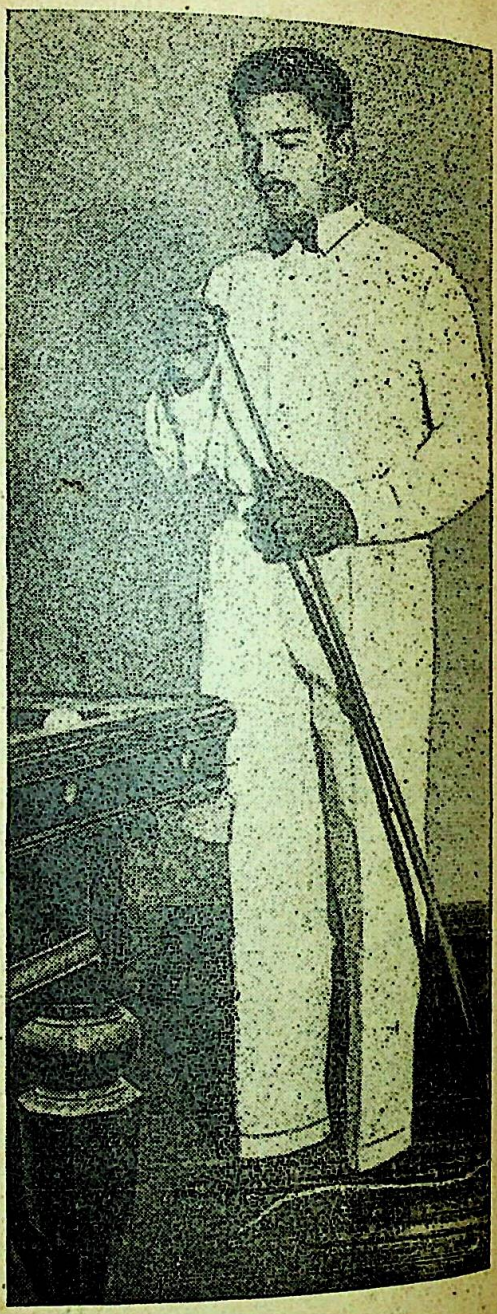

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिखाई देते थे, और दिखाई देती थी चपटी नाक। उसकी छोटी-छोटी आँखें चमक रही थीं। पीठ पर एक पेटी बँधी हुई थी। वह इतनी भयंकर मूर्ति थी कि दिन में भी उसे देखकर डर से कँपकँपी पैदा हो जाये। यह थी इलाके की जादूगरनी कोरी टबोरा।

अहुइया के द्वारा हमने कोरी टबोरा और उसकी बेटी निनोआ को बुलाया और उनके पोर्ट्रेट बनाने चाहे। अहुइया ने बताया कि कोरी टबोरा वर्षा का जादू जानती है। इसके सब साधन उसकी पेटी में मौजूद हैं, जिसे दिन-रात वह अपने साथ रखती है। वर्षा के अलावा वह जच्चा-बच्चा के रोग दूर करने का जादू भी जानती है और बच्चा जन्मने से पहले ही बता सकती है कि लड़का होगा या लड़की।

उसकी पेटी क्या थी, पूरा भानमती का पिटारा था। किसी जानवर की खोपड़ी, साँप का अस्थिपंजर, कुत्ते के सिर के आकार की कोई जड़ी, हड्डियों की बनी हुई सुइयाँ, मगर के दाँत, बटन, सेफ्टी पिनें, बोतल के टुकड़े और कार्क, किसी पक्षी की टाँग, किसी जानवर की चर्बी, एक बड़ी बोतल में कोई तेल, जिसकी मालिश से इन्सान से लेकर पशु तक संतानोत्पत्ति की शक्ति प्राप्त कर सकते हैं, इत्यादि।

कोरी में हमने गजब का व्यावहारिक ज्ञान पाया। जड़ी-बूटी के ज्ञान के साथ बुद्धि की भी उसमें कमी न थी। लोगों को कैसे प्रभावित किया जा सकता है, यह गुर उसे पूरी तरह मालूम था। हमने गर्भस्थ शिशु का लिंग जानने का जादू जानना चाहा। बहुत सहज है यह जादू। बड़े दिखावे के बाद किसी फल के दो बीज गर्भवती की पीठ पर रख दिये जाते हैं और उसे हिलने को कहा जाता है। जादूगर इन बीजों में से एक में नर की कल्पना करता है, दूसरे में मादा की। गर्भवती के हिलने से एक बीज जमीन पर गिर जाता है। शरीर पर बचा हुआ बीज गर्भस्थ शिशु के लिंग की सूचना देता है। यह अंदाज कम-से-कम ५० प्रतिशत तो सही निकल ही सकता है।

हमने पूरी दिलचस्पी से निनोआ और कोरी के पोर्ट्रेट बनाये।

हनुआबाद में एक और दृश्य जो हमारी आँखों के सामने हमेशा झूलता रहा है, वह है आदिवासियों का एक मिश्र नृत्य। एक दिन हम रूना प्रपात से लौट रही थीं कि राह में एकाएक ढोलों की आवाज सुनाई पड़ी। अपने आप हमारे पाँव उस दिशा की ओर बढ़ गये। पहले तो नृत्य-संगीत की गति धीमी और उबानेवाली रही; किंतु ज्यों-ज्यों रात गहरी होती गयी, एक अजीब सम्मोहन उनके नृत्य में उत्पन्न होता गया। खुले आसमान के नीचे, मशालों की रोशनी में हम रात को छः घंटे वहाँ खड़ी रहीं, और समय का पता ही न चला। हम पर जैसे एक जादू छा गया हो।

दारू और थर्सडे द्वीप

पोर्ट मोर्सबी में हमने सैकड़ों पोर्ट्रेट बनाये। इनमें पापुआ के विभिन्न वर्गों के नमूने तो थे ही, बहुत से पोर्ट्रेट यूरोपीय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ताज़गी का तराना ! लाइफ़बॉय से नहाइये, आपके
तनमन में ताज़गी का तराना गूंज उठेगा ! और मज़ा यह है
कि नहाते समय, लाइफ़बॉय मैल में छिपे कीटाणुओं को
धो डालता है और आप को एड़ी से चोटी तक तरोताज़ा कर देता है ! जी हाँ,
लाइफ़बॉय से आप का सारा परिवार तंदुरुस्त रहेगा ।

लाइफ़बॉय है जहाँ, तंदुरुस्ती है वहाँ !

L. 33-X29 HI

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुटुम्बों के भी थे। यूरोपियनों के पोर्ट्रेट से हमें अपनी यात्रा के अंतिम चरण के लिए पर्याप्त पैसे भी मिल गये। वास्तव में हमें जाना था थर्सडे द्वीप-इस द्वीप में मलेनी। शियई नस्ल की एक अत्यंत प्राचीन पीत-वर्णीय जाति रहती है। मोर्सबी या दारू से थर्सडे द्वीप पहुँचना कठिन काम था। समुद्र में मूँगे की चट्टानें होने के कारण कोई सामान्य नौका-पथ इनके बीच नहीं था, और छोटी-मोटी नौकाओं में यात्रा करना दुस्साहस ही था। किंतु थर्सडे द्वीप गये बिना हमारा मिशन पूरा नहीं होता था।

हमने निश्चय किया कि मोर्सबी से दारू तो पहुँच ही जायें। शेष संत लूका पर छोड़ दें। अतः 'पापुअन चीफ' पर हम दारू के लिए रवाना हुए। मार्ग में हम किकोरी में कुछ दिन ठहरकर पोर्ट्रेट बनाना चाहती थीं। किंतु भीषण वर्षा, दलदल और नर-भक्षण की घटना के कारण वहाँ से हमें हताश ही होना पड़ा।

दारू की भूमि किकोरी की भूमि की अपेक्षा कोई अधिक सुखी नहीं थी। 'चीफ' परही दारू के एक दूकानदार से मुलाकात हो गयी। जहाज से उतरते समय उसने हमें आश्वासन दिया—"यहाँ कैम्पिंग करना कोई मुश्किल थोड़े ही है। हम आपके लिए कोई ऐसा टीला खोज देंगे, जहाँ ज्वार का पानी नहीं पहुँचता और न कीचड़ ही इतना गहरा होता है कि आप धँस जायें। और वहाँ साँप भी कम होंगे। लेकिन आपका तम्बू असली होना चाहिये। बात यह है कि यहाँ के घड़ियाल जरा बेशर्म और ढीठ हो गये हैं। जरा-सी असावधानी होने पर सीधे तम्बुओं में घुसकर लोगों को पकड़ ले जाते हैं। सबसे अच्छी बात तो यह होगी कि आपके तम्बू के इर्द-गिर्द एक गहरी खाइ खोद दी जाये, ताकि घड़ियाल तम्बू तक पहुँच ही न सकें ...."

यह था दारू।

किंतु संत लूका की कृपा का अंत नहीं। दारू के दलदल में पैर रखते ही स्थानीय असिस्टेंट रेसीडेंट मजिस्ट्रेट की पत्नी से मुलाकात हो गयी और हमें अपने अपेक्षा-कृत सुरक्षित घर लिवा ले गयीं। घर के आसपास दलदल भरा हुआ था, जिसमें लम्बी, मोटी पानी की घास उगी हुई थी। इसे जान-बूझकर साफ नहीं किया गया था, ताकि साँप, घड़ियाल उसी में बने रहें। दारू पूरा भूमध्य-रेखावर्ती जंगल है, सूरज की किरणें वहाँ नहीं भेद पातीं।

यहाँ हमने जिनके पोर्ट्रेट बनाये, उनमें आदिम सरदार ताऊ-पराऊपी-एक-सुकी सबसे प्रमुख है। प्रमुखता उसके कृत्यों के कारण भी है और चेहरे की बनावट के कारण भी। दारू फ्लाइ नदी के मुहाने पर बसा हुआ है। उस पर ऊपर की ओर एक गाँव है वेरियादाइ। ताऊ-पराऊपी और उसके आठ साथियों ने इस गाँव में जो कुछ किया, न्यूगिनी के आधुनिक इतिहास में उसकी दूसरी मिसाल नहीं मिलती। ये लोग एक नाव पर सवार होकर फ्लाइ नदी के गाँवों में नरमुंड एकत्र करने निकले।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जीवन का आनन्द लूटने के लिए

कॅडबरीज़
चॉकलेट...
सिर्फ़
मिठाई ही नहीं...
पौष्टिक
ख़ुराक भी है!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वेरियादाइ गाँव पूरा-का-पूरा जला दिया, ग्रामवासियों के हाथ-पैर काट कर वहीं फेंक दिये और सिर तथा धड़ उठा ले गये। दर्जनों गाँवों में यही हुआ। जब रिपोर्ट दारू पहुँची, तब सरकार ने मुस्तैदी से सख्त कदम उठाया और उसी का यह परिणाम था कि ताऊ-पराऊपी अपने आठ साथियों सहित दारू में नजरबंद था। सूरत-शक्ल और स्वभाव से ये व्यक्ति किसी भी ऊँची और सुसंस्कृत जाति का मुकाबला कर सकते थे। न नर-भक्षण उनके न्याय और परम्परा के अनुसार कोई जघन्य अपराध था, न दूसरे कबीले के मनुष्यों का शिर-च्छेदन ही। यह तो आम रिवाज के रूप में उन्हें सांस्कृतिक वसीयत में मिला था, फिर उनमें अपराध की भावना ही कैसे उठती ?

दारू से एक डोंगी पर सवार होकर हम फ्लाई नदी के ऊपर बसे हुए मादिरी, वेरियादाई और एवरिल संगम तक गये और भूमध्य-रेखावर्ती वनों, प्राणियों और वनस्पतियों का गहरा अनुभव प्राप्त किया। इन अनुभवों में सबसे लोमहर्षक है एक प्रागैतिहासिक महाकाय सरीसृप का दर्शन। मैंने उसे देखा है, यह आज मैं दावे के साथ केवल इसीलिए कह सकती हूँ कि मेरे अन्य साथी इस बात के गवाह हैं। उसका मुँह साँप जैसा था, जिसके भीतर से जीभें लप-लपा रही थीं। किंतु धड़ विशालता में घड़ियाल जैसा था। वह मुँह से सिसकारी भर रहा था। वह दलदल से कोई तीन फुट ऊँचा निकला हुआ था, दलदल में कितना धँसा हुआ था, कोई नहीं कह सकता। वह निश्चय ही 'वरानस कोमोडीएनसिस' वर्ग का अत्यंत क्रूर और घातक प्राणी था। आज भी उसकी याद आती है, तो रोंगटे खड़े हो जाते हैं। क्यों हम पर उसने हमला नहीं किया यही आश्चर्य है। वास्तव में संत लूका का वरद हस्त हम पर हर घड़ी छाया किये था।

थर्सडे द्वीप के समीप हमने समुद्री स्वर्ग का दर्शन किया। असंख्य रंगों और आकारों की सीपियाँ और मूँगे हमने देखे। आकार और रंग की वह शोभा अवर्णनीय है। उसे देखकर आप मुग्ध हो मुँह खोले बैठे रह जायेंगे। किंतु दारू से थर्सडे द्वीप के तट की १३० मील लम्बी यात्रा में यदि आप सही-सलामत बचे रहे, तभी इस शोभा के दर्शन हो सकते हैं। रास्ता भयंकर रूप से खतरनाक है – चट्टानों, उथले समुद्र में छिपी मूँगे की पहाड़ियों, तूफानों और भूलभुलैयों से भरा हुआ। न्यूगिनी के नरमुंडों की खोज में आकर हमने जितने कष्ट सहे थे और जिन खतरों का सामना किया था, सब इस इंद्रलोक के दर्शन से सार्थक हो गये।

थर्सडे में पोर्ट्रेट का काम पूरा करके हम सिंगापुर आ गयीं और कुछ दिन वहाँ विश्राम कर और जर्जर हो गये शरीर में फिर से कुछ रक्त-मांस इकट्ठा कर, संत लूका की कृपा से सही सलामत न्यूयार्क लौट आयीं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सौंदर्य का निखार संवारे बालों में ही है

स्वस्तिक

परफ़्यूम्ड केस्टर ऑइल

सुन्दर संवरे बालों के लिये

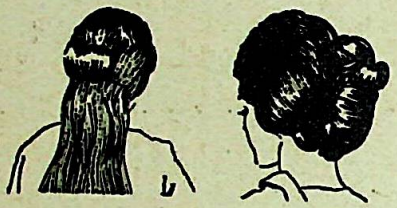

स्वस्तिक हैयर स्टाइल "संध्या"

(१) कुछ ऊपरी लटों को सीधा मोड़ लें और उन पर पिन लगाएँ।

(२) बाकी बालों को बायीं तरफ़ ले कर वेणी-सी बनाकर कंघी से संवारें।

(३) सिरों को मोड़ कर वेणी के नीचे अच्छी तरह से जमा दें ताकि जूड़ा बन जाए।

स्वस्तिक
ऑइल मिल्स लिमिटेड बम्बई.

Shilpi SOM 35 A HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मकदूम बख्श

स्मृति-पटल पर अंकित एक चित्र, जिसकी रेखाएँ साठ वर्ष बाद भी धुँधली नहीं हुई हैं।

डा० गोविंददास

कोई साठ वर्ष पहले की बात है, मेरी उम्र पाँच-छः वर्ष की रही होगी। उसके कुछ वर्ष पूर्व मेरे पितामह गोकुलदासजी को अंग्रेज सरकार ने राजा की उपाधि दी थी, जो उस समय ब्रिटिश गवर्नमेंट द्वारा दी जानेवाली उपाधियों में सबसे बड़ी उपाधि मानी जाती थी। वे उस समय के मध्यप्रदेश के सबसे बड़े जमींदार थे और सामंतशाही के उस काल में जो शान-शौकत थी, वह इस राजा के खिताब से हमारे घर में बहुत बढ़ गयी थी। शान शौकत के प्रदर्शन के कुछ प्रमुख मार्ग निश्चित हैं; उनमें प्राचीन काल से लेकर अब तक कोई परिवर्तन नहीं हुआ है—आलीशान निवास-स्थान और सवारी इन प्रदर्शनों में प्रमुख है। हमारा मकान अब एक महल बन गया था। जिस काल की मैं चर्चा कर रहा हूँ, उस समय सवारी के लिए घोड़ों का बड़ा महत्व था। मोटरकारों के इस जमाने में भी शानशौकत के कामों में तो अभी भी घोड़ों का ही उपयोग होता है। हमारे देश के राजकीय कामों के लिए राष्ट्रपति की सवारी घोड़ों की छकड़ी पर ही निकलती है, जिसके आगे-पीछे घुड़सवार रहते हैं। हमारे देश में ही नहीं, इंग्लैंड आदि देशों का भी यही हाल है। हमारे अस्तबल में उस समय कोई तीन सौ बग्घी और जीन-सवारी के घोड़े रहते थे और अस्तबल जिनके जिम्मे था, थे मकदूम बख्श!

यह आदमी एकदम आबनूस के रंग के सदृश काले रंग का था। उस रंग में इसकी बड़ी-बड़ी लाल आँखें थीं। कद छः फुट से अधिक ही होगा और जितनी ऊँचाई थी, उतनी ही मोटाई भी। काले रंग की दाढ़ी थी, जो छाती पर न फैलकर बड़े ढंग से सँवारी जाकर राजपूती दाढ़ी के सदृश कानों में लिपटी रहती थी। मकदूम बख्श बग्घी चलाने और जीन सवारी दोनों के विशेषज्ञ थे। बग्घी के काम के घोड़े उस वक्त आस्ट्रेलियन बेलर नस्ल के सबसे अच्छे माने जाते थे और जीन सवारी के काठियावाड़ तथा मारवाड़ नस्ल के। जिस नस्ल के घोड़े घुड़दौड़ में या पोलो में काम आते हैं, वे हमारे यहाँ नहीं थे। हमारे यहाँ की शान-शौकत के लिए बग्घी और जीन सवारी के घोड़े ही उपयोगी थे। मकदूम बख्श छः घोड़ों की गाड़ी कोच बक्स पर बैठकर बड़ी शान से चलाते थे। कोच बक्स पर वे जरा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

کیلی پھمب کتنئی پتیوٗ اَتھوٗ
کونگ کوٗئی رنگ کرنا ویو
زٕ اَوِیلِ شال دونیو پتیوٗ اَتھوٗ
کونگ کوٗئی رنگ کرنا ویو

"मैं इसे केसरिया रंग में रंगूंगी और इसी के मेल के रंग का एक सुन्दर शाल भी बुनूंगी।"

मनमोहक केसरिया रंग

अपना नया घर बसाने के विचारों में डूबी कश्मीरी नवोढ़ा दुलहन गर्व से कहती है कि वह अपने ही हाथों से एक पशमीना बुनेगी।

हाथकरघा वस्त्र

भारत की राष्ट्रीय परम्परा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तिरछे होकर बैठते थे और जो वर्दी वे पहनते थे, उसमें सिर पर लुंगी बाँधी जाती थी। यह वर्दी और लुंगी जरी की रहती थी। इस छकड़ी के सिवा चद्दर नाम की एक गाड़ी में चार-चार घोड़ों की चार कतारों में सोलह घोड़े जोते जाते थे। लेकिन यह पोस्टेलियन होती थी। याने एक-एक जोड़ी घोड़ों पर एक-एक कोचवान रहता था अर्थात् सोलह घोड़े की यह बग्घी आठ कोचवान चलाते थे। परंतु ये आठों कोचवान मकदूम बख्श की मातहती में रहते थे। जीन सवारी के घोड़ों की फेरी भी मकदूम बख्श करते थे। उनमें से कई घोड़े नाचते और कई लंगूरी चाल से चलते थे। मकदूम बख्श इन जीन सवारी के घोड़ों पर स्वयं बैठते और किसी को नचाते तथा किसी को लंगूरी चाल से चलाते थे। अपने इस हुनर में मकदूम बख्श दूर-दूर तक विख्यात थे। अनेक बार वे आसपास की रियासतों में भी बुलाये जाते थे। इनमें दो रियासतें प्रमुख थीं—एक रीवाँ और दूसरी इंदौर। वहाँ से ये बड़ी-बड़ी सौगातें लेकर लौटते थे। परंतु जब ये लौटते, तब वे सारी सौगातें पहले पिताजी के सामने रखी जातीं और तब ये इन्हें लेते। हर दृष्टि से मकदूम बख्श बड़े भरोसेवाले और ईमानदार आदमी माने जाते थे। हमारा कुटुम्ब वल्लभ सम्प्रदाय का अनुयायी है। हमारे कुटुम्ब का एक मंदिर भी है। मेरे पितामह, पिताजी और हम सभी वैष्णव हैं। लेकिन उस काल में अलग-अलग धर्म माननेवालों का भी परस्पर जो सम्बंध था, वह अनुकरणीय था। मकदूम बख्श मुसलमान रहते हुए भी हमारे घर के ऊँचे-से-ऊँचे कर्मचारियों में एक थे।

परंतु इनमें एक बहुत बड़ा दोष था। कई बार ये शराब के नशे में बेहोश तक हो जाते। हमारे घर की शान-शौकत बढ़ाने में मेरे पिताजी का प्रधान हाथ था। उनका खान-पान, वेश-भूषा, रहन-सहन सभी ऊँचे-से-ऊँचा था। घोड़ों का यह शौक पिताजी को ही था और घोड़ों का क्या, ऐसा शौक ही कौन-सा था जो उनको न हो! वे बड़े प्रखर स्वभाव के थे। उनके पास एक बड़ा-सा चाबुक रहता था, जिसे वे सुलतान दूल्हा कहते थे। उस चाबुक का यह नाम सारे जबलपुर में विख्यात हो गया था। यह सुलतान दूल्हा जानवरों पर न चल, इन्सानों पर चलता था। मकदूम बख्श का नशा इस सुलतान दूल्हे से उतरता था। साठ वर्ष बीत जाने के बाद भी मकदूम बख्श पर चलनेवाले इस सुलतान दूल्हे के सड़ाकों की आवाज अभी भी अनेक बार मेरे कानों में गूँज उठती है। उस जमाने में मेरे पिताजी ही नहीं, अनेक जमींदार, तालुकेदार और आला अफसर से लेकर पुलिस इंसपेक्टर और पुलिस के सिपाही तक, जब किसी पर कुपित होते सुलतान दूल्हा जैसे ही चाबुकों से निरीह लोगों की चमड़ी चीथा करते थे। गरीबों से बेगार लेते और न जाने क्या क्या! हुक्म अदूली तो उस जमाने में बर्दाश्त के बाहर की बात होती। ऐसे अनेक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बवासीर

से शीघ्र व

बिना तकलीफ़

आराम

पाने के लिए

हडेन्सा

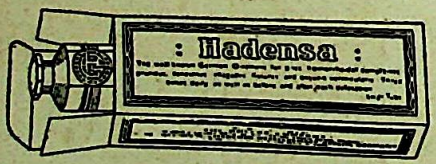

हडेन्सा में चेतना – अपहरणकारी तत्व नहीं हैं और इससे कपड़ों पर दाग़ भी नहीं पड़ता।

HIN.

इस छाप पर

विश्वास कीजिये

उदयपुर का

गाय छाप

SEVASHRAM PRODUCTS

UDAIPUR

असली

ब्राह्मी आँवला तैल

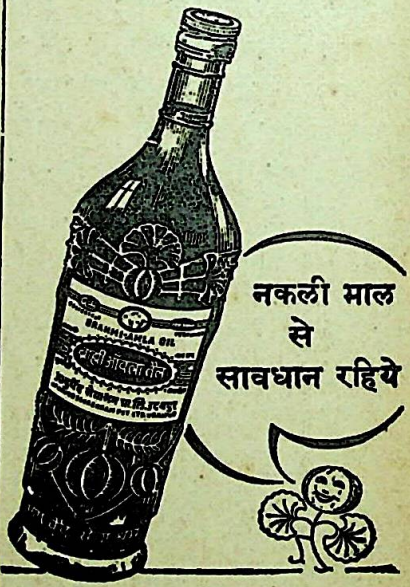

नकली माल से सावधान रहिये

आयुर्वेद सेवाश्रम प्राइवेट लि०
उदयपुर तथा वाराणसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लोगों को जिनके पास दौलत होती या कोई सरकारी ओहदा, वक्त-बे-वक्त और बात-बात पर अपना यह शौक पूरा करने का कोई कानूनन अधिकार न होते हुए भी भरपूर आजादी रहती थी और मातहत कर्मचारी अथवा गरीब मजदूर इस प्रकार मार खाने के अभ्यस्त भी हो चुके थे। उज्र-ऐतराज तो होता ही नहीं और न बाद में कोई सुनवाई। मकदूम बख्श का नशा चाहे इस सुलतान दूल्हे से उतर जाता हो और जिन पर इस प्रकार के प्रहार होते, उन्हें भले ही मोटी-मोटी इनामें देकर इसका परिमार्जन भी कर दिया जाता हो; किंतु किसी का नशा उतारने अथवा किसी भी कारण या अकारण ही एक मानव द्वारा दूसरे मानव पर अपने कोप का यह स्वरूप आचरण की दृष्टि से बीभत्स ही माना जायेगा। मानव के इसी आचरण का परिणाम यह हुआ कि जमाना बदला और उसने किसी का नशा उतारने के लिए सुलतान दूल्हा जैसे चाबुक का प्रयोग करनेवाले वर्ग का ही आज नशा उतार दिया। उस जमाने में अपने मातहत कर्मचारियों अथवा किसी श्रमिक मजदूर पर सुलतान दूल्हे का प्रयोग करना जितना आसान था, आज के जमाने में प्रयोग की तो कौन कहे उसकी कल्पना भी उतनी ही भयावह है।

जबलपुर में हिन्दुओं का दशहरा और मुसलमानों का मुहर्रम दोनों त्योंहार बड़ी धूमधाम से मनाये जाते हैं। उस समय हिन्दुओं के इस त्यौहार में मुसलमान और मुसलमानों के इस त्यौहार में हिन्दू बड़े उत्साह से सम्मिलित होते थे। इन दोनों ही त्यौहारों पर मकदूम बख्श की अध्यक्षता में हमारे घोड़ों की बग्घियाँ और ये नाचने तथा लंगूरी चाल से चलनेवाले घोड़े जुलूसों व सवारियों में निकलते थे। इन त्यौहारों के सिवा जबलपुर को ब्याह-शादियों में भी इन बग्घियों और इन घोड़ों की बड़ी माँग रहती थी। सभी जगह अपनी आकृति और हुनर के कारण मकदूम बख्श का बड़ा भारी जलवा रहता था। उस समय एक व्यक्ति ही नहीं, एक प्रकार की संस्था बन गये थे।

★

जब किसी को नये जमाने में सिर्फ बुराई-ही-बुराई नजर आये, तो समझना चाहिये कि वह वृद्ध हो चला है।

★

कप्तान ने नाविक को, जिसने उसे डूबने से बचाया था, प्रशंसा करते हुए कहा—"कल मैं परेड के समय सबके सामने तुम्हारा शुक्रिया अदा करूँगा।"

"सर, कृपा करके ऐसा न करना।" नाविक ने गिड़गिड़ाते हुए कहा—"वरना वे मुझे समुद्र में फेंक देंगे।"

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'आप हैं एक बिगड़े हुए नवाब...'

'मेरे पतिदेव एक बिगड़े हुए नवाब से कम नहीं,' डी/८, यूनियन हाउस, माहिम, बम्बई १६ की श्रीमती आर. आर. प्रभु कहती हैं, 'और कपड़ों की धुलाई पर तो इन का माथा मैला होते देर नहीं लगती। लेकिन जब से इन के कपड़े मैं ने सनलाइट से धोने शुरू किये हैं, यह भी खुश हैं और मैं भी। सनलाइट से कपड़े शानदार सफ़ेद और उजले धुलते हैं और इस का ढेरों झाग मैल का कण कण बहा ले जाता है!

गृहिणियाँ जानती हैं कि शुद्ध, मुलायम झागवाले सनलाइट की धुलाई में उन के कपड़ों की भलाई है। आप भी उन से सहमत हो जायेंगी।

सनलाइट

आप के कपड़ों की सर्वोत्तम सुरक्षा के लिए-

'S. 30-X29 HI

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ति० जानकीरामन्

पिळ्ळै के घृणातप्त चेहरे पर क्रोध उमड़ आया। "बस करो..." उन्होंने हाथ से इशारा किया। नादस्वर (शहनाई-जैसा लम्बा वाद्य) से निकलती सिनेमा-गीत की धुन बंद हो गयी।

"क्यों रे, पौ फटते ही यह क्या प्रलाप शुरू कर दिया है?"

उनका लाडला बेटा तंगवेलु नादस्वर पर हाथ फिराता हुआ बैठा रहा, कुछ बोला नहीं। इससे पिळ्ळै का क्रोध और भड़क उठा—"क्या ये कनसुरे गाने-बजाने के लिए ही मैंने तुझे नादस्वर सिखाया था? बोलता क्यों नहीं?"

"आप ही ने तो कहा था, आज कचेरी (कर्नाटक के संगीत की महफिल) में एक अंग्रेज संगीतज्ञ आनेवाले हैं। मैंने सोचा, उन्हें हमारा पुराने ढंग का संगीत क्या समझ में आयेगा; इसलिए....."

"इसलिए?"

"जो उन्हें पसंद आयें, ऐसी तर्जें..."

पिळ्ळै ने बीच में बात काटी—"सुना नहीं, 'ऐयर' क्या कहते थे — हमारा कर्नाटक संगीत सुनने के लिए ही गोरा साहब आया है। और तूने खुद तय कर लिया कि हमारा संगीत उसे रुचेगा नहीं और 'लारालप्पा लारालप्पा' सुनाकर हमारे संगीत की नाक बचानी है। धन्य हो बेटा, धन्य!"

तंगवेलु इस उलाहने के जवाब में सिर्फ मुस्कराया। पिळ्ळै को भी हँसी आ गयी—"हँसता है रे .....जा बाजे को साफ करके रख आ।"

तंगवेलु ने नादस्वर पर गिलाफ चढ़ाकर उसे खूँटी पर लटका दिया; फिर अंदर चला गया। पिळ्ळै वहीं बेंच पर बैठे पानदान खोलकर सुपारी काटने लगे। उनके चित्त में अनेक बातें घूम गयीं।

इसी खूँटी पर कई पुश्तों से यह मंगलवाद्य लटकाया जाता रहा है। आज तंगवेलु जिस नादस्वर पर फिल्मी तराना बजा रहा था, वह पिळ्ळै के पिता का था। वे अपने समय के चोटी के नादस्वर-वादक थे। इस वाद्य से वे अमृत-वृष्टि किया करते थे। एक बार तिरुच्चिरै के बड़े

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दी

युनाइटेड कमार्शियल बैंक लिमिटेड

प्रधान कार्यालय : २, इंडिया एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता

अधिकृत पूंजी	.....८,००,००,००० रु.
लागत पंजी	.....४,००,००,००० रु.
चुकती पूंजी	.....२,००,००,००० .
सुरक्षित कोष	.....२,३५,००,००० रु.
देय बिल और जमा राशि	.....१,००,१५,००,००० रु.

(३१–१२–६१)

डायरेक्टर्स

जी० डी० बिड़ला
चेयरमैन

ईश्वरीप्रसाद गोयनका वाइस चेयरमैन	मदनमोहन आर० रुइया वाइस चेयरमैन
अनन्त चर्न ला	महादेव. एल० दहाणुकर
गोविन्दलाल बांगड़	मोहनलाल एल० शाह
पी. डी. हिमम्तसिंहका	योगिन्द्र एन० मफतलाल
रामेश्वरलाल नोपानी	टी० एस० राजम
मोतीलाल तापड़िया	जी० डी० कोठारी

हिन्दुस्तान के सभी प्रमुख कस्बों व नगरों में शाखाएँ। पाकिस्तान, बर्मा, मलाया, सिंगापूर, हांगकांग और लंदन में विदेशी शाखाएँ। विश्व में हर जगह एजेंट। करेंट अकाउन्ट खोले जाते हैं। कम या अधिक समय के डिपाजिट लेती है। ३% ब्याज का सेविंग्ज बैंक अकाउन्ट। सुविधाजनक मासिक किश्तों में संचित धन के रिकरिंग डिपाजिट। विदेशी मुद्रा व रुपयों के ट्रेवेलर्र चेक बेचे व लिये जाते हैं। अन्य सभी प्रकार की देशी व विदेशी एक्सचेंज का काम।

एस० टी० सदाशिवन
जनरल मैनेजर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मंदिर में उन्होंने 'हुसैनी' राग की ऐसी आलापना की थी कि उस जमाने के बचे-खुचे बड़े-बूढ़े उसे स्मरण कर आज भी पुलकित हो उठते हैं। और आज तंगवेलु उसी पर "लारालप्पा" बजा रहा था।

साल-भर से यही चिंता पिळ्ळै को साल रही है। विवाह के अवसर पर बजाये जानेवाले फिल्मी रिकार्ड सुन-सुनकर तंगवेलु ने ये सस्ती तर्जें सीख ली हैं। आज का नवोदित रसिक-वर्ग भी यही सब सुनना चाहता है। वैसे तंगवेलु क्या कम निष्णात है कर्नाटक संगीत में! पिळ्ळै ने अपना सारा कौशल उसे सिखा दिया है। फिर भी उसे इन अरसिकों को रिझाने की क्यों सूझती है?

पिळ्ळै अक्सर इस उधेड़-बुन में पड़ जाते। "हम किसी भूल-भुलैया में तो नहीं फँस गये हैं? जो अधिकांश जनता की समझ में नहीं आये, क्या वह उच्च संगीत हो सकता है? ऐसी कला का उपयोग ही क्या? हमें समारोहों में बुलाया ही क्यों जाता है? इसीलिए न कि चार जने संगीत सुनें, सुख पायें। हम उनकी परवाह न करके अपनी ही दुनिया में रमते रहें, यह कहाँ तक ठीक है?"

कुछ ऐसे ही मनोमंथन के कारण उन्होंने तंगवेलु से यह समझौता कर लिया था कि विवाह आदि के जुलूस में अगर कोई नयी रोशनी का रसिक फिल्मी तराने की फरमाइश करे, तो तंगवेलु फरमाइश पूरी कर दिया करे; वे स्वयं आस-पास कहीं किसी घर के चबूतरे पर तब तक सुस्ता लेंगे।

उस दिन से तंगवेलु पूरे उत्साह के साथ रात को फिल्मी तरानों का अभ्यास किया करता। पर आज जब उसने सवेरे-सवेरे फिल्मी तर्ज छेड़ दी, तो पिळ्ळै उस पर उबल पड़े।

पिळ्ळै ने सामने खूँटी पर लटके हुए, अपने पिताजी के समय के नादस्वर को देखा। "पश्चिम से एक संगीतज्ञ आये हैं। वे वहाँ की एक बड़ी संगीत-गोष्ठी के सदस्य हैं। शुद्ध दाक्षिणात्य संगीत सुनना चाहते हैं।" परसों ऐयर के कहे हुए ये शब्द उनके कानों में गूँज रहे थे।

"आजकल तो नकली साग-सब्जी तक आ गयी है; तब शुद्ध संगीत कौन सुनना चाहता है!" पिळ्ळै ने कुछ म्लान भाव से कहा था।

इस पर ऐयर ने प्रतिवाद किया था — "पिळ्ळैजी, संसार उतना संकुचित नहीं हो गया है। देखिये, ये कितनी दूर से हमारा संगीत सुनने आ रहे हैं। आप दो-चार 'कीर्तन' बजा दीजिये। 'तवुल' (मृदंग) की भी आवश्यकता नहीं। स्वांतः सुखाय जैसा बजाया करते हैं, वैसा ही बजाइये।"

"कुर्ता पहनकर आऊँ या दुपट्टा काफी है?"

"यह गोरा बड़ा विद्वान् है, जैसे पूरा भरा हुआ घड़ा। आपके लिबास से उसे कोई वास्ता नहीं। आपको जिसमें सुविधा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गृहिणीका आनन्द
जनता कुकर

इस कुकरकी विशेषताएं-

- अत्यंत सुविधाजनक।
- कम जलावन लगता है।
- कम समय में खाना तैयार हो जाता है।
- कुकरका ढक्कन कढ़ाई के रूप में उपयोग किया जा सकता है।

मे. हकमचंद ईश्वरदास

१६७, गुरुवार पेठ, पूना-२

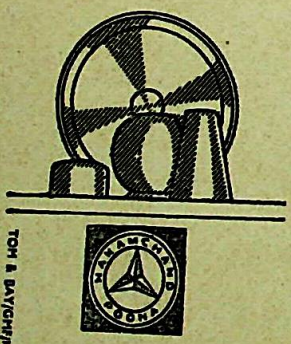

गुजरात मेटल् फैक्टरी

सभी प्रकार के तांबे, पीतल व स्टेनलेस स्टील के बर्तनों का निर्माता.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हो, उस लिबास में आइये।"

× × ×

शाम के छः बजे 'कचेरी' थी। उसमें क्या-क्या बजाना है, यही सोचते-सोचते पिळ्ळै दीवार के सहारे ऊँघने लगे।

बैलगाड़ी से उतरकर पिळ्ळै वकील ऐयर के घर में प्रविष्ट हुए। तंगवेलु दो नागस्वर हाथ में लिये उनके पीछे-पीछे था। ऐयर ने अगवानी की। भीतर दीवान-खाने में गिने-चुने संगीत-रसिक इकट्ठे हुए थे। ऐयर ने पिळ्ळै का सबसे परिचय कराया।

"ये हैं फिलिप पोल्स्का, आज के मुख्य अतिथि।" पिळ्ळै ने हाथ जोड़कर पोल्स्का को नमस्कार किया। वे महर्षि से दीखते थे। कोई सत्तर साल के होंगे। सिर पर चाँदी के तार-से बाल बिखरे हुए थे। कुछ स्थूल काया, बड़े-बड़े तेजस्वी नेत्र – नीले और अधखुले। पिळ्ळै उन ज्ञानदीप्त नेत्रों को देखते रह गये। ऐयर ने ठीक कहा था– वे भरे हुए घट थे।

संगीत द्वारा शांति का संदेश देनेवाले संत त्यागराज

अन्य गोरे अतिथियों से परिचय होने के बाद पिळ्ळै रंगमंच पर बैठे। तंगवेलु उनके पीछे बैठा। पिळ्ळै ने नागस्वर पर 'नाट्टै' राग का विस्तार से आलाप कर एक 'कीर्तन' (कर्नाटक संगीत की एक प्रकार की बंदिश) बजाना शुरू किया।

पोल्स्का के चेहरे पर आत्मोल्लास की छवि थिरक गयी। पीयूषधारा-सा नाग-स्वर का नाद-प्रवाह बूढ़े पोल्स्का की भावुक आत्मा को अदृश्य लोक-लोकांतरों की ओर ले जाने लगा। उन्होंने भी उस वेग-वान् प्रवाह में अपने आपको निर्बाध बहा दिया था।

गाना पूरा हुआ, वादन रुका; परंतु पोल्स्का की अधमुँदी आँख वैसी ही खुमारी में रम रही थीं। कई मिनिट बाद उन्होंने धीरे-से आँखें खोलकर पिळ्ळै को देखा। बूट-सूट पहने जो दूसरे श्रोता फर्श पर पालथी मारे बैठे थे, उनकी भी आँखें पिळ्ळै पर टिकी थीं।

"ऐयरजी, म एक परीक्षा लेना चाहता हूँ।" पिळ्ळै ने विनोदपूर्वक मेजबान से कहा।

ऐयर पिळ्ळै का मुख देखने लगे। वे कुछ भी न समझ पाये।

"स रि स मा.....मा....." पिळ्ळै ने एक नया राग छेड़ा। ऐयर पहचान गये– यह 'साम' राग था। राग धीरे-धीरे पल्लवित हुआ। आधी रात को खिलनेवाली रजनीगंधा की मादक महक की याद ऐयर को हो आयी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"बढ़िया किस्म की इस निशानी"
का ध्यान रखें

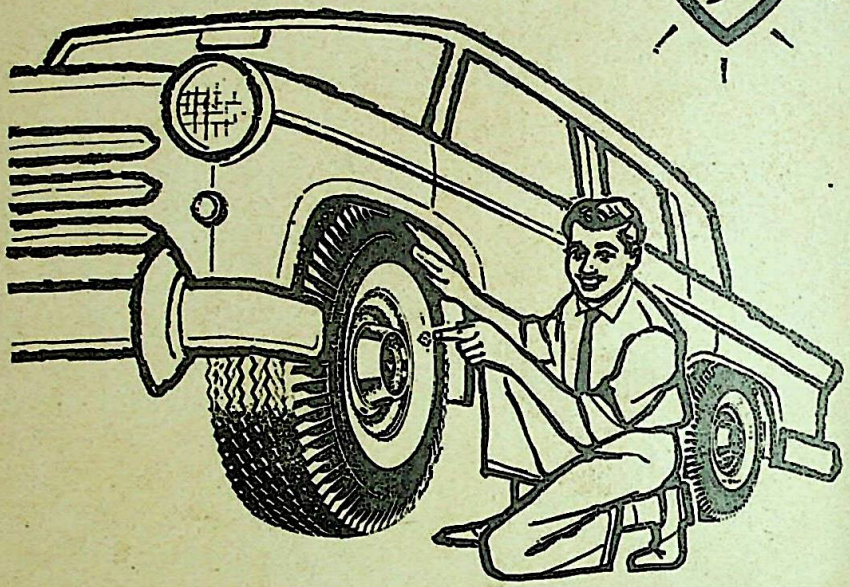

अतिरिक्त सुरक्षा के लिये आपके लिये आश्वासन

जब नये टायर लेने हों, तो फायरस्टोन ही लीजिये और अपने पैसे से ये अधिक लाभ पाइये ।

- **अतिरिक्त सुरक्षा और विश्वसनीयता**
  अब भी न फिसलने के गुणसे अद्वितीय रूप से सम्पन्न विशिष्ट ट्रेड ।
  जरूरत से ज्यादा मजबूत, सुरक्षा की दृष्टि से परखे और सुरेसयुक्त कार्ड वाडी ।
- **दीर्घायु और किफायती**
  टायर की लागत की दृष्टि से प्रति रुपये ज्यादा किलोमिटर चलनेवाले ।
  भारतीय यातायात-परिस्थितियों के लिये विशेष रूप से निर्मित ट्रेड रबर

Firestone

फायरस्टोन
न्यू डिलक्स चैम्पियन कार टायर
आज सोना—कल सोने पै सुहागा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सहसा ऐयर का ध्यान पोल्स्का की ओर गया। पोल्स्का को अपनी सुध नहीं थी। स्वरों के आरोह-अवरोह के साथ चढ़ते-उतरते हुए उनके दोनों हाथ उनकी आत्मानुभूति को दर्शाते थे। हाथ मानो कोई वरदान स्वीकार करने के लिए फैले हुए थे। मुख पर परमानंद की मुस्कान छायी हुई थी। फिर अचानक वे खड़े हो गये। उनकी दोनों आगे फैली हुई भुजाएँ चम्पा की डालियों की तरह झूलने लगीं। राग का प्रसार बढ़ा। पोल्स्का भी धीमे-धीमे आगे बढ़े। मंच के निकट आकर वे घुटने टेककर बैठ गये। वेदी पर हाथ रखकर उसमें मुँह छिपा लिया। सबकी नजरें उन्हीं पर टिकी थीं।

पिळ्ळै ने देखा, पोल्स्का तपोमग्न यति की तरह परवश हैं। उनकी तन्मयता में बाधा न हो, इस विचार से पिळ्ळै ने रागालाप को रोके बिना एक कीर्तन शुरू कर दिया—" शांतमु लेका..... "

बच्चे की निर्दोष मोहक वाणी-सा वह गाना श्रोताओं पर आनंद-वृष्टि करने लगा। अखंड सत्य की आराधना थी उसके स्वर-विन्यास में। पोल्स्का का अंग-अंग पुलकित हो उठा। अपनी समस्त इंद्रिय-संज्ञाओं को समेटकर किसी अनिवर्चनीय अनुभूति में रम गये।

कीर्तन पूरा हुआ। नागस्वर ने विराम पाया और पोल्स्का ने लपककर पिळ्ळै के दोनों हाथ पकड़ लिये, मानो दीनता से किसी चीज की याचना कर रहे हों।

" मिस्टर पीले ! मिस्टर पीले ! ..... " पोल्स्का पिळ्ळै के हाथों को जोर से भींचते हुए गिड़गिड़ाये—" मिस्टर पीले ! और कुछ नहीं, बस यही गाना ..... मैं और जी नहीं सकूँगा। यह परमानंद मुझसे नहीं सहा जायेगा। और कुछ नहीं, यही गाना बजाते जाइये।"

" शांतमु लेका " फिर शुरू हुआ। पोल्स्का की आँखें मुँद गयीं। वे भावपर-वश भक्त से दीखते थे। पिळ्ळै ने पाँच-छः वार उसी कीर्तन को बजाया। अंत में पोल्स्का ने स्वयं इशारे से वादन रुकवाया। लेकिन उनका बूढ़ा सिर स्वर की लय के साथ झूमता ही रहा। तीन-चार मिनिट बीत गये। वकील ऐयर आहिस्ते-से खाँसे। पोल्स्का ने मुड़कर उन्हें देखा।

" मिस्टर पीले ! मिस्टर ऐयर ! इस गाने में किसी अदृश्य, अगम्य लोक से आया दिव्य संदेश आज मुझे मिला है। यह समस्त संसार के उद्धार का संदेश है ..... " पोल्स्का में बच्चों की तरह बहुत-सी बातें एक साथ बताने की आतुरता उमड़ पड़ी। " आपको भी इसका बोध हुआ है न ?" उन्होंने ऐयर से पूछा।

" हाँ, कुछ ऐसा-सा ही..... "

" पर ऐयर ! मुझे तो बहुत स्पष्ट बोध हुआ है। ऐसा बोध मुझे आज तक कभी संसार के किसी देश के संगीत में नहीं हुआ। यह भारतीय संगीत का अद्भुत वरदान है। इस संदेश ने मुझे जीवन्मुक्ति दे दी है ....." पोल्स्का दैवाविष्ट की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

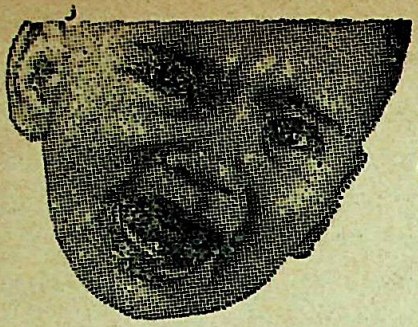

मॅनर्स ग्राइप मिक्श्चर का इस्तेमाल कीजिए

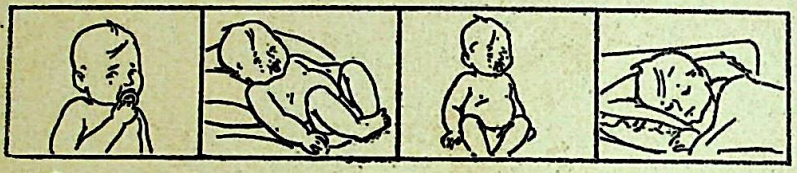

मॅनर्स ग्राइप मिक्श्चर विशेषकर दाँत आने के दिनों में बदहज़मी की रोक-थाम करता है।

जठरांतीय दर्द दूर करता है।

वात और पेट फूलने की शिकायत के लिए अक्सीर है।

पाचनशक्ति के लिए सुखदायक है और मीठी नींद लाता है।

और देखिए कि बच्चों के मुँह पर हँसी कैसे लौट आती है।

दिन में दो बार
मॅनर्स ग्राइप मिक्श्चर
का नियमित रूप से प्रयोग आपके बच्चे को स्वस्थ और प्रसन्न रखता है।

GEOFFREY MANNERS & COMPANY LIMITED

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ASP/GM-17 HIN

तरह बोलते जा रहे थे।

"आपको क्या बोध हुआ?" पिळ्ळै ने टोका। पोल्स्का बड़े उत्साह से बोले—"मुझे क्या बोध हुआ, यह जानना चाहते हैं? सुनिये, मैंने देखा कि सारी धरती लाशों से पटी हुई है। आकाश कराहों, चीख-पुकार और मार-पीट की आवाज से भर गया है। साँय-साँय करती हुई हवा वृक्षों को उखाड़ फेंक रही है। प्रलयंकर उत्ताल तरंगें उठकर झोंपड़े, घर और महलों को तहस - नहस कर रही हैं। गाज गरज के साथ गिरती है, हरे-भरे वृक्ष जलकर ठूँठ हो जाते हैं। इस विनाश के विकराल तांडव के बीच केवल मुझे शांति के दर्शन होते हैं। कोई उत्पात मुझे नहीं छू पाता। एक अपूर्व शांति मेरी चेतना पर छा जाती है। इस शांति को कोई हाहाकार, कोई प्रलयाघात भंग नहीं कर सकता। धीरे-धीरे सब उत्पात-उत्पीड़न बंद हो जाता है।...इस अनुभूति के बाद मैं एक शब्दातीत दिव्य लोक में पहुँच गया हूँ। यह शांति, यह तृप्ति युग-युग तक मुझे उबारने के लिए पर्याप्त है। मैं इसी क्षण इस नश्वर चोले से छुटकारा पाकर उस असीम अमर लोक में—ईश्वर के निलय में—विलीन हो जाना चाहता हूँ।"

पोल्स्का का स्वर गम्भीर था। उनके शब्द भाव-गम्भीर, परंतु अत्यंत स्पष्ट थे। उनका अनुवाद ऐयर ने पिळ्ळै को सुनाया। पिळ्ळै अवाक् रह गये।

"शांति! इन्हें शांति का बोध हुआ! भक्तराज त्यागराज स्वामी ने भगवान् से शांति की प्रार्थना करते हुए ही यह कीर्तन रचा है। कितनी दीनता और आतुरता से उन्होंने यह प्रार्थना की है! क्या वह शांति का संदेश इन्हें मिला है?"

"हाँ, ये ऐसा ही कहते हैं।" ऐयर ने समर्थन किया।

"मैंने तो कीर्तन के शब्दों का उच्चारण तक नहीं किया; फिर ये कैसे उसका भाव समझ गये? भगवान् की लीला विचित्र है!"

ऐयर ने विनम्रता से कहा—"मिस्टर पोल्स्का, यह गाना भी शांति का ही महत्व बताता है। आपने जो दृश्य देखे, उनका वर्णन तो इसमें नहीं है; लेकिन इसका उद्देश्य शांति का प्रसार ही है। इसके रचयिता भक्त त्यागराज ने भी आप जैसे ही शांति का बोध पाया था।"

"अच्छा!" पोल्स्का स्तब्ध रह गये। "नाद की महिमा अपार है! उसे कोई सीमा या अवरोध रोक नहीं सकता। इस अमर नाद-सृष्टि का साक्षात्कार करानेवाली आपकी अँगुलियों को मैं चूमना चाहता हूँ। कृपया हाथ आगे बढ़ाइये; मैं भगवान् को चूम लूँ।"

पिळ्ळै के हाथों को अपने हाथों में लेकर उन्होंने बार-बार चूमा। भगवान् का पावन स्पर्श दोनों को मिल गया।

नागस्वर-वादक पिळ्ळै को भी उस दिन एक दिव्य संदेश मिला।

रूपांतरकार : आर० शौरिराजन्

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दर्द और पीड़ा में

सेरिडोन 'रोश'

लीजिए !

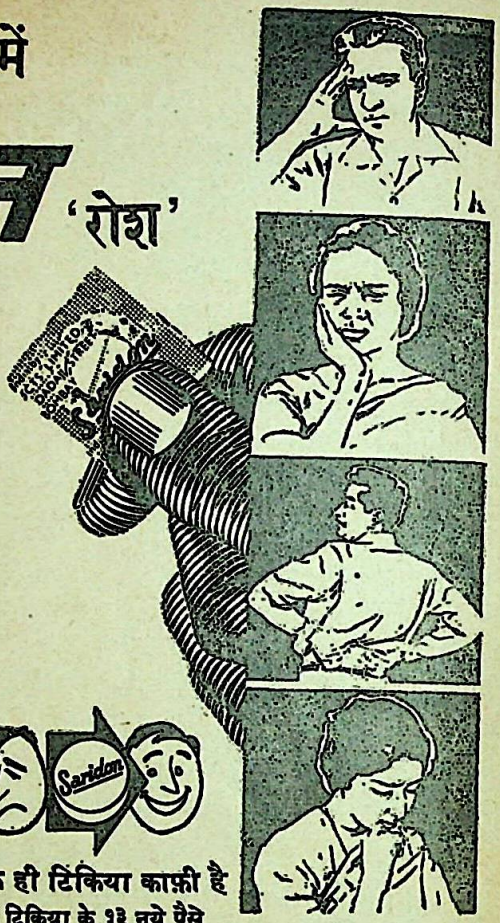

एक ही टिकिया काफ़ी है
एक टिकिया के १३ नये पैसे

सेरिडोन दर्द और पीड़ा में जल्द आराम पहुँचाती है। यह तीन प्रकार से असर करती है : दर्द दूर करती है, आराम पहुँचाती है और ताज़गी देती है। सर के दर्द, बदन के दर्द, दाँत के दर्द, हरारत और तबीयत की बेचैनी में सेरिडोन लीजिए। यह जल्द और निरापद रूप से पूरा आराम पहुँचाती है। वयस्कों के लिए एक टिकिया पूरी खूराक है। बच्चों के लिए ½ से ¼ टिकिया काफ़ी है।

JWT/VT-3522

'रोश' उत्पादन

सोल डिस्ट्रिब्यूटर्स : वोल्टास लिमिटेड

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भाषा और समाज

लेखक : डा० रामविलास शर्मा; प्रकाशक: पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्राइवेट) लिमिटेड, रानी झाँसी रोड, नयी दिल्ली १। पृष्ठसंख्या : ५३१; मूल्य : पंद्रह रुपये।

हिन्दी के समकालीन समर्थ समालोचकों में डा० रामविलास शर्मा का विशिष्ट स्थान है। साहित्य के विविध क्षेत्रों में उन्होंने उत्तम कार्य किया है। 'भाषा और समाज' उनकी अब तक प्रकाशित पुस्तकों में सम्भवत: सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। उन्होंने प्रस्तुत पुस्तक में—जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट है—भाषा और समाज-विषय के विविध आयामों के गम्भीर अध्ययन को उपस्थित करने का प्रयास किया है।

यह पुस्तक सोलह अध्यायों में समाप्त हुई है। प्रथम छः अध्यायों में भाषा की उत्पत्ति, ध्वनि-प्रकृति, भाव-प्रकृति, मूल शब्द-भंडार और आदिभाषा का विवेचन किया गया है। भाषा की उत्पत्ति के विषय में हिन्दी में इतना महत्वपूर्ण विवेचन अभी तक नहीं हुआ था। इस अध्ययन का यह निष्कर्ष है कि यूरोप की भाषाओं में और संस्कृत में जो सामान्य शब्द मिलते हैं, उनका मूल स्रोत भारत है। जैसे किसी आदिपुरुष से मानव-परिवार की उत्पत्ति नहीं हुई, वैसे ही किसी आदिभाषा से कोई भाषा-परिवार नहीं बना। जिसे हम भाषा कहते हैं, वह स्वयं सामाजिक विकास की एक निश्चित मंजिल में ही सुलभ होती है। 'भाषाओं का वर्गीकरण' की समस्या के लिए यह सिद्धांत स्थिर किया गया है कि भाषा की ध्वनि-प्रकृति, भाव-प्रकृति और मूल शब्द-भंडार का अध्ययन करने के अनंतर ही उसके परिवार के नाम का निश्चय किया जा सकता है। इस कसौटी पर परखने से ग्रीक, स्लाव, लैटिन, संस्कृत आदि स्वतंत्र भाषाएँ सिद्ध होती हैं। उन्हें एक ही परिवार के अंतर्गत नहीं माना जा सकता। डा० शर्मा की यह स्थापना निश्चय ही भाषा-विज्ञान की एक उपलब्धि है।

सातवें, आठवें और नौवें अध्यायों में भारतीय भाषाओं का उद्भव और विकास ही विवेच्य विषय है। लेखक ने सप्रमाण यह सिद्ध किया है कि आधुनिक भाषाओं के मूल

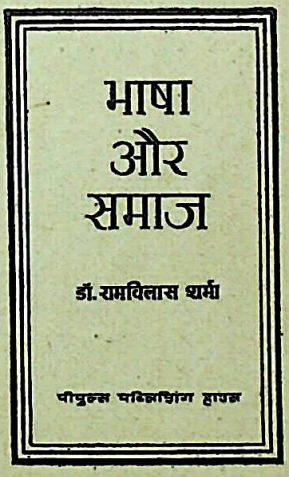

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तत्व उतने ही प्राचीन हैं, जितने मूल संस्कृत के। उसके मतानुसार यह धारणा नितांत भ्रांत है कि संस्कृत बिगड़कर प्राकृत हुई, प्राकृत से अपभ्रंश निकले और उनसे आधुनिक भारतीय भाषाएँ।

दसवें-ग्यारहवें अध्यायों में जातीय निर्माण के उपकरणों के आलोक में भाषा के गठन और प्रसार का विवेचन किया गया है और यह मत व्यक्त किया गया है कि भाषाओं के विकास के अध्ययन-हेतु सामाजिक विकास का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है। बारहवें-तेरहवें अध्यायों में हिन्दी-उर्दू समस्या का आलोड़न करते हुए यह स्पष्ट किया गया है कि हिन्दी-उर्दू एक ही जाति की दो साहित्यिक भाषाएँ हैं। भारत की अन्य भाषाओं के विकास में मुसलमानों की महत्वपूर्ण देन को दृष्टि में रखते हुए हिन्दी-उर्दू की समस्या पर पुनः विचार करना आवश्यक है।

ब्रज, अवधी, राजस्थानी, भोजपुरी, पंजाबी के परिचय के साथ ही भाषा और बोलियों के सम्बंधों का विश्लेषण चौदहवें अध्याय में किया गया है। पंद्रहवें अध्याय में लेखक ने विद्वत्तापूर्ण ढंग से भारत में राजभाषा और राष्ट्रभाषा की समस्या का विवेचन-विश्लेषण किया है। सोलहवें अध्याय में सामाजिक अंतर्विरोध, उनका भाषा के विकास पर प्रभाव, वर्गों की भूमिका, एक जाति द्वारा दूसरी पर विजय और शब्दों का आदान-प्रदान, अर्थ-विचार और ध्वनि-परिवर्तन सम्बंधी प्रचलित धारणाओं के महत्व आदि प्रश्नों का विवेचन किया गया है।

इस ग्रंथ की स्थापनाओं में डा० शर्मा का सिद्धांत-पक्ष यह है कि भाषा का अध्ययन उसकी ध्वनि-प्रकृति, भाव-प्रकृति और उसके मूल शब्द-भंडार को दृष्टि में रखकर करना चाहिये। उनका व्यवहार-पक्ष यह है कि तथाकथित भारत-यूरोपीय संस्कृत, लैटिन, ग्रीक, स्लाव आदि भाषाएँ स्वतंत्र कुलों की भाषाएँ हैं। इनमें मिलनेवाले सामान्य तत्व बोलनेवालों के परस्पर सम्पर्क के परिणाम हैं और इनका जन्म किसी एक आदि भाषा से नहीं हुआ है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि डा० शर्मा ने इस विशाल ग्रंथ में सामाजिक विकास के संदर्भ में भाषा के विकास का अध्ययन करते हुए भाषा-विज्ञान के प्रायः सभी महत्वपूर्ण अंगों के सैद्धांतिक विवेचन के साथ ही भाषा-सम्बंधी अनेक व्यावहारिक समस्याओं का भी सुंदर विवेचन किया है। अतः यह भाषा-विज्ञान का तो एक अनमोल ग्रंथ है ही, साथ ही भारत की भाषा-समस्या के गहन अध्ययन में दिलचस्पी रखनेवालों के लिए भी मार्गदर्शक है। विषय की गहनता के बावजूद भाषा-शैली की सरसता इस ग्रंथ की अपनी विशेषता है। हिन्दी में 'भाषा और समाज' विषय पर ऐसा सर्वांगपूर्ण ग्रंथ लिखकर डा० शर्मा ने एक बड़े अभाव की पूर्ति का स्तुत्य प्रयत्न किया है।

—डा० शिवसहाय पाठक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

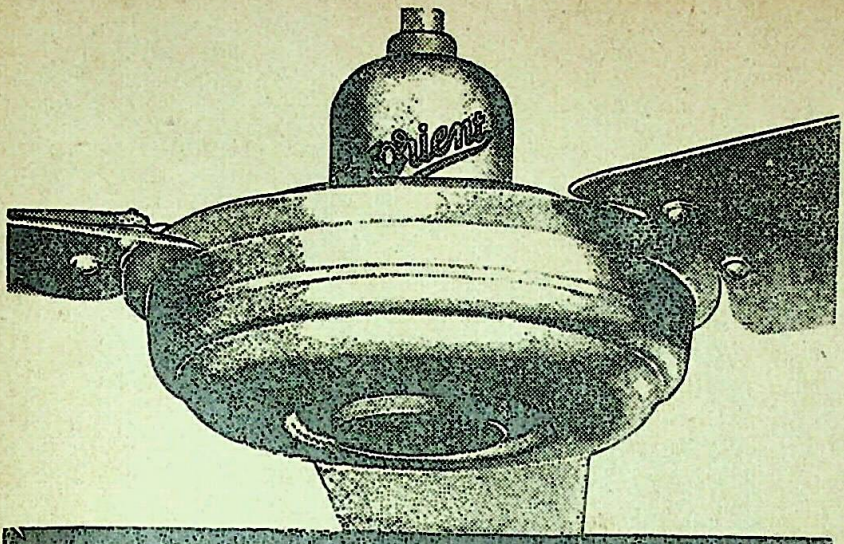

अनुपम निर्माण-कला के योग से उत्तम पंखे बनते हैं

यही है
ओरिएन्ट
प्रणाली

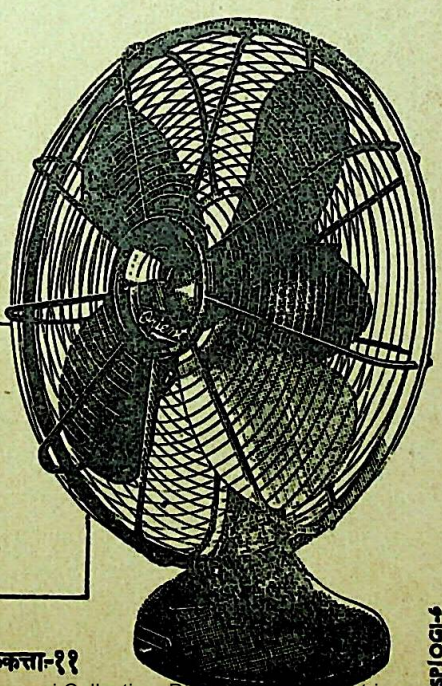

ओरिएन्ट
पंखा
सौन्दर्य और सेवा में
सदा अग्रगामी

ओरिएन्ट जेनेरल इण्डस्ट्रीज लि०, कलकत्ता-११

ASP/OGI-6

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

maa.SAN. 277 A HIN

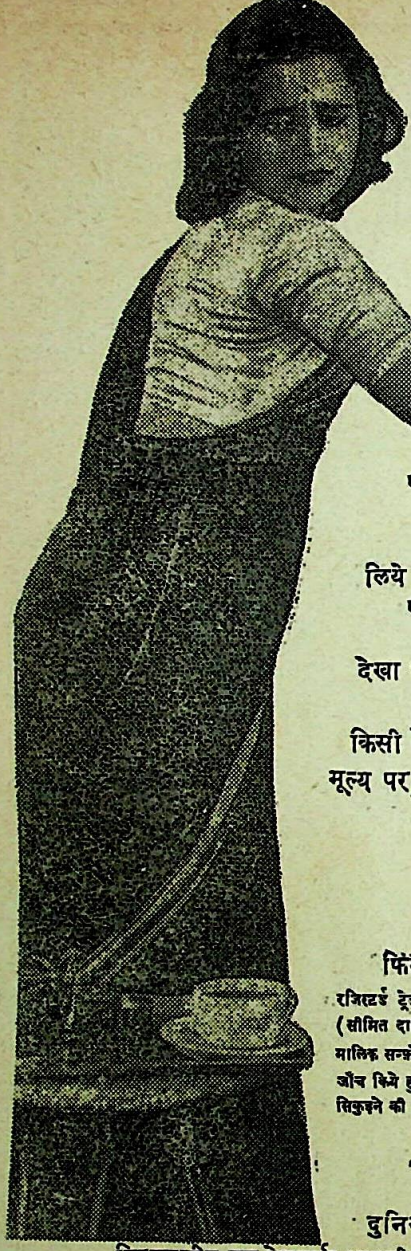

अब पछताये होत क्या...

एक सुघड़ गृहणी की तरह वह भी हमेशा अपने पति की आय का माहवारी बजट बना लिया करती है ताकि सारे महीने उसे घर के ख़र्च के लिये किसी प्रकार की तकलीफ़ न उठानी पड़े-लेकिन एक जगह वह चूक ही गई-उसने अपनी चोली के कपड़े पर 'सेन्फ़ोराइज्ड' की छाप को नहीं देखा था-एक नई चोली जो पहली ही धुलाई के बाद सिकुड़ कर तंग हो चुकी थी।

किसी के कहे पर मत आइये, निश्चय ही चुकाये हुये मूल्य पर, आपको कपड़ा पुरी नाप में मिलना चाहिये

लेबल पर **'SANFORIZED'** REGD TD MK

यह छाप देख लीजिये—
फिर आपके कपड़े कभी सिकुड़ कर तंग नहीं होंगे।

रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क सेन्फ़ोराइज्ड के मालिक क्लुएट, पीबॉडी एण्ड कं. इन्कॉर्पोरेटेड (सीमित दायित्व सहित यू. एस. ए. में स्थापित) द्वारा प्रचारित। इस ट्रेडमार्क के मालिक सेन्फ़ोराइज्ड ट्रेडमार्क का इस्तेमाल करते हैं, या उन रजिस्टर्ड कम्पनियों की जाँच किये हुए उन कपड़ों पर यह ट्रेडमार्क लगाने की अनुमति देते हैं जो कपड़ा न सिकुड़ने की कड़ी शर्तें के अनुसार होंगे।

अधिक जानकारी के लिए: सेन्फ़ोराइज्ड सर्वीस
९५, मरीन ड्राइव, बम्बई-२

दुनिया के १२९ देशों में रजिस्टर्ड 'सेन्फोराइज्ड' का विश्वसनीय यह ट्रेडमार्क भारतीय वस्त्र उद्योग के निर्यात को प्रभावित करता है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देखिये !
केवल
टिनोपालही
कपड़ों में
यह सफ़ेदी
ला सकता है

सफ़ेदी जो पहले कभी नहीं देखी गयी

टिनोपाल सफ़ेद कपड़ों को इतना अधिक सफ़ेद बना देता है कि आपके चद्दर, तकिये के गिलाफ तथा मेजपोश वास्तव में चमकने लगते हैं। आपकी सफ़ेद साड़ियां, और चोलियां, कमीजें और पैंट सभी अधिक सफ़ेदी के कारण जगमगाने लगते हैं।

आप पैसा भी बचाते हैं

आपको अपने कपड़े सफ़ेद बनाने के लिए अधिक खर्च करने की जरूरत नहीं। आप उन्हें केवल साधारण साबुन में धोइये और उसके बाद उन पर टिनोपाल इस्तेमाल कीजिये। टिनोपाल कितना किफायती है—एक चौथाई चाय चम्मच भर टिनोपाल एक बाल्टी भर कपड़ों को सफ़ेद कर देने के लिए पर्याप्त होता है। और टिनोपाल की सफ़ेदी पक्की होती है—हर बार कपड़े धोने के बाद टिनोपाल इस्तेमाल करना जरूरी नहीं है।

टिनोपाल जे. आर. गायगी एस. ए., बाल, स्विटजरलैण्ड का रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क है।

याद रखिये

थोड़ा सा

टिनोपाल

सफ़ेद कपड़ों को अत्यधिक सफ़ेद बनाता है।

निर्माता : सुहृद गायगी लिमिटेड, बड़ी बाड़ी, बड़ौदा, एकमात्र वितरक : सुहृद गायगी ट्रेडिंग लिमिटेड, पो. बा. ९६५, बम्बई १, बी.आर.

SISTA'S SG-170A

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुकुञ्चित रेशमी
केश राशि के लिए

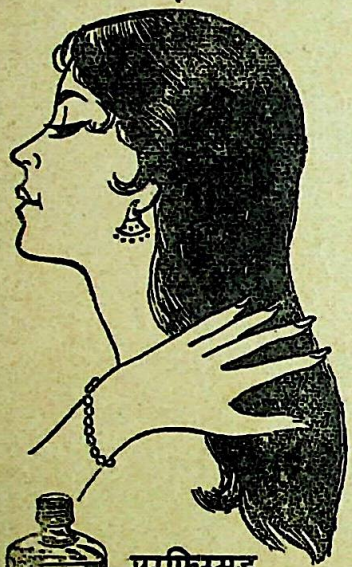

परफिउमड्
कैस्टर आयल
व्यवहार करें

यह मनोरम सुगन्धयुक्त केश तैल है।

बंगाल केमिकल
कलकत्ता · बम्बई · कानपुर

साफ़ी

खून की खराबी को दूर कीजिए

जी हां ! ऋतु परिवर्तन के दिनों में साफी का एक चमचा आपको खून की सभी खराबियों से बचायेगा साफी आपकी शारीरिक व्यवस्था को ठीक रखती है, खून की नालियों को साफ करती है और आपकी त्वचा को निखारती है। यह कील व छाइयों को दूर करती है और आपके चेहरे को गुलाब जैसी ताज़गी और आभा प्रदान करती है।

हमदर्द

देहली - कानपुर - पटना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

३० जून से पहले

इनामी बाण्ड

खरीद लीजिए

३० जून, १९६२ को इनामी बाण्डों की बिक्री बन्द हो जायेगी । आप इनामी बाण्ड खरीद लीजिए ताकि आप को आकर्षक पुरस्कार जीतने के अवसर मिल सकें ।

इस समय खरीदे गये बाण्ड १ सितम्बर, १९६२ से शुरू होने वाली शेष ११ लाटरियों में शामिल किये जाएगें ।

राष्ट्रीय बचत संगठन

DA 62/110

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ग्लुकोविटा आप को

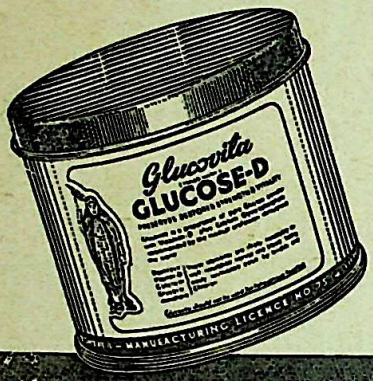

अधिक शक्ति देता है – वह भी बहुत जल्दी

★ पौष्टिक और स्फूर्तिदायक
★ रक्त के लिए शक्कर, जो शरीर क्रिया के लिए आवश्यक है, वह प्रदान करता है
★ शरीर में शीघ्र ही रच जाता है।

हर रोज़ इस का सेवन कीजिये !

ग्लुकोविटा

कॉर्न प्रॉडक्ट्स कं. (इण्डिया) प्राइवेट लि.

भूख का न लगना

बच्चों को लगातार भूख का न लगना तथा सूक्ष्म तापक्रम बना रहना आदि लक्षण यकृत और प्लीहा के विकारों के द्योतक हैं। तुरन्त जम्मीज़ के डाक्टर से सलाह लीजिये।

जम्मीज़ लिवरक्योर

बच्चों के जिगर और तिल्ली के विकारों पर

जम्मी के डाक्टर प्रत्येक महीने प्रमुख स्थानों का दौरा करते हैं। विशेष ब्यौरे के लिये पत्रव्यवहार करें

जम्मी वेंकटरमणैय्या एण्ड सन्स
प्रधान कार्यालय - मद्रास ४

शाखायें: बम्बई ४, बंगलोर २, कलकत्ता ७, दिल्ली ६
कुभकोणम, लखनऊ १, नागपुर १, पटना ४
तिरुचिरापल्ली २, विजयवाडा ३, विजयनगरम्

JV-12-CHIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

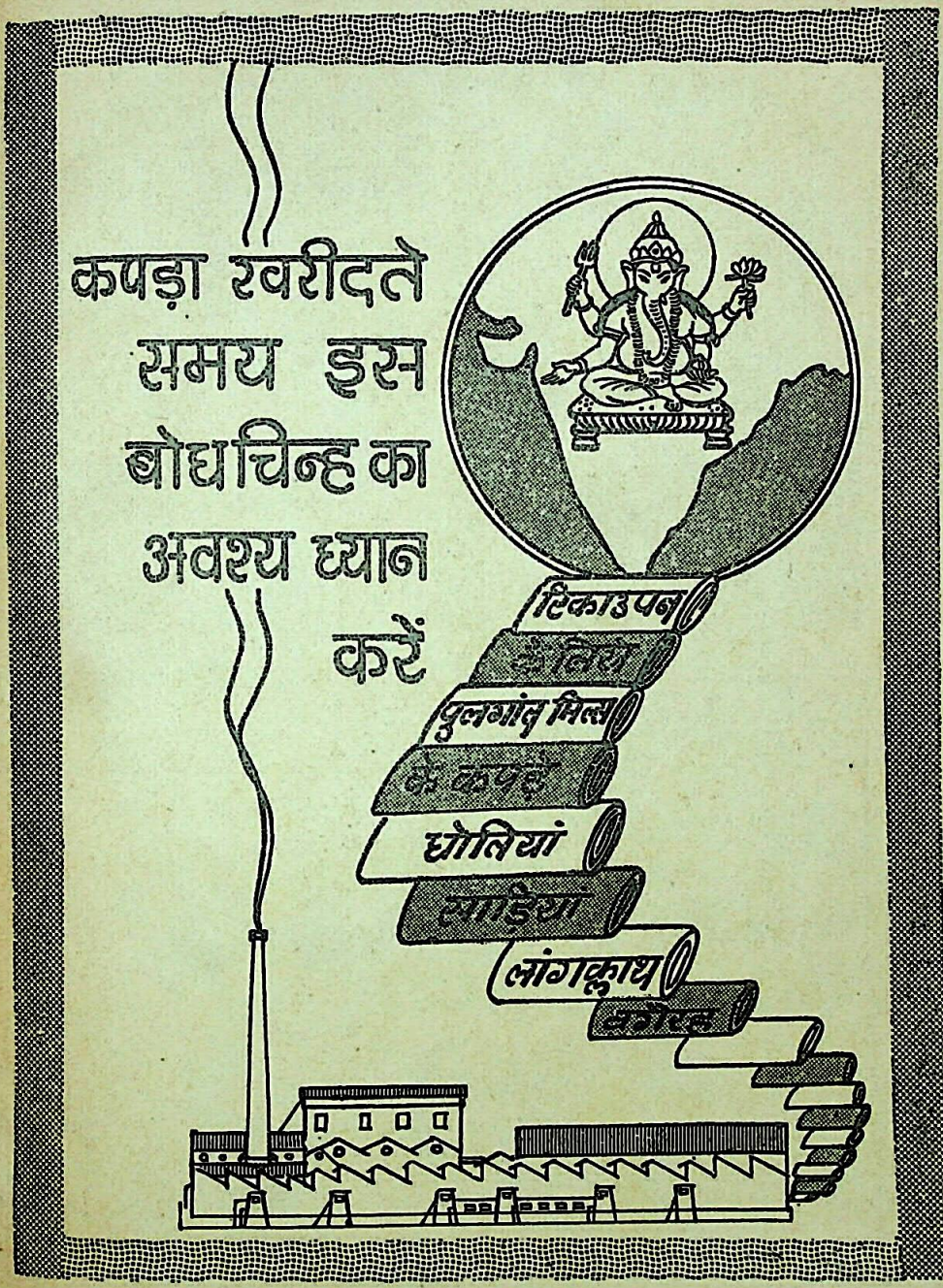

पुलगांव काटन मिल्स लि०. बम्बई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

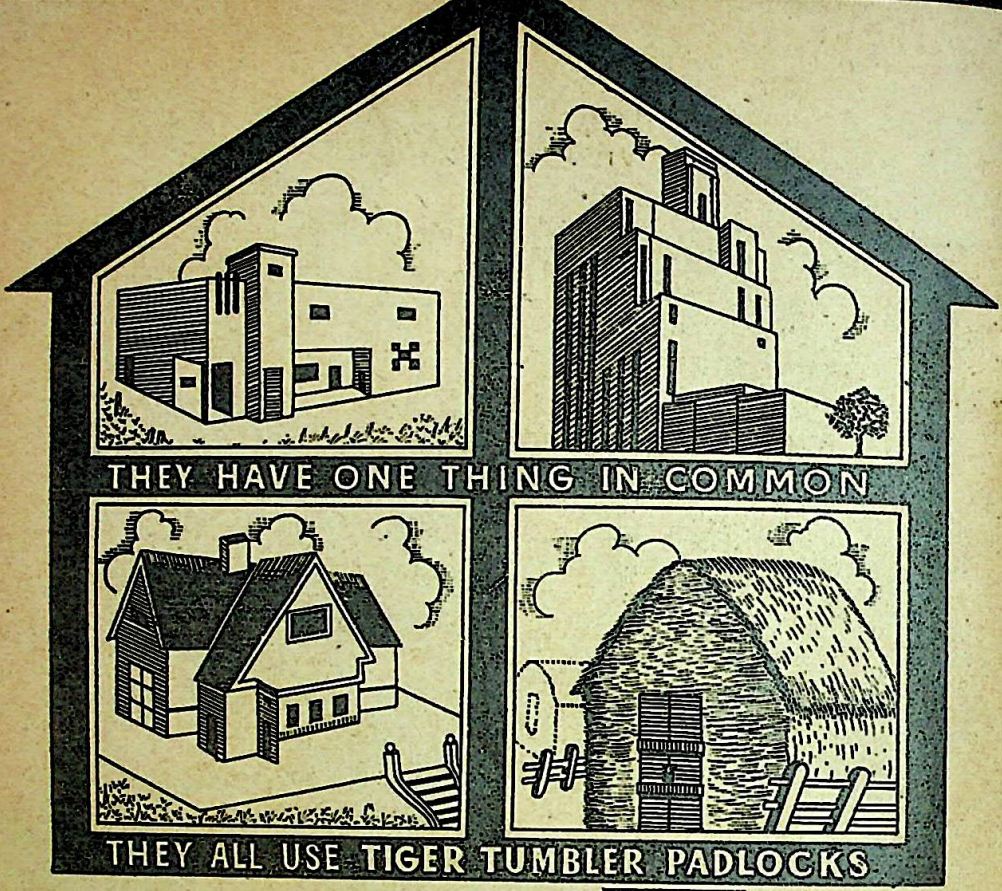

टाइगर
टम्बलर पैडलॉक्स

यह अत्यन्त सुदृढ़ ताला मशीन में ढला हुआ और बिना जोड़ के बना हुआ है। निसन्देह यह आम तालों से अधिक विश्वास योग्य है।

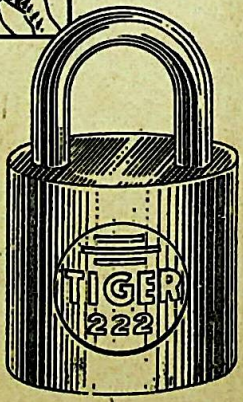

GM/4/5

इंडियन इम्पलीमेंटस मैनफैक्चरिंग कं० मरिस रोड अलीगढ़ (य.पी.)

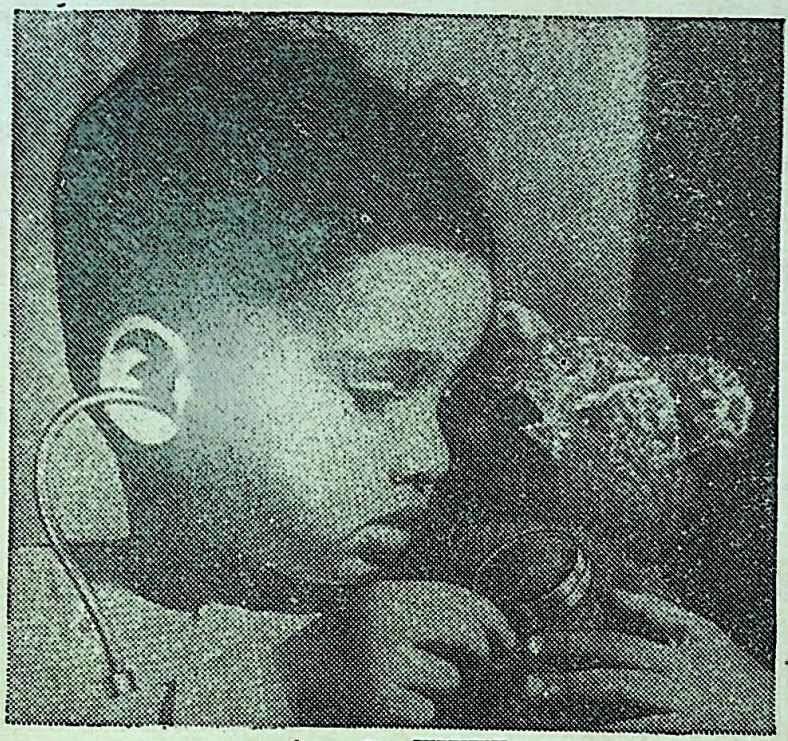

आपका मुन्ना भी एक दिन **डाक्टर** बन जाएगा।

यहाँ, उसकी शिक्षा के लिए एक सरलतम सर्वांगपरिपूर्ण योजना है।

आपका प्यारा मुन्ना, गुड़िया के सांसे की धड़कन सुनने में व्यस्त है। वह कल डाक्टर भी बन सकता है। किन्तु इस मेडिकल कोर्स के लिए (होस्टल की फ़ीस को छोड़कर) कम से कम ७,००० रुपयों की ज़रूरत होगी। जब वह कालेज में जाने लगेगा तब इस खर्च का निभाना, शायद, आपके लिए मुश्किल होगा। तो आज ही शिक्षावृत्ति योजना पालिसी लेकर उन पैसों का प्रबंध आप क्यों नहीं कर लेते? इसके लिए प्रीमियम भी बहुत कम देने पड़ते हैं। मान लीजिए, आपकी उम्र २५ साल और बच्चे की २ साल की है; तो आपको प्रतिमास केवल ३० रुपये और ७१ नये पैसे देने पड़ेंगे। और जब आपका बच्चा १९ सालका होगा और कालेज जाने लगेगा तब हर छः महिने पर ७०० रुपये, पाँच सालों तक, उसे बराबर मिलते रहेंगे। (अलग अलग उम्र के लिये अलग अलग प्रीमियम लिये जाते हैं।) पालिसी की अवधि में यदि आपके प्यार का छत्र बच्चे के सिर पर से उठ जाय तोभी, हर छः महीने पर पाँच सालों तक उसे यह रकम मिलती रहेगी। बचत का कोई और तरीका आपको ऐसा लाभ नहीं दिला सकता।

आज ही अपने बच्चे के लिए शिक्षावृत्ति पालिसी लीजिए और अपने इस निर्णय को कल पर न छोड़िए। आपकी आयु ज्यों-ज्यों बढ़ती रहे जायेगी त्यों-त्यों प्रीमियम की रकम में भी वृद्धि होती रहेगी। अपने बच्चे के भविष्य को भाग्य पर न छोड़िए बल्कि जीवन बीमे द्वारा उसको शानदार बनाइए।

जीवन-बीमा

सुरक्षा का बेजोड़ साधन है।

ASP/LIC-79 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Regd.No. B. 6248

२५५८

यह रूपवती

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय, काशी, वाराणसी।

सब के मन में यही जिज्ञासा...

कौन?

क्योंकि आप का रंगरूप अनुपम गुलाबी

ब्रीज़ से जगमगा रहा है!

सुहानी स्मृति की तरह लिपटी रहनेवाली सुगंध के लिए...
अनुपम गुलाबी ब्रीज़ सौंदर्य साबुन से स्नान कीजिये।
यह केवल इसीलिए बनाया गया है कि आपके रंगरूप के नाज़
उठाकर...आपकी सुंदरता को जगमगाकर...आपको
सबके लिए यह पहेली बना दे कि 'यह रूपवती कौन?'

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड ने भारत में बनाया

BZ 23-50 HL

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय
वा रा ण सी।
आगत क्रमांक..... २५५५.....
दिनांक.....

मुमुक्षु भवन वेद वेदांग विद्यालय
वाराणसी
आगत क्रमांक... 2029
दिनांक...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri